आचार्य श्रीराम शर्मा

जन्म शताब्दी महोत्सव

ब्रह्म कमल

मैं व्यक्ति नहीं, विचार हूँ ।



गायत्रीतीर्थ-शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY

SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

मैं व्यक्ति नहीं, विचार हूँ।

ब्रह्म कमल

युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

के शताब्दी महोत्सव पर

प्रकाशित भावभरी अभिव्यक्ति



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सम्पादन
ब्रह्मवर्चस्

प्रकाशक
श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट
शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

प्रथम खण्ड का प्रकाशन
नवम्बर 2011

मूल्य : रु. 125/-

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

पत्र व्यवहार का पता
गायत्रीतीर्थ-शान्तिकुञ्ज
हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
249411
फोनः01334 260602 फैक्सः 01334 260866

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अनुक्रमाणिका

क्रम संख्या	विषय सूची	पृष्ठ संख्या
1.	ब्रह्मकमल - सम्पादकीय	7-8
2.	हमारी वसीयत और विरासत	9-10
3.	जिनका जीवन ब्रह्म कमल - (कविता)	11
4.	हम हैं संतानें युगऋषि की - (कविता)	12
5.	ऋषिसत्ता का अवतरण और उनका बचपन	13-14
6.	बाल्यकाल में ही प्रस्फुटित हुए साधना के बीजांकुर	15-17
7.	देवरहा बाबा के दुर्लभ अनुभव	18
8.	हिमालयवासी गुरुसत्ता से साक्षात्कार	19-21
9.	वेदमूर्ति पं. श्रीराम शर्मा आचार्य : एक अक्षयवट - स्वामी सत्यमित्रानंद	22
10.	सूक्ष्म शरीरधारी हमारे आदि संरक्षक	23-24
11.	समर्पित साधक की सहज साधना	25-27
12.	गायत्री के सिद्ध साधक परमपूज्य गुरुदेव	28-30
13.	साधना सूत्रों का युगानुरूप सरल स्वरूप प्रस्तुत करने वाली ऋषिसत्ता	31-32
14.	आत्मदेवता के साधक, सावित्री के सिद्ध उपासक	33-34
15.	नई गायत्री बना दी है -उज्ज्वल भविष्य की प्रार्थना	35-36
16.	गायत्री के सिद्ध उपासक - युग के विश्वामित्र	37-38
17.	गायत्री तपोभूमि की स्थापना की प्रेरक झलकियाँ	39-41
18.	चिंतन जिनका अतिशय पावन -(कविता)	42
19.	स्वतंत्रता संग्राम के मतवाले - श्रीराम मत्त	43-44
20.	सैनिक पत्र में सतत छपता रहा मत्त प्रलाप - (कविताएँ)	45
21.	सैनिक एवं संन्यासी की उभयपक्षीय विशेषताएँ थीं उनमें	46-49
22.	अंग अवयवों से अपेक्षा - (कविता)	50
23.	लेखनी का पैनापन प्रारंभ से ही रहा- (कहानी)	51-53
24.	पूज्य गुरुदेव के बालसखा पं. बेनीराम शर्मा की डायरी के पन्ने (संस्मरण)	54
25.	पाती जो सबके पास नियमित पहुँचती रही	55-56
26.	गायत्री महाशक्ति की उपासना से मिले सात लाभ	57-58
27.	लोचन अनंत उघारया, अनंत किया उपकार	59-60
28.	महात्मा आनंद स्वामी जी के अनुभव	61-62

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

29. ब्रह्मास्त्र अनुष्ठान और क्रांतिकारी उद्घोष 63-65
30. गुरुदेव की हिमालय यात्रा 66-68
31. आचार्य जी का ऋषित्व 69-72
32. आदर्शों के नए मानदंड गढ़ती युगऋषि की पत्रकारिता 73-75
33. मैं प्रकाश की खातिर पूरी रात चलूँगा -(कविता) 76
34. युग के वाल्मीकि जिनकी लेखनी से झलकती है भाव संवेदना 77- 80
35. वैज्ञानिक अध्यात्मवाद जिया और दिया 81-83
36. नींव के पत्थरों का अभिनंदन - (कविता) 84
37. नींव के पत्थरों का निवेदन - (कविता) 85
38. ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान जहां वैज्ञानिक अध्यात्मवाद ने पहना अमली जामा 86-87
39. उज्ज्वल भविष्य के प्रवक्ता - महाकाल के अंशधर 88-90
40. विश्वराष्ट्र की कुण्डलिनी का जागरण 91-93
41. युगद्रष्टा एवं युगस्रष्टा की भूमिका में परमपूज्य गुरुदेव 94-97
42. ब्राह्मणत्व का आदर्श निभाने वे धरती पर आये 98-100
43. गुरुदेव ने दिए सफलता के नए प्रेरक आयाम - (संस्मरण) 101
44. रहस्य और रोमांच भरी साधना 102-103
45. उज्ज्वल भविष्य को गढ़ने वाली दैवीय सत्ता 104-106
46. गागर में सागर की तरह उनकी हर पुस्तक 107-110
47. युगऋषि की दिव्यदृष्टि - इक्कीसवीं सदी, उज्ज्वल भविष्य 111
48. जीवन की सभी समस्याओं का समाधान युगऋषि के साहित्य में 112-113
49. कैसा होगा नवयुग 115
50. 24 कला केअवतार के 24 चमत्कार 116-119
51. माताजी की कहानी - उन्हीं की जुबानी 120-121
52. दो व्यक्तित्व - कहियत भिन्न न भिन्न 122-124
53. काया में तुम बँधे नहीं - (कविता) 125
54. अपने आराध्य के प्रति परम वन्दनीया माताजी 126-127
55. साधना से सिद्धावस्था तक साक्षी रहीं परम वन्दनीया माताजी 128-129
56. ऋषिसत्ता के अभियान का संक्षिप्त परिचय 130-131
57. स्मृति पटल पर कौंधते वे क्षण - (संस्मरण) 132-133
58. आचार्य जी की ब्रह्मवर्चस् साधना - स्वामी चिन्मयानंद 134-135
59. आचार्य जी मेरी दृष्टि में - महामहिम डॉ. शंकर दयाल शर्मा 136-137
60. पूज्य गुरुदेव विशिष्ट संतों की दृष्टि में 138-140
61. गुरुसत्ता का आदर्श दाम्पत्य जीवन - (संस्मरण) 141

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

62. अपने अंग अवयवों से.....142-143
63. अपना परिवार - उच्च आत्माओं का भण्डागार.....144-146
64. आचार्य श्री की समय साधना - (संस्मरण).....147
65. विभूतियों का भाव भरा आह्वान.....148-151
66. नई डगर - नया सफर.....152-154
67. गुरुदेव का सृजन सैनिक - एल्बर्ट डेविड.....155
68. युग निर्माण योजना एक दृष्टि में.....156-157
69. युग निर्माण का शत सूत्रीय कार्यक्रम.....158-159
70. सादगी ऐसी कि जो कायल कर दे - (संस्मरण).....160
71. प्राण प्रत्यावर्तन सत्र - एक विलक्षण प्रयोग.....161-163
72. गाँधी बनने की ललक.....164
73. हमेशा याद रहेंगे वे दिन - (संस्मरण).....165-166
74. साधना सत्रों की दिव्य अनुभूतियाँ.....167-168
75. गुरुजी का अलौकिक स्वरुप - (संस्मरण).....169-171
76. जीवन से लिखेंगे नई परिभाषा - (कविता).....172
77. विशाल संगठन की सुनियोजित शुरुआत.....173-175
78. अपना काम स्वयं करो - (संस्मरण).....176
79. श्री गुरुदेव, न भूतो न भविष्यति.....177-178
80. संगठन का महत्त्व एवं स्वरूप-गुरुदेव के शब्दों में.....179-181
81. पाठक अपने आराध्य से यही सीख लें - (संस्मरण).....182-183
82. आध्यात्मिक चिकित्सा के पंचशील.....184-186
83. एक पुनरावृत्ति - (कविता).....187
84. प्रज्ञापुरुष का आध्यात्मिक मानवतावाद.....188-190
85. प्राण संचार करते ये पत्र.....191-193
86. उन अनजान जड़ों को शत-शत नमन - (कविता).....194
87. अगर परम पूज्य गुरुदेव का अवतरण न होता, तो क्या होता?.....195-197
88. गुरुवर आप महान् हैं - (कविता).....198
89. युगऋषि का आध्यात्मिक समाजवाद.....199-202
90. साक्षात्कार में उभरते अलौकिक लीला प्रसंग.....203-204
91. महिला जागृति के प्रणेता : इक्कीसवीं सदी-नारी सदी के उद्घोषक.....205-207
92. सृजन शक्ति सन्धान यज्ञ में - (कविता).....208
93. इक्कीसवीं सदी-नारी सदी- के प्रवक्ता व द्रष्टा.....209-212
94. नारी समाज के प्रति असीम करूणा.....213-214

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

95. उन्होंने हरिद्वार को नई पहचान दी 215
96. बलि प्रथा के प्रबल विरोधी पूज्य गुरुदेव - (संस्मरण) 216-217
97. मानव को देवात्मा हिमालय का संदेश - (कहानी) 218-220
98. सृजन क्रांति का केन्द्र होगा भारत 221-222
99. प्रखर जीवन साधना के सजल सूत्र 223-224
100. पूज्य गुरुदेव के रहस्यमय क्षण - (संस्मरण) 225-226
101. बच्चों में स्नेह-वात्सल्य लुटाते पूज्यवर - (संस्मरण) 227-228
102. सृजन सेनानियों से गुरुदेव की अपेक्षा 229-231
103. आध्यात्मिक समाजवाद का मॉडल शांतिकुंज 232
104. सफल संचालिका परम वंदनीया माताजी 233-236
105. सतत सूक्ष्म संरक्षण देती हमारी गुरुसत्ता - (संस्मरण) 237-239
106. गुरुदेव के सपनों का विश्वविद्यालय 240-242
107. निजी खर्च के प्रति सजग एवं कठोर - (संस्मरण) 243-244
108. मितव्ययता उनके जीवन में कूट-कूट कर भरी थी - (संस्मरण) 245-246
109. करुणा की जीवंत मूर्ति हमारे गुरुदेव - (संस्मरण) 247-248
110. शिक्षक धर्म - ब्राह्मण धर्म 249-250
111. शिष्यत्व को धन्य बनाने वाली शिष्य संजीवनी 251-254
112. भारतीय संस्कृति के सजीव दर्पण - आचार्य प्रवर 255-256
113. शांतिकुञ्ज की संस्कारित भूमि 257-258
114. गायत्री परिवार के प्रति मूर्धन्यों के मत 259-261
115. श्रीराम शर्मा आचार्य के व्यक्तित्व पर सम्पन्न शोध कार्य 262-264
116. ब्रह्मकमल के ब्रह्मबीजों का विस्तार - सप्तद्वीपा वसुंधरा तक 265-268
117. महाप्रयाण की तैयारी 269-272
118. हीरक जयंती पर उभरे ऋषियुग्म के उद्‌गार - (विशेष प्रवचन) 273-276
119. भावी महाभारत की तैयारी 277
120. परमपूज्य गुरुदेव का अंतिम संदेश 278
121. परम वन्दनीया माताजी का अंतिम संदेश 279
122. ब्रह्मकमल का उद्‌घोष - (कविता) 280
123. Pt. Shriram Sharma Acharya : A Brief Bio-sketch 281-287
124. Feelings of an American Sadhak during one year stay at Shantikunj 288
125. Sprinkling of the seeds of Brahmakamal in the entire World 289-294
126. 18 Point pledge for creating a new world order of peace and prosperity 295-296

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्मकमल

ऐसी मान्यता है कि सृष्टि की उत्पत्ति परब्रह्म के संकल्प से हुई है। 'ब्रह्म संकल्प' के विकास के तथ्य को पौराणिक भाषा में महाविष्णु की नाभि से विकसित 'ब्रह्मकमल' कहा गया है। जिसमें से सृजनकर्ता ब्रह्मा विकसित हुए और उन्होंने सृष्टि की रचना की। ब्रह्मर्षि विश्वामित्र ने भी अपने ब्रह्मतेज से नूतन सृष्टि का सृजन कर ओजस, तेजस, वर्चस से संपन्न महामानवों से धरित्री को शोभायमान किया था।

आज की प्रतिकूलतम परिस्थितियों में वैसा ही प्रखर पराक्रम विश्वामित्र की कार्यस्थली-तपोभूमि में कठोर तपश्चर्या करके हमारे शताब्दी महापुरुष युगऋषि परम पूज्य गुरुदेव आचार्य श्रीराम शर्माजी ने किया है। उनने उज्ज्वल भविष्य का सतयुगी वातावरण का स्वप्न देखा व उसकी समग्र पृष्ठभूमि तैयार की। कठोर तप के माध्यम से उनके अंत:करण से भी वैसा ही ब्रह्मकमल प्रस्फुटित हुआ है जो पूर्ण सुविकसित पुष्पित होकर अनेकानेक ब्रह्मतेज युक्त आत्माओं के रूप में चरम स्थिति पर पहुँचकर सारे विश्वभर में ब्रह्मबीजों के रूप में फैल चुका है। उनके महाप्रयाण (1990) के बाद से विगत इक्कीस वर्षों में जो वातावरण बना है वह उसका साक्षी है।

ब्रह्मबीज के जागरण एवं ब्रह्मकमल के प्रस्फुटन की यह प्रक्रिया परम पूज्य गुरुदेव के एक दिव्य स्वप्न के उन्हीं के द्वारा उद्घाटन से आरंभ हुई। 1990 में मार्च माह का अंतिम सप्ताह में थे। वे कुछ वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं के अतिरिक्त किसी से मिलते नहीं थे। वह भी दिन में कभी एक बार। एक दिन उनने प्रात: ब्रह्म मुहूर्त में लगभग बीस उनके अंग अवयवों को बुलाया और कहा :

''मैंने एक विलक्षण स्वप्न देखा। मैंने देखा कि एक ब्रह्मकमल हिमालय से अवतरित हुआ, बड़ा होता चला गया और अगणित ब्रह्मबीजों में बदल गया। वे ही ब्रह्मबीज दिग्-दिगन्त में संव्याप्त हो गए। यह मेरा ऋषि जीवन जो मैंने 80 वर्ष का जिया है, उसी ब्रह्मकमल का स्वरूप है। मेरे जीवन के अस्सी ब्रह्मकमल खिले हैं। अब इन्हें-ब्राह्मणत्व के बीज को अंकुरित, पल्लवित करने का कार्य तुम सभी का है। ब्राह्मण इस युग में समाप्त हो गया है। सच्चे ब्राह्मण को ब्रह्मबीज ही जिन्दा रख पाएगा। तुम सभी मेरे जीवन से शिक्षा लेना एवं उन ब्रह्मकमलों की फसल उगाना, बढ़ाना, पुष्पित-पल्लवित करना। विश्वास रखना कि इससे भाव संवेदना से भरा पूरा स्वर्गोपम वातावरण धरती पर आकर रहेगा। इक्कीसवीं सदी के प्रथम दो दशक में युग परिवर्तन साकार रूप में लेता दिखाई देगा।''

हम सभी पूज्यवर के अनुयायी इस ''ब्रह्मकमल'' रूपी स्मारिका द्वारा उनकी जन्मशताब्दी के इस महोत्सव में उन्हें आश्वासन देना चाहते हैं कि उनका स्वप्न साकार होगा। ब्रह्म बीज के ब्रह्मकमल में विकसित होने की, मनुष्य में देवत्व के जागरण की-हर जन में प्रसुप्त सुसंस्कारिता के उभार की परम्परा जारी रहेगी। हम सभी सतयुग की वापसी को संकल्पित उस अभियान युगनिर्माण योजना के लिए एकजुट सिपाही हैं। सतयुग का सीधा संबंध ऋषि परम्परा से है। सतयुग को ही ब्रह्मयुग भी कहते हैं। अर्थात् ऐसे व्यक्तियों का जिस युग में वर्चस्व हो, जो ब्रह्मपारायण, सर्वहितार्थाय जीवन जीते हों, अपने पर कड़ा अंकुश लगाकर अपनी समस्त विभूतियाँ, समय, उपार्जन, यहाँ तक कि जीवन भी जो समाजोत्थान के लिए नियोजित करने की चाह रखते हों।

ऐसे ऋषिकल्प महामानवों को-देवमानवों को ब्राह्मण भी कहा जा सकता है। ब्राह्मण न जाति है, न वंश, न वेश है न वर्ण बल्कि कर्म से जिसका जीवन ब्राह्मणोपम हो। ऐसी मान्यता है कि ब्राह्मण वर्ग ही सबसे पहले आर्यावर्त ब्रह्मावर्त में अवतरित हुआ और ''एकोऽहम् बहुस्याम्'' की अभिलाषा उठने पर वह फैलता गया। ब्रह्मवर्त-आर्यावर्त से निकला ब्राह्मण समुदाय पूरे भारत वर्ष व फिर पूरे विश्व में फैल गया। उसी ने अनगढ़ों को सुगढ़ सुसंस्कृत बनाया और सारा वातावरण

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

सतयुगी हो गया। आज वही ब्राह्मण वंश लुप्त हो गया है।

हिमालय क्षेत्र में दुर्लभ वनौषधियाँ जो कभी चमत्कारी कायाकल्प करती थीं, धीरे-धीरे लुप्त होती चली जा रही हैं। गिर के सिंह की बड़ी ख्याति है किन्तु उसका वंश ही धीरे-धीरे लुप्त हो रहा है। लगभग यही स्थिति ब्राह्मण वर्ग की हो गयी है। कभी तैंतीस कोटि भारतवासी ब्राह्मण जीवन जीने वाले ही देवता कहलाते थे। आज वह परम्परा लुप्त हो गयी है। दैवी सम्पदा को लेकर जीवित रह लेने वाले कम रह गए। आसुरी संपदा-लोभ, मोह, अहं पर ही अपना निर्वाह चलाने वाले व्यक्ति बढ़ते चले गए हैं। यदि सतयुग की वापसी करनी है तो हमें लुप्त ब्राह्मण परम्परा को पुनः जागृत करना होगा। इसी से देवमानवों की वह बेल उगायी, बढ़ायी और विकसित की जा सकती है, जो ब्रह्मबीज से ब्रह्मकमल का रूप लेने-ब्राह्मणत्व के विस्तार की प्रक्रिया को साकार रूप देने की भूमिका निभा सके।

इक्कीसवीं सदी निश्चित ही नवयुग के आगमन का शुभ संकेत लेकर आ रही है। इसमें ब्रह्मपारायण व्यक्तित्व उभरेंगे। आधार वही बनेगा जो जीवन आचार्यश्री ने जिया, जो विचार उनने दिए। इसी से सतयुगी वातावरण धरती पर आएगा। इसको सात्विकता, सद्भावना और सहकार से भरी पूरी परिस्थितियाँ पुनः दृश्यमान होंगी। उत्कृष्ट जीवन जीने वाले, हँसती-हँसाती, खिलती-खिलाती, मिलजुलकर रहने वाली जिन्दगी जीने वाले देवपुरुष धरती पर जी रहे होंगे। दिव्य प्रतिभा सम्पन्न महापुरुषों की एक विलक्षण फसल उगेगी। युवाशक्ति से लेकर प्रतिभा संपन्न नारी शक्ति सभी नवनिर्माण में तत्पर देखे जा सकेंगे। वेश उनका कुछ भी हो पर मन से ये सभी ब्राह्मण होंगे। यह दिव्य स्वप्न साकार होने को है। गुरुवर की ही अभिव्यक्ति कवि की पंक्तियों से हुई है-

''ब्रह्मतेज से चमक उठे फिर भारत देश हमारा।

और विश्व को आत्मज्ञान का फिर से दिया उजाला॥

मेरे ब्रह्मकमल ने खिलकर, यह उद्घोष लगाया।

मैंने जीवन त्याग, तितीक्षा, तप में सतत गलाया॥''

ये पंक्तियाँ हम सबके लिए भावी जीवन हेतु मार्गदर्शक हैं। प्रस्तुत स्मारिका एक पुष्पों का गुलदस्ता है जिसे चुन चुनकर सजाने का कार्य एक बहुत बड़ी टीम ने किया है। इसमें गुरुसत्ता का जीवन दर्शन है, उनके जीवन भर के सारे कार्यों का एक स्थान पर संकलन है। गुरुदेव का अस्सी वर्ष का जीवन एक ऐसे दैवी अभियान की कथा गाथा है, जिसकी मिसाल और कहीं देखने को नहीं मिलती। इसमें विगत कई हजार वर्षों के महापुरुषों के जीवन का निचोड़ है तो शास्त्र ग्रंथों की शिक्षाएँ हैं। इसमें आधुनिकतम आज के युवा के लिए भी जीवन की दशा व दिशा का बोधपरक मार्गदर्शन है। इस सबको समेटकर एक तीन सौ से अधिक पृष्ठ के कलेवर की पत्रिका में रख देना एक बड़ा कठिन पुरुषार्थ था। गोवर्धन सबने मिलकर उठाया था पर नन्हीं ऊँगली तो बाल श्रीकृष्ण की लगी थी। हमने सभी ने गोवर्धन उठाया है पर ऊँगली नियन्ता सत्ता गुरुदेव की ही है, हमारी तो बस लकुटिया है जो नाम मात्र की है।

इस कार्य में सम्पादन से जुड़े, कंपोजिंग से जुड़े, टाइपिंग-प्रिण्टिंग से जुड़े एवं सज्जा से जुड़े लगभग डेढ़ सौ कार्यकर्त्ता लगे हैं। अनवरत दिन रात कार्य किया गया है। सभी समर्पित समयदानी हैं, युवा भी हैं एवं मार्गदर्शक अनुभवी बुजुर्ग भी। सभी वरिष्ठों से मार्गदर्शन लेकर इस गुलदस्ते को और सुन्दरतम बनाने का प्रयास किया गया है। इसमें अनुभूतियों का महासागर है जो छोटी-छोटी कथाओं से लेकर गुरुवर की शिक्षाओं-सद्वाक्यों में समाया हुआ है। यह सारा वृत्तान्त एक स्थान पर कहीं मिल सके यह हम सबका प्रयास रहा है। ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान, देव संस्कृति विश्वविद्यालय का पत्रकारिता विभाग, ''दिया'' के देश भर के युवा कार्यकर्त्ता, हमारे आई.टी. क्षेत्र के प्राणवान कार्यकर्त्ता, पी.पी.डी. के रात दिन काम करने वाले भाई, कम्प्यूटर विभाग के हमारे सहयोगी एवं सम्पादन से जुड़े विशेषज्ञगण सभी के समन्वित पुरुषार्थ की परिणति है यह **ब्रह्मकमल**। यह उसी विराट ब्रह्मकमल रूपी गुरुसत्ता को उनके जन्मशताब्दी महोत्सव की पावन वेला में सादर समर्पित है।

-ब्रह्मवर्चस्

धन्य हैं वे लोग, जिनका जीवन परोपकार के हवन कुण्ड में समिधा बनकर जल जाता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



राष्ट्रपति
भारत गणतंत्र
PRESIDENT
REPUBLIC OF INDIA

MESSAGE

I am happy to learn that the Gayatri Teerth, Shantikunj is bringing out a Souvenir "Brahmakamal" on the occasion of the Birth Centenary Celebrations – "Acharya Shriram Sharma Janmashatabdi Mahotsav", founder of the All World Gayatri Pariwar during November 6-10, 2011 at Haridwar.

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Pt. Shriram Sharma devoted his life for the welfare of people and the refinement of the moral and cultural environment. His personality was a harmonious blend of a saint and spiritual scientist. The goal of human life is the realization of the ultimate truth, which alone can give human mind supreme fulfillment and everlasting peace. This was the essence of the Acharya's message.

I extend my warm greetings and felicitations to all those associated with the Gayatri Pariwar and wish the Souvenir and the Celebrations every success.

Pratibha Patil

(Pratibha Devisingh Patil)

New Delhi
October 12, 2011

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हरीश खरे
प्रधान मंत्री के मीडिया सलाहकार

प्रधान मंत्री कार्यालय
नई दिल्ली - 110101
PRIME MINISTER'S OFFICE
New Delhi - 110101

संदेश

प्रधान मंत्री जी को यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि अखिल विश्व गायत्री परिवार, गायत्री तीर्थ, शान्तिकुंज, हरिद्वार इस वर्ष पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी की जन्म शताब्दी के अवसर पर दिनांक 6 से 10 नवंबर, 2011 तक "आचार्य श्रीराम शर्मा जन्म शताब्दी महोत्सव" का आयोजन कर रहा है जिसमें "ब्रह्मकमल" स्मारिका प्रकाशित की जा रही है।

प्रधान मंत्री जी स्मारिका के सफल प्रकाशन की कामना करते हैं और जन्म शताब्दी महोत्सव से जुड़े सभी लोगों को अपनी शुभकामनाएं भेजते हैं।

(हरीश खरे)

नई दिल्ली
दिनांक 24 अक्तूबर, 2011

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



Dr. APJ Abdul Kalam
Former President of India

25 October 2011

Message

I am delighted to know that members of Gayatri Teerath Shantikunj Haridwar are celebrating the birth centenary of the founder of all World Gayatri Pariwar Gurudev Rev. Pandit Shriram Sharma Acharya during the period 6 - 10 November 2011 and also releasing a souvenir called ***"Brahmakamal"*** on this historic occasion.

Thinking of Gayatri Mantra, I recall an experience which I would like to share with you. One of my friends Dhan Shyam Sharma who has been constantly chanting a Mantra everyday morning after bath, whether he is in Delhi or any other city in India or abroad. One day, I asked Dhan Shyam, what was he chanting? He told me that he is reciting the Gayatri Mantra everyday at-least 108 times after bath. On some special occasions, he chants over 216 times. I asked him to chant the Gayatri Mantra in my presence and he chanted the Mantra beautifully. When I asked about the meaning of this Mantra, he gave the meaning as

(We meditate on) Om (which pervades) earth,
intervening space and Swarga (heaven).
May we contemplate on the desirable radiance of
The Sun-God; May He guides our intellects.

The name Gayatri Mantra literally means; "*the Mantra protects the one who chants it*". Chanting the Gayatri Mantra, invokes dignity and blesses one with spiritual illumination, cosmic energy, intelligence, subtle discrimination, creative vision and healing powers. This philosophy has been propagated by Gurudev Pt Shriram Sharma Acharya through out the world and many of his disciples continuously chant Gayatri Mantra for the protection of the Universe. Let us all pay our respects to Gurudev Pt. Shriram Sharma Acharya who has worked through out His life for human welfare and prosperity by chanting the unique Gayatri Mantra.

APJ Abdul Kalam

10, Rajaji Marg, New Delhi – 110 011, India
Email: apj@abdulkalam.com
www.abdulkalam.com

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

NEW JERSEY GENERAL ASSEMBLY
UPENDRA J. CHIVUKULA
Assemblyman, 17th District
888 Easton Avenue Somerset, NJ 08873;
Phone: 732-247-3999; Fax: 732-247-4383



www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Dear Friends,

It is with great pleasure for me to wish the Revered Pandit Shiriram Sharma Acharya, founder of All World Gayatri Center, a happy Birth Centenary.

Pandit Shriam Sharma Acharya firmly demonstrated and shared with the public the importance of leading a clean and healthy life. This was only complimented by his charity and selflessness. His teachings have spread across the world including the Gayitri Chetna Center in Piscataway, New Jersey which is part of the 17th State Legislative District that I represent.

Once again congratulations on this historic milestone. I wish the participants a wonderful event.

Sincerely,

Upendra Chivukula
NJ Assemblyman, D-17

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org





मोहन म भागवत ▮ सुरेश भय्या स जोशी

पत्र क्रमांक : तिथी : आश्विन कृ. १ दिनांक १२.१०.२०११

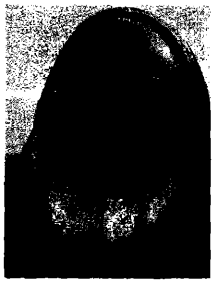
विश्व और मानवता पर मंडरानेवाले संकटों के बादलों का परिहार आज विश्व में प्रचलित किसी विधा अथवा शैली में दिखायी नही देता। केवल भारत के प्राचीन विचारधन के आधारपर युगानुकूल भारतीय जीवन की पुनर्रचना ही विनाश से विश्व को उबारने का उपाय बन सकती है। परंतु भारत का विचार मात्र तर्क नहीं है। वह प्रत्यक्षानुभूति व आचरण के मुर्तिमान जीवंत उदाहरणों से ही पूर्णता व समग्रता में समझा व अपनाया जा सकता है। भारतवर्ष का यह सौभाग्य है कि प्रत्येक युगसंधि पर किसी न किसी युगऋषि का अवतरण होकर उनके द्वारा स्वयं के आत्मविलय से वटवृक्ष निर्माण करनेवाले बीज जैसा यह कार्य संपन्न होते आया है। विश्वकल्याण के लिए भारत को स्वयं के ईश्वरप्रदत्त कर्तव्य को निभाने की शक्ति देनेवाला यह सृजन इस युग में संपन्न करनेवाले युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. आचार्य श्रीराम शर्मा थे। बीज ने अपना काम कर दिया। अब हम उस बीज से उत्पन्न शाखापुष्पफलपल्लवादि अपना कर्तव्य पूर्ण करें यही प्रेरणा आचार्यवर की जन्मशति के वर्ष के समारोहों से संकल्पयुक्त होकर हम प्राप्त करें व समाज में उसको व्याप्त करे। संपूर्ण मनोयोग से मैं जन्मशति वर्ष के सफल सार्थक आयोजन के लिए शुभचिंतन व प्रार्थना निवेदित करता हूँ।

(मोहन भागवत)

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

SWAMI DAYANANDA SARASWATI



September 30, 2011

Dear Dr. Pranav Pandyaji,

Namaskar.

I am very happy to know that you are bringing out a commemorative volume on the occasion of the Birth Centenary of the Founder of the Gayatri Pariwar, Revered Pandit Shriram Sharma Acharya.

Achara Shri was a visionary with scholarship and dedication. He also had the courage to stand by his conviction and could inspire thousands of volunteers to carry the Gayatri of the Vedas to the remote villages and urban slums, as well, by making the sacred mantra available for everyone who came to receive the initiation. He has made Hindus as vaidikas, no more vulnerable to coercions of aggressive proselytizers. All of us who are the beneficiaries of Hindu Dharma hold him in reverence and gratitude. He will forever remain a shining star in the firmament of Vaidika Dharma.

With Pranams,

Swami Dayananda

Arsha Vidya Gurukulam
Anaikatti (PO)
Coimbatore 641 108, INDIA
Ph. 0422 858269 / 657001 Fax. 657002

Swami Dayananda Ashram
Purani Jhadi, Rishikesh 249 201
Uttaranchal, INDIA
Ph & Fax. 0135 430769

Arsha Vidya Gurukulam
PO Box 1059
Saylorsburg, PA 18353-1059 USA
Ph. 570 992 2339 Fax. 570 992 7150 9617

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

isha
FOUNDATION
15, Govindaswamy Naidu Layout, Singanallur, Coimbatore - 641 005 INDIA.
Tel: + 91 - 422 - 2582040, Telefax: + 91 - 422 - 2582080



MESSAGE

Pandit Shriram Sharma ji's life is a great example of *sadhana*, *seva* and *shraddha*, which has been an inspiration to all people. His vast scholarship of the scriptures and his effort to present it to the layman, in the form of lucid translations and insightful commentaries, has initiated and nurtured the spiritual quest of millions of people.

The world is greatly indebted to him for his endeavor to articulate the treasures contained in Indian culture and spirituality in contemporary terms and for his pioneering efforts towards scientific validation of the eternal truths propounded by our scriptures.

It is very heartening to see his efforts bear such rich fruits and the same being taken forward by the millions of members of the All World Gayatri Pariwar.

I wish them all the success in taking Pandit ji's message to every corner of the world.

With Love and Blessings,

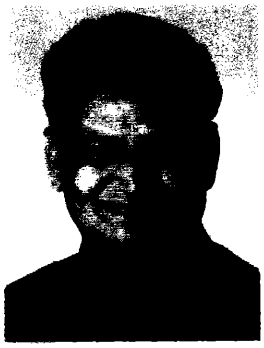
Sadhguru

(Sadhguru)
Founder, Isha Foundation
5th Oct, 2011

Yoga Center : Velliangiri Foothills, Coimbatore - 641 114 INDIA. ✆ + 91 - 422 - 2515345
info@ishafoundation.org www.ishafoundation.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



मुख्य मंत्री
राजस्थान

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि शांतिकुंज, हरिद्वार द्वारा अखिल विश्व गायत्री परिवार के संस्थापक गुरूदेव पंडित आचार्य श्रीराम शर्मा की जन्म शताब्दी महोत्सव का 6–10 नवम्बर, 2011 तक आयोजन एवं इस अवसर पर 'ब्रह्म कमल' नाम से स्मृति ग्रंथ का प्रकाशन किया जा रहा है।

समाज के लिए समर्पित महानुभावों की जन्म शताब्दी के अवसर पर इस प्रकार का प्रकाशन अपने आप में महत्वपूर्ण है। इससे उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के साथ ही सार्वजनिक जीवन में की गई सेवाओं को प्रकाशमान करने का मार्ग प्रशस्त होता है।

आशा है स्मृति ग्रंथ में पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के जीवन आदर्शों के साथ उनके सामाजिक एवं रचनात्मक दृष्टिकोण के विभिन्न पहलुओं पर उपयोगी एवं उद्देश्यपूर्ण सामग्री का समावेश किया जा सकेगा।

मैं श्री आचार्य को श्रद्धापूर्वक स्मरण एवं नमन करते हुए स्मृति ग्रंथ के प्रकाशन की सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

(अशोक गहलोत)

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



दिनांक : १४-१०-२०११

संदेश

स्वतंत्रता आंदोलन की सफलता के बाद देश में नैतिक एवम् सामाजिक क्रांति के लिये जनचेतना को जागृत करने हेतु सदियों से सुषुप्त और महाशक्ति का गहन शक्तिस्त्रोत समान गायत्री महामंत्र को सर्वजन सुलभ बनाकर समाज में **अपना सुधार संसार की सबसे बडी सेवा** का मंत्र देनेवाले पंडित श्रीराम शर्मा आचार्यजीने गायत्री के २४ महा पुरश्चरण की कठीन तपश्चर्या करके आध्यात्मिक एवम् सामाजिक क्रांति की है । युग पुरूष के रूप में चार वेद, १०८ उपनिषद और पुराणों सहित प्राचीन संस्कृत वांगमय को सरल हिन्दी भाषा में अनुदित करने के साथ-साथ अन्य क्रांति धर्मी साहित्य की रचना करनेवाले पं. श्रीराम शर्मा आचार्यजी की जन्म शताब्दी के अवसर पर शांतिकुंज हरिद्वार द्वारा एक बृहद स्मृतिग्रंथ प्रकाशित हो रहा है यह जानकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई ।

स्वतंत्रता संग्राम में **श्रीराम मंत्र** के नाम से विभिन्न पत्रिकाओं में प्रखर राष्ट्रवाद और शौर्यपूर्ण संपादकीय लेखो के माध्यम से जन-जन को झंकृत करने का योगदान और इसके लिये जेलवास सह कर भी आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभानेवाले आचार्यजी ने मथुरा में गायत्री तपोभूमि की स्थापना करके और बाद में हरिद्वार शांतिकुंज के गायत्री तीर्थ की स्थापना की और उनके द्वारा स्थापित देव संस्कृति विश्व विद्यालय ने शिक्षा के क्षेत्र में एक नया मोडेल प्रस्तुत किया है ।

मा गायत्री का साक्षात्कार करनेवाले इस महामानव का जीवन बह्मकमल समान बन गया और अपने जीवन काल की ८० ब्रह्मकमल पाँचडी के रूप में समस्त विश्व को बहुत बडा अनुदान दिया है ।

पं. श्रीराम शर्माजी की जन्म शताब्दी की पावन बेला में इक्कीसवीं सदी के उज्जवल भविष्य के लिये हो रही विशेष साधना में संलग्न लाखो साधको के प्रति अत्यंत आदरपूर्वक इस समारोह और स्मृतिग्रंथ के प्रकाशन की सफलता के लिये हार्दिक शुभकामना और पूज्यतर के चरणो में सादर प्रणाम ।

आपका,

(नरेन्द्र मोदी)

प्रति,
श्री प्रणव पंण्डया, प्रमुख,
अखिल विश्व गायत्री परिवार,
शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार ।
Email : shantikunj@awgp.org

नरेन्द्र मोदी
मुख्य मंत्री, गुजरात राज्य

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



D.O. No. CMH-2011 /.....

भूपेन्द्र सिंह हुड्डा
BHUPINDER SINGH HOODA

मुख्य मन्त्री, हरियाणा,
चण्डीगढ़।
CHIEF MINISTER, HARYANA,
CHANDIGARH.

Dated 7/9/2011

सन्देश

मुझे यह जानकर हर्ष हुआ कि शान्तिकुंज, हरिद्वार द्वारा अपने गुरूदेव एवं अखिल विश्व गायत्री परिवार के संस्थापक पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी की जन्म शताब्दी के अवसर पर 6 से 10 नवम्बर, 2011 तक हरिद्वार में 'आचार्य श्रीराम शर्मा जन्म शताब्दी महोत्सव' का आयोजन किया जा रहा है।

मुझे खुशी है कि इस अवसर पर उनके विराट व्यक्तित्व से लोगों को अवगत करवाने के लिए 'ब्रह्मकमल' नामक स्मृति ग्रंथ का विमोचन भी किया जाएगा।

भारत में प्राचीन समय से ही अनेक ऋषि– मुनियों तथा सन्त–महात्माओं ने अपने दिव्य सन्देशों से हमें नई स्फूर्ति और प्रेरणा दी है। हमारे सन्त–महात्माओं ने जो नैतिक मूल्य स्थापित किये और जीने का जो रास्ता बताया, उस पर चलकर मानव अपना जीवन सफल कर सकता है। नैतिक मूल्यों को जीवन में अपनाने से संयम, साहस और संघर्ष करने के गुण तो पैदा होते ही हैं, साथ ही सेवा, त्याग और परोपकार की भावनाएं भी मजबूत होती हैं।

युगऋषि, वेदमूर्ति तथा तपोनिष्ठ जैसी उपाधियों से विभूषित पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी भी ऐसे ही महान विभूति थे, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन मानव सेवा को समर्पित कर दिया। उन्होंने जहाँ सनातन धर्म को समयानुसार जनसुलभ बनाने का प्रयास किया, वहीं मानवता के लिए चुनौती बनी समस्याओं के समाधान और विकास का मार्ग प्रशस्त करने के लिए प्रचुर मात्रा में साहित्य की रचना भी की।

मुझे आशा है कि आचार्य जी की स्मृति में प्रकाशित किया जा रहा 'ब्रह्मकमल' नामक ग्रंथ सुधी पाठकों के लिए प्रेरणादायक सिद्ध होगा।

मैं 'आचार्य श्रीराम शर्मा जन्म शताब्दी महोत्सव' के सफल आयोजन के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(भूपेन्द्र सिंह हुड्डा)

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ॐ
भारतमाता मंदिर
BHARATMATA MANDIR
समन्वय कुटीर, सप्त सरोवर : हरिद्वार (उ.प्र.) भारत

स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरि
निज जगद्गुरु शंकराचार्य, ज्योतिर्पीठ शासक

Samanvaya Kutir, Sapta Sarowar : Hardwar (U.P.) India
Tel: Office - 426256, Mandir - 421181

दीपावली 2011

ॐ

पद्म पत्रमिवाम्भसा" कमल जल में निर्लिप्त रहते हुये अपना सौन्दर्य, सौरभ एवं कोमलता विश्व को वितरित करता रहता है। कमल की एक ही कठिनाई है कि वह जल से विलग होने पर मुरझा जाता है और अंततः अपने ही इन गुणों का भी परित्याग कर देता है। किंतु परमात्मा के कृपासरोवर के एक अद्भुत कमल का नाम है आचार्य श्री राम शर्मा। जगत में रहकर भी निरासक्त जीवन द्वारा लक्ष कोटि जनों के बुद्धिकमल, हृदयकमल एवं कृतिकमल को प्रस्फुटित करने वाले उन महापुरुष का स्मरण भी व्यक्ति को आत्मिक आनंदों से परिपूर्ण कर देता है।

सादा जीवन उच्च विचार, के वे मूर्तिमान आदर्श थे। आत्मीयता के वे निर्झर थे जिसमें से शीतलता के झरने झरते थे। आत्मनिर्भरता, स्वावलंबन एवं स्वेद के सीकर झरते थे और जीवन को खिलने का एक सुरक्षित परिवेश। युगऋषि आचार्य पंडित श्री राम शर्मा के आशीर्वाद की छाया (जो) सदा मिलती रही है भविष्य में उनके आत्मजीवी साधकों को मिलती रहेगी ऐसा मेरा विश्वास है।

पुस्तक "कमल" की प्रकाशन [illegible]

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



Shashthpithadhishwar
Goswami Shree Dwarkeshlalji Maharaj

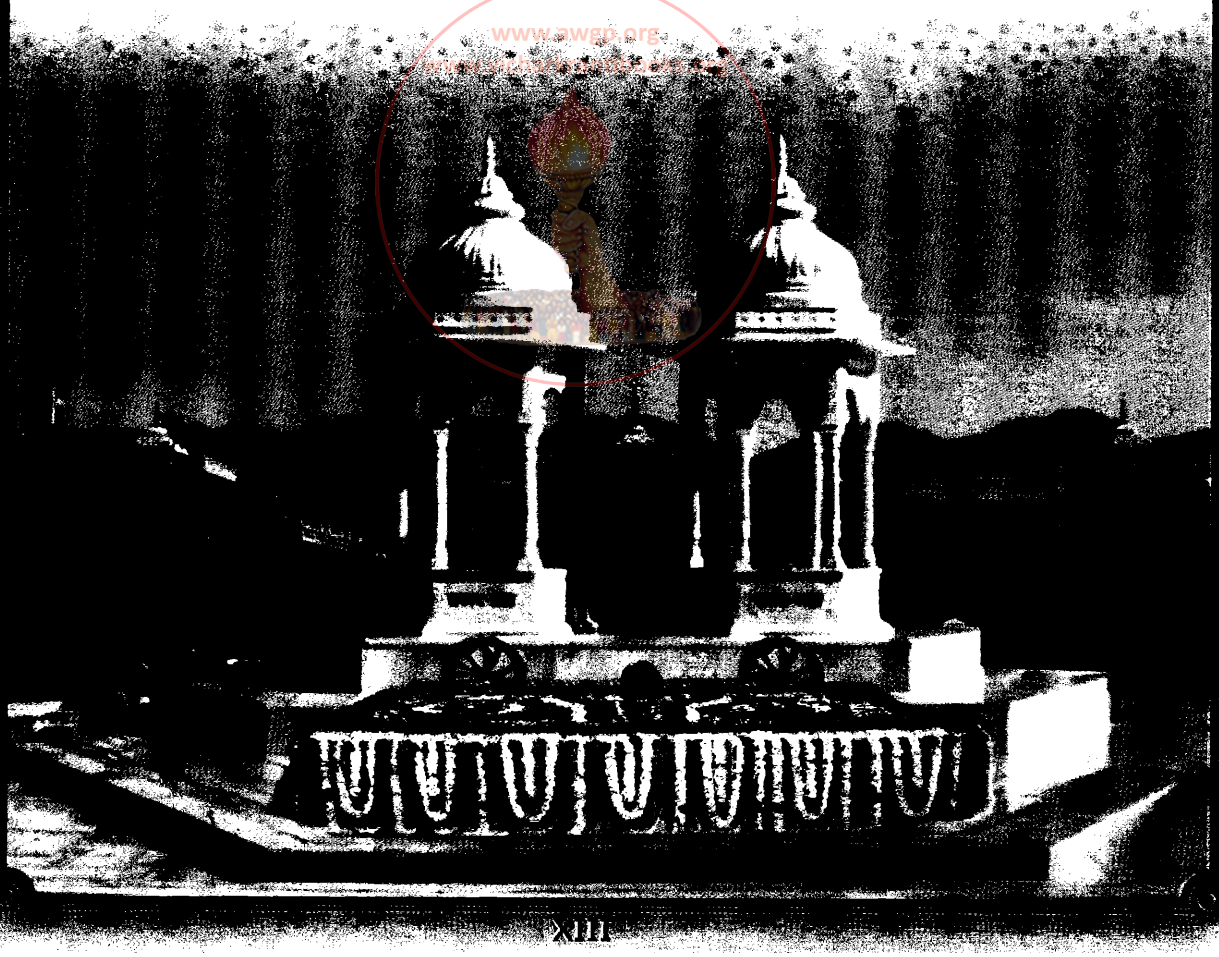
www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा

ऋषियुग्म पूज्य गुरुदेव एवं वंदनीया माताजी का मूर्तिमान प्रतीक,
शांतिकुंज का हृदय-स्थल, जन-जन का श्रद्धा केन्द्र
'प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा'



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



- पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



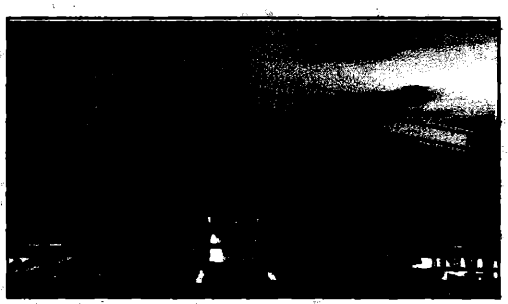
वन्दनीया माता भगवती देवी

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



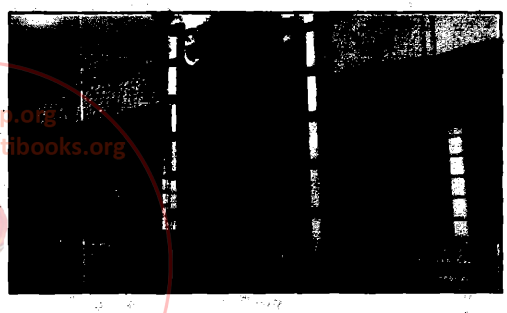
शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार



जन्मभूमि आंवलखेड़ा



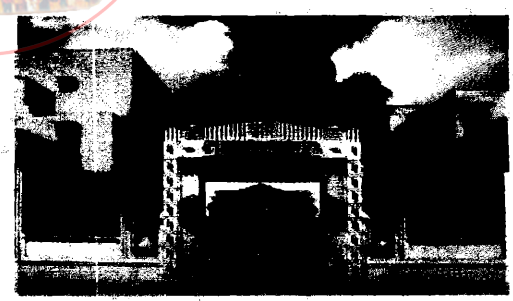
ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान



अखण्ड ज्योति संस्थान



देव संस्कृति विश्वविद्यालय



गायत्री तपोभूमि मथुरा

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हमारी वसीयत और विरासत

हमने अपने भावी जीवनक्रम के लिए जो महत्त्वपूर्ण निर्धारण किए हैं, उनमें सर्वोपरि है लोक चिंतन को सही दिशा देने हेतु एक ऐसा विचार प्रवाह खड़ा करना जो किसी भी स्थिति में अवांछनीयताओं को टिकने ही न दे। आज जन समुदाय के मन-मस्तिष्क में जो दुर्गति घुस पड़ी है, उसी की परिणति ऐसी परिस्थितियों के रूप में नजर आती है, जिन्हें जटिल, भयावह समझा जा रहा है। ऐसे वातावरण को बदलने के लिए व्यास की तरह, बुद्ध, गाँधी, कालमार्क्स की तरह, मार्टिन लूथर किंग, अरविंद, महर्षि रमण की तरह भूमिका निभाने वाले मुनि व ऋषि के युग्म की आवश्यकता है, जो प्रत्यक्ष एवं परोक्ष प्रयासों द्वारा विचार क्रान्ति का प्रयोजन पूरा कर सके, यह पुरुषार्थ अन्तःक्षेत्र की प्रचण्ड तप साधना द्वारा ही सम्भव हो सकता है। इसका प्रत्यक्ष रूप युग मनीषा का हो सकता है, जो अपनी शक्ति द्वारा उत्कृष्ट स्तर का साहित्य रच सके जिसे युगान्तकारी कहा जा सकता है। अखण्ड-ज्योति के माध्यम से जो संकल्प हमने लिया था उसे अनवरत निभाते रहने का हमारा नैतिक दायित्व है।

युग ऋषि की भूमिका अपने परोक्ष रूप में निभाते हुए उन अनुसंधानों की पृष्ठ भूमि बनाने का हमारा मन था जो वैज्ञानिक अध्यात्म का प्रत्यक्ष रूप इस तर्क, तथ्य, प्रमाणों को आधार मानने वाले समुदाय के समक्ष रख सकें। आज चल रहे वैज्ञानिक अनुसंधान यदि उनसे कुछ दिशा लेकर सही मार्ग पर चल सकें तो हमारा प्रयास सफल माना जाएगा। आत्मानुसंधान के लिए अन्वेषण कार्य किस प्रकार चलना चाहिए, साधना-उपासना का वैज्ञानिक आधार क्या है? मनःशक्तियों के विकास में साधना उपचार किस प्रकार सहायक सिद्ध होते हैं? ऋषिकालीन आयुर्विज्ञान का पुनर्जीवन कर शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को कैसे अक्षुण्य बनाए जा सकता है, गायत्री की शब्द शक्ति एवं यज्ञाग्नि की ऊर्जा कैसे व्यक्तित्व को सामर्थ्यवान् एवं पवित्र तथा काया को जीवनी शक्ति सम्पन्न बनाकर प्रतिकूलताओं से जूझने में समर्थ बना सकती है, ज्योतिर्विज्ञान के चिर पुरातन प्रयोगों के माध्यम से आज के परिप्रेक्ष्य में मानव समुदाय को कैसे लाभान्वित किया जा सकता है, ऐसे अनेक पक्षों को हमने अथर्ववेदीय ऋषि परम्परा के अंतर्गत अपने शोध प्रयासों में अभिनव रूप में प्रस्तुत कर दिया है। हमने उनका शुभारंभ कर बुद्धिजीवी समुदाय को एक दिशा दी है, आधार खड़ा कर दिया है। परोक्ष रूप में हम उसे सतत् पोषण देते रहेंगे। सारे वैज्ञानिक समुदाय का चिंतन इस दिशा में चल पड़े, आत्मिकी के अनुसंधान में अपनी प्रज्ञा नियोजित कर वे स्वयं को धन्य बना सकें, ऐसा हमारा प्रयास रहेगा। सारी मानव जाति को अपनी मनीषी के द्वारा एवं शोध अनुसंधान के निष्कर्षों के माध्यम से लाभान्वित करने का हमारा संकल्प सूक्ष्मीकरण तपश्चर्या की स्थिति में और भी प्रखर रूप ले रहा है। इसकी परिणतियाँ आने वाला समय बताएगा।

हमारी निज की अनुभूति है कि असुरता द्वारा उत्पन्न हुई-विभीषिकाओं को सफल नहीं होने दिया जाएगा। परिवर्तन इस प्रकार होगा कि जो लोग इस महाविनाश में संलग्न हैं, इसकी संरचना कर रहे हैं, वे उलट जाएँगे या उनके उलट देने वाले नए पैदा हो जाएँगे। विश्व-शान्ति में भारत की निश्चित ही कोई बड़ी भूमिका हो सकती है।

समस्त संसार के मूर्धन्यों, शक्तिवानों और विचारवानों की आशंका एक ही है कि विनाश होने जा रहा है। हमारा अकेले का कथन यह है कि उलटे को उलट कर ही सीधा किया जाएगा। हमारे भविष्य कथन को अभी ही बड़ी गंभीरतापूर्वक समझ लिया जाय। विनाश की घटाओं को तूफानी प्रवाह अगले दिनों उड़ाकर कहीं ले जाएगा और अंधेरा चीरते हुए प्रकाश से भरा वातावरण दृष्टिगोचर होगा। यह ऋषियों के पराक्रम से ही सम्भावित है, इसमें कुछ दृश्यमान् व कुछ परोक्ष भूमिका भी हो सकती हैं।

भाव-संवेदना जहाँ जीवंत-जाग्रत् होती है, वहाँ स्वतः ही सतयुगी वातावरण विनिर्मित होता चला जाता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

यह मानकर चलना चाहिए कि सामान्य स्तर के लोगों की इच्छा शक्ति भी काम करती है। जनमत का भी दबाव पड़ता है। जिन लोगों के हाथ में इन दिनों विश्व की परिस्थितियाँ बिगाड़ने की क्षमता है, उन्हें जाग्रत लोकमत के सामने झुकना ही पड़ेगा। लोकमत को जाग्रत करने का अभियान 'प्रज्ञा-आंदोलन' द्वारा चल रहा है। यह क्रमशः बढ़ता और सशक्त होता जाएगा। इसका दबाव हर प्रभावशाली क्षेत्र की समर्थ शक्तियों पर पड़ेगा और उनका मन बदलेगा कि अपने कौशल चातुर्य को विनाश की योजनाएँ बनाने की अपेक्षा विकास के निमित्त लगाना चाहिए। प्रतिभा एक महान् शक्ति है। वह जिधर भी अग्रसर होती है, उधर ही चमत्कार प्रस्तुत करती जाती है।

वर्तमान समस्याएँ एक-दूसरे से गुथी हुई हैं। एक से दूसरी का घनिष्ट संबंध है, चाहे वह पर्यावरण हो अथवा युद्ध सामग्री का जमाव, बढ़ती अनीति-दुराचार हो अथवा अकाल-महामारी जैसी दैवी आपदाएँ। एक को सुलझा लिया जाए और बाकी सब उलझी पड़ी रहें, ऐसा नहीं हो सकता। समाधान एक मुश्त खोजने पड़ेंगे और यदि इच्छा सच्ची है, तो उनके हल निकल कर ही रहेंगे।

शक्तियों में दो ही प्रमुख हैं। इन्हीं के माध्यम से कुछ बनता या बिगड़ता है। एक शस्त्रबल - धनबल। दूसरा बुद्धिबल - संगठन बल। पिछले बहुत समय से शस्त्रबल और धनबल के आधार पर मनुष्य को गिराया और अनुचित रीति से दबाया और जो मन में आया सो कराया जाता रहा है, यही दानवी शक्ति है। अगले दिनो दैवी शक्ति को आगे आना है और बुद्धिबल तथा संगठन बल का प्रभाव अनुभव कराना है। सही दिशा में चलने पर यह दैवी सामर्थ्य क्या कुछ दिखा सकती है, इसकी अनुभूति सबको करानी है।

न्याय की प्रतिष्ठा हो, नीति को सब ओर से मान्यता मिले, सब लोग हिल-मिलकर रहें और मिल-बाँटकर खाएँ, इस सिद्धांत को जन भावना द्वारा सच्चे मन से स्वीकारा जाएगा, तो दिशा मिलेगी, उपाय सूझेंगे, नई योजनाएँ बनेंगी, प्रयास चलेंगे और अन्ततः लक्ष्य तक पहुँचने का उपाय बन ही जाएगा।

''आत्मवत् सर्वभूतेषु'' और ''वसुधैव कुटुम्बकम'' यह दो ही सिद्धांत ऐसे हैं, जिन्हें अपना लिए जाने के उपरांत तत्काल यह सूझ पड़ेगा कि इन दिनों किन अवांछनीयताओं को अपनाया गया है और उन्हें छोड़ने के लिए क्या साहस अपनाना पड़ेगा, किस स्तर का संघर्ष करना पड़ेगा? मनुष्य की सामर्थ्य अपार है। वह जिसे करने की यदि ठान ले और औचित्य के आधार पर अपना ले तो कोई कठिन कार्य ऐसा नहीं है, जिसे पूरा न किया जा सके।

अगले दिनों एक विश्व, एक भाषा, एक धर्म, एक संस्कृति का प्रावधान बनने जा रहा है। जाति, लिंग, वर्ण और धन के आधार पर बरती जाने वाली विषमता का अन्त निकट आ गया। इसके लिए जो कुछ करना आवश्यक है, वह सूझेगा भी, और विचारशील लोगों के द्वारा पराक्रम पूर्वक किया भी जाएगा। यह समय निकट है। इसकी हम सब उत्सुकता से प्रतीक्षा कर सकते हैं।

हमारा परिजनों से यही अनुरोध है कि हमारी जीवनचर्या को घटनाक्रम की दृष्टि से नहीं वरन् पर्यवेक्षक की दृष्टि से पढ़ा जाना चाहिए कि उसमें दैवी अनुग्रह के अवतरण होने से ''साधना से सिद्धि'' वाला प्रसंग जुड़ा या नहीं। इसी प्रकार यह भी दृष्टव्य है कि दूसरों के अवलंबन योग्य आध्यात्मिकता का प्रस्तुतिकरण करते हुए हमारे कदम ऋषि परम्परा अपनाने के लिए बढ़े या नहीं? जिसे जितनी यथार्थता मिले वह उतनी ही मात्रा में अनुमान लगाए कि अध्यात्म विज्ञान का वास्तविक स्वरूप यही है। आंतरिक पवित्रता और बहिरंग की प्रखरता में जो जितना आदर्शवादी समन्वय कर सकेगा, वह उन विभूतियों से लाभान्वित होगा जो अध्यात्म तत्वज्ञान एवं क्रिया-विज्ञान के साथ जोड़ी और बताई गई हैं।

अपने अनन्य आत्मीय प्रज्ञा परिजनों में से प्रत्येक के नाम हमारी यही वसीयत और विरासत है कि हमारे जीवन से कुछ सीखें। कदमों की यथार्थता खोजें, सफलता जाँचें और जिससे जितना बन पड़े अनुकरण का, अनुगमन का प्रयास करें। यह नफे का सौदा है, घाटे का नहीं। यही हमारी वसीयत और विरासत है।

इन्द्रिय निग्रह में बल है, सद्विचारों में विजय है और शान्ति में शक्ति है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जिनका जीवन ब्रह्मकमल

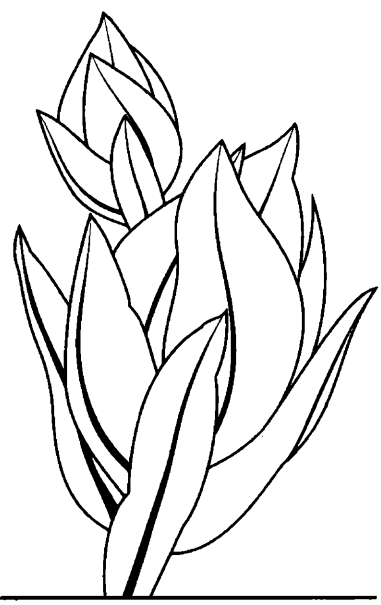
पूजें उनके चरण विमल।
जिनका जीवन ब्रह्म कमल॥

ब्रह्म विचार प्रसार किया,
ब्रह्मचर्य का व्रत पाला।
ब्रह्मकर्म में लगे रहे,
उसमें ही जीवन ढाला॥
पाया ब्रह्मतेज अविचल।
पूजें उनके चरण विमल॥

हिमगिरि सा उन्नत जीवन,
गरिमामय शीतल पावन
तप ऊर्जा से भरा हुआ,
प्रेम-भक्तिमय मन भावन॥
उसमें विकसा ब्रह्मकमल।
पूजें उनके चरण विमल॥

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

काया से ऊपर उठकर,
ब्रह्मबीज शुभ फैलाये।
पंचकोष जाग्रत करके,
वीरभद्र निज विकसाये॥
सृजन योजना रची अटल।
पूजें उनके चरण विमल॥



जो हैं उनसे जुड़े हुए,
उनके अपने कहलाये।
उनसे ब्रह्मबीज लेकर,
मनोभूमि में विकसाये।
पायेंगे सौभाग्य अटल।
पूजें उनके चरण विमल॥

विश्वास का तात्पर्य है- जिस तथ्य को मान्यता देना, उस पर दृढ़ता के साथ आरूढ़ रहना।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हम हैं संतानें युगऋषि की

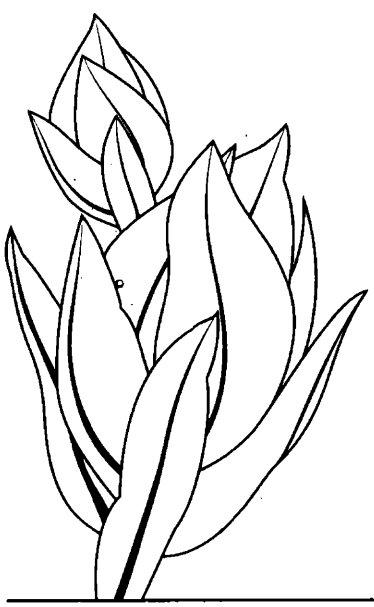
हम तुम्हारे शिष्य गुरुवर, शान कभी न घटने देंगे।
श्रेष्ठ आचरण अपना करके, चरणों का अनुशरण करेंगे।।

हम हैं संतानें युगऋषि की, युग के संत महान् की।
कभी न गिरने देंगे गौरव-गरिमा उनकी शान की॥

नव प्रभात की पूर्व दिशा के हम स्वर्णिम आकाश हैं।
हम उज्ज्वल भविष्य के वाहक, वर्तमान की आस हैं॥
उपयोगी हैं क्योंकि नहीं हम भूले हुए अतीत हैं।
गुरुसत्ता के महायज्ञ के हम ऋत्विज् सुपुनीत हैं॥
लाज रखेंगे पग-पग पर हम इस पावन पहचान की॥

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

जन्मशताब्दी में घर-घर पहुँचाना गुरु संदेश है।
नहीं उपेक्षित रहने देना कोई देश-प्रदेश है॥
गूँजे गाँव नगर युग ऋषि के अब प्रेरक संदेश से।
उनकी फैले गंध हमारे चिंतन, वाणी वेश से॥
जो भी मिले, करें हम उससे चर्चा युग निर्माण की॥



हम न पुरोहित या उपदेशक बनकर मिलें समाज से।
मात्र स्वयं सेवक का निकले स्वर अपनी आवाज से॥
उनको आवश्यकता है हर उत्साही, गुणवान् की।
हर विभूति की, हर प्रतिभा की, हर निर्धन धनवान् की॥
जामवंत, नल-नील, गिलहरी की, वानर हनुमान की॥

हम हैं संतानें युगऋषि की, युग के संत महान् की।
कभी न गिरने देंगे गौरव-गरिमा उनकी शान की॥

◇◇◇

सार्वजनीन सिद्धियाँ वस्तुतः तीन ही हैं-(१) आत्म-सन्तोष (२) जन-सहयोग एवं (३) दैवी-अनुग्रह।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऋषिसत्ता का अवतरण और उनका बचपन

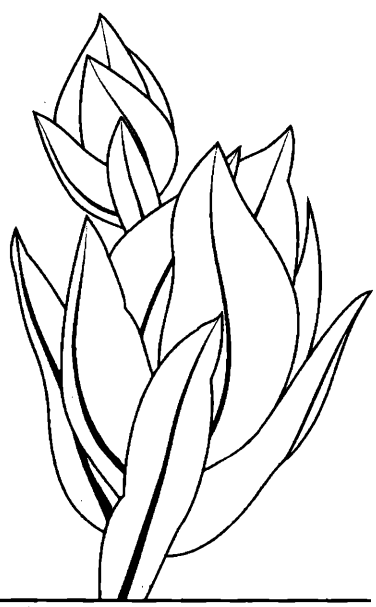
परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का जन्म एक सुसंस्कृत एवं सुसम्पन्न ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके परदादा पं. मोतीलाल शर्मा अपने समय के मूर्धन्य विद्वान् थे। पौरोहित्य कर्म के लिए अपने समय में बेहद लोकप्रिय थे। धनाढ्य ब्राह्मण कुल में जन्मे भारद्वाज गोत्र एवं राजौरिया उपगोत्र (अल्ल) वाले श्री मोतीलाल जो मूलतः कातकी (उ.प्र.) के निवासी थे। उनके पूर्वज कातकी से मोहम्मदी तदुपरान्त मरसेना में आये। वहाँ से आँवलखेड़ा (आगरा) में आकर बस गये। उनके दो पुत्र एवं दो पुत्रियाँ थीं। प्रथम पुत्र थे-पं. रूपकिशोर शर्मा एवं द्वितीय पुत्र थे-पं. देवलाल शर्मा। पुत्रियों का नाम था-वाचादेवी एवं कौशल्या देवी।

पं. रूपकिशोर शर्मा को विरासत में बचपन से ही सांस्कृतिक-आध्यात्मिक वातावरण मिला था। अपने समय के वे प्रख्यात ज्योतिषी, वैद्य, समाजसेवी तथा सद्गृहस्थ तपस्वी थे। उनके दो विवाह हुए थे-प्रथम विवाह-भीकनपुर (एतमादपुर आगरा) की कन्या अनारदेवी से, जिनका 20 वर्ष की अवस्था में निःसंतान निधन हो गया था। तदुपरान्त दूसरा विवाह सलेपुर (सादाबाद-मथुरा) की कन्या श्रीमती यशोदादेवी के साथ हुआ जिनसे चार पुत्र रत्न हुए। प्रथम पुत्र-पं. ज्योति प्रसाद शर्मा, द्वितीय पुत्र पं. द्वारका प्रसाद शर्मा, तृतीय पुत्र पं. भूदेव प्रसाद शर्मा जिनकी 18 वर्ष की अल्पायु मे ही मृत्यु हो गई थी। चतुर्थ पुत्र पं. रामप्रसाद शर्मा थे।

चिरंजीवी तीनों पुत्रों को पिता के तीन गुण विरासत में प्राप्त हुए। पं. ज्योति प्रसाद शर्मा नामानुरूप ज्योतिषाचार्य थे। जिनके ज्योतिष ज्ञान की किंवदन्तियाँ उस क्षेत्र में आज भी प्रचलित है। द्वितीय पुत्र पं. द्वारका प्रसाद शर्मा को पिता से आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त हुआ। ये निःशुल्क चिकित्सा करने के लिए उस क्षेत्र में प्रसिद्ध थे। चतुर्थ पुत्र श्री रामप्रसाद शर्मा अपने समय के गणमान्य लोकसेवी, राजनयिक तथा जमींदारी का काम-काज देखने वाले व्यक्ति थे। पं. रूपकिशोर जी की द्वितीय पत्नी श्रीमती यशोदा देवी की भी मृत्यु हो जाने के उपरान्त विधि के विधान के अनुसार और उनकी उग्र साधना एवं तपश्चर्या की फलश्रुति को चरितार्थ करने के लिए पं. रूप किशोर शर्मा को तृतीय विवाह करने के लिए विवश होना पड़ा।

उनका तृतीय विवाह बुर्ज नौजी पोस्ट एवं थाना सहफऊ (मथुरा) के पं. लीलाधर शर्मा की शीलवती एवं बालतपस्विनी कन्या कुमारी दानकुँवरि देवी के साथ सम्पन्न हुआ। इनसे पं. रूपकिशोर को तीन संताने हुईं-प्रथम थे-मानवता के अनन्य पुजारी, ब्रह्मर्षि, गायत्री

आँवलखेड़ा, आगरा-जलेसर-एटा मार्ग, आज एक बड़ा कस्बा बन गया है? आँवले के वृक्षों के झुरमुट में बसा यह छोटा सा गाँव साक्षी बना एक अवतारी सत्ता के प्राकट्य का। उनको ही आगे चलकर युग निर्माण योजना का प्रवर्तन करना था...



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

माता के वरद पुत्र, प्राणिमात्र के सहज सहचर, युगपुरुष, युगद्रष्टा, युगप्रवर्तक, विश्वबन्धुत्व एवं विश्वशान्ति के समर्थक-पोषक, अभिनव विश्वामित्र, वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य। इनके उपरान्त दो पुत्रियाँ और हुईं-प्रथम किरण देवी और द्वितीय रामदेवी। पूज्य गुरुदेव का जन्म आश्विन् कृष्ण 13 संवत् 1968 में आगरा जिले के आँवलखेड़ा ग्राम में हुआ। यह यमुना पार, आगरा-जलेसर मार्ग पर आगरा से 13 मील दूर अवस्थित है। आज तो यहाँ पूज्य गुरुदेव की माताजी की स्मृति में स्थापित लड़कों का इण्टर कॉलेज एवं पूज्यवर द्वारा अपनी जन्मभूमि में स्थापित लड़कियों का डिग्री कॉलेज, एक चिकित्सालय तथा शक्तिपीठ स्थापित हो जाने से अच्छी-खासी कस्बे स्तर की जनसंख्या है, पर कभी यह छोटा-सा गाँव मात्र था।

जिस घर में वे जन्मे, वह एक सम्पन्न घर था। 2000 बीघा जमीन थी, किसी बात की कमी नहीं थी। सम्भवत: उनके पिता पंडित रूपकिशोर शर्मा एवं माता दानकुँवरि जी ने स्वयंभू-मनु-शतरूपा की तरह तप-साधना कर साक्षात् भगवान् को अपने घर जन्म लेने के लिए विवश कर दिया था। तप की अवधि में एक ही प्रार्थना रही होगी कि वे एक ऐसी सुसन्तति को जन्म दें, जो अपने सत्कार्यों से विश्व-वसुधा को धन्य कर दे, यही हुआ भी। दैवयोग से आचार्यजी पिता का स्नेह कम प्राप्त कर सके। पं. रूपकिशोर जी की मृत्यु आचार्यजी की बारह वर्ष की आयु में 67 वर्ष की उम्र में ही हो गई थी। इनका लालन-पालन वात्सल्यमयी माता, दानकुँवरि देवी की स्नेहिल छाया में सम्पन्न होता रहा। उनके त्याग-तप तथा पिता के तपस्वी रूप का संस्कार बीज रूप में आचार्य जी को प्राप्त हुआ, जो कालान्तर में वट-वृक्ष के रूप में विकसित हुआ।

पं. रूपकिशोर जी का अपने क्षेत्र में बड़ा मान-सम्मान था। अनेक धनी-मानी, राजे-महाराजे इनके मित्र थे, जो अधिकतर इनसे मिलने आया करते थे। इनकी श्रीमद्भागवत की कथा सुनने के लिए जन-समूह उमड़ा करता था। वे निस्पृह भाव से भगवद् कथा सुनाया करते थे। इनके प्रभाव से एक डाकू का हृदय परिवर्तन हो गया था। उन दिनों आँवलखेड़ा से एक किलोमीटर दूर चौपड़ा नाम के गाँव में धाँधू नाम का एक डकैत रहता था। वह बहुत ही हट्टा-कट्टा एवं बलवान् था। उसमें 20-30 आदमियों की ताकत थी। उस इलाके में उसका बड़ा आतंक था।

एक दिन उसकी मुलाकात पं. रूपकिशोर जी से हो गई। उन्होंने उसे समझाया-बुझाया। इसका प्रभाव यह हुआ कि वह उनके चरणों में गिर पड़ा और उनकी शरण में आ गया। पंडित जी का उस इलाके में प्रभाव था ही। पुलिस भी उनका सम्मान करती थी। उन्होंने पुलिस से कह-सुनकर हिस्ट्रीशीट से उसका नाम निकलवा दिया और उसे बनेड़ा में महाराजा शाह दुर्गाप्रसाद जी का सिपाही बना दिया। पं. रूपकिशोर जी संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित थे। उन्होंने स्कंद पुराण, गरुड़ पुराण, भागवत एवं महाभारत की टीकाएँ लिखी थीं। आयुर्वेद की भी एक पुस्तक लिखी थी। उनकी ये हस्तलिखित पुस्तकें अभी भी सुरक्षित हैं। गुरुदेव को अनेक संस्कार पैतृक सम्पत्ति के रूप में अपने पिताश्री से ही मिले थे।

परम पूज्य गुरुदेव की प्राथमिक स्तर तक की तथा संस्कृत की शिक्षा घर रहकर ही एक उच्च संस्कारवान आत्मा पंडित रूपराम जी के माध्यम से पूरी हो गई। मास्टर जी उन्हें नैसर्गिक परिकर में ले जाते व वहाँ अनौपचारिक तरीके से व्यावहारिक शिक्षा देते। प्रतिभा के धनी वे इतने थे कि वजीफे के साथ, प्राइमरी बोर्ड की परीक्षा आगरा मण्डल से उत्तीर्ण की, किन्तु इसके बाद स्वयं ही इस बाबू बनाने वाली शिक्षा पर विराम लगा दिया। जब समय मिलता अपने कुछ सखाओं को लेकर चले जाते व अमराई के सघन कुंजों में बैठकर गायत्री व अध्यात्म-साधना की चर्चा करते।

जितना कुछ पढ़ा था, उससे विद्या ऋण चुकाने के लिए उन्होंने दलित, शोषित से लेकर हर उस बालक को जिसे विद्यार्जन का अवसर नहीं मिल पाया था, अक्षर-ज्ञान कराते थे; ताकि इसके बाद वे व्यावहारिक जीवन की साधना सीखकर स्वयं को गढ़ सकें। विद्या-विस्तार का उनका यह क्रम स्वयं के लिए भी तथा औरों को वितरित करने के रूप में भी आजीवन चलता रहा। ◈

श्रद्धा की प्रेरणा है- श्रेष्ठता के प्रति प्रीति- घनिष्ठता, तन्मयता एवं समर्पण की प्रवृत्ति।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बाल्यकाल में ही प्रस्फुटित हुए साधना के बीजांकुर

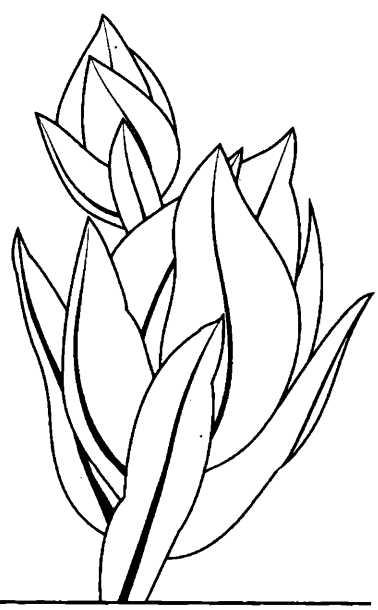
शैशवकाल से ही परम पूज्य गुरुदेव के उस साधक स्वरूप के बीजांकुर प्रस्फुटित होने लगे थे, जिनके कारण उनकी दिव्य मार्गदर्शक सत्ता ने भी उन्हें पात्र समझा। दस वर्ष की आयु से ही उनके मन में यह ऊहापोह चला था कि 'साधना से सिद्धि' का सिद्धान्त सही है या गलत? इसका परीक्षण उन्होंने स्वयं पर किया। सारे सुयोग वैसे ही बनते चले गये एवं संकल्प को प्रयास रूप में परिणत होने का योग भी मिल गया।

गुरुदेव के पिताश्री संस्कृत के उद्भट विद्वान् थे एवं महामना मालवीय जी के सहपाठी थे, घनिष्ठ मित्र भी। उन्होंने आचार्य जी का यज्ञोपवीत संस्कार बनारस में मालवीय जी से ही करवाया। यज्ञोपवीत संस्कार कराते समय उन्होंने कई उपदेश दिए, पर जो उन्हें सतत याद रहे, वे उन्हें सतत चिन्तन के लिए उद्वेलित करते रहे। उन्होंने कहा था-"गायत्री ब्राह्मण की कामधेनु है। वह अभीष्ट फल प्रदान करे, इसके लिए श्रद्धा, प्रज्ञा और निष्ठा का अवलम्बन लेना जरूरी है।" बात याद तो हो गई, पर दो बातें समझ में नहीं आईं। एक यह कि - "ब्राह्मण बनने के लिए क्या करना होगा" क्योंकि बताया यह गया था कि गायत्री ब्राह्मण की कामधेनु है फिर वे तो सनाढ्य ब्राह्मण परिवार में ही जन्मे थे और वे तो ब्राह्मणोचित नित्यकर्म भी पिता द्वारा दिये गये प्रशिक्षणानुसार बचपन से ही सीखते व करते आ रहे थे। ऐसी दशा में पुनः ब्राह्मण बनने का प्रश्न कहाँ उठता है?

दूसरा प्रश्न दिमाग में उठा कि "श्रद्धा, प्रज्ञा, निष्ठा का अवलम्बन लेना जरूरी है" इसका क्या तात्पर्य हुआ? बनारस से आगरा लौटते हुए रेल में जितना भी अवसर मिला वे अपने पिताजी से इन्हीं दो बातों के सम्बध में कुरेद-कुरेद कर पूछते रहे। उन्होंने बाल जिज्ञासा का समाधान इस प्रकार किया, जिसे दस वर्ष की बाल-बुद्धि भी भली प्रकार समझ सके। जो नहीं समझ में आया, उसे उन्होंने दुबारा बिना टाले वह सब कुछ बताया, जो वे चाहते थे।

संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान् व सरस अन्तःकरण वाले पिता ने बालक की हर शंका का समाधान कर साधना के प्रति न केवल रुचि जगा दी; अपितु गायत्री का मर्म समझाते हुए यज्ञोपवीत संस्कार की सार्थकता को उनके रोम-रोम में पिरो दिया। गायत्री ही जिनकी आगे चलकर इष्ट बनीं एवं करोड़ों व्यक्तियों से जिन्होंने गायत्री साधना करवा ली, ऐसे श्रीराम के पिता ने सच्चे मार्गदर्शक की वह पूरी भूमिका निभाई जो गुरु के साक्षात्कार से पहले सम्पन्न होनी ही थी। पूज्य गुरुदेव के पिताजी ने कहा कि गायत्री कामधेनु

पूत के पाँव पालने में होते हैं। बच्चों के साथ खेलने-कूदने की उम्र में ध्यान करने का खेल सिखाना, आम्रकुंजों में उन्हें लेकर बैठना एवं एक दिन अचानक हिमालय यात्रा हेतु भागते समय 3 मील दूर बरहन स्टेशन पर पकड़े जाना, बताता है कि यह साधक सारी दुनिया को साधना के सूत्र सिखाने जा रहा था...



वैराग्य का अर्थ है-त्याग, समर्पण, विवेक और सत्य के प्रति श्रद्धा की अनन्य भावना।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हैं, इसका तात्पर्य यह है कि वे मनुष्य की समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाली हैं, वे समस्त मंत्रों का बीज हैं, प्रमुख हैं, वेदमाता हैं। चारों वेद, ब्रह्माजी ने अपने चारों मुखों से इसी महामंत्र की व्याख्या स्वरूप बनाये हैं।

सभी देवताओं, ऋषिगणों, ब्राह्मणों और उपासना परायण महापुरुषों ने इसी का अवलम्बन लिया है। यज्ञोपवीत उसी की दिव्य प्रेरणाओं का सार-संक्षेप प्रतीक रूप में पहनाया जाता है; ताकि साक्षात् गायत्री माता कंधे पर, छाती पर, कलेजे पर, पीठ पर हर समय विराजमान होने के कारण उस तत्त्वज्ञान को समझाती रहें, जिससे वह फलित होती हैं और साधक अपनी पात्रता बढ़ाता हुआ सच्चे अर्थों में 'ब्राह्मण' बनता है।

सच्चे अर्थों में और झूठे अर्थों में ब्राह्मण होने की बात गुरुदेव को पिताजी द्वारा इस प्रकार समझाई गई कि वंश परम्परा से ब्राह्मण कुल में जन्म लेने से तो वंशानुक्रम प्रभाव आता है और थोड़ी-बहुत विशेषता प्रकट होती है, किन्तु श्रद्धा, प्रज्ञा और निष्ठा की मनोभूमि बन जाने से किसी भी वंश में जन्मा हुआ व्यक्ति ब्राह्मण बन सकता है। इसके अभाव में वंश परम्परा मात्र मिट्टी के खिलौने जैसी रह जाती है।

यहाँ यह बताना प्रासंगिक होगा कि मथुरा पहुँचने पर जब पूज्य गुरुदेव ने सन् 1949 में सद्ज्ञान पुष्पमाला के अंतर्गत पुस्तकें प्रकाशित कीं तो 6 आना सीरीज में एक पुस्तक थी- 'गायत्री ब्राह्मण की कामधेनु है।' पुस्तक तो लोगों ने बाद में पढ़ी, शीर्षक पर अधिक आपत्ति उठायी कि क्या केवल ब्राह्मण ही गायत्री जप कर सकते हैं वह मात्र उन्हीं को फलित हो सकती है?

गुरुदेव ने अज्ञान-ग्रस्त पाठक समुदाय का गहराई से अध्ययन कर अगले संस्करण में ब्रह्मणत्व की व्याख्या पुनः नये सिरे से की, व गायत्री के लिए वंश, कुल, लिंग, गोत्र, वर्ण कुछ भी बाधक नहीं बनता, यह बात विस्तार से समझाते हुए पुस्तक का नाम ही बदल दिया- 'गायत्री ही कामधेनु है।'

यह परिवर्तन तत्कालीन समाज में संव्याप्त मूढ़-मान्यताओं व अज्ञान को देखते हुए उचित ही था क्योंकि फिर इस पुस्तक को ढेरों व्यक्तियों ने पढ़ा व इसके सात से भी अधिक संस्करण प्रकाशित हुए। प्रत्यक्ष कामधेनु से सिद्धियाँ प्राप्त होने की जिज्ञासा हर व्यक्ति के मन में होती है। इसी मनोविज्ञान के जादू ने लोगों को सम्मोहित किया व पुस्तक खूब बिकी। यह प्रसंग बिल्कुल अलग है कि उनमें से कितने सही अर्थों में ब्राह्मणत्व को प्राप्त कर गुरुदेव द्वारा गायत्री के तत्त्वदर्शन को आत्मसात् कर पाए?

पूज्य गुरुदेव के पिताजी ने आगे और विस्तार से समझाते हुए बनारस से वापसी के मार्ग में बताया कि गायत्री को त्रिपदा-तीन चरणों वाली कहा गया है। इसी कारण उसमें तीन व्याहृतियाँ भी लगीं। त्रिपदा के कई अर्थ हो सकते हैं, पर जो अर्थ अध्यात्म तत्त्वदर्शन में सही माना जाता है, उसका अभिप्राय यही है कि जीवन में श्रद्धा, प्रज्ञा, निष्ठा को बड़ी गहराई से उतारा जाये। पं. रूपकिशोर जी ने अपने जिज्ञासु पुत्र को मालवीय जी द्वारा बताये संकेतों - सूत्रों को बड़े हृदयग्राही ढंग से समझाया। पूरी रेलयात्रा में इसी प्रसंग पर चर्चा होती रही।

उन्होंने कहा 'श्रद्धा' का अर्थ है परिपूर्ण विश्वास। ऐसा विश्वास जिसमें शंका - कुशंका, तर्क-वितर्क आदि की कोई गुंजाइश न हो। 'प्रज्ञा' का अर्थ है- स्वविवेक। इतना दृढ़ जिसमें अपना संकल्प ही मूर्तिमान हो सके। किसी से पूछने की कोई गुंजाइश ही न रहे।

अपने आप इतना संतुष्ट हो जाए कि मान्यता को यथार्थता के रूप में देखा जा सके। 'निष्ठा' अर्थात् नियमित क्रिया, इतनी सुनिश्चित क्रिया कि उसे सर्वोपरि महत्त्व की माना जा सके। जिस प्रकार प्रातःकाल उठते ही खाने-पीने की इच्छा होती है, उससे भी अधिक व्याकुलता निर्धारित उपासनात्मक क्रिया-कृत्यों को करने के लिए उठे और खाया पिया तब जाए, जब शारीरिक नित्यकर्म करने की तरह मन की मलीनता को स्वच्छ करने के लिए, आत्मा की भूख बुझाने के लिए संकल्पित साधनाकृत्य पूरा कर लिया जाय।

बालक श्रीराम पिता की मर्मस्पर्शी विवेचना को सुनते रहे कि "मनुष्य के तीन शरीर होते हैं। कारणशरीर, सूक्ष्मशरीर व स्थूलशरीर। कारणशरीर भावनाओं का उद्गम है। यह भावशरीर भी कहलाता है। भावना से ही पाषाण

मनुष्य का व्यक्तित्व उसके द्वारा किये जाने वाले कठोर परिश्रम के साथ ही चमकता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

देवता बनते हैं। मीरा के गिरधर गोपाल, रामकृष्ण की काली इसीलिए चमत्कार दिखा सके कि उनके साथ साधक की श्रद्धा-भावना अत्यन्त घनिष्टतापूर्वक जुड़ी हुई थी। अध्यात्म में सारा चमत्कार श्रद्धा का है। इसीलिए महामना मालवीय जी ने कारणशरीर को बलिष्ठ बनाने का निर्देश दिया।''

''प्रज्ञा सूक्ष्म शरीर में रहती है। प्रज्ञा अर्थात् हर बात में गहराई से प्रवेश कर समूची तर्क-शक्ति का प्रयोग कर किसी निर्णय पर पहुँच जाना। जब विश्वास जम जाय, किसी अन्य के बहकाने-फुसलाने का कोई प्रभाव न पड़े तो समझना चाहिए कि- 'ऋतम्भरा प्रज्ञा' जाग पड़ी। इसके कारण विश्वास शिथिल नहीं होता व मान्यताएँ नहीं डगमगातीं।''

''स्थूल शरीर में निष्ठा का विकास अर्थात् कार्य की नियमितता, सुव्यवस्था। शरीर का प्रत्येक अवयव इतना अभ्यस्त हो जाए कि काम को सुचारु रूप से किये बिना चैन न मिले। बिगुल बजते ही सैनिकों के ड्यूटी पर आ उपस्थित होने की तरह तत्परता हो। जिस कार्य में अनन्य निष्ठा होती है उसमें मन न लगने, समय न मिलने जैसी बहानेबाजी की गुंजाइश नहीं रहती।''

आत्मिक प्रगति के लिए जिन तीन तत्त्वों का समन्वय-समावेश जीवन में करना पड़ता है, उन्हें बड़े विस्तार से समझने पर बालक श्रीराम की जिज्ञासा अध्यात्म तत्त्वज्ञान के सम्बध में और भी बढ़ने लगी। उनके पिता ने कहा कि गायत्री कामधेनु तो है और अमृतोपम दूध भी देती है, पर उसे चारा, दाना-पानी की व्यवस्था भी चाहिए अन्यथा भूखी-प्यासी गाय से दोहनी भरकर दूध प्राप्त करने की आकांक्षा अपूर्ण ही बनी रहेगी।

स्वयं पूज्य गुरुदेव अपनी लेखनी से अपनी इस यात्रा के जो प्रसंग लिख गए हैं, उनकी ही लिपि में नीचे प्रस्तुत हैं-.....''महामना मालवीय जी के सूत्रों की पिताजी ने जो व्याख्या की, वह मस्तिष्क से लेकर अन्त:करण के कोने-कोने में समा गई।''

कई बार इस संदर्भ में और भी जिज्ञासाएँ उठती रहीं और उनका भी भीतर से ही समाधान होता रहा।'' अध्यात्म का इतना सारगर्भित विवेचन उन्हें बाल्यकाल में ही प्राप्त हो गया था। संभवत: यज्ञोपवीत संस्कार के साथ जो द्विजत्व प्राप्त होता है, वह अन्तर्ज्ञान के रूप में पिताश्री की वाणी के माध्यम से उन्हें प्राप्त हुआ। फिर दो वर्ष बाद पिताश्री के स्वर्गवास के बाद उनकी बराबर परीक्षा होती रही। अन्तत: पंद्रह वर्ष की आयु में उनकी पथ-प्रदर्शक गुरुसत्ता ढूँढ़ती हुई उनके पास पहुँच ही गई। ◈

उपासना में मन क्यों नहीं लगता?

अध्यात्म की कर्म-काण्डात्मक प्रक्रिया बहुत कठिन नहीं होती। संकल्प बल मजबूत हो, श्रद्धा और निष्ठा की मात्रा कम न पड़े तो मानसिक उद्विनता नहीं होती और शान्तपूर्वक मन लगने लगता है और उपासना के विधि-विधान भी गड़बड़ाये बिना अपने ढर्रे पर चलते रहते हैं। मामूली दुकानदार सारी जिन्दगी एक ही दुकान पर, एक ही ढर्रे से पूरी दिलचस्पी के साथ काट लेता है।

न मन ऊबता है, न अरुचि होती है। जब दुकानदार 12-14 घण्टे अपने धन्धे को उत्साह और शान्ति के साथ आजीवन करते रहते हैं, तो हमें 6-7 घण्टे प्रतिदिन की गायत्री साधना 24 वर्ष तक चलाने का संकल्प तोड़ने की क्या आवश्यकता पड़ती। मन उनका उचटता है, जो उपासना को पान-बीड़ी के, खेती-बाड़ी के, मिठाई-हलवाई के धन्धे से भी कम आवश्यक या कम लाभदायक समझते हैं, बेकार के अरुचिकर कामों में मन नहीं लगता। ***(सुनसान के सहचर)***

मनुष्य की वास्तविक संपदा उसका निजी व्यक्तित्व है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

देवरहा बाबा के दुर्लभ अनुभव

तब आचार्यश्री गायत्री तपोभूमि मथुरा में थे। बाबा वृन्दावन में यमुना किनारे डेरा डाले हुए थे। एक दिन आचार्यश्री ने अपने प्रमुख शिष्यों में से एक रमेश चन्द्र शुक्ल से कहा, ''रमेश, मैं किसी से मिलने वृन्दावन जा रहा हूँ। कुछ घंटों में लौट आऊँगा।'' वे रिक्शे से वृन्दावन को चल पड़े। रमेशचन्द्र गुरुदेव को भगवद् रूप ही मानते थे। उनके मन में जिज्ञासा उठी कि किसी को मिलना था तो उन्हें मिलने आना चाहिए था। ऐसा कौन है, जिससे मिलने गुरुदेव जा रहे हैं?

कौतूहलवश उन्होंने भी एक रिक्शा किया तथा आचार्यश्री के पीछे चलते रहे। आचार्यश्री बाबा के डेरे पर जा पहुँचे। बाबा स्वयं प्रवेशद्वार पर ही प्रतीक्षारत खड़े थे। शुक्लजी ने दूर से देखा कि दोनों ने परस्पर अभिवादन किया तथा एकान्त में थोड़ी देर बात करते रहे। उसके बाद आचार्य जी पुन: रिक्शे पर बैठे और वापिस चल पड़े। शुक्ल जी चुपचाप दूर से सब देखते रहे। शुक्लजी का समाधान हुआ, ''..... तो देवरहा बाबा से मिलने आये थे आचार्य जी। इसी बहाने हम भी आये, तो चलो दर्शन प्रणाम करके ही चलें।'' वे बाबा के पास पहुँचे, प्रणाम किया। बाबा ने उन्हें देखा और रोष भरे स्वर में बोल पड़े, ''शर्म नहीं आती? गुरु का भेद लेने की कोशिश करते हो।'' बाबा की बात सुनकर शुक्लाजी हतप्रभ रह गये। इन्हें हमारे छिप कर आने की बात सब विदित है। हाथ जोड़कर बोले-''बाबा! भेद लेने का मन नहीं था। एक सहज जिज्ञासा जरूर मन में उठी थी कि देखें, ये किनसे मिलने जा रहे हैं? कोई भूल हुई तो मुझे क्षमा करें।'' बाबा थोड़े शान्त हुए, बोले, ''तेरे ऊपर उनका विशेष स्नेह है, इसलिए माफ करता हूँ। बेटा, तू नहीं समझता, वे क्या हैं?'' फिर कहा, ''मेरा मन इनके दर्शन के लिए व्याकुल हो रहा था। यदि मैं इनसे मिलने जाता, तो सारे शहर में हल्ला हो जाता, इनकी योजना में विघ्न पड़ता। इसलिए मैंने मन-ही-मन इनसे प्रार्थना की थी कि मैं तो पहुँच नहीं सकता, आप ही कृपा करके दर्शन दे जायें। उनने मेरा मन रखा और स्वयं दर्शन दे गये।

वो तो मेरे हृदय में बसते हैं- देवरहा बाबा से जब भी कोई युग-निर्माण कार्यकर्ता मिलता, तो वे बहुत प्रसन्न होते थे। कार्यकर्ता मन में जो इच्छा लेकर जाते, उसे वे बिना पूछे ही पूरी करते। एक कार्यकर्ता ने पूछा-कृपया, आचार्य श्री के बारे में कुछ बतायें। वे हँसकर बोले-''उनके पास से तो तुम आये हो, उनके बारे में तुम बताओ, मैं क्या बताऊँगा? वो तो मेरे हृदय में बसते हैं।''

सहस्त्रार सिद्ध योगी गुरुदेव- देवरहा बाबा का के मत में आचार्य श्री सहस्त्रार सिद्ध योगी या युग अवतार थे। इस तरह के अवतार ज्ञात इतिहास में केवल दो बार और हुए हैं-एक भगवान् बुद्ध और दूसरे आदि शंकराचार्य। यह भी एक अद्भुत संयोग है कि बुद्ध और आदि शंकर के अवतरण में बारह सौ साल का अंतर है। बुद्ध, ईसा पूर्व चौथी-पाँचवीं शताब्दी में हुए और शंकराचार्य का कार्यकाल आठवीं-नवमीं शताब्दी ठहरता है। गुरुदेव का अविर्भाव भी आदि शंकराचार्य के ठीक बारहवीं-तेहरवीं शताब्दी बाद ही हुआ। गुरुदेव भी इन सहस्त्रार सिद्ध योगियों में से एक हैं। जिन्होंने अपनी समय की धारा को उलट दिया। सहस्त्रार सिद्ध अवतारी आत्माएँ अपने आपको छिपा कर रखती हैं। अपनी विभूतियों को प्रकट नहीं करती। जीवन व्यवहार में वे सामान्य व्यक्तियों जैसे ही दिखाई देते हैं। गुरुदेव से कृतार्थ होने वाले साधकों की संख्या हजारों-लाखों में होगी, लेकिन उनके बारे में शायद ही कोई कह पाता हो कि वे किसी भी समय असाधारण और विशिष्ट व्यक्ति जैसे दिखाई दिए हों, उनका संसर्ग पिता की तरह आश्वस्त और निश्चिंत करने वाले सहृदय अभिभावक से अलग प्रतीत होता है। जब देवरहा बाबा को 1990 में गुरुदेव के शरीर छोड़ने का पता चला था तो वे बोले थे कि अब इस शरीर की भी जरुरत नहीं रही हम भी श्रीराम के साथ सूक्ष्म जगत में प्रभु का काम करेंगे। इसके कुछ दिन बाद 19 जून को योगिनी एकादशी के दिन बाबा महासमाधि में चले गए। ◈

जीवन सत्ता एक साझे का व्यवसाय है, जिसमें शरीर और चेतना, दो हिस्सेदारों की अपने-अपने ढंग की महत्त्वपूर्ण भागीदारी है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

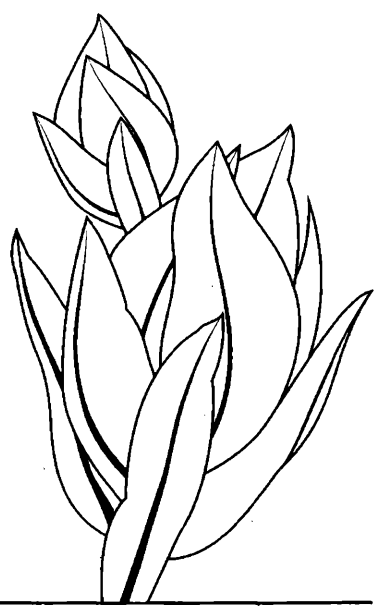
हिमालयवासी गुरुसत्ता से साक्षात्कार

परम पूज्य गुरुदेव के बाल्यकाल में ही पन्द्रह वर्ष की आयु के बाद आए वसंत पर्व के ब्रह्ममुहूर्त में पूजा की कोठरी में, एक प्रकाशपुंज प्रकट हुआ। उस दिव्य प्रकाश से सारी कोठरी जगमगा उठी। प्रकाश के मध्य एक योगी का सूक्ष्म छाया शरीर उभरा। इनका स्थूल शरीर एक ऐसे कृशकाय सिद्धपुरुष के रूप में है, जो अनादिकाल से एकाकी, नग्न, मौन, निराहार रहकर अपनी तप-ऊर्जा द्वारा अपने को अधिकाधिक प्रचण्ड-प्रखर बनाता चला आ रहा है। एक दिगम्बर देहधारी हिमराशि के मध्य खड़ी दुर्बल काया-यह तो स्थूल रूप में उपलब्ध उनका एकमात्र चित्र है, जो गुरुदेव की पहली हिमालययात्रा के समय उनके आग्रह पर स्वयं स्वामी सर्वेश्वरानन्द जी ने उनके समक्ष प्रस्तुत किया। यही चित्र गायत्री परिवार में दृश्य प्रतीक के रूप में आज भी उपलब्ध है।

किन्तु इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है, उनका सूक्ष्म अस्तित्व, जिसमें वे गति, काल दिशा से परे सतत परिभ्रमण करते व अन्यान्य ऋषि-सत्ताओं की तरह प्रचण्ड प्राणधारी आत्माओं को मार्गदर्शन देते दिखाई देते हैं। वे ही अपने सूक्ष्म रूप में दिव्य प्रकाश के रूप में गुरुदेव के समक्ष आये एवं उनके कौतूहल को समाप्त करते हुए बोले- ''हमारे-तुम्हारे जन्म-जन्मान्तरों के सम्बन्ध हैं। तुम्हारे पिछले जन्म एक से एक बढ़कर रहे हैं, किन्तु प्रस्तुत जीवन और भी विलक्षण है। इस जन्म में समस्त अवतारी सत्ताओं के समतुल्य पुरुषार्थ करना है, भारतीय संस्कृति के नवोन्मेष हेतु एक विशाल संगठन देवमानवों का खड़ा करना है तथा इसके लिए प्रचण्ड तप-पुरुषार्थ करना है।''

पूज्य गुरुदेव सन् 1985 में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'हमारी वसीयत और विरासत' में लिखते हैं कि ''हमने तो कभी गुरु की खोज नहीं की, फिर यह अकारण अनुकम्पा किसलिए?'' अदृश्य से इस प्रकटीकरण ने उनके अंदर असमंजस पैदा किया। उनके इस असमंजस को, चिन्तन चेतना को उस सूक्ष्म शरीरधारी सत्ता ने पढ़ लिया व कहा कि ''देवात्माएँ जिनके साथ सम्बन्ध जोड़ती हैं, उन्हें परखती हैं, उनकी अच्छी तरह जाँच-पड़ताल करती हैं। शक्तिसम्पन्न महामानव अकारण अपनी सामर्थ्य किसी निरर्थक व्यक्ति के निमित्त नहीं गँवाते। सूक्ष्म शरीरधारी होने के नाते जो काम हम नहीं कर सकते, वह स्थूलशरीर के माध्यम से तुम से कराएँगे। समय की विषमताओं को मिटाने के लिए तुम्हारा प्रयोग करेंगे। देखने में तो यों तुम्हारा दृश्यजीवन साधारण व्यक्ति के समान होगा, पर कर्त्तव्य सभी असाधारण होंगे, तुमसे सीमित आयु में हम कई सौ वर्ष का कार्य करा लेंगे व समय आने पर तुम्हें

हमारे गुरु आए और हम उनके हाथों बिना मोल बिक गए। उनने हमसे हमारा जीवन माँगा, हमने सब कुछ उन्हें सौंप दिया। पोली बाँसुरी बनकर उनके होंठों से लग गए। बस तब से वही मास्टर हमें नाच नचाता रहा। हमने अपनी डोर उन्हें सौंप दी...



परिष्कृत व्यक्तित्व ही साधन एकत्रित करता और उनके सदुपयोग का लाभ उठाता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वापस बुला लेंगे ताकि हमारी ही तरह युगसंधि वेला में प्रचण्ड पुरुषार्थ सम्पन्न कर प्रत्यक्ष शरीरधारी देवमानवों को नवयुग की पृष्ठभूमि बनाने हेतु पर्याप्त शक्ति मिले। दृश्य कर्त्तव्य जो तुम्हें करना है उसके लिए पर्याप्त आत्मबल, ब्रह्मवर्चस चाहिए, जो तप द्वारा ही संभव हो सकता है।''

अपनी गुरुसत्ता व अपने बीच वार्त्तालाप के इस प्रसंग को पूज्य गुरुदेव ने स्वयं अपने निकटतम कार्यकर्त्ताओं को वार्त्तालाप के दौरान सुनाया था। जो समयानुसार प्रकाशित होना था, उसे वे समय-समय पर बताते रहे। लिपिबद्ध यह अभिव्यक्ति उन्हीं की अनुभूति है। कई प्रसंग ऐसे हैं, जो प्रकाशित नहीं हुए, क्योंकि उन पर विराम लगा दिया गया था। अब उनके निर्देशानुसार ही उनका अनावरण किया जा रहा है।

स्वयं पूज्य गुरुदेव कहते थे कि हमने मात्र जिज्ञासुओं के समाधान हेतु रामकृष्ण परमहंस, समर्थ रामदास, कबीर के रूप में सम्पन्न कर्त्तव्य का अपनी कलम से उल्लेख किया है, पर हमें मात्र इन्हीं तीन बन्धनों में बाँधने न लगे। इन विवेचनों से तात्पर्य यही है कि जो भी पहले बन पड़ा, वह प्रकट व अप्रकट रूप से कई अवतारी सत्ताओं के द्वारा बन पड़े कार्यों के समकक्ष था व आगे जो किया जाना था इससे भी कई गुना था। ''आगे जब भी हमारा मूल्यांकन किया जाएगा तो लोग समझेंगे कि हमने कितने महापुरुषों के रूप में जीवन इस अस्सी वर्ष की आयु में ही जिया है। इतना कुछ करके पहले से ही रख दिया है, सब कुछ अपनी परोक्ष सत्ता के मार्गदर्शन में किया वर्षों शोधकर्त्ता उसका मूल्यांकन करके स्वयं को बड़भागी मानते रहेंगे।''

24 लक्ष के 24 गायत्री महापुरश्चरण करने का निर्देश -

महान् मार्गदर्शक सत्ता का पहला आदेश था-चौबीस लक्ष के चौबीस गायत्री महापुरश्चरण अगले दिनों सम्पन्न करना। उन्होंने कहा- ''चाहे कितनी भी प्रतिकूलताएँ आएँ, तुम्हें लक्ष्य अवश्य पूरा करना है। इस बीच कुछ समय स्वतंत्रता संग्राम में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी पड़ सकती है, पर नियम-भंग मत होने देना। जो भी समयाक्षेप उधर हो, उसकी पूर्ति कड़ी तपस्या करके बाद में कर लेना है ताकि इसकी पूर्ति पर तुमसे महत्त्वपूर्ण कार्य सम्पन्न कराये जा सकें। इस बीच चार बार हिमालय बुलाने की बात उन्होंने कही। कभी एक वर्ष के लिए, कभी कम अवधि के लिए।'' हिमालय बुलाया जाना इसलिए जरूरी था कि वह सिद्ध आत्माओं की साधनास्थली है। वह ऐसा पारस है, जिसका स्पर्श मात्र कर व्यक्ति तपे कुन्दन की तरह निखर जाता है।

स्थूल हिमालय तो हिमाच्छादित पहाड़ भर है, जो पाकिस्तान से लेकर बर्मा की सीमा तक फैला है, पर उनके गुरुदेव का आशय उस हिमालय से था जो उसका हृदय माना जाता है, उत्तराखण्ड का वह क्षेत्र जो दुर्गम है, तथा यमुनोत्री ग्लेशियर से लेकर नन्दादेवी तक जिसका विस्तार है। यहीं वे ऋषिसत्ताएँ निवास करती हैं, जिनका आध्यात्मिक प्रकाश अभी भी भारतीय संस्कृति के मूल्यों को जिन्दा रखे हुए है।

कभी पं. मदनमोहन मालवीय जी ने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु भूमिपूजन हेतु यहाँ से स्वामी कृष्णाश्रम जी को बुलाया था। परमहंस योगानन्द जी की पुस्तक 'ऑटोबायोग्राफी ऑफ योगी' में लाहिड़ी महाशय के गुरु महावतार बाबा का जो उल्लेख किया गया है, वे भी यहीं सूक्ष्मशरीर धरकर रहते थे। थियॉसाफी की संस्थापिका मैडम ब्लावट्स्की के अनुसार अदृश्य सिद्धपुरुषों की पार्लियामेंट इसी दुर्गम क्षेत्र में है, जिसे अध्यात्म चेतना का 'ध्रुवकेन्द्र' माना गया है। यहीं सभी सूक्ष्मशरीरधारी ऋषिसत्ताएँ निवास करती हैं तथा यहीं देवताओं की क्रीड़ास्थली भी है। पृथ्वी पर कभी स्वर्ग रहा होगा तो वह यहीं रहा होगा, ऐसी पूज्य गुरुदेव की अपनी बार-बार की हिमालय यात्रा के बाद मान्यता रही।

हिमालय यात्रा कब करनी है, इसका निर्देश समय-समय पर सूक्ष्मप्रेरणा के रूप में किए जाने की बात कह कर उस परोक्षसत्ता ने तीसरा निर्देश दिया कि जन्म-जन्मान्तरों से पुण्य संग्रह करती आ रही देवसत्ताओं की पक्षधर जाग्रतात्माओं को संगठित कर एक माला में पिरोया जाना है। वे ही नवयुग निर्माण, सतयुग की वापसी में प्रमुख भूमिका निबाहेंगी। इसके लिए उन्होंने पूजागृह में जल रही दीपक ज्योति को लक्ष्य कर 'अखण्ड

सब लोगों से सरलता, निष्कपटता और खुले दिल से बर्ताव और बातचीत करिये।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

ज्योति' नाम से समय आने पर विचारक्रांति को सरंजाम पूरा करने वाली एक पत्रिका आरंभ करने की बात कही व कहा कि उस दीपक को अब सतत जलाते रहना। इसके प्रकाश से तुम्हें प्रेरणा मिलती रहेगी एवं समष्टिगत प्रवाह से वे सभी विचार प्राप्त होते रहेंगे, जिनके माध्यम से अगले दिनों अध्यात्म तंत्र का परिष्कार नवयुग का सूत्रपात होना है। ''अखण्ड दीपक ही समय-समय पर परोक्ष जगत से आने वाले दैवी मार्गदर्शन को तुम तक पहुँचाएगा, अतः जहाँ भी रहो, इसे अपने पास पूजागृह में रखना। इसका दर्शन मात्र लोगों का कल्याण कर देगा।''

चौथा मार्गदर्शन था चौबीस लक्ष के चौबीस महापुरश्चरणों की समाप्ति पर एक विशाल सहस्रकुण्डी महायज्ञ आयोजित करना ताकि दैवी सत्ता की अंशधारी आत्माएँ एक स्थान पर एकत्र हो सकें। इन्हीं में से गायत्री परिवार रूप संगठन का बीजांकुर उभरने व कालान्तर में वृक्ष का रूप लेने की बात वे बता गए। यह भी कह गए कि समय-समय पर वे बताते रहेंगे कि उन्हें कौन-सा कदम उठाना है ? कब-कहाँ स्थान परिवर्तन करना है, क्या कार्यक्रम कहाँ से आरम्भ करना है। वे तो मात्र एक समर्पित शिष्य की तरह अपना कर्त्तव्य निबाहते रहें, शक्ति उन्हें सतत उनके द्वारा प्राप्त होती रहेगी।

दिव्य प्रकाशधारी सत्ता ने निर्देश दिया कि जो आत्मबल का उपार्जन अगले दिनों होगा, उसका नियोजन प्रतिकूलताओं से जूझने, नवसृजन का आधार खड़ा करने तथा देवताओं की, ऋषियों की प्राणशक्ति का अंश लेकर जन्मी जागृत आत्माओं का एक परिवार खड़ा करने के निमित्त करना है। उनका मूक निर्देश था कि ''प्रस्तुत वेला परिवर्तन की है। इसमें अगणित अभावों की एक साथ पूर्ति करनी है, साथ ही एक साथ चढ़-दौड़ी अनेकानेक विपत्तियों से जूझना है। इसके लिए व्यापक स्तर पर ऋषि सत्ताओं द्वारा जो मोर्चेबन्दी पहले की जाती रही है उसकी झलक-झाँकी भी तुम्हें दिखाएँगे तथा तुम्हें किस प्रकार यह सब करना है, यह भी सतत बताते रहेंगे। आगे उन्होंने बताया कि - ''हम लोगों की तरह तुम्हें भी सूक्ष्मशरीर के माध्यम से अति महत्त्वपूर्ण कार्य करने होंगे। इसके लिए पूर्वाभ्यास हिमालय यात्रा द्वारा सम्पन्न होगा।''(अखण्ड-ज्योति अप्रैल १९८५ पृष्ट ९)

संभवतः गुरुदेव के सूक्ष्म शरीरधारी मार्गदर्शक ने यही उचित समझा कि अपने सुयोग्य शिष्य से उसके उपासनागृह में साक्षात्कार कर उसके अंदर छिपे महामानव का, अवतारी सत्ता का उसे परिचय करा दिया जाए ताकि भविष्य में जो किया जाना है, उसका पूरा खाका उसके दिमाग में बैठ सके। समस्त मानव जाति का व विश्व का कल्याण उन्हें जिस प्रयोजन में दीखा, उसे पूरा करने के लिए प्रकाशपुंज के रूप में आए व तप-साधना का आदर्श ही नहीं, अटूट विश्वास और प्रचण्ड साहस, पर्याप्त मनोबल देकर चले गए। दिव्य सत्ताओं का प्यार-अनुदान भी विचित्र होता है। वसंत पंचमी के उस ब्रह्ममुहूर्त में गुरुदेव ने अपना तप, आत्मबल शिष्य पर उड़ेलकर उसकी चेतना को झकझोर दिया, आत्मबोध कराया एवं शिष्य ने अपना आपा, अस्तित्व ही उन्हें समर्पित कर दिया।

समर्पण में स्वयं की इच्छा कैसी ? जो मार्गदर्शक की इच्छा वही अपनी इच्छा। तर्क की वहाँ कोई गुँजाइश ही नहीं। कठपुतली तो बाजीगर के इशारे पर नाचती है। पोली वंशी कृष्ण के मुँह से लगी, वही अलापती चली गयी जो तान छेड़ी गई। यह समर्पण ही गुरुदेव को वह सारी शक्ति सामर्थ्य दे गया, जिसकी परिणति आज इतने बड़े युगान्तरकारी मिशन संगठन व विश्वव्यापी समुदाय के रूप में दिखाई देती है। धन्य है वह गुरु, धन्य है ऐसा शिष्य। ◈

इस पृथ्वी का आध्यात्मिक ध्रुव केन्द्र हिमालय है। इसे एक प्रकार से भगवान् की विशेष शक्तिशाली सेना की छावनी समझा जाना चाहिए। सूक्ष्म शरीरधारी-अंशधर देवात्मा सिद्ध पुरुष प्रायः इसी क्षेत्र में रहते हैं। यह उच्च स्तरीय आत्माओं का प्रशिक्षण विद्यालय रहा है। उन्हें आवश्यक अस्त्र-शस्त्र भी यहीं से मिल जाते हैं।

जब आपको क्रोध आ जाय, तब उसे क्षमा, धैर्य, शान्ति, दया, प्रेम और सहिष्णुता द्वारा दबा दीजिए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वेदमूर्ति पं. श्रीराम शर्मा आचार्य : एक अक्षयवट – स्वामी सत्यमित्रानंद

(निवृत्तमान शंकराचार्य, परमाध्यक्ष-समन्वय परिवार)

संसार में कितने ही प्राणी आते और जाते हैं, कौन किसको जानता है? काल के गाल में सब समाते चले जाते हैं। कुछ मनस्वी, तपस्वी, यशस्वी, ब्रह्मवर्चस्वी महापुरुष कभी-कभी धराधाम पर आते हैं, अपनी असामान्य कृति से नूतन इतिहास का निर्माण करते हैं, पृथ्वी को पुण्यमयी बनाते हैं, कुल को पवित्र करते हैं। उनकी प्रेरक उपस्थिति से अशक्त- सशक्त, प्रमादी पुरुषार्थप्रिय एवं आत्मग्लानि में जीने वाले सभी स्वाभिमान से परिपूर्ण हो जाते हैं। भारत की विभूतियों की अग्र पंक्ति में विराजमान तप:पूत वेदमूर्ति श्रीराम शर्मा आचार्य ऐसे ही दिव्य-शक्ति सम्पन्न महापुरुष थे।

मेरे प्रति आचार्य जी एवं माताजी का अत्यन्त सद्भाव, वात्सल्यप्रेम एवं आदरभाव था। वर्ष में एक बार बुलाकर मुझे भिक्षा (भोजन) कराते थे। मैं उनसे कहता-"हरिद्वार में अनेक संन्यासी हैं, किन्तु आप मुझे ही क्यों बुलाते हैं?" तब वे सहज रूप से कहते, "आपसे भगवान् कुछ विशेष कार्य कराना चाहते हैं, उसकी प्रतीति मुझे हो रही है। आप पद-प्रतिष्ठा, वैभव, स्वार्थ से ऊपर उठे हैं, इसलिए मुझे आप बहुत प्रिय लगते हैं। दूसरी बात गृहस्थाश्रमी व्यक्ति को यति संन्यासी को भोजन कराना चाहिए। मैं अत्यन्त यशस्वी, प्रतिष्ठित होने पर भी, पारम्परिक गृहस्थ धर्म का ही पालन करता हूँ।" उसके कुछ वर्षों बाद भारतमाता मन्दिर का निर्माण मुझे निमित्त बनाकर परमेश्वर ने कराया। आचार्य जी ने पुन: कहा, "देखा, मैंने कहा था, भगवान् आपसे कुछ विशेष कराना चाहते हैं। भारतमाता मन्दिर का निर्माण आपकी अभिनव कल्पना है, या नहीं?" वास्तव में आचार्य भविष्यद्रष्टा व अद्भुत पुरुष थे। उन जैसा मानवपारखी दिव्य-पुरुष दुर्लभ है।

आचार्य जी एवं माता जी हाथ-रिक्शा में बैठकर प्राय: शांतिकुंज से हरि की पैड़ी गंगादर्शन करने जाते थे। वह गरीब रिक्शावाला गद्गद् भाव से कहता कि "मैं धन्य हो गया, इतने बड़े महापुरुष मेरे रिक्शे में बैठते हैं और भरपूर पारिश्रमिक देते हैं।" अपने आचरण से आचार्य जी ने श्रमजीवी का सम्मान करने का सन्देश दिया है। शोषण नहीं पोषण से समाज का हृदय-परिवर्तन करके समता एवं ममता का विस्तार किया जा सकता है।

साधारण लोगों की वाणी बोलती है किन्तु महापुरुषों का आचरण बिना बोले भी सामाजिक परिवर्तन में सहायक होता है। इन्द्रियसंयम, विचारसंयम, अर्थसंयम तथा समय-संयम के द्वारा जीवन में ऊर्जा आती है। मानव का परिष्कार होता है, परमात्मा का पुरस्कार प्राप्त होता है। आचार्य जी के प्रत्येक कार्य में संयम का दर्शन होता है। उनकी महानता में उनके संयमी जीवनचर्या का विशेष योगदान है। पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य गुणाकर थे। उनके शताब्दी समारोह के अवसर पर मेरी शतश: वन्दना समर्पित है। गायत्री परिवार, युगनिर्माण योजना, देवसंस्कृति विश्वविद्यालय उनका कीर्तिगान कर रहे हैं। विश्व के चालीस देशों में जहाँ-जहाँ भी परमात्मा मुझे ले गये, प्राय: सभी स्थानों पर मुझे गायत्री परिवार के कार्यक्रमों में भाग लेने का अवसर मिला है। कार्यकर्ताओं की संसार एवं आचार्य जी के उपदेशों के प्रति प्रतिबद्धता सराहनीय है।

वर्तमान में, आदरणीय डॉ. प्रणव पंड्या जी, माननीया शैल दीदी जी के कुशल संचालन में विस्मयकारी प्रगति से आचार्य जी एवं माता जी की तपश्चर्या का अव्यक्त प्रभाव स्वयं मुखरित हो रहा है। भारतवर्ष का धूमिल वातावरण समाप्त होगा। राष्ट्र को प्रकाशित करने में युग निर्माण योजना के कार्यक्रम, गायत्री यज्ञ, सत्साहित्य प्रचार, समयदानियों की संख्यावृद्धि, वनवासियों का स्वाभिमान-जागरण, स्वदेशी का चिन्तन आदि निश्चित ही भारत को जगद्गुरु के पावन पद पर प्रतिष्ठित कर सकेंगे। अटल विश्वास पर आधारित सिद्धान्त चरितार्थ होते हैं, इतिहास इसका प्रमाण है। ◈

सफलता की एक अनिवार्य शर्त है-ध्येय के प्रति अटूट निष्ठा।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सूक्ष्म शरीरधारी हमारे आदि संरक्षक

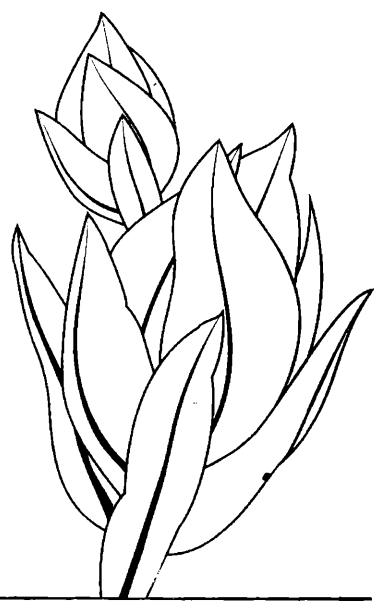
हमारे पूज्य गुरुदेव कहते हैं कि वे मेरे मास्टर हैं, पायलट की तरह हमेशा साथ चलते हैं। दृश्य रूप में उनकी मुलाकात अपने गुरु से यूँ तो चार बार हुई, पर हर क्षण सूक्ष्म रूप में वे उनके साथ बने रहे। आइए जानें हिमालय संसद के प्रमुख अधिष्ठाता से...

यों तो हिमालयवासी इस कालजयीसत्ता की आयु 800 वर्ष आँकी जाती है, पर वस्तुत: वे दो हजार से अधिक वर्षों से तपश्चर्यारत हैं और लोकमंगल के कार्यों में संलग्न हैं। यह आकलन 'दिव्य' द्रष्टाओं का है। परम पूज्य गुरुदेव की इस सूक्ष्म मार्गदर्शक सत्ता के सम्बन्ध में इस्लाम धर्म का एक ग्रन्थ है-'तजकर रसुल गोशिया' जो पट्शिष्य श्री गुलहसन शाह ने लिखा है। यह पुस्तक आज भी श्री दीपसिंह हिम्मतसिंह राज लोटा, पो आंकलाव, गुजरात के पास उपलब्ध है। इस पुस्तक के पृष्ठ क्रमांक 48 पर दादागुरु रूपी सूक्ष्म शरीर सत्ता का स्पष्ट उल्लेख है कि 150 वर्ष पूर्व श्री गुलहसन शाह की मुलाकात स्वामी श्री श्रवणनाथ के माध्यम से हरिद्वार में श्री सर्वेश्वरानन्द जी से हुई थी। वे इच्छानुसार जब चाहते अपनी वयोवृद्धा छोड़कर 12 वर्ष के बालक बन जाते थे। उनके अनेकानेक दृश्य चमत्कारों का वर्णन श्रीशाह ने किया है।

वस्तुत: ऐसे सन्तों की आयु का कोई अनुमान नहीं लगाया जा सकता। वे चमत्कारों को देखने की ललक में आतुर सामान्य व्यक्तियों की भीड़ देख स्वयं ही सूक्ष्म शरीरधारी हो दुर्गम हिमालय प्रस्थान कर जाते हैं। मात्र समष्टिगत हित हेतु अपने सुपात्रों का चयन करने भूलोक पर आवागमन करते रहते हैं। भूख, प्यास आदि लौकिक बंधनों से वे मुक्त होते हैं।

पायलट बाबा रचित ग्रन्थ 'हिमालय कह रहा है' (1982) में पृष्ठ 145, 236, 571, 572, 587, 589 पृष्ठों पर विस्तार से योगीराज श्री सर्वेश्वरानन्द जी का उल्लेख आया है। स्वयं पूज्य गुरुदेव ने अपनी गुरुसत्ता के दृश्यरूप के सम्बन्ध में कभी कुछ न लिखा, न कहा। अपने हर कार्य को उनके मार्गदर्शन में सम्पन्न वे मानते थे। अपने हर कार्य का, उपलब्धि का श्रेय सदैव परोक्ष सत्ता को देते थे। यह विनम्रता भी हो सकती है व महामानव के रूप में स्वयं श्रेय न लेने की उनकी नीति भी, किन्तु इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि जिस प्रकाशपुंज ने उनके जीवन के पन्द्रहवें वसंत में साक्षात्कार किया था, वह निश्चित ही उनकी गुरुसत्ता थी, जो उनकी ही तलाश में थी व उस पावन दिन उनसे एकाकार हो उन्हें विलक्षण अवतारी सत्ता बना गई।

एक गायत्री परिजन की अनुभूति के माध्यम से ऊपर व्यक्त किए गए कथन को स्पष्ट करना चाहेंगे। स्वयं गुरुदेव कहते थे कि हमारी मार्गदर्शक सत्ता सदैव हमारे साथ रहती है व हमारे आगे पायलट की तरह चलती रहती है। उसी सत्ता को, जिसे हम सभी दादागुरु कहकर पुकारते हैं, देखने की जिज्ञासा नवसारी (गुजरात) के श्री मगन भाई गाँधी ने की। गुरुदेव ने कहा कि "मुझे देखकर मेरे ही अन्दर उनकी अनुभूति कर लें, किन्तु वे जिद



हमारे भीतर श्रद्धा है। हमने एक पल्ला पकड़ लिया है और सारे जीवन भर उसी का पल्ला पकड़े रहेंगे।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

पर अड़े रहे। अंतत: पूज्य गुरुदेव ने उत्तरकाशी में अमुक स्थान पर, अमुक रूप में, अमुक दिन उनके अन्न क्षेत्र में दिखाई देने की बात बताई और कहा कि इसके बाद गहराई में मत जाना। वे मन्तव्य समझ नहीं पाए। उत्तरकाशी में बताए गये दिन वे प्रतीक्षा करते रहे। जैसी शक्ल बतायी गयी थी, उसी शक्ल के धवल केशधारी बाबा प्रकट हुए, सफेद वस्त्रों में और भिक्षा ली व गंगा किनारे नीचे तेजी से उतर गए। मगन भाई ने पीछा किया। उन्हें आश्चर्य हो रहा था कि इतनी तीव्र गति से चलकर वे किधर निकल गए। वे एक कंदरा के समक्ष खड़े चारों ओर दृष्टि दौड़ाने लगे, तभी झाड़ी के पीछे से कुछ आवाज आई। पहुँचे तो देखा वे ही श्वेत केशधारी बाबा बैठे हैं, किन्तु यह क्या जैसे ही उन्होंने अपना स्मित मुखमण्डल मगन भाई की ओर किया वे देखकर आश्चर्य चकित रह गए कि ये तो अपने गुरुदेव स्वयं पं श्रीराम शर्मा आचार्य हैं, जिनसे वे कोठरी में 5 दिन पूर्व मुलाकात कर सारा अता-पता नोट करके लाए थे। गुरुदेव ने कहा "अब तो विश्वास हुआ कि मैं व मेरी गुरुसत्ता एक ही हैं। अब आगे से अविश्वास न करना, न ही संत बाबाओं के पीछे भागना।"

इतना कहकर वे अन्तर्ध्यान हो गए। सारी यात्रा छोड़कर मगन भाई वापस हरिद्वार लौटे, बार-बार गुरुदेव के चरणों पर गिरकर क्षमा माँगी व कहा कि मुझ नादान को सजा दीजिए, क्योंकि उसने गुरुसत्ता पर अविश्वास किया। गुरुदेव ने प्यार से समझा भर दिया, समाधान हो गया।

समाज प्रसिद्ध सिन्धी सन्त साईं चाण्डूराम जी साहब के उद्‌गार

पूज्य आचार्यश्री के जन्म शताब्दी महोत्सव के अवसर मैं उनके श्रीचरणों में अपनी श्रद्धांजलि समर्पित करता हूँ। उनके सान्निध्य में बिताये पल मुझे सदैव प्रेरणा देते रहते हैं।

मुझे स्मरण है कि 10 अप्रैल 1984 को गोदड़ी वाला धाम, हरिद्वार के उद्‌घाटन समारोह का अवसर था। ईश्वर कृपा से शान्तिकुञ्ज में आचार्य पं० श्रीराम शर्मा जी से मिलने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ। लगभग 40 मिनट तक इन पुण्यात्मा के श्रीचरणों में बैठने का सुअवसर मिला। शान्तिकुञ्ज आश्रम के भ्रमण के समय वहाँ के अद्वितीय सेवा कार्यों को देखने के साथ-साथ मुझे भारतीय संस्कृति का दर्शन भी मिला। वहाँ के हजारों कार्यकर्ता धोती, कुर्ता, तिलक, जनेऊ, एक वेशभूषा (गणवेश) धारण किये हुए दिखे। यह क्षण मेरे लिए अविस्मरणीय है।

22 जून 1990 को पूजनीय आचार्य जी के देवलोक पधारने पर संवेदना व्यक्त करने हेतु मेरा पहुँचना हुआ। जहाँ पूजनीया माताजी ने दो विशेष संकल्प बताये- प्रथम, 1 अक्टूबर को सामूहिक श्रद्धाञ्जलि तथा द्वितीय, 108 अश्वमेध यज्ञों का आयोजन। पूज्य माताजी ने श्रद्धाञ्जलि में सम्मिलित होने के लिए कहा, और मैं भी इस अनुष्ठान में पहुँचा। वहाँ लगभग 7 लाख श्रद्धालुओं की उपस्थिति एक कुम्भ मेले की भाँति प्रतीत हो रही थी।

परम आद० डॉ० प्रणव पण्ड्या जी का शिव शान्ति आश्रम, लखनऊ में दो बार आगमन हो चुका है। आपका परम स्नेह मुझे प्राप्त होता आया है। शिव शान्ति सन्त आसूदाराम आश्रम में पधारने हेतु मैं सदा कृतज्ञ रहूँगा। इस जन्म शताब्दी वर्ष में माननीय आचार्य जी द्वारा प्रकाशित प्रज्ञा पुराण लखनऊ आश्रम में सायंकाल सत्संग में प्रतिदिन पढ़ा जाता है तथा गायत्री परिवार के अनेक अनुष्ठान यहाँ आयोजित होते रहते हैं।

जन्म शताब्दी समारोह की सफलता हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

चेतना को श्रेष्ठता के साथ जोड़ देने के प्रयास को ही योग कहते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

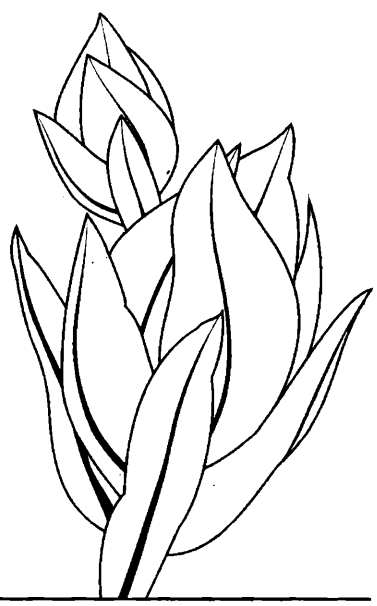
समर्पित साधक की सहज साधना

प.पूज्य गुरुदेव लिखते हैं कि हमारे गुरुदेव मार्ग-दर्शक ने यह बात आरम्भ में ही कूट-कूट कर अन्तरंग में बिठा दी थी कि उपासना आवश्यक है, उसे पूरी तत्परता के साथ अपनाया जाए, किन्तु यह भली-भाँति समझ लिया जाए कि इस क्षेत्र की सफलताओं का स्रोत भावनात्मक विकास की जीवन-साधना पर ही अवलम्बित है। यदि साधना की उपेक्षा की गई और पूजा-पद्धति के सहारे ही लम्बे चौड़े सपने देखे गये, तो अन्य असंख्य जाल-जंजालों में भटकने वालों की तरह हमें भी खाली हाथ रहना पड़ेगा। हमने इस शिक्षा को गाँठ में बाँध लिया और जिस दिन से उस क्षेत्र में प्रवेश किया, दोनों ही प्रक्रियाओं पर समान रूप से ध्यान दिया।

उपासना क्षेत्र में गायत्री महामंत्र की साधना अनन्य श्रद्धा और विश्वास के साथ करने की शिक्षा हमें मिली थी, उसमें लम्बे-चौड़े विधि-विधान जुड़े हुए नहीं हैं। कितने ही व्यक्ति विधि-विधानों के अन्तर और कर्मकाण्डों के जोड़-तोड़ को साधना की सफलता-असफलता का कारण मानते हैं और इसी ढूँढ़-खोज में रहते हैं कि कोई रहस्यमय ऐसी पद्धति हाथ लग जाए, जिससे देखते-देखते जादुई चमत्कार का प्रतिफल सामने आ जाए। हमारी मान्यता वैसी नहीं रही। मंत्रशास्त्र का विशाल अध्ययन और अन्वेषण हमने किया है। महामंत्रिकों से हमारे सम्पर्क हैं और साधना-पद्धतियों के सूक्ष्म अन्तर, प्रत्यन्तरों को हम इतना अधिक जानते हैं, जितना वर्तमान पीढ़ी के मंत्र ज्ञाताओं में से शायद ही कोई जानता हो। लोगों ने एकांगी पढ़ा-सीखा होता है। हमने शोध और जिज्ञासा की दृष्टि से इस विद्या को अतिविस्तार और अतिगहराई के साथ ढूँढा-समझा है। इस जानकारी का भी महत्त्व हम मानते हैं और जहाँ उपयोगिता और आवश्यकता होती है, उसका प्रयोग भी करते-कराते हैं, पर हमारी अपनी क्रिया-पद्धति अतिसरल और सीधी-सादी है, यही सीधा-सा एक ॐ, तीन व्याहृति और 24 अक्षरों वाला वेदोक्त गायत्री मंत्र हमें मिला है और इसमें बिना अधिक ॐ, अधिक बीज, सम्पुट आदि की लाग-लपेट जोड़े जप-साधना में लग जाते हैं।

शरीर और वस्त्रों की शुद्धि, पूजा-उपकरणों की स्वच्छता, शान्त और सौम्य वातावरण, प्रफुल्ल मन का ध्यान रखकर पूजा के लिए बैठा जाए, निर्धारित समय और नियत स्थान का ध्यान रखा जाए तो उपासना सरस बन जाती है। प्रातः 2 बजे हम उठते हैं और शौच-स्नान के नित्यकर्म से निवृत्त होकर उपासनाकक्ष में चले जाते हैं। जब तक मथुरा रहते हैं, वही नियत स्थान है, जो इस घर में जब से आये हैं, तब से नियत है। उपासना का समय तथा जप की संख्या भी निर्धारित है। यह तीनो नियमितताएँ साधक के

उपासना, साधना, आराधना की ऐसी त्रिवेणी उनने आविष्कृत की कि अध्यात्म विज्ञान को नई परिभाषाएँ मिलीं। संभवतः यह इतिहास में पहली बार स्पष्ट हुआ कि जीवन का कायाकल्प बिना किसी चमत्कारी साधना के संभव है...



संवेदना उभरने पर ही सेवा साधना बन पड़ती है। धर्म-धारणा का निर्वाह भी इससे कम में नहीं होता।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

अचेतन मन को इस बात के लिए प्रशिक्षित कर देती हैं कि यथासमय यथावत् अपने काम पर लग जाएँ। अन्तर्मन की यह विशेषता है कि वह किसी प्रक्रिया को देर में पकड़ता है, पर जब एक बार पकड़ लेता है तो नियत समय पर उसी की माँग करता है और सरलतापूर्वक उसी में प्रवृत्त रहता है। शौच, भूख, प्यास, नींद आदि की आदतें नियत समय पर प्रबल होती हैं। कोई स्थान विशेष भी किसी के लिए ऐसा बन जाता है, जहाँ अमुक मानसिक प्रक्रिया स्वयमेव गतिशील होने लगे। लेखकों, कवियों आदि को किसी नियत स्थान पर, नियत समय अपना काम करना सरल होता है।

अचेतन मन की इस विशेषता को ध्यान में रखकर हर साधक को अपनी उपासना का स्थान, समय और क्रम निर्धारित करना पड़ता है, आरम्भ में मन कुछ गड़बड़ करता है, पर पीछे जब अभ्यस्त हो जाता है, तब सारी प्रक्रिया बड़ी शान्ति और सुविधा से होने लगती है। हमने पुरश्चरण काल में तथा सामान्य समय में इन तीनों ही बातों का समुचित ध्यान रखा है, अतएव उसमें स्थिरता बनी रही। मन उचटने जैसी अड़चन नहीं आई। समय, स्थान और संख्या की समस्वरता का महत्त्व हम सभी को बताते रहते और जो उसे अपना लेते हैं, उन्हें मन उचटने की कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता।

शीघ्र उठना उनके लिए संभव है, जो शीघ्र सोते हैं। देर में सोने वाले शीघ्र नहीं उठ सकते। उपासना का सर्वश्रेष्ठ समय ब्रह्ममुहूर्त सूर्योदय से पूर्व का है। हम आमतौर से 8 बजे तक सो जाते हैं। प्राय: 6 घण्टे में नींद पूरी हो जाती है और प्रात:काल उठने में कठिनाई नहीं होती, स्वत: ही नींद खुल जाती है और अगला क्रम निर्धारित ढर्रे पर चलने लगता है। अपने उपासना-स्थल की एक विशेषता है, वह है वहाँ होते रहने वाला अखण्ड यज्ञ। गत 42 वर्षों से हमारा अखण्ड घृतदीप जलता है साथ ही अगरबत्तियाँ एवं धूपबत्तियों के रूप में हवन-सामग्री भी वहाँ यथाक्रम जलती रहती है।

दीपक का घी और बत्तियों की सामग्री निरन्तर जलने से दोनों का सम्मिश्रित धूम्र, वर्चस्, तेज तथा प्रभाव उपासनाकक्ष में यज्ञीय वातावरण उत्पन्न करता है। अतएव वह केवल अखण्ड दीपक मात्र ही नहीं रहता, वरन् अखण्ड यज्ञ बन जाता है। इसे सँजोने, सँभालने में सतर्कता बहुत रखनी पड़ती है और व्यय भी काफी आता है, फिर भी इसका प्रतिफल बहुत है। लम्बी अवधि से इस कक्ष में होते रहने वाले जप पुरश्चरण के साथ अखण्ड यज्ञ की इस प्रक्रिया से वहाँ का वातावरण अलौकिक बना रहता है। वहाँ अनायास ही हमें अपनी मनोभूमि उच्चस्तरीय रखने और उस स्थिति के महत्त्वपूर्ण लाभ लेने में सुविधा मिलती है।

हर किसी के लिए न तो अखण्ड घृतदीप सम्भव है और न तो ऐसा यज्ञीय वातावरण भरा कक्ष विनिर्मित कर सकना सरल है। यह हमारा एकाकी प्रयोग है। इसकी नकल उसी को करनी चाहिए, जिसकी पीठ पर हमारी ही जैसी संरक्षक शक्ति का बल हो, अन्यथा यह प्रयोग असफल रहेगा। गायत्री उपासना जितने समय चले उतने समय जिनके लिए सम्भव हो घृतदीप एवं अगरबत्ती जलाने की व्यवस्था बना लेना उत्तम है। यज्ञीय वातावरण में गायत्री उपासना अधिक फलवती होती है। अनुष्ठान काल में यथासम्भव जप समय तक दीपक और धूपबत्ती जलाने की व्यवस्था बनानी ही चाहिए।

जिनके लिए सम्भव है, पूजाकक्ष ऐसा रखे, जहाँ हर किसी का प्रवेश न हो, कोलाहल न हो और शान्ति बनी रहे। स्वच्छता और सुसज्जा का समुचित ध्यान रखा जाए। पूजा-प्रतीक थोड़े रहें, पर वे उपेक्षा से मैले-कुचले न पड़े रहने दिए जाएँ। उनकी सुरुचिपूर्ण सुसज्जा ऐसी आकर्षक रखी जाए जो मनोरम दीखे और चित्त वहाँ लगे।

जप आरम्भ करने से पूर्व पवित्रीकरण, आसन, प्राणायाम, न्यास और शिखावन्दन, पृथ्वीपूजन के छह संध्या कर्म, महाशक्ति का आवाहन, उपलब्ध गन्ध-पुष्प; धूप-दीप, नैवेद्य आदि से पूजन की विधि सर्वविदित है। पालथी मारकर बैठना, मेरुदण्ड सीधा रखना, नेत्र अधखुले, उच्चारण ऐसा जिसमें कण्ठ, होंठ, जिह्वा की हलचल तो होती रहे, पर उसे सुन-समझ पास बैठने वाला भी न सके, दाहिने हाथ में माला, माला फेरने में तर्जनी उँगली का प्रयोग न करना, जप के अन्त में प्रार्थना-आरती, कलश रूप

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

में रखे छोटे जलपात्र (आचमन का पंचपात्र नहीं) को जप के अन्त में सूर्य भगवान को चढ़ाना, विसर्जन, यही प्रख्यात उपासनाक्रम हमारा भी है, जिसे प्राय: सभी गायत्री उपासक प्रयुक्त करते हैं।

जप के समय ध्यान करते रहने की आवश्यकता इसलिए रहती है कि मन एक सीमित परिधि में ही भ्रमण करता रहे, उसे व्यर्थ की उछल-कूद, भाग-दौड़ का अवसर न मिले। माता का चित्र सामने रहने से उनके अंग-प्रत्यंगों और आवरणों का बारीकी से मनोयोगपूर्वक निरीक्षण करते रहने की ध्यान-साधना मन को इधर-उधर न भागने की समस्या हल कर देती है। यह छवि-ध्यान थोड़े अभ्यास से तस्वीर को देखे बिना भी विशुद्ध ध्यान कल्पना के माध्यम से आँखें बन्द करके भी होने लगता है। ***जिन्हें निराकार साधना-क्रम पसन्द है, उनके लिए प्रात: काल उगते हुए अरुण वर्ण सूर्य का ध्यान करना उत्तम है।***

मन को भागने से रोकने के लिए इष्टदेव की छवि को मनोयोगपूर्वक निरखते रहने से काम चल जाता है, पर इसमें रस-प्रेम, एकता और तादात्म्य उत्पन्न करना और भी शेष रह जाता है और यह प्रयोजन ध्यान में प्रेम-भावनाओं का समावेश करने से ही सम्भव होता है।

उपासना के आरम्भ में अपनी एक-दो वर्ष जितने निश्चिन्त, निर्मल, निष्काम, निर्भय बालक जैसी मनोभूमि बनाने की भावना करनी चाहिए और संसार में नीचे नील-जल और ऊपर नील आकाश के अतिरिक्त अन्य किसी पदार्थ एवं इष्टदेव के अतिरिक्त और किसी व्यक्ति के न होने की मान्यता जमानी चाहिए, बालक और माता, प्रेमी और प्रेमिका और सखा जिस प्रकार पुलकित हृदय परस्पर मिलते, आलिंगन करते हैं, वैसी ही इष्टदेव की समीपता की होनी चाहिए।

चकोर जैसे चन्द्रमा को प्रेमपूर्वक निहारता है और पतंगा जैसे दीपक पर अपना सर्वस्व समर्पण करते हुए तदनुरूप हो जाता है, ऐसे ही भावोद्रेक इष्टदेव की समीपता के उस ध्यान-साधना में जुड़े रहना चाहिए। इससे भाव-विभोरता की स्थिति प्राप्त होती है और उपासना ऐसी सरस बन जाती है कि उसे छोड़ने को जी नहीं चाहता।

गायत्री उपासना का न्यूनाधिक यही क्रम हमारा इसी प्रकार चलता रहा है। 24 अनुष्ठानों के उपरान्त प्राणविद्या के उच्चस्तरीय प्रयोग एक विशिष्ट योग-साधना के रूप में चले हैं, जिनका चक्रवेधन और कुण्डलिनी जागरण से सीधा सम्बन्ध है। वे साधनाएँ सर्वोपयोगी नहीं और हमारे सामान्य साधनाक्रम का अंग भी नहीं, वे अतिरिक्त प्रयोजन के लिए हैं, इसलिए उनकी चर्चा यहाँ अनावश्यक समझी गई और उतना ही उल्लेख किया गया जो सर्व-साधारण के लिए उपयुक्त था।

यह लिखा ही इस उद्देश्य से जा रहा है कि हमारे अनुभवों के साथ अपने क्रिया-कलापों का ताल-मेल बिठाते हुए परिजन अपनी आत्मिक-प्रगति का पथ प्रशस्त कर सकें और उसी स्तर की सफलता प्राप्त कर सकें, जैसी कि हम पा सके हैं। हमसे आगे वाली मंजिलों का मार्गदर्शन इन पंक्तियों में नहीं, अन्यत्र अन्य माध्यमों से मिलेगा। ◈

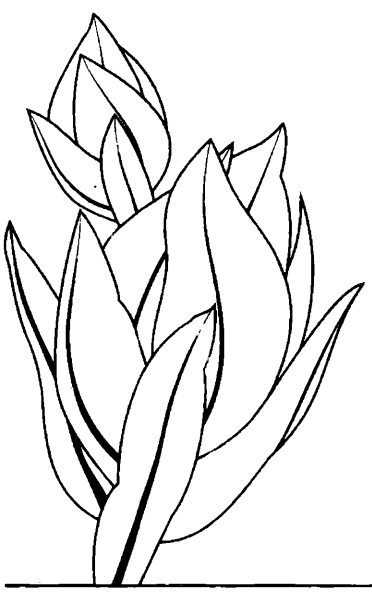
अन्तरात्मा के जिज्ञासु को चाहिये कि वह मन के कोलाहल की ओर से कान बन्द कर अन्तरात्मा का निर्देश सुनने और पालन करने लगे, निश्चय ही उस दिन से यथार्थ सुख-शांति का अधिकारी बन जायेगा। जिज्ञासा की प्रबलता से मनुष्य के कान उस तन्मयता को सरलता से सिद्ध कर सकता है। आत्मा मनुष्य का सच्चा मित्र है। वह सदैव ही मनुष्य को सत् पथ पर चलने और कुमार्ग से सावधान रहने की चेतावनी देता रहता है, किन्तु खेद है कि मनुष्य मन के कोलाहल में खोकर उसकी आवाज नहीं सुन पाता। किन्तु यदि मनुष्य वास्तव में उसकी आवाज सुनना चाहे तो ध्यान देने से उसी प्रकार सुन सकता है, जिस प्रकार बहुत सी आवाजों के बीच भी उत्सुक शिशु अपनी माँ की आवाज सुनकर पहचान लेता है।

अपने दोष स्वीकार कर लेने का अर्थ है, सच्चाई के प्रति प्रेम।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गायत्री के सिद्ध साधक परमपूज्य गुरुदेव

गायत्री उनके रोम-रोम में थी, हर श्वास में थी। गायत्री मंत्र ही उनका सारा जीवन रहा और अंत में उन्हीं की गोद में वे समा गए। गायत्री को उनने प्रतिबंधों से मुक्त कर जनसुलभ बना दिया। उनके स्तर का गायत्री साधक विश्वामित्र के बाद कोई और देखने को नहीं मिला...



गायत्री साधना कैसे जीवन को प्रत्यक्ष कल्पवृक्ष बना देती है व अगणित सिद्धियाँ जिनका वर्णन विभिन्न ग्रन्थों में देखनें को मिलता है, वास्तव में मिलती हैं कि नहीं, यह उत्सुकता हर किसी को हो सकती है। कोई जीता-जागता उदाहरण मिल जाए, मॉडल दिख जाए तो मानने को मन भी करता है।

पौराणिक नियम व भूतकाल के उदाहरणों से संभवत: आज का बुद्धिजीवी मानस प्रभावित न हो, पर यदि वस्तुत: ऐसा कोई नमूना सामने हो तो बरबस विश्वास हो उठता है कि हाँ गायत्री उपासना के महात्म्य के विषय में जो कुछ कहा गया है, वह सच हो सकता है, क्योंकि प्रमाण सामने है। यह नमूना यह मॉडल है स्वयं परमपूज्य गुरुदेव का जीवन। अस्सी वर्षों तक उन्होंने जो जीवन जिया, वह एक खुली किताब की तरह है। जो भी जब चाहे, तब इसमें से, जो अध्याय चाहे खोलकर देख सकता है व साधना से सिद्धि संबन्धी मार्गदर्शन प्राप्त कर सकता है।

इस महामानव ने अस्सी वर्ष तक जो जीवन जिया उसका एक-एक पल माँ गायत्री को समर्पित रहा। गायत्री उनके रोम-रोम में थी, हर श्वास में थी। सारे जीवन भर जो भी दृश्य क्रिया-कलाप गुरुदेव के जीवन में देखने को मिलते हैं, वे सब उसी तपश्चर्या की ब्राह्मणत्व की सिद्धि के हैं। वे अक्सर कहा करते थे कि ''स्थूल जीवन से मैंने जो कुछ भी किया है, वह ब्राह्मणत्व का चमत्कार है। जो विशिष्ट अनुष्ठानादि किए हैं, उनका उपयोग तो मेरे जाने के बाद कारण शरीर की सत्ता करेगी।'' ब्राह्मण व तपस्वी सही अर्थों में वे थे व इसी कारण उन्हीं दिनों छिड़े स्वतंत्रता संग्राम में उन्होंने भागीदारी सक्रियतापूर्वक की।

यहाँ तक कि बापू (महात्मा गाँधी) ने देहात के इस स्वयंसेवक से मिलना चाहा व उनसे नैनीताल में मिले। यज्ञोपवीत के नौ धागे जो उन्होंने धारण किए थे, उसके एक-एक गुण उनके जीवन में फलितार्थ होते चले गए। सत्य, अहिंसा, अस्तेय, मैत्री, ब्रह्मचर्य, साधना, स्वाध्याय, शुचिता, सेवा के एक से एक मार्मिक प्रसंग उनके जीवनक्रम में देखे जा सकते हैं। उनके अधिक विस्तार में न जाकर जब 'अखण्ड-ज्योति' पत्रिका का शुभारम्भ हम देखते हैं तो पाते हैं कि यह छोटा-सा बीजारोपण गायत्री के तत्त्वज्ञान के विस्तार का था। इस बीज से जो वटवृक्ष बनने वाला था, उसी की छाया में अगले दिनों गायत्री परिवार तथा युग-निर्माण योजना का विशाल संगठन बनना था। ''एकोऽहं बहुस्याम्'' का मूलमंत्र उन्होंने 'अखण्ड ज्योति' के प्रकाशन से कार्य रूप में उतारना आरम्भ किया व चिट्ठी की तरह

युगशिल्पी अपनी प्रचार प्रक्रिया का कारगर शस्त्र - अपने साहस एवं विश्वास का लोगों के सामने प्रत्यक्ष प्रमाण प्रस्तुत करें।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

निकली प्रारम्भिक पत्रिका की सौ प्रतियाँ देखते-देखते हजार व लाखों में छपने लगीं। यह वस्तुत: उनकी साधना की प्रत्यक्ष सिद्धि का प्रमाण है कि आज उसी पत्रिका की पाँच लाख से अधिक प्रतियाँ आधुनिकतम मशीनों द्वारा छपती हैं व दस गुने पाठकों द्वारा पढ़ी जाती हैं। गायत्री परिवार को जन्म वस्तुत: 'अखण्ड-ज्योति' ने दिया है व इसे पूज्य गुरुदेव ''नवयुग के मत्स्यावतार'' की उक्ति दिया करते थे, जो कि नितान्त सटीक है।

'गायत्री चर्चा'' नामक स्तम्भ के माध्यम से पूज्य गुरुदेव ने 'अखण्ड-ज्योति' के पाठकों को प्रेरणा दी कि वे गायत्री उपासना को जीवन में स्थान दें। इसके चमत्कारी परिणामों से लेकर जीवन ऊँचा उठने तक की बातें उन्होंने पत्रिका, किताबों व व्यक्तिगत पत्र से सब तक पहुँचायीं। जिन्होंने सही अर्थों में गायत्री को समझा व जीवन में उनकी साधना को उतारा उनका जीवन ही बदल गया। कोई अभाव था, वह दूर होता चला गया, घर में साधन समृद्धि आ गयी व प्रतिकूलताएँ मिटती चली गयीं।

जीवन साधना के फलस्वरूप नीरोग, दीर्घजीवन अनुदान के रूप में मिला व सद्ज्ञान मिलते चलने से जीवन के भावी स्वरूप के प्रति दृष्टि मिली। ये प्रत्यक्ष अनुग्रह जिन्हें मिले उन्हें उन्होंने उच्चस्तरीय कक्षाओं में चढ़ाया व उनके माध्यम से नये व्यक्तियों तक प्रेरणा पहुँचाई। देखते-देखते लाखों व्यक्ति जुड़ गए। गायत्री महाविज्ञान नामक एक विश्वकोष जिसमें गायत्री साधना सम्बन्धी सब कुछ जो पाठक चाहते थे, वर्णित था इन्हीं दिनों पहले पाँच खण्डों में, फिर तीन खण्डों में प्रकाशित हुआ। यह स्वयं में एक अभूतपूर्व रचना थी, क्योंकि अब तक गायत्री महाशक्ति पर कहीं भी संकलित रूप में कोई ग्रन्थ नहीं था।

संस्कृत में संहिताएँ सब कोई तो पढ़ नहीं सकते थे, अत: सारे ग्रन्थों से सार निकाल कर अपना एक महत्त्वपूर्ण शोधप्रबन्ध गायत्री महाविज्ञान के रूप में उन्होंने जन-जन को समर्पित कर दिया। 1958 में प्रकाशित इस ग्रन्थ के अट्ठाइस संस्करण अब तक प्रकाशित हो चुके हैं व न्यूनतम पच्चीस लाख लोगों तक यह सद्ज्ञान पहुँच चुका है। अगणित व्यक्तियों की शंकाएँ मिटीं व गायत्री मंत्र जन-जन के लिए बिना किसी धर्म, जाति, मत, पंथ व लिंग के अब सुलभ हो गया है। यह क्रान्ति गायत्री महाशक्ति की सिद्धि की ही परिणति है। अवतारी स्तर की सत्ता ही यह सब कुछ कर सकती है।

गायत्री तपोभूमि में अपने चौबीस महापुरश्चरणों की समाप्ति पर अखण्ड अग्नि की स्थापना, चौबीस सौ तीर्थों की जल व रज की स्थापना, उनके संक्षिप्त से मथुरा निवास के महत्त्वपूर्ण क्रिया-कलाप हैं, यहीं पर 1958 में एक विशाल गायत्री महायज्ञ 1008 कुण्डों में सम्पन्न हुआ, जिसमें पाँच से दस लाख लोगों ने भागीदारी की। गायत्री तत्त्वज्ञान को भारत के कोने-कोने व विश्व भर में पहुँचाने की रूपरेखा इसी यज्ञ में बनी। इस यज्ञ से जुड़ी अनेकानेक विलक्षणताएँ, चमत्कारी सिद्धियाँ समय-समय पर पाठकों को बताई जाती रही हैं व वे प्रमाण हैं परमपूज्य गुरुदेव की गायत्री सिद्धि का। हिमालय जाकर तप इसी के बाद उन्होंने किया व एक वर्ष तक अज्ञातवास में रहकर वेद, दर्शन, पुराण, उपनिषद्, स्मृति,आरण्यक आदि का भाष्य किया। यह बहुलीकरण की सिद्धि का चमत्कार है कि जो काम एक व्यक्ति ने किया, वह अनेक व्यक्तियों के श्रम के बराबर था। संगठन का सूत्र-संचालन, पत्रिका का सम्पादन, नियमित पुस्तकों का प्रकाशन, निजी जीवन की तपश्चर्या, सभी को पत्र, दैनन्दिन मार्गदर्शन, व्यक्तिगत भेंट-मुलाकात तथा देशव्यापी दौरे यह सब काम एक साथ सामान्य व्यक्ति नहीं चला सकता। मथुरा में ही उन्होंने एक असाधारण संकल्प का उद्घोष किया व उसे प्रकाशित किया 'युग-निर्माण सत्संकल्प' के रूप में। इसे उन्होंने नवयुग का संविधान कहा व बताया कि सतयुग इसी आधार पर अगले दिनों आएगा। यह दुस्साहस नूतन सृष्टि का सृजन करने वाले ब्रह्मर्षि के स्तर का ही तो था। आज जब हम इक्कीसवीं सदी के मुहाने पर खड़े हैं तो हमें प्रत्यक्ष दीख पड़ता है कि सतयुग की वापसी उनके द्वारा बताए गए सिद्धान्तों पर सुनिश्चित है। वर्णाश्रम धर्म के आधार पर मथुरा छोड़कर हरिद्वार आना, उनके जीवन का एक पूर्व नियोजित उत्तर अध्याय है, जिसकी घोषणा उन्होंने 1961 से ही करना आरम्भ कर दी थी। हरिद्वार आकर

जब तुम्हारा मन टूटने लगे, तब भी यह आशा रखो कि प्रकाश की कोई किरण कहीं न कहीं से उदय होगी और तुम डूबने न पाओगे, पार लगोगे।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

दिव्यसृष्टि से ब्रह्मर्षि विश्वामित्र की तपस्थली सप्तसरोवर क्षेत्र में उन्होंने ढूँढ़ निकाली व यहीं वह बीजारोपण आरम्भ हुआ, जिसे आगामी बीस वर्षों में बढ़ना व अतिविस्तृत रूप लेना था। परमपूज्य गुरुदेव के जीवन के चौथे भाग जो 1971 से 1990 के बीच का है, का बहुत-सा स्वरूप प्रत्यक्ष है जो गायत्री तीर्थ शान्तिकुंज के विशाल विस्तार व देशव्यापी क्रिया-कलापों के रूप में दिखाई पड़ता है।

किन्तु उसका बहुत-सा भाग परोक्ष है जो अभी सबकी निगाह में नहीं है, पर अगले दिनों साकार होता जिसे सब देखेंगे। उनकी तपश्चर्या के बहुमूल्य कुछ वर्ष शान्तिकुंज में ही व्यतीत हुए हैं। यहीं उन्होंने प्राण-प्रत्यावर्तन के, कल्प-साधना के व संजीवनी साधना के महत्त्वपूर्ण शिक्षण सत्र चलाए। यहीं पर उनकी एकाकी सूक्ष्मीकरण तपश्चर्या सम्पन्न हुई। यहीं पर अध्यात्म व विज्ञान के समन्वय का उनका संकल्प ब्रह्मवर्चस के रूप में साकार होकर सामने आया। यहीं पर उन्होंने भारत भर में प्रज्ञासंस्थान बनाने व जन-जन तक ब्राह्मणत्व के विस्तार का संकल्प लिया व देखते-देखते तीन हजार से अधिक शक्तिपीठें पूरे भारतवर्ष में बन गई।

यहीं पर उन्होंने देवात्मा-शक्ति के कुण्डलिनी जागरण की साधना संपन्न की व विश्वभर में गायत्री महाशक्ति के विस्तार के रूप में उसे अगले दिनों ही साकार होता देखा जा सकेगा। उसका शुभारम्भ इसी वर्ष पश्चिम के देशों की यात्रा व हजारों घरों में देव-स्थापना से हो चुका है।

शक्ति-साधना कार्यक्रमों द्वारा जन-जन तक गायत्री महाविद्या के विस्तार का संकल्प जो परमपूज्य गुरुदेव के निर्देश पर यहाँ से उठाया गया है, वह भी यही संकेत देता है कि अगले दिनों वातावरण गायत्रीमय होने जा रहा है। प्रज्ञावतार का निष्कलंक निराकार रूप में अवतरण हो चुका है, दुर्बुद्धि का साम्राज्य मिटने वाला है व सद्बुद्धि का विस्तार जन-जन तक होने जा रहा है। गायत्री महामंत्र के सम्बन्ध में अथर्ववेद में जो सूक्त आया है, वह कहता है- स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानां। आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम् मह्यं दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्। इसका एक-एक शब्द, अक्षरशः सही है।

यह सारा माहात्म्य हम परमपूज्य गुरुदेव के जीवन में, गायत्रीतीर्थ में, शान्तिकुंज की युगान्तरीय चेतना में उतरा हुआ प्रत्यक्ष देख सकते हैं। यह साक्षी है उन सब फलितार्थों का, जो गायत्री महामंत्र से जुड़े हुए हैं व जिनके लिए हर व्यक्ति एक जीती-जागती मिसाल देखने को उत्सुक बना रहता है। उन सभी को आमंत्रण है, जो जानना चाहते हों कैसे माँ गायत्री के अनुदान जीवन में उतारे जाएँ। ◈

एक समर्पित कार्यकर्ता ने बताया कि मेरे पिताजी की मृत्यु शराब पीने के कारण हुई थी। अंतिम समय में मुझे उन्होंने बुलाया और कहा- "देख बेटा, शराब नहीं पीना। घर परिवार का नुकसान होता है।" पिताजी के कहे अनुसार माँ नर्मदा की कृपा से मैंने शराब छोड़ दी। पीपल के पेड़ के पत्तों पर परमपूज्य गुरुदेव एवं वंदनीया माताजी दिखाई देती थी। मुझे बुखार आया तो सालीग्राम के डॉ. सिकरवार के साथ 1970 के दशक में हरिद्वार आया। मुझे गुरुजी मिले, मैं गरीब आदिवासी था, घर में खाने को दाने नहीं थे। गुरुजी ने कहा "बेटा, यह गायत्री माता कामधेनु है। तुम छोटा मात्र ॐ भूर्भुवः स्वः इतना ही जपना एवं गायत्री माता का मंदिर बनाना। हम तेरे घर आयेंगे।"

मैंने एक मंदिर बनाया, गुरुजी घर आये। ज्वार की रोटी एवं दही खाया एवं मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा की। अनेक लोगों को गायत्री परिवार से जोड़ा, सबका जीवन बदल गया। पहले लाखों आदिवासी शराब पीकर, झगड़ा करते व जेल में बंद हो जाते, किन्तु गायत्री परिवार से जुड़ने के बाद आदिवासी ब्राह्मण बन गये, उनका जीवन बदल गया। मेरे जैसे लोहे को पारस रूपी गुरुजी ने सोना बना दिया।

भोग शारीरिक रोग-शोक पैदा करने वाले होते हैं। उसमें इन्द्रियों की दक्षता नष्ट होती है और मनुष्य वृद्धावस्था तथा मृत्यु की ओर अग्रसर होता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

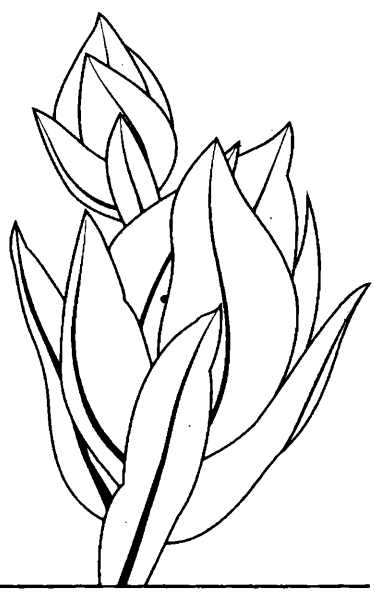
साधना सूत्रों का युगानुरूप सरल स्वरूप प्रस्तुत करने वाली ऋषिसत्ता

ऋषि शब्द ऋ से बना है। 'ऋ' का अर्थ है गति जो गतिशील परमार्थ की ओर अग्रसर होता है, वह है ऋषि। जो निर्मल बुद्धि सम्पन्न, मंत्र-रहस्य द्रष्टा पुरुष हो, वह है ऋषि। जो नरकीटक-नरपामर स्तर के क्षुद्र से प्रतीत होने वाले जनसमुदाय की लौकिक आकांक्षाओं का परिष्कार कर उन्हें उच्चस्तरीय परमार्थ-प्रयोजन में निरत कर दे, वह है ऋषि। लगभग यही आदिकालीन ऋषियों जैसा स्वरूप हम अपने गुरुदेव के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व में पाते हैं।

अंतरंग क्षणों का एक प्रसंग है। ब्रह्मवर्चस के कुछ कार्यकर्त्ता शोध प्रसंग संबंधी चर्चा हेतु उनके पास बैठे थे। चर्चा चित्तवृत्तियों के निरोध की तथा तन्मात्राओं की साधना की चल रही थी। साधना का प्रसंग चलने पर लौकिक जीवन में कभी भी गहराई तक उसका विवेचन न करने वाले परमपूज्य गुरुदेव ने उस चर्चा के दौरान गुह्य प्रसंगों पर पड़े आवरण को हटा दिया। विगत हजारों वर्षों से चली आ रही साधना-पद्धतियों की एक समीक्षा कर उन्होंने प्राय:डेढ़ घण्टे तक ध्यान-प्राणायाम से लेकर पंच-तन्मात्राओं की साधना तथा सूर्य के ध्यान की फलश्रुतियों से लेकर अष्टांग योग के विभिन्न सूत्रों को विस्तार से समझाया। फिर अचानक चुप होकर लेट गए व बोले कि- अभी वातावरण बनना है तब तुम लोग यह सब साधनाएँ करना। सूर्य का ध्यान व गायत्री जप, नित्य शक्तिसंचार हेतु प्राणायाम, बस इतना भर तुम करते रहो व सबको बताते रहो। समय आने पर ग्रन्थिवेधन से लेकर चक्रजागरण, पंचकोषी साधना से लेकर कुण्डलिनी जागरण आदि पहले बतायी गयी मेरी समस्त साधनाएँ तुम्हारे लिए सरल होती चली जायेंगी। वैसे मैं यह सब लिखकर जा रहा हूँ, सारी साधना पद्धतियों को मैंने समय के अनुसार बदलकर लिख दिया है, किन्तु लोग इन्हें कर तभी पायेंगे जब सूक्ष्म जगत की ऋषि-सत्ताएँ ऐसा चाहेंगी।

चौथे दशक के अंत में 'मैं क्या हूँ' नामक आत्मोपनिषद् से आरंभ कर गायत्री महाविद्या के छोटे छोटे सूत्रों का उद्घाटन करने वाले, गायत्री व यज्ञ को जीवन-व्यवहार में हर किसी के द्वारा अपनाये जाने का प्रतिपादन करने वाले परमपूज्य गुरुदेव का आविर्भाव हुआ। देखते-देखते अखण्ड-ज्योति पत्रिका का गायत्री चर्चा प्रसंग ऐसा विस्तृत होता चला गया कि उसने योग व तंत्र के सारे विशिष्ट पहलुओं को आत्मसात् कर जन-जन के लिए सुलभ बना दिया। 1008 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ द्वारा एक विशाल गायत्री परिवार का संगठन करने वाले परम पूज्य गुरुदेव ने स्वयं को बिना अधिक प्रकाश

ऋषि चेतना का मर्मज्ञ मानवीय जीवन का जानकार होता है। अपने तन-मन की प्रयोगशाला में चेतना के रूपान्तरण का प्रयोग करता है और अपने शोध निष्कर्ष को जनहित में सूत्र रूप में प्रस्तुत करता है। युगऋषि आचार्य एक ऐसी ही ऋषिकल्प विभूति थे, जिन्होंने युगानुकुल साधना पद्धति को इज़ादकर मानव मात्र का असीम उपकार किया...



अपने काम का दायरा शरीर और कुटुम्बियों से बड़ा करना होगा, इससे हृदय की क्षुद्रता विशालता में बदलेगी, शान्ति के बन्द दरवाजे खुल जायेंगे।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

में लाए, लगभग एक वर्ष की उच्चस्तरीय तांत्रिक स्तर की साधना हिमालय में पुन: 1960-61 में की (जो उनकी चौबीस लक्ष की चौबीस महापुरश्चरणों के बाद की साधना है) तथा तुरंत आते ही युगनिर्माण योजना को जन्म देकर जन-जन को पंचकोशी साधना द्वारा साधनापथ पर एक ऊँचे सोपान पर चल पड़ने को प्रेरित किया।

सामान्यतया नारी-शक्ति से तप के स्थान पर भाव-प्रधान अपेक्षाएँ की जाती रही हैं, किन्तु युगऋषि ने एक विराट् नारी समुदाय को भी इस कठोर साधना का भागीदार बनाया, पंचकोशीय साधना हेतु सुनियोजित पाठ्यक्रम चलाया, सूर्य की साधना सबके द्वारा इन प्रतिकूल परिस्थितियों में किए जाने की महत्ता प्रतिपादित की तथा महाकाल की युगप्रत्यावर्तन प्रक्रिया का उद्घाटन करते हुए कठिन से कठिन साधनाओं को सरल रूप देते हुए एक विशाल समुदाय को गायत्री-सावित्री महाशक्ति की साधना से जोड़ दिया।

हम संभवत: अपनी गुरुसत्ता के साधना क्षेत्र की उपलब्धियों का विश्लेषण कर उनकी युगऋषि के रूप में अपरिमित उपलब्धियों के विषय में पूरा न्याय न कर पाएँ, किन्तु इतना अवश्य बताना चाहेंगे कि जो साधना-पद्धतियाँ कभी भिन्न-भिन्न समूहों में बँटकर कुछ पंथों तक सीमित रह गयी थीं, उन्हें जन-साधारण के नित्यक्रम का एक अंग बना देना, षटचक्र जागरण, कुण्डलिनी जागरण, ग्रन्थि-भेदन जैसी प्रक्रियाओं को अतिसरल रूप में एक गायत्री साधना रूपी वटवृक्ष के नीचे लाकर खड़ा कर प्रतिपादित कर देना एक ऋषि स्तर के व्यक्ति का काम है।

चौथी बार की हिमालय यात्रा (1971-72) के बाद आने पर प्राण-प्रत्यावर्तन साधना के द्वारा प्राण का महाप्राण के साथ आदान-प्रदान जैसी प्रक्रिया आरंभ करना जिसमें खेचरी मुद्रा, सोऽम् साधना, ज्योति अवतरण की बिन्दु साधना, नादयोग की साधना, आत्मबोध-तत्त्वबोध की दर्पण साधना, पंचकोशों की पंचदेव सिद्धि आदि उपचारों का समावेश था, जो एक विलक्षण स्थापना है।

उस पर भी परम पूज्य गुरुदेव यह कहते थे कि- यह तो मात्र खिलौने-झुनझुने मैंने पकड़ा दिये हैं। समय आने पर एक करोड़ से अधिक व्यक्तियों से इनसे भी कठोर स्तर की साधनाएँ सूक्ष्म शरीर से कराते हुए उन्हें नवयुग का आधार, आत्मबल सम्पन्न महामानव मुझे बनाना है। जो कभी अति कठोर, दुर्लभ समझी जाने वाली साधनाएँ थीं, उन्हें उन्होंने इतना सरल कर दिया तथा उपाधि दी झुनझुनों की। कहीं ऐसा वर्णन साधना-पद्धतियों का साधना के इतिहास में नहीं मिलता जिसका प्रणयन परम पूज्य गुरुदेव ने किया, यही उनका ऋषिपक्ष उद्घाटित होता है। जो नये सूत्र चेतना जगत् के क्षेत्र को दे, वह युगऋषि नहीं तो और क्या है?

प्राण-प्रत्यावर्त्तन के उपरान्त स्वर्ण जयंती साधना (1976), विशिष्ट ब्रह्मवर्चस साधना (1977-78), युग सन्धि महापुरश्चरण (1980), आध्यात्मिक कायाकल्प की चांद्रायण स्तर की कल्प-साधना (1981-82), अति प्रचण्ड सूक्ष्मीकरण साधना (1984-85), पंचवीरभद्रों के जागरण की सावित्री साधना (1986) तथा राष्ट्र की देवात्म शक्ति का कुण्डलिनी जागरण (1987) क्रमश: चले आने वाले वे विशिष्ट उपादान हैं, जिनसे अतिकठिन शास्त्रोक्त साधना-पद्धतियों को अति सरल बनाकर यज्ञ-प्रक्रिया में आमूल-चूल परिवर्तन कर उसे प्रगतिशील मोड़ देना, एक असाधारण साधक स्तर के युगऋषि का ही कार्य हो सकता है। ◈

जहाँ रामकृष्ण परमहंस की विशेषता यह थी कि उन्होंने साधना के गूढ़ रहस्यों को सरल-सुबोध कथानकों के माध्यम से स्पष्ट किया, वहीं परमपूज्य गुरुदेव की विशेषता यह रही कि उन्होंने साधना सूत्रों को सरल एवं प्रभावी बनाया। हजारों नहीं, लाखों सर्वसामान्य व्यक्ति गायत्री साधना से जुड़े और आत्मिक विकास के पथ पर अग्रसरित हुये। गायत्री ही नहीं, यज्ञ एवं संस्कार के जटिल कर्मकाण्ड भी सर्वसुलभ हुए।

प्रार्थना एक विज्ञान है जिसमें मनुष्य को बदल देने की शक्ति होती है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

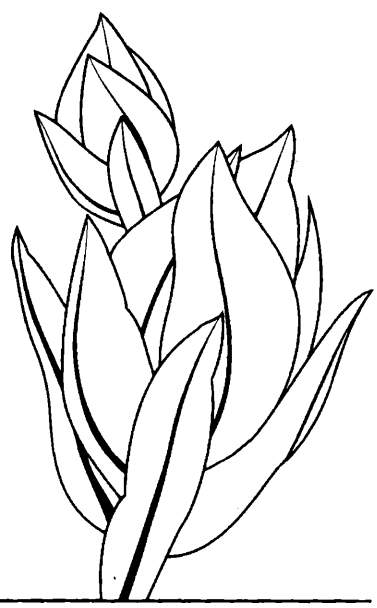
आत्मदेवता के साधक सावित्री के सिद्ध उपासक

अपनी प्रचण्ड तपश्चर्या एवं गायत्री महाशक्ति की सुनियोजित उपासना कर वर्चस की सिद्धि करने वाले पूज्य गुरुदेव ने सदैव डंके की चोट पर यह कहा कि ''जो भी उनके द्वारा निर्देशित साधना-उपक्रम को जीवन में अपनाएगा, वह सुनिश्चित ही प्रतिफल पाएगा। हमने गायत्री उपासना तथा पूजा-पद्धति लोगों को सिखाई है और साथ ही यह भी कहा है कि इनका पूरा लाभ उन्हीं को मिलेगा जो अपने व्यक्तित्व को पवित्र एवं उत्कृष्ट बनाने की साधना भी साथ ही करेगा।'' आगे वे लिखते हैं कि ''हमने प्रत्येक सहचर को शास्त्रों एवं ऋषियों का यही संदेश सुनाया है कि वे भी विश्व-मानव की सेवा को हमारी ही तरह जीवन का वैसा ही अंग बनाएँ, जैसा कि शरीरयात्रा के नित्यकर्म हेतु हम प्रयत्नशील रहते हैं। यही सच्चा अध्यात्म है।''

उपासना को सेवा-साधना से जोड़ने का उनका तरीका स्वयं में निराला था एवं अध्यात्म को सही प्रगतिशील दिशा देने वाला भी। लाखों व्यक्तियों को इस प्रकार उन्होंने अपनी ही मुक्ति, वैराग्य, समाधि वाले चिन्तन से विरत कर लोकसेवी बना दिया। यह एक क्रान्तिकारी स्तर का विचारक ही कर सकता था। धर्म के सम्बन्ध में जो भ्रान्तियाँ संव्याप्त हैं एवं जनोपदेशक जो भी कुछ कहकर उन्हें पोषण देते रहे हैं, उनसे जूझना व योद्धा की तरह संघर्षरत रह, बिना विचलित हुए लक्ष्य सिद्धि तक पहुँच जाना उनके व्यक्तित्व के एक अनूठे पक्ष को प्रस्तुत करता है। पिछले दिनों लिखे 'सावित्री महाविज्ञान' (अभी अप्रकाशित) ग्रन्थ में उन्होंने जो लिखा है, वह पूरे मानव समुदाय को एक चुनौती है। उसे उन्हीं की लिपि में यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

''गायत्री उपासना का प्रयोजन प्रमुखतया सद्बुद्धि का अवतरण है। वह ऋतम्भरा या महाप्रज्ञा कही जाती है। उसका यही लाभ प्रमुख है। इस सन्दर्भ में हम जितना कुछ उपलब्ध कर सके हैं, वह गर्व करने योग्य तो नहीं, पर संतोषजनक अवश्य है। नवनिर्माण हमारे इस जीवन का प्रमुख उद्देश्य है। सज्जनों में ही सद्बुद्धि का अवतरण होता है। अपने सम्पर्क क्षेत्र में जितने भी लोग मिल सके, उनको इस मार्ग पर चलाया, घसीटा और धकेला भी है। उसका परिणाम भी लहलहाती फसल के रूप में दीखने लगा है और यह विश्वास बन गया है कि वर्तमान 24 लाख उपासक यदि अपने को बीज बनाकर बोने लगें, तो हमारी ही तरह वे भी नयी फसल उगाने लगेंगे और युगसन्धि के आगामी वर्षों में यह विस्तारक्रम इतना व्यापक हो जाएगा कि सुसंस्कारी प्रकृति के लोगों में से कदाचित् ही कुछ प्रतिशत ऐसे बचें जो

इस युग में जीवन देवता की साधना आराधना का प्रतिपादन आचार्य श्री की एक मौलिक विशेषता रही है। देवी-देवताओं की खुशामद एवं भगवान् के सामने हाथ जोड़ने का सुफल कितना सुनिश्चित है, कह नहीं सकते, लेकिन आत्मदेवता की साधना प्रत्यक्ष फलदायी है...



ओछों की नकल न करें। आदर्शों की स्थापना करते समय श्रेष्ठ, सज्जनों को, उदार महामानवों को ही सामने रखें।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

आद्यशक्ति, युगशक्ति की, गायत्री की तत्त्वचेतना से अनुप्राणित न हुए हों। अपने सहचरों, अनुचरों से हमें वैसा विश्वास भी है। यदि उनमें से कुछ शिथिल पड़ते दीखेंगे तो उन्हें झकझोरने की स्थिति में हमारी अदृश्य सत्ता यह शरीर उठ जाने के उपरान्त भी सक्षम रहेगी।''

कितना सुनिश्चित आश्वासन है व यह इलहाम भी कि संभव है शरीर के महाप्रयाण के बाद लोग प्रमादग्रस्त हो जाएँ, तो सूक्ष्म व कारण शरीर के माध्यम से उन्हें सतत सक्रिय बनाते रहने का संकल्प भी वे प्रकट करते हैं। अलौकिक दैवी सत्ताएँ, अवतारी महापुरुष इसी तरह अपना जीवन जीती अगणित व्यक्तियों के लिए प्रेरणा स्रोत बनकर अपना धरती पर अवतरण सार्थक कर जाती हैं। गुरुदेव कहा करते थे कि पाने लायक जो कुछ भी इस संसार में है, उसे आत्मदेव को जगाकर सहज ही पाया जा सकता है।

उनका मत था कि पाँच ज्ञानेन्द्रियों की शक्ति को समझना और उनका सदुपयोग कर सकना ऐसा प्रयोग है जिसके द्वारा अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय तथा आनन्दमय कोशों को जगाया जा सकता है और उनके सहारे समर्थ सिद्ध पुरुषों जैसा लाभ उठाया जा सकता है। वे यह भी कहते थे कि मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार और प्राण की पंचधा सूक्ष्म काया स्थूल शरीर से असंख्य गुनी सामर्थ्यवान् है। (**अखण्ड-ज्योति नवम्बर, 1971, पृष्ठ 54**) गायत्री की व्याख्या प्राणों की रक्षा करने वाली महाशक्ति (गय यानि प्राण का जो त्राण करे, वह 'गायत्री') के रूप में भी की जाती है। पूज्य गुरुदेव ने पंचकोशों की तो सिद्धि अर्जित की ही, प्राणशक्ति को प्रबल और संकल्प को अडिग बनाकर स्वयं को अजर, अमर, मृत्युंजय बना लिया। इन्द्रियों से वे परिचारिकाओं जैसा काम लेते रहे, कभी उच्छृंखल नहीं होने दिया।

स्वादेन्द्रियों की पवित्रता हेतु जौ व छाछ का सेवन तथा वाक् पवित्रता अर्जित करने हेतु सत्य का प्रयोग जीवन भर किया। निष्पाप व निर्मल जिह्वा पर साक्षात् सरस्वती विराजमान रहती थीं। यही कारण था कि उनके आशीर्वाद कभी निष्फल नहीं गए, न कभी परामर्श टाले गए, जिससे बात की उसे अपना बना लिया। जो कुछ भी सारगर्भित प्रवचनों में कहा लोगों के अन्तःकरण में उतरता चला गया। यही बात घ्राणेन्द्रियों, चक्षुन्द्रियों, कर्णेन्द्रियों तथा कामबीज रूपी त्वकेन्द्रिय के सम्बन्ध में समझी जा सकती है।

सर्वत्र उन्होंने सद्भावना व श्रेष्ठता की ही गंध सूँघी, आँखों से श्रेय ही देखा, कानों से दिव्य प्रयोजन के वचन ही सुने, कटु-कर्कश वचनों को भुला दिया तथा ब्रह्मचर्य की साधना द्वारा ऊर्ध्वरेता बन अपनी कुण्डलिनी शक्ति को जाग्रत् किया। यह पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ जिस व्यक्ति ने मातृवत् श्रद्धा के साथ सिद्ध कर लीं, उसके पास कोई कमी रह कैसे सकती है? पंचदेवों को भी उन्होंने इन्द्रियों की तरह सँभाला। मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार व प्राण सभी देवों की आराधना कर उन्हें परिष्कृति की ओर ही नियोजित किया। गायत्री के पाँच मुख पंचकोश कहलाते हैं।

यही सावित्री का स्वरूप है। दस भुजाओं का अलंकारिक विवरण आता है। वे पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ एवं पाँच मनस तत्त्व से सम्बन्धित देवता ही हैं, जो मिलकर महाशक्ति की दस भुजाएँ बनाते हैं। इस प्रकार पूज्य गुरुदेव ने पंचकोशों की सिद्धि व दस देवताओं को आत्मसात कर स्वयं को सावित्रीमय बना लिया था। सावित्रीमय स्वयं को ही नहीं, अपितु अगणित व्यक्तियों को इस दिशा में मोड़ा व सद्बुद्धि की अवधारणा द्वारा देवत्व का अभिसंचार भी किया। यही तो है नूतन सृष्टि का सृजन। ◈

नवयुग का आगमन-अवतरण निकट है। उसे स्रष्टा किसके माध्यम से पूरा करने जा रहे हैं, यह जानना हो तो समझना चाहिए कि युग-अवतरण का श्रेय उन्हीं को उपहारस्वरूप भगवान् दे रहे हैं, जो उनके काम में लगे हैं, ऐसे लोगों को ही बड़भागी और सच्चा भगवद्-भक्त मानना चाहिए।

(नवसृजन के निमित्त महाकाल की तैयारी, पृ. क्र.-32)

ईश्वर में जो क्षमताएँ, विशेषताएँ एवं विभूतियाँ हैं, वे सभी परिष्कृत स्तर के मनुष्य में प्रकट हो सकती हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नई गायत्री बना दी है उज्ज्वल भविष्य की प्रार्थना

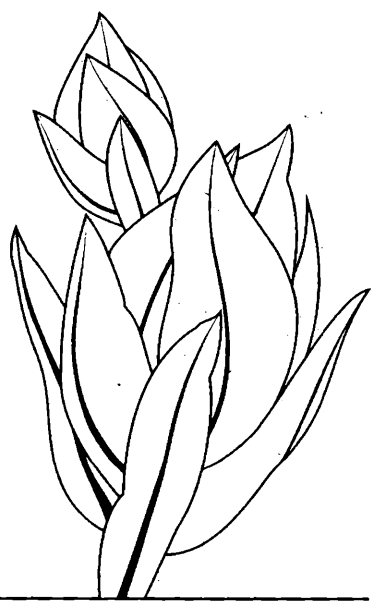
नई सृष्टि की रचना करने वाले इस युग के विश्वामित्र, अपने तपोबल से लाखों की दिशा बदलने वाले आचार्यश्री के विषय में गायत्री तपोभूमि में पधारे राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष निरंजननाथ आचार्य के विचार पढ़ें...

एक बार पूज्यवर ने कार्यकर्त्ताओं के बीच चर्चा के दौरान कहा था ऐसी गायत्री पहले कभी नहीं थी, जैसी नव सृजन अभियान के क्रम में प्रयुक्त हो रही है, उनका मंतव्य बहुत स्पष्ट था- आद्य शक्ति गायत्री का अधिकार और उस के दिव्य अनुदान इस उदारता से कभी नहीं बाँटे गये, जिस प्रकार इन दिनों दिये जा रहे हैं।

गायत्री विद्या सम्बन्धी यह अभिनव प्रयोग क्यों किया गया? इस संदर्भ में उनका स्पष्टीकरण लेखनी एवं वाणी में अनेक बार प्रकट हुआ है। मथुरा में सहस्र कुण्डीय यज्ञ प्रारम्भ के पूर्व अपने उद्घाटन उद्घोष में उन्होंने कहा था लोग कहते हैं गायत्री इस प्रकार सबको क्यों दी जा रही है ? इसमें मैं क्या कर सकता हूँ, एक दिन सारा संसार गायत्री का प्रयोग करेगा।

स्पष्ट है कि जन-मन में घुसी अनास्थाजनित दुर्बुद्धि का निवारण हुए बिना मनुष्य का कल्याण संभव नहीं है। उसका निवारण साधारण प्रयासों से संभव नहीं है। इसलिए आद्यशक्ति महाप्रज्ञा को ही हर मानस में प्रविष्ट करना होगा। वही अनास्था के स्थान पर आस्था और दुर्गति के स्थान पर सुमति को स्थापित करने में सक्षम है। इसलिये मानव मात्र पर आये संकटों के निवारण के लिये आपात् स्थिति में अनिवार्य उपचार के रूप में गायंत्री महाशक्ति को जन-जन तक पहुँचाये जाने का निर्धारण सूक्ष्म जगत् में दिव्य चेतना द्वारा किया जा चुका है। श्रीराम शर्मा नाम के शरीर के माध्यम से वही दिव्य चेतना उक्त निर्धारण को क्रियान्वित कर रही हो, तो माध्यम उसमें कोई परिवर्तन कर भी कैसे सकता है? और वह माध्यम जिस चेतन से संचालित है, उसके निर्णय से हटकर कुछ चाहे भी क्यों ?

अस्तु गायत्री महाविद्या सर्वसुलभ रूप में विकसित और प्रयुक्त हुई। भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में तो गायत्री मंत्र के केवल चौथे चरण ''धियो यो नः प्रचोदयात्' के हिन्दी पद्यानुवाद 'सबको सन्मति दे भगवान्' से काम चल गया, किन्तु मानव मात्र को अनास्था के क्रूर शिकंजे से स्वतंत्र कराने के लिये तो समग्र मंत्र का प्रयोग ही अनिवार्य था, इसलिये इसके प्रयोग की व्यवस्था बनी और असाधारण तीव्र गति से फैली भी। विश्वव्यापी नव निर्माण का चक्र और अधिक तीव्र गति से चलाने के लिये पूज्यवर ने तीन वर्ष सूक्ष्मीकरण साधना के अन्तर्गत प्रचण्ड तप शक्ति का विकास किया। उसी क्रम में अनुभव किया कि बहुत तीव्र गति से गायत्री विद्या को जन-जन के मानस में स्थापित करना आवश्यक है। परम्परागत संस्कृत शब्दावली में गठित



भाव-संवेदना जहाँ जीवंत-जाग्रत् होती है, वहाँ स्वतः ही सतयुगी वातावरण विनिर्मित होता चला जाता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

गायत्री मंत्र तक प्रयोग सीमित रखने में समय अधिक लग सकता है। अस्तु शब्द प्रयोग के समानान्तर भाव प्रयोग का एक नया मार्ग भी उन्होंने खोल दिया और कहा-उगते सूर्य की तरह दिव्य प्रकाश का ध्यान करें। भावना करें कि परमात्मा की दिव्य चेतना उगते सूर्य के प्रकाश की तरह हमारे चारों ओर फैल गयी है।

प्रार्थना करें यह दिव्य चेतना जन-जन को उज्ज्वल भविष्य का मार्ग पहचानने की दृष्टि और उस पर चलने की शक्ति प्रदान कर रही है, यह भाव प्रयोग किसी भी मत या पंथ वाला व्यक्ति बिना किसी झिझक के प्रारम्भ कर सकता है। आत्म प्रगति तथा सूक्ष्म जगत् के अनुकूल दोनों रूपों में उसका प्रभाव फलित होगा।

आद्यशक्ति गायत्री उज्ज्वल भविष्य के नव सृजन के लिये ही जन सुलभ रूप में प्रसारित हुई है। चेतना का आकर्षण भावना द्वारा ही अधिक होता है। सबके लिये उज्ज्वल भविष्य की प्रार्थना होते ही 'धियो योनः प्रचोदयात्' का भाव बन जाता है। इस दिव्य चेतना को अपने अन्दर धारण करने के भाव से ''धीमहि'' की शर्त पूरी होती है।

उदीयमान सूर्य के प्रकाश के रूप में दिव्य सत्ता का आवाहन करते ही 'भूर्भुवः स्वः' में संव्याप्त सविता रूप, वरण करने योग्य, विकार नाशक, दिव्यता प्रदान करने वाली सृजनशक्ति के साथ योग बैठ जाता है। शब्दों का प्रयोग बदलने पर भी, भाव प्रवाह वही बन जाता है। इस प्रकार विश्व स्तर पर गायत्री महाशक्ति के प्रयोग की नई विद्या पूज्यवर विकसित करके दे गये हैं। जिनकी आस्था अभी कम विकसित है, अथवा किसी कारण संस्कृत शब्दावली का प्रयोग करने का मानस नहीं बन रहा है वे भी इस दिव्य धारा का लाभ उठा सकेंगे।

जन-भावना को महाकाल के सृजन संकल्प से जोड़ने के लिये अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ेगी। सूक्ष्म तंत्र इस प्रयोग का प्रतिफल देने के लिये तैयार है। वह कार्य पूज्यवर ने कर दिया है। अब उसे जन-जन तक स्थूल रूप में पहुँचाने का मोटा काम भर सृजन शिल्पियों को करना है। ◈

सूर्य में एकाकार चेतना पूज्य गुरुदेव

मई 1987 की बात है। पूज्य गुरुदेव सूक्ष्मीकरण साधना से बाहर आ चुके थे। हम कुछ परिजन गुरुदेव के पास बैठे थे। साधना संबंधी चर्चाएँ हो रही थीं। इन्दौर के एक परिजन ने पूज्यवर से पूछा कि गुरुदेव, कहते हैं कि गुरुदीक्षा के बिना गायत्री फलित नहीं होती और हमने अभी दीक्षा नहीं ली है ! तो क्या फिर भी हम गायत्री मंत्र का जप व अनुष्ठान कर सकते हैं?

इस पर गुरुदेव ने उनकी शंका का समाधान यह कहते हुए किया- ''बेटे किसी गुरुवार या रविवार को उगते हुए स्वर्णिम सूर्य के सामने हाथ में पुष्प, अक्षत, जल लेकर सूर्य भगवान् की किरणों का ध्यान करते हुए मन से कहना कि हम आपको अपना इष्ट-मार्गदर्शक स्वीकार करते हैं। फिर तीन बार मन ही मन गायत्री मंत्र दुहराकर सूर्य भगवान् को अर्घ्य समर्पित कर देना। तुम्हारी दीक्षा हो जाएगी और अगर तुम्हारा मन हो तो शान्तिकुञ्ज में कभी दीक्षा संस्कार में शामिल हो सकते हो।''

फिर वे बोले ''मैं शरीर छोड़ने पर ऐसा करूँगा, जैसे कोई कुर्ता उतारता है, पर फिर मैं तीन स्थानों पर रहूँगा- एक माता जी के पास, दूसरा सजल-श्रद्धा, प्रखर प्रज्ञा, तीसरा अखंड दीपक। हमारे बीच अमेरिका के एक परिजन भी बैठे थे। उन्होंने कहा गुरुजी, यह तीनों स्थान तो शांतिकुंज में हैं और हम लोग तो बहुत दूर हैं। इस पर गुरुजी बोले बेटा, मेरा चौथा स्थान उगता हुआ सूर्य होगा।''

किसने कितनी उन्नति की, इसकी सच्ची कसौटी यह है कि उस मनुष्य के दृष्टिकोण और स्वभाव में कितना परिष्कार हुआ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

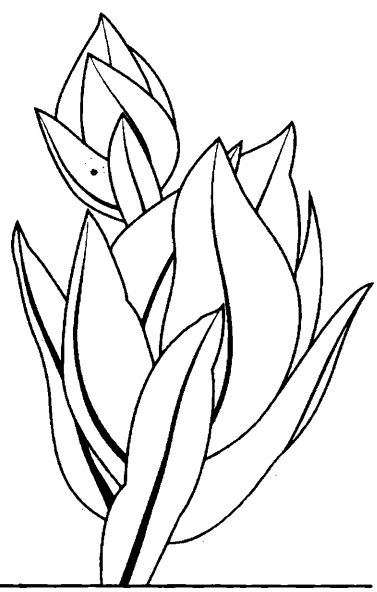
गायत्री के सिद्ध उपासक युग के विश्वामित्र

परम पूज्य आचार्यजी गायत्री तपोभूमि के संस्थापक और अखिल विश्व गायत्री परिवार के कुलपिता हैं। साधना क्षेत्र में उनके लिए कहना ही क्या कि वे एक अद्‌भुत-ऐतिहासिक मिसाल बना चुके हैं। चौबीस-चौबीस लक्ष के 24 गायत्री महापुरश्चरण उन्होंने किये हैं। पूर्वकाल में सवा करोड़ गायत्री जप करने वाले को वशिष्ठ की पदवी प्रदान की जाती थी। उनका इतना सम्मान किया जाता था कि वशिष्ठ ही अयोध्यापुरी के राजाओं के राजगुरु हुआ करते थे, जिनकी आज्ञा के बिना राज्य में पत्ता भी नहीं हिलता था, उनके पथ-प्रदर्शन में ही सब कार्य हुआ करते थे। पूज्य आचार्यजी ने धरती पर स्वर्ग के अवतरण की बात कही और युग परिवर्तन का उद्‌घोष किया, जिसके कारण उन्हें इस युग का विश्वामित्र कहा जाता है।

विश्वामित्र जी ने अपने तप के द्वारा नवीन सृष्टि की रचना की शक्ति हासिल कर ली थी, ऐसा माना जाता है। विश्वामित्र जी समस्त विश्व के मित्र, स्नेही और हितैषी थे और प्राणिमात्र में परमात्म-तत्त्व का अनुभव करते थे। परम पूज्य आचार्यजी ने भी एक नई सृष्टि की रचना की है, एक नये समाज का निर्माण किया है। सैकड़ों वर्षों से जिस जाति का इतना पतन हो चुका हो कि उसने उन्हें भजन-पूजन के अधिकारों से भी वंचित कर रखा हो। ऐसी-ऐसी कपोल-कल्पित घोषणाएँ कर दी हों कि कोई स्त्री यदि वेदमन्त्र सुन या पढ़ लेगी या गायत्री जाप कर लेगी तो उसके परिवार में महान् अनिष्ट होगा।

ऐसे समय में स्त्रियों को गायत्री जप-हवन में भाग लेने का अधिकार देना एक नई सृष्टि की रचना ही है, क्योंकि पुराने विश्वासों के अन्धानुकरण करने वाले पंडितों के विरुद्ध इस आवाज़ को उठाना, जिन पर हिन्दू जनता गम्भीर आस्था और श्रद्धा रखती है, अद्‌भुत साहस का काम है। भारतवर्ष में होने वाले हजारों यज्ञों में जो रुकावटें उन लोगों ने डाली हैं, जनता को इन पवित्र धार्मिक कृत्यों के विरुद्ध उत्तेजित किया, उन्हें हर प्रकार से डराया, धमकाया, शास्त्रों की दुहाई दी, परन्तु सत्य के पुजारी के सामने उनकी कुछ न चली। सैकड़ों वर्षों से जहाँ वेद मंत्रों की आहुतियाँ मन में उच्चारण करते हुए दी जाती थीं, वहाँ अब उच्च ध्वनि सुनाई दे रही है, क्या यह आश्चर्य नहीं है?

गायत्री परिवार के कार्यकर्तागण कोई सेठ-साहूकार या बड़े आदमी नहीं हैं, परन्तु उनके माध्यम से देश में एक अद्‌भुत धार्मिक क्रांति हो चुकी है। जितने बड़े और सफल आयोजन पिछले कुछ वर्षों में गायत्री परिवार द्वारा हुए हैं, उतने और किसी भी धार्मिक संस्था द्वारा सम्पन्न



जो भीतर से स्वच्छ होते हैं, उन्हीं का बाह्य प्रकाश भीतर के प्रकाश से चमककर लोगों के नेत्र और हृदय दोनों को प्रकाशित करता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

नहीं हुए हैं। गुरु गोविन्दसिंह ने एक स्थान पर कहा है कि मैं चिड़ियों से बाज मरवाऊँगा अर्थात् छोटे दीखने वाले व्यक्तियों से बड़े-बड़े कार्य करवाऊँगा। आचार्यश्री के सम्बन्ध में भी यही बात सिद्ध होती है, जो यज्ञायोजन बड़े-बड़े महात्माओं के द्वारा ही केवल सम्भव हो सकते हैं, वह कम पढ़े-लिखे, कम बुद्धि और सामर्थ्य रखने वाले व्यक्तियों से उन्होंने करवाये हैं। क्या यह कम गौरव की बात है?

आजकल अधार्मिकता, नास्तिकता का विशेष प्रभाव नवयुवकों पर पड़ा है। उनके सामने परमात्मा का कोई अस्तित्व नहीं और धर्म केवल ढोंग है तथा धार्मिक कर्मकाण्डों में अपना समय और शांति को व्यर्थ खोना है। गायत्री परिवार के प्रतिज्ञाबद्ध लाखों से अधिक सदस्यों के नाम व आयु देखने से प्रतीत होता है कि वे अधिकांश नवयुवक हैं। नवयुवकों को धर्म मार्ग की ओर अग्रसर करना क्या नई सृष्टि की रचना नहीं है?

धर्म-प्रचार का उत्तरदायित्व ब्राह्मणों और साधु-महात्माओं पर रहा है। आज ब्राह्मणों ने अपने कर्तव्यों को तिलांजलि दे दी है। 75 लाख साधु समाज पर बोझ बन रहे हैं। गृहस्थों का कार्य इनकी आज्ञाओं व उपदेशों का अनुकरण कर अपने जीवन का निर्माण करना है। परन्तु पूज्य आचार्यजी ने उन्हें वह शक्ति और सामर्थ्य दे दी है कि वह साधारण गृहस्थ होते हुए, छोटा-सा व्यापार व नौकरी करते हुए सन्त-महात्माओं और ब्राह्मणों जैसे कार्य योग्यतापूर्वक सम्पन्न कर रहे हैं। साधारण बुद्धि से वे आयोजनों की इतनी उत्तम व्यवस्था कर लेते हैं कि देखने पर आश्चर्य होता है। आवश्यकता पड़ने पर वे अच्छे प्रवचन दे लेते हैं। कर्मकाण्डी पंडितों से अच्छे यज्ञ करवा लेते हैं। आजकल नवयुवकों को इस ओर लाना ही कठिन है।

उनको साधक बनाकर, प्रचारक व उपदेशक बनाना तो असम्भव सा ही दिखता है। वे अपने घर, नौकरी व व्यापार के कार्यों से समय बचाकर मोहल्ले-मोहल्ले और गाँव-गाँव घूमते हैं, कड़ी धूप में पैदल चलते हैं। भूख-प्यास को सहन करते हैं, अपना धन व्यय करके साहित्य वितरण करते हैं, शाखा स्थापित कराने, यज्ञ कराने, व्यसन छुड़वाने, नये गायत्री उपासक आदि की प्रतिज्ञाएँ लेकर घी, शक्कर, नमक, एक समय का भोजन आदि त्याग कर, ब्रह्मचर्य पालन, भूमिशयन, बाल न कटवाना आदि के व्रत लेकर कठिन व्रत-अनुष्ठान करते हुए समाज-कल्याण के लिए अपने आपको अर्पित करते हैं। क्या यह नई सृष्टि की रचना नहीं है? ◈

अरुणोदय का प्रकाश सर्वप्रथम पानी में दृष्टिगोचर होता है। उसकी झलक आरम्भ में पर्वतों की चोटियों और वृक्षों के ऊपर टहनी-फुनगियों पर दिखाई पड़ने लगती हैं। उसके बाद वह प्रकाश क्रमशः अधिक व्यापक होता जाता है। समूचे आकाश में फैलता है और पर्वत-शिखरों से नीचे उतर कर सारी जमीन पर फैल जाता है। ठीक उसी प्रकार महाप्रज्ञा की जो इन तीन वर्षों में कुण्डलिनी जाग्रत् हुई है, उसकी ऊर्जा का उदयन प्रथम इस देश से होगा। पीछे क्रमशः वह समस्त विश्व में फैलता जाएगा। उसके प्रभाव से परिवर्तन होता हुआ विभिन्न क्षेत्रों में, विभिन्न रूपों में दृष्टिगोचर होगा। यह संभावना नहीं, सुनिश्चितता है। देश का-विश्व का कुण्डलिनी जागरण पुरातन काल में विश्वामित्र द्वारा सम्पन्न हुआ था। उस बार भी विश्व वसुधा का कायाकल्प हुआ था। परिस्थितियों में आमूलचूल परिवर्तन हुआ था। इस बार भी वैसा ही होने जा रहा है। विश्व वातावरण में जो विविध प्रकार की अवाँछनीयताएँ घुस पड़ी हैं, उनके परिमार्जन-परिशोधन किये जाने का ठीक यही समय है। प्रस्तुत कुण्डलिनी जागरण का यही प्रयोजन है कि व्यक्ति को नहीं, विश्व को आदर्शवादिता की पृष्ठभूमि पर सशक्त बनाया जाए। अनैतिकताओं, मूढ़मान्यताओं, अन्ध परम्पराओं, अवांछनीयताओं से उसे मुक्त किया जाय।

बेईमानी और चालाकी से अर्जित किये गये वैभव का रौब और दबदबा बालू की दीवार की तरह होता है, जो थोड़ी सी हवा बहने पर ढह जाता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गायत्री तपोभूमि की स्थापना की प्रेरक झलकियाँ

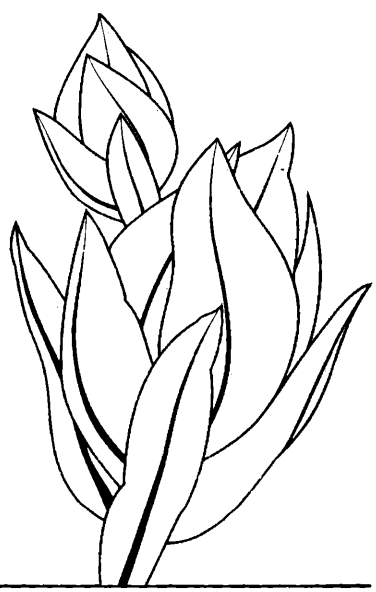
साधना की सफलता का मूल तो साधक की अटूट निष्ठा एवं आत्मशोधन है, किन्तु एक पक्ष जो बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है, वह है सुसंस्कारित साधना-स्थली में साधना करने की सुविधा उपलब्ध होना। जहाँ यह उपलब्ध हो जाती है वहाँ थोड़े ही पुरुषार्थ से दिव्यदर्शी साधक अपना लक्ष्य सिद्ध कर लेते हैं।

पूज्य गुरुदेव ने अपनी जीवन यात्रा के साधना काल रूपी पूर्वार्ध की पूर्णाहुति के लिए एवं भावी गतिविधियों को क्रियारूप देने के लिए जिस स्थान का चयन किया, वह महर्षि दुर्वासा की तप:स्थली थी। यह स्थान यमुना किनारे मथुरा से वृन्दावन जाने वाले मार्ग पर स्थित था। वे 'अखण्ड-ज्योति' के जनवरी 1952 अंक में लिखते हैं कि ''मथुरा में गायत्री तीर्थ बनने की योजना किसी व्यक्ति के संकल्प से नहीं, वरन् माता की प्रेरणा से बनी है। ब्रह्मविद्या के गंभीर अन्वेषण एवं विशद् विस्तार के लिए एक केन्द्रीय स्थान जरूरी था। कितने ही सूक्ष्म एवं रहस्यमय कारणों से वह स्थान मथुरा चुना गया व अब वहाँ गायत्री माता का मंदिर व तपोभूमि बननी है।'' यही स्थान बाद में 'गायत्री तपोभूमि' नाम से प्रख्यात हुआ।

भूमि का चयन करने के बाद उससे भी कठिन कार्य निर्माण का है। धर्मधारणा भारत में अभी भी जिन्दा है, पर उन दिनों जब चारों ओर मूढ़ मान्यताएँ घर किए हुए ब थीं, गायत्री के संबंध में भ्रान्तियाँ संव्याप्त थी, यह काम भगीरथ के गंगावतरण के समान दुष्कर था। गुरुदेव ने सबसे पहले 'गायत्री चर्चा' स्तम्भ के माध्यम से सब पाठकों की मनोभूमि बनाई एवं गायत्री तीर्थ बनाने की आवश्यकता बताते हुए अंतस् की सदाशयता जगाई। यों, यह कार्य इस युग का ब्रह्मर्षि, यह विश्वामित्र अकेला भी कर सकता था, पर जनता के अंश-अंश सहयोग द्वारा उनका अपनत्व संस्था से जोड़ते हुए ही वह कार्य होना है, यही उनका लक्ष्य था। साथ ही सहयोग देने वाले हर व्यक्ति को उनने 'गायत्री उपासक' कहा तथा प्रत्येक से हाथ से मंत्र लेखन व नियमित अनुष्ठान करने को कहा।

उनके स्वयं के चौबीस महा-पुरश्चरणों की समाप्ति का समय आ रहा था। गायत्री जयंती 1953 में उसकी औपचारिक पूर्णाहुति होनी थी। उस दिन तक उनने तपोभूमि पर मंदिर के निर्माण तथा गायत्री माता की मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा के कार्य पूरे कर लेने का निश्चय कर लिया और इस पुनीत कार्य में सभी साधकों से सहयोग माँगा। इसके लिए अ. ज्यो. नवं. सन् 51 के अंक में गायत्री तपोभूमि का संभावित रूप क्या होगा, इसका एक चित्र छपा व उसके नीचे एक पंक्ति दी, 'देखें, किन्हें पुण्य मिलता है, इस पवित्र तीर्थ को बनाने का'। आश्चर्य होता है, यह देखकर कि तपोभूमि वैसी ही बनी, जैसा कि इसका

1941 से 1947 तक की अवधि साक्षी है कि हमारी गुरुसत्ता की उस प्रेरक स्थिति की, जिसने उस मिशन को वटवृक्ष का रूप दे दिया। कर्मभूमि - तपोभूमि मथुरा में उनके साधना अनुष्ठान की पूर्णाहुति हुई एवं 2400 तीर्थों की जलरज के साथ गायत्री माता के विग्रह की स्थापना हुई।



मनुष्य का जीवन एक आदर्श कर्म विद्यालय है। इसमें नैष्ठिक स्नातक वे समझे जाते हैं, जो कर्म को जीवन ध्येय मानकर उसे कुशलतापूर्वक करते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

प्रारूप बनाया गया था। ज्येष्ठ सुदी 10, गायत्री जयंती 1952 तक उनने हस्तलिखित गायत्री मंत्र चौबीस लाख की संख्या में गायत्री तपोभूमि पहुँचाए जाने की अपनी इच्छा व्यक्त की। प्रत्येक व्यक्ति से 2400 मंत्र लिखकर भेजने को कहा। इस प्रकार एक हजार चुने हुए साधकों द्वारा इस लक्ष्य पूर्ति के लिए तिथि निर्धारित कर दी व उस दिन तक उन्हें हस्तलिखित गायत्री मंत्र प्राप्त हो गए। पर मंदिर निर्माण अभी भी होना था।

अपने पाठकों को श्रेय देने के लिए उनके नगण्य से अनुदान को भी 'अखण्ड-ज्योति' में छापा व जिन-जिन ने नैष्ठिक उपासना की, उनके चित्र जुलाई अंक में छापे जिनमें सावित्री देवी, शिवशंकर मिश्र, बालाशंकर भट्ट, नन्दकिशोर उपाध्याय, पुरुषोत्तम साखरे तथा शलिग्राम दुबे कुछ नाम हैं। वस्तुतः जुलाई 1952 का अंक ही गायत्री साधना की अनुभूतियों पर आधारित अंक था। इस तथा आगे के अंकों की "गायत्री चर्चा" प्रसंग में उनने स्थान-स्थान पर गायत्री उपासना का महत्त्व तथा फैलायी जा रही भ्रांतियों के निवारण हेतु शास्त्र सम्मत, तर्क-सम्मत समाधान दिए।

दिसम्बर 1952 की 'अखण्ड-ज्योति' में उनने घोषणा कर दी कि ज्येष्ठ सुदी सं 2010 गायत्री जयंती सन् 1953 को कई महान कार्यों की पूर्णाहुति होगी। उसमें प्रथम थी—सहस्रांशु गायत्री ब्रह्मयज्ञ की पूर्णाहुति। 125 करोड़ गायत्री महामंत्रों का जाप, 125 लाख आहुतियों का हवन, 125 हजार उपवास तीनों ही पूरे होने आ रहे थे, वे सभी गायत्री जयंती तक पूरे हो जाने की संभावना उनने व्यक्त की थी। दूसरा था—सवा करोड़ हस्तलिखित मंत्रों के संकल्प की पूर्ति व उसकी भी पूर्णाहूति। तीसरा था—स्वयं के 24-24 लाख के 24 पुरश्चरणों की पूर्णाहुति। चौथा था—गायत्री मंदिर में गायत्री माता की मूर्ति की प्राण- प्रतिष्ठा। ऋषिकल्प सात्विकता का इस आयोजन में पूरा ध्यान रखे जाने का उनने आश्वासन दिया और स्वयं वैसाख सुदी 15 से ज्येष्ठ सुदी 10 तक चौबीस दिन मात्र गंगाजल पीकर निराहार उपवास रखने की घोषणा की। यह प्राण-प्रतिष्ठा पर्व कितना महत्त्वपूर्ण था, इसको भली-भाँति समझा जा सकता है, जब हम देखते हैं कि इसके लिए पूर्व से पूज्य गुरुदेव ने क्या क्या तैयारियाँ की थीं? यथा—

1- भारतवर्ष के सभी चौबीस सौ प्रमुख तीर्थों का जल एवं सभी सिद्धपीठों (इक्यावन) की रज एकत्रित कर, सभी तीर्थों व सिद्धपीठों को गायत्री तीर्थों में प्रतिनिधित्व देने की घोषणा कर छह माह में यह कार्य पूरा भी कर लिया। बारह महाशक्तिपीठों का चरणोदक भी स्थान-स्थान से मँगाया गया।

2- सात सौ वर्षों से जल रही एक महान सिद्धपुरुष की धूनी की अग्नि की स्थापना करने की बात कही गयी।

3- अधिकारी विद्वानों द्वारा यज्ञ, वेदपाठ, प्राणप्रतिष्ठा, मूर्ति स्थापना, रुद्राभिषेक, प्रवचन, प्रसंग इस आयोजन में सम्पन्न होने की बात लिखी गयी।

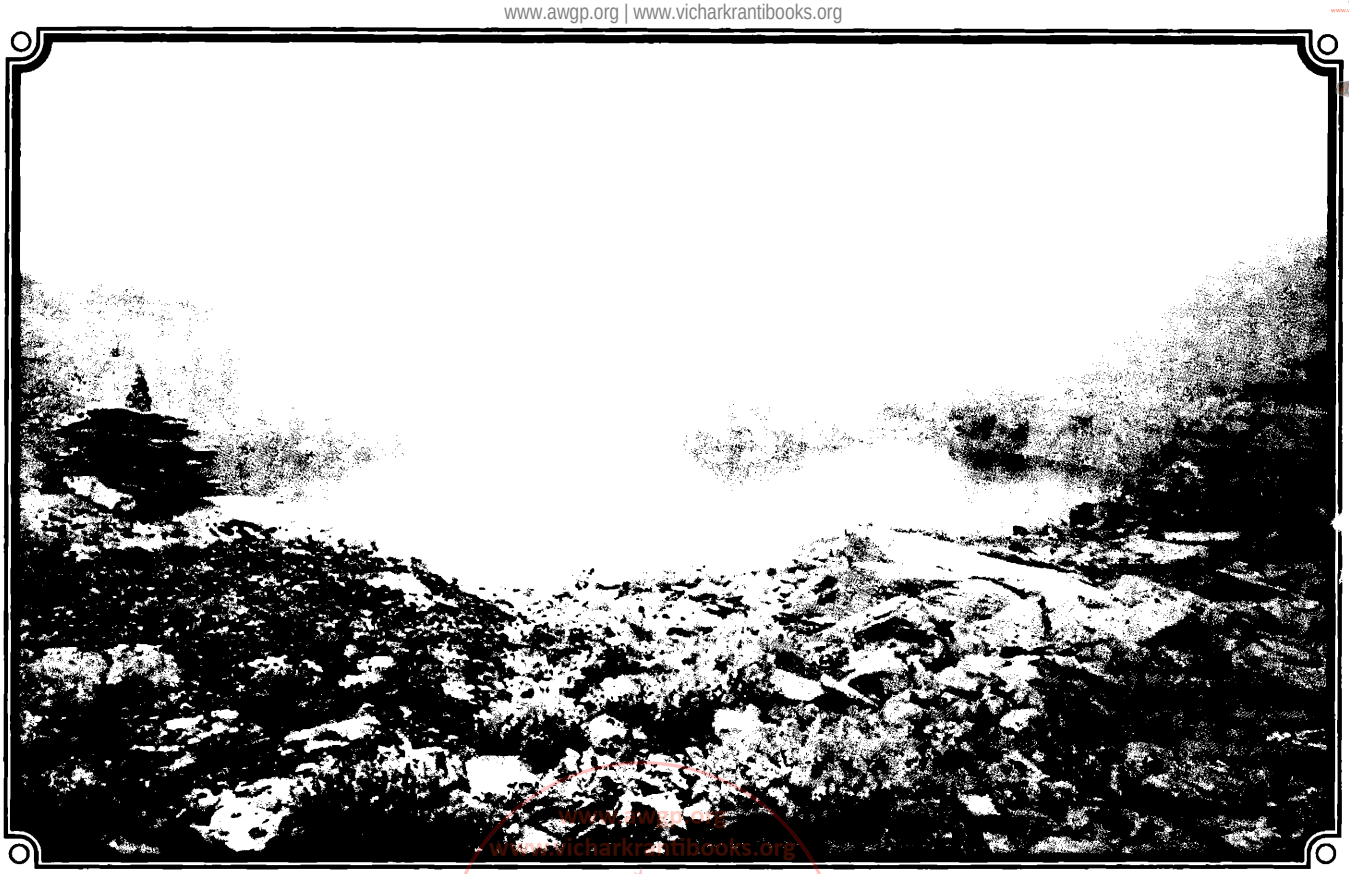
4- सवा करोड़ मंत्र लेखन भी प्रस्तावित गायत्री तीर्थ में उसी दिन स्थापित किए जाने की घोषणा की गयी।

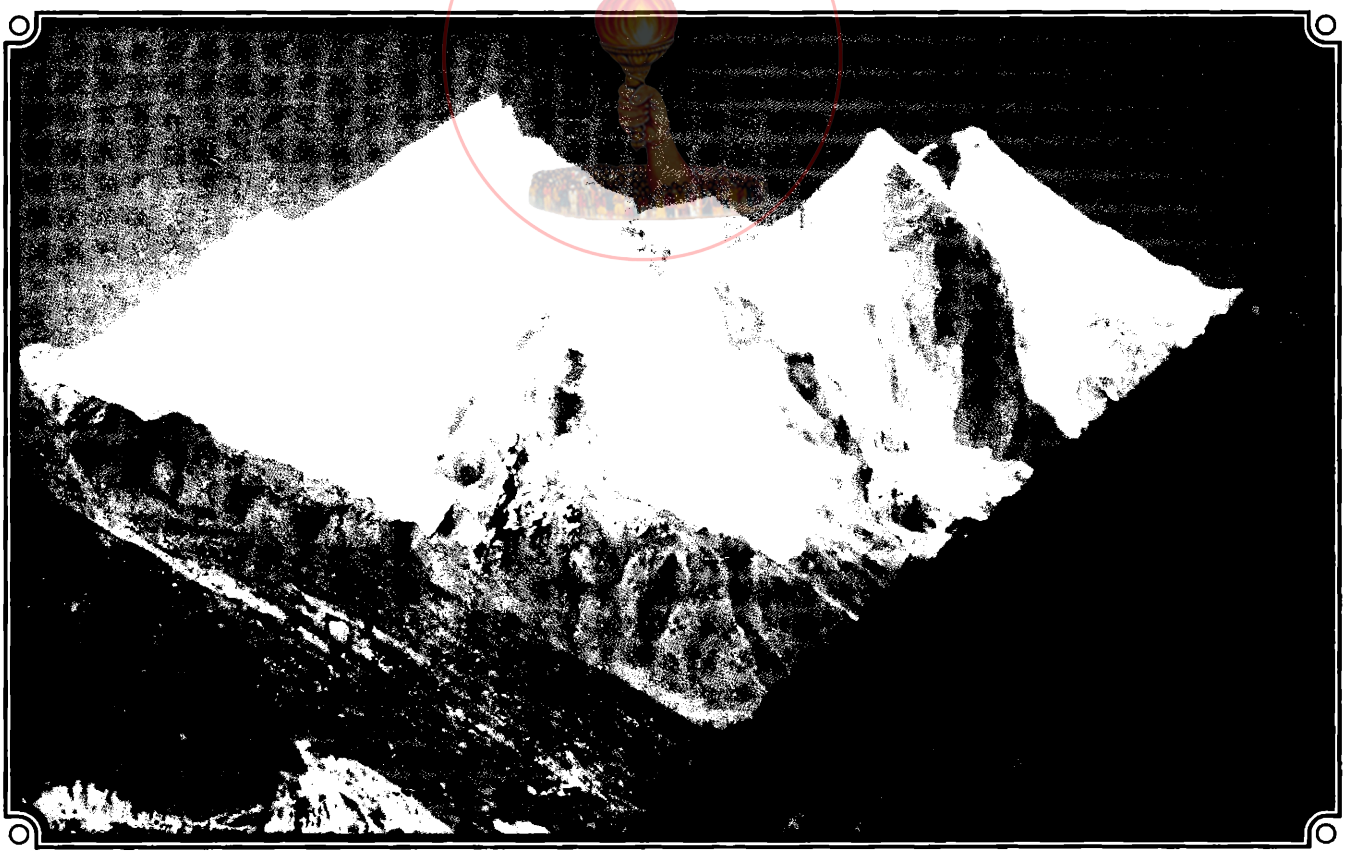
इस आयोजन में बहुत बड़ी भीड़ को नहीं, मात्र 125 गायत्री-उपासकों को बुलाया गया, जिनने संतोषजनक ढंग से समस्त विधि-विधानों को पूरा कर गायत्री उपासना संपन्न की थी। साथ ही ज्ञानवृद्ध, आयुवृद्ध, लोकसेवी, पुण्यात्मा सत्पुरुषों के पते भी माँगे गए, ताकि उनसे इस पुण्य आयोजन हेतु आशीर्वाद लिया जा सके। कितना सुनियोजित व शालीनता, सुव्यवस्था से भरा-पूरा आयोजन, जिसमें स्वयं को सिद्ध न बताकर सबके आशीर्वाद माँगे, ताकि भूमि के संस्कारों को जगाकर एक सिद्धपीठ विनिर्मित की जा सके।

सब कुछ इसी प्रकार चला एवं चौबीस दिन का जल-उपवास पूज्य गुरुदेव ने निर्विघ्न पूरा किया। जो साधक ब्रह्मयज्ञ में आए थे, उन्हें मात्र दूध दिया जाता व लकड़ी की खड़ाऊँ पर चलने, यथासंभव सारी तप-तितीक्षाओं का निर्वाह करने को कहा गया। गायत्री जयंती के दिन वाराणसी से पधारे तीन संतों ने ब्रह्मयज्ञ की शुरुआत की। अरणिमंथन द्वारा अग्नि प्रज्वलन का प्रयास किया गया, पर तीन-चार बार करने पर भी असफलता हाथ लगी।

पूज्य गुरुदेव अधूरे जले गायत्री मंदिर के फर्श पर बैठे सारी लीला देख रहे थे। उनने जटापाठ, घनपाठ, सामगान के लिए उपयुक्त निर्देश दिए तथा अरणि मंथन हेतु आई काष्ठ को अपने हाथ से स्पर्श कर गायत्री मंत्र का जप कर वापस किया।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



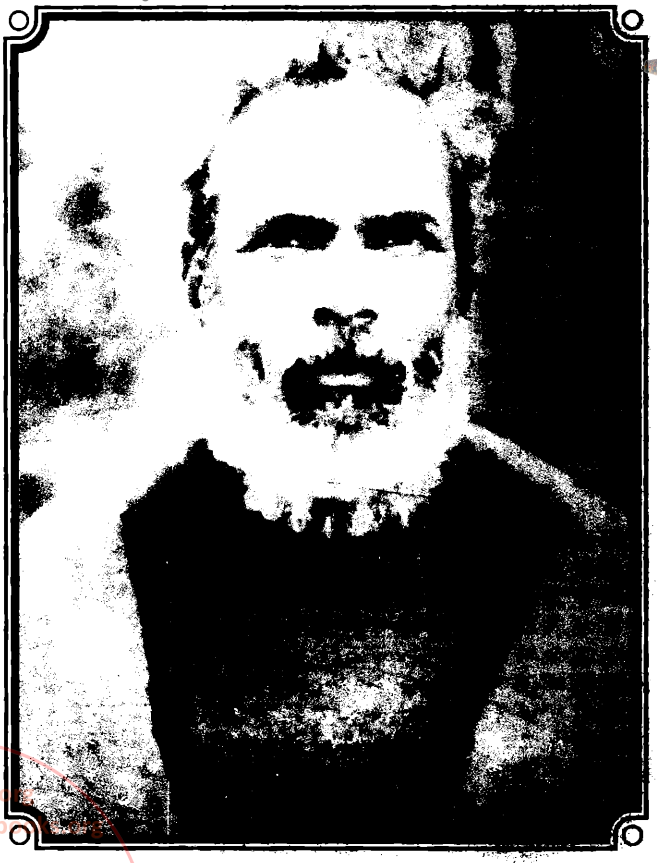


दुर्गम हिमालय : यही था उनका अभिभावक, पारस जहाँ वे बार बार गए

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org









सुनसान के सहचर : आचार्य श्री

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org





प्रारंभ के वे वर्ष जब वे गाँव-गाँव पहुँचे

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

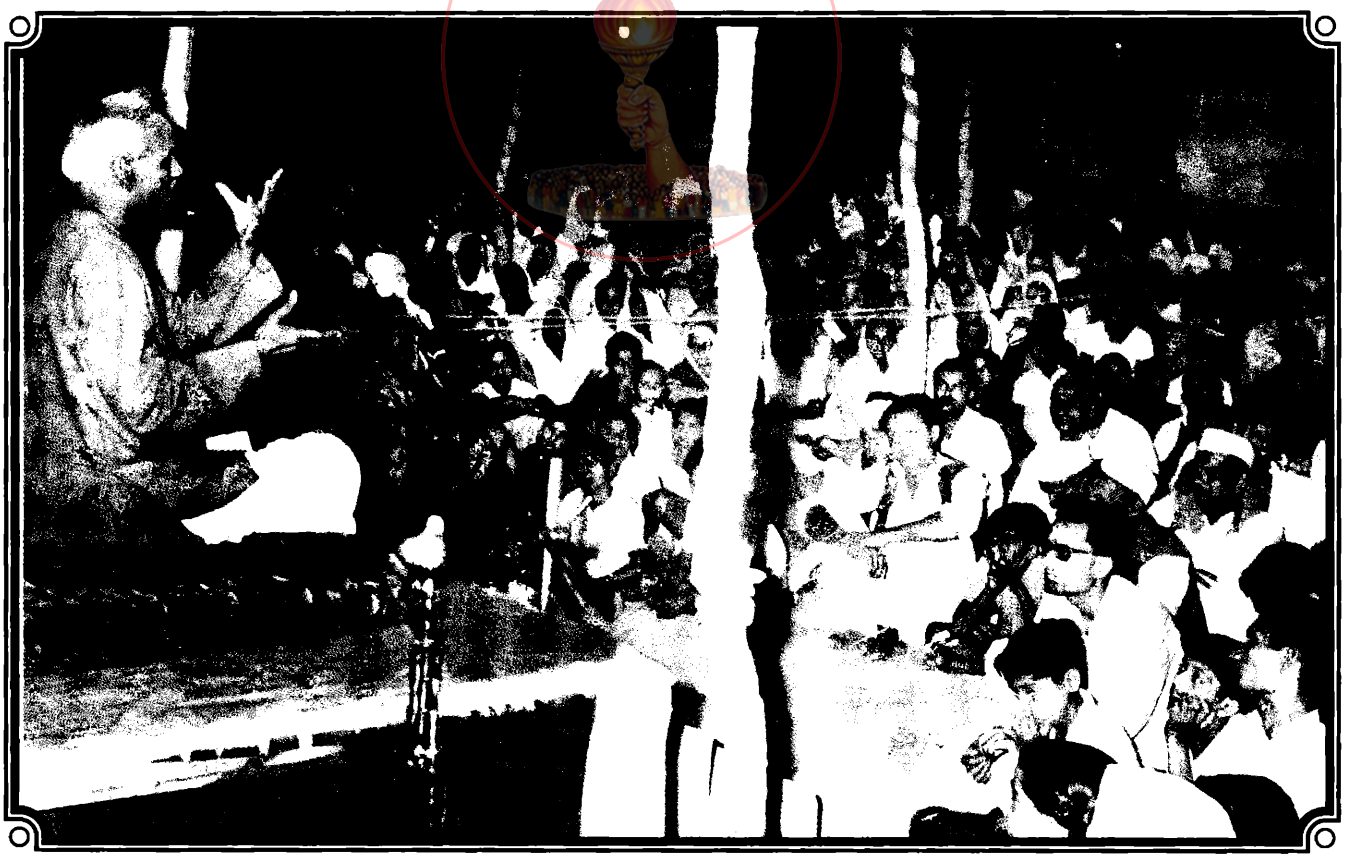


1950 से 1970 के तपश्चर्या के वे दिन

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org







तुम मेरे हो, जो है मेरे पास, तुम्हें दूँगा

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org





“घर-घर अलख जगाएँगे” की आग अब करोड़ों तक आ पहुँची

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



प्रज्ञा पुत्रों! तुम प्रज्ञायुग के आराधक हो

www.vicharkrantibooks.org



संस्कृति की जड़ों से जुड़ो तो सही

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



जन उल्लास के मध्य बैठे वीतराग आचार्यश्री-





प्रारंभिक काल की जनसभाओं के दिन

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

एक सहयोगी को बुलाकर कहा कि नारियल की मूँज लाओ। उसके आने पर उसमें भी मंत्रोच्चारण द्वारा प्राण फूँके तथा पुनः अरणि-मंथन किए जाने का निर्देश दिया। जैसे ही काष्ठों का घर्षण हुआ, मूँज को स्पर्श करा दिया, वैसे ही तुरन्त अग्नि प्रज्वलित हो उठी, इसी यज्ञकुण्ड में धूनी की अग्नि स्थापित कर दी गयी। यज्ञ पूर्ण हुआ एवं संध्या को सभी के साथ संतरे का रस लेकर पूज्य गुरुदेव ने अपना उपवास तोड़ा। एक गायत्री अनुष्ठान रूपी महायज्ञ, जो सन् 1926 में इस महापुरुष ने आरंभ किया था, की पूर्णाहुति इस पावन दिन हुई। घोषणा की गई कि आगामी पाँच वर्षों में एक शतकुण्डीय यज्ञ, एक नरमेध यज्ञ एवं एक सहस्रकुण्डीय महायज्ञ अंत में सम्पन्न होगा, जिसमें विराट् स्तर पर गायत्री-साधक भाग लेंगे। पूर्णाहुति के दिन ही उनने शाम को एक और घोषणा की कि अभी तक उनने किसी को गुरु के नाते दीक्षा नहीं दी है। अभी तक सत्यधर्म की दीक्षा ही वे देते आए हैं। अब वे अगले दिन प्रातः अपने जीवन की पहली गुरुदीक्षा देंगे। जो लेना चाहें वे उस दिन उपवास रखें। स्वयं वे भी निराहार रहेंगे तथा अपने समक्ष साधकों को बिठाकर यज्ञाग्नि की साक्षी में दीक्षा देंगे। दीक्षा का यह प्रारंभिक दिन था व इसके बाद अनवरत क्रम चल पड़ा।

यही दिन दीक्षा के लिए क्यों चुना, यह एक साधक द्वारा पूछे जाने पर उनने कहा कि 24 लाख के चौबीस महापुरश्चरणों की पूर्णाहुति व चौबीस दिन के जल उपवास की समाप्ति पर उनमें अब पर्याप्त आत्मबल का संचय हो चुका है तथा अब वे अपनी परोक्षसत्ता के संकेत पर अन्यों को अपने मार्ग पर चलने की विधिवत् आध्यात्मिक प्रेरणा दे सकते हैं। ब्रह्मवर्चस सम्पन्न गुरुदेव ने पूर्णाहुति के अगले दिन वाले गुरुवार से दीक्षा देना आरंभ किया व उनके माध्यम से स्थूल-सूक्ष्म रूप में ज्ञानदीक्षा, प्राणदीक्षा, संकल्प-दीक्षा लगभग पाँच करोड़ से अधिक व्यक्ति उनके महानिर्वाण तक ले चुके थे।

सिद्ध साधक का सिद्धतीर्थ बनाने का यह प्रथम सोपान पूर्ण हो चुका था। अब विशाल गायत्री परिवार बनाने की, संगठन को सुव्यवस्थित करने की, सुविस्तृत स्तर पर तैयारी करनी थी, जिस निमित्त वे गायत्री तपोभूमि के निर्माण के बाद प्राणपण से जुट गये। ◈

तीन अलौकिकताएँ - जो छिपा कर रखी गईं

20 जून सन् 1953 में गायत्री तपोभूमि का स्थापना उत्सव था। गुरुदेव ने 24 दिन केवल गंगाजल लेकर आत्मशुद्धि के लिये उपवास किया था। उनका वजन 117 पौण्ड से घटकर 93 पौण्ड रह गया। 24 पौण्ड भार घट गया। किसी से कुछ कहना होता, तो पास बुलाकर धीमी आवाज में या इशारों से कहते। सौभाग्य से मुझे उनके पास रहने और उनके आवश्यक काम करते रहने का अवसर मिला। उन्हें अधिक निकटता से देखा-समझा, उनकी आध्यात्मिक गरिमा के संबन्ध में तो क्या कहा जाए, पर शारीरिक विशेषताएँ विशेष रूप से अनुभव की-शरीर में से गुलाब जैसी तीव्र सुगन्ध महकती थी, छूते ही झटका लगता था और रोमांच हो आते थे। खुली आँख से किसी को देखें, तो वह सकपका जाता था। इन विशेषताओं को छिपाने के लिए उन्होंने पूरा प्रबन्ध कर रखा था। भरी गर्मियों में पूरे शरीर को कंबल से लपेटे रहते थे, आँखों पर काला चश्मा चढ़ा रहता था। किसी को पैर नहीं छूने देते थे। इससे पहले भी उनसे कई बार मिला था, पर काला चश्मा, पूरा शरीर कंबल से लपेटा तथा पैर आदि छूने की मनाही जैसे बन्धन नहीं थे। पूछने पर माताजी ने बताया कि जब कभी वे उग्र तपश्चर्या की स्थिति में होते हैं, तब दिव्यतत्त्वों की मात्रा अधिक बढ़ जाने से यह विशेषताएँ उनके शरीर में अक्सर पैदा हो जाती हैं। इन दिनों भी यही स्थिति है। इसका पता वह किसी को चलने देना नहीं चाहते, सो किसी से कहना मत। मैंने इस बात को आज पहली बार प्रकट किया है।

-एक साधक

वशीकरण का सर्वश्रेष्ठ उपाय अपने को सद्गुणी बनाना है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चिंतन जिनका अतिशय पावन

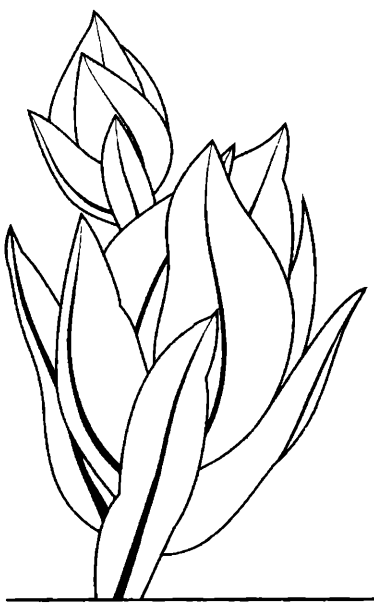
चिंतन जिनका अतिशय पावन, अतिशय पावन नाम।
शिव स्वरूप उन सद्गुरु को है, बारम्बार प्रणाम।।
सद्गुरु बारम्बार प्रणाम, गुरुवर शत-शत तुम्हें प्रणाम।।

जन्म शताब्दी पर्व, उन्हीं सद्गुरु का है अब आया।
दिव्य स्नेह के अभिसिंचन का, प्यार सभी ने पाया।।
अब कर्त्तव्य हमारा, उनके लिए हमें कुछ करना।
जीना उनके लिए हमें, केवल उनके हित मरना।।
लड़े एकजुट होकर हम सब, आध्यात्मिक संग्राम।

दिव्य ज्ञान की गंगा उनकी, पहुँचाएँ जन-जन तक।
सूर्य विचार-क्रान्ति का चमके, नगर-ग्राम घर-घर तक।।
श्रद्धा-निष्ठा, पूर्ण आस्था से आओ भर जाएँ।
हम अपना सर्वस्व लगाकर, श्रेय अलौकिक पायें।।
उठो! बढ़ो! संकल्पित होकर, करो नहीं विश्राम।

नए सृजन की, नए जोश से, करें नई तैयारी।
जन्म शताब्दी पर्व सफल हो, शक्ति झोंक दे सारी।।
देव संस्कृति के गरिमामय, अमित बनाएँ साधक।
जन-जन में देवत्व जगाएँ, बन तेजस्वी साधक।।
सद्गुरु चरण हृदय में रखकर, करें यही शुभ काम।

प्रेम और सम्मान सहित, कर युवा शक्ति को आगे।
अवसर मिले उन्हें, उनमें भी नई प्रेरणा जागे।।
कर्त्तव्यों का भार, सबल कंधे ही ढो पाएँगे।
वृद्धों के अनुभव, उन सबके बहुत काम आएँगे।।
करे युवाओं का आवाहन, जा-जाकर हर ग्राम।



परिग्रह का अर्थ है- स्वयं पर अविश्वास, समाज पर अविश्वास एवं ईश्वर पर अविश्वास।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वतंत्रता संग्राम के मतवाले श्रीराम 'मत्त'

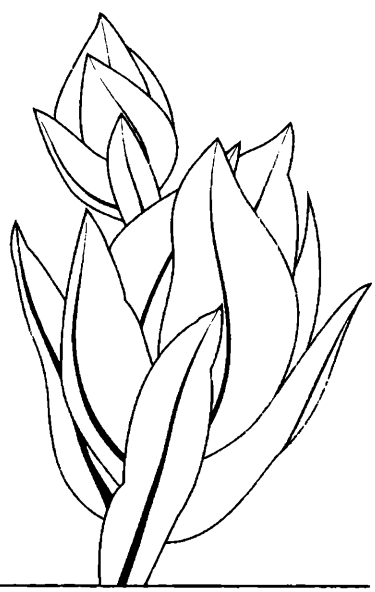
एक साधक, एक योद्धा। एक संवेदनशील महामानव, एक सेनानी। बड़ा विरोधाभास सा लगता है, पर काल उनके अंदर से ही अंग्रेजों के प्रति आक्रोश के रूप में फूटा एवं लगभग तीन वर्ष तक वे गुरु आदेशानुसार स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रहे। साथ में जप अनुष्ठान भी चलता रहा...

हृदय में उफनती क्रांति की ज्वाला लेखनी बनकर फूट पड़ी : श्री पालीवाल जी ने दैनिक 'सैनिक' की स्थापना की। यहीं से पूज्य आचार्य जी के सक्रिय राजनीतिक जीवन का श्रीगणेश हुआ। उन्होंने प्रेस का कार्य, कम्पोजिंग, प्रूफ रीडिंग और लेखन आदि प्रारम्भ किया। अपना काम इतनी लगन, निष्ठा और कुशलतापूर्वक करते थे कि देखने वालों को भी आश्चर्य होता था। स्वभाव की मृदुलता के कारण वे न केवल दैनिक सैनिक परिवार के परम चहेते बने; अपितु श्री कृष्णदत्त पालीवाल जी के विशेष कृपापात्र भी बने। लेखन की प्रतिभा उन्होंने बाबू गुलाबराय के लेख पढ़-पढ़कर स्वयं विकसित की।

उनके क्रान्तिकारी गीत न केवल दैनिक सैनिक में छपे; अपितु कानपुर से छपने वाले पत्र 'विद्यार्थी' जिसके सम्पादक श्री गणेशंकर विद्यार्थी थे, में भी नियमित रूप से प्रकाशित होते थे। श्री विद्यार्थी जी उनको निरन्तर प्रोत्साहित करते रहते थे, जिससे प्रेरित होकर उन्होंने अपने गीत कलकत्ता से छपने वाले दैनिक विश्वामित्र में भी भेजना प्रारम्भ कर दिया। इन गीतों ने समूचे बंगाल में क्रान्ति की आग भड़काने में अपूर्व योगदान दिया। पीछे तो 'किस्मत' और 'मस्ताना' जैसी प्रसिद्ध पत्रिकाओं ने भी उनकी रचनाएँ प्रकाशित करना प्रारम्भ कर दिया। ये गीत अक्सर कांग्रेस के कार्यक्रमों-अधिवेशनों में भी गाये जाते थे।

उनके इन गीतों ने जहाँ एक ओर स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का मनोबल बढ़ाया, वहीं क्रान्ति की ज्वाला भी द्रुतगति से भड़काई। ये गीत दैनिक सैनिक में 'मत्त प्रलाप' शीर्षक से नियमित रूप में छापा करते थे, जिन्हें आज भी चिरंजीव पुस्तकालय ने सुरक्षित करके रखा है। 1935-36 में छपे कुछ गीत इस प्रकार हैं-

देख-देखकर बाधाओं को पथिक न घबरा जाना।
सब कुछ करना सहन किन्तु मत पीछे पैर हटाना॥
माता व्यथित हुई कैसे ? जल आँखों में भर आया।
रोती है जननी, यह कैसा संकट तुझ पर आया॥
कोई भी हो दुश्मन तेरा निश्चय मिट जायेगा।
त्रिंश कोटि हुंकारों से नभमण्डल फट जायेगा॥
मलय मरुत हो बन्द, बवंडर के प्रचण्ड झोंके आवें।
शान्त हिमालय फटें शिलाएँ उड़ें चूर हो टकरावें॥
परिवर्तन निश्चित है, बहरे



सद्गुणों से मनुष्य और देवता ही नहीं, परमात्मा भी प्रसन्न होते हैं और उसके वश में हो जाते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

सुनें, आँख अन्धे खोलें।
सोने वाले उठें, सिपाही जागें,
सावधान हो लें।

उनकी यह पंक्तियाँ बताती हैं कि उनके हृदय में क्रान्ति की कितनी जबर्दस्त आग बचपन से ही जल रही थी।

क्रान्ति के बीज बचपन में प्रस्फुटित हो चुके थे : अपने देश में ग्रामीण किसानों की उन दिनों स्थिति बड़ी दयनीय थी। सिंचाई के साधनों व कीटनाशक दवाओं के अभाव में खेतों की पैदावार बहुत ही कम होती थी। पूज्य गुरुदेव ने अपने ग्रामीण अनुभव व अध्ययन के आधार पर अनेक फसलों को उगाने, रखरखाव, अधिक उपज लेने का महत्त्व दर्शाने वाली एक पैसा मूल्य की सोलह पुस्तकें प्रकाशित कीं। फसली बुखार, पशुओं को रोग से कैसे बचाएँ? इन सब पुस्तकों को वे नगण्य से मूल्य पर हाट-बाजार में जाकर बाँटा करते। यह बात अलग है कि घर से कोई मदद न मिलने के कारण उन्होंने अपनी प्रथम पत्नी श्रीमती सरस्वती देवी की सोने की हँसली ही गिरवी रखकर यह काम किया।

खड़ी हिन्दी में ये सब किताबें लिखी जाती तो शायद जनता प्रभावित नहीं होती। देहाती ब्रजभाषा में उन्होंने जाति-भेद, मृतक-भोज, खर्चीली शादी, पण्डावाद एवं अन्यान्य अंधविश्वासों पर पाँच पुस्तकें बड़ी व्यंग्यात्मक शैली में लिखीं, जो बड़ी लोकप्रिय हुईं। एक पुस्तक 'बेटा की तेरहवीं' में वे लिखते हैं कि पंडित जी दही-बूरा कुल्हड़ पर कुल्हड़ पिये जा रहे हैं वह कंगाल हो गए घरवालों को उलाहना सुना रहे हैं- ''चौं पौहे के खाजे में म्हो मार रह्यौ ऐ।'' समाज की मूढ़-मान्यताओं के प्रति क्रान्तिकारी अभियान उनका तब से ही आरम्भ हो चुका था।

इसी अवधि में उन्होंने देशभक्ति की ओजपूर्ण कविताएँ लिखीं। ये सभी कानपुर के 'विद्यार्थी' (संपादक गणेशशंकर विद्यार्थी) कलकत्ता के 'विश्वामित्र' तथा आगरा के दैनिक 'सैनिक' में प्रकाशित होती रहीं। किस्मत, मस्ताना जैसी प्रसिद्ध पत्रिकाओं में भी वे कविताएँ भेजते रहे। दुर्भाग्यवश इन कविताओं का संकलन अब उपलब्ध नहीं है, नहीं तो पाठकों को उनके किशोर लेखक स्वरूप की जानकारी मिलती। 1940 में अखण्ड-ज्योति प्रकाशित करने से पूर्व तो वे 'सैनिक' पत्र में ही मत्तजी नाम से कार्य भी करते रहे थे तथा स्वतंत्रता संग्राम के लिए क्रान्तिकारी स्तर का संघर्ष भी करते रहे। उनका मत्तजी नाम पड़ने के दो कारण बताये जाते हैं।

एक तो वे देशभक्ति के लिए उन्मत्त थे, जिसमें अँग्रेजों के कुशासन से देश को मुक्त कराने के लिए प्राणपण से लगना उन्हें पसंद था। दूसरी एक घटना, जिसकी चर्चा आगे की गई है, में पुलिस पिटाई से बेहोश होकर कीचड़ में रात्रिभर पड़े रहे कि अगले दिन लोग यह सोचकर ढूँढ़ने निकले कि शायद अब मर-मरा गये होंगे। देखा तो बेहोश थे, दाँत में झण्डा अभी भी था। उनकी यह लगन, चाहे मर जाएँ, देखकर उनका मतुआ या 'मत्त' नाम सन् 28-29 में ही पड़ गया था। ◈

परम विश्वस्त स्वयंसेवक

एक बार श्री बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' आगरा आये और उन्होंने श्री पालीवाल जी से कहा-मैं काँग्रेस के नेताओं से तो बहुत मिल चुका हूँ, मुझे उन स्वयंसेवकों से भेंट कराओ, जिन पर गाँधीजी की छाप हो। श्री पालीवाल जी उन्हें आचार्य जी के पास ले गये और बोले, ''यह सच्चे अर्थों में कांग्रेस का स्वयंसेवक है।''

श्री नवीन जी झुककर उनके पैर छूने लगे, जबकि आयु में वे बहुत बड़े थे। संकोचवश आचार्य जी पीछे हटने लगे, तो नवीन जी ने कहा-''बेटा! आज देश को तुम जैसे स्वयंसेवकों की ही जरूरत है।'' उनका स्वयं सेवक भाव अंत तक उनके जीवन में जीवन्त बना रहा। मान प्रतिष्ठा की तमाम ऊँचाइयाँ उनकी स्वयं सेवक प्रवृत्ति से छोटी सिद्ध होती रहीं।

अनुत्साह मनुष्य की अयोग्यता का चिह्न है। इससे मनुष्य की जो नैसर्गिक दिव्यता है, उसका लोप हो जाता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सैनिक पत्र में सतत छपता रहा 'मत्त प्रलाप'

बढ़ता जा उस ओर

अंधकार कुछ सूझ न पड़ता, होता है हिमपात।
जग की सारी शक्ति लगाए बैठीं तेरी घात।।

इन्द्रवज्र गिरता है ऊपर, लेता सिंधु उफान।
मेरु उड़े जाते हैं, ऐसा आता है तूफान।।

नष्ट-भ्रष्ट करने आते हैं, प्रलय मेघ घनघोर।
पर, तेरा तो पथ निश्चित है, बढ़ता जा उस ओर।।

देख-देख, इन बाधाओं को, पथिक! न घबरा जाना।
सब कुछ करना सहन, किन्तु मत पीछे पैर हटाना।।

माता! व्यथित हुई कैसे?

माता! व्यथित हुई कैसे? जल आँखों में भर आया।
है! रोती है। कैसा संकट, जननी तुझ पर आया।।

किधर गया वह नारकीय नर, जिसने तुझे सताया।
इतनी हिम्मत किसने की? था कौन? कहाँ से आया?

कर तेरा अपमान, इसी जगती पर है? जीवित है?
बता तेरा कौन है? इन्द्र? वज्र? रवि? वायु? सिन्धु? पर्वत है?

कोई भी हो, तेरा दुश्मन, निश्चय मिट जावेगा।
त्रिंश कोटि हुंकारों से नभ मण्डल फट जावेगा।।

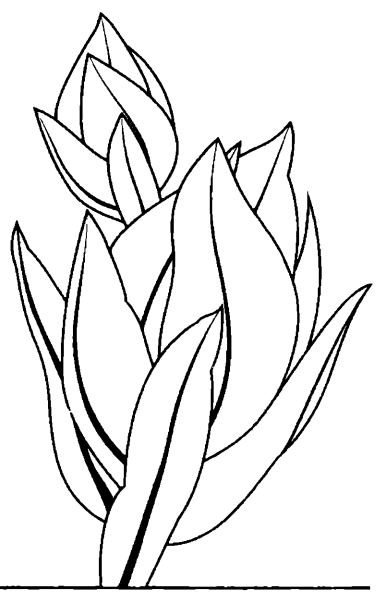
परिवर्तन की हुंकार

मलय-मरुत हो बन्द, बवंडर के प्रचण्ड झोंके आवें।
शान्त हिमालय फटे, शिलाएँ उड़ें, चूर हों टकरावें।।

चलता रहे प्रतप्त ग्रीष्म, सागर सूखे 'खल-बल' खौले।
वज्रपात हो, भूमि कम्प हो, सर्वनाश हौले, हौले।।

फट जावे भूतल का पर्दा, उसमें विश्व समा जावे।
लड़ें दिशाएँ, उलटें रवि-शशि, शून्य-शून्य ही रह जावे।।

परिवर्तन युग आवे, बहिरे सुनें, आँख अन्धे खोलें।
सोने वाले उठें! सिपाही जागें! सावधान हो लें।।

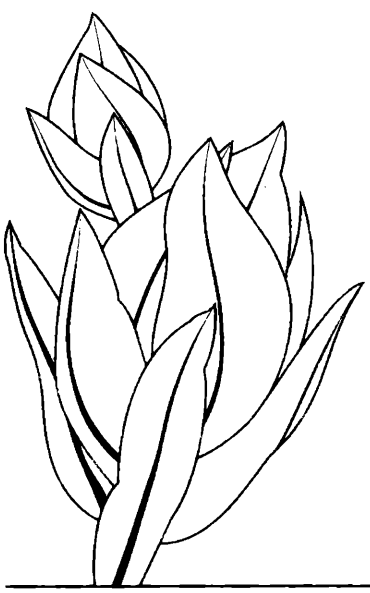


शिष्टाचार व्यवहार की वह रीति-नीति है, जिसमें व्यक्ति और समाज की आंतरिक सभ्यता और संस्कृति के दर्शन होते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सैनिक एवं संन्यासी की उभयपक्षीय विशेषताएँ थीं उनमें

यहाँ प्रस्तुत हैं हमारी आराध्य सत्ता की वे विशेषताएँ, जिनने उन्हें अध्यात्म मंच पर सिरमौर बनाया। ऐसी विलक्षणताएँ विरले ही देखने को मिलती हैं। एक सैनिक व एक संन्यासी की बानगी हमें बंदा बैरागी में देखने को मिलती है। आचार्य श्री एक ऐसी ही विभूति थे...



परमपूज्य गुरुदेव भारत के प्राचीन अध्यात्म-तत्वदर्शन एवं अध्यात्म का मूर्तिमान प्रतिनिधित्व करते हुए अवतरित हुए। वे सच्चे सैनिक थे और सच्चे संन्यासी। अपनी संघर्षवृत्ति का परिचय देते हुए उन्होंने जीवन के हर मोर्चे पर फतह हासिल की। आत्मिक एवं भौतिक परिधि में ढेरों-ढेर विभूतियाँ और उपलब्धियाँ अर्जित कीं, साथ ही अपनी सहज त्यागवृत्ति के वशीभूत होकर इन विभूतियों एवं उपलब्धियों को लाखों-करोड़ों मनुष्यों के जीवन में बिखेर दिया।

वे जानते थे कि वाणी और लेखनी के माध्यम से प्रचार और शिक्षण का कुछ असर तो होता है और उसकी आवश्यकता भी रहती है, लेकिन उतने भर से काम नहीं चल सकता। प्रभावशाली शिक्षण वह होता है, जो मूर्तिमान हो। प्रत्यक्ष को देखे बिना प्रेरणा नहीं मिलती। उसका उदाहरण जब तक सामने न आये, तब तक श्रेष्ठता के सन्मार्ग पर चलने की स्फुरणा तक किसी को नहीं मिलती। विचार केवल हलचल उत्पन्न करते हैं। उन्हें जब क्रियान्वित किया जाता है, तब लोग अपने आप ही कह उठते हैं, यह है विचार की सार्थकता। देख लो, नमूना तुम्हारे सामने है।

किसी समय केवल सात ऋषि थे और वे समस्त संसार के सातों द्वीपों का एक-एक करके समग्र नेतृत्व सँभालते थे। कारण, वे जो कहते थे, सो करते भी थे। वाणी से ही नहीं, क्रिया से भी वे जनता को दिखाते थे। जो बताना चाहते थे, कराना चाहते थे, उसे उन्होंने अपने मन-वचन और कर्म में अति गहराई तक समाविष्ट कर लिया था। यह समन्वय ही उनकी प्रगतिशीलता का मात्र आधार था। विद्या और प्रतिभा का भी मूल्य है। पर जहाँ तक जीवनक्रम बदल देने जैसे घोर कर्म को कराने की, व्यक्ति को पतन के गर्त से निकाल कर उत्कर्ष के शिखर पर पहुँचाने की आवश्यकता होती है, वहाँ बाँस के डण्डों से काम नहीं चलता। यह सब तो मजबूत क्रेनों से ही सम्भव होता है।

प्राचीनकाल के आत्मवेत्ता अपने को इतना समर्थ और प्रभावशाली बनाते थे कि लोकनेतृत्व कर सकें। इसके लिए वे बुद्धि या प्रतिभा को प्रखर करने में ही नहीं लगे रहते थे, वरन् समग्र व्यक्तित्व को विचार एवं कर्म के समन्वय से प्रचण्ड बनाते थे। भारतीय तत्त्वज्ञान की विश्वव्यापी गौरव-गरिमा, प्रभावशीलता एवं सफलता का मूल कारण उसके व्याख्याताओं द्वारा अपने जीवन की प्रयोगशाला में अपने कथन की सार्थकता सिद्ध करना ही था। आज वह क्रम टूटा, तो वह दर्शन भी बैठ गया, जिसकी अब चर्चा ही शेष रह गयी है। भारतीय तत्त्वदर्शन एवं अध्यात्म के सम्मुख इस

जो मूर्खबुद्धि पुरुष कर्मेन्द्रियों को कर्मों से रोककर मन के द्वारा विषयों का चिन्तन करता है, वह पाखण्डी कहा जाता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

जीवन-मरण जैसे अवरोध को विश्लेषण और निराकरण सही रूप से प्रस्तुत करने के लिए गुरुदेव ने न केवल कहा और लिखा; बल्कि उसे अपने कर्तव्य का अविच्छिन्न अंग भी बनाया। उन्होंने यह प्रतिपादित किया कि सैनिक और संन्यासी दोनों का एक साथ रह सकना सम्भव है। सम्भव ही नहीं, स्वाभाविक भी है और आवश्यक भी। दयालुता का अर्थ अनाचार का संरक्षण नहीं और वैराग्य का अर्थ आलसी और अकर्मण्य हो जाना नहीं है।

इसी तरह क्षमा का अर्थ पाप और अनीति को स्वच्छन्द रूप से कुहराम मचाते रहने की छूट देना नहीं है। पापी को भी प्यार किया जा सकता है, पर पाप के प्रति तो निष्ठुरता बरतनी ही पड़ेगी। सन्त की भी पूजा, कसाई की भी पूजा। पुण्य की भी जय-पाप की भी जय, ऐसा समदर्शन तो व्यक्ति को दार्शनिक भूल-भूलैयों में उलझाकर संसार का सर्वनाश ही कर देगा। गुरुदेव ने अपने जीवनक्रम में उन तथ्यों को स्थान दिया, जिनमें उनके सैनिक तत्त्व के साथ संन्यासी तत्त्व भी पूरी तरह जुड़ा हुआ है।

सैनिक के रूप में उन्हें देखा और परखा जाए तो लगेगा कि वे सैनिक पहले और संन्यासी पीछे थे। इसी प्रकार जब उनके संन्यासी गुणों को देखते हैं तो वे ही मुख्य मालूम पड़ते हैं। वस्तुतः दोनों तत्त्वों का विलक्षण समन्वय उनमें है, इसे संयोग नहीं मान लेना चाहिए; वरन् यह समझना चाहिए कि उनकी हर क्रिया लोकशिक्षण के लिए थी और वे यह बताते थे कि सैनिक और संन्यासी के समन्वयन से ही अध्यात्म की सर्वांगपूर्णता बनती है। गुरुदेव के अबोध बचपन की बातों का तो ठीक से पता नहीं, पर जब से वे कुछ समझने-समझाने लायक हुए, तब से उन्होंने अपनी साहसिक शूरवीरता को ही आगे रखा। जिस गाँव में वह जन्मे थे, उसी गाँव की एक वृद्ध अछूत महिला की सेवा की कहानी से तो अखण्ड-ज्योति के पाठक परिचित ही हैं। आज की स्थिति में ये बातें किसी को सामान्य लग सकती हैं। लेकिन अब से लगभग 47 साल पूर्व का जमाना दूसरा था।

उन दिनों छूत-छात अब से अधिक थी। फिर पण्डित-ब्राह्मण तो नहाने-छूने-खाने में ही धर्म को समेटे बैठे थे। ऐसी परिस्थिति में उनके पूरे परिवार ने विरोध किया, गाँव के दूसरे लोगों ने उँगली उठाई। नतीजा यह हुआ कि उनके घर में घुसने पर प्रतिबन्ध लग गया। बारह वर्ष का बालक आखिर करता ही क्या? घर से बाहर उन्हें हाथ में रोटी दे दी जाती, कोई उन्हें छूता तक नहीं, घुड़साल में चारपाई डाल दी गयी।

यह सब हुआ, पर मेहतरानी बुढ़िया की सेवा तब तक नहीं घटी, जब तक कि वह पूरी तरह अच्छी नहीं हो गयी। बारह वर्ष के बालक का साहस तो देखिए-सारा परिवार-सारा गाँव-सारा समाज एक ओर और बारह वर्ष का बालक एक ओर। बालक प्रहलाद की तरह अड़ा ही रहा। सन् 1930 का कांग्रेस संचालित सत्याग्रह आन्दोलन शुरू हुआ। तब तक वे 18 वर्ष के हो चुके थे। उन दिनों आतंक बहुत था। गोली चलने, लम्बी जेल होने, घर-जायदाद जब्त होने की चर्चा हर किसी के मुँह पर थी। गुरुदेव ने निश्चय किया कि अन्याय का प्रतिकार करने के लिए बड़े से बड़ा कष्ट सहना चाहिए। वे सत्याग्रहियों की सेना में भरती हुए। जिस दिन उन्हें जाना था, उससे एक दिन पूर्व ही घर में बन्द कर दिया गया। न जाने के लिए समझाने से लेकर बल प्रयोग तक के सारे उपाय परिवार द्वारा काम में लाए जा रहे थे। पर जो उचित है, उस पर से रत्तीभर हटने-टलने की बात स्वीकार नहीं हुई। रात को शौच जाने के बहाने घर की कैद से छूटे। नंगे पैर, एक बनियान और नेकर पहने हाथ में लोटा लेकर घने अँधेरे में रास्ता उलट कर चल दिए और घोर घनी, काली अँधियारी रात मूसलाधार वर्षा के बीच भेड़ियों से भरे घने खार, बीहड़ नदी-नाले पार करते हुए रातों-रात लम्बी यात्रा करके आगरा जा पहुँचे। जब तक घर वाले पता लगाने पहुँचे, उससे पहले ही जेल चले गए।

उग्र सत्याग्रहियों में उनकी गणना थी। एक-एक करके तीन बार उन्हें उस अवधि में जेल जाना पड़ा और कुल मिलाकर लगभग चार वर्ष जेल रहे। जुर्माना हुआ, घर का सामान जब्त और नीलाम हुआ। कई बार तो बुरी तरह पिटे और एक बार तो घोड़े के पैरों के नीचे कुचले जाने पर इतनी चोट लगी कि जीवन संकट में पड़ गया। गैरकानूनी कलकत्ता

प्रत्येक विचार आत्मा और बुद्धि के संसर्ग से पैदा होता है। बुद्धि उसका आकार-प्रकार निर्धारित करती है, तो आत्मा उसमें चेतना फूँकती है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

कांग्रेस में उत्तरप्रदेश का जत्था लेकर पहुँचे, तो वहाँ गोलियों की बौछार से जहाँ कितने ही साथी खेत रहे, वहाँ वे आश्चर्य की तरह बच गए। बंगाल की आसनसोल जेल में इन्हें फिर बन्द रखा गया। उन दिनों की दुस्साहसपूर्ण चर्चाएँ जिनमें सन् 42 के 'करो या मरो' आन्दोलन की घटनाएँ भी शामिल हैं, कुछ ऐसी हैं, जिन्हें सुनते ही पसीना छूटने लगता है। ऐसी घटनाएँ न केवल उनके द्वारा योजनाबद्ध रूप से संचालित होती रहीं, वरन् स्वयं भी वे उनमें बढ़-चढ़ कर भाग लेते रहे।

ऐसा दुस्साहसी व्यक्ति एकान्त में साधना करने वाला महान् साधक भी हो सकता है, सहसा विश्वास नहीं होता। भगवद् आराधना करने वाले किसी साधक में, संन्यासी में, मृत्यु से अठखेलियाँ करने का इतना प्रचण्ड दुस्साहस हो सकता है, यह एक अनोखी बात लगती है, पर है सत्य। इन घटनाओं के सन्दर्भ में परमपूज्य गुरुदेव इतना ही कहा करते थे कि आत्मा की अमरता और मृत्यु को वस्त्र बदलने जैसी सामान्य घटना मानने की गीता की शिक्षा, सदुद्देश्य के लिए बड़े से बड़ा दुस्साहस कर गुजरने की ही तो शिक्षा देती है।

गायत्री यज्ञ आन्दोलन उनके द्वारा भारत के ऐतिहासिक आन्दोलनों में से एक है। इसकी विशालता का मूल्यांकन किया जाए, तो दाँतों तले उँगली दबानी पड़ेगी कि किस प्रकार उसमें करोड़ों व्यक्तियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया और इन व्यवस्थाओं में किस प्रकार करोड़ों रुपये की व्यवस्था सम्भव हुई। साथ ही इस अभियान के अनेक आध्यात्मिक पहलू भी हैं, जो सूक्ष्मजगत् को अनुप्राणित करने से सम्बन्ध रखते हैं। पर एक प्रत्यक्ष पहलू सामाजिक क्रान्ति का भी है।

भारत की मूल समस्या सामाजिक है। राजनैतिक और आर्थिक समस्याएँ तो उसके साथ जुड़ी हुई हैं। यदि देश में ऊँच-नीच, स्त्रियों पर प्रतिबन्ध, विवाह-शादियों में होने वाले अपव्यय जैसी सामाजिक बुराइयों को दूर न किया जा सका, तो देश का पिछड़ापन कभी दूर न होगा और राजनैतिक, आर्थिक प्रगति के बावजूद विकास की कोई सम्भावना साकार न होगी। कारण कि इस प्रकार की बुराइयों से जो क्षति निरन्तर होती रहती है, उसे कितनी भी बड़ी विकास योजनाएँ पूरी नहीं कर सकतीं। जब क्षतिपूर्ति तक हमारे प्रयासों से सम्भव नहीं, तो प्रगति की बात ही कहाँ से बनेगी? इस लक्ष्य को भली-भाँति समझते हुए उन्होंने गायत्री यज्ञ आन्दोलन के साथ सामाजिक क्रान्ति की व्यवस्था को गहराई तक जोड़कर रखा।

गायत्री मंत्र का मनुष्य मात्र को अधिकार दिए जाने की घोषणा करने से जब अछूत भी उसका उपयोग करने लगे, तो पुरातनपन्थियों में खलबली मच गयी। जो मंत्र ब्राह्मणों का था, कान में कहा-सुना जाने वाला था, उसे सब लोग प्रकट रूप से कहें-सुनें, यह कैसा अनर्थ?

यज्ञों में केवल ब्राह्मण लोग दक्षिणा लेकर आहुतियाँ देते थे। स्त्रियों को, अन्य वर्गों को उसमें प्रवेश मिलता ही नहीं था। उसमें सम्मिलित होने के लिए सबका खुला प्रवेश? यज्ञ आयोजनों में आने वाले आगन्तुकों को दाल-भात-रोटी आदि कच्चे खाने का प्रबन्ध और बिना जाति-पाँति के भेदभाव के उनका बनाया और परोसा जाना, यह उन दिनों घोर आश्चर्य का विषय था।

इस व्यवस्था को अनाध्यात्मिकता, नास्तिकता आदि न जाने किन-किन नामों से पुकारा जाता रहा। पुरातनपन्थियों ने उसका घोर विरोध किया। सभाएँ हुईं, लेख छपे, धर्मध्वजियों ने भाषण-वक्तव्य दिए, काले झण्डे निकाले, नाश के नारे लगाए और सही-गलत जो कुछ भी हो सकता था, सब कुछ कहा गया। चर्चा फैलाई गयी आचार्यजी ब्राह्मण नहीं, लकड़ी का काम करने वाले बढ़ई हैं और भी न जाने क्या-क्या कहा गया। कई बार तो उन्हें शारीरिक आघात पहुँचाने और अपशब्द कहने तक के अवसर आए। पर क्या मजाल कि उनके चेहरे पर जरा भी उदासी आयी हो। सामाजिक क्रान्ति का इतना बड़ा तूफानी अभियान खड़ा करने वाले में कितना दुस्साहस होना चाहिए, उसे देखना-नापना हो, तो उनके जीवन को देखकर समझा जा सकता है।

जहाँ तक व्यक्तिगत सुखोपभोग का सम्बन्ध है, गुरुदेव ने सर्वत्यागी-संन्यासी का जीवन जिया। जहाँ तक व्यक्तिगत भौतिक उन्नति का सम्बन्ध है,

एक ही तरह के विचार घनीभूत होते रहने पर प्रचण्ड शक्ति धारण कर लेते हैं और मनुष्य के जीवन में जादू की तरह प्रकाश डालते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

वे उसकी ओर सदा से उपेक्षा की दृष्टि से देखते रहे। धन, यश और विलास उनके इर्द-गिर्द इकट्ठा होने लगा, तो ऐसी डुबकी लगायी कि यह मगर उन्हें ताकते ही रह गए और वे देखते-देखते ही उनकी पकड़ से बाहर। यदि उन्होंने वैभव चाहा होता तो शासन में ऊँचे पद पर पहुँचे होते। राजनीति में उनका लोहा माना जाता, विद्वानों में मूर्धन्य गिने जाते और पैसा उनके पैरों पर लोटता फिरता। फोटो छपते, अभिनन्दन ग्रन्थ और राजसम्मान की उपाधियों से विभूषित होते और भी न जाने क्या-क्या होते?

उनकी हिमालय जितनी क्षमताओं की प्रतिक्रिया बड़े से बड़े वैभव के रूप में सामने खड़ी होती। पर इस सम्बन्ध में वे निस्पृह अवधूत की तरह ही बने रहे और अपनी बाल-सुलभ सरलता को ही अपनी सर्वोत्तम संग्रहीत सम्पत्ति मानते रहे। लोगों ने उन्हें कितना ठगा है। कुछ प्राप्त करने के लिए कितने-कितने प्रपंच रचे हैं और काम निकल जाने पर किस तरह तोताचश्मी दिखाते रहे हैं। इसका कभी कोई-कोई चुटकुला उनके मुँह से निकट शिष्यों-परिजनों को सुनने को मिलता रहा है। लेकिन उन्हें इसका कभी राई-रत्ती क्षोभ नहीं हुआ। स्थितप्रज्ञ की भाँति उनका मन सदा-सर्वदा निर्विकार रहा है। कई लोगों ने ईर्ष्यावश अनेक तरह की क्षति पहुँचाने की कोशिश की। ऐसे ईर्ष्यालु लोगों के कुकृत्यों में बेसिर-पैर के लांछन लगाने से लेकर विष देने तक की जघन्य घटनाएँ शामिल हैं। उनसे प्रतिशोध लेने की बात मन में कभी नहीं आयी। उन्हें वे केवल 'बेचारे' कहकर ही सम्बोधित करते रहे। जिसने उन पर चाकू से घातक प्रहार किए, अपनी समझ में उसने जान से मार देने में कोई कसर न छोड़ी, उसे भी उन्होंने भाग जाने दिया। इस तरह के लोगों के लिए वे हमेशा यही कहते रहे कि ये जानते ही नहीं, कि क्या कर रहे हैं, और उलट कर इसका परिणाम उनके लिए क्या हो सकता है?

व्यक्तिगत लाभ और व्यक्तिगत प्रतिशोध की बात उन्हें कभी सूझी ही नहीं। अपने आपको एक प्रकार से भूले ही रहे। लोग व्यंग्य करते रहे कि जिस जमाने में साधु-महात्मा लोग एयरकण्डीशन का उपयोग करते और हवाई जहाजों में सैर करते हैं, उन दिनों भी गुरुदेव पंखा चलाने में भी संकोच अनुभव करते थे। वह सच्चे सैनिक एवं सर्वत्यागी संन्यासी की भाँति सतत इन पाँचों विभूतियों, विभूतिवानों को दिशा देने के लिए संलग्न रहे। उग्रतप, कठोर साधना, निरन्तर प्रयास में उनका जीवन उनके अनुयायियों, शिष्यों, साधकों, लोकसेवियों को एक ही सन्देश देता है कि सैनिक एवं संन्यासी की उभयपक्षीय विशेषताओं से परिपूर्ण अध्यात्म ही सार्थक है। अब तो अपनी पीड़ा में विश्वमानव की पीड़ा को घुलाकर वे सूक्ष्म में चले गए हैं। उनकी सूक्ष्म चेतना, परशुराम के कुल्हाड़े के रूप में, शिव के तीसरे नेत्र के रूप में, इन्द्र के वज्र के रूप में प्रकट होकर नये परिवर्तन का जो अनगिनत आधार प्रस्तुत करेगी, उसे देखने वाले हतप्रभ हुए बिना न रह सकेंगे। ◈

पूर्ण समर्पित साधक

गुरुदेव के आदेश पर मैं यह भी कह सकता था कि "जलती आग में मरूँगा। जो होना होगा, सो होता रहेगा। प्रतिज्ञा करने और उसे निभाने में प्राण की साक्षी देकर प्रण किया ही जा सकता है।" यह विचार मन में उठ रहे थे। गुरुदेव उन्हें पढ़ रहे थे। अबकी बार मैंने देखा कि उनका चेहरा ब्रह्मकमल जैसा खिल गया। मैं तो हाथ जोड़े सिर नवाये मंत्रमुग्ध की तरह खड़ा रहा। गुरुदेव मेरी कामना, इच्छा और उमंग उन्हें परोक्षतः परावाणी में कह सुनाई और कहा—"यह निर्जीव नहीं है। जो कहता है, उसे करेगा भी। आप यह बताइये कि आपका जो कार्य छूटा हुआ है, उसका नये सिरे से बीजारोपण किस तरह हो। खाद, पानी आप-हम लोग लगाते रहेंगे, तो इसका उठाया हुआ कदम खाली नहीं जायेगा।" *(अखण्ड-ज्योति अप्रैल-1985, पृष्ठ 36)*

बुरे विचार, तामसी संकल्प, ऐसे पदार्थ हैं, जो बड़ा मनोरंजन करते हुए मन में धँस जाते हैं और साथ ही अपनी मारक शक्ति को भी ले आते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अंग अवयवों से अपेक्षा है

अंग अवयव! अपेक्षा है, गुरुदेव की, आखिरी श्वास तक साथ दे पाओगे।
श्वास जिनसे मिली, धड़कनें भी मिलीं, जिन्दगी दाँव पर तुम लगा पाओगे॥

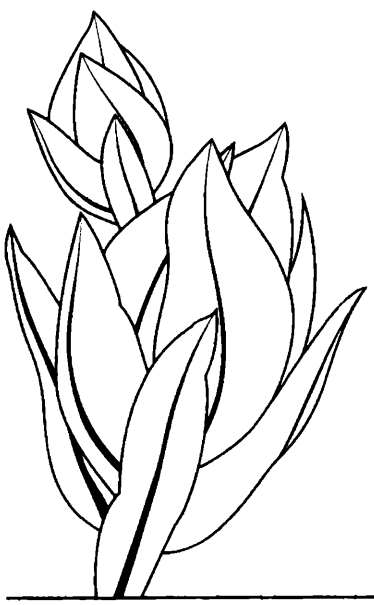
योजनायें बड़ी पूज्य गुरुदेव की, वे इसे ईश की योजना मानते।
क्यों न बदले फिजा और बदले जगत्, ईश अभियान है वे यही मानते॥
तुम तो गुरुदेव के वह प्रखर दीप हो,दीप बन जग प्रकाशित क्या कर पाओगे॥

भूल क्यों तुम गये राम के दूत हो, एक हुँकार से सिन्धु को पार की।
कार्य सब कुछ किया पर अहं छोड़कर, मोह की क्षुद्रता को सहज त्याग दी॥
बस चुनौती है हनुमान् श्रीराम के, नित्य गलने में विश्राम ले पाओगे॥

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

याद वह क्षण करो पूज्यवर से मिले, पूज्यवर को सभी कुछ समर्पित किया।
साधनों में भटक कर कहाँ खो गये, साधना को है तुमने क्षरित क्यों किया॥
साधना तुम स्वयं की बढ़ाते चलो, भावना साथियों की बढ़ा पाओगे॥

साधना की कसौटी में कस लो स्वयं, अपना व्यक्तित्व गढ़कर दिखा दीजिए।
साधनों की न चिन्ता तनिक भी करो, साधना लक्ष्य है यह बता दीजिए॥
श्रम, समर्पण, मनोयोग पर ध्यान दो, क्या सहज प्यार छोटों को दे पाओगे॥



आखिरी श्वास तक लेखनी है चली, आखिरी श्वास तक प्यार तुमको किया।
मेरी काया ने जब साथ ही छोड़ दी, तुम पर मैंने सभी कुछ लुटा ही दिया॥
बस अपेक्षा है तुम मेरे प्राण प्रिय, प्राण का बिन्दु मुझ पर लुटा पाओगे॥

जो लुटायेंगे मुझ पर सहज जिन्दगी, उनके सिर पर वरदहस्त होगा सदा।
वे पुकारेंगे जब आँख को मूँदकर, सूर्य का तेज बन कर रहेंगे सदा॥
सिंह के पुत्र हो याद फिर से करो, सिंह शावक स्वयं क्या बना पाओगे॥

◈◈◈

सच्चाई प्रथम आवश्यक वस्तु है, उसका परित्याग कर देने से विश्वात्मा की अनुभूति सम्भव नहीं हो सकती है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लेखनी का पैनापन प्रारंभ से ही रहा

पूज्य गुरुदेव ने यह कथा 18 अगस्त 1936 में दैनिक ''सैनिक'' के लिए अपनी युवावस्था में लिखी थी। इसे पढ़कर घटनाक्रम के साथ भाव संवेदनाएँ तथा प्रखर प्रेरणाएँ उभारने की उनकी अद्भुत क्षमता का बोध होता है। भाव संवेदना की गहराई के साथ वैचारिक चुटीलापन किस कुशलता से गूँथा गया है, हृदय की गहराई से, प्रज्ञा की किस ऊँचाई से उभरा है, उनका यह सामाजिक अभियान, इसकी झलक मिलती है...

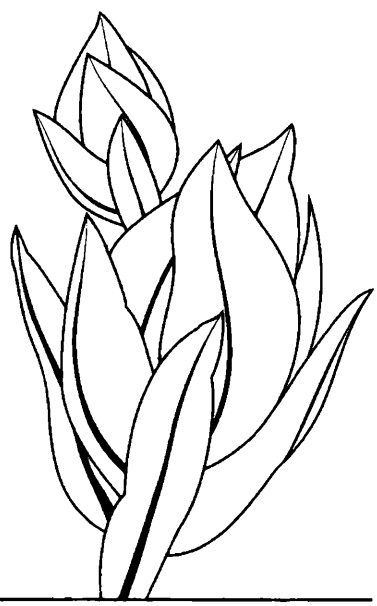
माँ की समाधि

राजपूतों के घर में लड़कियों का पैदा होना एक तरह का अशगुन है। जब मैं इस घर में आई थी, तो घर में कितनी ही स्त्रियाँ थीं, पर किसी को लड़की पैदा नहीं हुई। जब से यह तेरी कलमुँही बहू आई है, लड़कियाँ ही लड़कियाँ जनहीं है। मेरी पहली जेठानी के दो ही लड़कियाँ पैदा हुई थीं कि जेठजी ने उसे तलवार के घाट उतार दिया और दूसरी शादी कर ली। पर अब तो जमाना ही बदल गया है, मर्द औरतों के गुलाम हो गए हैं। छः लड़कियाँ जन चुकी है, मगर बहू से कुछ कहता ही नहीं।

नहीं माताजी, ऐसी बात नहीं है। मैं क्या कोई राजपूतों की शान को बट्टा लगाऊँगा, जब खानदान भर में लड़कियाँ पैदा नहीं होतीं, तो मेरे ही यहाँ क्यों होनी चाहिए? मैंने तो उससे पहिले ही साफ-साफ कह दिया था, पर खैर, अब की बार और आने दो। पहली लड़कियों की भाँति इसकी भी समाधि बनाए देते हैं, परन्तु आगे भी ऐसा ही हुआ, तो जरूर उसे अपनी जिन्दगी से हाथ धोना पड़ेगा।

माता ने कहा, तेरी इच्छा। मुझे कोई पूछता थोड़े ही है, मैं तो वैसे ही कह उठी, तेरा जी जो चाहे, सो कर। राजपूत सिर नीचा किये किसी विचारधारा में बहने लगा।

उस राजपूत के घर में लड़की पैदा हुई थी। पहले भी पाँच लड़कियाँ हो चुकी थीं, जो कुल प्रथा के अनुसार अपनी समाधि में सो रहीं थीं। राजपूत की माता अपने बेटे को वही सिखा रही थी, जो उसने अपनी ससुराल में बचपन से लेकर इस बुढ़ापे तक देखा था। इतने लम्बे समय तक उस वातावरण ने बुढ़िया के विचारों को परिपक्व कर दिया था, उसकी धुँधली आँखें न तो उस कुल प्रथा में त्रुटि देख पाती थीं, न पाप। कन्या जनने वाली कई स्त्रियों को उसने अपनी आँखों के सामने कत्ल होते देखा था। हो सकता है कि आरंभ में उसके हृदय में कुछ करुणा उत्पन्न हुई हो परन्तु वातावरण एक जबरदस्त चीज है। मनुष्य के स्वभाव और धर्म में वह बहुत कुछ परिवर्तन कर देता है। आपने देखा नहीं, बच्चा कितना कोमल होता है। चींटी के मर जाने पर भी रोता है, लेकिन वही बालक बूचड़खाने में काम करने



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

के बाद एक निष्ठुर हत्यारा बन जाता है। उसे अपने काम पर न तो घृणा होती है और न पश्चाताप! अपनी माता की भाँति नवयुवक भी उसी प्रकार के विचार रखता था। यह बात अलग थी कि माँ शक्कर थी, तो बेटा गुड़। कई बार उसके जी में आया कि इस स्त्री को खत्म कर दे; पर उसका हाथ रुक जाता। सुन्दर और पतिभक्ता पत्नी के अनेक प्रेममय संस्मरण उसके वज्र हृदय पर एक क्षण के लिए हलचल मचा देते।

राजपूत सोच रहा था, "अब चारा ही क्या है, लड़कियों का इस हाथ से किसी को कन्यादान देकर अपने कुल को दाग थोड़े ही लगाऊँगा? बस मर्यादा की रक्षा करना मेरा कर्त्तव्य है। इस लड़की को तो स्वर्ग पुहँचा ही दिया जाएगा, किन्तु फिर आगे क्या होगा? यदि स्त्री की यह गति रही तो उसे भी भगवती के घाट उतारना ही पड़ेगा।" उसका मस्तिष्क, धर्म, विचार और मनुष्यत्व, अपनी कौटुम्बिक परम्परा में इस प्रकार जकड़ा हुआ था कि न तो हिलता था और न हिलना पसंद करता था।

शक्ति ऐसी ही चीज है। सृष्टि के आदि से आज तक के इतिहास पर एक बार विचार कीजिए, आपको यह प्रत्यक्ष दिखाई देगा कि जिसके हाथ में शक्ति हुई है, उसने उसका दुरुपयोग किया है। हम गरीबों की हिमायत करते हैं- सहृदयता की दुहाई देते हैं- परन्तु जब हाथों में शक्ति होती है- निरंकुश हो जाते हैं तो उसका मनमाना उपयोग करते हैं। स्त्री के सम्बन्ध में भी यही बात है। आदमी ने उसके ऊपर मनमाना जुल्म किया और आज उसे मनुष्यत्व की जननी-देवी के स्थान से घसीटकर, पर्दे में रहने वाली, पैरों की जूती और धन के रूप में ला खड़ा किया है। आदमी की बनाई हुई शैतानी धर्म-पुस्तकों ने उनको पर्दे में रखने की, ताड़ने की, अशिक्षित रखने की, कत्ल करने की मनमानी आज्ञाएँ दी हैं। आज भी हम उन किताबों को सिर पर रखकर नाचते हैं और उनके आधार पर अपने नृशंस अधिकारों को ईश्वर की आज्ञा सिद्ध करने की दुहाई देते हैं।

यह उसी शक्ति का दुरुपयोग था कि एक पति पर प्राण देने वाली लक्ष्मी जैसी सुन्दर अबला के गले पर छुरी रखने की बात सोची जा रही थी, क्योंकि वह बार-बार लड़कियाँ जनती थी। पति अपनी कामुकता को शान्त करने के लिए इच्छानुभोग कर सकता है। उसे रोकने की वह आवश्यकता नहीं समझता, परन्तु उसका परिणाम देखकर स्वयं निर्दोष बनता है और पत्नी को उसकी सजा देना चाहता है। आप इसे देखकर आश्चर्य मत कीजिए, यह शक्ति का प्रभाव है। मनुष्य शक्तिशाली है। उसने अपने से निर्बलों पर सदैव ऐसा ही किया है।

राजपूत-रमणी, आखिर-अबला-स्त्री थी। प्रसूति गृह में पड़ी अपने भाग्य को कोस रही थी। वह अभी युवती ही थी, ससुराल की राक्षसी विचारधारा अब तक उसे अपने अनरूप नहीं बना सकी थी। नन्हीं सी नवजात बालिका को देख-देख कर उसका हृदय फटा जाता था वह भय, आशंका और करुणा की मूर्ति बनी हुई थी। अपने अन्नदाताओं के विचारों से वह भली-भाँति परिचित थी। इस लड़की के जन्म के बाद तो उसके मन में एक तूफान चल रहा था। लड़की की समाधि का काला चित्र उसकी आँखों में घूमने लगा और इसके बाद अपनी गरदन पर लटकती हुई तलवार। वह आकाश में उड़ जाना चाहती थी, पर परों का अभाव था। उसने पृथ्वी की ओर ताका; पर कहीं दरवाजा दिखाई न पड़ा। बिलाव द्वारा दबाई गई कबूतरी की तरह स्त्री ने अपनी आँखें बन्द कर ली। वह घर छोड़ कर चली जा सकती थी, पर हिन्दू समाज में यह तो स्त्री के लिए सब से बड़ा कलंक है, हिन्दू ललना अपना प्राण दे देती है, पर यह नहीं करती।

दूसरे दिन पतिदेव ने प्रसूतिगृह में प्रवेश किया। क्रोध से उनके बड़े-बड़े नेत्र लाल हो रहे थे, भौंहें चढ़ी हुई थीं, चेहरा तमतमा रहा था। पति ने उसकी ओर देखा और वह एक बारगी सहम गई। वह प्रियतम के आगे हृदय चीर कर अपनी निर्दोषिता दिखाना चाहती थी- पर सभीत मृगी की भाँति सहम गई, मुँह से एक शब्द न निकाल सकी।

पति ने गरजते हुए कहा बस हद हो चुकी। एक के बाद एक, इतनी कन्याएँ जन चुकी। याद रखो, अब तुम्हारे साथ बार-बार रियायत नहीं की जा सकती, मेरा वंश डुबाना चाहती हो? या कुल की मर्यादा मिटाना चाहती हो? अबकी बार तुम्हें छोड़े देता हूँ, आगे तुम्हारा सिर होगा

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

और मेरी तलवार।

राजपूत ने लड़की को, स्त्री की गोद से उठा लिया और अपने निश्चित स्थान की ओर ले गया। अबला अपनी पथराई हुई आँखों से चुपचाप देखती रही। आज अपने अबलापन का उसे वास्तविक ज्ञान हुआ।

माता शब्द कितनी करुणापूर्ण है। जब इसका उच्चारण किया जाता है, तो रोमांच हो जाते हैं। बच्चे के लिए वह क्या करती है, इसे आप बाहर से नहीं जान सकते। वह कितने अरमान, कितनी भावनाएँ, कितना प्रेम और कितना त्याग लेकर बालक का पोषण करती है? माता की भावनाओं को हजरत मुहम्मद साहब का हृदय जानता था, उनने कुरान में कहा है "मेरा स्वर्ग माता के पैरों तले है"। सचमुच प्रेम का इतना अथाह सागर दूरबीन लगाकर भी आपको कहीं ढूँढ़े न मिलेगा, जितना माता के एक-एक अश्रुकण में।

माता ने अपनी छोटी सी बालिका को गोद से उठकर मृत्यु की दुर्गम घाटी की ओर जाते देखा, उसका हृदय फटने लगा। मृगी जैसे अपने बच्चे का वध देखकर रँभाती है, माता के हृदय से एक करुणापूर्ण आह निकली। उसके पेट की अँतड़िया टूटने लगीं, मस्तिष्क में एक मंथन होने लगा। आँसुओं की एक अविरल धारा आँखों से चलने लगी। लड़की का अबोध हँसता हुआ चेहरा आस-पास हवा में मँडराता हुआ सा दिखाई देने लगा, अब वह अपने को सँभाल न सकी, चारपाई से उठ कर पागलों की तरह उस सुनसान जंगल में लड़कियों की समाधि की ओर दौड़ पड़ी। तीर की तरह उस घनघोर निशा में वहाँ पहुँची। उस घने अँधकार में जहाँ हाथ दिखाई नहीं देता था, उसके मातृ नयनों ने देखा कि सब लड़कियाँ उसकी गोदी में आ गईं और कहने लगीं- माता अब हमें छोड़ के मत जाना। वह चुपचाप वहाँ बैठ गई। उसकी दशा विक्षिप्त जैसी हो गई।

सबेरा हुआ सारे नगर में तलाश हुई, बहू कहीं चली गई। बहू भाग गई, राजपूत इन शब्दों को सुनकर आग बबूला हो गया। वह क्रोध में पागल इधर-उधर दौड़ने लगा। तलाश के बाद मालूम हुआ वह मुर्दा घर में लड़कियों की समाधि के पास बैठी हुई है। राजपूत आपे से बाहर हो गया, स्त्री की इतनी जुर्रत। मेरी इच्छा के विरुद्ध, घर से बाहर और समाधि पर उसकी दृष्टि में यह अक्षम्य अपराध था और उसकी सजा निश्चित थी।

तलवार लेकर वह वहीं उसी जंगल में पहुँचा, देखा कि वह बैठी हुई है। करुणा से परिपूर्ण हृदय को स्त्री अपने स्वामी के चरणों पर बहा देना चाहती थी। वह जैसे ही अपने पति के पाँवों की ओर बढ़ी कि गरदन पर एक वज्र सा प्रहार पड़ा, उसका सिर भूमि पर जा गिरा। राजपूत ने लड़कियों के गड्ढ़े को ही खोद, उसका शरीर दबा दिया। माता अपनी लड़कियों की छाती से चिपट गई, वह उन्हें छोड़कर सचमुच ही न गई।

उस बात को एक युग बीत गया, परन्तु वह समाधि आज भी ज्यों की त्यों है। कहने वाले कहते हैं कि रात को जब सुनसान हो जाता है, तब एक स्त्री के साथ छः लड़कियाँ खेलती दिखाई देती हैं और कोई पथिक उधर से निकलता है तो समाधि से आवाज आती है- माँ, लड़के, इसी किम्वदन्ती के आधार पर उसे माँ की समाधि कहते हैं। ◈

करुणा उभरे बिना दूसरों की स्थिति और आवश्यकता का भान ही नहीं होता। इस अभाव की स्थिति में लकड़ी चीरना और किसी निरपराध की बोटी-बोटी नोंच लेना प्रायः एक जैसा ही लगता है। किसी के साथ अन्याय बरतने में, सताने-शोषण करने में कुछ भी अनुचित प्रतीत नहीं होता। भावना के अभाव में मनुष्य का अंतराल चट्टान की तरह नीरस-निष्ठुर हो जाता है। संवेदना शून्यों को नर-पशु भी तो नहीं कहा जा सकता, क्योंकि पशुओं की भी अपनी मर्यादाएँ होती हैं, जो प्राकृतिक अनुशासन के विपरीत एक कदम भी नहीं उठाते, भले ही मनुष्य की तुलना में उन्हें असमर्थ - अविकसित माना जाता रहे। संवेदना आत्मीयता के रूप में विकसित होती है, तब मनुष्य दूसरों के दुःख को अपना दुःख, अन्यों के सुख को अपना सुख मानने लगता है। *(सतयुग की वापसी, पृष्ठ 15)*

चिन्तन में उत्कृष्टता का समावेश करने वाले प्रतिपादन को ब्रह्मविद्या कहते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पूज्य गुरुदेव के बालसखा पं. बेनीराम शर्मा की डायरी के पन्ने

एक दिन अचानक आचार्यश्री आँवलखेड़ा आए। मेरे पिता और पं. बेनीराम के सुपुत्र श्री रामकृष्ण शर्मा और कुछ अन्य लोगों के साथ गाँव में घूम-घूमकर सबसे मिले। लोगों से बड़ी आत्मीयता और सहज भाव से सभी का हालचाल पूछते जा रहे थे। तभी गाँव का जमादार 'गुट्टी' उन्हें दिखा। आचार्यजी दौड़कर गुट्टी से मिले और बोले-"भाई गुट्टी, तू तो बूढ़ा दिख रहा है। तू ठीक है ना?" यह सवाल करते हुए, उन्होंने गुट्टी को गले लगा लिया और उनकी आँखें गीली हो गई। एक बार दोनों सखा एक-दूसरे से गले मिले तो दोनों के नेत्र जल से भर आए। पं. बेनीराम जी ने आचार्यजी को कृष्ण और अपने को उनके बचपन का मित्र सुदामा बताया।

आचार्यजी अपने पैतृक घर के पास पहुँचे। घर की जर्जर अवस्था को देखकर बचपन की स्मृतियाँ सजीव हो रही थीं। प्रधानाचार्य श्री रामकृष्ण शर्मा से कहा-यहाँ एक छोटा सा चबूतरा बना देना, हम अपने इंजीनियर को भेज देंगे। आगे चलकर यहाँ हजारों लोग आया करेंगे। गुरुदेव गाँव के विद्यालय में पहुँचे। प्रधानाचार्य ने अपनी कुर्सी पर बैठा दिया और कहा कि आप इस आसन पर बैठकर हमें इस दायित्व के निर्बाध संचालन की शक्ति दीजिए। गुरुदेव ने हँसकर कहा-"रामकृष्ण! तूने हमें आज चेयरमैन बना दिया।" फिर चाय पी। जब आचार्यजी वापस चले गए, तब रामकृष्ण जी को चाय के बरतन में मिट्टी के तेल की बू लगी। चाय में गलती से मिट्टी का तेल गिर गया था। अपराधबोध से उन्होंने वन्दनीया माताजी को चिट्ठी लिखी और क्षमायाचना की। माताजी का जवाब आया, जिसमें लिखा था "गुरुदेव ने आँवलखेड़ा से वापस आते ही तुम्हारी चाय की प्रशंसा की और कहा कि रामकृष्ण ने हमें बहुत अच्छी चाय पिलाई।"

बाबा बेनीराम जी आचार्यजी को 'डॉक्टर' कहते थे। एक दिन मैंने बाबा से सवाल किया कि "आप आचार्यजी को 'डॉक्टर' क्यों कहते हैं?" बाबा बोले-"आचार्यजी सच्चे अर्थों में डॉक्टर हैं। आज दुनिया की दशा देख रहे हो। वह लोगों के अन्नमय कोष के गड़बड़ाने के कारण खराब हुई है। आचार्यजी लोगों के अन्नमय कोष को ठीक कर रहे हैं, वह 'अन्नमय कोष' के डॉक्टर हैं। वह 'आनन्दमय कोष' के भी डॉक्टर हैं; क्योंकि गायत्री मंत्र को जन-जन तक पहुँचाकर पाखण्ड को, छूआ-छूत को दूर किया है, नर-नारी में समानता की है और जाति-वंश के बीच भेद की दीवारों को ढहाया है। उन्होंने सच्चे ब्राह्मण की परिभाषा को परिभाषित किया है।"

वह भगवद् स्वरूप हैं। नवम्बर 1995 की बात है। 2 जून, 1990 को आचार्यजी के स्थूल शरीर छोड़ने के बाद आँवलखेड़ा में उनके 12 वर्षीय युगसन्धिपुरश्चरण की प्रथम महापूर्णाहुति का अश्वमेध महायज्ञ चल रहा था। बाबा पं. बेनीराम 40 वर्षों से घर के एक कमरे में अपने को बन्द कर 'श्रीराम मन्त्र' का जाप करते रहे थे।

एक दिन गायत्री शक्तिपीठ के व्यवस्थापक ने बाबा से कहा कि "पण्डित जी चलिए, हम आपको कार में बैठाकर विशाल अश्वमेध-नगर का विहंगावलोकन करा दें।" वह बोले "बेटा, हमने पूरा क्षेत्र देखा है। किसके खेत में यज्ञशाला है और किसके खेत में प्रवचनशाला, हमने सब खुली आँखों से देखा है।"

व्यवस्थापक ने चकित हो पूछा-"आपने कब देखा।" पं. बेनीराम शर्मा बाले-"हमारे आचार्य श्रीराम हमें रोज रात को लिवा ले जाते हैं और यज्ञक्षेत्र दिखाते हैं।" इस चर्चा के समय हम भी वहाँ मौजूद थे। हमने पूछा-बाबाजी, वह और क्या कहते हैं? वह बोले-यज्ञ के खत्म होने तक आप रह लो। यज्ञ के बाद हम आपको अपने साथ ले जायेंगे और ठीक ढाई महीने बाद दि. 26 जनवरी, 1996 को हमारे 87-वर्षीय बाबा पं. बेनीराम शर्मा जी निर्वाण को प्राप्त हो गए।"

जिसका हृदय सत्य से पवित्र है, वह अन्य हृदयों पर शासन करेगा।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

'पाती' जो सबके पास नियमित पहुँचती रही

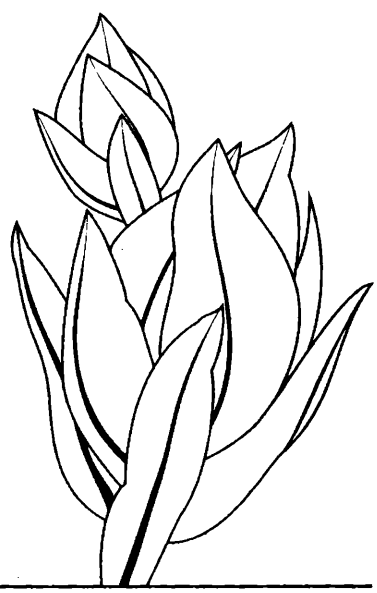
बड़े-बड़े कार्य मात्र संकल्प बल के सहारे संभव हो पाते हैं। अखण्ड-ज्योति का प्रथम पुष्प प्रकाशित करने का दुस्साहस करने के साथ उनने सबको पत्र लिखने के अलावा एक और काम किया था, सबके पते अपने हाथ से लिखे व डाकघर तक भी उन्हें पहुँचाया। प्रथम अंक में यह भी लिखा है कि "अगला अंक हम निश्चित तिथि पर ही छपाकर तैयार रख लेंगे और रजिस्ट्रेशन नंबर आते ही पाठकों की सेवा में भेजेंगे। बिना नंबर आए पत्रिका भेजने में तिगुना पोस्टेज लगेगा इसलिए अगले अंक के लिए पूरी फरवरी प्रतीक्षा करनी चाहिए। यदि फिर भी नंबर न आया तो 28 फरवरी को तिगुना पोस्टेज लगाकर भी 'अखण्ड-ज्योति' अवश्य भेज देंगे।" (पृष्ठ 3, जनवरी 1940)

पाठकगण कल्पना कर सकते हैं कि जिसने पत्नी के गहने व अपना सब कुछ बेचकर किराये पर छपाने की कहीं किसी तरह व्यवस्था की हो, वह हर पत्रिका पर तिगुना पोस्टेज भी देने को तैयार है पर पाठकों को 'अखण्ड-ज्योति' के प्रकाश से वंचित नहीं रखना चाहता, न ही वह सरकारी तंत्र से कोई समझौता ही करना चाहता है। यह संकल्प किसी साधारण मानव का नहीं हो सकता। संकल्प केवल संकल्प, वह भी एकाकी संकल्प।

पूज्य गुरुदेव ने उन्हीं दिनों अपने स्वाध्याय के आधार पर अपनी पहली पुस्तक लिखी थी 'मैं क्या हूँ?' यह पुस्तक अखण्ड-ज्योति कार्यालय फ्रीगंज आगरा से उसी वर्ष प्रकाशित हुई थी। इस प्रथम चिन्तन नवनीत में उनके वही विचार उभर कर आये हैं, जिन्हें वे व्यवहार के माध्यम से सबके समक्ष प्रकट कर रहे थे। वह था अपनी प्रसुप्त संकल्प शक्ति का जागरण और आत्मदेव की आराधना, जीवन देवता की साधना के बल पर प्रचण्ड पुरुषार्थ कर दिखाना। इस पुस्तक की कुछ पंक्तियाँ देखने योग्य हैं-"साधारण और स्वाभाविक योग का सारा रहस्य उसमें छिपा है कि आदमी अपने आत्मस्वरूप को जाने, अपने गौरव को पहचाने, अपने अधिकार की तलाश करे और अपने पिता की अतुलित संपत्ति पर अपना हक पेश करे। यह राजमार्ग है, सीधा सच्चा और बिना जोखिम का। यह मोटी बात हर किसी की समझ में आ जानी चाहिए कि अपनी शक्ति और औजारों की कार्यक्षमता की जानकारी और अज्ञानता, किसी भी कार्य की सफलता-असफलता के लिए अत्यन्त आवश्यक है।"

अपना यही संदेश तरह-तरह से भिन्न-भिन्न अवसरों पर अखण्ड-ज्योति व पुस्तकों के माध्यम से दोहराते हुए वे मनुष्य को ईश्वर का अंश-अविनाशी, राजकुमार, आत्मा-परम वैभवशाली परमात्मा की विभूतिवान संतान कहकर संबोधित करते रहे।

गुरुदेव कहा करते थे कि मैं लेखक नहीं, मैं तो दुनिया की समस्याओं को लेकर उस लोक में जाता हूँ। विचार मंथन करता हूँ, जो निष्कर्ष आते हैं, उनको लेकर मैं चिट्ठी के रूप में सुधी पाठकों तक पहुँचाता हूँ। प्रस्तुत है, गुरुदेव के विचारों का दर्पण- पत्रिका अखण्ड ज्योति के प्रारंभिक दिनों की रोचक दास्ताँ...



मनुष्य की कीमत धन से नहीं, सदाचार से आँकी जाती है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

अपनी इस पुस्तक 'मैं क्या हूँ?' के अंश उनने अखण्ड-ज्योति पत्रिका के प्रथम वर्ष के अंकों में स्थान-स्थान पर दिए हैं। इन लेखों में उनने संकल्पशीलता को मनोबल भी कहा है। इससे आगे प्राणबल और आत्मबल की विवेचना की है। प्राणशक्ति को वे दूसरे मनुष्यों का कायाकल्प कर देने वाली और वातावरण को बदलने में समर्थ बताते हैं तो आत्मबल को पारस से भी ज्यादा क्षमतावान सिद्ध करते हैं। जो लोग पूज्य गुरुदेव के सम्पर्क में आए हैं वे भली-भाँति जानते हैं कि उनने समय-समय पर तीनों ही सामर्थ्यों का उपयोग कर मनुष्य में छिपे देवत्व को जगाने की, प्रसुप्त को उभारने की चेष्टा की। अखण्ड-ज्योति का शुभारंभ उनकी इन विभिन्न शक्ति रूपों का आरंभिक परिचय ही था।

'मैं क्या हूँ?' सद्ज्ञान ग्रन्थमाला का आरंभिक पुष्प था। बाद में इस शृंखला में कई पुस्तकें जुड़ती चली गयीं यथा- ईश्वर कौन है, कहाँ है, कैसा है?, आगे बढ़ने की तैयारी, मरने के बाद हमारा क्या होता है? आन्तरिक उल्लास का विकास, सफलता के तीन साधन, योग के नाम पर मायाचार, बिना औषधि के कायाकल्प इत्यादि। ये सभी पुस्तकें तब की 6 आना सीरीज के नाम से प्रख्यात हुईं व जहाँ पहुँचीं, चमत्कार दिखाती चली गयीं। इन पुस्तकों के अंश समय-समय पर अखण्ड-ज्योति में छपते थे। अखण्ड-ज्योति के प्रथम पृष्ठ से अंत तक सारी सामग्री पूज्य गुरुदेव की लिखी होती थी पर लोकरुचि को देखते हुए वे लेखकों के कल्पित नाम भी दे दिया करते थे। कभी-कभी ये नाम वास्तविक भी होते पर उस व्यक्ति की पूर्वानुमति से वे अपने ही चिन्तन को अखण्ड-ज्योति के प्रथम कुछ वर्षों में विभिन्न लेखकों के नाम देते रहे। जब बाद में पत्रिका ने अपनी जड़ें गहराई से जमा लीं तो उनने नाम देने का क्रम बन्द कर दिया। पर यह सिलसिला पंद्रह वर्ष तक चला। कई बार अन्य सहयोगियों, अपने अनुयाइयों को श्रेय देने के लिए उनने उनके नाम दिए।

लेखों को पढ़ने के बाद लगता है, मानों पाठकों को निजी तौर पर संबोधित करते हुए ये लिखे गये हैं। एक नमूना अगस्त 1940 की पत्रिका से उद्धृत है-''हमारा विश्वास है कि अखण्ड-ज्योति के पाठक कुछ न कुछ भजन पूजा, साधना, अनुष्ठान करते होंगे। वे जैसा भी कुछ अपने विश्वास के कारण करते हों, करें। परंतु एक साधना को करने के लिए हम उन्हें अनुरोधपूर्वक प्रेरित करेंगे कि वह दिन-रात में से कोई भी पन्द्रह मिनट का समय निकालें और एकान्त में शान्तिपूर्वक सोचें कि वे क्या हैं? वे सोचें कि क्या वे उस कर्त्तव्य को पूरा कर रहे हैं जो मनुष्य होने के नाते उन्हें सौंपा गया था। मन से कहिए कि वह निर्भीक सत्यवक्ता की तरह आपके अवगुण साफ-साफ बताए।'' यह शैली ऐसी लगती है जैसे किसी को व्यक्तिगत पत्र लिखा जा रहा हो। हर पाठक इन्हें पढ़ने के बाद ऐसा अकुलाता था कि उनके संपर्क में आने के बाद निरन्तर संपर्क बनाये रखने को उत्सुक रहता था। इसे लेखनी का चमत्कार कहें या उनकी प्राणशक्ति का। पर परिजन जरूरी चिट्ठी की तरह अपनी प्रिय अखण्ड-ज्योति की प्रतीक्षा हर माह करते थे।

प्रारंभ के तेरह अंक गुरुदेव ने आगरा से प्रकाशित कर अपनी सत्ता के संकेतों पर श्रीकृष्ण की जन्मभूमि मथुरा को अपना निवास स्थान बनाया। प्रकाशन की सारी व्यवस्थाएँ नये सिरे से बनाई, पर पत्रिका की छपाई व डिस्पैच में एक दिन का भी नागा नहीं होने दिया। प्रारंभ के कुछ अंकों में आत्मविकास, शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य संबंधी विज्ञापन भी दिए गए परंतु बाद में उनने पाठकों को लिखा कि ''धार्मिक और आध्यात्मिक सामग्री प्रस्तुत करने वाली पत्रिका में विज्ञापनों का कोई औचित्य नहीं। कोई इतर विषय इसमें शोभा नहीं देता। अत: हम घाटा उठाकर भी पत्रिका बराबर भेजते रहेंगे व अधिक से अधिक ठोस लेखन सामग्री भी।''

यह प्रामाणिकता ही उस अखण्ड ज्योति का प्राण है जो आज तक अगणित व्यक्तियों में प्राण संचार करती आयी है। गुरुदेव ''स्नेह से सनी एक सोने की लौ'' अपने पास रखते थे जिसे ज्योति के रूप में अपने प्रियजनों तक हर माह एक पाती की तरह पहुँचा देते थे। इसी ने उन सभी को उनका अपना बनाया। ◆

वास्तविक सदाचार के बीज आस्तिकता के ही पवित्र आँचल में रहते हैं।

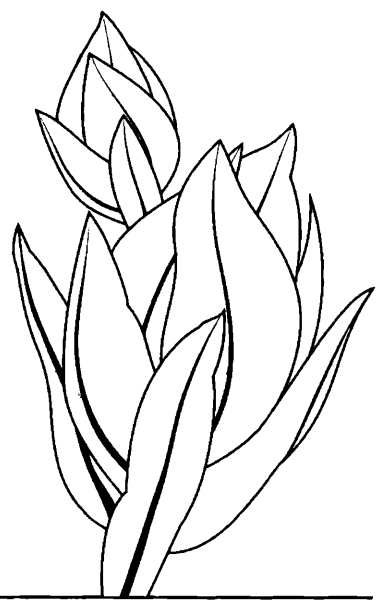
Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गायत्री महाशक्ति की उपासना से मिले 'सात लाभ'

गायत्री के जो सात लाभ बताये गये हैं–*ॐ स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्ताम्...आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम् . . . ब्रह्मलोकम्।* इन्हें हमने सौ फीसदी पाया कि ये सातों के सातों लाभ एक–एक अक्षर करके इसमें सही हैं। यह हमने अपने जीवन की प्रयोगशाला में साबित किया है–अपनी जिन्दगी में परीक्षण किया है कि सातों लाभ जो गायत्री के बताये गये हैं सही हैं। इससे मनुष्य की आयु बहुत बड़ी हो जाती है। कितनी बड़ी हो जाती है? बेटे हम कुछ कह नहीं सकते, पर हमारे गुरु के बारे में अपना विश्वास है कि उनकी आयु 600 वर्ष से कम नहीं हो सकती। गायत्री मंत्र का जप करने वाले की आयु बहुत बड़ी हो सकती है, यह तो आप अपने गुरु की बता रहे हैं। तो फिर आपकी उम्र कहाँ रही? बेटे, हमारी उम्र बहुत बड़ी है। 70 वर्ष होने को आयी, पर सही बात यह है कि 70 साल हमारी उम्र नहीं है। हम 350 वर्ष के है – 70 × 5 = 350। आप 350 वर्ष के कैसे हो सकते हैं? हम इसलिए हुए कि पाँच आदमी मिलकर के जितना काम करते हैं, इतना काम हमने अपनी जिन्दगी में किया। ग्रन्थ हमने जितने लिखे हैं, अगर एक आदमी जिन्दगी में लिखने के अलावा दूसरा कोई काम नहीं करे तो भी नहीं कर सकता और हमने क्या किया? सारी जिन्दगी भर एक आदमी तप करता रहा है। जिन्दगी के अधिकांश समय में हमारा 6 घण्टे रोज दैनिक उपासना में चला गया। इस तरह एक आदमी ने पूरा का पूरा श्रम गायत्री उपासना में किया।

एक आदमी ने संगठन किया है। हमने देश भर का संगठन किया है। हिन्दुस्तान में और सारे संसार में जो लोग हमको गुरुजी कहते हैं और जिन्होंने हमें देखा है, जो हमारी बात को सुनते हैं–मानते हैं, जिन्होंने दीक्षा ली है, वे करोड़ों की तादाद में हो सकते हैं। एक आदमी ने इतना बड़ा संगठन 30 साल में खड़ा किया हो, मैं समझता हूँ हिस्ट्री में ऐसा उदाहरण कभी नहीं मिला होगा। मरने के बाद लोगों ने किये हैं। ईसा के मरने के बाद सेंटपाल ने ईसाई धर्म का विस्तार किया था तब फैला था वह धर्म। बुद्ध भगवान का मिशन उनकी जिन्दगी में नहीं फैल सका, बहुत थोड़ा सा था। सम्राट अशोक ने अपना सारा राज्य बुद्ध मिशन के लिए लगाया तब कहीं उसका विस्तार हुआ। 30 साल में हमने विस्तार की व्यवस्था बनाई है, और कोई एक आदमी रह गया है जो हमेशा कहीं और दुनिया में रहता है। संतों के पास रहता है, ज्ञानियों के पास रहता है, तपस्वियों के पास रहता है। उनसे हम गर्मी प्राप्त करते रहते हैं, शक्ति प्राप्त करते

युगऋषि अपने भाषणों में बहुधा अथर्ववेद के मंत्र "स्तुतामया वरदा..." का उल्लेख करते थे। बताते थे कि इसमें गायत्री साधना के 7 लाभ कहे गये हैं। इस संदर्भ में पहले वे पौराणिक या ऐतिहासिक साधकों के उदाहरण सुनाया करते थे। जीवन के अंतिम चरण में उन्होंने अपने व्यक्तित्व के पर्त खोलने शुरू कर दिए थे, कहा कि लोग पौराणिक या ऐतिहासिक प्रमाणों पर शक करें तो मेरे जीवन के उदाहरण से भी यह सातों बातें प्रमाणित की जा सकती हैं। इसी संदर्भ में 9 फरवरी 1987 को उन्होंने यह उद्‌बोधन दिया था....



हमारा जीवन इसीलिए है कि अखिल सत्य तत्त्व में विचरण करते हुए अमृत का पान करें।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

रहते हैं। पूछताछ करते रहते हैं। एक और शरीर भी हमारा है जो जगह-जगह जाता रहता है। अक्सर लोग कहते हैं कि क्यों साहब हमने सुना है कि आप वहाँ के यज्ञ में गये थे और लोगों ने देखा था। यह भी हो सकता है। स्थूल ही नहीं शरीर सूक्ष्म भी होते हैं। सूक्ष्म शरीर से हमको जगह-जगह जाना पड़ता है। जगह-जगह काम करने पड़ते हैं। पाँच व्यक्तियों के बराबर की जिन्दगी हमने जिया और 350 वर्ष की उम्र हो गयी। यह है हमारी आयु।

प्राण। प्राण माने साहस-हिम्मत। हममें बहुत हिम्मत है। कितनी हिम्मत है-सारे के सारे पण्डित और पुरातनवादी लोग यह कहते थे कि महिलाओं को गायत्री का जप नहीं करना चाहिए और ब्राह्मण के अलावा किसी को नहीं करना चाहिए। हम अकेले ने कहा कि हर बिरादरी के लोग कर सकते हैं और महिलाएँ भी कर सकती हैं। पण्डितों, शंकराचार्यों-सभी से हमने लोहा लिया। सारी दुनिया में उलटी हवायें बह रही हैं, प्रवाह बह रहे हैं उनको मोड़ देने के लिए हममें बहुत ताकत है। इतनी ताकत है हममें कि जिस तरीके से मछली बहती हुई धारा को छल-छलाती हुई चीरती हुई चली जाती है उसी तरीके से हम अकेले निकल जाते हैं।

कहाँ से आता है यह प्राण? गायत्री में से आता है। गायत्री ने और क्या-क्या दिया? हमकों दीर्घ जीवन दिया-लम्बी आयु दी, प्राण दिया, हिम्मत दे दी, बहादुरी और साहस दे दिया, शक्ति दे दी। प्राण, प्रजा और सन्तानें दे दी। कितनी सन्तानें दी - हम कह नहीं सकते। हमारी सन्तानें जहाँ पैदा होती हैं तो मूछों समेत पैदा होती हैं और लड़कियाँ पैदा होती है तो मैट्रिक पास करके पैदा होती हैं। कीर्ति यश के बारे में हमारे मुँह से शोभा नहीं देता। पर हम एक ही बात कहते हैं कि संसार के पढ़े लिखे लोगों में से कभी किसी से यह पूछें कि आचार्य जी नाम के कोई व्यक्ति थे, तो वह छूटते ही कहेगा हम जानते हैं उन्हें।

हिन्दुस्तान ही नहीं, संसार की प्रत्येक लायब्रेरी में जाइये और जाकर पूछिये कि चारों वेदों के भाष्य आपके यहाँ हैं क्या? उत्तर हाँ में मिलेगा। नास्तिक देशों की बात मैं कहता हूँ-आप पूछिये क्यों साहब इस नाम के व्यक्ति को आप जानते हैं? हमारा यश किसी सीमा में बँधा नहीं है-सम्प्रदाय में नहीं है, केवल हिन्दू धर्म में नहीं है, वरन् सारे विश्व में है। यह यश कहाँ से आ गया। यह बेटे गायत्री माता का दिया हुआ है।

द्रविणं-धन। यही मत पूछिये कि हमारे पास कितना है। अभी पीछे वाली जमीन खरीदी है और जब अगली बार बसंत पंचमी पर आप आवेंगे तो यहाँ नगर बसा हुआ मिलेगा, महल दिखायी पड़ेगा। महाराज जी कहाँ से लायेंगे? आप हमसे माँगेंगे। नहीं बेटे, मैं तेरे सामने हाथ नहीं फैलाऊँगा। मैंने भगवान् के सामने हाथ नहीं पसारा तो तुझसे क्या माँगूंगा। कहाँ से आयेगा? बेटे कहीं से आयेगा-जमीन फटेगी, आसमान से आयेगा। कौन देगा? वही देगा जिसके बारे में अथर्ववेद ने साक्षी देते हुए कहा है-कीर्तिम्-द्रविणं-धन देने वाली और आखिर में क्या देती है सातवां फल-ब्रह्मवर्चसम्। ब्रह्मवर्चस कौन सा है? ब्रह्मवर्चस कहते हैं तेज को। ब्रह्मतेज कैसा होता है? ब्रह्मतेज उसे कहते हैं-जब विश्वामित्र और वशिष्ठ में संघर्ष हुआ तब विश्वामित्र हार गये और अपना राज्य छोड़कर यह कहने लगे कि वशिष्ठ जितने शक्तिशाली हैं उतना ही शक्तिशाली बनकर मैं भी दिखाऊँगा। उनने एक श्लोक कहा-**धिक् बलं क्षत्रिय बलं ब्रह्मतेजो बलं बलम्।** अर्थात् ब्रह्मतेज ही बल है। ब्रह्मवर्चस माने ब्रह्मतेज। इसे ब्राह्मणत्व का तेज कहते हैं, आध्यात्मिक तेज कहते हैं, आत्मा की शक्ति का तेज कहते हैं। गायत्री का आखिरी फल - सातवाँ फल ब्रह्मवर्चस होता है।

आत्मबल का प्रकाश ही नगण्य से मानव जीवन को विभूतिवान् बनाता है। आत्मबल ही वह जीवन तत्व है, जो साँस लेते हुए जीवित मृत के टिड्डी दल में से किसी सजीव को सूर्य-चंद्र की तरह चमकने में समर्थ बना सकता है। आत्मबल का रत्न भण्डार आत्म चेतना की भूमिका में जागृत होने पर ही उपलब्ध होता है।

जिस बात को तुम न्याययुक्त समझते हो, उसी का निश्चय करो और फिर उस पर जम जाओ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लोचन अनंत उघारया अनंत किया उपकार

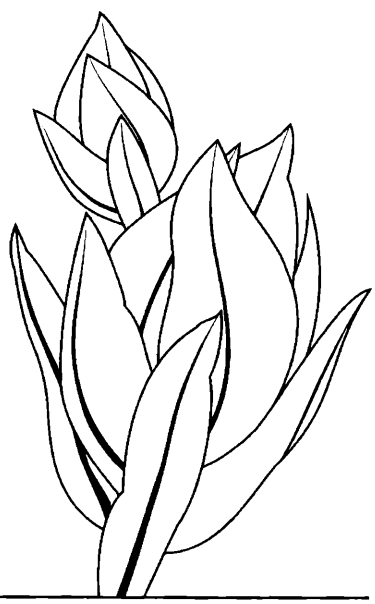
शांतिकुंज में उन दिनों चांद्रायण साधना सत्र चल रहे थे। हमारी भी बड़ी जिद थी कि बाहर से तो लोग आकर साधना कर रहे हैं, हम यहाँ रहकर भी नहीं कर पा रहे। इसलिये पूज्यवर से पूछा कि यदि वे आज्ञा दें तो हम भी एक सत्र कर लें। गुरुवर ने प्रत्यक्ष मना तो नहीं किया पर हाँ भी नहीं की। बोले, ''यहाँ रहकर तुम जो कुछ भी कार्य मिशन के हित में कर रहे हो, वही तुम्हारी साधना है।

हाँ, साधना की दृष्टि से- न्यूनतम तीन व अधिकतम ग्यारह माला के लिए चौबीस घण्टे में एक घण्टे का समय तय कर लो और एक या दो खण्डों में इसे पूरा कर लो। बस, तुम्हारा इतना भर करना पर्याप्त है, शेष हम सँभाल लेंगे।'' होना तो यही चाहिए था, कि जो भी कुछ उनने कहा उस पर विश्वास करते हुए अपनी कर्मठता का स्तर और बढ़ा देना चाहिए था, किन्तु कहा यह गया कि, ''आपकी आज्ञा हो तो सवा-सवालक्ष के पाँच अनुष्ठान, पाँच चान्द्रायण के साथ करने की बड़ी तीव्र इच्छा है। यदि आज्ञा मिल जाय तो बड़ी कृपा होगी।'' पूज्यवर ने मना तो नहीं किया, पर हाँ भी नहीं किया, मात्र मुस्कान भर दिए।

हमने उचित तिथि देखकर साधना आरंभ कर दी और साथ में अनुष्ठान भी। प्रातःकाल जल्दी उठकर साधना पहले करनी पड़ती थी; क्योंकि फिर अध्ययन-लेखन व अन्य कार्य करने होते थे। पाँच दिन तक यह क्रम ठीक से चलता रहा, छठे दिन सुबह-सुबह ही गुरुदेव ने निर्देश नोट करने के लिये बुला लिया। उनके समक्ष बैठ तो गए पर ध्यान इसी में लगा था कि इतनी माला हो गयीं और इतनी बची हैं। गुरुदेव तो अंतर्यामी थे सो बातों ही बातों में उपस्थित सभी कार्यकर्त्ताओं से कहा कि तुम सभी को कर्मयोगी बनना चाहिए। जप की गिनती करके माला ही यदि तुम लोग करने लगे तो यहाँ भजनानंदी बाबाओं का अखाड़ा बन जायेगा।

तुरंत मन की दौड़ पर रोकथाम लगायी कि मन, माला की गिनती में नहीं जो कुछ पूज्यवर कह रहे हैं, उसमें लगो। थोड़ी देर चर्चा चली। समापन के बाद जब सब नीचे उतरने लगे तो गुरुवर ने पीछे से आवाज देकर मुझे रोका व बोले- ''तुम ऐसा करो। आज ही लेबोरेट्री के लिए नये उपकरण लेने चण्डीगढ़, अम्बाला चले जाओ। साथ में वीरेश्वर को भी ले जाओ।'' अनुष्ठान से सिद्धि के रँगीले स्वप्नों में मग्न हमारे चिन्तन को झटका लगा। हमने पूछा, ''क्या यह कार्य एक माह बाद नहीं किया जा सकता? तब तक अनुष्ठान समाप्त हो जाएगा।'' आदेश मिला कि ''नहीं, तुरंत जाना होगा।'' यह निर्णय हो चुका है। ब्रह्मवर्चस के लिए

गुरुदेव कहा करते थे कि कर्म के माध्यम से की गई उपासना योग है। विनोबा जी का उदाहरण देते हुए बताते थे कि केवल शरीर शौष्ठव के लिए किया गया व्यायाम बेकार का श्रम है। इससे बेहतर तो बागवानी हैं, जिससे हमें फल-फूल भी मिलते हैं। इसे वे प्रोडक्टिव श्रम के रूप में लेते थे। इसी तरह से सेवाभाव से किये गये कर्म को पूज्य गुरुदेव प्रोडक्टिव उपासना कहते थे...



'सत्य' मनुष्यों को प्रेरणा देता है कि अन्तर में दृष्टि डालो, अपना दृष्टिकोण बदलो।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

जिन उपकरणों की जरूरत है, वे अभी ही लाने हैं। सिर झुकाकर मन ही मन ''करिष्ये वचनं तव'' कहते हुए नीचे आ गए। फिर भी आशा की एक किरण थी कि शायद वंदनीया माताजी गुरुदेव को मना लें।

माताजी से निवेदन किया तो माताजी ने कहा ''चर्चा करके कल सबेरे बतायेंगे।'' अगले दिन प्रात:काल नियमित जप आदि का क्रम चला। गुरुवर को प्रणाम करने पहुँचे तो वे बोले, ''क्यों भई! तैयार नहीं हुए? जल्दी निकलना होगा, तभी तो काम करके दो दिन में आ पाओगे और देखो! जप की चिन्ता मत करना। तुम्हारा शेष जप हम कर लेंगे। आहार का क्रम जैसा पहले लेते थे, वही वहाँ रखना।'' अब तो निर्णय हो चुका था, सो जाना ही पड़ा।

बस में अम्बाला जाते हुए मन को समझाया कि कोई बात नहीं, अगली पूर्णिमा से फिर अनुष्ठान आरंभ कर लेंगे। अम्बाला-चण्डीगढ़ का कार्य 4 दिन में पूरा हो पाया। लौटकर पूज्यवर को चरण वंदन किया व अनुष्ठान वाली बात कही। इस पर उन्होंने कहा, ''पूर्णिमा आने दो, देखेंगे।'' अगली पूर्णिमा के पूर्व ही मीटिंग में पूज्यवर ने ब्रह्मवर्चस् की लाइब्रेरी हेतु बनारस से पुस्तकें लाने की बात कही। हमने मन में सोचा कि यह योजना एक माह बाद बने तो अच्छा है पर यदि बने भी तो अपना नाम न आए। कोई और चला जाये। बात आई गई हो गयी। पूर्णिमा पर हमने पुन: वंदनीया माताजी से अनुष्ठान हेतु कलावा बँधवाया व पूज्यवर को जाकर नमन किया तो तिलक देखकर पूछ बैठे कि ''आज तो तिलक लगवाया है, क्या जन्मदिन है?'' हमने कहा-''नहीं गुरुदेव, आज पूर्णिमा है व आज से हम पुन: वह अनुष्ठान आरंभ कर रहे हैं, जो पिछली बार अधूरा छूट गया था।'' गुरुदेव बोले ''अच्छा-अच्छा! ठीक है करो।''

सोचा, आशीर्वाद मिल गया, अब कोई दिक्कत नहीं है। अनुष्ठान आरंभ होने के बारह ही दिन हुए थे कि पता चला आज या कल में ही बनारस जाना होगा। हमने गुरुजी से निवेदन किया कि हो सके तो बीस दिन बाद चले जायेंगे। किन्तु, उसका कोई असर नहीं हुआ। वे बोले, ''यह काम जरूरी है, अत: इसे पहले करना होगा। बाकी हम पर छोड़ दो।'' बरबस बनारस यात्रा करनी पड़ी। दस दिन लगे, पर साहित्य की बहुमूल्य अध्ययन सामग्री एकत्र कर ली गयी। इस बार भी अनुष्ठान में विघ्न आ गया यह सोचकर पुन: तीसरी बार यह क्रम आरंभ करने की सोची।

तीसरी बार, चौथी बार भी यही पुनरावृत्ति हुई। लगा कि पूज्यवर चाहते ही नहीं कि हमारा आत्मिक उत्कर्ष हो। हम तप साधना करना चाहते हैं और वे जबरदस्ती हमें कर्मयोगी बनाने पर तुले हुए हैं। स्वयं तो उन्होंने चौबीस लक्ष के चौबीस महापुरश्चरण संपन्न किए हैं पर हमें क्यों टोकते हैं? ऐसा ही मंथन चल रहा था कि गुरुजी का बुलावा आ गया। पास बिठाकार बोले, ''क्या बात है, क्यों इतना पीछे पड़े हो जप करने के? जो हमने कहा, उस पर विश्वास नहीं है क्या? केवल तीन माला कर लिया करो। ज्यादा से ज्यादा ग्यारह। साल में दो नवरात्रियाँ आती हैं, तब अनुष्ठान कर लो। वर्ष भर गुरुवार का अस्वाद निभाओ पर खाने-पीने में अनावश्यक कटौती न करो। नियमितता- निरन्तरता ही साधना में जरूरी है। अतिवादी तप-तितीक्षा नहीं।''

हमने कहा कि हमें गायत्री माँ के दर्शन करने हैं। इसीलिये हम अनुष्ठान करना चाहते थे, पर आपने पूरे ही नहीं होने दिए। कोई न कोई प्रारब्ध हमारा रहा होगा। गुरुदेव हँस पड़े व बोले-अरे, अरे! तुम्हें गायत्री माँ के दर्शन करने थे, तो बोले क्यों नहीं? और अचानक उनका सारा शरीर प्रकाश पुंज में बदल गया। इतना तीव्र प्रकाश कि आँखें चौंधियाने लगीं और उन्हें खुली रखना मुश्किल हो गया। गुरुदेव के स्थान पर साक्षात् माँ गायत्री विराजमान दिखाई दीं और फिर कुछ पल बाद गुरुदेव स्वयं बैठे मुस्करा रहे थे और बोले , ''और कुछ चाहिए?'' हमने कहा- ''बस! आपने हमारी सभी इच्छाएँ पूरी कर दीं, अब कोई इच्छा शेष नहीं है।'' साक्षात् ब्रह्म शक्ति, आद्यशक्ति के दर्शनों से मन अभिभूत हो गया। हृदय के बस यही उद्‌गार थे-

सतगुरु की महिमा अनंत,
अनंत किया उपकार।
लोचन अनंत उघारया,
अनंत दिखावनहार॥

लक्ष्य के प्रति उत्साह, उमंग न हो, मनोयोग न जुट सके तो सफलता सदा संदिग्ध बनी रहेगी।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महात्मा आनन्द स्वामी के अनुभव

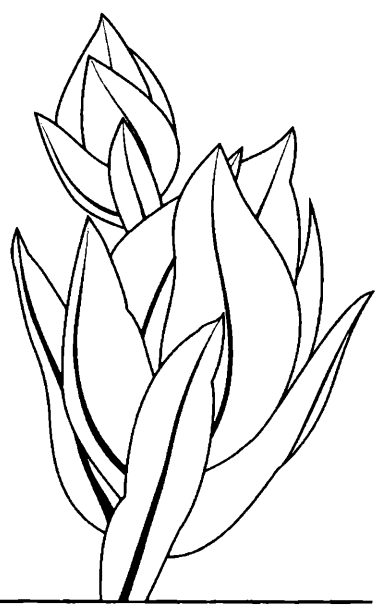
महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती, आर्य समाज के सर्वमान्य सन्त थे। पूज्य गुरुदेव के साथ उनके बड़े गहरे आत्मीय सम्बन्ध रहे हैं। जब कभी दोनों की प्रत्यक्ष भेंट होती तो श्रीरामचरितमानस की चौपाई ''मुनि रघुवीर परस्पर नवहीं'' चरितार्थ होती दिखती थी।

स्वामीजी हरिद्वार प्रवास के दौरान शान्तिकुञ्ज में पधारे। शिविरार्थियों के बीच पूज्य गुरुदेव उन्हें स्वयं लेकर पहुँचे। दोनों साथ-साथ मंच पर विराजे थे। स्वामीजी ने उद्‌बोधन के क्रम में अपनी उत्तराखण्ड यात्रा का प्रसंग सुनाया। गंगोत्री से ऊपर किसी क्षेत्र का वर्णन था। प्रातः स्नान, ध्यान के बाद पर्वतों का हिमाच्छादित मनोहारी दृश्य देख रहे थे। देखा कि एक हिमाच्छादित क्षेत्र के बीच एक चट्टान ऐसी है, जिस पर बर्फ नहीं जमी थी। स्वामीजी ने गाइड से पूछा कि इसका क्या कारण है? गाइड ने पदार्थ विज्ञान के अनुसार कुछ तर्क देने का प्रयास किया, जो स्वामीजी के गले नहीं उतरा। उन्होंने कहा- यह बचकानी बातें छोड़ो, कोई ठोस बात पता हो तो बताओ।

गाइड ने बताया कि ठोस बात क्या है, यह तो नहीं जानता, लेकिन इस क्षेत्र में मान्यता यह है कि इस स्थान पर कभी शिवजी ने तप किया था, इसलिए यहाँ कभी बर्फ नहीं जमती, चाहे जितना हिमपात होता रहे। स्वामीजी कुछ आश्वस्त हुए। उस स्थान को ध्यान से देखकर कहा- ''वहाँ चल सकते हो?'' गाइड दुर्गम क्षेत्र कहकर कतराया। कुछ स्वामीजी के प्रभाव एवं कुछ धन के लालच से आग्रह करने पर तैयार हो गया। दो घण्टे के कठिन परिश्रम के बाद किसी तरह वहाँ पहुँच गये। स्वामी जी ने कहा-''वहाँ पहुँचकर मैं ध्यान करने बैठा तो मुझे इनकी (पूज्य आचार्यश्री की) ही झलक-झाँकी मिलती रही।''

शिवजी की तपस्थली पर आचार्य श्रीराम शर्मा की याद क्यों आई? इसका सूत्र मिलता है, पूज्य गुरुदेव द्वारा सुनाए गए नित्य संस्मरण से-एक बार पूज्य गुरुदेव के सामने स्वामीजी गायत्री महाविज्ञान में दी गई गायत्री मंजरी की बहुत प्रशंसा करने लगे। स्मरणीय है कि गायत्री मंजरी में शिव-पार्वती संवाद के रूप में गायत्री विद्या का गूढ़ विवेचन किया गया है। महाविज्ञान का तीसरा खंड इसी की व्याख्या के रूप में है। स्वामीजी की प्रशंसा सुनकर पूज्य गुरुदेव मुस्कुराने लगे। स्वामीजी ने प्रश्नवाचक दृष्टि से उनकी ओर देखा, इस रहस्यभरी मुस्कान का मर्म जानना चाहा। पूज्य गुरुदेव ने उनकी गंभीरता को लक्ष्य करके एक रहस्य और हास्य मिश्रित वाक्य बोला। कहा- ''स्वामीजी! जो शरीर छोड़ चुके हैं, उन्हीं की बात को महत्त्व दिया जाता है, तो हम

महात्मा आनंद स्वामी सरस्वती एक आर्य समाजी संन्यासी थे और गुरुदेव से उम्र में 25 वर्ष बड़े थे। किन्तु जब दोनों का मिलन होता था, तो दृश्य देखने लायक रहता था। आनंद स्वामी जी, गुरुदेव का वास्तविक स्वरूप समझते थे। इसलिए श्रद्धापूरित भाव से मिलते थे और गुरुदेव भी स्वामी जी का अंतःकरण से सम्मान करते थे...



हर घड़ी उपयोगी कार्य में लगे रहना जीवन का आदर्श बनाया जाना चाहिए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

भी एक दिन शरीर छोड़ कर दिखा देंगे।'' स्वामीजी जैसे तपस्वी साधक की समझ में इस संकेत से यह बात आ गई कि आचार्य श्रीराम की प्रत्यक्ष काया में एक ऐसी दिव्य चेतना कार्य कर रही है, जिसका मूल्यांकन काया की दृष्टि से नहीं किया जा सकता। शिवजी की तपस्थली पर बैठकर उन्हें 'आचार्यश्री' की याद आई, इसका कारण यही रहा होगा। जिन्हें यह बोध हो गया था कि वे इस संबंध में भगवान् शिव की चेतना का प्रत्यक्ष प्रतिनिधित्व कर रहे हैं, वे उन्हें इसी भाव से देखते और श्रद्धा-सम्मान देते रहे।

एक बार मथुरा गायत्री तपोभूमि में स्वामी जी का पदार्पण हुआ। स्नेहचर्चा के दौरान, आचार्यश्री ने कहा- ''चलिए, स्वामीजी, माँ के दर्शन करें।'' स्वामी जी सहज भाव से साथ गये, श्रद्धापूर्वक मूर्ति को साष्टांग प्रणाम करके 100 रुपये का नोट चढ़ाया। आर्य समाज में मूर्तिपूजा का विरोध किया जाता है, किन्तु स्वामी जी ने श्रद्धा के मार्ग में तर्क को आड़े नहीं आने दिया, यह देखकर आचार्यश्री का मन हर्षित हुआ। उन्होंने स्नेह भरे व्यंग्य के साथ कहा- ''देख लिया स्वामी जी, अब हम आर्य समाजियों से कहेंगे कि स्वामी जी भी बुतपरस्त हो गये हैं।''

स्वामी जी ने आचार्यश्री को पकड़कर हृदय से लगाया और बोले, ''प्यारे आचार्य जी, यदि सभी मंदिर आपके मंदिर जैसे हो जायें तो मैं आर्य समाज से मूर्तिपूजा के विरोध की बात ही हटा दूँ।'' इसी तरह एक बार स्वामी जी हरिद्वार में आर्यसमाज के व्यास आश्रम में रुके हुए थे। आचार्य जी ने उनसे मिलने के लिए समय माँगा, तो संदेशवाहक से बोले-''वे क्यों आयेंगे यहाँ? मैं ही पहुँचूँगा, उनसे मिलने शान्तिकुञ्ज।'' आचार्यजी ने सुना तो हँसे, बोले-''नहीं, महात्मा जी हरिद्वार आये हैं, तो हमें ही उनसे मिलने जाना चाहिए, और वे बिना सूचना दिए उनसे मिलने व्यास आश्रम पहुँच गये।'' स्वामी जी कक्ष में आराम कुर्सी पर बैठे किसी से चर्चा कर रहे थे। साथ गये स्वयंसेवक ने आगे बढ़कर जानकारी दी कि, ''स्वामीजी! आचार्यश्री पधारे हैं।'' तब तक आचार्यवर भी अभिनन्दन करते हुए, कक्ष में प्रवेश कर गये।

स्वामी जी वैसे ही बैठे-बैठे स्नेह भरे स्वर में कहने लगे, ''आप क्यों आये, बिना बताये?'' इतने में आचार्यश्री हाथ जोड़ते हुए उनके पास तक पहुँच गये। स्वामी जी ने बैठे-बैठे ही हाथ बढ़ाकर उनके चरण छुए और आचार्य जी उनके चरणों में झुकें, इसके पहले ही स्वामीजी ने खड़े होकर उन्हें हृदय से लगा लिया। पीठ थपथपाते हुए बोले- ''वाह प्यारे आचार्यजी! चलिए अन्दर चलकर बैठते हैं।''

आत्मीयता का आनन्द

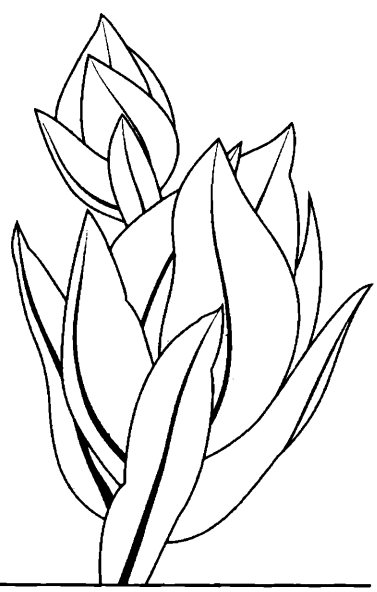
आत्मीयता का सत्य ऐसा है, जिसके प्रकाश में केवल आनन्द की ही अनुभूति होती है। इस संसार में एक ही वस्तु प्रिय है - अपनापन। इसे जो जितना व्यापक विस्तृत बना लेता है, वह अपने आनन्द की परिधि को उतना ही विस्तृत बना लेता है। आत्म विकास का चिह्न यही तो है कि हम अपने आपको विशाल क्षेत्र में विकसित हुआ देखें। जब दूसरों के दुःख अपने दुःख बन जायें और अपने सुख को दूसरों में बाँटने की आतुरता उभरने लगे तो समझना चाहिए कि आत्मज्ञान ने अपनी जड़ें मजबूत कर लीं। आत्म-विकास उसी का समझा जाना चाहिए, जो अपने शरीर, मन और परिवार की सीमित संकीर्णता से आगे बढ़कर विश्व परिवार के प्रति अपने कर्तव्य एवं दायित्व का अनुभव करता है। ऐसे व्यक्ति में ही ईश्वर की ज्योति अवतरित होती है। आत्मवान् व्यक्ति ही प्रकारान्तर से इस संसार में भगवान् की भूमिका सम्पादित करते हैं। हम आशावान् बनें। आस्था को सुदृढ़ रखें। आत्मीयता को अधिकाधिक मात्रा में अपनाने के अपने प्रयास इतने प्रखर बनें कि आत्मा का स्तर परमात्मा जैसा ही बने, निखरे।

प्रयत्न से सांसारिक समृद्धि मिलती है, प्रयत्न से आत्मिक सम्पदाएँ मिलती हैं, प्रयत्न से परमात्मा मिलता है, इसलिए प्रयत्न ही प्रधान है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ब्रह्मास्त्र अनुष्ठान और क्रान्तिकारी उद्घोष

युगऋषि ने पहला सहस्र कुण्डीय यज्ञ मथुरा में नवम्बर 1958 में किया था। उसे उन्होंने ब्रह्मास्त्र अनुष्ठान नाम दिया था। शालीनता की भाषा में यह कहा था कि ऐसा यज्ञीय प्रयोग महाभारत के बाद पहली बार हो रहा है। किन्तु शोध करने पर सिद्ध होता है कि इस प्रकार का यज्ञीय प्रयोग विश्व इतिहास में पहली बार ही हुआ था। उस यज्ञ में उन्होंने कुछ क्रांतेकारी घोषणाएँ की थीं, जो आज प्रत्यक्ष घटित होती दिख रही हैं...



✱ हमें भारतवर्ष में नैतिक, सांस्कृतिक और धार्मिक पुनरुत्थान करना है। अब तक यह काम अखबार छापकर मैं करता रहा; लेकिन अब महाजागृति के लिये मुझे जीवित जाग्रत् पुरुषों को लेकर आगे बढ़ना है। हमारे पास धन सम्पत्ति कुछ नहीं है, लेकिन आपके लिए हृदय में प्यार बहुत है। जब मैं आप सबको देखता हूँ, मेरी नियत कुछ खराब हो जाती है। अपने काम के लिये मैं इतना पागल हो गया हूँ कि मन चोरी करने को करता है। **आपमें से कुछ ऐसे चमकते हुए चेहरों को चुराना चाहता हूँ, जो आगे बढ़कर देश में एक दिव्य चमक पैदा कर दें। मेरी नीयत आप में से कुछ को छीन लेनी की हो रही है।**

✱ आप सब भगवान् पर दृढ़ विश्वास करो। हमारे महायज्ञ को देखकर कुछ मूर्खान्ध यह ख्याल करते हैं कि यह सब मैं माया बटोरने के हेतु से कर रहा हूँ- मेरे पेट में नोटों की भूख है व ऐसा सोचकर इस अभूतपूर्व कार्यक्रम को नाटक और लीला मान बैठे हैं। अरे! तुम नहीं जानते अगर माँगने पर तुल जाऊँ, तो दिखा दूँ कि कैसे माँगा जाता है, मैं दिखा दूँ कि माँगना किसे कहते हैं? (उच्च स्वर से आवेश में) वह अस्त्र तो अभी हमने म्यान से बाहर निकाला ही नहीं, उसे तो अभी कमर में बाँध रखा है। जब बिना माँगे इतना बड़ा खेल खड़ा हो जाता है तब माँगने पर क्या नहीं हो सकता?

मूर्खान्धो! तुम नहीं जानते मैं मदन मोहन मालवीय का शिष्य हूँ, जिन्होंने हिन्दू विश्वविद्यालय खड़ा कर दिया है। केवल माँगने के बल पर। माँगने को हँसी खेल समझते हो-अरे! तुम नहीं जानते कि माँगना किसे कहते हैं? मैं माँगना जानता हूँ, लेकिन माँगता नहीं। जो धर्म-कर्म के नाम पर छद्म भर भी ज्ञान नहीं रखते, पैसे भर भी काम नहीं करते, जनता को नशा आदि बुरी बातें सिखाते हैं, ऐसे छप्पन लाख साधुओं को भारतीय बन्धु भोजन वस्त्र प्रदान करते हैं, सो भी घटिया नहीं, जैसा कि हम और आप पाते हैं बढ़िया, पता नहीं क्या-क्या? उसकी हम आप कल्पना भी नहीं कर सकते, लेकिन ऐसा भोजन वस्त्र हमें और हमारे गायत्री परिवार में किसी भी सदस्य को नहीं चाहिये। खाना खाए पंडित जी और स्वर्ग जाय यजमान, हिश! ऐसा स्वार्थी धर्म हमें नहीं चाहिये। एक-एक शाखा में एक-एक कार्यकर्त्ता सीना निकालकर तपोभूमि की ओर कदम बढ़ाये तो सचमुच मैं हिन्दुस्तान में ऐसा गजब कर दूँगा कि लोग देखकर दंग रह जायेंगे।

✱ लोग कहते है गायत्री मंत्र सबसे क्यों कराते हो? **आज सबको सद्बुद्धि की जरूरत है, इसलिये कराते हैं।**

विराट् ब्रह्माण्ड में संव्याप्त सत्ता को विराट् ब्रह्म या परमात्मा कहते हैं। वही सर्वव्यापी, न्यायकर्त्ता, सत्, चित्, आनन्द आदि विशेषणों से जाना जाता है, उसी का छोटा अंश जीवधारियों के भीतर काम करता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

गायत्री मंत्र सद्बुद्धि का मंत्र है, सारे संसार को उसकी जरूरत है। यह जरूरत पूरी की जा रही है; एक दिन सारी दुनिया गायत्री मंत्र जपेगी, इसमें हम क्या कर सकते हैं ?

✱ हमारे हृदय में एक टीस है कि हमारे देश का रहन-सहन कितना घटिया हो गया। हाँ! कपड़े लत्ते कुछ अवश्य अच्छे हो गये हैं। लेकिन प्यार का सारा रिश्ता खत्म हो गया। आदमी इतना घटिया हो गया है कि अब एक ही रिश्ता रह गया है, सैक्स का। रहन-सहन और व्यवहार देखकर आश्चर्य होता है कि ये इन्सान है कि दैत्य ? सर्वत्र व्यापक रूप से बुराई का प्रचार हो गया है, आज का इन्सान बड़ा ही बेवफा और खुदगर्ज हो गया। आदमी से आदमी का प्यार नहीं रह गया। **यह नेतागिरी जो आप देख रहे हैं। मैं आज भविष्यवाणी करने जा रहा हूँ कि वह भी खत्म होने जा रही है, धुँआधार बोलने वाले भी कान पकड़ कर निकाल दिये जायेंगे। अब तो गायत्री परिवार के बच्चे आगे बढ़ेंगे और बढ़कर काम करेंगे, अब भाषण नहीं, स्वस्तिवाचन होंगे।**

✱ पंडिताई का पैसा इसलिये खराब हो गया कि काम तो दो पैसा का करते हैं और दो रुपये के लिये हाथ पसारते हैं। अरे धन को कभी भी अपना प्रिय न मानों, नहीं तो वह तुम्हें खा जायेगा। पंडित लोगों को पर्वों के अवसर पर हाथ रखे न बैठा रहना चाहिये उसका संदेश घर-घर कहना चाहिए। भारत की आत्मा तभी जाग्रत् होगी। उदाहरण-करवाचौथ का त्यौहार आ गया तो आप यह न कहिये कि करवा चौथ के रोज उपवास करना चाहये, सांस्कृतिक पुनरुत्थान तब होगा, जब बड़ी-बूढ़ी, जवान बच्ची, मातृ शक्तियों को इकट्ठा कर उन्हें सरस वाणी में चौथ का महत्त्व बताते हुए सम्बन्धित पौराणिक कथा सुनायेंगे। फिर देखिये सतियों की सेना किस तरह देश में तैयार होती एवं समाज में सतीत्व का तेज फूटता है।

✱ लोग कहते हैं पुराण पाखण्ड है। दयानन्द के वे दिन बीत गये, एक बात सुनी कि ले भागे। मनोवृत्ति तो यह है कि लोग पत्ते को ले भागते हैं कहते हैं कि यह पाखण्ड है। खुद तो पाखण्डी, नकलची और विदेशियत के पक्के गुलाम हैं, हमारी एक भी बात को बारीकी से समझने की तो कोशिश नहीं करते, और मूर्खान्ध हमें पाखण्डी कहते फिरते हैं। सत्य सनातन धर्म में खराबी क्यों आ गई ? इसलिए कि उसे हमने कमाई का रूप दे दिया, उसे एक धन्धे के रूप में स्वीकार कर लिया। अब हमें निर्लिप्त, नि:स्वार्थ भाव से घर-घर में उन्हें धर्म की तर्क संगतता एवं विज्ञान सम्मत मत को बताना होगा।

✱ भाइयो! आज मुझे बहुत से धर्म के ज्ञाता भंगियों की आवश्कता है जो जमाने के कचरे को साफ कर दें। भाइयो! मेलों से कुछ नहीं बनता-बिगड़ता, हमें इस युग के भौतिक प्रवाह में बहना नहीं है। बदलना है जमाना, मर्द वो है, जो जमाने को बदल दे।। हमें वो साधु नहीं चाहिए, जो केवल कपड़े भर रंग लेते हैं। हमें दान देने वाले भी नहीं चाहिए, वे भी दो कौड़ी के हैं। **हमें ऐसे आदमी चाहिए, जिनमें दम हो, कुछ काम करने की क्षमता हो, संसार में कुछ हो जाने-कुछ कर जाने की महत्त्वाकांक्षा हो।** हमारे पास उनके भोजन वस्त्र की कमी नहीं होगी, हमें गायत्री माँ के नूर को पहचानना होगा।

भाइयो! जीव मारना यह सनातन धर्म नहीं है। यह तो कसाइयों का धर्म है। लोग देवी देवता को पशुओं की बलि देते हैं और अपने को सनातनी कहते हैं। अरे भाई! अपनी पाशविक वृत्ति को संतुष्ट करना है, तो निरीह पशुओं को मारकर कर लें। धर्म का नाम क्यों लेते हो ? धर्म की चौकी पर क्यों बैठते हो ? पशुवध से आत्मा चीत्कार कर उठती है, पशु वध हिन्दू धर्म का कलंक है।

✱ लोग चुनौती देते हैं शास्त्रार्थ की ? वे नहीं जानते कि शास्त्रार्थ क्रिया से होते हैं, जबान से नहीं होते। अगर जबान से होने वाले शास्त्रार्थ से कुछ होता, तो वकील ही सबसे बड़े शास्त्री होते, निर्णय शास्त्रार्थ से नहीं, क्रिया से होते हैं। **दो हजार वर्ष बाद स्त्रियों को यज्ञ में बैठने का अधिकार दे दिया गया है, आज किसमें ये शक्ति है, जो इन्हें रोक दे ? इसे आज कोई रोक नहीं सकता।** तपोभूमि ने एकाधिकार मिटा दिया, अब हम सबको यह काम करना होगा, जो युग की पुकार है। यहाँ पंडाल में प्रस्ताव करने और हाथ उठवाने से कुछ नहीं होगा, प्रेम और मुहब्बत की दुनिया पैदा होगी।

युगान्तर तो भगवान् करने पर तुला है, वह तो होगा ही। हम ऐसे अखबार भी निकालेंगे, जिनमें केवल अच्छाई और प्रशंसा

सदाचार के विचारों का चिन्तन करने से ही आत्मा को अपार शान्ति और शीतलता प्राप्त होती है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

की चर्चा होगी। युग की यह भूख है क्योंकि राष्ट्र बहुत दिन से सोया हुआ पड़ा था, अब जागा है, इसे भूख लगी है। अगर इसकी बौद्धिक भूख को ठीक तरह से नहीं मिटायेंगे तो यह कुपथ्य ग्रहण कर लेगा।

* अच्छा भाइयो! सँभल जाओ यह देश कम्युनिस्ट होने जा रहा है। कम्युनिस्ट होना तो कुछ अच्छा भी है, यह तो सभी नियमों और शिष्टाचार से मुक्त होने जा रहा है। यह तो बद से भी बदतर होने जा रहा है। हम यहाँ से हर महीने अखबार छापते हैं, पर इससे कितना, क्या हो सकता है? **हमें तो अब उन गरम-गरम खून वाले सांस्कृतिक सेनानियों की जरूरत है, जो काल से भी दो घड़ी बातें कर सकते हों। हमें अब जिन्दगी चाहिये, जीवित दधीचि की हड्डियों की जरूरत है, तब यह अधर्म का असुर मारा जायेगा।** भाइयो! हड्डियों का हथियार बहुत तेज होता है, गाँधी 96 पौंड हड्डियों का एक ऐसा हथियार था कि जिसके प्रभाव से चन्द्र-सूर्य न डूबने वाले साम्राज्य को पूँछ दबाकर भारतवर्ष से भागना पड़ा।

भाइयो! हमें भी हड्डियों के हथियार से, ऋषियों की सभ्यता और संस्कृतियों से देश को ओत-प्रोत करना है। आप लोग अपने-अपने क्षेत्र में काम करने के लिये कुछ धन भी इकट्ठा कर लो। किसी भी काम के लिये आजकल पैसे की जरूरत होती है। तुम अगर काम पर निकल पड़ो तो तहलका मचा दोगे। अपने पैसे से काम करोगे तो कुछ कर जाओगे, गायत्री परिवार का नाम होगा। अगर जनता से माँगोगे तो तुम्हारा मुँह काला हो जायेगा।

जन शक्ति भारी शक्ति है। इस शक्ति को अध्यात्म की ओर सक्रिय करना है। आप लोग अधिक नहीं तो एक पैसा और एक मुट्ठी अनाज अगर रोज धर्मार्थ इकट्ठा करें, थोड़ा सा समय देकर उस थोड़े से पैसे से बहुत बड़ा कार्य कर सकते हो। यहाँ पर भी मैं हाथ उठवाना नहीं चाहता, अपने-अपने जी में भीतर हाथ उठाओ। यहाँ से जाकर एक छोटा सा हवन करना। 'तीन लोक से न्यारी' मथुरा में आये, अब यहाँ से जाकर जनता को गायत्री मंत्र सिखाओ और अनिवार्य रूप से हवन करो। देश में यज्ञ की परमार्थ लहर पैदा करो। ◈

मेरे पेट में एक चुहिया कूदती है

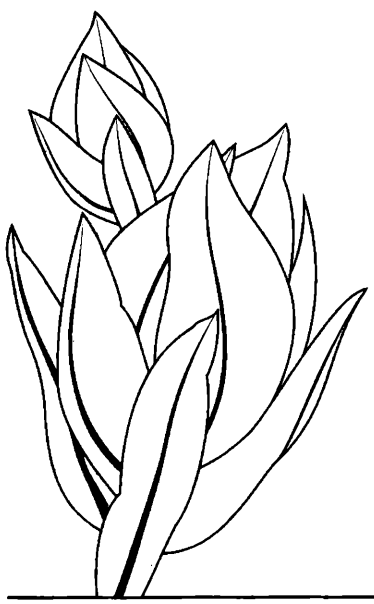
सन् 1961 की हिमालय यात्रा तक आचार्यश्री ने यह घोषणा नहीं की थी कि वे हिमालय क्यों जाते हैं, वे वहाँ पर क्या करते हैं। क्योंकि इसकी उन्हें अनुमति नहीं थी। आराध्य सत्ता के निर्देशानुसार सन् 1958 में जब उन्होंने सहस्रकुण्डीय यज्ञ की घोषणा की तो सभी इसको सुनकर अचंभित थे कि इतने बड़े आयोजन की व्यवस्था कैसे होगी और साधन कैसे आयेंगे। इतने लोग कहाँ से आएँगे। लोगों को तो यहाँ तक लगा कि आचार्य जी पगला गए हैं। उनके अति निकट मित्र सत्यभक्त जी ने मजाक में कहा-"खर्च की व्यवस्था तो है नहीं व आप कल्पनाएँ ऊँची गढ़ रहे हैं। इससे तो अच्छा होगा, हम एक हजार कुल्हड़ मँगा लें व उन्हीं में आहुति देकर इतिश्री कर लें" व्यंग्य तो था, पर उनने सहज मुसकराहट बिखेरते हुए कहा-"मैं ऐसा ही करता। पर क्या करूँ? मेरे पेट में एक चुहिया हमेशा कूदती-फाँदती रहती है। वही तरह-तरह की योजनाएँ बनाया करती है। वह मान नहीं रही है। तो यज्ञ तो अब होकर ही रहेगा। कुण्ड भी 1000 बनेंगे व संगठन बनाने के निमित्त व्यक्ति भी एक लाख से अधिक ही आयेंगे। कहीं से भी करूँ, पर उस चुहिया को तो दाना-पानी देना ही होगा।" सरलता से दिये गये इस उत्तर को संभवतः वे सज्जन तब नहीं समझ पाये। जब महायज्ञ सम्पन्न हो गया, लाखों व्यक्ति भाग लेने उसमें गये। वह सब दृश्य देखकर उनने बाद में आकर अपनी कही बात की क्षमा माँगी तो पूज्यवर ने उन्हें हृदय से लगा लिया। महापुरुषों के महत्त्वपूर्ण कार्यों को पहले भला कौन समझ पाता है?

निठल्ले लोग ही अक्सर दूसरे का वक्त बर्बाद करने जा पहुँचते हैं। इन्हें दोस्त नहीं दुश्मन मानना ही उचित है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गुरुदेव की हिमालय यात्रा

युगऋषि ने हिमालय स्थित ऋषि सत्ता के साथ अपने सघन संबंधों की घोषणा 1960-61 की एक वर्षीय हिमालय यात्रा से लौटने पर की थी। 1958 के यज्ञ के बाद तपोभूमि तथा अखण्ड ज्योति संस्थान की जिम्मेदारी वन्दनीया माताजी को सौंपकर वे घोषणापूर्वक एक वर्ष के लिए हिमालय गये थे। उसी यात्रा के प्रसंग इस आलेख में दिए गए हैं...



परमपूज्य गुरुदेव 1 जुलाई सन् 1960 को हिमालय अज्ञातवास पर प्रस्थान कर गये। वहीं दुर्गम हिमालय की कन्दराओं में बैठकर उन्होंने प्रकृति के साहचर्य की अनुभूतियों की, 'सुनसान के सहचर' नामक इस भावपूर्ण रचना में अभिव्यक्ति दी है। इस पुस्तक की भूमिका में वे लिखते हैं- ''इसे एक सौभाग्य, संयोग ही कहना चाहिए कि जीवन को आरम्भ से अन्त तक एक समर्थ सिद्ध-पुरुष के संरक्षण में गतिशील रहने का अवसर मिल गया। जहाँ उस महान मार्गदर्शक ने जो भी आदेश दिए, वे ऐसे थे, जिसमें इस अकिंचन जीवन की सफलता के साथ-साथ लोक-मंगल का महान् प्रयोजन भी जुड़ा रहा।''

''सन् 60 में एक वर्ष के लिए हिमालय तपश्चर्या के लिए प्रयाण हुआ। गंगोत्री में भगीरथ के तपस्थान पर और उत्तरकाशी में परशुराम तपस्थान पर यह एक वर्ष की साधना सम्पन्न हुई। भगीरथ की तपस्या गंगावतरण को और परशुराम की तपस्या दिग्विजयी महापरशु प्रस्तुत कर सकी है। नवनिर्माण के महान प्रयोजन में अपनी तपस्या के कुछ श्रद्धाबिन्दु काम आ सकें, तो वह उसे भी साधना की सफलता ही कहा जा सकेगा।''

उस एकवर्षीय तप-साधना के लिए गंगोत्री जाते समय मार्ग में अनेक विचार उठते रहे। जहाँ-जहाँ रहना हुआ, वहाँ-वहाँ भी अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति के अनुसार मन में भाव भरी हिलोरें उठती रहीं। लिखने का व्यसन रहने से उन प्रिय अनुभूतियों को लिखा भी जाता रहा। उनमें से कुछ ऐसी थीं, जिनका रसास्वादन दूसरे करें तो लाभ उठाएँ। उन्हें 'अखण्ड-ज्योति' में छपने भेज दिया गया। उन दिनों 'साधक की डायरी के पृष्ठ', 'सुनसान के सहचर' आदि शीर्षक से जो लेख 'अखण्ड-ज्योति' पत्रिका में छपे, वे लोगों को बहुत रुचे।

इस रहस्यमयी लोक की स्मृतियों को बताते हुये पूज्य गुरुदेव लिखते हैं कि तपोवन से आगे गंगा ग्लेसियर से सटे हुये गौरी सरोवर पहुँचकर वे अनजानी स्मृतियाँ में खोने लगे। ऐसा लगा जैसे वे यहाँ पहले भी कभी आ चुके हैं। रहस्य लोक हिमालय में जैसे किसी ने पर्दा हटा दिया, और एक विलक्षण दृश्य दिखाई पड़ा। संपूर्ण घाटी में 'वेदमंत्र' गूँज रहे हैं, यज्ञ धूम्र उठ रहा है। शास्त्रों एवं काव्य ग्रन्थों में वर्णित ऋषियों एवं देवताओं के दृश्य साकार हो उठे। पलक झपकते यह दृश्य मायावी सा लगा, आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। ऐसा भी नहीं कि स्वप्न देख रहे हों, जाँचने के लिये पीछे मुड़ कर देखा गौरी सरोवर में वैसी ही लहरे उठ रहीं थीं, पानी हिलोरे ले रहा था। मंत्र ध्वनि तब भी कानों में गूँज रही थी, नन्दन वन की ओर फिर मुड़े तो वैसा ही यज्ञ धूम्र उठ रहा था। हवन कुण्ड में अग्नि की ज्वालायें उठ रहीं थी। अभी वह सब समझने के लिये बुद्धि पर

हम अपनी आत्मा के ही सुख को संसार का सुख समझकर उनमें भटकते फिरते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

जोर डाल ही रहे थे कि एक सुदीर्घ दिगम्बर काया प्रगट होती दिखाई दी। दादा गुरु सामने उसी रूप में खड़े थे जैसे घर के पूजा घर में उन्हें देखा था। भक्ति पूर्ण प्रणाम किया, उत्तर में उनके होंठों पर मंद मुस्कान फैल गयी। मन में उठ रहे कौतूहल का निराकरण करते हुये वे बोले तुमने जो दृश्य देखा है-वह चेतना के चतुर्थ आयाम का है। देवात्मा हिमालय का वास्तविक और रहस्यात्मक सौंदर्य साधारण जन की आँखों से दूर है। इसे तो कोई विरले समर्थ साधक अथवा हिमालय वासी दिव्य सन्तों के कृपापात्र ही देख पाते हैं।

अगले दिन पूज्य गुरुदेव अपने जन्म जन्मान्तर के गुरु मार्गदर्शक सत्ता के साथ दृश्य हिमालय के रहस्यों का दिग्दर्शन करते हुये आकाश मार्ग से जा रहे थे। उनका शरीर धरती के ऊपर था। इस दिन वे उन गुफाओं तक पहुँचे जो सिद्धपुरुषों की तपस्थली थीं। अब तक ये ऋषिगण सूक्ष्म शरीरों में थे, हालांकि कुछ ने अपने स्थूल शरीर भी बनाये रखे थे। इन साधनारत दिव्यात्माओं में कुछ महाभारत काल के थे।

किसी से भी बैखरी वाणी में बातचीत नहीं हुई। जो भी बात हुई सिर्फ परावाणी में। जिनका सानिध्य पर्याप्त समय तक सघनरूप में मिली, उनमें गर्गमुनि, ऋषि धौम्य, सन्त पुण्डलीक, बाबा नरहरिदास, जिवानन्द, सिद्धेश्वर गिरी, पवहारी बाबा एवं स्वामी कृष्णानन्द प्रमुख थे। परिचय क्रम में ज्ञात हुआ कि गोविन्दपाद भी वहीं हैं, जिन्होंने शंकराचार्य को समर्थ एवं योग्य बनाया था। सबसे अधिक स्थूल और घनीभूत सानिध्य स्वामी कृष्णानन्द से मिला जिन्होंने महामना मालवीय जी के आग्रह पर हिन्दू विश्वविद्यालय की आधारशिला रखी थी।

पूज्य गुरुदेव अपनी हिमालय की यात्राओं में जिन सात विशेष विभूतियों के सम्पर्क में आये, उनकी सृष्टि के सूक्ष्म-संचालन में अति महत्त्वपूर्ण भूमिका है। किसी प्रसंगवश बताया था कि जिस तरह विभिन्न राष्ट्रों का काम-काज राष्ट्रपति-प्रधानमंत्री एवं मंत्रिमंडल के सदस्य मिल-जुलकर चलाते हैं, उसी तरह सूक्ष्मजगत् की भी एक सुचारू व्यवस्था है। यह कार्य सात ऋषिकल्प आत्माएँ करती हैं। इनका काम भगवान् एवं माँ-प्रकृति के कार्य में आवश्यक सहयोग देना है।

इन विशिष्ट दिव्य सन्तों का कार्य कुछ वैसा ही है, जैसी की चर्चा पौराणिक कथाओं में सप्तऋषियों के संदर्भ में की गयी है। इन में से एक है साउथ मारिया, यह महिला अद्भुत तपस्वी हैं, अपनी तपस्या के कारण इन्हें हिमालय के दिव्यसन्तों के बीच श्रद्धास्पद सम्मान प्राप्त है। सूक्ष्म व्यवस्था के विशिष्ट घटकों में अन्य दिव्य सन्त हैं- अपने दादा गुरुदेव स्वामी सर्वेश्वरानंदजी, इनका कृशकाय शरीर अग्नि की प्रदीप्त ज्वाला की भाँति आभा बिखेरता है। इसके अलावा अन्य विभूति हैं, लाहिड़ी महाशय, जिन्होंने क्रियायोग का प्रवर्तन किया।

मोहन साई इस दिव्यमंडल के अन्य घटक हैं, जो सतत तप करते हुये अपनी ऊर्जा से जगत् को अनुप्राणित करते रहते हैं। इसके अलावा हातोसाना और अशोक गिरी हैं। ये छहों दिव्य आत्माएँ प्रकृति की अधीश्वरी शक्ति की सहायक हैं। यह अधीश्वरी शक्ति ही सातवें ऋषि की भूमिका संपन्न करती हैं। ये सभी सात आत्माएँ इन दिनों भगवान् 'प्रज्ञावतार' की सूक्ष्म व्यवस्था के महत्त्वपूर्ण घटक हैं।

गुरुदेव के अनुसार इन सातों के सम्मिलित का स्थान स्थूल दृष्टि से बद्रीनाथ से केदारनाथ जाने का जो दुर्गम पगडण्डी मार्ग है, प्राय: 20 हजार फीट की ऊँचाई पर है, उससे एकदम नीचे बीच में सप्त गुफाओं वाला क्षेत्र पड़ता है। सामान्य क्रम में किसी मनुष्य का वहाँ पहुँचना मुश्किल है। पहुँचने पर भी ये गुफाएँ तो देखी जा सकती हैं, लेकिन वहाँ की इन शक्तियों को देख पाना सम्भव नहीं। यथार्थ अवलोकन तो उसी के द्वारा संभव है, जिसकी चेतना चतुर्थ आयाम को देख पाने में समर्थ है। गुरुदेव के अनुसार यथार्थ हिमालय का रहस्यबोध व्यक्ति को इसी आयाम में जाकर मिल सकता है।

हिमालय की दिव्यसत्ताओं के साथ गुरुदेव के अनेकों रहस्यमय प्रसंग हैं, हो भी क्यों न, आखिर वे भी तो इसी परिवार के सदस्य हैं। उन्होंने अपने शरीर छोड़ने से पहले वर्ष 1984 में कहा था कि अपने पाँच सूक्ष्म शरीर में एक हिमालय में अनवरत तप करेगा। उनकी यह तप-प्रक्रिया आज भी मन्द नहीं पड़ी है। जिनके पास दिव्य दृष्टि है,

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

वे आज भी देख सकते हैं कि अपने सूक्ष्म शरीर से आप भी हिमालय की दिव्य सत्ताओं एवं सन्तों के संग नवयुग के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका संपन्न कर रहे हैं। पूज्य गुरुदेव ने कहा कि लोग आध्यात्मिक ऊर्जा प्राप्त करने के लिये हिमालय के जागृत केन्द्रों तक नहीं पहुँच सकते, जब कि उसकी आवश्यकता सब को है। अस्तु, उन्होंने शांतिकुंज में देवात्मा-हिमालय का मंदिर बनाकर उसमें प्राणप्रतिष्ठा का निर्णय लिया; ताकि सुपात्रों को वहाँ से भी हिमालय के दिव्य प्रवाहों का लाभ प्राप्त हो सकें। अत: उनकी स्मृति में एक विशाल गुम्बद के अंदर हिमालय की भव्य प्रतिमा स्थापित करके प्रकाश एवं ध्वनि यंत्रों द्वारा उसकी महत्ता समझाने तथा ध्यान द्वारा दिव्य प्रवाहों को आत्मसात् करने की व्यवस्था बनायी गयी है। इस दिव्य स्थापना को देखने एवं उसके दिव्य प्रवाहों को आत्मसात् करने हेतु आत्मिक इच्छा रखने वाले जब कभी हरिद्वार पहुचें तो इस हिमालय क्षेत्र में अवश्य बैठें। वे अनुभव करेंगे कि वहाँ पूज्य गुरुदेव की प्राणचेतना घनीभूत है तथा देवात्मा हिमालय से चलने वाला प्राण प्रवाह सतत मिलता है।

परम वन्दनीया माताजी की कलम से गुरुदेव का अज्ञातवास

सन् 60 के एक वर्ष वाले अज्ञातवास से जब गुरुदेव लौटे तो हम सब आश्चर्य चकित रह गये। उन दिनों हम लोगों का उनसे सीधा सम्पर्क भी था। आरम्भ के एक महीने ही वे हिमालय के हृदय 'चेतना के ध्रुव प्रदेश' में रहे थे। इसके बाद गंगोत्री, उत्तरकाशी ही उनके साधना-केन्द्र रहे। गंगोत्री में वे केवल पत्तियों पर रहे। खाद्य प्रबन्ध न हो सकने अथवा जो भी कारण हों, उन्हें पालक, बथुआ जैसी जंगली शाक-वनस्पतियों को उबालकर उसी पर निर्वाह करना पड़ा, आरम्भ में पतले दस्त होने लगे थे। पीछे वे पत्तियाँ जैसे-तैसे हजम होने लगी थीं।

उत्तरकाशी में वे शकरकन्द, गाजर जैसे शाक लेते थे। सप्ताह में एक दिन खिचड़ी आदि। दूध गंगोत्री में तो था ही नहीं, पर उत्तरकाशी में एक पाव प्रतिदिन का प्रबन्ध हो सका। सो कई बार में वनस्पतियों की चाय के रूप में काम आ जाता। घी, मेवे, फल आदि वे यहाँ भी कहाँ लेते हैं, वहाँ तो इन चीजों को छुआ तक नहीं। ऐसी दशा में यही आशंका की जा रही थी कि वे लौटेंगे तो बहुत दुबले होंगे। आशंका के विपरीत उनका वजन 18 पौण्ड बढ़ा हुआ था। चेहरे पर लालिमा लगी थी और झुर्रियाँ आधी से ज्यादा मिट गयी थीं। लोकाचार किसी के अच्छे स्वास्थ्य पर आश्चर्य प्रकट करने का नहीं है, सो आरम्भ में कुछ भी नहीं कहा गया, पर अवसर पाकर मैंने एक दिन इस सुधार का कारण पूछ ही लिया। उन्होंने उत्तर दिया "मात्र आहार पर ही शारीरिक स्वास्थ्य निर्भर नहीं रहता। जलवायु, मनःस्थिति और संयम-नियम पर भी बहुत हद तक अवलम्बित है। हिमालय का शीतप्रधान वातावरण, निरन्तर गंगाजल का उपयोग, हर काम में समय की नियमित व्यवस्था, भूख से कम खाने से पाचन सही होना, चित्त का दिव्यचिन्तन में निरत रहना, मानसिक विक्षोभ और उद्वेग का अवसर न आना, यह ऐसे आधार हैं, जिनका मूल्य पौष्टिक आहार से हजार गुना ज्यादा है। तपस्वी लोग सुविधा-साधनों का, आहार का अभाव रहने पर भी दीर्घजीवी, पुष्ट और सशक्त रहते हैं, उसका कारण उपर्युक्त है, जिसका महत्त्व आमतौर से नहीं समझा जाता।" हिमालय पिता की गोदी में जब भी वे गये, अपने शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य में अद्भुत अभिवृद्धि करके ही वापस आये। सूनेपन की हानिकारक प्रक्रिया बताते हुए वे अक्सर अपने स्वतंत्रता संग्राम के जेल-जीवन की वह बात सुनाया करते, जिसमें उन्हें एक मास की काल-कोठरी भुगतनी पड़ी थी, एक मास के सूनेपन ने उनके शरीरिक स्वास्थ्य एवं मानसिक सन्तुलन को बुरी तरह बिगाड़ दिया था। इसके विपरीत सन 60 से एक वर्ष के लिए वे हिमालय गये और सर्वथा एकाकी सघन वन प्रदेश में रहे तो आश्चर्यजनक मनोदशा लेकर आये।

सुख-दुःख वास्तव में परिस्थितिजन्य न होकर मनोजन्य ही होते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

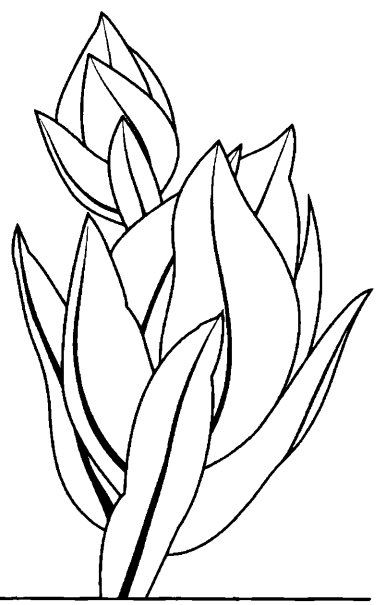
आचार्य जी का ऋषित्व

युगऋषि गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने हिमालय के अनेक ऋषियों के कार्य सम्पन्न किये। जिन ऋषियों, तप:पूत मानवों ने कभी हिमालय में रहकर विभिन्न कार्य किए थे, वे कार्य पूज्यवर ने न केवल किये; अपितु उनके सूक्ष्म मार्गदर्शन में वे कार्य अभी भी चल रहे हैं। उन्होंने भगीरथ (गंगोत्री), परशुराम(यमुनोत्री), चरक (केदारनाथ), व्यास (बद्रीनाथ), याज्ञवल्क्य (त्रियुगीनारायण) नारद (गुप्तकाशी), आद्य शंकराचार्य (ज्योतिर्मठ), जमदग्नि (उत्तरकाशी), पंतजली (रुद्रप्रयाग), वशिष्ठ (देवप्रयाग), पिप्पलाद, सूत शौनक, लक्ष्मण, भरत एवं शत्रुघ्न (ऋषिकेश), दक्ष प्रजापति, कणाद एवं विश्वामित्र सहित सभी सप्तर्षिगण के अतिरिक्त चैतन्य महाप्रभु, सन्त ज्ञानेश्वर एवं तुलसीदास के कार्यों की झाँकी दिखाई।

भगवान् बुद्ध के परिव्राजक, धर्मचक्र-प्रवर्तन अभियान को युगानुकूल परिस्थितियों में संगीत, संकीर्तन, प्रज्ञापुराण कथा के माध्यम से देश-विदेश में फैलाने एवं प्रज्ञावतार द्वारा बुद्धावतार का उत्तरार्ध कार्य पूरा किये जाने का भी कार्य किया। समर्थ गुरु रामदास द्वारा जिस सदी में हनुमान मंदिरों की स्थापना की गई, उसी को नूतन अभिनव रूप में प्रज्ञा-संस्थानों, प्रज्ञापीठों, चरणपीठों, ज्ञानमन्दिरों, स्वाध्याय मंडलों द्वारा युगऋषि ने सम्पन्न कराया। भगवान् राम ने लंकाविजय और रामराज्य स्थापना के निमित्त मंगलाचरण रूप में रामेश्वरम् पर शिव-प्रतीक की स्थापना की थी; उसी प्रकार पूज्यवर ने शांतिकुंज में देवात्मा हिमालय का भव्य मंदिर पाँचों प्रयागों, पाँचों काशियों, पाँचों सरिताओं और पाँचों सरोवरों के रूप में स्थापित किया। इसमें सभी ऋषियों की स्थापनाओं के दिव्य दर्शन हैं। **जमदग्निपुत्र परशुराम** के फरसे ने अनेक उद्धत उच्छृंखलों के सिर काटे थे। यह वर्णन अलंकारिक है। उन्होंने जो तत्कालीन समाज के निर्माण में बाधक व अनीति में लिप्त थे, उनकी वृत्तियों का उन्मूलन किया। दुष्ट और भ्रष्ट जनमानस के प्रवाह को उलटकर सीधा करने का पुरुषार्थ उन्होंने किया। 'परशु' (फरसा) फेंककर फावड़ा थामा एवं स्थूल वृक्षारोपण तथा सूक्ष्मत: रचनात्मक सत्प्रवृत्तियों का बीजारोपण किया। गुरुदेव की लेखनी, वाणी ने उसी परशु की भूमिका निभाई एवं असंख्य मान्यताओं, भावनाओं, विचारणाओं एवं गतिविधियों में आमूलचूल परिवर्तन कर दिया।

भगीरथ ने जल-दुर्भिक्ष के निवारण हेतु कठोर तप करके स्वर्ग से गंगा को धरती पर लाने में सफलता प्राप्त की थी। भगीरथ शिला गंगोत्री के समीपस्थ है। गंगा उन्हीं के तप पुरुषार्थ से अवतरित हुई, इसलिए भागीरथी कहलाई। लोकमंगल के प्रयोजन हेतु प्रचण्ड पुरुषार्थ

ऋषि परंपरा का बीजारोपण हो, यह हिमालय की ऋषि सत्ताओं की आचार्य श्री से अपेक्षा थी। हिमालयवासी सूक्ष्मशरीर धारी गुरुजनों ने जैसा बताया, वैसा अपना जीवन उनने बनाया एवं वैसी ही परम्पराएँ स्थापित कीं, जो अभी अनवरत चल रही हैं...



श्रद्धा का अर्थ है- श्रेष्ठता के प्रति अटूट आस्था।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

करके भगीरथ दैवी कसौटी पर खरे उतरे एवं भगवान् शिव के कृपापात्र बने। गुरुदेव ने बौद्धिक और भावनात्मक अकाल निवारणार्थ शान्तिकुंज से ज्ञानगंगा का जो अविरल प्रवाह प्रवाहित किया है, उससे दुर्भिक्ष मिटने और सद्भावना का विस्तार होते सहज दिखाई दे रहा है।

चरक ने केदारनाथ क्षेत्र के दुर्गम क्षेत्रों में वनौषधियों की शोध करके रोगग्रस्तों को निरोग करने वाली संजीवनी खोज निकाली थी। शास्त्र का कथन है कि ऋषि चरक, औषधियों से वार्ता करके गुण पूछते व समुचित समय में उन्हें उत्पन्न कर उन पर अनुसंधान करते थे।

जीवनी-शक्ति-संवर्धन, मनोविकार-शमन एवं व्यावहारिक गुण, कर्म, स्वभाव में परिवर्तन करने वाले गुण रखने वाली अनेक औषधियाँ इसी अनुसंधान की देन हैं। गुरुदेव ने उसी परम्परा को शांतिकुंज में दुर्लभ औषधियों को खोज निकालने, उनके गुण, प्रभाव को आधुनिक वैज्ञानिक यंत्रों से जाँचने का प्रयोग किया, जिसके माध्यम से आयुर्वेद को एक प्रकार से पुनर्जीवित किया, सही औषधि के एकाकी प्रयोग से कैसे निरोग रहकर दीर्घायु बना जा सकता है, यह अनुसंधान इस ऋषि-परम्परा के पुनर्जीवन हेतु किए जा रहे प्रयासों की एक कड़ी है।

महर्षि व्यास ने नर एवं नारायण पर्वतों के मध्य वसोधारा जलप्रपात के समीप व्यास गुफा में गणेश जी की सहायता से पुराणलेखन का कार्य किया था। उच्चस्तरीय कार्य शान्ति, एकान्त और सतोगुणी वातावरण में सम्भव था। आज की परिस्थितियों में, जबकि प्रेरणादायी साहित्य का अभाव है, पुरातन ग्रंथ लुप्त हो चले थे, आचार्यश्री ने आज से लगभग साठ वर्ष पूर्व ही चारों वेद, अठारह पुराण, 108 उपनिषद्, छहों दर्शन, चौबीस गीताएँ, आरण्यक, ब्राह्मण आदि ग्रन्थों का भाष्य कर सर्वसाधारण के लिए सुलभ कर दिये थे। उन्होंने जनसाधारण की समस्याओं पर व्यावहारिक समाधानपरक युगानुकूल साहित्य लिखा, जिसने लाखों व्यक्तियों के मन-मस्तिष्क को प्रभावित कर सही दिशा दी है। प्रज्ञापुराण के 4 खण्ड, उनका नवीनतम सृजन है, जिसमें कथा-साहित्य के माध्यम से उपनिषद्-दर्शन को जन-सुलभ बनाया है।

पतंजली ने रूद्रप्रयाग में अलकनंदा एवं मंदाकिनी के संगम-स्थल पर योग-विज्ञान के विभिन्न प्रयोगों का अविष्कार कर लोकजीवन में इसे प्रचलित किया था। उन्होंने प्रमाणित किया कि मानवी काया में ऊर्जा का भण्डार निहित है। इस शरीरतन्त्र के ऊर्जा केन्द्रों को प्रसुप्ति से जागृति में लाकर मनुष्य देवमानव बन सकता है, ऋद्धि-सिद्धि सम्पन्न बन सकता है। युगऋषि द्वारा स्थापित शान्तिकुंज एवं वर्तमान में देव संस्कृति विश्वविद्यालय में योग-साधना के विभिन्न अनुशासनों-योगत्रयी, कायाकल्प एवं आसन-प्राणायाम के माध्यम से इस मार्ग पर चलने वाले जिज्ञासु साधकों की बहुमूल्य यन्त्र-उपकरणों से शारीरिक-मानसिक परीक्षण सुयोग्य चिकित्सकों से कराने के उपरान्त साधना-लाभ दिया जाता है एवं भावी जीवन सम्बन्धी दिशा प्रदान की जाती है।

याज्ञवल्क्य ने त्रियुगी-नारायण में यज्ञविद्या का अन्वेषण किया था और भेद-उपभेदों का परिणाम मनुष्य एवं समग्र जीव-जगत् के स्वास्थ्य-संवर्द्धन हेतु, वातावरण-शोधन, वनस्पति संवर्द्धन, एवं पर्जन्यवर्षण के रूप में जाँचा-परखा था। हिमालय के इस दुर्गम स्थान पर सम्प्रति एक यज्ञकुण्ड में अखण्ड अग्नि है, जिसे शिव-पार्वती विवाह के समय से प्रज्वलित माना जाता है। यह प्रायः उस परम्परा की अग्निशिखा है। ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान के माध्यम से युगऋषि ने यज्ञविज्ञान की शृंखला को फिर से खोजकर समय के अनुरूप अन्वेषण किया। यज्ञोपचार पद्धति (यज्ञोपैथी) के अनुसंधान हेतु समय के अनुरूप एक सर्वांगपूर्ण प्रयोगशाला आधुनिक उपकरणों से युक्त ब्रह्मवर्चस प्रांगण के मध्य विद्यमान है। वनौषधि यजन से शारीरिक, मानसिक रोगों के उपचार, मनोविकार-शमन, जीवनी शक्तिवर्द्धन, प्राणवान्-पर्जन्य की वर्षा एवं पर्यावरण संतुलन जैसे प्रयोगों के निष्कर्ष देखकर जिज्ञासुओं को आश्चर्यचकित रह जाना पड़ता है। **विश्वामित्र** गायत्री महामंत्र के द्रष्टा थे और नूतन सृष्टि हेतु तप करके आद्यशक्ति का साक्षात्कार उनने किया था जहाँ, वह पावनभूमि यही गायत्री तीर्थ शान्तिकुंज ही है, जिसे सूक्ष्म ऋषि-सत्ताओं ने गुरुदेव को दिव्य चक्षु प्रदान करके दर्शन

परमात्मा के प्रति अत्यन्त उदारतापूर्वक आत्मभावना पैदा होती है वही श्रद्धा है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

कराया था एवं आश्रम-निर्माण हेतु प्रेरित किया था। विश्वामित्र की सृजन साधना के सूक्ष्म संस्कार यहाँ सघन हैं, महाप्रज्ञा को युगशक्ति का रूप देने, उनकी चौबीस मूर्तियों की स्थापना कर सारे राष्ट्र एवं विश्व में आद्यशक्ति का 'वसुधैव कुटुम्बकम्' एवं सद्बुद्धि की प्रेरणा देने वाला संदेश यहीं से उद्घोषित हुआ। अनेक साधकों ने यहाँ अगणित गायत्री अनुष्ठान किये हैं एवं आत्मिक-क्षेत्र में सफलता प्राप्त की है। शब्द-शक्ति एवं सावित्री विद्या पर वैज्ञानिक अनुसंधान विश्वामित्र परम्परा का ही पुनर्जीवन है।

जमदग्नि का गुरुकुल आरण्यक उत्तरकाशी में स्थित था। बालकों, वानप्रस्थों की समग्र शिक्षा-व्यवस्था का भाण्डागार था। इसी परम्परा का निर्वाह करते हुए अल्पकालीन साधना, प्रायश्चित, संस्कार आदि कराने एवं प्रौढ़ों के शिक्षण की यहाँ समुचित व्यवस्था बनाई। परिव्राजकों हेतु लोकसेवियों का शिक्षण, गुरुकुल में बालकों को नैतिक शिक्षण तथा युगशिल्पी सत्रों में इस ऋषि परम्परा को आगे बढ़ाने वाला समाज निर्माण का समग्र शिक्षण शान्तिकुञ्ज द्वारा दिया जा रहा है। **देवर्षि नारद** ने गुप्तकाशी में तपस्या की। वे निरंतर अपने वीणावादन से जन-जागरण में रत रहते थे। उन्होंने सत्परामर्श द्वारा भक्ति-भावनाओं को प्रसुप्ति से प्रौढ़ता तक समुन्नत किया। शांतिकुंज के युगगायन शिक्षण विद्यालय के माध्यम से पूज्यवर ने अब तक लाखों ऐसे परिव्राजक प्रशिक्षित किए हैं। वे एकाकी अपने-अपने क्षेत्रों में समूह में विभिन्न टोलियों द्वारा भ्रमण कर नारद परम्परा का ही अनुकरण कर रहे हैं।

देवप्रयाग में राम को **योगवासिष्ठ** का उपदेश देने वाले वसिष्ठ ऋषि धर्म और राजनीति का समन्वय करके चलते थे। शान्तिकुंज के सूत्रधार गुरुदेव ने सन् 1930 से सन् 1947 तक आजादी की लड़ाई लड़ी है। जेल में कठोर यातनाएँ सही हैं। बाद में साहित्य के माध्यम से समाज एवं राष्ट्र का मार्गदर्शन किया है। धर्म और राजनीति के समन्वय-साहचर्य के लिए जो बन पड़ा है, उसे पूरे मनोयोग से करते रहे। **आद्य शंकराचार्य** ने ज्योतिर्मठ में तप किया एवं देश के चार कोनों में चार पीठों की स्थापना की। विभिन्न संस्कृतियों का समन्वय एवं धार्मिक-संस्थानों के माध्यम से शान्तिकुंज के तत्त्वावधान में देश भर में 4000 एवं विदेश में 24 गायत्री शक्तिपीठें विनिर्मित हुई हैं, जहाँ से धर्मधारणा को समुन्नत करने का कार्य निरन्तर चलता रहता है। इसके अतिरिक्त, चल प्रज्ञा-संस्थानों एवं स्वाध्याय-मण्डलों द्वारा सारे देश एवं विदेशों में चेतना केन्द्रों का जाल बिछाया गया है। ये सभी चार धामों की परम्परा में अपने-अपने क्षेत्रों में युग-चेतना का आलोक वितरण कर रहें हैं।

ऋषि पिप्पलाद ने ऋषिकेश के समीप ही अन्न के मन पर प्रभाव का अनुसंधान किया था। ये महाप्राज्ञ पीपल वृक्ष के कोपलों-फलों पर निर्वाह करके आत्म-संयम द्वारा ऋषित्व पा सके। आचार्यश्री ने 24 वर्ष तक जौ की रोटी एवं छाछ पर रहकर चौबीस गायत्री महापुरश्चरण सम्पन्न किए। तदुपरान्त, आजीवन सात्विक आहार, उबले अन्न शाक ही लेते रहे। अभी भी उबले अन्न एवं हरी वनस्पतियों के कल्प प्रयोगों की प्रतिक्रिया, जाँच-पड़ताल शान्तिकुंज में अमृताशन शोध के नाम से चलती है। पौराणिक काल में ऋषिकेश में ही सूत-शौनक परम्परा पुराणवाचन के ज्ञान-सत्र जगह-जगह लगे थे। प्रज्ञापुराणों का कथावाचन इतना लोकप्रिय हुआ है कि लोग इसे युगपुराण कहते हैं।

हर की पौड़ी, हरिद्वार में सर्वमेध यज्ञ में **राजा हर्षवर्धन** ने अपनी सारी सम्पदा तक्षशिला विश्वविद्यालय निर्माण हेतु दान कर दी थी। शान्तिकुंज के सूत्रधार गुरुदेव ने अपनी लाखों-करोड़ों रुपये की सम्पदा गायत्री तपोभूमि तथा जन्मभूमि में विद्यालय निर्माण हेतु दे दी। स्वयं या सन्तान के लिए इनमें से एक पैसा भी नहीं रखा। इसी परम्परा को अब शान्तिकुंज से स्थाई रूप से जुड़ते जा रहे लोकसेवी ही निभा रहे हैं, जिसके प्रभाव से ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान के साथ देव संस्कृति विश्वविद्यालय की संरचना इन दिनों दिखाई दे रही है। **कणाद ऋषि** ने अथर्ववेदीय शोध परम्परा के अन्तर्गत अपने समय में अणुविज्ञान का, वैज्ञानिक अध्यात्मवाद का अनुसंधान किया था। बुद्धिवादियों के गले उतारने के लिए समय के अनुरूप अब आप्तवचनों के साथ-साथ तर्क, तथ्य एवं प्रमाण भी अनिवार्य हैं। पूज्यवर के मार्गदर्शन एवं संरक्षण में स्थापित ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान एवं देव संस्कृति

समय की बरबादी का सबसे पहला शत्रु है, किसी काम को आगे के लिए टाल देना।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

विश्वविद्यालय में हो रहे दार्शनिक अनुसंधान ही नहीं, वैज्ञानिक प्रमाणों का प्रस्तुतीकरण भी इसकी सबसे बड़ी विशेषता है। इसकी उपलब्धियों के प्रति संसार बड़ी आशाएँ लगाए बैठा है। बुद्ध के परिव्राजक संसार भर में धर्मचक्र-प्रवर्तन हेतु दीक्षा लेकर निकले थे। शान्तिकुञ्ज को माध्यम बनाकर पूज्यवर ने अपने देश में ही नहीं, विदेशों में धर्मधारणा के विस्तार हेतु संसार के सभी देशों में देव-संस्कृति का सन्देश पहुँचाने हेतु परिव्राजक दीक्षित किए। यहाँ आने वाले परिजनों को धर्मचेतना से अनुप्राणित किया जाता है। भारत में प्राय: एक लाख एवं विदेशों में एक हजार प्रज्ञापुत्र प्रव्रज्या में निरत रहकर घर-घर अलख जगाने का कार्य कर रहे हैं।

आर्यभट्ट ने सौर-मण्डल के ग्रह-उपग्रहों का ग्रह-गणित करके यह जाना था कि पृथ्वी के साथ सौर परिवार का क्या आदान-प्रदान क्रम है और इस आधार पर धरित्री का वातावरण एवं प्राणी समुदाय कैसे प्रभावित होता है? पूज्यवर के मार्गदर्शन में शान्तिकुंज, देव-संस्कृति विश्वविद्यालय में एक समग्र वेधशाला बनाई गई है। आधुनिक यन्त्रों का उसके साथ समन्वय स्थापित कर ज्योतिर्विज्ञान का अनुसन्धान कार्य किया जा रहा है। दृश्य गणित पंचाङ्ग यहाँ की एक अनोखी देन है। इसके अतिरिक्त चैतन्य महाप्रभु, सन्त ज्ञानेश्वर, समर्थ गुरु रामदास, प्राणनाथ, रामकृष्ण परमहंस आदि सभी मध्यकालीन सन्तों की धर्मधारणा विस्तार परम्परा का पुनर्जीवन पूज्यवर ने शांतिकुंज के माध्यम से किया है। पूज्यवर एवं परम वंदनीया माताजी की सूक्ष्म उपस्थिति में सबसे महत्त्वपूर्ण प्रसंग यह है कि इस आश्रम का वातावरण इतने प्रबल संस्कारों से युक्त है कि सहज ही व्यक्ति अध्यात्म की ओर प्रेरित होता चला जाता है। यह सूक्ष्म सत्ताधारी ऋषियों की यहाँ उपस्थिति की ही परिणति है। वे अपने द्वारा सम्पन्न क्रियाओं का यह पुनर्जीवन देखते होंगे, जो निश्चय ही प्रसन्न होकर भावभरा आशीर्वाद देते होंगे।

ऋषियों के तप:प्रताप से ही यह धरती देवमानवों से धन्य हुई है। वाल्मीकि आश्रम में लवकुश, कण्व आश्रम में चक्रवर्ती भरत विकसित हुए। कृष्ण-रुक्मिणी ने बद्रीनारायण में तप करके कृष्ण सदृश प्रद्युम्न को जन्म दिया। पवन एवं अंजनी ने तपस्वी पूषा के आश्रम में बजरंगबली को जन्म दिया। यह हिमालय क्षेत्र में बन पड़ी तप:साधना के ही चमत्कारी वरदान थे। पूज्यवर प्रज्ञापुत्रों को, जाग्रतात्माओं को युग-परिवर्तन में रीछ-वानरों की, ग्वाल-बालों की भूमिका निभाने की क्षमता अर्जित करने के लिए शिक्षण पाने या साधना करने के निमित्त बहुधा शान्तिकुंज बुलाते रहे हैं। इस क्षेत्र की अपनी विशेषता है। गंगा की गोद, हिमालय की छाया, प्राणचेतना से भरा-पूरा वातावरण एवं दिव्य संरक्षण यहाँ उपलब्ध है। इसमें थोड़े समय भी निवास करने वाले अपने में काया-कल्प जैसा परिवर्तन हुआ अनुभव करते हैं। उन्हें लगता है कि वस्तुत: किसी जाग्रत् तीर्थ में निवास करके कुछ अभिनव करके वे लौट रहे हैं। यह एक प्रकार का आध्यात्मिक सैनिटोरियम है।

85 वर्षों से जल रहा अखण्ड दीपक, नौ कुण्डों की यज्ञशाला में नित्य दो घण्टे हवन, दोनों नवरात्रियों में 24-24 लक्ष के गायत्री महापुरश्चरण, साधना-आरण्यक में नित्य गायत्री उपासकों द्वारा नियमित अनुष्ठान, नित्य प्राय: 24 लाख का गायत्री जप, इन सब बातों से ऐसा दिव्य वातावरण यहाँ विनिर्मित होता है जैसे मलयागिरि में चन्दन वृक्षों की मनभावन सुगन्ध का। यहाँ अनायास साधना में मन लगता है और साधना में आनन्द आता है, मानो यह समय तप-साधना में बीता।

शान्तिकुंज गायत्री तीर्थ की विशेषता यहाँ सतत दिव्य अनुभूति होने की है। इन पंक्तियों में गुरुदेव के स्थूल एवं सूक्ष्म मार्गदर्शन में ऋषि-परम्परा की टूटी कड़ियों में से कुछ को जोड़ने का उल्लेख है।

एक दिन गुरुदेव ने ऋषि की परिभाषा देते हुए बताया कि बेटा जानते हो, ऋषि कौन होता है? ऋषि भगवान् का जनक होता है। समय पड़ने पर भगवान् को धरती पर आने के लिए बाध्य भी करता है और उसके अवतरण के लिए आधार भी बनता है। राम और कृष्ण जैसे अवतार ऋषि विश्वामित्र, संदीपनि की छत्र-छाया में पले-बढ़े थे।

समय के दुरुपयोग की भूल अपने भाग्य और भविष्य को ठुकराने- लतियाने की तरह है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

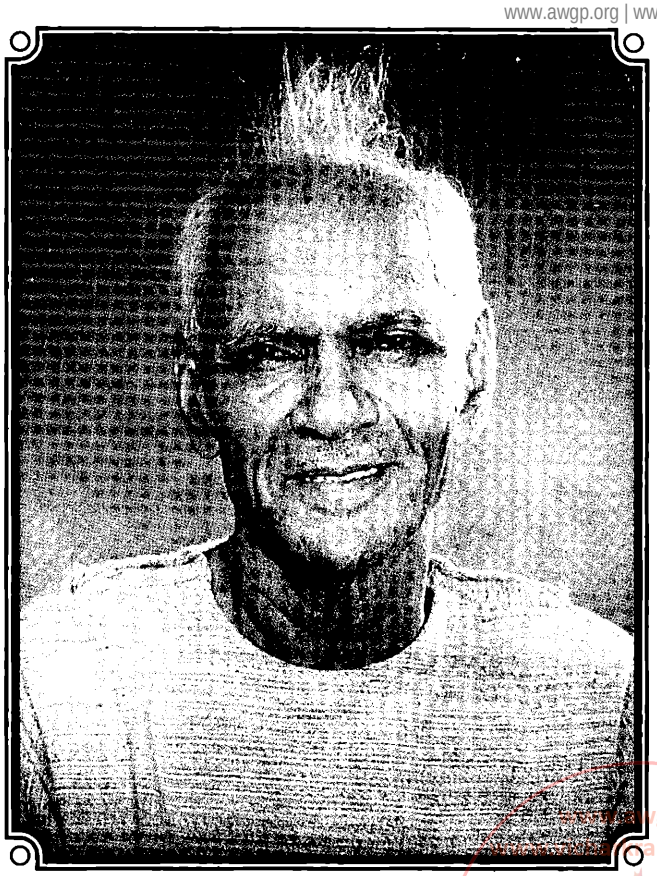
www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

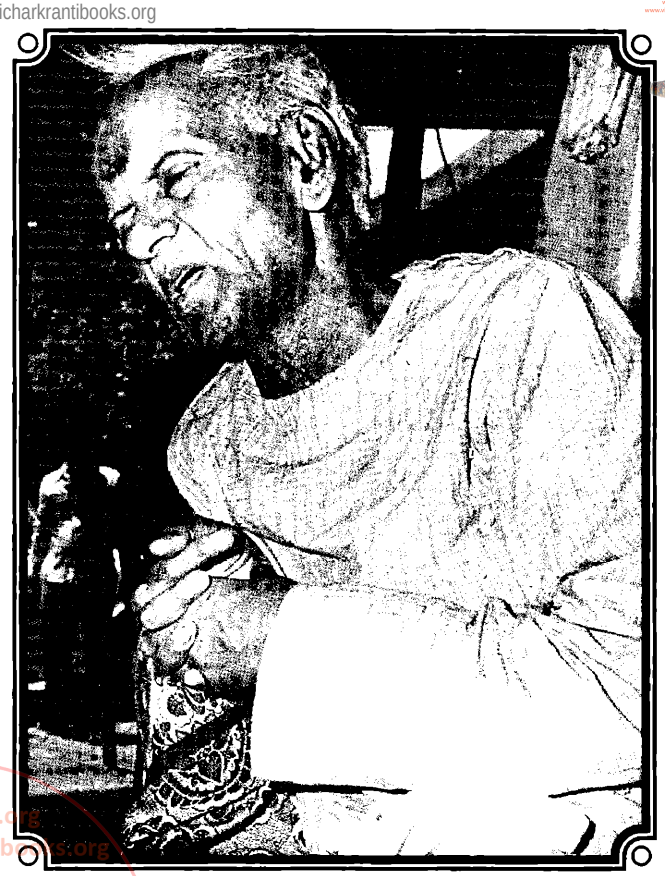




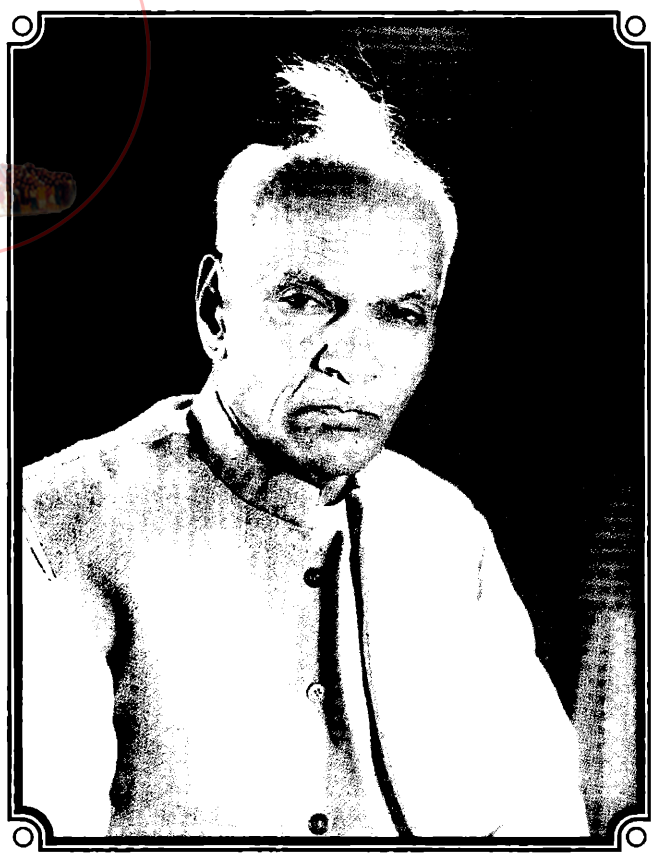
पहले एक, फिर पाँच, फिर चौबीस एवं फिर 108कुण्डी यज्ञों की शृंखला

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org









तप के धनी, ज्ञान के सागर, चिंतन के उद्‌गाता

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

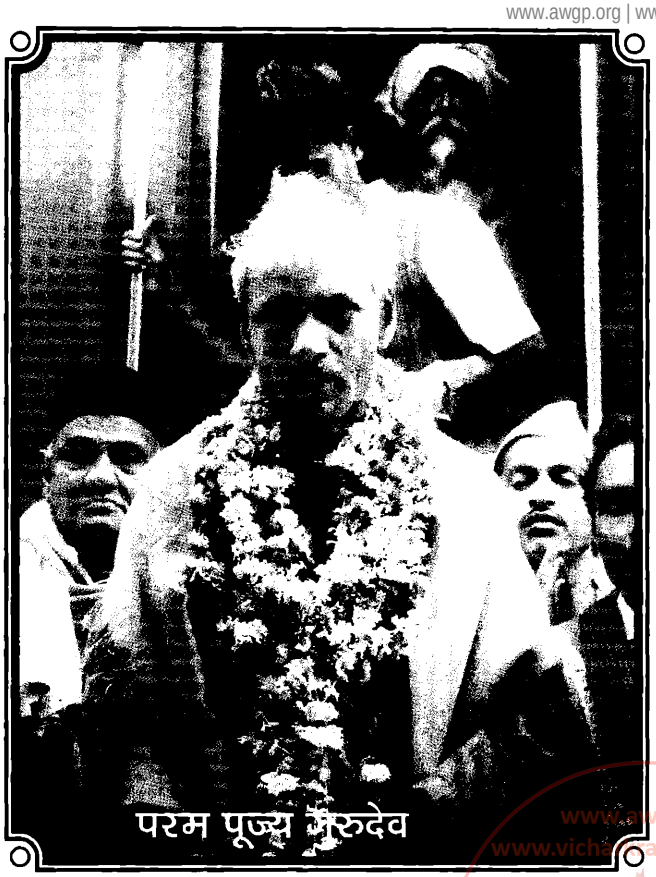






एक अभिभावक, एक पिता, एक संरक्षक

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



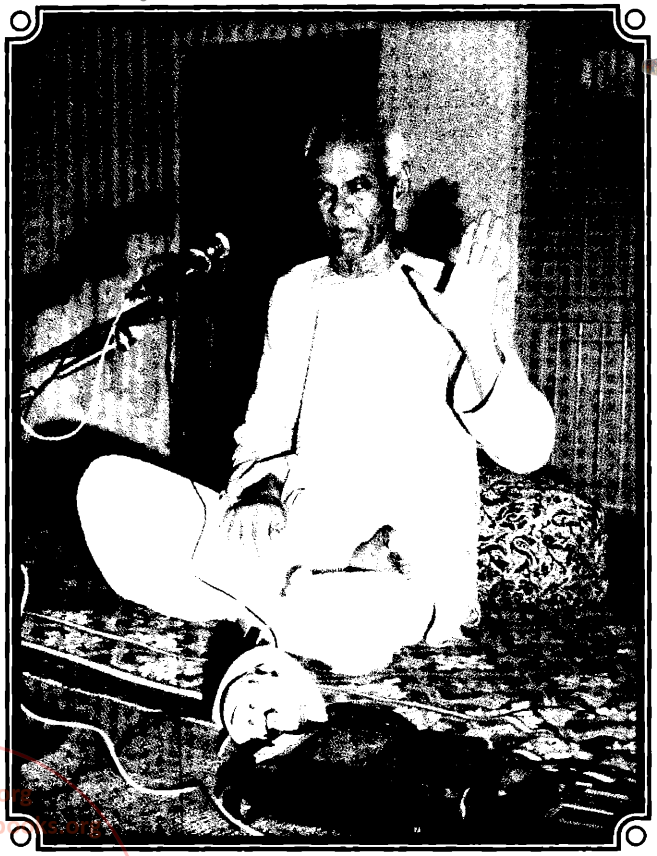


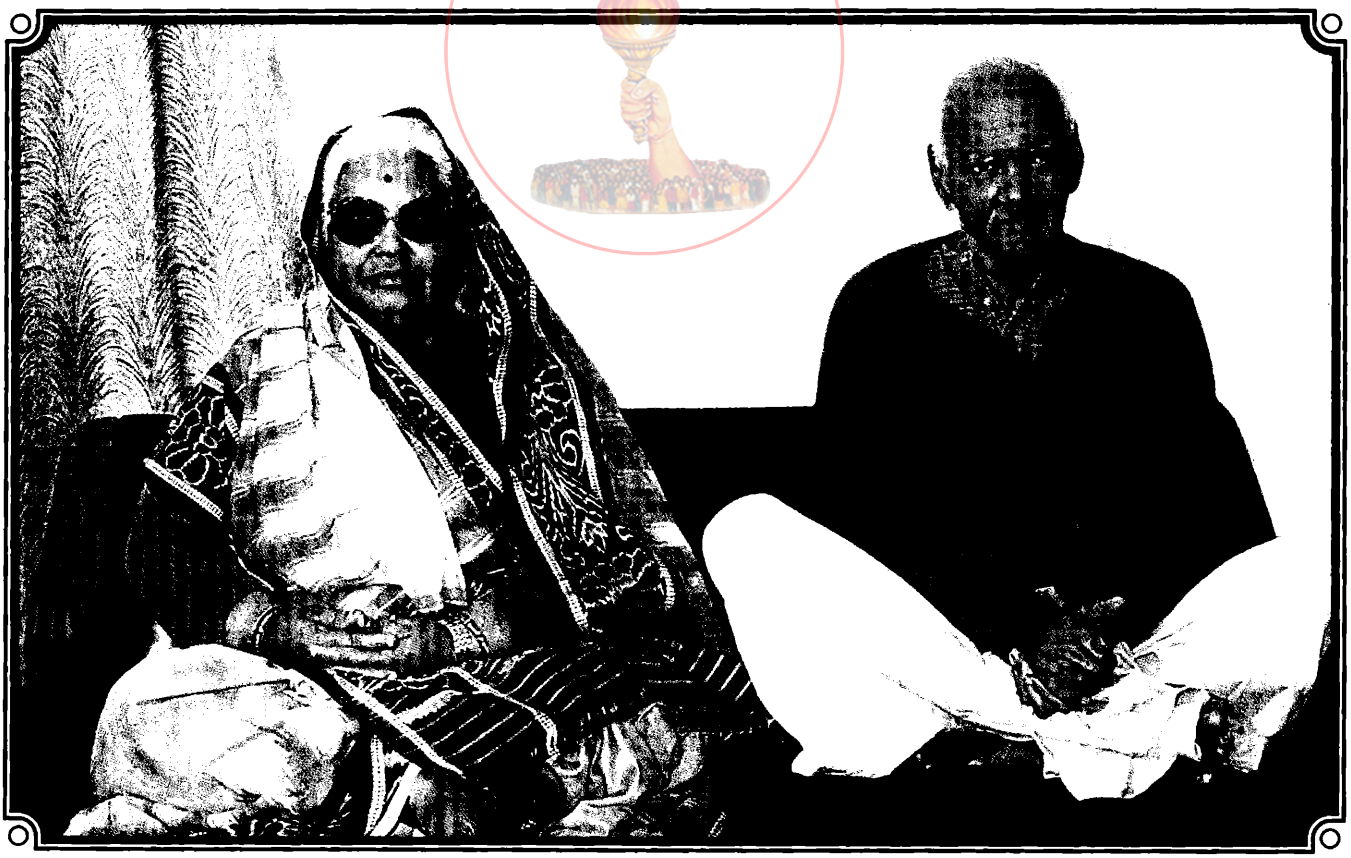


मातृसत्ता शिष्यजनों के साथ गायत्री तपोभूमि में परम पूज्य गुरुदेव

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org







दिया प्यार इतना कि अपना बनाया, उसी प्यार को मन मचलता रहेगा

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org





मेरी आग की तपन महसूस करके तो देखो

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org





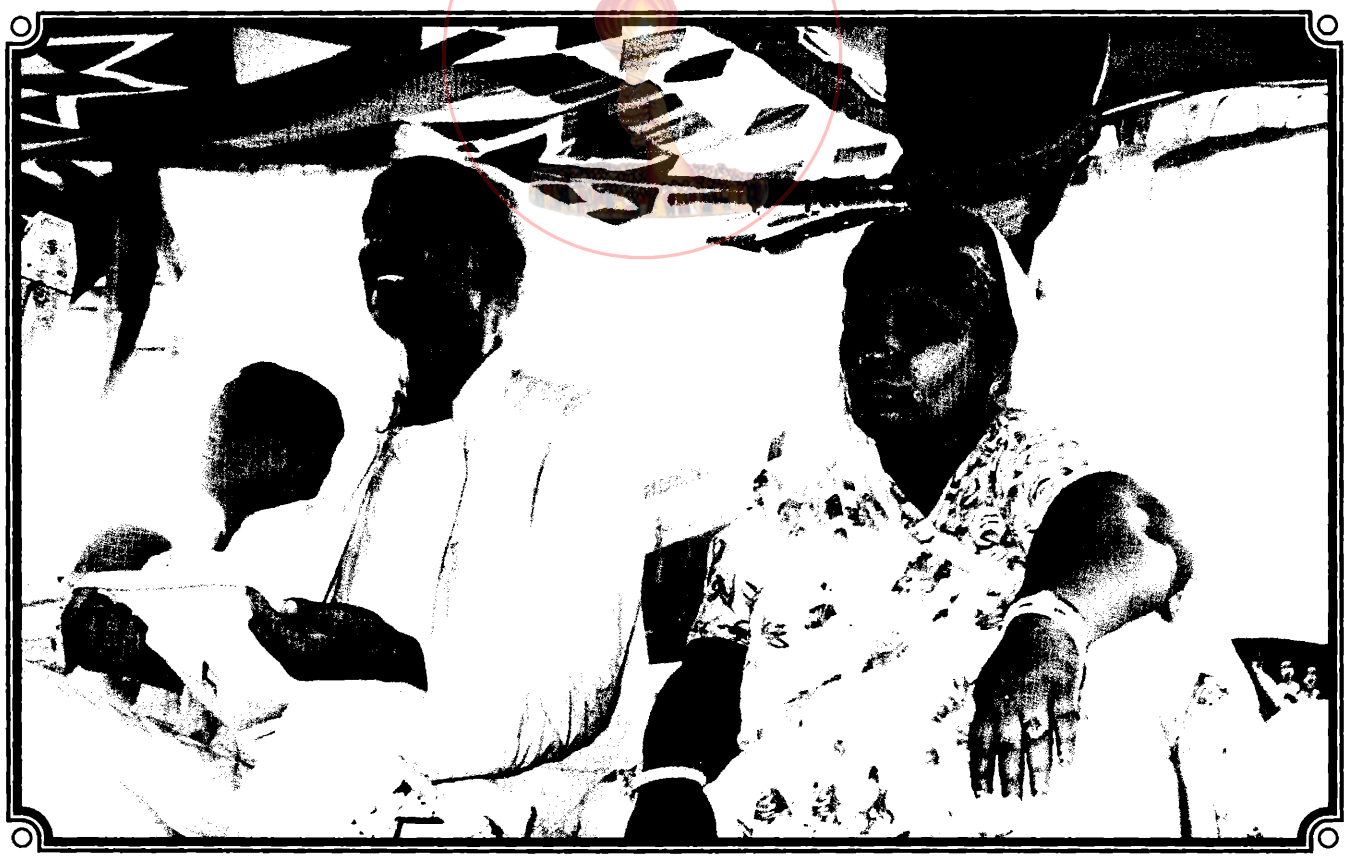


महाकाल की कालजयी सत्ता

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org





मेरी आवाज, मेरा स्वर तुम सदा अनुभव करोगे

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आदर्शों के नये मानदण्ड गढ़ती युगऋषि की पत्रकारिता

परमपूज्य गुरुदेव का जीवन खुले पृष्ठों की एक किताब के रूप में हम सबके समक्ष रहा है। अर्थ से लेकर समय एवं जिह्वा से लेकर विचारों के संयम का जो भी समग्र आदर्श रूप हो सकता है, वह उनके जीवन में देखने को मिला। प्रत्यक्ष जीवन से तो उन्होंने प्रेरणा दी ही, लेखनी से भी यही शिक्षण दिया। उनका व्यावहारिक अध्यात्म यही था।

उन्होंने पत्रकारिता की दृष्टि से अपनी लेखनी से समकालीन समाज को पूँजीवादी जटिलताओं से निजात दिलाने का भरोसा दिलाया। गरीबी में भी प्रसन्नतापूर्वक जीने की समझ एवं शक्ति विकसित की। विश्व के करोड़ों नर-नारियों को औसत नागरिक स्तर की जीवन-शैली अपनाने के लिए प्रतिबद्ध किया। वे गरीबी को गौरव मानते थे। उन्होंने लाखों नर-नारियों को जीवन में स्वेच्छा से गरीबी अपनाने तथा बचे संसाधनों को जरूरतमंदों के बीच बाँटने का व्रत दिलाया। यही उनका संघर्ष-रहित 'आध्यात्मिक साम्यवाद' है, संपूर्ण विश्व में जिसकी स्थापना करना उनका मूल लक्ष्य था।

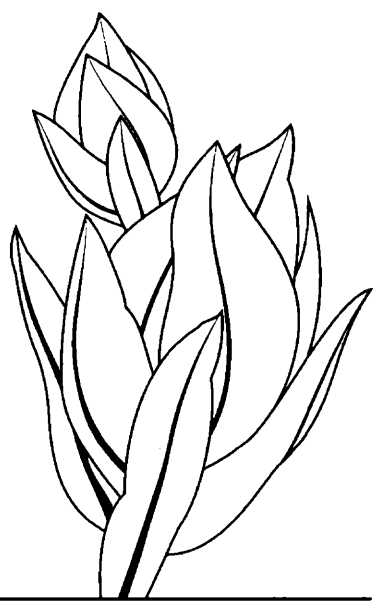
आचार्य जी की संपूर्ण पत्रकारिता समय की नब्ज पर टिकी थी और उन्होंने 'समय और समाज' के मध्य संतुलक की भूमिका निभाई। वे कहते थे ''पत्रकारिता धर्म का निर्वाह भी समाज-सेवा है और समाज-सेवा के क्षेत्र में सबसे बड़ा कार्य जनमानस का परिष्कार है। यदि जनता की वैचारिक भूख शांत न की गयी तो वह कुपथ्य ग्रहण करने को विवश होगी, अंतत: समाज को कुपथ्यगामिता का शिकार होते देर नहीं लगेगी।''

व्यक्ति उनकी पत्रकारिता का केन्द्र-बिन्दु था। वे बौद्धिक, नैतिक क्रांति के सहारे उसे आदर्श समाज का ऐसा आदर्श मानव बनाना चाहते थे, जो वैचारिक क्रांति का नेतृत्व कर सके। उनका दृढ़ मत था कि ''नवयुग यदि आयेगा, तो विचार-शोधन द्वारा ही। क्रांति होगी तो वह लहू और लोहे से नहीं, विचारों से विचारों की काट द्वारा होगी।''

आचार्य जी पत्रकारिता को मात्र वृत्ति नहीं, एक मनोदशा का दर्जा देते थे, जो अनौचित्य से जूझने और जन आवश्यकताओं को समझने की शक्ति से युक्त हो। उनकी मनोदशा भी कुछ ऐसी ही थी। एक स्थान पर वे लिखते हैं कि- ''हमें चैन नहीं, करुणा चाहिए, जो पीड़ितों की व्यथा को अपनी व्यथा समझने की अनुभूति करा सके, हमें समृद्धि नहीं, वह शक्ति चाहिए, जो आँखों से आँसू पोंछ सकने की अपनी सार्थकता सिद्ध कर सके।''

राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन हो या भारत-चीन युद्ध, भारत-पाक युद्ध अथवा

अपनी पत्रकारिता द्वारा विचार क्रांति का बीज बोने वाले आचार्य श्री एक सर्वोत्कृष्ट उदाहरण हैं, आज की पीढ़ी के लिए। आध्यात्मिकता भी बिना विज्ञापन के जन-जन के गले उतारी जा सकती है, उसकी एक मिसाल है, उनका यह कर्तृत्व...



बासी काम, बासी भोजन की तरह ही अरुचिकर हो जाया करता है। (समय का सदुपयोग, पृष्ठ-24)

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

1975 का आपात्काल, आचार्य जी प्रत्येक परिस्थिति में 'कलम के सिपाही' की भूमिका में खड़े दिखे और अपनी अनोखी शैली से राष्ट्र के नागरिकों को शिक्षण दिया। 1965 के भारत-पाक युद्ध के दौरान जहाँ देश के बहुतेरे समाचार पत्र-पत्रिकायें जनता को सरकारी सेंसर युक्त खबरें देकर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ रही थीं, वहीं आचार्य जी अपनी 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका के लेख-सम्पादकीय आदि के माध्यम से युद्ध समाचारों के अतिरिक्त राष्ट्रीय संकट की घड़ी में देश के नागरिकों को अन्य राष्ट्रीय उत्तरदायित्वों के प्रति भी जागरूक कर रहे थे।

अक्टूबर, 1965 की "वर्तमान युद्ध और हमारा कर्तव्य" शीर्षक सम्पादकीय के कुछ बिन्दु उदाहरण-स्वरूप देख सकते हैं, जिसमें वे दायित्व-बोध कराते हुए लिखते हैं कि "व्यापारियों का कर्तव्य है कि वे राष्ट्रीय संकट के समय मुनाफाखोरी, जमाखोरी, अतिलाभ, चोरबाजारी को पनपने न दें। न वस्तुओं के दाम बढ़ने दें। श्रमिकों का कर्तव्य है कि कारखानों-फैक्ट्रियों एवं उद्योगों का उत्पादन अधिकाधिक बढ़ायें। औद्योगिक झगड़े इन दिनों न बढ़ने दें। हड़ताल या तालाबंदी जैसे अवसर न आने दें। सर्वसाधारण को वस्तुओं का उपयोग कम से कम करना चाहिए; ताकि उस बचत से देश की अन्य आवश्यकताएँ पूर्ण हो सकें। ऐसे अवसरों पर अफवाहें अधिक फैलती हैं, जिससे देश का ध्यान बँटता है, अत: ऐसे तत्त्वों के प्रति सतर्क रहें। इन प्रयासों से हमारे सीमा पर लड़ रहे जवानों का मनोबल बढ़ेगा।"

आचार्य जी की पत्रकार निष्ठा एवं औचित्य के प्रति जूझने का जज्बा दर्शाती एक घटना पर हमारा स्वत: ध्यान जाता है। सन् 1984 में आचार्य जी ने अपने ऊपर हुए प्राणघातक हमले के दौरान हमलावर के चाकुओं के सभी आघातों को अपने बायें हाथ पर रोका तथा दाहिने हाथ को पूर्ण सुरक्षित बचाये रखा। चिकित्सकों एवं अन्य व्यक्तियों द्वारा इस आश्चर्य का खुलासा करने के आग्रह पर आचार्य जी ने बताया कि "एक पत्रकार के दाहिने हाथ पर उसके पाठकों का अधिकार होता है। यदि इस हाथ पर एक भी घाव लग जाता, तो हमारी पत्र-पत्रिकाओं का लेखन प्रभावित होता, परिणामत: वैचारिक पोषण के अभाव में पाठकों की वैचारिक संकल्पशीलता प्रभावित होती है, जो किसी पत्रकार के लिए असह्य है।"

निकटस्थजन बताते हैं कि आचार्य जी ने उस घायल अवस्था में भी अपने लेखन को विराम नहीं दिया।

उनका कहना था कि "मनुष्य में संवेदनशीलता जाग्रत् करके पूँजी के केन्द्रीकरण को रोका जा सकता है। यही आध्यात्मिकता का जागरण है।" इसी आधार पर उन्होंने जनमानस को संवेदना के सहारे स्वैच्छिक गरीबी-भरा जीवन जीने के लिए सहमत करने तथा बचे संसाधनों को जरूरतमंदों के बीच स्वेच्छा से वितरित कराने का स्वप्न देखा था।

एक लाख समर्पित पत्रकार चाहिए

वे कहते थे कि विश्व जिन समस्याओं से जूझ रहा है उनके निराकरण के लिए एक लाख वर्ष कार्य-दिवस की समर्पित कार्ययोजना की आवश्यकता पड़ेगी। इसमें गांधी, सुभाष, तिलक, राजा राममोहन राय, विवेकानन्द स्तर के एक लाख पत्रकार साथ मिलकर एक वर्ष तक समाज उत्थान के क्षेत्र में सक्रिय हों तभी विसंगति भरे समाज का कायाकल्प होगा। उन्होंने इसके विकल्प-स्वरूप पत्रकारों की नयी फौज खड़ी करने का अभियान छेड़ा और नारा दिया कि "तुम मुझे समयदान दो, हम तुम्हें उज्ज्वल भविष्य देंगे"। आचार्य जी की लेखनी से उपजा यह शंखनाद पत्रकारिता-जगत् का महत्त्वपूर्ण प्रयोग साबित हुआ। परिणामत: लाखों पाठकों ने आचार्य जी का विश्वास करके पत्रकारिता-क्षेत्र के इस अभिनव प्रयोग की सफलता हेतु नित्य एक घंटे से लेकर सप्ताह में एक दिन, वर्ष में तीन माह अथवा सम्पूर्ण जीवन भर का समय लोक-उत्थान हेतु समर्पित किया। आचार्य जी ने इन अंशकालिक समर्पित समयदानियों को लोक-उत्थान के कार्यों से जोड़ा और उन्हें 'युग-पत्रकार' का दर्जा प्रदान किया।

पत्रकारों की अपूर्व भूमिका के कारण विश्व भर में लड़े गये स्वतंत्रता आंदोलनों में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन एक अद्भुत प्रयोग था। आचार्य जी ने भी इसमें बढ़-चढ़ कर भूमिका निभायी,

समय प्रकृति का खजाना है। घण्टे और घड़ियाँ उसकी मजबूत तिजोरी हैं, क्षण उसके मूल्यवान हीरे हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

परन्तु वे स्वतंत्रता के बाद देश में नये प्रकार का स्वतंत्रता आंदोलन चलाने की आवश्यकता अनुभव करने लगे। वह था मनुष्य को हीन, मलिन वृत्तियों से स्वतंत्रता दिलाना, जिससे स्वानुशासित, स्वस्थ, स्वच्छ, स्वावलंबी भारत का निर्माण हो सके। वे इस आंदोलन का नेतृत्व पत्रकारों के द्वारा चाहते थे। यही नहीं, वह विश्व की समस्त समस्याओं का समाधान भी भारत के माध्यम से होते देखना चाहते थे।

बिना विज्ञापन चल रहा विस्तार : पत्रकारिता के प्रति आचार्य जी की तीव्र समर्पण-भावना का ही परिणाम था कि मात्र 20 प्रतियों से शुरू हुई आचार्य जी की 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका वर्तमान में देश-विदेश की अपनी सहयोगी 'युगनिर्माण योजना' 'जीवनयज्ञ योजना' मासिक, 'साप्ताहिक समाचार-पत्र' की आठ लाख प्रतियों एवं चालीस लाख पाठकों के बीच'' आध्यात्मिक मूल्यों के माध्यम से व्यक्ति-निर्माण, परिवार-निर्माण एवं समाज-निर्माण की संकल्पना का आगाज कर रही है। यह अभूतपूर्व विस्तार ''एक पाठक से पाँच तक एवं पाँच से पच्चीस पाठकों'' की श्रृंखला में बिना एजेन्ट मात्र पाठकों के भरोसे आज भी विस्तार पा रही है।

पत्रकारिता में विज्ञान को लेकर आचार्य जी की दृष्टि गाँधी जी के समान थी। गाँधी जी कहते थे कि ''पत्रिका में विज्ञापन का अर्थ है- समझौता और समझौता का अर्थ है- भ्रष्टाचार। गाँधी जी का हरिजन पत्र लम्बे जद्दोजहद के बावजूद विज्ञापन से न बच सका, परन्तु आचार्य जी की पत्र-पत्रिकाएँ आज भी उनके उत्तराधिकारियों के मार्गदर्शन में बिना विज्ञापन सफलतापूर्वक प्रकाशित हो रही हैं। इससे आचार्य जी की पत्रकारिता प्रबंधन नीति पर भी प्रकाश पड़ता है। 'सैनिक समाचार पत्र' से आचार्य जी का पत्रकारिता क्षेत्र में प्रवेश हुआ। स्वतंत्रता आंदोलन को बढ़ावा देने में आगरा जनपद से प्रकाशित होने वाले इस पत्र की अपनी ख्याति थी। द्वितीय गोलमेज सम्मेलन की विफलता के दौरान, सरकार ने देश भर में नेताओं का गिरफ्तारी अभियान चलाया, जिसमें पत्र के सम्पादक श्री कृष्णदत्त पालीवाल भी गिरफ्तार हो गये।

सैनिक कार्यालय पर सरकार ने ताला जड़ दिया। आचार्य जी ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को बाधित करने वाली इस सरकारी कार्यवाही को चुनौती रूप में लिया और पत्र के प्रकाशन को क्रमिक रखने की ठान ली। उन्होंने अपने अन्य साथियों के सहयोग से पोस्टरनुमा कागज पर सरकण्डे की कलम से बड़े-बड़े शीर्षक में जरूरी समाचार, सूचनाएँ लिखीं और रात में ही सैनिक समाचार पत्र की प्रतियाँ आगरा के मुख्य स्थानों पर चस्पा कर दीं। इस प्रकार ''दैनिक सैनिक पत्र का यह दीवार संस्करण'' जहाँ सरकार के लिए सिरदर्द था; वहीं आज भी पत्रकारिता जगत् के लिए प्रेरणास्रोत है।

आचार्य जी की पत्रकारिता से टीआरपी के लिए अस्तित्व को दाँव पर लगाने वाली आज की पत्रकारिता को सीख लेनी चाहिए। जनहित के उद्देश्यों की पूर्ति भी तभी संभव होगी। तब न तो संपादन का स्तर गिरेगा, न समाचार-प्रबंधन की आड़ में अन्य विज्ञापन का सहारा लेना पड़ेगा, तब सत्य के उद्घाटन के नाम पर पत्रकारिता ब्लैकमेलिंग की शिकार भी नहीं होगी और भारत देश को नयी शक्ति एवं युग को नयी अभिव्यक्ति मिल सकेगी। आचार्य जी ने अपनी पत्रकारिता द्वारा भारतीय जनमानस में जिस विचारक्रांति का बीज बोया है आज बहुआयामी परिवर्तन के रूप में फलित होते दिख रहे हैं। जरूरत है उनके पद-चिह्नों पर चलने और तद्नुसार कार्यशैली अपनाने की। ◈

संपादकीय विभाग के तीन महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के इस्तीफा दे देने के कारण सैनिक पत्र के बंद होने की नौबत आ पहुँची। इस संकट से निबटने की जिम्मेदारी पालीवाल जी ने उन दिनों मत्त जी के नाम से परिचित गुरुदेव को सौंपी। वह संपादन, प्रूफ रीडिंग के साथ, कंपोजिंग, छपाई एवं वितरण व्यवस्था में 20-23 घंटे काम करते थे। जो देखता वही दाँतों तले उँगली दबा लेता। सच है श्रम महामानव बनाने वाला कीमिया है।

जो कर्तव्य कल करना है, उसे आज ही कर देना अच्छा है, क्योंकि मृत्यु बड़ी निर्दय है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मैं प्रकाश की ख़ातिर पूरी रात चलूँगा

मुझे नहीं आता है, कोरे स्वप्न सजाना,
मैं अपने मन की देखी साकार करूँगा।

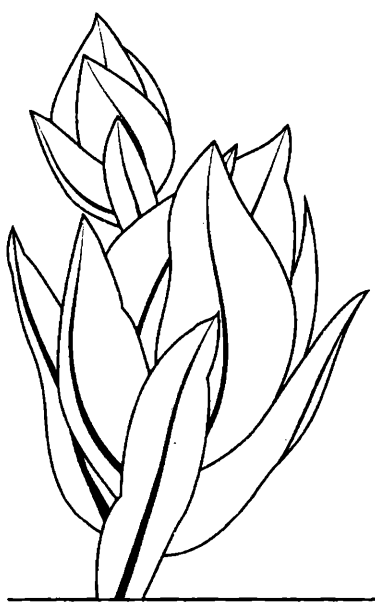
माना यह, हर एक कल्पना सत्य न होती,
हर अभिलाषा, पूरी हो पाती ही कब है?
सभी ओर अवरोध खड़े हैं, भाँति-भाँति के,
हर पगडंडी मंजिल तक, जाती ही कब है?
लेकिन मुझे न आता, आधे में रुक जाना,
निकल पड़ा हूँ तो, बाधायें पार करूँगा।

ऋतुएँ भी बदलेंगी, अपने-अपने क्रम से,
कभी मेघ गरजेंगे,सरिता इतरायेगी,
धूप कभी अपना शरीर ही झुलसायेगी,
लौट पुनः दिन वासन्ती वेला भी आयेगी,
मैंने कब सीखा है, पीड़ा से डर जाना,
अभिसंघातों से, जीवन शृंगार करूँगा।

मेरा रहा असंभव से आकर्षण गहरा,
चाँद-सितारों पर, मेरा मन ललचाता है,
जाने क्यों, घनघोर तिमिर की छाया में भी,
मुझको आशा दीप दूर से दिख जाता है,
मुझे नहीं आता, अँधियारे से घबराना,
मैं प्रकाश की ख़ातिर पूरी रात चलूँगा।

मुझे नहीं आता है, कोरे स्वप्न सजाना,
मैं अपने मन की, देखी साकार करूँगा।

-परमपूज्य गुरुदेव



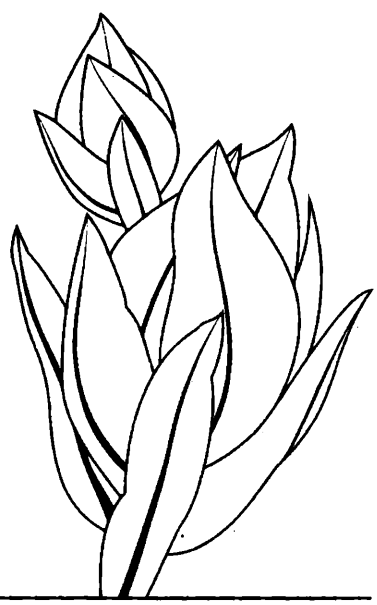
ऊपर से दिखाई देने वाले सत्कर्म भी अन्तःकरण की शुद्धता के अभाव में निष्फल चले जाते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

युग के वाल्मीकि जिनकी लेखनी से छलकती है-भाव संवेदना

''हमें अगले दिनों सारे विश्व को यह बताना है कि नयी दुनिया कैसी होगी, जमाना कैसे बदलेगा तथा देखते-देखते व्यक्तियों के सोचने का तरीका कैसे बदलता चला जाएगा? जैसे ब्रह्माजी ने इच्छा प्रकट की ''एकोऽहं बहुस्याम्'' व देखते-देखते साकार हो गयी उनकी परिकल्पना उसी तरह हमने भी इच्छा व्यक्त की है, महाकाल के संकेतों पर कि हमें इस दुनिया को नयी बनाना है। इक्कीसवीं सदी का साहित्य हम इसीलिए रच रहे हैं, तुम्हारे तथ्यों के संकलन हमारे अभी के लेखन तथा हमारे बाद कलम पकड़ने वाली उँगलियों के लेखन के पीछे यही दैवी प्रेरणा काम कर रही है। इस तथ्य को समझना, यह मानना कि तुम्हारे व्यक्तित्व का परिष्कार कर तुम से एक गहन साधना कराना मेरा उद्देश्य है। यह समझ लोगे तो तुम लोग कभी लक्ष्य से भटकोगे नहीं''। परमपूज्य गुरुदेव ने उपरोक्त भाव तब व्यक्त किए थे, जब हम सभी उनके समक्ष गोष्ठी में बैठे उनका मार्गदर्शन ले रहे थे। इन दिनों कागज काले करने वाले ढेरों समाचार पत्र निकलते रहते हैं। लाखों पत्रिकाएँ रोज प्रकाशित होती हैं, किन्तु रचनात्मक लेखन, युग परिवर्तनकारी साहित्य सृजन कैसे किया जाता है, यह समझना हो तो हमें परमपूज्य गुरुदेव की लेखन प्रक्रिया से जुड़े प्रसंगों व उन अंतरंग क्षणों की आपको झाँकी करानी होगी जिसे देखने-समझने के बाद ''अखण्ड-ज्योति'' का जाज्वल्यमान विराट् रूप हमारे समक्ष स्पष्ट होता चला जाता है।

प्रसंग तब का है, जब वैज्ञानिक अध्यात्मवाद का सारा ढाँचा नये सिरे से गढ़ा जा रहा था। 1966-67 में ''अखण्ड-ज्योति'' पत्रिका में आरंभ किये गए इस उपक्रम को सभी ने सराहा तथा बुद्धिजीवियों में मिशन की पैठ बड़ी गहरी बनी थी। 1977-78 में उन सभी विषयों पर पुनर्मन्थन का क्रम चला जिन्हें अध्यात्म और विज्ञान के समन्वयात्मक प्रतिपादनों की परिधि में लाना था, विशेषकर तब, जब प्रयोग परीक्षणों हेतु एक प्रयोगशाला व ग्रंथागार विनिर्मित होने जा रहा था। कार्य की विशालता व उद्देश्य के विराट् स्वरूप को दृष्टिगत रख एक कार्यकर्त्ता ने पूज्यवर से निवेदन किया कि हमें विराट् स्तर पर साहित्य सृजन हेतु राशि लेकर लिखने वाले साहित्यकारों से संपर्क करना चाहिए व उनके माध्यम से हिन्दी भाषी ही नहीं, सभी भाषायी क्षेत्रों को पकड़ने की योजना बनानी चाहिए। पूज्यवर बोले- ''जो कार्य ऋषि मनीषियों के स्तर का हो उसे खरीदी हुई अक्ल नहीं कर सकती। हमें तप:पूत लेखनी के धनी- मनीषी स्वयं तैयार करने होंगे। वे ही नवसृजन का



आध्यात्मिक प्रगति का मूलाधार अन्तःकरण को निर्मल एवं शुद्ध करना है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

आधार खड़ा करेंगे।'' यही कारण है कि 3200 पुस्तकों के रूप में विराट् परिमाण में साहित्य सृजन करने वाले पूज्य गुरुदेव एक ऐसा ढाँचा खड़ा कर सके कि बिना किसी बाहर के लौकिक स्तर के साहित्यकार की मदद के यह पत्रिका न केवल अनवरत चलती रह सकी, वरन् इसके भावी स्वरूप का प्रारूप भी निश्चित हो गया। मनीषा के सृजनात्मक लेखन व एक साधारण साहित्य लेखन में यही सबसे भारी अंतर है।

लेखक-पत्रकार-मनीषी के रूप में परमपूज्य गुरुदेव के जीवन वृत्त पर जब हम एक विहंगम दृष्टि डालते हैं, तो पाते हैं कि साहित्य लेखन उनकी साधना का एक अनिवार्य अंग था। विराट् गायत्री परिवार का सृजन उनने इसी के माध्यम से किया न केवल पत्रिका उच्चस्तरीय प्रेरणाओं व निर्देशों से युक्त रहती थी, अपितु उनके परिजनों को लिखे गए पत्र मनोबल बढ़ाने वाला मार्गदर्शन भी करते थे। प्रातःकाल डेढ़ बजे उठकर नित्यकर्म से निवृत्त हो चार घण्टे न्यूनतम अपनी साधना-गायत्री महामंत्र की उपासना तत्पश्चात् चार घंटे से छह घंटे न्यूनतम लेखनी की साधना यह उनकी दिनचर्या का एक अनिवार्य अंग थी। चाहे वे क्षेत्रों में दौरे पर हों, राह में ट्रेन में अथवा सक्रिय कार्यक्रमों में, केन्द्र में संलग्न, लेखनी कभी उनकी रुकी नहीं। नियमित स्तर का यही लेखन था, जिसके माध्यम से चिंतन को उछालने वाले श्रेष्ठ स्तर के साहित्य का सृजन संभव हो सका। यही प्रेरणा उनने अपने पास कार्य करने वाले-सीखने वाले साधकों को भी दी। जिनने उस दिनचर्या को अपनाया, उनका निज का व्यक्तित्व तो परिष्कृत हुआ ही, उनके माध्यम से मार्गदर्शन का एक तंत्र विकसित होता चला गया।

बड़ा आश्चर्य होता है जब हम देखते हैं कि बिना किसी उच्चस्तर की पढ़ाई-शिक्षा के भारतीय संस्कृति, दर्शन, अध्यात्म, तत्त्वमीमांसा, आहार से लेकर चिकित्सा विज्ञान, भौतिकी, समाज का नवनिर्माण नैतिकी, मनोविज्ञान तथा राजनीति के दाँव-पेंच भरे विषयों से लेकर मैनेजमेण्ट जैसी विद्या पर बहुमुखी ''एक्सपर्ट'' स्तर का लेखन किसी से कैसे बन पड़ा? उसका एक ही उत्तर है गहन स्वाध्याय। फकीरी की भाषा में कहें तो ऐसे कहेंगे-''पढ़िबे को फल गुनब है, गुनबे को फल ज्ञान, ज्ञान को फल हरिनाम है, कहि श्रुति संत पुरान।'' अर्थात् पढ़ने का मर्म मनन-चिंतन ज्ञानार्जन में है व ज्ञान की सार्थकता भगवद्-भक्ति में है। जहाँ ये सभी मिल जाएँ व लेखनी जिसकी सधी हुई सुनियोजित दिशा में चले वहाँ जिस उच्चस्तरीय साहित्य का सृजन होगा, उसे पढ़कर कौन ऐसा होगा, जो प्रभावित न हो?

''कवयः सत्यश्रुताः'' ऋषि कवि होता है व उसका काव्य फूट पड़ता है- लेखनी से गद्य व पद्य के रूप में। पद्य भी उसका ऐसा सरस होता है कि पढ़कर लगता है कि शब्द कहीं भीतर तक जाकर स्पर्श कर रहे हैं, उनके मूल में संवेदना गहरे तक विराजमान है। जरा उनकी लेखनी का एक स्वरूप यहाँ देखें—''भगवान् किसी को धनी कुबेर भले ही न बनाये, पर उनकी करुणा बरसती ही हो तो उसे उस चिकित्सक की पदवी मिले, जिसने असंख्यों को अंध तमिस्रा से उबारा और आलोक की दुनिया में हाथ पकड़ कर ला बिठाया''। (अखण्ड-ज्योति पृष्ठ 94 अप्रैल 1982)

जहाँ ऊपर की पंक्तियों में गहरी संवेदना है, तो अगले उद्धरण में प्रतिभाओं को दी गयी लताड़ भी ऐसी है जो गहरे तक चुभकर कुछ कर दिखाने की दिशा में मचला देती है- ''प्रतिभाएँ आगे बढ़ती हैं तो ही अनुगामियों की कतार पीछे चलती है। पतन और उत्थान का इतिहास इस एक ही पटरी पर आगे बढ़ता रहा है। प्रतिभाओं को दूसरे शब्दों में अंधड़ कहते हैं। उनका वेग जिस दिशा में तेजी से बढ़ता है, उसी अनुपात में तिनकों-पत्तों से लेकर छप्परों और वृक्षों तक को उड़ते-लुढ़कते देखा गया है।''

''गिरता-उठता तो जमाना है पर उसके लिए वास्तविक पाप-पुण्य का बोझ उस समय की अग्रगामी प्रतिभाओं के सिर पर लदता है। अब केवल एक ही बात सोचनी चाहिए कि समय की जिस चुनौती ने जागृतात्माओं को कान पकड़ कर झकझोरा है, उसके उत्तर में उन्हें दाँत निपोरने हैं या सीना तानना है।''(अखण्ड-ज्योति पृष्ठ 56-अप्रैल 1982)

पूज्यवर की लेखनी को साक्षी

भाव-संवेदना से भरे-पूरे व्यक्ति ही उस रीति-नीति को समझ पाते हैं, जिसके आधार पर संपदाओं का, सुविधाओं का सदुपयोग बन पाता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मानकर ऊपर यह बताने का प्रयास हम कर रहे हैं कि ऋषि स्तर के मनीषी सूक्ष्म स्तर पर अपनी साधना की शक्ति से अपनी सशक्त लेखनी व ओजस्वी वाणी से वह सब कुछ कर दिखाने की सामर्थ्य रखते हैं, जिसे युग असंभव मानता रहा है। इसी परिप्रेक्ष्य में उनके द्वारा दिये गये कुछ व्यावहारिक निर्देश दृष्टि पटल पर आ जाते हैं, जिन्हें समय-समय पर डायरी में नोट किया जाता रहा।

(1) ''अब हमें भारतीय दर्शन में समग्रता लानी है। इसमें विज्ञान का पुट देकर नया स्वरूप देना है। तत्त्वदर्शन किसी समाज की संस्कृति बनाता है। हमारी संस्कृति के अनिवार्य अंग हैं- दूरदर्शी-विवेकशीलता तथा पुण्य-परमार्थ। कठिनाई यही है कि इस भारतीय मान्यता को पाश्चात्य दर्शन समर्थन नहीं देता। हमें यही भागीरथी पुरुषार्थ करना है कि जन-जन के मन में ये दो आदर्श समा जाएँ'' (1-4-83)

(2) ''प्राचीन युग देवताओं का युग था। सतयुग की संस्कृति, देवसंस्कृति थी। हम आदिम मानव से नहीं, श्रेष्ठ नर-रत्नों से, ऋषियों से जन्मे हैं। यही अवधारणा अब हमें तर्क, तथ्य, प्रमाण के साथ पूरे विश्व में पहुँचानी है।'' (11-5-83)

(3) ''आदमी के विचारों की शक्ति असाधारण है। जिजीविषा, जीवट, मनोबल में अपनी एक अलग ही सामर्थ्य है, यह मनुष्य की एक सबसे बड़ी विशेषता है। हमारी अंतःविद्युत की ताकत पर खड़ा है विचारों का ढाँचा। साधना उपचारों द्वारा जब तक इसे सशक्त किया जाता रहेगा, मनुष्य का आंतरिक वैभव सतत् बढ़ता ही रहेगा'' (3-6-83)

(4) ''हमें व तुम्हें अब भ्रष्ट चिंतन से जूझना है। यही इस युग का सबसे बड़ा संग्राम है। आज दर्शन को प्रत्यक्षवाद ने विषाक्त कर दिया है। यदि यह दर्शन प्रवाह उलट न गया तो यह मनुष्य को पशु बनाकर रहेगा। इस युगसंकट से जूझना ही मनीषा का काम है व वह काम अखण्ड-ज्योति को करना है।'' (19-4-1986)

(5) ''सृजन की अपनी लहर होती है। कभी सतयुग में सृजनपरक प्रभावोत्पादन मानसून छाया रहता था तो धरती स्वर्ग जैसी थी। वैसा ही वातावरण लाने के लिए हमें जन-जन के मनों को मथकर उन्हें यह सोचने पर मजबूर कर देना है कि परिवर्तन अवश्यंभावी है और वह है श्रेष्ठता की दिशा में ही। इसी उद्देश्य की सफलता में तुम्हारे समर्पण की सफलता है।'' (20-10-1988)

उपरोक्त उद्धरण उन डायरियों से लेकर पाठकों की जानकारी के लिए दिये गए हैं, जिनमें समय-समय पर पूज्यवर के मुखारविन्द से निकले हर निर्देश को नोट किया जाता रहा। उनकी 1940 से 1990 तक चली पचास वर्ष की साहित्यिक जीवन यात्रा पर हम जब दृष्टि डालते हैं तो पाते हैं कि ''अखण्ड-ज्योति'' को एक पाती की तरह अपने स्वजनों परिजनों तक भेजने वाले पूज्यवर गुरुदेव ने ''मैं क्या हूँ'' जैसी जटिल आत्मचिंतन प्रधान पुस्तक से आरंभ कर जीवन जीने की कला के व्यावहारिक अध्यात्म तथा धर्मतंत्र से लोकशिक्षण व लोकरंजन से लोकमंगल के स्वरूप से लेकर गायत्री के तत्वज्ञान के पुण्य-परमार्थ प्रधान शिक्षण द्वारा एक व्यापक समुदाय को मथा जिसकी संख्या करोड़ों में आँकी जा सकती है।

वे ''अखण्ड-ज्योति'' को अपनी प्राण ऊर्जा का प्रवाह बताते रहे, मात्र तीन उँगलियों व कलम से लिखी जाने वाली एक पत्रिका मात्र नहीं। इस अखण्ड-ज्योति का वस्तुतः मत्स्यावतार की तरह विस्तार हुआ व ''संदेश नहीं मैं स्वर्ग लोक का लाई, इस धरती को ही स्वर्ग बनाने आई'' नाले सूत्र लेकर प्रकाशित प्रारंभिक पत्रिका जो 250 मात्र थी, बढ़ते-बढ़ते आज चार लाख से अधिक हिन्दी में व इतनी ही अन्यान्य भाषाओं में गुजराती, उड़िया, बंगला, मराठी, तमिल, तेलगु आदि प्रकाशित होकर अस्सी लाख पाठकों तक पहुँच रही है। अध्यात्म प्रधान चिंतन में यदि इतने व्यक्ति आज के कलियुग माने जाने वाले युग में भी रुचि लेते हैं, न उसका स्वाध्याय कर पाने पर कुछ अभाव सा महसूस करते हैं तो यह चिह्न पूज्यवर के उस आशावादी दर्शन का द्योतक है, जिसमें वे कहते रहे कि ''मूलतः मनुष्य आदर्शवादी है व उसे अंत में वही बनना होगा।''

विचारों की स्पष्टता, शैली में रोजमर्रा के प्रयोग किये जाने वाले शब्दों से लेकर शुद्ध संस्कृत के शब्द, कई नयी

भोगों से जहाँ शारीरिक व्याधियाँ बढ़ती है, वहाँ मानसिक चिन्तायें भी बढ़ती हैं। यह चिन्तायें मनुष्य को बन्धनों से बाँधती हैं और दुःखी करती हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

संधियों के साथ नये शब्दों की संरचना, भावना का अविरल प्रवाह तथा एक सुनियोजित उद्देश्य की ओर चिंतन को मोड़ता प्रतिपादन यह पूज्यवर की जादूभरी लेखनी की विशेषता है।

एक बार का प्रसंग है कि ब्रह्मवर्चस में कार्य कर रहे एक सज्जन अनगिनत तर्कों व प्रमाणों के साथ नास्तिकवाद का खण्डन करने वाला एक लेख पूज्यवर के पास लेकर आये। उन सज्जन की दृष्टि में यह उनका सर्वश्रेष्ठ लेख था। पूज्यवर ने पढ़ा और कहा कि "बेटा-तेरा मन रखने के लिए इसे फाड़ता तो नहीं किन्तु एक बात बताता हूँ कि बिना संवेदना का समावेश किए, बिना सही दिशा दिए लेखन नीरस-बेजान है। हम खंडनात्मक शास्त्रार्थवादी परम्परा के नहीं हैं। हमें तर्क व तथ्यों के साथ संवेदना, करुणा को भी उभारना है। इसे स्पष्टत: ध्यान में रखना।"

"सुनसान के सहचर" जैसी छन्दात्मक भाव प्रधान शैली का लेखन करने वाले तथा प्रतिमाह अखण्ड-ज्योति के 'अपनों से अपनी बात' स्तम्भ द्वारा लाखों व्यक्तियों के मर्मस्थल को हिला डालने वाले परमपूज्य गुरुदेव ने अपने मार्गदर्शन में जिसको रखा, यदि उसने लगन से काम किया तो उसे उस विद्या में पारंगत बना दिया। उनने प्रमाणित किया कि बिना वैसा जीवन जिए, बिना आदर्शवाद को जीवन में उतारे, बिना संवेदनशील बने कोई भी व्यक्ति यदि लेखनी पकड़ता है तो वह मात्र कागज काले करता है, जनता के विचारों का प्रदूषण बढ़ाता है व कुकुरमुत्तों की तरह बढ़ रही साहित्यकारों की फसल में एक और जुड़ जाता है।

10 नवंबर 1989 को नोट कराए पूज्यवर के निर्देशों का हवाला देकर अपने इस अपूर्ण प्रसंग को समाप्त करते हैं- "हमें अब नयी दुनिया गढ़नी है। इसका सारा आधार संवेदना पर टिका है। लोगों की भावसंवेदनाओं को आस्था-मान्यताओं को, अंत:करण को बदल देना ही हमारा मूल लक्ष्य है। मार्क्स ने अर्थ व्यवस्था को मूल आधार बनाया तो रूसो ने प्रजातांत्रिक व्यवस्था को। हमने मानवी अंत:करण से नियंत्रित मनोविज्ञान व व्यवहार को अपने चिंतन की मूल धुरी बनाया है। हम आशावादी हैं। भविष्य निश्चित ही उज्ज्वल है। इक्कीसवीं सदी का मतलब है आदर्शवाद पर विश्वास-आशावादी सत्साहस। औरों के यूटोपिया (दिवास्वप्न) काल्पनिक रहे होंगे, पर हमारे नहीं। भावना विज्ञान पर लिखा बहुतों ने है; पर भावनाओं को व्यवहार में उतार कर कैसे आदर्श मानव बनाया जाय व आदर्श समाज गढ़ा जाय, यह किसी ने नहीं लिखा है। हमने इसी विषय में अपना चिंतन नियोजित किया है व इसी धुरी पर युगान्तरकारी साहित्य सृजा है। तुम उसी धुरी पर चलते रहना, बस देखते-देखते कुछ वर्षों में जमाना बदल जाएगा।"

पाठकों को पूज्यवर की भाषा यथावत् उद्धृत कर हमने उनके उस स्वरूप की झलक दिखाने का आंशिक प्रयास किया है, जिसमें उस युगपुरुष ने लेखनी की अविराम साधना कर एक असाधारण पुरुषार्थ संपन्न किया। जब साहित्य जगत इस विराट् साहित्य-संजीवनी का मूल्यांकन कर पाने में सक्षम होगा, तब वह भी युग के व्यास को समय पर न पहचान पाने की विडम्बना पर स्वयं अपना सिर धुन रहा होगा। ◈

भावना का विस्तार जब समष्टि में हो जाता है, तब वह करुणा में बदल जाती है। करुणा किसी व्यक्ति विशेष के प्रति नहीं, सबके प्रति होती है, की नहीं जाती, होती है। युगऋषि अपनी इस उपलब्धि का शब्दांकन करते हैं-"आत्मवत् सर्वभूतेषु की भावना जैसे ही प्रखर हुई, निष्ठुरता उसी में गलकर नष्ट हो गयी। जी में केवल करुणा शेष रह गयी, वही अब तक जीवन के अंतिम अध्याय तक यथावत् बनी हुई है। उसमें कमी रत्ती भर भी नहीं हुई, वरन् दिन-दिन बढ़ोत्तरी ही होती गयी।" उनकी लेखनी में वे अपनी भाव-संवेदनाओं को प्रकट करते हैं- "लोगों की आँखों से हम दूर हो सकते हैं, पर हमारी आँखों से कोई दूर न होगा। जिनकी आँखों में हमारे प्रति स्नेह और हृदय में भावनाएँ हैं, उन सबकी तस्वीरें हम अपने कलेजे में छिपाकर ले जायेंगे।"

अध्यात्म ज्ञान बिना सारा वैभव, सारा ऐश्वर्य और सारी उपलब्धियाँ व्यर्थ हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

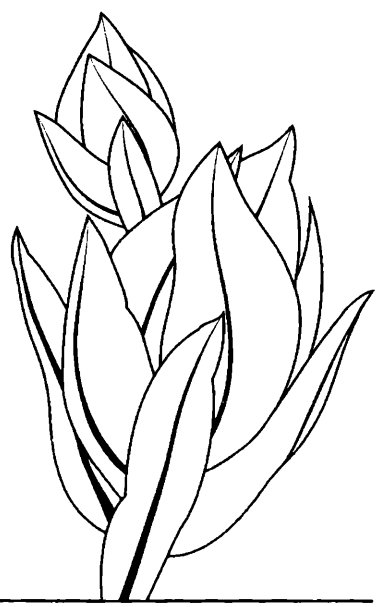
वैज्ञानिक अध्यात्मवाद जिया और दिया

आस्था संकट : युग संकट को परम पूज्य गुरुदेव ने आस्था संकट नाम दिया। इसे खड़ा करने में विज्ञान से उपजे भौतिकवादी दर्शन की प्रमुख भूमिका रही। एक ओर जहाँ इसने मानवीय प्रगति में नए आयाम जोड़े, वहीं दूसरी ओर मानवीय आदर्शवाद की जड़ों पर प्राणघाती कुठाराघात किए। अपने बचपने में आधे-अधूरे निष्कर्षों के आधार पर इसने चिल्लाना शुरू कर दिया था कि सृष्टि मात्र अणु-परमाणुओं की हलचल मात्र है व स्वत: सक्रिय है। ईश्वर का कोई अस्तित्व नहीं है, आत्मा जैसी कोई चीज नहीं है व शरीर ही सब कुछ है। इस दर्शन ने आस्तिकता, स्वर्ग-नरक, पुण्य-परमार्थ संयम-त्याग जैसी मान्यताओं एवं सद्गुणों को एक सिरे से दरकिनार कर दिया। मनुष्य में वैसे ही पशुवृत्ति प्रबल रहती है, बुद्धि का समर्थन मिलने से वह और मुखर हो उठी। मनुष्य पशुता से भी पतित होकर पैशाचिकता की ओर गिरने लगा। परिणामस्वरूप समूचा समाज व युग इस आसुरी प्रवाह से आवेशित हो उठा एवं मानवीय संस्कृति इसमें दम तोड़ने लगी।

धर्म और विज्ञान : मानवीय पशुता पर अंकुश लगाने और उसे संस्कारित करने का कार्य धर्म-अध्यात्म कर रहा है। यह मनुष्य के आस्था क्षेत्र का सिंचन करता हुआ उसे पुष्ट एवं सबल बनाता है। धर्म-अध्यात्म एवं संस्कृति का समूचा कलेवर इसी प्रशिक्षण के लिए है। अध्यात्म प्रमुखतया श्रद्धा का विषय होने के कारण अभी तक शास्त्र प्रमाण एवं आप्त वचनों तक सीमित रहा है। जबकि विज्ञान द्वारा संस्कारित आधुनिक पीढ़ी इतने भर से संतुष्ट नहीं हो सकती।

विज्ञान ने उसकी तर्क शक्ति को जाग्रत किया है। किसी भी बात को स्वीकार करने से पहले वह उसे कसौटी पर कसता है। किन्तु धर्म-अध्यात्म क्षेत्र युग की इस माँग को अनसुना करता हुआ 'बाबा वाक्यं प्रमाणं' पर ही अड़ा रहा। दूसरा वह स्वयं तरह-तरह की विकृतियों से ग्रस्त रहा, परिणामस्वरूप न तो वह अपनी उपयोगिता सिद्ध कर पाया और न प्रामाणिकता। बुद्धिवादी तार्किकता ने इसकी श्रद्धा की जड़ें हिला दीं। युवा हो रहा विज्ञान जहाँ अधूरे सत्य के प्रति उग्र दुराग्रह लिए था, धर्म सठियाए बूढ़े की अकड़ में था। जबकि मानवीय हित में दोनों का समन्वय-सहयोग अपेक्षित था। धर्म अपनी प्रमाणिकता एवं उपयोगिता सिद्ध करते हुए विज्ञान की शंकाओं को निर्मूल करता और विज्ञान धर्म की मर्यादा को स्वीकार करता हुआ व्यापक हित में कार्य करता। दोनों अधूरेपन को देखते हुए युग मनीषी आइंस्टाइन ने ठीक ही कहा था- "धर्म के बिना विज्ञान लँगड़ा है और

यह युगपरिवर्तनकारी विधा है, जिसका आविष्कार उनने किया। उनने धर्म को वैज्ञानिक रूप दिया एवं विज्ञान पर अध्यात्म का अंकुश स्थापित किया। जिन दिनों वह यह सब कर रहे थे, यह स्वर बस उन्हीं के थे। शेष सब यही मान रहे थे कि दो विपरीत ध्रुवों पर स्थित ये दोनों महाशक्तियाँ कभी मिल नहीं सकतीं, लेकिन उन्होंने यह डंके की चोट पर किया...



गरीब वह नहीं, जिसके पास कम है, बल्कि वह है जो अधिक चाहता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विज्ञान के बिना धर्म अंधा।'' दोनों का समन्वय युग संकट के निवारण एवं मानव जाति के कल्याण के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण था।

अध्यात्म का वैज्ञानिक प्रतिपादन : इसी पृष्ठभूमि में युग के नए दर्शन-वैज्ञानिक अध्यात्मवाद का उद्‌भव हुआ, जो परम पूज्य गुरुदेव की युग को एक अनुपम देन है। आज भले ही जहाँ-तहाँ विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय की बात व प्रयास चल रहें हों, किन्तु 20 वीं सदी के पूर्वार्द्ध में कोई इसकी कल्पना भी नहीं कर सकता था। विज्ञान जहाँ धर्म को अंधविश्वास एवं अफीम की गोली जैसे व्यंग-कटाक्ष कर उपहास, तिरस्कार कर रहा था, वहीं धर्म सठियाए बूढ़े की तरह विज्ञान को नास्तिक एवं दैत्य कहकर कोस रहा था। दोनों दो विपरीत ध्रुवों पर खड़े थे। दानों के समन्वय की सुदूर कल्पना विवेकानन्द, विनोबा जैसे कुछ मनीषियों के मस्तिष्क में उभर रही थी, किन्तु इसको साकार करने का ऐतिहासिक श्रेय परम पूज्य गुरुदेव को जाता है।

वैज्ञानिक अध्यात्मवाद को अपने जीवन की प्रयोगशाला में गढ़ने वाले युग ऋषि ने विज्ञान के प्रत्यक्षवादी दर्शन की चुनौती को स्वीकार किया। शुरू से ही उनके जीवन की तरह लेखनी का रूख भी क्रांतिकारी वैज्ञानिक मनीषी का रहा। 40 के दशक में लिखी पहली पुस्तक 'मैं क्या हूँ'? में ही उनका यह रूप पूर्ण प्रखरता के साथ झलकता है। पाँचवे दशक में अखण्ड ज्योति में उन्होंने वैज्ञानिक अध्यात्म पर चर्चा शुरू कर दी थी। अगले दो दशकों में साधना एवं तत्त्वदर्शन से लेकर गायत्री एवं यज्ञ विज्ञान के गूढ़ रहस्यों पर सरल-सुबोध मात्रा में वैज्ञानिक शैली में प्रकाश डालते रहे। वैज्ञानिक अध्यात्म के बौद्धिक प्रतिपादन की विधिवत शुरुआत गायत्री जयंती 1958 से हुई। इस शुरुआत के विषय में उन्हीं के शब्दों में ''आध्यात्मिक एवं धार्मिक सिद्धान्त कच्ची मिट्टी के नहीं हैं। वे बहुत ही मजबूत आधार पर खड़े हैं।''

बात इतनी भर है कि इन्हें तर्क, तथ्य, प्रभाव, उदाहरण की कसौटी पर कसकर प्रतिपादित किया जाय, जो अनास्थावानों को प्रभावित कर सकें। कार्य हिमालय जैसा-समुद्र जैसा बड़ा है। इस दिशा में छिट-पुट प्रयास तो जहाँ-तहाँ से हुए हैं, पर समग्र और सांगो-पांग तैयारी के साथ पूरे मोर्चेबंदी के साथ कार्य कहीं से भी नहीं हुआ। अब समय आ गया कि इस अभाव की पूर्ति की जाए। हर्ष की बात है कि यह कार्य समर्थ सत्ता की प्रेरणा से इसी गायत्री जयंती से आरम्भ भी कर दिया गया है।'' इस सन्दर्भ में मिशन के वैज्ञानिक पृष्ठभूमि वाले प्रबुद्ध परिजनों से सामग्री संग्रह में सहयोग का आह्वान भी किया गया।

बुद्धिजीवियों का शान्तिकुञ्ज में प्रशिक्षण : कुछ ही महीनों बाद अखण्ड ज्योति में दमदार तर्कों से युक्त वैज्ञानिक प्रतिपादन से भरी सामग्री आने लगी, जो युगऋषि का अध्यात्म एवं विज्ञान के मंथन से उद्‌भूत वैज्ञानिक अध्यात्मवाद का क्रांतिकारी दार्शनिक स्वरूप था। इसे पढ़ने वाला बुद्धिजीवी एवं वैज्ञानिक वर्ग दाँतों तले उँगली दबा कर रह गया। वह पहली बार धर्म के वैज्ञानिक एवं प्रगतिशील स्वरूप को देखकर आश्चर्यचकित था। अभी तक की धर्म-अध्यात्म सम्बन्धी उसकी सारी मान्यताएँ धराशायी हो रही थीं। इससे प्रभावित होकर बुद्धिजीवियों का एक बड़ा वर्ग शान्तिकुञ्ज में आरम्भ की गई सत्र शृंखलाओं में भागीदार होकर धन्य अनुभव कर रहा था। वैज्ञानिक अध्यात्म के यह सारगर्भित संकलन पूज्यवर ने सर्वप्रथम 1978-79 में 42 पुस्तकों के सेट में प्रकाशित किया, तथा दूसरा संशोधित संस्करण 1984-85 में 25 पुस्तकों के सेट के रूप में उनके निकटतम डॉक्टर एवं मनीषी शिष्य डॉ. प्रणव पण्ड्या जी के सहसंपादन में निकला।

वैज्ञानिक अध्यात्म की प्रयोगशाला ब्रह्मवर्चस : पूज्यवर युग दर्शन पर एकाकी लेखन-प्रकाशन के प्रयास भर से संतुष्ट नहीं थे, वे इसे भौतिक विज्ञान के प्रयोग-परीक्षणों की कसौटी पर कस कर इसके निष्कर्ष युग मनीषी तक पहुँचाने को आतुर थे। उनकी यह कसक ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान के रूप में मूर्त हुई, जिसकी स्थापना सन् 1978-79 में की गई। यह विश्व में अपनी तरह का अद्वितीय शोध संस्थान है, जो पूर्णतया वैज्ञानिक अध्यात्मवाद के प्रति समर्पित है। यहाँ अध्यात्म विद्या के बौद्धिक अनुसंधान और वैज्ञानिक प्रयोग-परीक्षण दोनों स्तर पर व्यापक एवं गहन अनुसंधान

हर उन्नतिशील और बुद्धिमान् मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताओं में एक विशेषता मिलेगी-समय का सदुपयोग।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चल रहा है। स्थापना से अब तक विगत दो दशकों में इसके प्रयास एवं शोध निष्कर्षों ने देश एवं विदेश में धर्म-अध्यात्म के प्रति एक नई आस्था का बीज बोया है। यहाँ वैज्ञानिक पृष्ठभूमि वाले उच्च-शिक्षित प्रबुद्धजनों का एक समर्पित समुदाय शोध अनुसंधान में जुटा हुआ है। इसके अतिरिक्त यहाँ विविध विषयों पर शोध कार्य के लिए प्रखर मार्गदर्शन भी उपलब्ध है।

इसके निदेशक डॉ. प्रणव पण्ड्या जी के मार्गदर्शन में अब तक दर्शन, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, संस्कृति, योग, आयुर्विज्ञान, साहित्य, संस्कार, गायत्री, यज्ञ, संगीत जैसे 20 से अधिक विषयों पर शोध कार्य हो चुका है जिसके उच्चतर एवं मौलिक देन की शोध जगत् में मुक्त कण्ठ से प्रशंसा हुई है। वैदिक सृष्टि विज्ञान, आयुर्विज्ञान, जलचिकित्सा, मंत्र विज्ञान एवं योग साधनाओं का शोध कार्यों के अंतर्गत गहन मंथन चल रहा है, जिसके निष्कर्ष अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विश्व-मनीषा को चमत्कृत कर दे तो कोई अतिशयोक्ति न होगी।

वैज्ञानिक अध्यात्मवाद की परिधि वैदिक प्रतिपादनों एवं प्रयोग परीक्षणों तक सीमित करना भूल होगी। यह तो परम पूज्य गुरुदेव के व्यक्तित्व में गढ़ी एवं सजी-सँवारी गई चिन्तन पद्धति है जो उनके कर्तव्य की भाषा में प्रकट हुई थी। यह पद्धति जीवन जीने की कला सिखाती है। इससे उद्भूत जीवन दृष्टि से सभी भेद दूर होने लगते हैं और मानवीय अस्तित्व को समग्रता मिल जाती है।

धर्म-दर्शन और विज्ञान का अद्भुत सामंजस्य : मनुष्य अस्तित्व में विद्यमान भाव, चिन्तन एवं कर्म की धाराएँ ही बाहरी जीवन में धर्म दर्शन एवं विज्ञान का रूप लेती हैं। इनके एकाकी विकास के कारण ही मानव जाति को तरह-तरह के त्रास सहने पड़े हैं। विज्ञान की एकाकी क्रिया ने मनुष्य को विनाश के द्वार पर लाकर खड़ा कर दिया है, दर्शन की एकाकी सोच ने मनुष्य को समस्याओं के मकड़जाल में उलझा दिया है और धर्म की कोरी भावुकता ने उसे जीवन से विमुख कर पलायनवादी बना दिया है। इनके अलगाव की तरह इनका टकराव भी मानव जाति के लिए अभिशाप सिद्ध हुआ है। पूज्यवर के वैज्ञानिक अध्यात्मवाद में इन तीनों का अद्भुत सामञ्जस्य हो जाता है। यह कोई नये किस्म का वाद नहीं है, बल्कि इसमें सभी वाद समा जाते हैं। इस तरह तत्त्वदर्शन के अनुसार जहाँ क्रिया और चिंतन मिल सकते हैं वह स्थान संवेदना है। जाने-अनजाने ये दोनों यहीं अपना जन्म पाते हैं। संवेदना से उपजी क्रिया भारभूत श्रम नहीं, जीवन साधना बन जाती है और संवेदना से उपजा चिन्तन उसका मार्गदर्शन, चिन्तन की यह नई प्रणाली मानव की नियति है। इसे स्वीकारे बिना अन्य कोई उपाय नहीं। नए युग के नए दर्शन के रूप में यह परम पूज्य गुरुदेव की विरासत के रूप में सौंपी गई अमूल्य चिन्तन पद्धति है, इसे हम कितना हृदयंगम कर पाए हैं व कितना अपने चिन्तन, चरित्र व आचरण में उतार पाए हैं, इसका लेखा-जोखा इस महापूर्णाहुति के कार्यक्रम से स्पष्ट दृष्टिगोचर हुआ। इसी के आधार पर ईश्वरीय प्रकाश का अवतरण मनुष्य में देवत्व के रूप में होगा, जिसकी झलक आगामी दिनों इस भू-धरा पर स्वर्गीय परिस्थितियों के रूप में दृष्टिगोचर होगी। ◈

उत्तर प्रदेश के पोस्ट मास्टर जनरल, अखंड ज्योति के नियमित पाठक थे। अखंड ज्योति के वैज्ञानिक प्रतिपादन, मार्मिक प्रस्तुतीकरण एवं प्रेरक भाव विचारों को देखकर उनकी तीव्र जिज्ञासा यह जानने की थी कि इसका लेखक कौन है?

लेखक से मिलने की धुन में वह इसके प्रकाशन संस्थान मथुरा पहुँचे, इसके संपादक के रूप में जब वह आचार्य जी से मिले और कुछ जानने की कोशिश की तो गुरुदेव ने जो उत्तर दिया, वह आश्चर्यजनक था। "जिसे तुम देखने आए हो, उसे मैं दिखा नहीं सकता और जो (शरीर मात्र) तुमको दिख रहा है, वह इसे लिख नहीं सकता।"

जो भाग्यवान् अपने परिश्रम-पुरुषार्थ एवं परमार्थ से थोड़ा-बहुत भी अध्यात्म लाभ कर लेता है, वह एक शाश्वत सुख का अधिकारी बन जाता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नींव के पत्थरों का अभिनंदन

नींव के पत्थरों, यह मिशन का भवन,
युग युगों तक तुम्हारा रहेगा ऋणी।

मानते हैं कि तुम भूमि के गर्भ में,
कर सकोगे न अनुभव पवन की छुअन।
मंदिरों की मधुर घंटियों की गमक,
भोर की गोद में मुस्कुराती किरन।
दिख सकेगी न तुमको बसंती घटा,
छू न पायेगी तुमको घटा सावी॥ १॥

सत्य है सामने भव्यता की छवि,
तुम नहीं आ सकोगे किसी ध्यान में।
कोई उत्सव समारोह अथवा सभा,
भी न होगी तुम्हारे सुसम्मान में।
गीत स्तुति प्रशंसा तुम्हारे लिए,
लिख सकेगी नहीं कोई भी लेखनी॥ २॥

यह भवन अब भले ही गगन चूम ले,
किन्तु उसको जनाधार तुमसे मिला।
खुद अपरिचित रहे पर मिशन की प्रखर,
कीर्ति को विश्व विस्तार तुमसे मिला।
छा गई छाँह बनकर मिशन के लिए,
साथियों भाव श्रद्धा तुम्हारी घनी॥ ३॥

नींव के पत्थरों पात्रता का नहीं,
मिल सकेगा तुम्हारा न सानी कभी।
एक पल भी नहीं भूल पायेंगे हम,
त्याग तप की तुम्हारी कहानी कभी।
स्वार्थ को त्यागकर बीज से तुम गले,
दीप से तुम जले भावना के धनी॥ ४॥

तुम धरा में दबे पर तुम्हारे लिए,
सिर झुकाता भवन का शिखर सर्वदा।
पुंज हो तुम अमित शक्ति वैराग्य के,
उच्च आदर्श हो साधकों के सदा।
गीत वन्दन प्रशंसा तुम्हारे लिए,
लिख सकेगी नहीं कोई भी लेखनी॥ ५॥

नींव बनती तुम्हीं से सब यदि नहीं,
तो मिशन भव्यता प्राप्त करता नहीं।
जुड़ न पाते जड़ों से करोड़ों विटप,
विश्व उद्यान इतना सँवरता नहीं।
सुरसरी भी मिशन की न बनती कभी,
त्रस्त संसार के हित तरण तारणी॥ ६॥

कोई जाने न जाने सभी के लिए,
माँ के मन में उमड़ता अमर प्यार है।
हम सभी के लिए दिव्य अनुदान से,
छलछलाती हुई गुरु कृपा धार है।
नाम, यश, साधनों की नहीं कामना,
उनकी करुणा मिली, क्या नहीं पा लिया?॥ ७॥

अध्यात्म भटकन से उबारने की विद्या का नाम है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नींव के पत्थरों का निवेदन

युग-युगों तक रहे यह मिशन का भवन।
जिसने जीवन हमारा सफल कर दिया।।

कोई यह न कहे त्याग हमने किया,
एक टुकड़ा भी अपना न खण्डित हुआ।
भव्यता छोड़कर दिव्यता पा गये,
इसमें घाटा नहीं, लाभ ही तो हुआ।।
शीत आतप सभी से सुरक्षित यहाँ,
दिव्य आँचल से माँ ने हमें ढक लिया ॥ १॥

घण्टियों की खनक, ढोलकों की गमक,
शुद्ध भावों सहित आ रही-भा रही।
और सबसे बड़ी बात सौभाग्य की,
भूमि माता हमें नित्य दुलरा रही।।
माँ के मन की उमंगों से हम जुड़ गये,
माँ ने दिल से लगा धन्य ही कर दिया॥ २॥

सोचते हैं कभी त्याग उनका अरे,
जो कि कट-पिट गये, फिर कँगूरे बने।
ताप-वर्षा विकट शीत सब सह रहे,
पर वहीं पर जमे हैं, खड़े हैं तने।।
रूप अपना तजा, झेल ली हर सजा,
रूप सुन्दर भवन को मगर दे दिया॥ ३॥

वे भी पत्थर थे जो टूटकर पिस गये,
चूना-सीमेंट बन काम में आ गये।।
जो स्वयं को मिटा जोड़ने में लगे,
रूप रचना को देते रहे नित नये।।
कोई देखे न देखे ये चिन्ता न की,
इस भवन की हरइक सैंध को भर दिया॥ ४॥

पात्रता है अनोखी सभी की यहाँ,
इस सभी से अनोखी नजीरें बनीं।
विश्व लेता सभी से सहज प्रेरणा,
ये सभी हैं प्रखर आस्था के धनी।।
साधना से मिले सिद्धि निश्चित सदा,
कर्मनिष्ठा से यह सिद्ध भी कर दिया॥ ५॥

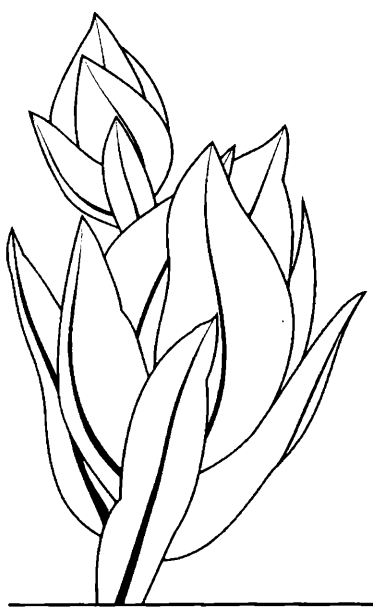
भेद हममें करें, हम उन्हें क्या कहें,
सत्य समझा नहीं वे तो नादान हैं।
हमसे दृढ़ता भवन को मिली है सही,
इस भवन की उन्हीं से बढ़ी शान है।।
भूमि माता के सच्चे सभी पूत हैं,
और माँ ने हमें है अभय वर दिया॥ ६॥

कोई जाने न जाने सभी के लिए,
माँ के मन में उमड़ता अमर प्यार है।
हम सभी के लिए दिव्य अनुदान से,
छलछलाती हुई गुरु कृपा धार है।।
नाम, यश, साधनों की नहीं कामना,
उनकी करुणा मिली, क्या नहीं पा लिया? ॥ ७॥

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ब्रह्मवर्चस् शोध संस्थान-जहाँ वैज्ञानिक अध्यात्मवाद ने पहना अमली जामा

''अध्यात्म, चेतना का उच्चस्तरीय विज्ञान है'' यह परिभाषा उन्होंने ही दी। उसे विज्ञान की बैसाखी की क्या जरुरत? पर ज़माने की आवश्यकता को उन्होंने समझा एवं विज्ञान के उपकरणों से सज्जित एक प्रयोगशाला एवं आधुनिकतम और चिर पुरातन ग्रंथों से सज्जित ग्रंथालय विनिर्मित किया। यह जबाव था युगऋषि का नास्तिकता को...



विज्ञान और अध्यात्म एक दूसरे के पूरक है। अध्यात्म का विज्ञान-सम्मत प्रतिपादन भली-भाँति सम्भव है। चारों ओर इसका उद्घोष होते आज हम सुनते है। अनेक व्यक्तियों को इस पर वक्तृता देते भी देखा जाता है। इतना सरल यह कार्य आज से साठ साल पहले तक नहीं था। श्रद्धा-भावना-संवेदना भी एक विज्ञान है। अध्यात्म स्वयं में एक विज्ञान है। इसे पूर्णत: पदार्थ-विज्ञान की कसौटी पर कसते हुए प्रमाणित किया जा सकता है।

जनवरी, 1947 में युगपुरुष श्रीराम शर्मा आचार्य ने यह प्रतिपादित करते हुए दर्शन-विज्ञान को अनोखी दिशा दी। उन दिनों धर्म-अध्यात्म के नाम पर बिना उसका मर्म समझे, कीर्तन कराते रहने वाला साहित्य प्रकाशित होता था। तब गुरुदेव ने जन-जन के मन को उद्वेलित करने वाले क्रान्तिकारी वैज्ञानिक अध्यात्मवाद की आधारशिला रखी। अपनी ओजस्वी लेखनी से इक्कीसवीं सदी के धर्मदर्शन की मूल पृष्ठभूमि बनायी।

वैज्ञानिक अध्यात्मवाद के बीच एक नए प्रकार के वाद की सर्जना नहीं, बल्कि ऐसा जिसमें सभी वाद समा जाते हैं, जहाँ सबको उसका निश्चित स्थान मिल जाता है। समुद्र नदी नहीं है, परन्तु सभी नदियाँ समुद्र में अपना स्थान ग्रहण करती हैं। इसी भाँति इस चिन्तन-प्रणाली से जीवन के सभी अंग-उपांग अपने चरम विकास की कला सीखते हैं। संवेदना, चिंतन और क्रिया में से एक-एक एकाकीपन में मनुष्य जाति को जीवन का अर्थ नहीं दे सकते। धर्म, दर्शन और विज्ञान मानवीय अस्तित्व से उपजी तीन प्रबल विचार शक्तियों का अलगाव, आपसी टकराव का परिणाम, संहार के सिवा और क्या होगा ? उज्ज्वल भविष्य की संसिद्धि का सिर्फ एक उपाय है-इनका सामंजस्य। वैज्ञानिक अध्यात्मवाद वस्तुत: यही है। इस नए तत्त्वदर्शन के अनुसार क्रिया और चिन्तन दोनों जहाँ मिल सकते हैं, वह स्थान 'संवेदना' है। जाने-अनजाने ये दोनों यहीं अपना जन्म पाते हैं। इस मिलन को अपने मूल रूप में पहचानना और स्वीकार उसका वह उपाय है, जिससे मनुष्य अब तक के अपने विकास को बरकरार रख सम्भावनाओं के नए द्वार खोल सकता है।

संवेदना से उपजी क्रिया भारभूत श्रम नहीं जीवन साधना बनेगी। संवेदना से उपजा चिन्तन उसका मार्गदर्शन बनेगा। ''परिवर्तन के महान् क्षण'' पुस्तक में आचार्य जी ने स्पष्ट किया-''विज्ञान जीवित रहेगा, पर उसका नाम भौतिक विज्ञान न रहकर अध्यात्म विज्ञान रहेगा। उस आधार को अपनाते ही वे सभी समस्याएँ सुलझ जाएँगी जो इन दिनों भयावह दीख पड़ती हैं। उन आवश्यकताओं को प्रकृति ही पूरा

जिसके पास कोई कर्ज नहीं, वही सबसे बड़ा मालदार है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

करने लगेगी, जिनके अभाव में मनुष्य अतिशय उद्विग्न, आशंकित, आतंकित दीख पड़ता है।''आचार्यजी ने वैज्ञानिक अध्यात्मवाद के अन्तर्गत व्यक्तित्व की सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक व्याख्या से लेकर व्यक्ति-निर्माण के सूत्रों का जो प्रस्तुतीकरण किया, वह अनुपम था।

ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान की स्थापना 1978 में सप्तसरोवर में शान्तिकुञ्ज से कुछ दूर की गयी। 1979 में इसकी एक अद्‌भुत प्रयोगशाला शुरू हुई। सन् 1940 में ही ''मैं क्या हूँ?'' जैसी विज्ञान व अध्यात्म के समन्वयनात्मक प्रतिपादनों के प्रस्तुतीकरण वाली प्रथम पुस्तक से लेकर गायत्री महाविद्या के जटिल गुह्यतम वैज्ञानिक पक्षों सहित 'मंत्र महाविज्ञान तथा तंत्र महाविज्ञान' भी जिनने रचकर रख दिया, ऐसे पूज्यवर को प्रयोगशाला की आवश्यकता क्यों पड़ी होगी ?

इस स्थापना के सम्बन्ध में उन्होंने समझाया-''हमें आत्मबल-सम्पन्न व्यक्तियों की नवयुग के लिए आवश्यकता है। ऐसी पीढ़ी धर्म-अध्यात्म के तत्त्वज्ञान को जिस भाषा में समझती है, उसी भाषा में प्रस्तुतीकरण करना होगा। मजहब-सम्प्रदायों से मुक्त विश्व संस्कृति का नवोन्मेष। एक सार्वभौम अध्यात्म विज्ञान सम्मत र्म का ढाँचा खड़ा करना ताकि मानवध मानने वाली मनीषा नये समाज की संरचना कर सके।''ब्रह्मवर्चस'' का अर्थ ही है-ब्रह्मविद्या तथा व्यावहारिक तप-साधना का समन्वय। अध्यात्म तथा विज्ञान का समन्वय सिद्धांत व बाहर का समन्वय। इन्हीं उद्देश्यों को लेकर ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान स्थापित हुआ।'' तब गुरुदेव ने कहा था-''प्रत्यक्ष विज्ञान की कसौटी कसने के लिए गायत्री के साधना-विज्ञान, यज्ञ-ऊर्जा की सामर्थ्य, चिंतन-चेतना के विभिन्न घटकों के मापन के लिए कुछ मशीनों की जरूरत पड़ेगी। जरा यह तो बताओ-पैथॉलोजी, जियॉलाजी, साइकोलॉजी में किन-किन मशीनों की जरूरत पड़ती है....। बस ऐसी ही कुल चौबीस मशीनों को मँगाकर लेबोरेट्री शुरू कर दो।''

स्थूल उपकरणों से तो साधना-विज्ञान, यज्ञ-विज्ञान की गहराइयों को, प्रतिक्रियाओं को मापा जाना सम्भव नहीं था। पूछा गया कि ''आप बतायें, कौन से व किस स्तर के उपकरण मँगायें?'' गुरुदेव का उत्तर था कि ''किसी दवा को देने के पूर्व व बाद में शरीर व मन पर क्या प्रभाव पड़ा? यह जानने के लिए शरीर विज्ञान, मनोविज्ञान में जिन उपकरणों की जरूरत पड़ती है, उनको मँगा लो। शेष काम हमारे प्रतिपादन करेंगे।'' यही किया गया। प्रयोगशाला बनायी गई तथा एक विशाल ग्रंथागार खड़ा हो गया। देव संस्कृति के विज्ञान सम्मत आधार के प्रतिपादन का लक्ष्य लेकर इस प्रकार चल पड़ी अनवरत वैज्ञानिक एवं दार्शनिक शोध।

प्रयोगशालाएँ यों तो सहस्रों की संख्या में विश्व भर में है; किन्तु अध्यात्म और विज्ञान के समन्वय की प्रयोगशाला....। मानव मात्र की क्षीण होती जा रही जीवनी-शक्ति, मनोबल और आत्मबल को ऊँचा उठाने, सोचने की पद्धति को बदलने वाली भी कोई विज्ञान सम्मत विधा है ? यह पक्ष सामने आते ही तार्किकों-तथाकथित बुद्धिजीवियों का चिंतन आमूलचूल बदलेगा, ऐसा हमारा विश्वास है।

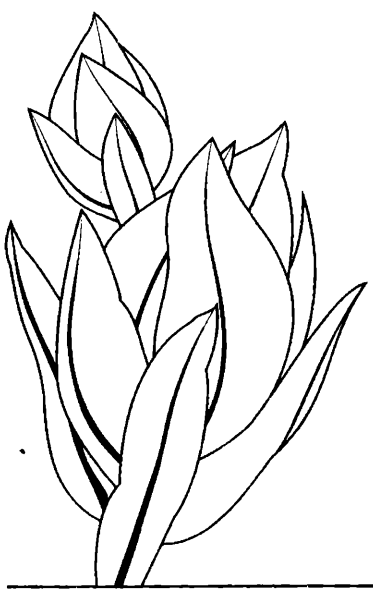
ब्रह्मवर्चस की स्थापना के प्रारंभिक दिन थे। उत्साही वैज्ञानिक दल का प्रयोगशाला में वैज्ञानिक उपकरणों पर जोर अधिक था। गुरुदेव का स्पष्ट मत था कि अध्यात्म चेतना का विज्ञान है और इसका स्थूल प्रयोगशाला से अधिक लेना-देना नहीं। दो टेस्ट ट्यूबों में आँसूओं का विश्लेषण कर यह बताना कठिन है कि किसमें रोते हुए के आँसू हैं और किसमें हँसते हुए के। पदार्थ की एक सीमा है, अध्यात्म विज्ञान के शोध के लिए शरीर और मन को ही प्रयोगशाला बनाना होगा और साधना विज्ञान का सहारा लेते हुए चेतना का रूपांतरण करना होगा।

यह तो परिधि से केन्द्र की ओर अंर्तजगत् की यात्रा का ज्ञान -विज्ञान है, वैज्ञानिक उपकरणों की पहुँच शरीर की जैविक ऊर्जा तक ही एक सीमा तक संभव है। मन की गहराईयों में इसका प्रभावी दखल संभव नहीं। यह तो ध्यान की गहराईयों में संभव है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उज्ज्वल भविष्य के प्रवक्ता महाकाल के अंशधर

निराशा एवं नकारात्मकता के अनवरत आक्रमण के बीच भी पूरी तरह आशावादी बने रहना और उसके लिए निरंतर साधनात्मक पुरुषार्थ करते चलना, यह पहचान है, हमारे प्रिय गुरुदेव की। महाकाल की अंशधर वही सत्ता घोषणा कर सकती है ''इक्कीसवीं सदी, उज्ज्वल भविष्य''...



''हम अकेले हैं, जो अन्य सभी के कथनों का सम्मान करते हुए इतना भर कहते हैं- उन परिस्थितियों को देखते हुए जिस महाविनाश की संभावना व्यक्त की गई है, वह निराधार नहीं है। फिर भी इतना निश्चित है कि वृत्तासुर, महिषासुर, जैसे दुर्दान्त दैत्य जब निरस्त हो चुके हैं, तो कोई कारण नहीं कि सशक्त क्षमता के रहते वर्तमान विनाश संकट को परास्त न किया जा सके और उसके सर्वथा प्रतिकूल सृजन की नई परिस्थितियाँ न बन सकें। लंका दहन के उपरान्त अविलम्ब धर्म राज्य का सतयुगी वातावरण आ गया था। उसकी पुनरावृत्ति फिर न हो सके, ऐसा कोई कारण नहीं है।''

यह संकल्प एक ऐसी सत्ता का है जो यह मान रही है कि परिस्थितियों में बिगाड़ मनुष्य बहुत कर चुका, किन्तु अब सुधार की बारी है। हर युग में सतयुग आता रहा है तो अब कलियुग, जो अपनी अन्तिम साँसे गिन रहा है, क्यों नहीं सतयुग की वापसी के साथ ही पलायन कर युग परिवर्तन को सुनिश्चित करेगा? वस्तुतः यह विधेयात्मक चिन्तन ही इस प्रज्ञापुंज का, ऋषि सत्ताओं की पक्षधर, महाकाल की सत्ता का सर्वाधिक सबल सशक्त पक्ष है जिसने लाखों प्रज्ञा परिजनों में नये प्राण फूँक कर उन्हें पुनर्जीवित कर दिया, अपनी उलटी चाल बदल कर नये सिरे से सतयुगी ब्राह्मण परम्परा वाली जिन्दगी जीने लगना एक प्रकार से नये जीवन के समान ही तो कहा जाएगा।

पूज्य गुरुदेव ने जब अखण्ड ज्योति प्रकाशित की तब द्वितीय विश्व युद्ध चल रहा था। सुदर्शन चक्रधारी श्रीकृष्ण उसके मुखपृष्ठ पर आश्वासन देते विराजमान थे। शीघ्र ही भारत को आजादी मिलने जा रही थी। उसके बाद सम्भावित भारत व्यापी अराजक परिस्थितियों को दृष्टिगत रख साधना-अनुष्ठान की महत्ता एवं ब्रह्मास्त्र अनुष्ठान रूपी गायत्री महापुरश्चरण की आवश्यकता को पत्रिका में प्रतिपादित किया जाने लगा था। इसके बाद सहस्रकुण्डी महायज्ञ 1958 में सम्पन्न हुआ व सभी परिजनों को एक सूत्र में आबद्ध कर गायत्री परिवार रूपी संगठन बनाया।

इस संगठन के माध्यम से अष्टग्रही योग, भारत-चीन युद्ध (1962), भारत-पाकयुद्ध (1965), बंगला मुक्ति संघर्ष (1971), आपातकाल (1976) तक गायत्री की उच्चस्तरीय, पंचकोषी तथा स्वर्ण जयन्ती साधना द्वारा अभयदान देते हुए वे अपनी भूमिका को स्पष्ट करते चले जा रहे थे। उनकी तप साधना भी इसी क्रम से प्रचण्ड होती गयी व उसकी स्थूल परिणति सूक्ष्मीकरण साधना के रुप में 1984 में जाकर हुई इस बीच ''महाकाल

शुद्ध व्यवहार और सदाचार समाज की सुदृढ़ स्थिति के दो आधार स्तम्भ हैं। इनसे व्यक्ति का भाग्य और समाज का भविष्य विकसित होता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और युगप्रत्यावर्तन प्रक्रिया'' (1971) नामक एक पुस्तक एवं अखण्ड ज्योति की लेखमाला (1967) के माध्यम से वे महाकाल के रौद्ररूप व परिजनों को भावी देवासुर संग्राम में अपनी भूमिका समझने व बदलने का संकेत सतत देते आ रहे थे। 1980 के युगसन्धि का बीजारोपण किया गया तथा युगसन्धि के बीस वर्ष व नव-युग के आगमन की वेला सन् 2000 के बाद की निर्धारित की गयी।

इसी के साथ प्रज्ञापुरश्चरण का क्रम आरंभ कर दिया गया व सामूहिक धर्मानुष्ठान की महत्ता बताते हुए 1983 से 1988 तक एक सुनियोजित इसका क्रम चला। इस बीच शान्तिकुञ्ज में आर्यभट्ट परम्परा के अन्तर्गत स्थापित वेधशाला में शोध कार्य चल रहा था। गणना के पूरा होते ही उस स्थान को संस्कारित पावन भूमि मानकर यंत्रों को हटा कर वहाँ बड़े शैड बना दिए गये, जहाँ विधिवत् युगसन्धि महापुरश्चरण वसन्त पंचमी 1989 से आरम्भ कर दिया गया जो लाखों प्रज्ञा परिजनों द्वारा नित्य नियमित रूप से केन्द्र एवं पूरे विश्व में एक साथ सम्पन्न किया जाता रहा।

चूँकि सामूहिक सत्प्रयासों के परिणाम स्वयं पूज्य गुरुदेव ने अपने जीवन में एक वैज्ञानिक की तरह क्रियान्वित एवं प्रस्तुत किए हैं, इसलिए यह विश्वास सुनिश्चित होता चला गया कि यदि उनके निर्देशों के अनुरूप मानव जाति चली तो भविष्य निश्चित उज्ज्वल है।

युग निर्माण के अपने प्रयासों का एक सुनिश्चित प्रारूप पूज्य गुरुदेव ने 1962 में प्रसारित अपने घोषणा पत्र में, युग निर्माण सत्संकल्प में विश्वमानस के समक्ष रख दिया था। इस मैनिफेस्टो का प्रत्येक सूत्र मानव, परिवार, समाज एवं राष्ट्र को आमूलचूल बदलने की आधारशिला के रूप में रखा गया है। एकता, समता की सर्वांगपूर्ण रूपरेखा, वसुधैव कुटुम्बकम् की समग्र परिकल्पना इसमें की गयी है।

इसके बाद महाकाल रौद्र रूप में ताण्डव नृत्य करने की मुद्रा में अखण्ड ज्योति के पृष्ठों पर (1967 में) आने लगे व उन्हीं दिनों युग प्रत्यावर्तन प्रक्रिया का स्वरूप अखण्ड ज्योति के पृष्ठों पर उनने स्पष्ट किया। वे लिखते हैं - ''महाप्रलय का अन्तिम ताण्डव नृत्य तब होता है, जब पंचतत्त्वों से बनी प्रकृति जराजीर्ण हो जाती है।

तत्त्व बूढ़े होने के कारण अपना काम ठीक तरह समयानुसार नहीं कर पाते। ऋतुएँ समय पर नहीं आतीं और उत्पादन, पोषण, विनाश की क्रम व्यवस्था में व्यवधान उत्पन्न हो जाता है। ऐसी स्थिति में महाकाल का अन्तिम ताण्डव नृत्य इस ब्रह्माण्ड को चूर्ण विचूर्ण कर छितरा बिखरा देने वाली महाज्वालाएँ प्रचण्ड करता है और नयी सृष्टि के सृजन की भूमिका सम्पादित करने के लिए महाकाली फिर अपने प्रसव प्रजनन की तैयारी में लग जाती है,'' किन्तु साथ ही आगे वे लिखते हैं -''त्रिपुरारी महाकाल ने अतीत में भी त्रिविध माया मरीचिका को अपने त्रिशूल से तोड़-फोड़ कर विदीर्ण किया था, अब वे फिर उसी की पुनरावृत्ति करने वाले हैं। धर्म जीतने वाला है, अधर्म हारने वाला है। लोभ, व्यामोह और अहंकार के कालपाशों से मानवता को पुनः मुक्ति मिलने वाली है। संहार की आग में तपा हुआ मनुष्य अगले ही दिनों पश्चात्ताप, संयम और नम्रता का पाठ पढ़कर सज्जनोचित प्रवृत्तियाँ अपनाने वाला है। वह शुभ दिन शीघ्र लाने वाले त्रिपुरारी-महाकाल आपकी जय हो! विजय हो!''सम्भव था कि परिजनों को अशुभ परिस्थितियाँ देख कर लगता हो कि समय आखिर बदलेगा कैसे? तो उनने अनेकानेक भविष्य विज्ञानियों, दिव्य द्रष्टाओं के भविष्य कथनों के माध्यम से अपनी बात को और स्पष्ट करते हुए ''युग परिवर्तन एक सुनिश्चित सम्भावना'' व अखण्ड ज्योति के लेखों के माध्यम से अपनी बात को समझाना आरंभ कर दिया था। जीन डीक्सन, जूलबर्न, नॉस्ट्राडेमस, प्रो. हरार, कीरो, मदर थ्रिस्टन, महर्षि अरविन्द एवं स्वामी विवेकानन्द की भारत व विश्व का भविष्य सम्बन्धी शुभ भविष्यवाणियाँ उद्धृत करते हुए उनने लिखा कि ''समय को तो बदलना ही है, क्योंकि यह महाकाल की प्रेरणा है, ईश्वर की इच्छा है, समय की माँग है।

इसे युगधर्म का पाञ्चजन्य उद्घोष भी कह सकते हैं। इसमें प्रचण्ड मानवी पुरुषार्थ उभरेगा, पर स्मरण रखा जाय कि उसके पीछे नियन्ता की प्रचण्ड प्रेरणा और सुनिश्चित योजना काम कर रही होगी।'' ''प्रज्ञावतार का स्वरूप और क्रियाकलाप''

भिखारी को दाता के सामने जैसे तुच्छ बनना पड़ता है, ऐसे ही यदि तुम्हें शिक्षकों के सामने तुच्छ बनना पड़े तो भी शिक्षा प्राप्त करना ही कर्त्तव्य है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

''ध्वंस के साथ नवसृजन भी'' तथा ''सुरक्षा साधना का समर्थ ब्रह्मास्त्र'' जैसे लेखों द्वारा जहाँ उनने महाकाल द्वारा नवसृजन की सुनिश्चितता का तथ्य प्रतिपादित किया, वहीं ''इक्कीसवीं सदी बनाम उज्ज्वल भविष्य'' (दो खण्डों) तथा ''सतयुग की वापसी'', ''प्रज्ञावतार की विस्तार प्रक्रिया'' जैसी पुस्तकों द्वारा सबकी जिज्ञासाओं का समाधान करते हुए यह स्पष्ट किया कि जब अन्तराल बदलेगा, भाव संवेदनाएँ जागेंगी, तो सद्बुद्धि का उदय होगा। प्रज्ञावतार की व्यष्टि तंत्र में अवतरित यही सूक्ष्म प्रेरणा है। यही सद्बुद्धि व्यक्ति के क्रियाकृत्यों में आमूलचूल परिवर्तन कर उदार सहकारिता पर आधारित समाज बनाएगी।

उनके सभी भविष्य कथनों को मनीषी वर्ग ने बड़ी गंभीरता से पढ़ा है व विगत एक दशक की परिस्थितियों का मूल्यांकन करते हुए लिखा है कि परिवर्तन बड़ी तेजी से आ रहा है। देखते-देखते उपनिवेशवाद पूरी धरती से मिट गया एवं युद्ध पर उतारू दो महाशक्तियों के राष्ट्रनायकों का दिमाग न जाने किस अदृश्य शक्ति ने परस्पर संघर्ष से उल्टी सहकार-सृजन की दिशा में मोड़ दिया। पूर्वी यूरोप के देशों में आई परिवर्तन की लहर ने सारे अधिनायकवादी उखाड़ फेंके। चारों ओर मुक्त प्रजातंत्र है, कुप्रचलन अनैतिकता को अंगीकार करने वालों के विरुद्ध विश्व भर में लोक निन्दा व प्रताड़ना का माहौल बना है। सभी मिलजुल कर रहने व प्रकृति से सहचर्य बिठाकर रहने की रीतिनीति अपनाने की दिशा में अग्रसर हुए हैं। जाने कौन सी अदृश्य शक्ति मनुष्य का चिन्तन इस तेजी से बदल रही है कि परमार्थ के लिए सत्प्रयोजनों के लिए देवमानवों में सहज ही उमंगें उठने लगी हैं। यदि यह परिवर्तन एक छोटे स्तर पर भी कहीं क्रिया रूप लेता दिखाई देता हो तो भविष्य में महाकाल एवं अदृश्य जगत में विद्यमान समर्थ सत्ताओं से और व्यापक स्तर पर सक्रिय होने की आशा की जा सकती है।

शान्तिकुञ्ज एवं प्रज्ञा अभियान के रूप में महाकाल के अग्रदूत द्वारा एक छोटा सा बीजारोपण हो चुका व उसने अपनी सूक्ष्मीकरण साधना द्वारा इसे प्रचण्ड गति प्रदान की। अब वे सूक्ष्म व कारण शरीर से सक्रिय हैं व सुरक्षा कवच पूरी मानव जाति के लिए विनिर्मित कर रहे हैं। यदि उनके बताए निर्देशों को हम जीवन में उतारते चलें तो यह परिवर्तन भावी कुछ वर्षों में ही बड़ी तेजी से भारत से आरम्भ होकर विश्वभर में संव्याप्त होता दृष्टिगोचर होगा। जाग्रतात्माओं को यही तो उस सत्ता का अन्तिम सन्देश भी रहा है। ◈

एक दिन गुरुदेव ने एक कार्यकर्ता से कहा पहले जो मैं लिखता था वो मेरा लिखा हुआ है, किन्तु अब जो मैं लिख रहा हूँ, वह भगवान् महाकाल मुझसे लिखवा रहे हैं, मेरा यह लिखा हुआ पत्थर की लकीर है। युग निर्माण मेरे लिए कोई स्वप्न लोक की परिकल्पना नहीं है, यह मेरे लिए हाथ में रखे हुए आँवले की तरह स्पष्ट है। दुनिया को उज्ज्वल भविष्य का विश्वास दिलाओ। निःसंदेह रूप से महाकाल का अंशधर बनकर परम पूज्य गुरुदेव उज्ज्वल भविष्य का ताना-बाना बुन रहे थे। उज्ज्वल भविष्य की आशा हमें नहीं ही छोड़नी चाहिए। यदि मनोरथ आदर्शों पर आधारित है तो उसकी पूर्ति में संदेह नहीं ही करना चाहिए। रात्रि होती है - सच है, पर क्या यह सच नहीं कि उसके बाद दिन का उदय होना भी सुनिश्चित है।

बीज बोया जाता है, तब लगता है कि उसका अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया, पर जिन्हें आशामयी दृष्टि प्राप्त है, वे अपनी हर दृष्टि से देखते हैं कि इस गलने में भी सुविकसित होने और उज्ज्वल भविष्य की संभावना विद्यमान है। बीज को मोटी दृष्टि से ही गला हुआ कहा जायेगा, वस्तुतः यह विशाल वृक्ष में उसकी कष्टकर परिणति मात्र है। आज की अभावग्रस्त या कष्टकर स्थिति को स्थायी नहीं माना जाना चाहिए और यह विश्वास रखा जाना चाहिए कि इस धरती पर अरुणोदय की प्रक्रिया निरंतर दुहराई जाती रहेगी।

शुभ संकल्प वास्तव में वह निष्ठा, वह लगन और वह तीव्रता होती है; जो किसी लक्ष्यपूर्ण शुभ कामना अथवा कल्पना के साथ जुड़ी रहती है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विश्वराष्ट्र की कुण्डलिनी का जागरण

परम पूज्य गुरुदेव की साधना का विराट् उद्देश्य : सामान्य क्रम में साधना का उद्देश्य आत्मबोध, मोक्ष, मुक्ति एवं कुण्डलिनी जागरण आदि के लिए पुरुषार्थ करना होता है, जिसका प्रतिफल भी साधक की निष्ठा के अनुरूप मिलने लगता है, जिसे अद्‌भुत, आश्चर्यजनक एवं अलौकिक कहा जाता है। साधक की गणना सिद्ध, तपस्वी, महामानव, अतिमानव, देवमानव की श्रेणी में होने लगती है, किन्तु सामान्यत: इनमें व्यक्ति की स्वार्थपरता ही प्रधान होती है और इनमें व्यक्ति विशेष का निजी उत्कर्ष अभ्युदय ही छिपा होता है।

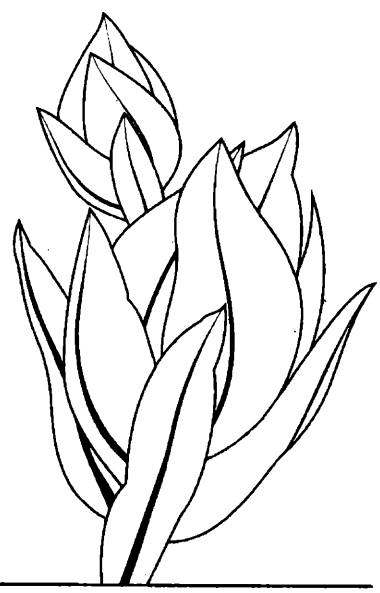
परम पूज्य गुरुदेव की साधना इन व्यक्तिगत स्वार्थ सीमाओं से ऊपर उठी हुई थी। उन्हीं के शब्दों में ''मेरी साधना का उद्देश्य किसी मोक्ष या निर्वाण की खोज नहीं है। इसका मुख्य उद्देश्य जीवन एवं अस्तित्व का परिवर्तन है।''

वस्तुत: जिसमें 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' की, 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की धारणा परिपक्व हो जाती है, उसकी कामनाएँ एवं चेष्टाएँ विश्वकल्याण के निमित्त ही केन्द्रित हो जाती है। उसका अपना कुछ रहता ही नहीं, उसका चिन्तन और कर्त्तृत्व विराट् के लिए ही समर्पित होता है। उसकी अभिरुचि विश्ववाटिका को फला-फूला देखने की ओर ही केन्द्रित होती है।

विश्वमानव के केन्द्र के रूप में युग परिवर्तनकारी साधनात्मक पुरुषार्थ : विश्वमानव के केन्द्र के रूप में परम पूज्य गुरुदेव ने इसी पृष्ठभूमि में साधक के रूप में अनेकों मानदण्ड स्थापित किए। इनमें से एक था, विश्वजीवन को केन्द्र बनाकर किया गया साधनात्मक पुरुषार्थ, जो कि मानवीय इतिहास में बेजोड़ है। जितना विशाल उनका युग निर्माण का संकल्प था, उतना ही विराट् उनका साधनात्मक पुरुषार्थ था। आखिर युग निर्माण आन्दोलन का लक्ष्य एक-दो व्यक्ति, किसी धर्म विशेष या वर्ग विशेष में परिवर्तन लाना नहीं है। प्रश्न पूरे युग के परिवर्तन एवं निर्माण का है, समूचे समाज को आध्यात्मिक समाज में बदलने का है।

स्वयं पूज्यवर के शब्दों में-''एक दो व्यक्ति का प्रश्न हो तो उसे प्रलोभन, परामर्श अथवा कूटनीति के सहारे बदला और अभीष्ट दिशा में चलाया जा सकता है। पर जहाँ 600 करोड़ व्यक्तियों के भाग्य का निर्धारण करना हो, अनेक भाषा-भाषी, अनेक वातावरण में पले, अनेक परिस्थितियों से घिरे और अनके संस्कारों से बँधे, अनेक परम्पराओं के अभ्यस्त लोगों का सवाल हो, वहाँ उनकी मान्यताओं में उच्चस्तरीय संस्कारों का आरोपण, आदर्शों का अवलम्बन करने हेतु तत्पर करना कितना कठिन हो सकता है? इसका अनुमान लगाना कठिन नहीं है। ऐसे महान् प्रयोजन के लिए मानवी नहीं दैवी

सूक्ष्मीकरण साधना (1984-1986) की पराकाष्ठा पर उभरा एक प्रखर चिंतन देवात्मा भारत एवं विश्वराष्ट्र की कुण्डलिनी का जागरण। यह एक विराट् स्तर का तांत्रिक प्रयोग था। जिसका उद्देश्य था, भविष्य के लिए साधनात्मक आधार खड़े करना। स्वयं गुरुदेव ने कहा है कि विश्वामित्र के बाद यह प्रयोग पहली बार किया जा रहा है...



किसी समय परमार्थ कार्य में निरहंकारिता का समावेश तभी सम्भव हो सकता है, जब मनुष्य का अन्त:करण निर्मल एवं शुद्ध होगा।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शक्ति चाहिए। मानवी शक्ति के दबाव में मनुष्य हाँ में हाँ मिला सकता है, पर अन्तरात्मा के बदल जाने की बात असाधारण है। इसे सच्चे अर्थों में युग परिवर्तन की आधारशिला कह सकते हैं।''

विश्वराष्ट्र की कुण्डलिनी जागरण का महाप्रयोग : इसी को सम्पन्न करने के लिए परम पूज्य गुरुदेव ने अध्यात्म विद्या का गहनतम प्रयोग 'सूक्ष्मीकरण साधना' के रूप में सम्पन्न किया। इसके अन्तर्गत पाँच वीरभद्रों के उत्पादन के साथ, विश्वराष्ट्र की कुण्डलिनी जागरण की प्रक्रिया सम्पन्न हुई। विश्वराष्ट्र की कुण्डलिनी जागरण का महाप्रयोग पुरातन काल में ब्रह्मर्षि विश्वामित्र द्वारा किया गया था, तब विश्व वसुधा का कायाकल्प हुआ था और परिस्थितियों में आमूल-चूल परिवर्तन हुआ था। इस महाप्रयोग को वर्तमान समय में करने के पीछे युग परिवर्तन एवं युग निर्माण का महत्तर उद्देश्य निहित था, जिससे मानव की बौद्धिक विकृतियों से उपजे बाह्य प्रकृति एवं अंत: प्रकृति के अनुसंधान को समाप्त किया जाए और उन सम्भावनाओं को साकार किया जा सके, जिससे मनुष्य देवता बन सके और धरती स्वर्ग।

इसके विश्वव्यापी प्रभाव: सन् 1984-85 एवं 86 इन तीन वर्षों में सम्पन्न हुई इस अलौकिक साधना की फलश्रुति बताते हुए पूज्यवर लिखते हैं-''महाप्रज्ञा की जो इन तीन वर्षों में कुण्डलिनी जाग्रत हुई है उसकी ऊर्जा का उदयन प्रथम इस देश से होगा। पीछे क्रमश: वह समस्त विश्व में फैलता जाएगा। उसके प्रभाव से होता हुआ परिवर्तन विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न रूपों में दृष्टिगोचर होगा। यह सम्भावना नहीं, सुनिश्चितता है।''

विध्वंस-उज्ज्वल भविष्य का प्रथम चरण : नवयुग की व्यवस्था करने वाला यह परिवर्तन किस क्रम में होगा, पूज्यवर लिखते हैं- ''इस संदर्भ में यह समझ कर चलना चाहिये कि सर्वप्रथम जो जमा हुआ है, जड़ जमाये हुए हैं, उसे उखाड़ना पड़ेगा। भले ही इसमें राहत के स्थान पर असुविधा ही सामने क्यों न आए ?.... नवजात शिशु को गोदी में खिलाने से पूर्व प्रसव पीड़ा सहनी पड़ती है और खून खच्चर होता है। नाली में जमी गंदगी साफ करते समय उस सारे क्षेत्र में दुर्गन्ध फैलती है। फोड़े को अच्छा करने से पूर्व उसका ऑपरेशन होता है और जमा हुआ विषैला द्रव्य बाहर निकालना पड़ता है।

यही प्रक्रिया कुण्डलिनी ऊर्जा के देश व्यापी, विश्व व्यापी बनाने से पूर्व आरम्भिक दिनों में दृष्टिगोचर होगी। जो विकार, विद्वेष, प्रपंच, पाखण्ड, अनाचार, कुविचार मुद्दतों से जड़ जमाए बैठे हैं, उन्हें उखाड़े बिना नवीन स्थापनाओं का सिलसिला नहीं चल सकेगा, उपक्रम नहीं बन सकेगा। इसलिए इन आरम्भिक दिनों में यदि तोड़-फोड़ हो तो, ऐसा नहीं समझना चाहिये कि सब अनिष्ट ही अनिष्ट हो रहा है, बल्कि स्थिति कुम्हार जैसी है। कुम्हार मिट्टी को पानी से भिगोता, डण्डे से कूटता और पैरों से रौंदता है। इसके बाद चाक पर बर्तन बनाने के उपरान्त उन्हें आँवे पर पकाता है। नवयुग के नवनिर्माण में भी इसी प्रकार की प्रक्रिया को परिवर्तन की व्यवस्था द्वारा अपनाया जा रहा है। इन दिनों जहाँ-तहाँ उपद्रव हो रहे हैं। तोड़-फोड़ चल रही है, तो भी किसी को निराश होने की आवश्यकता नहीं है।

विश्वव्यापी घटनाचक्रों की एक झलक : सूक्ष्मीकरण की साधना के बाद अब तक के घटनाचक्रों में सृजन के पूर्व की इस अनिवार्य उथल-पुथल एवं उठापटक को देख सकते हैं। घटनाक्रमों के इस दौरान रूढ़ियों के अंतराल को दशकों में समेट कर प्रस्तुत किया है। साम्यवाद का किला इसी दौरान देखते-देखते ढह गया। पूँजीवाद का लोभ एवं शोषण प्रधान अमानवीय चेहरा जगजाहिर है व अपने अंतिम कुटिल दाँव चल रहा है।

साम्प्रदायिक विद्वेष, जातीय घृणा एवं नक्सलवादी हिंसा इस दौरान अपने चरम पर रही है। राजनीति से लेकर क्रिकेट तक घोटाले दर घोटालों ने उभरकर भ्रष्टाचार के नकाब को उतारा है। अप संस्कृति के नग्न नृत्य को अपने चरम उन्माद में चारों ओर देखा जा सकता है। इस तरह के तमाम घटनाक्रम उपचार के पूर्व के भय एवं दर्द भरे विध्वंसक एवं उथल-पुथल वाले दृश्य प्रस्तुत कर रहे हैं।

इसे परम पूज्य गुरुदेव ने अपनी विश्व कुण्डलिनी जागरण के प्रभाव के अन्तर्गत, उज्ज्वल भविष्य की संभावनाओं का प्रथम चरण बताया और इसके अगले चरण को स्पष्ट करते हुए पूज्यवर कहते हैं-

महान् पुरुषों के पास दया से लबालब भरा हुआ हृदय उनके पास कुबेर के भण्डार की तरह मौजूद रहता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

"यह समय 21वीं सदी का होगा, जिसमें सृजन का, अभ्युदय का, सभ्यता का विकास तेजी से होता दृष्टिगोचर होगा।"

जड़-चेतन प्रकृति में परिवर्तन : इसके प्रभाव जड़ प्रकृति, जीवधारी, मनुष्य एवं परिस्थितियों पर किस रूप में दिखाई देंगे। इस विषय में पूज्यवर कहते हैं-"मृत्तिका की उर्वरता बढ़ेगी, खनिजों के भण्डार का उत्खनन अनुपात बढ़ जाएगा। धातुएँ मनुष्य की आवश्यकता से अधिक ही उत्पन्न होंगी। खनिज तेलों की कमी न पड़ेगी। रसायनें प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होगी। वृक्ष वनस्पति उगाने के लिए मनुष्य को अधिक प्रयास न करना पड़ेगा। वे प्रकृति की हलचलों से ही उपजते और बढ़ते रहेंगे। जलाशयों की कमी न पड़ेगी। वनौषधियाँ फिर प्राचीनकाल की तरह इतनी गुणकारी होंगी कि चिकित्सा के लिए बहुमूल्य उपचार न ढूँढने पड़ेंगे।

उपयोगी प्राणी बढ़ेंगे और दीर्घ काल तक जीवित रहेंगे। हानिकारकों की वंशवृद्धि रुक जायेगी और वे जहाँ-तहाँ अपना अस्तित्व बचाते हुए ही दिख पड़ेंगे। जलवायु में पोषक तत्त्व बढ़ेंगे और वे प्रदूषण को परास्त कर देंगे। मलीनता घटेगी और शुद्धता अनायास ही बढ़ेगी। प्रकृति प्रकोपों के समाचार यदा-कदा ही सुनने को मिलेंगे। बाढ़-सूखा, अकाल, महामारी, भूकंप, ज्वालामुखी विस्फोट, ओलावृष्टि, टिड्डी इत्यादि हानिकारक उपद्रव प्रकृति के अनुकूलन से सहज ही समाप्त होते चले जायेंगे।"

मानवी प्रकृति में परिवर्तन

मानवीय प्रकृति एवं सामाजिक जीवन में किस तरह के परिवर्तन होंगे इस संदर्भ में वे लिखते हैं-"अगली शताब्दी में उसकी प्रकृति असाधारण रूप से बदल जाएगी। दुर्व्यसन हर किसी को अरुचिकर लगेंगे और उनमें जनसाधारण की न प्रीति रहेगी, न प्रतीति। चोरी, ठगी, निष्ठुरता, क्रूरता, पाखण्ड, प्रपंच अपने लिए न अनुकूलता देख पायेंगे, न अवसर प्राप्त करेंगे।

अधिकांश के जब गुण, कर्म, स्वभाव में सज्जनता भरी होगी, तो दुष्ट दुर्जनों की करतूतें न तो बन पड़ेंगी और न सफल होंगी।.... लोग आत्मविश्वासी, स्वावलम्बी और पुरुषार्थपरायण होंगे, तो दरिद्रता, अभावग्रस्तता के लिए कोई कारण ही शेष न रहेगा। तब न किसी को क्रोध का आवेश ही जकड़ेगा, न प्रतिरोध के लिए हाथ उठेगा। न छोटे युद्ध होंगे और न महायुद्ध रचे जायेंगे।"

उज्ज्वल भविष्य सुनिश्चित है, बस वर्तमान को सँवारें : आगे पूज्यवर लिखते हैं-"परिवर्तित समय सुख-संतोष से भरी-पूरी परिस्थितियों में विगत साम्राज्य की तरह चिरकाल तक बना रहेगा। उसे 'सतयुग की वापसी' नाम दिया जाए तो वह उचित ही होगा।'

इस तरह परम पूज्य गुरुदेव ने विश्व-राष्ट्र कुण्डलिनी जागरण की कठिन तपश्चर्या द्वारा युग परिवर्तन एवं युग निर्माण की अदृश्य भूमिका तैयार की। जिसकी शुद्धिकरण वाली ध्वंस प्रधान प्रक्रिया के अंतिम चरणों में हम सब गुजर रहे हैं और इसका सृजन प्रधान अगला चरण आने ही वाला है। गुरुसत्ता द्वारा निर्देशित ऋषि चिन्तन एवं युग साधना के अनुरूप अपने जीवन को ढालते हुए हम वर्तमान की शोधनप्रधान प्रक्रिया को अनावश्यक रूप से कष्टकारक न बनाएँ और उज्ज्वल भविष्य के प्रति आश्वस्त रहें। ◈

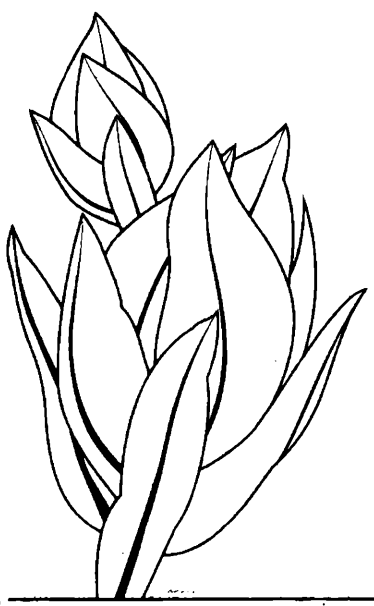
किसी व्यक्ति ने पूज्यवर से कहा, गुरुजी, हमारी कुण्डलिनी जगा दीजिये। पूज्यवर अत्यन्त गंभीर होकर बोले, मैं व्यक्ति की कुण्डलिनी जगाऊँगा, नहीं, मैं अब राष्ट्र की-विश्व की कुण्डलिनी जगाऊँगा। महर्षि अरविन्द ने अतिमानस के अवतरण की बात की। उन्होंने विश्व के मनोमय कोश को जागृत किया था। पूज्य गुरुदेव के ध्यान के प्रयोग में उन्होंने पहले कारण शरीर का केन्द्र हृदय चक्र को बताया था, पर सूक्ष्मीकरण साधना के आसपास उन्होंने कारण शरीर के केन्द्र सहस्रार चक्र को बताया। कुछ परिजन कहने लगे, गुरुजी अब तक तो हृदय चक्र में ध्यान करते आये, अब यह परिवर्तन करना ठीक रहेगा। पूज्यवर ने दृढ़तापूर्वक कहा, हाँ बेटा, अब करना यही है। विचार करने पर अहसास हुआ कि पूज्यवर ने अब विश्व कुण्डलिनी के जागरण द्वारा उसके आनन्दमय कोश का जागरण कर लिया था, अतः अब सहस्रार चक्र में ध्यान करना सबके लिए सुलभ हो गया।

निर्मल बुद्धि और श्रम में श्रद्धा, यही दो वस्तुएँ तो किसी मनुष्य को महान् बनाने वाली हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

युगद्रष्टा एवं युगस्रष्टा की भूमिका में परम पूज्य गुरुदेव

बड़ा ही विलक्षण है, इन गुणों का समावेश। द्रष्टा - विज़नरी तो कई होते हैं, पर स्रष्टा विरले ही होते हैं। भविष्य उनके सामने नर्तन करता था एवं वे जो कहते थे, उसका सृजन स्वतः होता चला जाता था। ऐसी सत्ता को पहचानने में लोगों ने देरी क्यों कर दी....



'द्रष्टा' का सामान्य अर्थ है देखने वाला; किन्तु शब्द का प्रयोग सूक्ष्मदर्शी दिव्यदृष्टि सम्पन्नों के लिए ही किया जाता है। वास्तविक भविष्य द्रष्टा भी बहुत कम देख पाते हैं, किन्तु युगान्तर दृष्टि तो उनमें से भी किसी-किसी के पास होती है, युगद्रष्टा ऐसे समर्थ द्रष्टाओं को ही कहते हैं। युगद्रष्टा होना भी बड़ी बात है, किन्तु युगस्रष्टा होना उससे भी बहुत बड़ी बात है। युग स्रष्टा की क्षमता तो दिव्य अवतारी पुरुषों में ही होती है। पू. गुरुदेव में युगद्रष्टा के साथ युगस्रष्टा के भी गुण थे। उन्होंने जो कहा और उन संदर्भों में जो होता दिखाई दिया, उनका समीक्षात्मक अध्ययन करने से यही निष्कर्ष उभर कर सामने आता है।

जब ब्रह्मास्त्र छोड़ा : उन्होंने जब सन् 58 में 1008 कुण्डीय यज्ञ की घोषणा की, तो वह अत्यन्त चौकाने वाला प्रसंग था। उस समय कोई ऐसा करना तो दूर, ऐसा होने की कल्पना भी नहीं कर सकता था। उनके सहयोगी-हितैषी भी परिहास करने लगे, कहने लगे ''इस असंभव प्रयास में मत उलझिए। लाज रखने के लिए 1008 मिट्टी के सकोरों में अग्नि जलाकर अपने कुछ लोग ही उनमें आहुतियाँ डालकर संकल्प की पूर्ति कर देंगे।''

वे चुपचाप मुस्कराते रहे, कार्य आगे बढ़ाते रहे और लोगों ने देखा कि तमाम शक्ति सम्पन्नों, प्रतिष्ठितों के विरोध के बावजूद, स्वल्प साधन वालों के माध्यम से वह यज्ञ एक अद्‌भुत कीर्तिमान् की तरह सम्पन्न हुआ।

यह तो हुई स्थूल प्रक्रिया की समीक्षा, किन्तु इससे भी बड़ी बात यह हुई कि उस यज्ञानुष्ठान को उन्होंने 'ब्रह्मास्त्र अनुष्ठान' का नाम दिया। लोगों ने समझा कि 'अचंभेवाला' नाम रखकर लोगों को आकर्षित करने का मनोवैज्ञानिक खेल खेला गया है। लेकिन सूक्ष्म अध्ययन से स्पष्ट होता है कि वह ब्रह्मास्त्र अनुष्ठान ही था और पूर्ण सफल रहा।

वे आवश्यकतानुसार ही खुले : अवतारी पुरुषों की विशेषता यही होती है कि वे अपना उतना ही स्वरूप समय-समय पर खोलते चलते हैं, जितना प्रकट करना नितान्त आवश्यक हो जाता है। उनकी दिव्य क्षमता का अगला पर्दा खुला सन् 62 के अष्टाग्रही योग के समय।

अष्टाग्रही योग वर्तमान समय का ऐसा पहला प्रसंग था, जब सूक्ष्म जगत् की किसी प्रक्रिया को इतना अधिक महत्त्व दिया गया। अधिकांश लोग खण्ड प्रलय जैसी किसी प्राकृतिक आपदा या अणु विस्फोट जैसे किसी अनर्थ की कल्पना से अत्यधिक भयभीत हो रहे थे। कुछ

सूक्ष्म साधना में आकांक्षाओं, मान्यताओं एवं भावनाओं को उच्चस्तरीय बनाया जाता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लोग इस सबको ढकोसला कहकर उसकी उपेक्षा कर रहे थे। ऐसी स्थिति में पू. गुरुदेव ही एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने उक्त दोनों कल्पनाओं-जल्पनाओं से भिन्न अपना सुनिश्चित मत संतुलित शब्दों में सामने रखा।

अष्टाग्रही योग के घोषित समय से 2 माह पूर्व ही उन्होंने उसके बारे में अखण्ड ज्योति में यह छाप दिया कि स्थूल दृष्टि से अष्टाग्रही योग के समय भी ऐसी ही परिस्थितियाँ रहने वाली हैं, जैसी यह पंक्तियाँ पढ़ते समय हैं, किन्तु सूक्ष्म जगत् में भारी परिवर्तन होंगे। युग संधिकाल की उथल-पुथल यहीं से प्रारम्भ हो रही है। इसलिए जप-तप तो खूब किया जाए। लेकिन किसी प्रकार का भय या आतंक न फैलने दिया जाए।

इतिहास साक्षी है कि उनका कथन सत्य हुआ। अष्टाग्रही योग के दौरान कोई कल्पित अशुभ घटना नहीं घटी। किन्तु उनके दूसरे, सूक्ष्म जगत् में भारी परिवर्तन वाले कथन को गिने-चुने लोगों ने ही महत्त्व दिया होगा, जब कि उन्होंने अनेक महत्त्वपूर्ण बातें उस समय कही थीं, जैसे "युग परिवर्तन का सक्रिय समय प्रारम्भ हो रहा है, सारे विश्व को बड़ी विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा, उत्पन्न संकटों के निवारण के लिए स्थूल प्रयास अपर्याप्त होंगे, आध्यात्मिक पुरुषार्थ भी करने होंगे.....। भारत को विश्व के आध्यात्मिक मार्गदर्शन की स्थिति में आना होगा; किन्तु इसके लिए सोने को शुद्ध करने के लिए अग्नि में बार-बार तपाए जाने जैसी प्रक्रिया से होकर गुजरना होगा आदि.....।"

भारत के उत्कर्ष के संदर्भ में उन्होंने लिखा था कि वैज्ञानिक तकनीक की दृष्टि से भारत तेजी से आगे बढ़ेगा। आर्थिक विकास के क्रम में आवश्यकता पड़ी, तो प्रकृति अपने गुप्त भण्डार खोल देगी।

राष्ट्रीय संदर्भ में : राष्ट्र पर उगने वाले संकटों के प्रति पहले से सावधान करना तथा संकट आ पड़ने पर उनके उपचार में जुट पड़ना उनका स्वभाव रहा। चीन युद्ध, पाकिस्तान एवं बंगलादेश के युद्धों आदि के समय उन्होंने स्वयं भी विशेष तप किये तथा पूरे गायत्री परिवार से विशेष अनुष्ठान करवाए। वे श्रेय लेने की अपेक्षा श्रेय बाँटना पंसद करते थे, इसीलिए अपने प्रयासों को गुप्त ही रखते थे, किन्तु कभी-कभी उनकी झलक मिल जाती थी-

जब श्री लालबहादुर शास्त्री प्रधानमंत्री बने, तो पू. गुरुदेव ने कहा था "अब कुछ समय के लिए देश में आध्यात्मिक वातावरण रहेगा।" शास्त्री जी के तपस्वी जीवन का प्रभाव कुछ ही समय में दिखाई दिया। विजयवृत जैसे प्रसंगों में सारे देश में नैष्ठिक व्रतशीलता उभर आई। लोगों को देश में आध्यात्मिक वातावरण दिखने लगा। उस समय कुछ समय वाली बात स्पष्ट नहीं हुई। उस कथन का रहस्य तब खुला, जब मात्र 18 माह बाद शास्त्री जी चल बसे।

इसी प्रकार जब श्रीमती इन्दिरा गाँधी प्रधानमंत्री बनीं, तो पू. गुरुदेव ने कहा "नारी उत्कर्ष की दिशा में यह एक बड़ी उपलब्धि है। विश्व के सबसे बड़े प्रजातंत्र की प्रधान एक महिला बन गयी।" उनकी बात पर एक मुँह लगे परिजन ने आक्षेप किया—"आचार्य जी! आप भी क्या पश्चिमी सभ्यता में पली लड़की की तारीफ कर रहे हैं.....।" पू. गुरुदेव ने प्यार भरी झिड़की सुनाते हुए कहा "चुप रहो! तुम नहीं जानते, उसका एक पक्ष ऐसा भी है कि वह काम करेगी और हम लोग शक्ति देंगे।"

बांग्लादेश ऑपरेशन के समय पूज्यवर हिमालय प्रवास पर थे। उस समय भारतीय सेना की सफलता पर सभी के मुख से एक ही बात निकल रही थी कि यह सफलता तो किसी दिव्य शक्ति का अनुदान है। स्वयं इन्दिरा जी ने अंतर्राष्ट्रीय पत्रकार वार्ता में यह बात कही थी कि यह जीत भारत की आध्यात्मिक शक्तियों की है। पूज्य गुरुदेव की उसमें सुनिश्चित भूमिका रही थी—यह बात किसी प्रसंग में सहसा प्रकट हो गयी। बांग्लादेश ऑपरेशन पूरा हो चुका था।

वन्दनीया माताजी को हृदय का दौरा पड़ा। (यह भी लीला ही कही जाएगी, क्योंकि उसके बाद ई.सी.जी. में कभी हृदय रोग के चिह्न प्राप्त नहीं हुए) पू. गुरुदेव हिमालय से शान्तिकुज लौटे तो उन्होंने कहा—

"माताजी की जरूरत अभी मिशन को है तथा उन्हें मेरी जरूरत पड़

सुख गुण ही चेतन पदार्थ का है, जड़ का नहीं, तो वह बेचारा जड़ पदार्थ हमें कैसे सुख देगा?

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गयी है, इसलिए मैं कुछ जल्दी आ गया। कुछ और भी जल्दी आ जाता, किन्तु इस (बंगलादेश की) समस्या का हल निकलने के पहले मैं आ नहीं सकता था।''

सूक्ष्मीकरण के समय : सूक्ष्मीकरण साधना के समय तो वे अपनी स्थूललीला का संवरण करने लगे थे, इसलिए उनके कथन बड़ी स्पष्टता से उभर कर आने लगे थे। उन्होंने ढेरों अनपेक्षित घोषणाएँ की, जिनसे उनके द्रष्टा और स्रष्टा दोनों रूपों के स्पष्ट प्रमाण मिल जाते हैं। सूक्ष्मीकरण के दौरान अखण्ड ज्योति में छपे कुछ प्रसंगों पर ध्यान दें - इस अंक के प्रतिपादनों को परामर्श की भाषा में लिखा गया है। लोगों को ऐसा करना चाहिए, इस मार्गदर्शन के पीछे जन-जन का कर्त्तव्य बोध उजागर किया गया है, पर वस्तुतः यह समूचा प्रतिपादन सुनिश्चित भविष्यवाणियों की तरह है। उन्हें अकाट्य एवं विश्वस्त संभावनाएँ मानकर चला जा सकता है।

(अ. ज्यो. फरवरी 87, पृष्ठ 63)

उक्त पंक्तियों में एक सज्जन व्यक्ति की शालीनता भरे शब्दों में द्रष्टा की स्पष्ट दृष्टि एवं स्रष्टा का आत्मविश्वास बहुत स्पष्टता से झलकता है। अगली पंक्तियों में वे वैसी ही शालीनता के साथ अपने द्रष्टा एवं स्रष्टा स्वरूप को अधिक स्पष्ट करते हुए लिखते हैं— अनाचार की इस बेला में दैवी शक्तियों का एक समूचा गुच्छक कार्यक्षेत्र में उतर रहा है। उस समुदाय में एक इकाई हम भी हैं।

दैवी शक्तियाँ सीने पर गोली रखकर पीछे हट-पीछे हट कहने वालों से भी किसी पर सामयिक राजीनामा करा देंगी। आगे बढ़े तो खैर नहीं-आगे बढ़े तो खैर नहीं के उद्घोष दोनों ओर से हो रहे हैं। ऐसी दशा में जिन्हें अपनी हस्ती नेस्तनाबूद नहीं करानी है, समझदारी से काम ले सकते हैं और बहादुरी के साथ पीछे हट सकते हैं। फिलहाल का युद्ध सुनिश्चित रूप से टल जाएगा। निशाना सधी हुई अन्तर्महाद्वीपीय मिसाईलें फिलहाल रुक जाएँगी।

(अ.ज्यो. जुलाई 84)

विश्वयुद्ध की विषम संभावनाओं से चिंतत पाठकों को वे स्पष्ट आश्वासन देते हैं—अगले दिनों महाविनाश की घोषणा हर क्षेत्र से हो रही है। परिस्थितियों को देखने वाले एक ही बात कहते हैं कि महाविनाश अब आया-तब आया।

इतने पर भी हम अकेले का यह कथन अन्य सभी के प्रतिकूल है कि यह दुनिया न केवल जिएगी वरन् और भी अच्छी बनेगी। जिन्हें रुचि हो वे इस भविष्यवाणी को नोट कर लें। युद्ध जहाँ-तहाँ अघोषित स्तर के ही होते रहेंगे। कोई ऐसी विपत्ति खड़ी न होगी, जिससे समूचे संसार भर के मनुष्य समुदाय का भविष्य ही संकट में घिर जाए।

(अ.ज्यो. जुलाई 84, पृष्ठ 49)

दुनिया ने देखा कि किस प्रकार विश्व युद्ध की घटाएँ गहरा कर भी स्वतः ही कहीं विलीन हो गई। छोटी-मोटी झड़पों के बाद ही उनके आतंकवादी जोश पर सद्विवेक हावी हो गया। अगले चरण में नक्षत्र युद्ध जैसी विभीषिका के बारे में वे लिखते हैं- नक्षत्र युद्ध की दिनों दिन बड़ी डींग हाँकी जा रही है; पर उसका पूर्णतया असफल रहना भी निश्चित है। आकाश पर आधिपत्य जमाने के कितने प्रयास हो चुके, कितने ही होने जा रहे हैं, पर इसे भी ध्रुव सत्य मानना चाहिए कि इस संदर्भ में जो जितना उत्साह दिखा रहे हैं, उन्हें अधिक निराशा पल्ले बाँधनी पड़ेगी।

(अ.ज्यो. फरवरी, पृष्ठ 61)

सबको पता है कि नक्षत्र युद्ध की तैयारियों पर रोक लगाने के लिए तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति श्री रेगन किसी प्रकार भी तैयार नहीं थे, किन्तु दिव्य चेतना की चपेट से वे भी 'चीं' बोल गए। कई राकेट असफल हो गए तथा उन्हीं के वैज्ञानिकों ने स्टारवार प्रोग्राम का बहिष्कार करने की घोषणा कर दी। वह विनाशक योजना ही अपनी मौत मर गयी। इसके लिए सूक्ष्मीकरण साधना के दौरान किये गये प्रयासों का उल्लेख उन्होंने इस प्रकार किया- परिस्थितियाँ यह बताती हैं कि न महायुद्ध छेड़ना सरल है, न उससे हाथ खींचना बल्कि स्थिति को यथावत बनाये रखना इतना खर्चीला है कि वह भी लम्बे समय तक इसी प्रकार चलते नहीं रहने दिया जा सकता है। आखिर 'कर' देने वाले भी इतना बोझ कब तक वहन करेंगे।

यह समझदारी उत्पन्न करने के लिए हम अपनी सूक्ष्मीकरण द्वारा उपार्जित शक्ति का उपयोग करेंगे। दोनों को पीछे

अब आपको अपने को दास नहीं, स्वामी मानना पड़ेगा। आप शासक और मन आज्ञापालक।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

हटने के लिए दबाव डालेंगे और यह विश्वास किसी न किसी प्रकार करा सकेंगे कि आक्रमण की तुलना में पीछे हटने में बुद्धिमत्ता है। इस दबाव से आज का आक्रोश ठण्डा होगा। समझदारी और जिम्मेदारी का नया दौर चलेगा। गरम युद्ध शीत युद्ध में बदलेंगे और शीतयुद्ध अन्ततः उस स्थिति में जा पहुँचेंगे जिसे लम्बे समय के लिए सदा के लिए युद्ध विराम के रूप में देखा जा सके।

(अ.ज्यो. जुलाई 84, पृष्ठ 8)

विश्व युद्ध ही नहीं, समाज की हर समस्या के प्रति उनकी जागरूकता दर्शनीय रही। सभी प्रतिभावानों, वैज्ञानिकों, दार्शनिकों, लेखकों आदि को वे अवांछनीय से हटाकर वांछनीय प्रयासों की ओर लगाने के लिए संकल्पित हैं—वैज्ञानिक और दार्शनिक से हमारी एक मुहीम है। वैज्ञानिकों को भड़काएँगे कि युद्ध के घातक शस्त्र बनाने में उनकी बुद्धि को सहयोग देना बन्द कर दें। गाड़ी अधर में लटक जाए। सूक्ष्मीकरण के उपरान्त अब हम वैसा न होने देंगे। उच्चस्तरीय वैज्ञानिक की प्रतिभा और सूझ-बूझ उन्हें वैसा न करने देगी जैसा कि अपेक्षा की जा रही है। अब उनका मस्तिष्क ऐसे छोटे उपकरण बनाने की ओर लौटेगा जिससे कुटीर उद्योगों को सहायता देने वाला नया माहौल उफन पड़े।

इसका उदाहरण देने के लिए एक नमूना हम अपने सामने बनाकर जाएँगे। लेखकों-दार्शनिकों का अब एक नया वर्ग उठेगा। वह अपनी प्रतिभा के बलबूते एकाकी सोचने और एकाकी लिखने का प्रयत्न करेगा। उन्हें उद्देश्य में सहायता मिलेगी। मस्तिष्क के कपाट खुलते जाएँगे और उन्हें सूझ पड़ेगा कि इन्हीं दिनों क्या लिखने योग्य है और मात्र वही लिखा जाना है।

(अ. ज्यो. जुलाई 84 पृष्ठ 19)

उन्होंने जो कहा वह कितना ही असंभव दिखता हो अगले चरणों में होता दिखा। यह क्रम आगे और भी तीव्र तथा प्रखरतम होता जाएगा। शोधार्थी इस विषय पर जितनी शोध करेंगे, उतने ही अचंभित करने वाले तथ्य प्रकट होते जाएँगे। अध्येताओं द्वारा यह प्रश्न उठाये जायेंगे कि "इतनी सहजता से इतने उच्चस्तरीय सृजन कार्य करने वाला व्यक्ति क्या पहले भी कभी हुआ है?" ◈

परमपूज्य गुरुदेव कार्यकर्ताओं को लेखन सिखा रहे थे। उनको कुछ पुस्तकें देकर संदर्भ निकालकर लेख तैयार कर लाने के लिए कहते। कई बार ऐसा होता कि जब कार्यकर्ता अपना लेख सामने रखते तो गुरुदेव उनसे पहले ही वह सब बातें अपने लेख में लिख चुके होते। एक बार एक भाई ने ग्रीन हाउस इफैक्ट के बारे में एक लेख तैयार किया। जिसमें बताया गया था, कि विश्व भर में बढ़ने वाली गर्मी से पूरे विश्व में कितना बड़ा असंतुलन आ जायेगा, और खण्ड प्रलय या जल प्रलय जैसी स्थिति आ जायेगी और दुनिया नष्ट हो जायेगी। पूज्यवर ने कहा, लेख तो ठीक है, बढ़िया बना है, पर अब मेरी सुन। एक लेख और तैयार कर, जिसमें लिख कि यह सब कुछ नहीं होगा। दुनिया का भविष्य उज्ज्वल होगा। तो उन्होंने पूछा, गुरुजी लेकिन उसका प्रमाण क्या है? वे बोले, प्रमाण खोजना तुम्हारा काम है, पर होगा वही जो मैं कह रहा हूँ। इस बात को उन्होंने दबाव पूर्वक दो-तीन बार कहा।

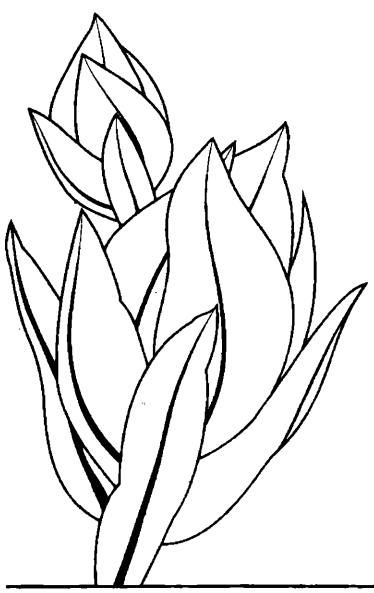
फिर कहने लगे, ये दुनिया तो भगवान् की इच्छा से चल रही है। भगवान् ने धरती गोल बनायी, तो वैज्ञानिक शोध कर कहने लगे कि ये गोल है, इसलिए घूम रही है। अगर वह बेलनाकार बनाकर उछाल देता, तो वैज्ञानिक उसकी व्याख्या कर कहते कि यह बेलन आकार है, इसलिए घूम रही है।

जो वस्तु स्थूल से सूक्ष्म की ओर जितनी बढ़ती जाती है, उसकी शक्ति भी उसी अनुपात से बढ़ती जाती है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ब्राह्मणत्व का आदर्श निभाने वे धरती पर आए

ब्राह्मण कौन? क्या वंश से - जाति से ब्राह्मण। नहीं। वे कहते हैं कि ब्राह्मण की परिभाषा ही अब पुनः करनी होगी। गायत्री परिवार गुरुसत्ता के ब्राह्मणत्व के विस्तार की ही परिणति है। उनकी गायत्री ने मानवमात्र को ब्राह्मण बना दिया...



''ब्राह्मण बीज ही इस धरती पर से समाप्त हो गया है। मेरे बेटो! तुम्हें फिर से ब्राह्मणत्व को जगाना और उसकी गरिमा का बखान कर स्वयं जीवन में उसे उतार कर जन-जन को उसे अपनाने को प्रेरित करना होगा। यदि ब्राह्मण जाग गया तो सतयुग सुनिश्चित रूप से आकर रहेगा।'' ये शब्द परम पूज्य गुरुदेव ने अपनी अतंरंग गोष्ठी में अपनी वेदना व्यक्त करते हुए परिजनों के समक्ष कहे थे।

आज जब मनुवादी-अम्बेडकर वादी संतानों में द्वंद्व छिड़ा है तब यह अनिवार्य हो जाता है कि वह व्यक्ति ब्राह्मण है जिसने ब्राह्मणत्व के आदर्शों को जीवन में उतारा हो एवं जन्म से ही नहीं, कर्म से व्यक्ति ब्राह्मणत्व अर्जित करता है। इस दृष्टि से महात्मा गाँधी एवं संविधान का सृजन करने वाले श्री भाऊ साहब अम्बेडकर दोनों ही ब्राह्मण थे, यह समझने व मानने में किसी को कोई संशय नहीं होगा। तब सभी को लगेगा कि परिभाषा समझे बिना एक निराधार वितंडावाद खड़ा कर दिया गया।

परम पूज्य गुरुदेव के जीवन के उत्तरार्द्ध की अवधि में 4 अप्रैल 1990 को प्रातः उनके द्वारा अभिव्यक्त कुछ विचारों को ''ब्राह्मणत्व'' के स्पष्टीकरण के संबंध में कहने का मन है। वे 5-6 परिजनों की एक कार्यकर्त्ता गोष्ठी में बता रहे थे कि ''यह जो कि कलियुग दिखाई देता है। मानसिक गिरावट से आया है। मनुष्य की अधिक संग्रह करने की, संचय की वृत्ति ने ही वह स्थिति पैदा की है जिससे ब्राह्मणत्व समाप्त हो प्रत्येक के अन्दर का वह पशु जाग उठा है उसे मानसिक विकृति की ओर ले जा रहा है। आवश्यकता से अधिक संग्रह मन में विक्षोभ, परिवार में कलह तथा समाज में विग्रह पैदा करता है। कलियुग मनोविकारों का युग है एवं वे मनोविकार तभी मिटेंगे जब ब्राह्मणत्व जागेगा।''

आगे ब्राह्मण की परिभाषा करते हुए पूज्यवर ने कहा कि ''ब्राह्मण सूर्य की तरह तेजस्वी होता है प्रतिकूल परिस्थितियों में भी चलता रहता है। वह कहीं रुकता नहीं, कभी आवेश में नहीं आता तथा लोभ मोह पर सतत नियंत्रण रखता है। ब्राह्मण शब्द ब्रह्मा से बना है तथा समाज का शीर्ष माना गया है। कभी यह शिखर पर था तो वैभव गौण व गुण प्रधान माने जाते थे। जलकुंभी की तरह छा जाने वाला यही ब्राह्मण सतयुग लाता था।

आज की परिस्थितियाँ इसलिए बिगड़ी कि ब्राह्मणत्व लुप्त हो गया। भिखारी बनकर, अपने पास संग्रह करने की वृत्ति मन में रख उसने अपने को पदच्युत कर दिया है। उसी वर्ण को पुनः जिंदा करना होगा एवं वे लोकसेवी समुदाय

अज्ञान, अंधकार, अनाचार और दुराग्रह के माहौल से निकलकर हमें समुद्र में खड़े स्तंभों की तरह एकाकी खड़े होना चाहिये।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

में से ही उभर कर आयेंगे। चाहे जन्म से वे किसी भी जाति के हों।''

न्यूनतम में निर्वाह व सब कुछ समाज को समर्पित करने की ललक जो एक ब्राह्मण में होती है, वह हम सबने अपनी गुरुसत्ता के जीवन में देखी। मात्र दो जोड़ी खादी के धोती कुर्ता तथा हाथ में लिखने की एक दो रुपये लागत की कलम यही उनकी जीवन भर की जमा पूँजी थी, जो अन्त तक उनके पास रही। ऐसे ही व्यक्ति औरों के लिए आदर्श बनते हैं। इन पंक्तियों का लेखक वर्ष 1974 में पूर्व मलेशिया, सिंगापुर की यात्रा पूरी कर दिल्ली हवाई अड्डे पर उतर कर सीधा शांतिकुञ्ज गुरुसत्ता को यह हर्ष से भरा समाचार सुनाने पहुँचा था कि वह अमेरिका जाने वाली परीक्षा में पास हो गया है।

साथ में वह गुरुसत्ता के प्रति श्रद्धा स्वरुप कुछ देने के लिए विदेशी ''जिलेट'' रेजर भी ले गया था। हर्षोल्लास के साथ उसने समाचार सुनाया व उनके ऊपर वाले कक्ष में 3-4 संभ्रान्त व्यक्तियों के समक्ष वह भेंट उन्हें व्यक्तिगत उपयोग के लिए दी। बड़ी रुचि के साथ वह उसका उपयोग समझते रहे फिर बोले कि ''बेटे! हम तो ब्राह्मण हैं। हमारी यह देशी ब्लेड व रेजर ही हमारे लिए काफी ठीक है। इसी से रोज दाढ़ी बनाते हैं, इसे तुम्ही रख लो।'' सामने वाले का मन दु:खी होता देख उनने कहा ''अच्छा रख जाओ, पर देखो अभी-अभी एक और सज्जन हमें यह बैटरी वाला शेवर दे गए हैं, अब पास होने की खुशी में तुम यह ले लो।'' उसको प्रसन्नता पूर्वक ले लिया, यह सोचकर कि चलो हमारा रेजर पूज्यवर के काम आएगा तो सही व उनके दिये उपहार का प्रयोग हम करेंगे। किन्तु अगले ही दिन हमने उपहार दिया ''गिफ्ट'' जन्मदिन का तिलक कराकर आ रहे एक सज्जन के हाथ में देखा तो समझ में आया कि उस फक्कड़ औघड़ दानी के पास सब कुछ होते हुए भी सबको देने का, ब्राह्मणत्व से भरा इतना बड़ा जो विशाल हृदय है, वही उसकी सिद्धि का मूल है।

भयंकर गर्मी में भी 1971-72 में कभी शांतिकुंज में पंखे चलाने की जरूरत अनुभव नहीं होती थी किन्तु क्रमश: गंगा के दूर हटते चले जाने, बीच का सुन्दर हरियाली से भरा सप्त सरोवर वाला द्वीप वृक्ष विहीन होते चले जाने तथा नया डैम बनने से पर्यावरण संतुलन गड़बड़ाता गया व शांतिकुंज कम से कम मई-जून में ऐसा तपने लगा था कि पंखा चलाना जरूरी हो जाता था। किन्तु हमने 1990 में उनके महाप्रयाण तक यही देखा कि स्वयं के लिए उनने कभी पंखा नहीं चलाया।

कोई अतिथि ही नहीं, मिशन का छोटा सा कार्यकर्त्ता भी उनके पास आता था, उसके लिए उठकर स्वयं पंखा वे चला कर देते थे, व जाते ही बंद कर देते थे। 1973 के अंतिम माह से लेकर जून 1990 तक बहुत समीप से इस महामानव को देखने-समझने का जो एक अलभ्य अवसर इस भाग्यशाली को मिला, वह नितान्त अवर्णनीय है, मात्र अनुभूति का विषय है।

एक बार एक वाइस चांसलर आये वे बोले कि ''गुरुजी! आप तो इतनी बड़ी संस्था के अध्यक्ष हैं, आपको तो एयरकंडीशनर लगवाना चाहिए। इससे आपकी कार्यदक्षता भी बढ़ेगी, काया को भी आराम मिलेगा।'' तो पूज्यवर ने कहा- ''तुम्हारा कहना अपनी जगह सही हो सकता है, पर जिस दिन एक ब्राह्मण जो लोक सेवा के लिए समर्पित है, यह सब करने लगेगा, उस दिन से सबका विश्वास उस पर से उठता चला जाएगा।''

जनता की धनराशि का उपयोग कभी भी निज के लिए-सुखों के उपयोग के लिए जो करता है, उसे लोक सेवा नेतृत्व का अधिकार नहीं मिलना चाहिए। हाँ! यदि हमारी प्रयोगशाला में मशीनों को वैज्ञानिक कारणों से इसकी आवश्यकता है तो वहाँ यह जरूरी है, पर मेरी अपनी कार्यदक्षता बढ़ाने के लिए तो किसी भी हालत में नहीं।'' वे स्तब्ध थे एक संस्था के अधिपति को इस रूप में देखकर। भव्य आश्रमों की चकाचौंध के मध्य स्थित सादगी से भरा यह तीर्थ उनके जीवन की एक यादगार बन गया।

वस्तुत: अपने लिए कठोरता, औरों के लिए उदारता यही ब्राह्मणत्व का चिन्ह है - यह बार बार पूज्यवर ने अपने आचरण से सबको सिखाया, आज तो प्रचलन कुछ उलटा ही है। राजनेताओं के बड़े-बड़े अधिवेशन होते हैं। उनमें भोजन रहन-सहन की व्यवस्था से लेकर छुट-भइयों से लेकर बड़े सभी जब नखरे करते देखे जाते हैं तथा जनता की संपत्ति का

सच्चे शूरवीर वे हैं, जो अपनी पशु प्रवृत्तियों को महामानवों के स्तर तक बदलने में अपने प्रचण्ड पराक्रम का परिचय दे सकें।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

खुलकर दुरुपयोग करते पाये जाते हैं तो लगता है कि जब तक जनमानस को इस संबंध में जागरूक नहीं बनाया जायेगा, हमारा शासक वर्ग सुधरेगा नहीं। न ही सतयुग का स्वप्न कभी पूरा होगा।

रसना पर नियंत्रण, कामुकता पर अंकुश, अपरिग्रह तथा अधिकाधिक औरों के लिए वितरण -ये चार प्रमुख गुण ब्राह्मण के बताये गए हैं। सुसंस्कारी बनाने वाली विद्या का दान तथा गुण, कर्म, स्वभाव को सुधारने वाली विद्या का दान जो करे, वह है ब्राह्मण। आज की सारी समस्याओं का समाधान यही है कि हर व्यक्ति के अंदर सोया यह ब्राह्मणत्व किसी तरह जगा दिया जाय तथा इस प्रकार देवत्व से भरी पूरी धरती को स्वर्गोपम बनाया जाय। कैसे, कब यह हो सकेगा, यह सारा सूत्ररूप में मार्गदर्शन हमारी गुरुसत्ता हमें कर गयी है। हम पर निर्भर करता है कि हम सतत देखते रहें कि कितना हम उसका अनुपालन कर रहे हैं, कितना कर सकेंगे ?

कई बार कुछ समृद्ध परिजन शांतिकुंज आते हैं, विशेष रूप से भारत के बाहर से, तो परम वंदनीया माताजी के अतिरिक्त अन्यान्य कार्यकर्त्ताओं के लिए भी कुछ गिफ्ट खाने-पीने की वस्तुएँ लेकर आ जाते हैं। पूज्यवर ने एक आदर्श आचार संहिता के नाते प्रत्येक से प्रवेश के समय एक ही बात कही थी कि "तुम सब यह मानकर चलना कि यह तुम्हारी ओढ़ी हुई गरीबी है। तुम्हारी इस गरीबी में ही तुम्हारी शान है। कभी किसी से भीख मत माँगना एवं जो भी कोई तुम्हें व्यक्तिगत रूप से दे, उसे अपना न मानकर माताजी को दे देना, ताकि वह समष्टिगत रूप से बँट सके। जिस दिन तुम्हें दीन-हीन याचक माना जाने लगेगा, तुम पर भेंट तो न्योछावर होगी, घर जाकर भी तुम्हें तुम्हारे वाक्-कौशल से प्रभावित हो कोई न कोई कुछ दे जायेगा, पर बेटा उसी दिन से तुम्हारा ब्रह्मतेज समाप्त होने लगेगा। माताजी के दिये पैसे से तुम चने खाकर संतोष कर लेना, पर दूसरों के दिये बादाम मत खाना। जिस दिन इस स्तर का ब्राह्मणत्व तुम्हारे अंदर उतर गया, मानो एक लोकसेवी का सही मायने में उदय हो गया।"

उपरोक्त पक्तियाँ अभी भी हम सबके लिए प्रेरणा का स्रोत है। शांतिकुञ्ज के कार्यकर्त्ता की प्रामाणिकता इसी पर टिकी है कि वह समाज का एक घटक है, उसी के लिए समर्पित है। जो मिल जाए उसी में संतोष, नहीं तो बिना असंतोष जताये, अपनी खीज दिखाए अपनी व्यवस्था स्वयं करने का माद्दा है तो वह एक कुशल सुगढ़ लोकसेवी है।

मात्र इन पक्तियों के पाठकों के लिए ही नहीं, वरन् सभी परिजनों, स्थायी कार्यकर्त्ताओं-समयदानियों, राष्ट्रवादी नागरिकों के निमित्त ये पंक्तियाँ है। हृदय से सबको टटोलना है कौन अध्यात्म मार्ग पर चलते हुए कितना लड़खड़ाया, कितना चला व कहाँ पर आकर रुक गया। ◈

बात सन् 1960 के आसपास की है। एक वरिष्ठ राजनेता गायत्री तपोभूमि पधारे। गुरुदेव ने बड़े ही आत्मीयतापूर्ण ढंग से मिशन की विभिन्न गतिविधियों से उन्हें अवगत कराया। देशव्यापी संगठन का स्वरूप तपोभूमि द्वारा संचालित क्रियाकलापों ने उन्हें सुखद आश्चर्य से भर दिया। प्रसन्न होते हुए बोले, आचार्य जी यह सब आपकी तप साधना से प्राप्त दिव्य शक्तियों का चमत्कार है। अन्यथा मनुष्य कितना भी, प्रतिभाशाली क्यों न हो, इतना सब नहीं कर सकता।

गुरुदेव हँसते हुए बोले, तप-साधना नहीं, ब्राह्मणत्व का चमत्कार कहिए। तप-साधना का फल तो अभी तिजोरी में बन्द है। ब्राह्मणत्व ! ब्राह्मण तो अनेकों हैं। शायद वे यह मन्तव्य समझ नहीं पाये थे। उनका जवाब था, ब्राह्मण वह है, जो समाज से न्यूनतम लेकर समाज को अधिकतम दे। इसके बिना भी कभी कोई ब्राह्मण हुआ है। राजनेता चकित होते हुए बोले, ओह ब्रह्मर्षि वशिष्ठ के ब्राह्मणत्व के चमत्कार तो मैं रामायण आदि ग्रन्थों में पढ़ा करता था, आज प्रत्यक्ष देख लिया।

धर्म वह है जो मनुष्य को क्षुद्र जीवन से उठाकर महान और आत्मदर्शी बनाता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गुरुदेव ने दिए सफलता के नए प्रेरक आयाम

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य से मेरी मुलाकात 6 मार्च 1979 को हुई थी। यह मुलाकात न तो मुक्ति की खोज में थी और न ही सत्य के अनुसंधान के लिए। समाज में व्याप्त कुरीतियों के निवारण के लिए किस प्रकार से सज्जनों को संगठित किया जाए, यह प्रश्न लेकर मैं आचार्यश्री के पास शान्तिकुञ्ज पहुँचा था।

उनके भव्य और विराट् व्यक्तित्व के सान्निध्य में मैंने अपने जीवन में आमूल-चूल परिवर्तन होते हुए देखा। अगले 10 वर्षों की अवधि में मुझे उनसे अन्तरंग विचार-विमर्श के द्वारा ऐसी समझ प्राप्त होती गई, जिसके बल पर उत्तर प्रदेश सरकार व केन्द्र सरकार में विभिन्न प्रशासनिक पदों पर मेरे द्वारा ऐसे कार्य होते रहे, जो निर्विवाद रूप से जनोपयोगी कहलाए।

वह कहा करते थे कि ''यदि गायत्री उपासक निष्ठावान् और सदाचारी हो तो वह अपने लक्ष्य पर तीर की तरह पहुँचता है।'' मैंने इसे अपने जीवन में अक्षरशः चरितार्थ होते हुए पाया। आन्तरिक स्वच्छता के अनुपात में ही बाहरी सफलता प्राप्त करने की कुञ्जी उन्होंने मुझे दी। उ.प्र. के शिक्षा सचिव के कार्यकाल में ढेरों शिक्षाधिकारियों व शिक्षकों के शांतिकुंज में 'नैतिक शिक्षा एवं शैक्षिक उन्नयन के प्रशिक्षण शिविर' उनके मार्गदर्शन में सफलतापूर्वक सम्पन्न होते चले गये। भारत सरकार में कृषि सचिव के पद पर कार्य करने के दौरान, पूरे देश में चल सकने वाली 'राष्ट्रीय जलागम विकास परियोजना' के निर्माण में आचार्यश्री की अदृश्य प्रेरणा ही कार्य करती रही और अनेक कठिनाइयों के बावजूद इस परियोजना की सफलता के पीछे उन्हीं का आर्शीवाद प्रभाव दिखता रहा।

केन्द्रीय स्वास्थ्य सचिव के रुप में सेवा की अवधि में 'परिवार कल्याण कार्यक्रम' के माध्यम से पल्स पोलियो और स्कूली विद्यार्थियों के स्वास्थ्य परीक्षण अभियान के द्वारा तो मानों देश में क्रान्ति का बिगुल ही बज गया था।आचार्यश्री से वैसे तो मुझे अनेक निधियाँ मिलीं, लेकिन उनसे मिले पाँच मन्त्रों को मैं अपने जीवन की अमूल्य निधि मानता हूँ यथा -

1. पात्रता विकास के बिना न संसार में कोई रिश्ता है और न इसके बिना अध्यात्म क्षेत्र में कोई रास्ता है।
2. सफलता का प्रथम रहस्य है-हर परिस्थिति के लिए सदैव तैयार रहना।
3. दूसरों के साथ वह व्यवहार न करें, जो आपको अपने लिये पसन्द न हो।
4. हम बदलेंगे, युग बदलेगा-हम सुधरेंगे, युग सुधरेगा।
5. वैराग्य का बीज पलायन में नहीं, आत्म मस्ती में अंकुरित होने दें। वैराग्य तो विशिष्ट अनुभूति है, वह आत्मा की सहजता सरलता से निकला झरना है।

आचार्यश्री अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण विश्ववन्द्य बन गए। उनके द्वारा सभी को समान रूप से गले लगाने की परम्परा को आगे बढ़ाते हुए नेकी की राह पर चल रहे सभी व्यक्तियों, संस्थाओं, संगठनों के सहगमन की आज बहुत बड़ी जरूरत है।

यह काम गायत्री तीर्थ शान्तिकुञ्ज और पूज्यश्री का गायत्री परिवार सबका सहयोग लेकर सहजता से कर सकता है। हाँ! बस अब इसमें देर बिल्कुल भी नहीं की जानी चाहिए। सभी वर्गों, जातियों, सम्प्रदायों-धर्मों से संयुक्त बना विराट् युग निर्माण परिवार उनके लक्ष्य को अवश्यमेव पूरा करेगा यही विश्वास एवं यही मंगलकामना है। **जे.सी.पंत जी, भूतपूर्व सचिव, भारत सरकार**

आप को काबू में रख कर उसका सदुपयोग करने से शक्तिशाली इंजन बनते और भारी काम करते हैं। विचारों की शक्ति भाप से बढ़कर है, यदि उसे केन्द्रित और दिशा नियोजित किया जा सके तो मनुष्य वह कर गुजरे जिसकी सहज कल्पना भी नहीं की जा सकती।

सबसे उत्तम मित्रता उन धार्मिक पुरुषों की है, जिनकी आत्मा महान् है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रहस्य और रोमांच भरी साधना

एक सिद्ध महायोगी के रूप में उनके जीवन का हर क्रियाकलाप पूरी तरह सुनियोजित रहा। सूक्ष्मजगत् को अपने निरन्तर तप द्वारा उनने तपाया एवं भविष्यत् को गढ़ा।

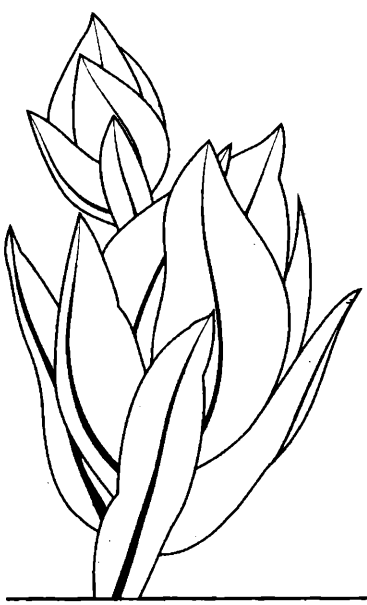
परम पूज्य गुरुदेव दिव्यदृष्टि सम्पन्न सिद्धयोगी थे। उन्हें आने वाले हर परिवर्तन, काल की चाल का अहसास सतत होता रहता था। अपने द्वितीय हिमालय प्रवास (1959-1961) से लौटकर आने के बाद से ही, जब उन्होंने 'युग निर्माण योजना' के शुभारम्भ की घोषणा की-पंचकोशी साधना भी गायत्री तपोभूमि से 'अखण्ड-ज्योति' के मार्गदर्शन के माध्यम से आरम्भ करा दी थी।

उनकी इस हिमालय यात्रा में सम्पादन का दायित्व परम वन्दनीया माता जी को सौंपा गया था। उन्होंने अपनी पत्रिका के संपादकीय में लिखा—"उनकी (पूज्यवर की) यह विशेष तपश्चर्या स्वर्ग-मुक्ति, सिद्धि-शक्ति के लिए नहीं, क्योंकि उन्हें तो वे बहुत पहले ही प्राप्त कर चुके हैं। अब तो वे अपनी पीड़ा में विश्वमानव की पीड़ा को घुलाकर एक तड़पते हुए घायल की तरह हो गए हैं। उनकी तड़पन परशुराम के कुल्हाड़े के रूप में, शिव के तीसरे नेत्र के रूप में, इन्द्र के वज्र के रूप में नए परिवर्तन का न जाने क्या आधार प्रस्तुत करेगी? आज कौन कहे और कैसे कहे?"

वस्तुतः यह सब सूक्ष्मजगत में घटित हो ही रहा था, 1967 की जून माह की 'अखण्ड-ज्योति' पत्रिका के पृष्ठ 17 पर एक लेख प्रकाशित हुआ 'महाकाल और उसका युग-निर्माण प्रत्यावर्तन।' इसमें पूज्यवर ने संकेत किया कि "आगामी तीस वर्ष अत्यन्त कष्ट भरे हैं। युग परिवर्तन की पृष्ठभूमि बन रही है। महाकाल की इच्छा कभी अपूर्ण नहीं रह सकती। महाकाली अपनी सृजनात्मक और संघर्षात्मक प्रक्रिया को प्रचण्ड करने में संलग्न है। पिछले दिनों दो खण्ड अवतारों ने श्रीरामकृष्ण परमहंस और योगीराज श्री अरविन्द जी के रूप में जन्म लिया है। तीसरा अवतरण युग निर्माण आन्दोलन के रूप में आजकल चल रहा है।

इसमें महाकाल भी काम कर रहा है और महाकाली भी, जिससे आज की मानव-जाति की अंधकारपूर्ण दुर्दशा कल के स्वर्ग-सौभाग्य जैसे उज्ज्वल भविष्य में परिणत हो सके। पूर्ण अवतार लगभग तीस वर्ष की कठिन अवधि के उपरान्त प्रकट होगा। महान् व्यक्तियों के रूप में भी और महान् परिवर्तन के रूप मे भी। इस प्रयोजन को पूरा करने के लिए भगवान् दिव्य आत्माओं का वरण कर रहे हैं। उन्हें हम शत-शत प्रणाम करें, यही मन करता है।"

यहाँ यह ध्यान रखने योग्य है कि युग-परिवर्तन, विभीषिकाओं के निवारणार्थ सामूहिक साधना रूपी ब्रह्मास्त्र का प्रयोग, यह शब्दावली परम पूज्य गुरुदेव की लेखनी से सतत इस अवधि के बाद काफी जोर देकर एक चेतावनी, एक मार्गदर्शन के रूप में सभी परिजनों



अशुद्ध अन्तःकरण की स्थिति में लोभ, मोह, स्वार्थ एवं अहंकार आदि विकारों का आना स्वाभाविक है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

को मिलने लगी थी। अपने तृतीय हिमालय प्रवास व हमेशा के लिए गायत्री तपोभूमि छोड़ने की बात वे 1962 से ही कहते आ रहे थे। 'पत्रिका' में यह प्रवाह 1972 के बाद भी जारी रहा, साथ ही उनकी साधकों के निर्माण की प्रक्रिया भी जारी रही।

उनका एक ही उद्देश्य था— समष्टि का हितसाधन, सृष्टि-व्यवस्था का संतुलन और सृष्टि की विकासात्मक भवितव्यता को गति देना। उसी दिशा में एक विशेष प्रयोग उनके द्वारा सिद्धस्थली शान्तिकुञ्ज गायत्री तीर्थ में 1984 से 1987 के दौरान चली सूक्ष्मीकरण साधना के दौरान सम्पन्न हुआ। इसी साधनावधि में उनने स्वयं को पाँच सूक्ष्म शरीरों-पाँच वीरभद्रों के रूप में सक्रिय बनाकर युग परिवर्तन की प्रक्रिया को गति देने की बात कही।

उनकी यह साधना, रहस्य और रोमांचों से भरी थी। इन पंक्तियों के लेखक को इस साधना के साक्षी के रूप में उपस्थित रहने का सौभाग्य मिला है। पूज्यवर के शब्दों में इसके विषय में सुने तो-"जिस आवास स्थली में कोठरी में रहा जा रहा है, वहाँ तक एक दो का ही प्रवेश वांछित समझा गया है। उसे अभिमंत्रित-कीलित किया गया है।

उसमें जो प्रयोग चल रहे हैं, वे अद्भुत हैं। कुछ ऐसे हैं जो रात्रि को करने पड़ते हैं। तब दिन में सोकर काम चलाना पड़ता है कुछ दिन में करने के हैं। कुछ मंत्र ऐसे हैं जिनमें तनिक भी एक शब्द की भी भूल हो जाने पर उच्चारण तंत्र ही उलट-पुलट सकता है। इसलिए प्रयोग करते समय क्षण-क्षण देखभाल रखनी पड़ती है।

(अक्टूबर 1984 अ.ज्यो, पृष्ठ 14)।

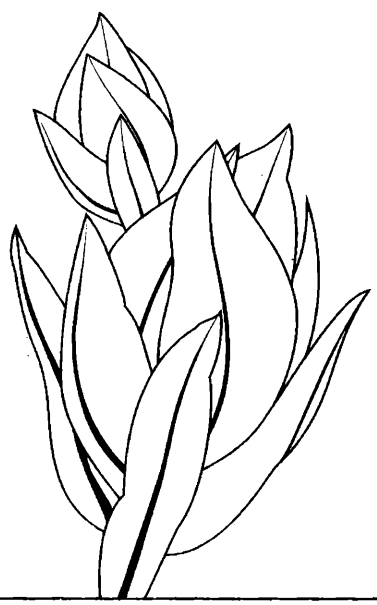
इस 3 वर्ष की अवधि में जब यह प्रयोग चल रहा था, स्थूल शरीर के क्रियाकलाप काफी सीमित हो गए थे पूज्यवर ने कहा-"पाँचों शरीरों को एक सूत्र में बाँधे रहने भर के लिए वर्तमान स्थूल शरीर की आवश्यकता है।" आहार न के बराबर किन्तु शक्ति इतनी प्रचण्ड कि कोई आँख से आँख न मिला सके। महान् प्रयोजन हेतु ही तो ऋषि, तपस्वी, अवतारी पुरुष ऐसी कठोर साधना करते हैं। आहार नहीं लेंगे तो कमजोरी आ सकती है, यह कहने पर गुरुदेव ने कहा था कि आकाश तत्त्व से जो भी ग्रहण करना होता है वे ग्रहण कर लेते हैं, क्योंकि सूक्ष्मीकरण प्रयोग हेतु स्थूल आहार उनके लिए महत्त्वहीन है। किसी भी चिकित्सक या वैज्ञानिक के लिए यह आश्चर्यजनक तथ्य हो सकता है कि कोई बिना आहार के अपनी वृद्ध-काया के साथ कैसे कब तक जीवित रह सकता है, किन्तु जैसा पूर्व में कहा गया कि 1962 में हिमालय से लौटने के बाद से ही भविष्यत् की तैयारी के निमित्त उनकी सारी साधना नियोजित थी। सूक्ष्मीकरण की सावित्री साधना उनकी दधीचि स्तर की प्रचण्ड तपसाधना थी, जो अन्तिम श्वास तक अनवरत चलती रही। ◈

अध्यात्मविद्या का समर्थ प्रयोग गुरुदेव ने तीन वर्षों में सम्पन्न किया। जिसकी परिणतियाँ दो रूपों में हुई-(1)विश्व का कुण्डलिनी जागरण, (2)पाँच वीरभद्रों का उत्पादन। गुरुदेव के शब्दों में-"सूक्ष्मीकरण के महाप्रयोग से उत्पन्न एक वीरभद्र विचार-संशोधन में लगेगा। दूसरे वीरभद्र के लिए यही काम सौंपा गया है कि नवनिर्माण के लिए जितने प्रचुर साधनों की आवश्यकता है, उन्हें कहीं से भी किसी भी कीमत से जुटाया जाना चाहिए। इतने साधन जो जुटा सके, सो कितना समर्थ होगा, यह अनुमान लगाने में किसी को चूक नहीं करनी चाहिए। तीसरा वीरभद्र दुरात्माओं के लिए भय का वातावरण उत्पन्न करेगा। सूक्ष्मीकरण से उत्पन्न चौथे वीरभद्र को प्रस्तुत एवं भावी प्रज्ञापरिजनों की दृष्टि से अधिक समर्थ बनाने के लिए सुरक्षित छोड़ दिया गया है। सूक्ष्मीकरण से उत्पन्न चार वीरभद्रों को असाधारण काम सौंपे गए हैं, उनके लिए खुराक कहाँ से आए? इसके निमित्त एक पाँचवाँ वीरभद्र विशुद्ध तपश्चर्या में ही निरत रहेगा।" इसी महान् सामर्थ्य के आधार पर उन्होंने कहा-"सघन तमिस्रा का अन्त होगा। ऊषाकाल के साथ उभरता अरुणोदय अपनी प्रखरता का परिचय देगा।"

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उज्जवल भविष्य को गढ़ने वाली दैवीय सत्ता

भारत एक महादैत्य की तरह है, जो अभी सोया पड़ा है, पर जब यह नींद से जागेगा तो सारे विश्व का नेतृत्व करेगा, मार्गदर्शन करेगा। यही भविष्यवाणी स्वामी विवेकानंद एवं श्री अरविंद की भी थी और युगऋषि आचार्य श्री की भी। उसी का विस्तार इस लेख में पढ़ें...



महाप्रयाण से सात-आठ माह पूर्व की बात है। शिशिर ऋतु में पूज्य गुरुदेव अपने कक्ष से बाहर धूप में बैठते थे। लेखन-शोध से सम्बन्धित कार्यकर्त्ताओं को वहीं बुलाकर चर्चा करते थे। वहीं निर्देश देते-देते एकाएक एक दिन वे गंभीर हो उठे और बोले- लड़कों, कहीं तुम्हें अविश्वास तो नहीं होता मेरे कथन पर कि सतयुग वास्तव में आने वाला है? मैंने जो कुछ भी पिछले दिनों लिखा है, महाकाल के आदेश से लिखा है। मेरी नब्बे प्रतिशत से अधिक चेतना अब सूक्ष्म जगत में सक्रिय है व ऋषिसत्ताओं के साथ नये युग का सरंजाम जुटा रही है। तुम देखना कि मेरे कहे गए ये वाक्य, लिखी हुई एक-एक पंक्ति बम का धमाका करेगी व देखते-देखते विचार-क्रान्ति का स्वरूप तुम्हें दस पन्द्रह वर्ष में ही दिखाई देने लगेगा।

विश्व का सारा ढाँचा बदल जाएगा। मेरी बात पर विश्वास रखना कि भारतीय संस्कृति का ही अलख अब चारों दिशाओं में गूँजने जा रहा है। जो भी कुछ पूज्यवर ने अपनी मंद वाणी से स्फुट वचन कहे थे, उन्हें हमने डायरी से निकाल कर ज्यों का त्यों पाठकों के समक्ष रख दिया है, यह बताने के लिए कि संस्कृति-पुरुष प्रयोजन विशेषों के लिए हम सबके बीच आये एवं हमें सौभाग्यशाली भी बना गये।

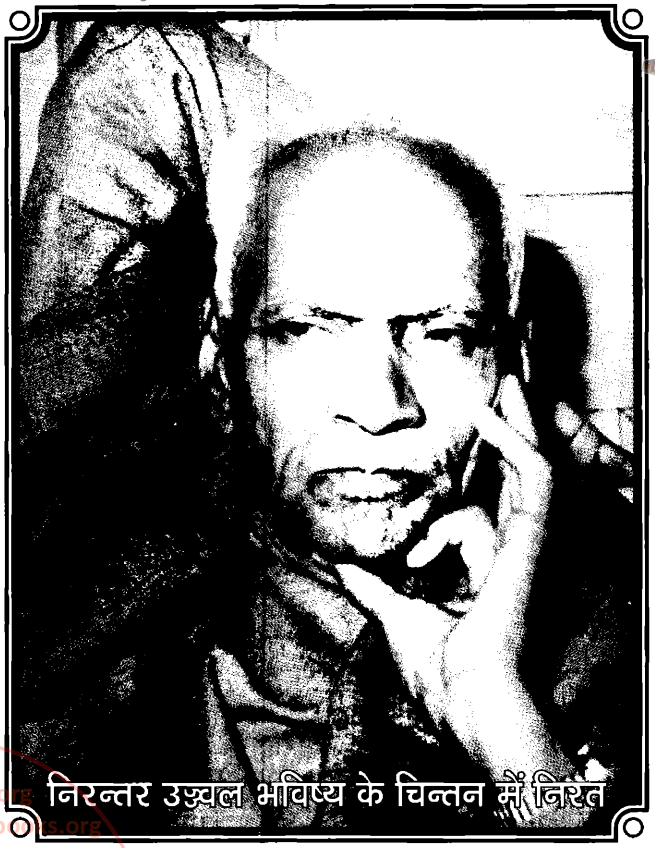
शांतिकुंज व यहाँ से आरंभ हुआ विश्वव्यापी युगान्तरीय चेतना का आन्दोलन, उस निर्धारण का एक व्यापक रूप है, जिसका समापन अगले दिनों विश्वमानवता के लिए उज्ज्वल भविष्य की वापसी के रूप में होना है। पूज्य गुरुदेव अक्सर अंतरंग चर्चा में कहा करते थे- ऋषि चाणक्य देवसंस्कृति के दिग्-दिगन्त् तक विस्तार का काम करने आये थे, वह काम पूरा नहीं हो पाया, उसी शृंखला में बाद में विवेकानन्द व अरविन्द आए। हम उसी काम को अब पूरा रूप देने के लिए महाकाल द्वारा भेजे गए हैं। इसी बात को महर्षि अरविन्द ने 'ह्यूमन साइकिल' में इस तरह लिखा है- "दक्षिणेश्वर में जो काम शुरू हुआ था, वह पूरा होने में अभी कोसों दूर है। वह समझा तक नहीं गया है।"

"विवेकानन्द ने जो कुछ प्राप्त किया और जिसे अभिवर्द्धित करने का प्रयत्न किया, वह अभी तक मूर्त्त नहीं हुआ है।....अब अधिक उन्मुक्त ईश्वरीय प्रकाश की तैयारी हो रही है, अधिक ठोस शक्ति प्रकट होने को है, परन्तु यह सब कहाँ होगा? कब होगा? यह कोई नहीं जानता।" वस्तुतः दक्षिणेश्वर की माटी से जो तूफान एक वेग से उठा था, उसे सही समय पर, सही प्रक्रिया से, सही व्यक्तियों द्वारा नियंत्रित कर उससे नयी

शस्त्र युद्ध में विजय प्राप्त करने की अपेक्षा आत्म जय करने में अधिक वीरता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



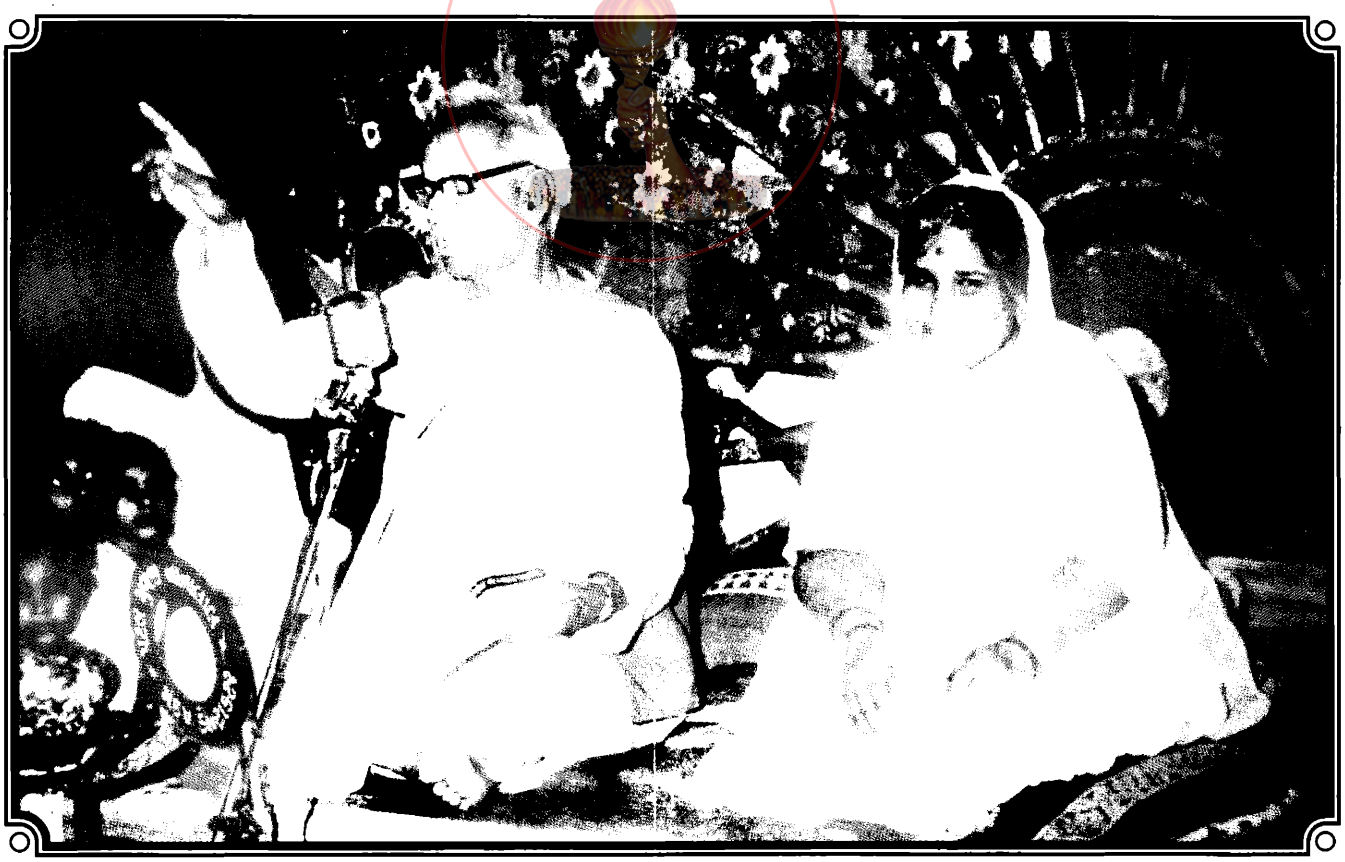




Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org





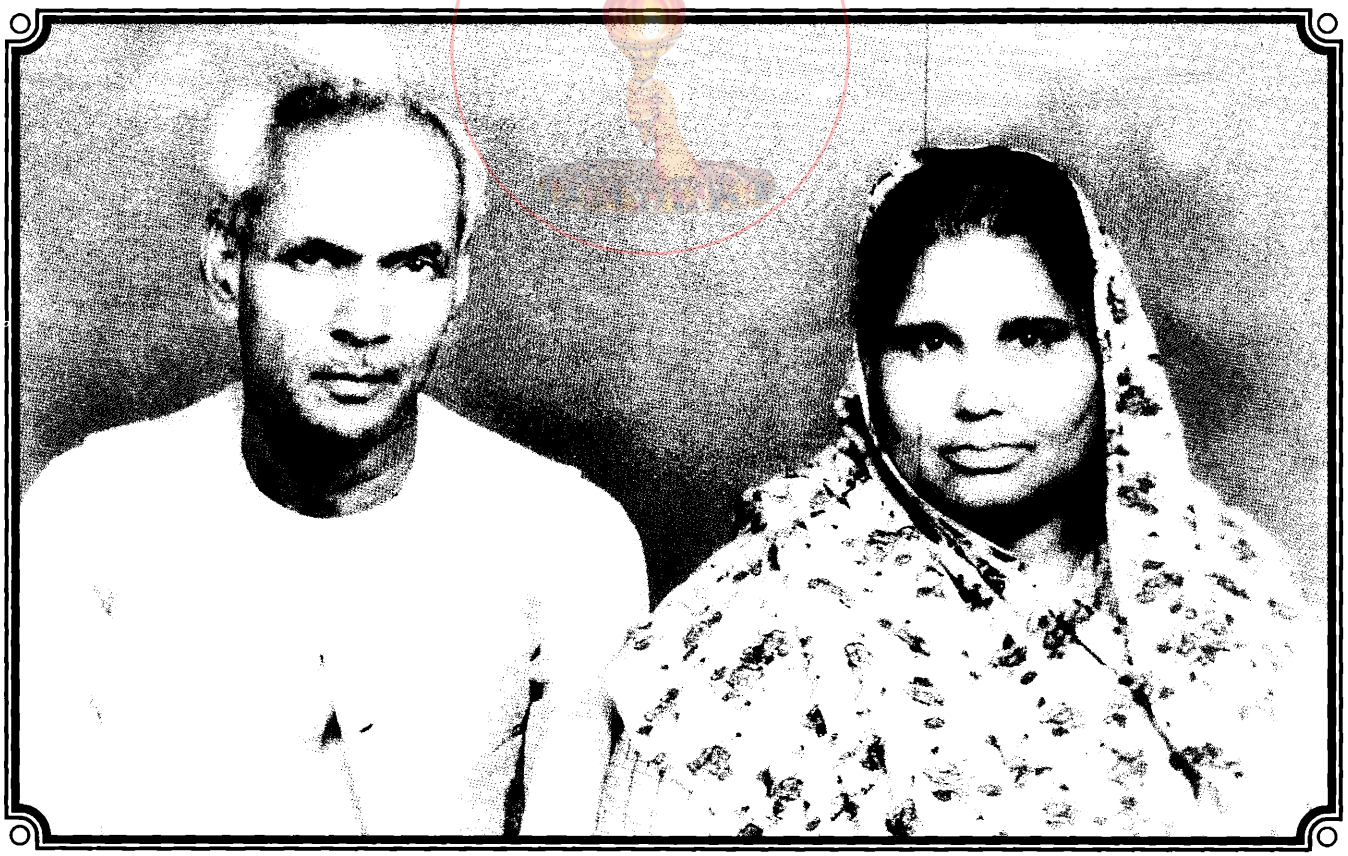


जगज्जननी एवं हमारे आराध्य शताब्दी पुरुष निरन्तर समिधा की तरह जलते रहे

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org





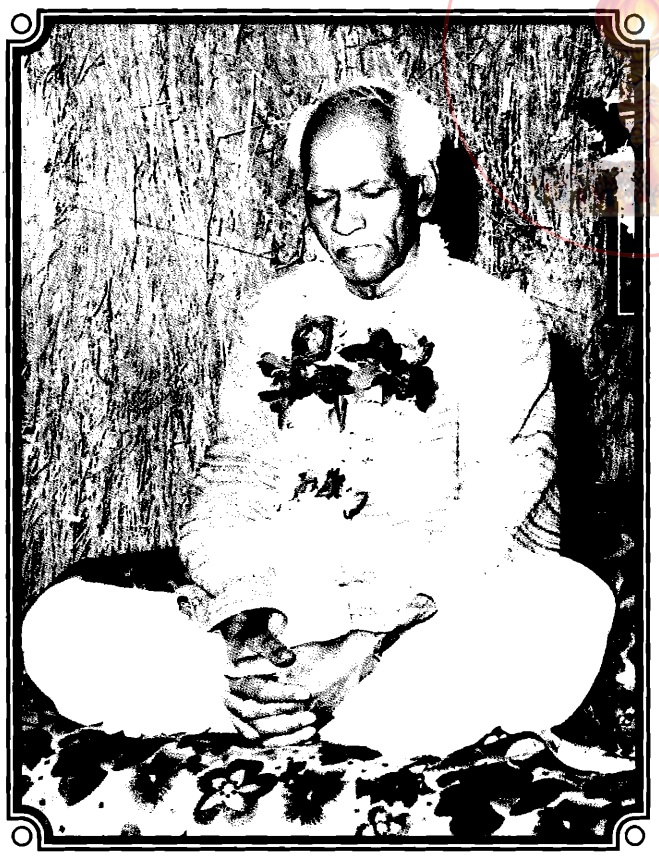


आपकी कृपा दृष्टि न मिलती तो न जाने हम कहाँ होते

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org





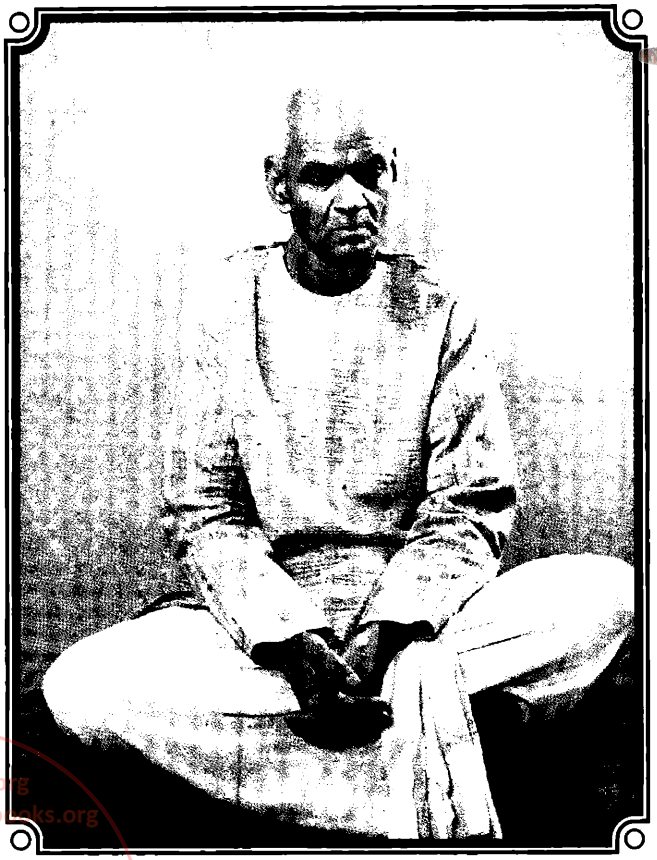


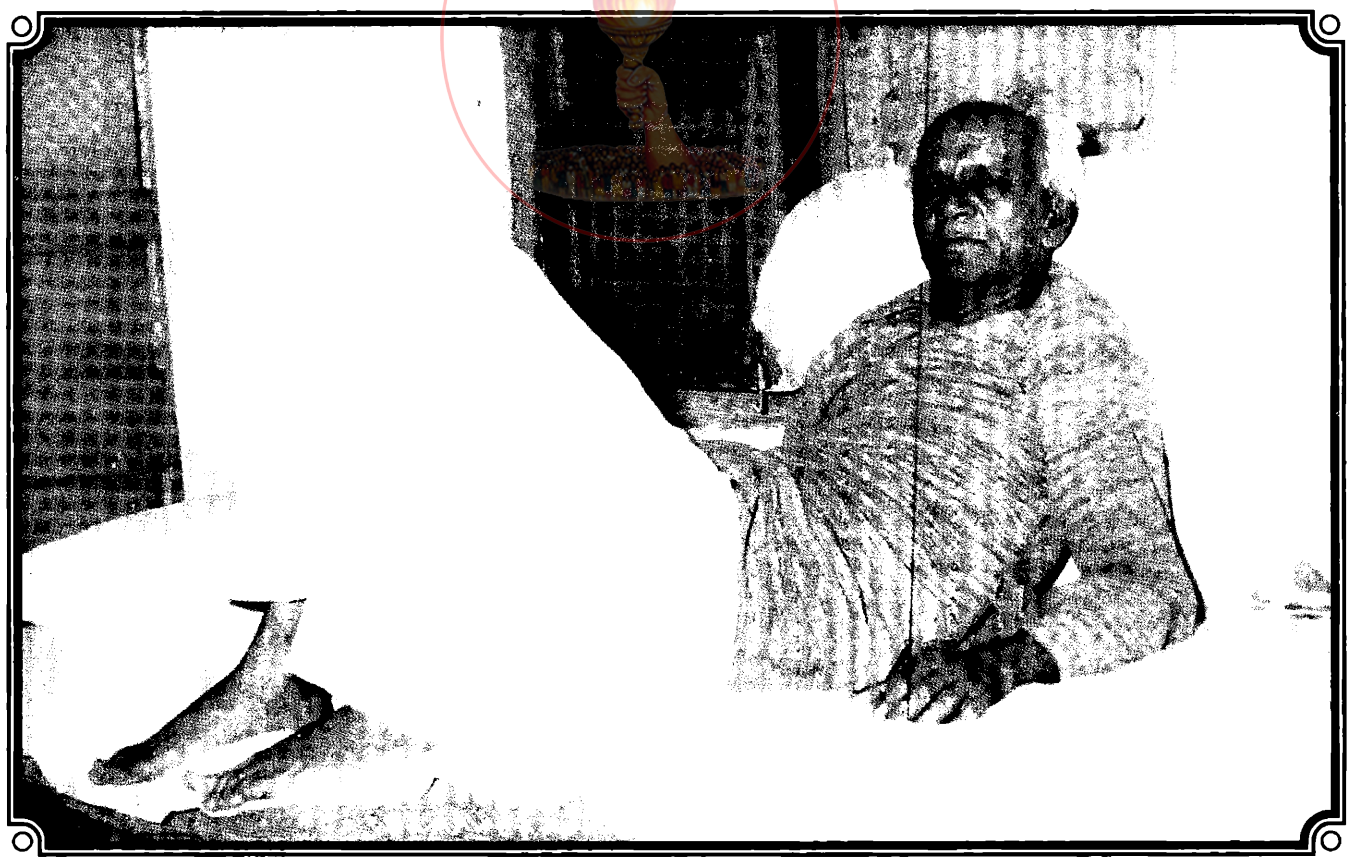


जित देखूँ तित तू ही तू है

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

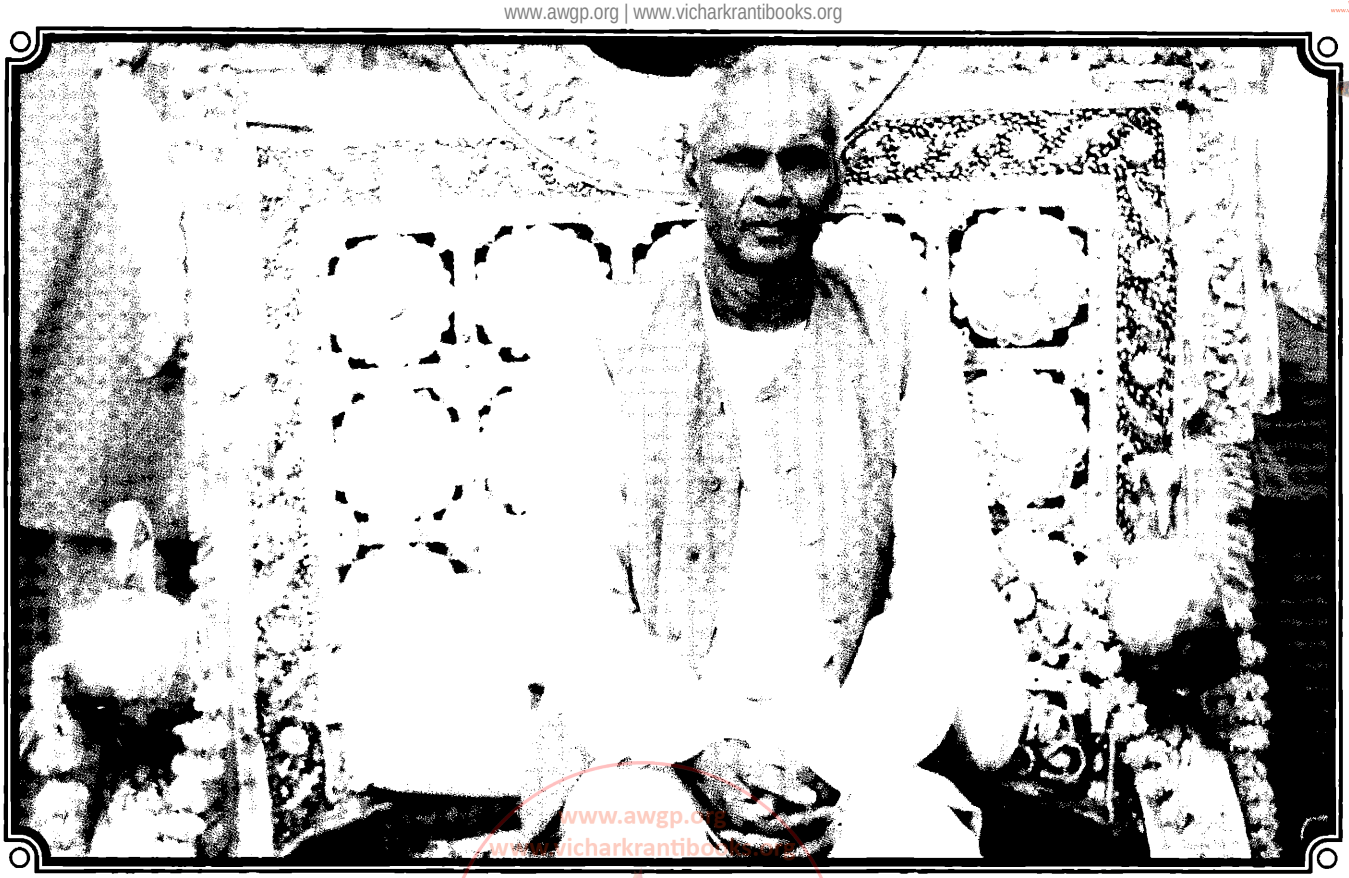






आपके ये भिन्न रूप हर पल याद आते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org





हम सरिता से, तुम अतुल सिन्धु। हम चिर प्यासे तुम अमृत बिन्दु

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org







रथ भी मिले, सिंहासन भी, पर मैं तो था गाँव का वासी

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org





वन्दे, उनके पद की धूल

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सदी के लिए ऊर्जा की उत्पत्ति होनी थी। संभवत: वह समय, वह वेला अब आ गयी है। स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में- भारत का पुनरुत्थान होगा, जड़ की शक्ति से नहीं, चेतना की शक्ति से।

विनाश की विजय ध्वजा लेकर नहीं, बल्कि शान्ति और प्रकाश के ध्वज फैलाकर-संन्यासियों के गेरुआ वस्त्र का सहारा लेकर, अर्थशक्ति से नहीं, बल्कि भिक्षापात्र की शक्ति से सम्पादित होगा.... मैं मानो अपनी दिव्य दृष्टि से देख रहा हूँ। हमारी मातृभूमि जाग उठी है- नवजीवन लाभ करके, पहले से भी अधिक गौरवमय मूर्तिधारण कर, अपने सिंहासन पर आरूढ़। इस बार का केन्द्र भारतवर्ष ही है।

इसके लिए वे 'भारत का भविष्य' नामक अपने उद्‌बोधन में कहते हैं- महाभारत के अनुसार सतयुग के आरंभ में एक ही जाति थी-ब्राह्मण और फिर पेशे के भेद से वह भिन्न-भिन्न जातियों में बँटती चली गयी। बस यही एकमात्र व्याख्या सच और युक्तिपूर्ण है। भविष्य में जो सत्ययुग आ रहा है, उसमें ब्राह्मणेतर सभी जातियाँ फिर ब्राह्मण रूप में परिणत होंगी। ब्राह्मण से यहाँ अर्थ है ब्रह्मज्ञ, ब्रह्मनिष्ठ, आदर्श चरित्र वाले पुरुष। विवेकानन्द का एक-एक शब्द पूज्यवर के लिखे वाक्यों में गुंजित होता देखा जा सकता है। आखिर थे तो ये सभी महाकाल की सत्ता के प्रतिनिधि ही। सभी यह कह गए हैं कि परिवर्तन की वेला आ पहुँची। महाकाल इस प्रक्रिया को परोक्ष जगत से अंजाम दे रहा है। सतयुग की वापसी की ही पृष्ठभूमि इन दिनों बन रही है। मानवी प्रयास इसमें अनिवार्य अवश्य है, पर पर्याप्त नहीं। दैवी शक्ति की ही सबसे बड़ी भूमिका होगी।

महायोगी अरविन्द की भविष्यवाणियों के आधार पर अरविन्द आश्रम पाण्डिचेरी से एक वार्त्ता प्रकाशित हुई है- 'इनटू द ट्वेण्टीफर्स्ट सेंचुरी' (इक्कीसवीं सदी की ओर) इसमें आज की परिस्थितियों का आकलन भी है व आने वाले समय के अप्रत्याशित परिवर्तनों का दिग्दर्शन भी।

इस वार्त्ता में जो 14 अगस्त, 1991 को आश्रम के प्रांगण में सम्पन्न हुई, यह बताया गया कि योगीराज अरविन्द के अनुसार कलियुग का समापन हो चुका है व सतयुग की स्थापना का समय आ गया है। सामान्यत: दो युगों के बीच 175 वर्ष की अवधि ट्रांजिशनल पीरियड (संक्रान्ति काल या दो युगों की मिलनवेला) की होती है। महर्षि ने अपनी कालगणना के अनुसार इस अवधि के आरंभ होने का समय 1836 बताया है। यह समय वही है जब रामकृष्ण परमहंस जन्म ले चुके थे।

1936 में हमारा राष्ट्र अलसाई स्थिति से उठने की कोशिश कर रहा था। योगीराज कहते हैं कि तब से परिवर्तन प्रक्रिया इतनी तीव्रगति से बढ़ी है, उच्चस्तरीय योगी स्तर की आत्माएँ इतनी अधिक जन्मी हैं कि वह समय सन् 2011तक सुनिश्चित रूप से आने जा रहा है, जब सारे विश्व का नेतृत्व भारत के हाथों में होगा तथा भारतीय-संस्कृति विश्व-संस्कृति बन चुकी होगी।

इसे वे भारत की आध्यात्मिक भवितव्यता (स्प्रिचुअल डेस्टीनी) नाम देते हैं। उनका कहना है कि- परमात्म सत्ता अपने लिए हमेशा एक ऐसी राष्ट्र-संस्कृति चुनकर रखती है, जहाँ उच्चतम दैवी ज्ञान कुछ व्यक्तियों, ग्रन्थों के माध्यम से सुरक्षित बना रहता है। वहीं से फिर नये युग का आविर्भाव होता है। इस चतुर्युग में कम से कम यह तो सुनिश्चित है कि वह देश भारतवर्ष है व वह ज्ञान हिन्दू अध्यात्म भारतीय संस्कृति के रूप में है। कलियुग के प्रभाव के समापन का समय श्री अरविन्द १९०७ में बताते हैं व कहते हैं कि तब से विश्व की नियति महाकाल के हाथ में है- विश्वयुद्धों की शृंखला, शीतयुद्ध, बड़े स्तर की औद्योगिक, आर्थिक, राजनीतिक क्रांतियाँ उसी प्रक्रिया का एक अंग हैं।

पाठकों को यह यूटोपिया लग सकता है, दिवा स्वप्न भी, किन्तु यह भवितव्यता है, इसमें किसी को संदेह नहीं होना चाहिए। पश्चिम का भोगवाद जिस अग्नि में- तेजाबी तालाब में जलता, कलपता, निष्ठुर स्वार्थपरता की कीचड़ में डूबा विकल, संत्रस्त दृष्टिगोचर हो रहा है, उसे भारतीय अध्यात्म ही भावसंवेदना की गंगोत्री में स्नान कराके मुक्ति दिलाएगा। परम पूज्य गुरुदेव ने सतयुग की वापसी पुस्तक में लिखा है कि- इक्कीसवीं सदी भाव-संवेदनाओं के

कष्ट को उपेक्षित करके भी जो कर्तव्य पालन कर सकता हो, सच्ची सेवा का पुण्यफल उसे ही प्राप्त होता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

उभरने-उभारने की अवधि है। हमें इस उपेक्षित क्षेत्र को ही हरा-भरा बनाने में निष्ठावान् माली की भूमिका निभानी चाहिए। कैसे होगा इतना शीघ्र यह सब, किसी के भी मन में वर्तमान स्थिति को देखकर असमंजस हो सकता है। क्या इसमें किसी एक व्यक्ति की महत्ता होगी? कौन यह करेगा? स्वामी विवेकानन्द इसका उत्तर देते हुए कहते हैं- उपयुक्त समय पर एक आश्यर्चजनक व्यक्ति आएगा और तब सभी चूहे साहसी बन जाएँगे। (विवेकानन्द साहित्य प्रथम खण्ड - पृष्ठ २९६)।

चूहों के साहसी होने व बिल्ली के गले में घंटी बाँधने की उक्ति द्वारा स्वामी जी बताते हैं कि सामान्य नरसमुदाय में से ही असाधारण शक्ति जागेगी व देखते-देखते उनका ब्रह्मवर्चस उनसे ऐसे काम करा लेगा, जिससे युगपरिवर्तन जैसा असंभव कार्य भी पूरा होता दीख पड़ेगा। यह असंभव नहीं है। आश्चर्यजनक व्यक्ति से स्वामी जी का तात्पर्य है, चेतना का अवतार। एक ऐसी सत्ता, जो महाकाल का प्रतिनिधि बनकर आएगी व जिसके बताए पदचिह्नों पर सारी मानव जाति चलेगी। हम परम पूज्य गुरुदेव को संस्कृति-पुरुष के रूप में चेतना का अवतार मानते हैं, मात्र स्थूल शरीर वाले, नामधारी रूप वाले व्यक्ति नहीं। उनके मौलिक चिन्तन ने ही राष्ट्र की सोई कुण्डलिनी जगाई है व वह काम परोक्ष सत्ता के निर्देशों द्वारा किया, जिसे करने महर्षि चाणक्य, आद्यशंकराचार्य, रामकृष्ण परमहंस, महर्षि रमण, स्वामी विवेकानन्द व योगीराज अरविन्द इस धरती पर आए थे। कोई आश्चर्य नहीं कि उनके ये छोटे-छोटे चूहे प्रज्ञा-परिजन अगले दिनों इतने शक्तिशाली रूप में सामने आयेंगे कि जन-जन के मनों को मथकर रख दें।

स्वयं पूज्यवर अपने क्रान्तिधर्मी साहित्य में लिखते हैं- नरपशु, नरकीटक, नरपिशाच स्तर के जीवनयापन करने वालों में से ही बड़ी संख्या में ऐसे इन्हीं दिनों निकल पड़ेंगे, जिन्हें नररत्न कहा जा सके। इन्हीं को दूसरा नाम दिव्य प्रतिभा सम्पन्न भी दिया जा सकता है। इनका चिन्तन, चरित्र और व्यवहार ऐसा होगा, जिसका प्रभाव असंख्यों को प्रभावित करेगा। इसका शुभारंभ शांतिकुंज से हुआ है।''नव सृजन के निमित्त महाकाल की तैयारी से''। स्पष्ट है कि दुर्गम हिमालयवासी ऋषि सत्ताओं ने अपनी कार्यस्थली अब शांतिकुंज को बनाया है व यहाँ से उद्भूत चेतना देवसंस्कृति का आलोक अब दिग्दिगन्त तक विस्तार की प्रतीक्षा कर रहा है। ◈

आज के घटनाचक्रों पर नजर डालें तो स्पष्ट होता है कि भारत ही नहीं, वरन् संपूर्ण विश्व में परिवर्तन का पहिया तीव्र से तीव्रतम गति से घूम रहा है। अरब देशों में चल रही परिवर्तन की लहर, विकीलीक्स के खुलासे, भारत में बेनकाब होते घोटालेबाज, भ्रष्टाचार के खिलाफ अन्ना की आँधी एवं जागृत होता जनमानस परिर्वतन की कहानी बयाँ कर रहे हैं। विनाश एवं ध्वंस के इस आसुरी प्रवाह के साथ सृजन एवं सकारात्मकता का देव प्रवाह शीतल झोंके की तरह आतंक, अशांति एवं असुरक्षा के माहौल में संतप्त हो रही मानवता को यदा-कदा उज्ज्वल भविष्य की आस दिलाता है।

गुरुदेव का वह कथन सत्य होता प्रतीत होता है जो उन्होंने सूक्ष्मीकरण एवं उज्ज्वल भविष्य के अवतरण नामक ग्रंथ में लिखा है-नया युग तेजी से बढ़ता चला आ रहा है, उसे कोई रोक न सकेगा। प्राचीनकाल की महान् परंपराओं को अब पुनः प्रतिष्ठित किया जाना है और मध्यकालीन दुष्ट विषमताओं का तिरोधान होना है। महाकाल उसके लिए आवश्यक व्यवस्था बना रहे हैं और तदनुकूल आधार उत्पन्न कर रहे हैं। युग का परिवर्तन अवश्यंभावी है। हालाँकि महाकाल के तांडव नृत्य से उत्पन्न गगनचुम्बी जाज्वल्यमान आग्नेय लपटों द्वारा पुरातन को नूतन में परिवर्तित करने की भूमिका अगले दिनों किस तरह सम्पन्न होने जा रही है, इसे कल्पना परिधि में लाना असंभव सा जान पड़ता है; लेकिन परिर्वतन होकर रहेगा।

परमात्मा ही आत्मा का उद्गम केन्द्र, सजातीय और सद्या स्नेही सम्बन्धी है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"गागर में सागर" की तरह उनकी हर पुस्तक

मनुष्य को सर्वप्रथम अपने जीवन लक्ष्य का निर्धारण कर आगे बढ़ना चाहिये। उसका निर्धारण कैसे करें ? और उसकी प्राप्ति कैसे हो ? इसका समुचित मार्गदर्शन उनकी पुस्तक- "जीवन लक्ष्य और उसकी प्राप्ति" से मिलता है। उद्देश्य ऊँचा हो, विराट् हो, तो पग-पग पर दैवीय सहायता मिलती चली जाती है।

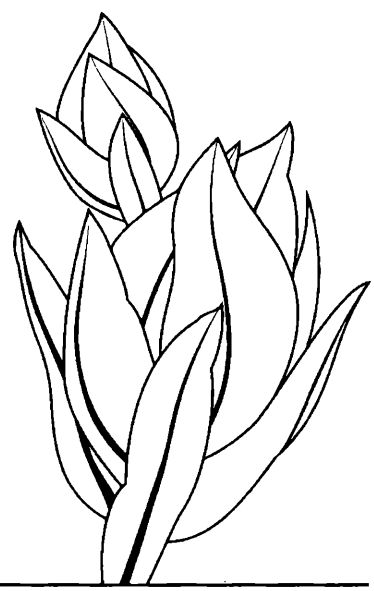
इस विषय पर वे लिखते हैं, "उद्देश्य को ऊँचा रखते हुए जो कार्य किया जाता है, उसमें एक कलापूर्ण सौन्दर्य दिखायी देता है, वह कार्य ऐसा बढ़िया सफलतायुक्त होता है, जिस पर हर किसी को मुग्ध होकर मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करनी पड़ती है।" (संजीवनी विद्या, पृष्ठ 35) उनकी एक बड़ी सारमयी पुस्तक है-"आगे बढ़ने की तैयारी"।

इसमें वे लिखते हैं कि, "अपने को असमर्थ, अशक्त एवं असहाय मत समझिये, ऐसे विचारों का परित्याग कर दीजिये कि साधनों के अभाव में हम किस प्रकार आगे बढ़ सकेंगे। स्मरण रखिये कि शक्ति का स्रोत साधनों में नहीं, भावना में है। यदि आपकी आकांक्षाएँ आगे बढ़ने के लिए व्यग्र हो रही हैं, उन्नति करने की तीव्र इच्छाएँ बलवती हो रही हैं, तो विश्वास रखिये, साधन आपको प्राप्त होकर रहेंगे।"(पृष्ठ 13) आज पूरा विश्व आँखों पर पट्टी बाँधकर बस एक शक्ति को पाने के लिए चरम पुरुषार्थ कर रहा है, वह है-धन शक्ति। बड़े-बड़े सत्ताधीश, कलाकार, प्रतिभा-सम्पन्न आज इसी शक्ति की मदमस्त सुगंध के आगे नतमस्तक हो जाते हैं। यह इस कलयुग की एक बड़ी शक्ति बनकर रह गयी है। इसका सदुपयोग करने की कला से संबंधित उनकी सारमयी पुस्तक है-"धन का सदुपयोग"।

इसी विषय से संबंधित उनकी कुछ पुस्तकें हैं-"अर्थानुशासन" एवं "बचत ही असली आय"। "शक्ति का सदुपयोग" नामक पुस्तक में वे लिखते हैं-"सही मार्ग से धनी बनना प्रशंसनीय है, धन को जोड़-जोड़ कर विशाल राशि जमा करने में नहीं, वरन् उसका ठीक समय पर आवश्यक एवं उचित उपयोग कर लेने में बुद्धिमानी है। धन को विवेक पूर्वक कमाना चाहिए और विचार पूर्वक खर्च करना चाहिए, तभी धन की शक्ति का वास्तविक लाभ प्राप्त किया जा सकता है।"(शक्ति का सदुपयोग, पृष्ठ-14)

उन्होंने धन को एक गौण शक्ति माना। स्वास्थ्य को आधारभूत शक्ति माना, जिसके आधार पर अन्य सात शक्तियों, जिसमें अन्तिम सत्य या आत्म शक्ति को पाने के बड़े सरल सूत्रों से भरी उनकी एक बड़ी शानदार पुस्तक है-"शक्ति का सदुपयोग"। जिसमें उन्होंने भवानी-दुर्गा

विचार ही उनके अस्त्र-शस्त्र हैं। "देखन में छोटे लगें, पर घाव करें गंभीर" की तर्ज पर उन्होंने वे विचार अपनी पुस्तकों द्वारा दिए, जिनने जनमानस को कुछ सोचने, कर गुजरने पर विवश कर दिया। जीवन की कोई विधा ऐसी नहीं, जिस पर उन्होंने लेखनी नहीं चलाई हो। एक भी शब्द ऐसा नहीं, जिसे हटाया या स्थानापन्न कर उसके बदले वहाँ रखा जा सके...



पापों का नाश किए बिना, इन्द्रियों का दमन किए बिना अंतःकरण की शुद्धि नहीं होती।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की आठ भुजाओं को आठ शक्तियों का प्रतीक माना है। इन शक्तियों के क्रम उन्होंने इस प्रकार दिये हैं-1. आरोग्य शक्ति, 2. विद्या शक्ति, 3. धन शक्ति, 4. व्यवस्था शक्ति, 5. संगठन शक्ति, 6. यश या प्रतिष्ठा शक्ति, 7. शौर्य शक्ति, 8. सत्य या आत्म-शक्ति।

गायत्री महाशक्ति -आद्य शक्ति के एक-एक अक्षर की व्याख्या पर उन्होंने एक-एक सारगर्भित पुस्तक लिखी है। इन्हीं में से उपरोक्त दो पुस्तकें उल्लिखित हुई हैं। इनमें एक पुस्तक है-''पवित्र जीवन''। पवित्र जीवन के अभ्यास के लिए पूज्यवर ने तीन गुणों को अतिशय महत्त्व दिया है-1. स्वच्छता, 2. सुव्यवस्था एवं 3. सादगी। उन्होंने जीवन की उपयोगिता, उसकी उत्कृष्टता एवं सार्थकता को सर्वाधिक महत्त्व दिया।

अपने जीवन को सफल-सार्थक बना लेने पर सभी सम्पर्क के व्यक्ति और देवी-देवता सबके अनुदान मिलने प्रारम्भ हो जाते हैं। इस विषय पर उन्होंने बहुत सी पुस्तकें लिखी हैं। जिनमें कुछ पुस्तकें बहुत ही सारमयी हैं। ये हैं- ''जीवन की उत्कृष्टता और सार्थकता'', ''जीवन साधना की ऊर्जा रश्मियाँ'', ''जीवन साधना के स्वर्णिम सूत्र'', ''जीवन देवता की साधना-आराधना'', ''कलात्मक जीवन जिएँ'', ''जिन्दगी हँसते-खेलते जिएँ''। एक जगह वे लिखते हैं-''समुद्र की तरह जीवन-मंथन करने से भी मनुष्य को सुख-शान्ति के असंख्यों रत्न मिलते हैं। जीवन-मंथन का अर्थ है-सामने आये हुए संघर्षों तथा बाधाओं से अनवरत लड़ते रहना।'' (कलात्मक जीवन जिएँ, पृष्ठ 10)। वे एक जगह लिखते हैं-''आत्म-परिष्कार, आत्म शोधन, यही जीवन साधना है। इसी को परम पुरुषार्थ कहा गया है। जिनने इस लक्ष्य को समझा, जानना चाहिए कि उनने अध्यात्म तत्त्व ज्ञान का रहस्य और मार्ग हस्तगत कर लिया।'' (जीवन देवता की साधना-आराधना, पृष्ठ 7)

जीवन में आरोग्य का सुख पहला सुख बताया गया है, सो युग निर्माण सत्संकल्प में उन्होंने दूसरे ही सूत्र में दिया है कि ''शरीर को भगवान् का मंदिर समझकर आत्म संयम और नियमितता द्वारा आरोग्य की रक्षा करेंगे।'' पूज्यवर के इस सारगर्भित सूत्र को जीवन में आत्मसात् कर लिया जाये, संयम और नियम का ख्याल रखा जाये तो उत्तम स्वास्थ्य की कुंजी अपने हाथों में होगी। इस विषय पर उनकी बहुत महत्त्वपूर्ण पुस्तकें लिखी हुई हैं।

जिनमें ''बिना औषधियों के कायाकल्प'' स्वास्थ्य के नियमों को समझाने वाली बहुत सारमयी पुस्तक है, जिसमें क्या खायें?, कब खायें? कैसे खायें? आदि के ऊपर बड़े सारगर्भित सूत्र भरे पड़े हैं। ''इन्द्रिय संयम'', ''दीर्घ जीवन का रहस्य'', ''निरोग जीवन के महत्त्वपूर्ण सूत्र'', ''चिर यौवन और शाश्वत सौंदर्य'', ''सात्विक जीवनचर्या और दीर्घायुष्य'', ''असंयम बनाम आत्मघात'', आदि ढेरों पुस्तकें उन्होंने प्राकृतिक स्वास्थ्य बनाये रखने पर लिखी हैं।

स्वास्थ्य के साथ मनुष्य जीवन में शिक्षा को विशेष महत्त्व दिया जाता है। परन्तु पूज्यवर ने शिक्षा के साथ-साथ विद्या को अति विशिष्ट महत्त्व दिया है। उन्होंने बच्चों के निर्माण पर विशेष ध्यान देने के लिए कहा है, उनमें श्रम वृत्ति, स्वावलम्बी वृत्ति, दिव्य गुण एवं दिव्य संस्कार जगाने वाली विद्या को शिक्षा से भी अधिक महत्त्व देने की बात कही।

अगर बच्चों में पवित्रता, प्रखरता, सादगी आदि गुणों को जगाकर उनका निर्माण किया जाय तो युग निर्माण भी जल्दी ही सम्पन्न हो जाये। इन विषयों पर उनकी ये पुस्तकें ''शिक्षा ही नहीं विद्या भी'', ''शिक्षण प्रक्रिया में सर्वांगपूर्ण परिवर्तन की आवश्यकता'', ''सार्थक एवं समग्र शिक्षा का स्वरूप'', ''शिक्षा ही नहीं दीक्षा भी आवश्यक'', ''संतान के प्रति कर्तव्य'', ''एक समानान्तर शिक्षा तंत्र'', ''बाल संस्कार शालाएँ इस तरह चलायें'', ''बाल संस्कार शाला (मार्गदर्शिका)'' विशेष महत्त्व की हैं।

हर इंसान सुखों की तलाश में निरन्तर लगा हुआ है। ये सुख अपनी मन:स्थिति में ही टिका हुआ है, क्योंकि एक ही परिस्थिति में रहने वाले दो व्यक्ति अपनी मन:स्थिति के अनुरूप अपने को सुखी या दु:खी अनुभव करते देखे गये हैं। उनकी इस विषय पर बड़ी सारगर्भित पुस्तक है-''सुख चाहें तो यों पायें'' एवं ''संजीवनी विद्या''। संजीवनी विद्या पुस्तक में वे लिखते हैं, ''संजीवनी विद्या का उद्देश्य मनुष्य के दु:खों का अंत करना और सुखों को बढ़ाना है। इस दिशा में

मनुष्य का जीवन पाकर भी, आत्मज्ञान से विमुख होना मनुष्य का सबसे बड़ा दुर्भाग्य है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उसका आरम्भिक आदेश यह है कि आत्म-ज्ञान प्राप्त करें। अपने को शरीर नहीं, आत्मा समझें। आत्मा के लाभ, हित, सुख को अधिक महत्त्व दें।'' हर व्यक्ति अपने को स्वस्थ एवं सुन्दर बनाना चाहता है तो इस विषय पर बड़ी ही गहरी मनोविज्ञान से भरी उनकी एक पुस्तक है-''स्वस्थ एवं सुन्दर बनने की विद्या''। इस पुस्तक में लेखक ने अपने गहरे मनोविज्ञान को प्रकट कर यह समझाया है कि मनोविकार ही मनुष्य को अंतत: रोगी एवं दुर्बल या निस्तेज बनाते हैं। इसमें काम, क्रोध, लोभ एवं मोह विषयों पर एक-एक लेख उन्होंने लिखा है। इन विकारों को योगियों ने कैसे जीता, उसके उपाय भी निर्देशित किये हैं।

अपने जीवन में व्यवस्था बुद्धि को बढ़ाने के कुछ सरल उपाय उन्होंने अपनी कुछ पुस्तकों में लिखा है। जिनमें ''व्यवस्था बुद्धि की गरिमा'', ''प्रबंध व्यवस्था एक कौशल'' एवं ''शक्ति संचय के पथ पर'' उनकी अच्छी पुस्तकें हैं।

समय को ही उन्होंने जीवन की बहुमूल्य निधि बताई। वे कहते हैं— ''अपनी संकल्प शक्ति से बार-बार भगवान् को प्राप्त किया जा सकता है, परन्तु खोया हुआ समय फिर कभी नहीं लौटाया जा सकता।'' इस विषय पर उनकी पुस्तक है ''समय का सदुपयोग''। जीवन में सफलता के लिए वे लिखते हैं, कि मनुष्य अपने आत्म विश्वास, दृढ़ संकल्प, भरपूर पुरुषार्थ एवं परिपूर्ण तन्मयता से हर जगह सफलता पा सकता है। इस विषय पर उनकी दो पुस्तकें ''सफलता के तीन साधन'', ''सफलता के सात सूत्र-साधन'' बड़ी सारगर्भित हैं। उनकी एक पुस्तक ''सरस, सफल एवं स्निग्ध जीवन'' बहुत ही सार सूत्रों से भरपूर है।

पतंजलि ऋषि के तत्त्वदर्शन को उन्होंने गहराई से अपने जीवन में आत्मसात् कर आज के युग के अनुरूप बहुत व्यावहारिक योग दर्शन के सूत्र लोगों में भी आत्मसात् कराये। पतंजलि ऋषि के यम, नियम के व्यावहारिक स्वरूप को उन्होंने ''जीवन साधना के स्वर्णिम सूत्र'' नाम पुस्तक में नौ सूत्रों के रूप में प्रतिपादित किया।

उनकी पुस्तकों में ''पातंजलि योग का तत्त्वदर्शन'', ''यम नियम'', ''आसन और प्राणायाम'' ''प्राणायाम से आधि-व्याधि निवारण'', ''प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि'' आदि में योग दर्शन अत्यंत व्यावहारिक स्वरूप में प्रतिपादित है। ध्यान का व्यावहारिक स्वरूप वे बताते हैं कि ''नियत विषय में अधिकाधिक मनोयोग के साथ जुट जाना, तन्मय हो जाना, सारी सुधि-बुधि भूलकर उसी में निमग्न हो जाना ध्यान है।'' (प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि, पृष्ठ-30) ''संसार के जिन महापुरुषों ने जो महान् कार्य किये हैं, वे एकाग्रता द्वारा ही हो सके हैं। उन्होंने सदा अपने लक्ष्य का ध्यान रखा और केवल लक्ष्य का ध्यान रखा, तभी वे विघ्न बाधाओं से टकराते हुए अपने मंजिले मकसूद तक बढ़ते चले गये।'' (प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि, पृष्ठ-30)।

''आप यदि तुरीय अवस्था का, ध्यान, समाधि का रसास्वादन करना चाहते हैं तो विकारी मन को सो जाने दीजिए, उसको उपेक्षित और अपमानित करके दूर हटा दीजिए। उच्च सात्विक एवं पवित्र अंत:करण को जगाइये और उसी के आज्ञानुसार अपने विचार एवं कार्यों का निर्माण होने दीजिए। नीच वृत्तियों का प्रवेश आपके अंदर किसी भी द्वार से न होना चाहिए। विकारी मन की कोई भी हलचल आपके निकट दृष्टिगोचर न हो।''

''हर कार्य में पवित्रता, ईमानदारी, मुहब्बत, नेक नीयति, उदारता, भलमनसाहत, सेवा का पुट होना चाहिए। जो भी सोचें, जो करें, इसी दृष्टिकोण से करें, यही अपनी मर्यादा रहे, इस क्षेत्र से आगे कदम न बढ़ने पाये।'' (प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि, पृष्ठ-41)।

उन्होंने विश्वभर में व्याप्त सम्पूर्ण समस्याओं की जड़ों को खोजा एवं समाधान जड़ों से निकालने हेतु निर्देश दिया। ''समस्याएँ आज की, समाधान कल के'', ''समस्त समस्याओं का समाधान-अध्यात्म'', ''अध्यात्मवाद ही क्यों ?'', ''गरीबी भगाएँ - गरिमा बढ़ाएँ'', ''अनाचार से कैसे निपटें ?'', ''अध्यात्म धर्म का अवलम्बन'', ''आगे बढ़ने की तैयारी'', आदि उनकी बड़ी समीचीन पुस्तकें हैं। ''गरीबी हटाने के लिए हमें श्रम को सम्मान देना चाहिए,

ईश्वर के किसी भी रूप का साक्षात्कार करने के लिए केवल एक ही नैसर्गिक विधान है – आत्म-संयम।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

धनिकों की तुलना में कर्मनिष्ठों को हर क्षेत्र में हर स्तर पर सम्मान देना चाहिए। यह प्रचलन चल पड़े तो हरामखोरी की अपराधों में गणना होने लगेगी और श्रमजीवी गौरवान्वित हुआ अनुभव करेगा।'' (गरीबी भगाएँ - गरिमा बढ़ाएँ, पृष्ठ-12) प्रारंभ से उन्होंने युग निर्माण का, नव निर्माण का अतिशय विराट् लक्ष्य ही अपनी दृष्टि के सम्मुख रखा। प्रस्तुत समय को फिर कभी न मिल सकने वाला अतिशय महत्त्वपूर्ण सुयोग बताया। इन्हीं विषयों पर उनकी लेखनी एवं वाणी निर्बाध चलती रही। ''नव निर्माण की पृष्ठ भूमि'', ''प्रज्ञा अभियान का स्वरूप, दर्शन एवं कार्यक्रम'', ''प्रज्ञावतार की विस्तार प्रक्रिया'', ''महाकाल का प्रतिभाओं को आमंत्रण'', ''इक्कीसवीं सदी के लिए हमें क्या करना होगा?'' ''समयदान ही युगधर्म'', ''प्रबुद्ध वर्ग धर्मतंत्र को सँभालें'', ''युग की माँग- प्रतिभा परिष्कार'', ''ईश्वर के साथ साझेदारी'' आदि पुस्तकों में पूज्यवर का गहरा दर्द, उनकी अपेक्षाएँ एवं प्रस्तुत समय की महत्ता प्रतिपादित की गई है।

वे लिखते हैं, ''इससे कौन रोक सकता है कि हम दूसरों को समझें, उन्हें प्यार करें और उस प्यार एवं अपनेपन के कारण जो आनन्द उपजे, उसका उपयोग करें। स्वर्ग निर्माण की यही कुंजी है।'' (आंतरिक उल्लास का विकास, पृष्ठ 9)

''आत्मोन्नति यही तो है कि अपनेपन के दायरे को छोटे से बड़ा बनाया जाये। जिनका अपनापन केवल अपने शरीर तक ही है, वे कीट-पतंग नीची श्रेणी के हैं, जो अपनी संतान तक आत्मभाव को बढ़ाते हैं, वे पशु-पक्षी उनसे कुछ ऊँचे हैं, जिनका अहंकार अपनी संस्था-राष्ट्र तक है, वे मनुष्य हैं; जो समस्त मानव जाति को अपनेपन से ओत-प्रोत देखते हैं, वे देवता हैं; जिनकी आत्मीयता चर-अचर तक विस्तृत हैं, वे जीवन मुक्त, परम सिद्ध हैं।'' (आंतरिक उल्लास का विकास, पृष्ठ-9)।

अपनेपन के विस्तार को ही उन्होंने आत्मा का विकास एवं जीवन लक्ष्य बताया। आत्मज्ञान के ऊपर उन्होंने पहली पुस्तक लिखी, ''मैं क्या हूँ?''। फिर निम्नांक्ति पुस्तकें इसी विषय पर लिखी हैं-''आत्मा वाऽरे ज्ञातव्यः'', ''आत्मज्ञान और आत्म कल्याण'', ''आत्मा न नर है न नारी'', ''अपूर्णता से पूर्णता की ओर'', ''आत्मिक प्रगति के मूलभूत आधार''।

मनुष्य अपने जीवन में पूज्यवर के सत्साहित्य का अवलम्बन लेकर नया उत्थान, आनन्द, उल्लास, उत्कर्ष, शान्ति, प्रगति एवं आत्म-विकास के नये चरम सोपान पा सकता है। यहाँ तक कि ईश्वर, स्वर्ग, सिद्धि-मुक्ति आदि चरम विषयों की प्राप्ति भी सहज ही कर सकता है, यह सुनिश्चित है। ◈

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

''बात सन् 60 के दशक की है, तब पूज्य गुरुदेव मथुरा में ही थे। सस्ता समय था। मैं गुरुदेव से मिलने मथुरा गया तो श्री अस्थाना जी ने पूज्य गुरुदेव के लिए दो आने की एक अच्छी-सी फूल माला खरीदी। प्रणाम करके वह उन्हें पहना दी। फिर बातें होने लगीं। पूज्य गुरुदेव ने अचानक पूछा- ''बेटा, यह माला तू कितने में लाया?'' ''दो आने में गुरुजी।'' इसपर गुरुजी बोले, ''बेटा, तेरे दो आने खर्च हो गए और यह माला मेरे किसी काम नहीं आई। यदि तू दो आने की मेरी एक छोटी-सी किताब ले जाता तो दसियों लोगों तक मेरे विचार पहुँचते। तेरे पैसे भी सार्थक होते, लोगों का भी भला होता और मुझे भी संतोष मिलता।'' अस्थाना जी कहते हैं कि पू. गुरुदेव द्वारा सहजता से व्यक्त किए गए यह उद्‌गार मेरे हृदय में गहराई से बैठ गए। मेरी समझ में आ गया कि अपने धन की सार्थकता, जन कल्याण और गुरु की प्रसन्नता, तीनों अर्जित करने के लिए युग साहित्य का प्रसार सबसे सुगम और उपयोगी माध्यम है। इसलिये मैंने ज्ञान-यज्ञ को गति देने के लिये साहित्य-विस्तार का ही लक्ष्य सामने रखा और गुरुकृपा से सफलता भी मिली।''

पाप और दोष-दुष्कर्म से प्रत्यक्ष में उतना विषैला वातावरण नहीं बनता, जितना उसे छिपाने से होता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

युगऋषि की दिव्यदृष्टि- इक्कीसवीं सदी, उज्ज्वल भविष्य

तृतीय विश्व युद्ध निरस्त होगा। आज का आक्रोश ठंडा होगा। गरम युद्ध, शीत युद्ध में बदलेंगे और शीत युद्ध अन्तत: उस स्थिति में जा पहुँचेंगे जिसे लम्बे समय के लिए सदा के लिए युद्ध विराम के रूप में देखा जा सके। ◈

अणु युद्ध ही नहीं रुकेगा, देशों की वह विभाजन रेखा भी हटेगी, जो वर्गों ने, गुटों ने अपनी-अपनी सामर्थ्य के अनुसार कब्जा जमा कर बना ली है। वर्तमान नक्शे में जो देश जहाँ दिखाई देता है, वहाँ उनमें से एक भी न रहेगा। एक ''विश्व राष्ट्र'' का निर्धारण होगा। बिना पार्टी देश में एक ही प्रजा पार्टी रहेगी। उसके द्वारा चुने संभ्रान्त लोग शासन तन्त्र चलायेंगें। ◈

जन मानस को प्रभावित करने वाले गंदे साहित्य, चित्र, फिल्म आदि अगले दिनों बंद होंगे। जन जीवन की आवश्यकताएँ पूरी करने वाली प्रमुख वस्तुएँ कुटीर उद्योग में चली जायेंगी और उन्हें सहकारी तन्त्र के अन्तर्गत रखते हुए ऐसी स्थिति उत्पन्न की जायेगी कि बड़े उद्योग उनसे प्रतिद्वन्दिता न करने पाएँ।◈

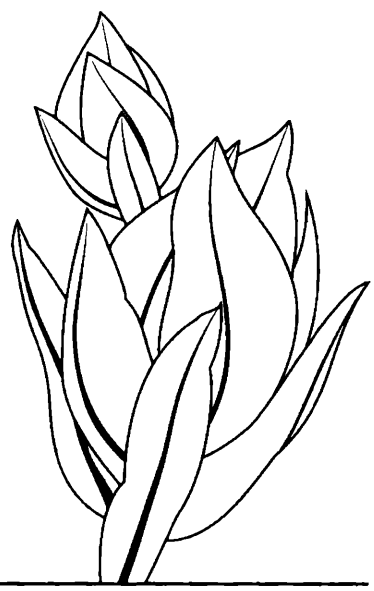
वस्त्र उद्योग, जन जीवन से सम्बन्धित शिल्प, छोटे कस्बों में बनने लगेंगे तो बेकारी की समस्या न रहेगी। बड़े कारखाने मात्र उन्हीं वस्तुओं को बनाएँगें जो कुटीर उद्योग के अन्तर्गत नहीं बन सकतीं। दैनन्दिन जीवन की समस्याओं का समाधान युग मनीषा के हाथों ही होगा। दार्शनिक और वैज्ञानिक दोनों ही मुड़ेंगे। लेखकों, दार्शनिकों का अब एक नया वर्ग उठेगा। वह अपनी प्रतिभा के बलबूते एकाकी सोचने और एकाकी लिखने का प्रयत्न करेगा। ◈

उच्च स्तरीय वैज्ञानिकों का मस्तिष्क ऐसे छोटे उपकरण बनाने की ओर लौटेगा जिससे कुटीर उद्योगों को सहायता देने वाला नया माहौल उफन पड़े। नर और नारी का भेद-भाव मिटना है। शृंगार सज्जा ने कामुकता बढ़ाई है और नारी का अवमूल्यन हुआ है। अगले दिनों नर-नारी, भाई-भाई की तरह बहन-बहन की तरह रहना सीखेंगे। अगले दिनों यह मापदण्ड सर्वथा बदल जायेगा और यह जाना जायेगा कि किसने मानवी गौरव-गरिमा को किस प्रकार और कितना बढ़ाया?

''लार्जर फैमिली'' एक सहकारी संस्था के रूप में विकसित हो सकेगी। मोहल्ले के सभी काम मिल-जुल कर एक स्थान पर सम्पन्न होंगें। ◈

व्यक्ति, परिवार और समाज की ऐसी आदर्श संरचना को मात्र कल्पना या यूटोपिया न माना जाय। एक द्रष्टा की ऐसी भविष्यवाणी मानी जाए जो आगामी कुछ दशकों में ही साकार होकर रहेगी। ◈

जीवन के अंतिम वर्षों में रचित 'क्रांतिधर्मी साहित्य' को पूज्यवर ने जीवन भर के विचारों का निचोड़ बताया है और महाकाल द्वारा उनके माध्यम से लिखवाया गया विशिष्ट साहित्य कहा है। प्रस्तुत है उनका 'इक्कीसवीं सदी-उज्ज्वल भविष्य' को लेकर उद्धृत सारांश...



सद्गुणी मनुष्य के लिए इस संसार में कुछ भी अभाव नहीं। उसे आंतरिक शांति होती है, संतोष मिलता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन की सभी समस्याओं का समाधान युगऋषि के साहित्य में

क्या आप बुद्धि बढ़ाना चाहते हैं ? पढ़ें-

1. बुद्धि बढ़ाने की वैज्ञानिक विधि
2. मस्तिष्क प्रत्यक्ष कल्पवृक्ष
3. मानवीय मस्तिष्क विलक्षण कम्प्यूटर

क्या आपका वैवाहिक जीवन लड़ाई-झगड़ों से ग्रसित है ? पढ़ें-

1. गृहस्थ एक तपोवन
2. विवाहित जीवन का अलौकिक आनंद
3. गृहस्थ एक योग साधना

परिवार के सदस्यों की एक-दूसरे से नहीं बनती, घर में नर्क जैसा वातावरण है ? पढ़ें-

1. घर के वातावरण में स्वर्ग का अवतरण
2. नररत्नों की खान सुसंस्कृत परिवार
3. समाज का मेरुदंड-सशक्त परिवार

क्या आप सत्य की खोज में हैं ? आप जानना चाहते हैं कि जीवन लक्ष्य क्या है ? पढ़ें-

1. मैं क्या हूँ ?
2. जीवन लक्ष्य और उसकी प्राप्ति
3. आत्मा वाऽरे ज्ञातव्यः
4. गहना कर्मणोऽगति

गायत्री मंत्र से दैनिक जीवन में क्या-क्या लाभ उठाये जा सकते हैं ? पढ़ें-

1. गायत्री के प्रत्यक्ष चमत्कार
2. गायत्री की प्रचण्ड प्राण ऊर्जा
3. गायत्री की दैनिक साधना

आपमें संकल्प शक्ति (दृढ़ इच्छा शक्ति) का अभाव है ? आपको असफलता का मुँह देखना पड़ता है ? पढ़ें-

1. संकल्प शक्ति की प्रचण्ड प्रतिक्रिया
2. मन के हारे हार है, मन के जीते जीत
3. प्रखर प्रतिभा की जननी-इच्छा शक्ति
4. मन की प्रचण्ड शक्ति

बच्चों को संस्कारवान् बनाने हेतु व उनका मानसिक, शारीरिक व भावनात्मक विकास करने के लिए पढ़ें-

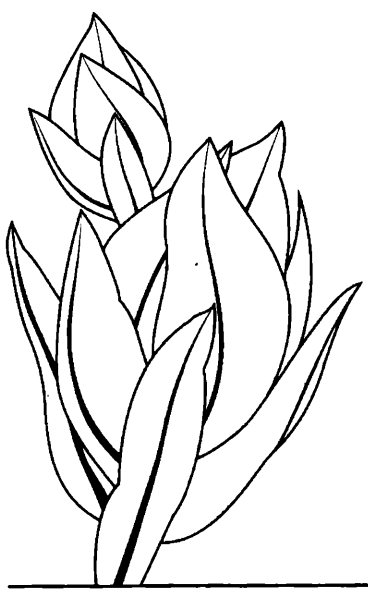
1. हमारी भावी पीढ़ी व उसका नवनिर्माण
2. शिक्षा एवं विद्या
3. बाल संस्कार शाला मार्गदर्शिका
4. बालकों का भावनात्मक विकास
5. शिक्षा ही नहीं विद्या भी

अक्सर आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता ? पढ़ें-

1. स्वस्थ रहने के सरल उपाय
2. नीरोगी जीवन का राजमार्ग
3. पंचतत्त्वों से संपूर्ण रोग निवारण
4. बिना औषधियों के कायाकल्प

बच्चे का जन्मदिन मना रहे हैं और उसे कोई पुस्तक देना चाहते हैं ? भेंट करें-

1. बाल निर्माण की कहानियाँ (1 से 16 भाग तक)
2. अनीति से जूझने वाले राष्ट्र को समर्पित शूरवीर (1 से 6 भाग)



दुःख जीवन निर्माण का संदेश वाहक है, उसका सत्कार होना ही चाहिए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

3. प्रेरणाप्रद कथा-गाथाएँ
4. महापुरुषों के अविस्मरणीय जीवन प्रसंग
5. मरकर भी अमर हो गए जो
6. महापुरुषों की जीवनियाँ

(अनेक महापुरुषों पर पुस्तकें हैं, रुचि अनुसार चुनें)

आप सच्चे लोकसेवी बनकर समाज सेवा में उतरना चाहते हैं, तो पढ़ें-

1. रुग्ण समाज और उसका कायाकल्प
2. लोक सेवियों के लिए दिशाबोध
3. नया संसार बसायेंगे-नया इंसान बनायेंगे
4. महाकाल की चेतावनी
5. समाज निर्माण के कुछ शाश्वत सिद्धांत
6. सेवा धर्म और उसका स्वरूप

मादक पदार्थों का सेवन करते हैं और इन्हें छोड़ना चाहते हैं? पढ़ें-

1. तम्बाकू एक भयानक दुर्व्यसन
2. व्यसन विनाश का सोपान
3. छात्र वर्ग में नशे की दुष्प्रवृत्ति
4. नशेबाजी से हानि ही हानि
5. विपत्तियाँ दुष्प्रवृत्तियों की सहेलियाँ

बच्चा अक्सर बीमार रहता है? घर में उपलब्ध औषधियों द्वारा सामान्य रोगों की चिकित्सा के लिए पढ़ें-

1. बाल रोगों की चिकित्सा
2. सूर्य चिकित्सा विज्ञान
3. घरेलू चिकत्सा

रसोई में उपलब्ध मसालों से रोगों का इलाज करने के लिए पढ़ें-

1. मसाला वाटिका द्वारा घरेलू उपचार
2. तुलसी के चमत्कारी गुण
3. गमले में स्वास्थ्य

उपासना और साधना का लाभ पाने के लिए पढ़ें-

1. साधना में प्राण आ जाये तो कमाल हो जाए
2. आद्य शक्ति गायत्री की समर्थ साधना
3. ईश्वर और उसकी अनुभूति
4. ईश्वर से साझेदारी हर दृष्टि से नफे का सौदा

आपकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है? आप परेशान रहते हैं? पढ़ें-

1. धनवान बनने के गुप्त रहस्य
2. संकल्प शक्ति की प्रचण्ड प्रतिक्रिया
3. बचत ही आपकी असली आय
4. धन का सदुपयोग
5. आर्थिक स्वावलम्बन
6. गरीबी भगायें, गरिमा बढ़ायें
7. उपभोग नहीं उपयोग

शादी या विवाह दिवस पर उपहार में देने योग्य पुस्तकें-

1. गृहस्थ एक तपोवन
2. गृहस्थ में प्रवेश के पूर्व उसकी जिम्मेदारी समझें
3. सफल दाम्पत्य जीवन के मौलिक सिद्धान्त
4. गृहस्थ एक योग साधना
5. विवाहित जीवन का अलौकिक आनंद
6. परिवार निर्माण

अपने कार्यों में कुशलता एवं सफलता पाना चाहते हैं? पढ़ें-

1. हारिये न हिम्मत
2. जीवन जीने की कला
3. आगे बढ़ने की तैयारी
4. अपने दीपक आप बनो तुम
5. विचारों की सृजनात्मक शक्ति

निराश, हताश, दुःखी और परेशान रहते हैं, मनोबल बढ़ाने के लिए पढ़ें-

1. निराशा को पास न फटकनें दें
2. हँसी-खुशी का जीवन
3. प्रगति की, प्रसन्नता की जड़ें अपने ही भीतर
4. मन:स्थिति बदले तो परिस्थिति बदले
5. विकृत चिन्तन रोग शोक का मूल कारण

क्या निर्णय करने में असमंजस होता है? मानसिक संतुलन के लिए पढ़ें-

1. अंतरंग का देवासुर संग्राम
2. काम-तत्त्व का ज्ञान-विज्ञान
3. मनोविकार सर्वनाशी महाशत्रु
4. आध्यात्मिक काम विज्ञान
5. मानसिक संतुलन
6. चेतन, अचेतन, सुपरचेतन मन

अक्सर धोखेबाजी का शिकार होते हैं, यह पुस्तक आपकी सहायता करेगी-

1. आकृति देखकर मनुष्य की पहचान

जीवन में प्रसिद्धि और समृद्धि पाना चाहते हैं? पढ़ें-

1. प्रसिद्धि और समृद्धि
2. मित्र भाव बढ़ाने की कला

आप जानते हैं? कौन सी अदृश्य शक्तियाँ इस सृष्टि को चला रही हैं? जानने के लिए पढ़ें-

1. दृश्य जगत् के अदृश्य संचालन सूत्र

यदि विपदाएँ जीवन में न आयें तो मनुष्य की अन्तर्मुखी चेष्टाएँ कभी भी जाग्रत न हों।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

2. ईश्वर कौन है? कहाँ है? कैसा है?
3. ईश्वर का विराट् रूप

गलत सोच के कारण परेशानी और दुखों से घिरे रहते हैं, सोचने व देखने का नजरिया बदलने के लिए पढ़ें-

1. जिंदगी हँसते-खेलते जिएँ
2. विकृत चिन्तन रोग-शोक का मूल कारण
3. स्वस्थ एवं सुंदर बनने की विद्या
4. विपत्तियाँ दुष्प्रवृत्तियों की सहेलियाँ

लोगों को अपना बनाने के लिए पढ़ें-

1. मित्र भाव बढ़ाने की कला
2. आत्मीयता का माधुर्य और सौन्दर्य
3. आंतरिक उल्लास का विकास

आपके अंदर उठती क्रांति की आग आपको सोने नहीं देती? सामाजिक परिस्थितियों में बदलाव लाना चाहते हैं? पढ़ें-

1. अनाचार से कैसे निपटें
2. सतयुग की वापसी
3. मनुष्य की दुर्बुद्धि और भावी विनाश
4. समग्र क्रांति हेतु युवाओं की तैयारी
5. महाकाल का प्रतिभाओं को आमंत्रण
6. क्रांतिधर्मी साहित्य सेट (20 पुस्तके)

मानवीय मस्तिष्क का रहस्य जानने के लिए पढ़ें-

1. मानवीय मस्तिष्क विलक्षण कम्प्यूटर
2. मस्तिष्क प्रत्यक्ष कल्पवृक्ष
3. अतीन्द्रिय क्षमताओं की पृष्ठभूमि
4. अणु में विभु, गागर में सागर

आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए पढ़ें-

1. निराशा को पास न फटकने दें
2. हँसी-खुशी का जीवन
3. प्रगति की प्रसन्नता की जड़ें अपने ही भीतर
4. आपत्तियों में धैर्य
5. अनाचार से कैसे निपटें?
6. विकृत चिन्तन रोग-शोक का मूल कारण
7. विचारों की सृजनात्मक शक्ति

महिलाओं को प्रगतिशील बनाने के लिए पढ़ें-

1. महिला जागृति अभियान
2. नारी अभ्युदय का नवयुग
3. आधी जनशक्ति अपंग न रहे
4. शिक्षित नारी आगे आए, अपने वर्ग को ऊँचा उठाए
5. नारी जागरण सेट
6. महिला जागरण का उद्देश्य

हमारे विचार क्रान्ति के बीज हैं, जो अगले दिनों धमाका करेंगे। तुम हमारा काम करो, हम तुम्हारा काम करेंगे। क्रान्ति के बीज किसी महान् विचारक के दिमाग में जन्मते हैं। वहाँ से फल-फूल कर क्रान्तिधर्मी-साहित्य के रूप में बाहर आते हैं और संक्रामक रोग की तरह अन्य दिमागों में उपजकर बढ़ते हैं। सिलसिला जारी रहता है। क्रान्ति की उमंगों की बाढ़ आती है। सब ओर क्रान्ति का पर्व मनने लगता है। चिनगारी से आग और आग से दावानल बन जाता है। बुरे-भले सब तरह के लोग उसके प्रभाव में आते हैं। कीचड़ और दलदली क्षेत्र में भी आग लग जाती है।

ऐसे में नियति का नियंत्रण करने वाली अदृश्य सत्ता परिवर्तन के क्रान्तिकारी आवेग से भरी प्रतीत होती है। तोपों की गरज, फौजों के कदमों के धमाके, बड़े-बड़े सत्ताधीशों के अधःपतन और समूचे विश्व में व्यापक उथल-पुथल के शोरगुल से भरे ये क्रान्ति के समारोह हर ओर तीव्र विनाश और सशक्त सृजन की बाढ़ ला देते हैं। क्रान्ति के इस पर्व में दुनिया को गलाने वाली कढ़ाई में डाल दिया जाता है और वह नया रूप, नया आकार लेकर निकल आती है। महाक्रान्ति के इस पर्व में ऐसा बहुत कुछ घटित होता है, जिसे देखकर बुद्धिमानों की बुद्धिमत्ता चकरा जाती है और प्राज्ञों की प्रज्ञा हास्यास्पद बन जाती है। वर्तमान युग में विचार-क्रान्ति के बीजों के चमत्कारी प्रभावों से क्रान्ति की केसरिया फसल लहलहा उठी है। परिवर्तन की ज्वालाएँ धधकने लगी हैं। क्रान्ति के महापर्व की उमंगों की थिरकन चहुँ ओर फैल रही है। ये वही महान् क्षण हैं, जब विश्वमाता अपनी ही संतानों के असंख्य आघातों को सहते हुए असह्य वेदना और आँखों में आँसू लिए अपना नवल सृजन करने को कटिबद्ध है।

अपने दोष स्वीकार कर लेने का अर्थ है - सच्चाई के प्रति प्रेम।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कैसा होगा नवयुग?

पूज्यवर लिखते हैं- हमने भविष्य की झाँकी देखी है एवं बड़े शानदार युग के रूप में देखी है। हमारी कल्पना है कि आने वाला युग प्रज्ञायुग होगा। "प्रज्ञा" अर्थात् दूरदर्शी विवेकशीलता के पक्षधर व्यक्ति या समुदाय। हर व्यक्ति स्वयं में एक आदर्श इकाई होगा एवं हर परिवार उससे मिल कर बना समाज का एक अवयव, सभी का चिन्तन उच्चस्तरीय होगा।

संकीर्ण स्वार्थपरता मिटेगी- प्रज्ञायुग में हर व्यक्ति अपने आपको समाज का एक छोटा घटक किन्तु अविच्छिन्न अंग मानकर चलेगा। निजी लाभ-हानि का विचार न करके विश्व-हित में अपना हित जुड़ा रहने की बात सोचेगा। किसी को अपनी चिन्ता में डूबे रहने की-अपनी ही इच्छा पूर्ति की-अपने परिवारजनों की प्रगति की न तो आवश्यकता अनुभव होगी, न चेष्टा चलेगी। एक कुटुम्ब के सब लोग जिस प्रकार मिल-बाँटकर खाते और एक स्तर का जीवन जीते हैं, वही मान्यता व दिशाधारा अपनाये जाने का औचित्य समझा जाएगा।

प्रज्ञा युग के नागरिक- बड़े आदमी बनने की नहीं--महामानव बनने की महत्त्वाकांक्षा रखेगें। कोई किसी के विलास-वैभव की प्रतिस्पर्धा नहीं करेगा; वरन् होड़ इस बात की रहेगी कि किसने अपने आपको कितना श्रेष्ठ, सज्जन एवं श्रद्धास्पद बनाया। वैभव इस बात में गिना जायेगा कि दूसरे के अनुकरण करने के लिए कितनी कृतियाँ और परम्पराएँ विनिर्मित कीं। आज के प्रचलन में सम्पदा को सफलता का चिह्न माना जाता है। अगले दिनों यह मापदण्ड सर्वथा बदल जायेगा और यह जाना जायेगा कि किसने मानवीय गौरव-गरिमा को किस प्रकार और कितना बढ़ाया?

मानसिक व्याधियों से छुटकारा- प्रज्ञा युग में शारीरिक और मानसिक व्याधियों से सहज ही छुटकारा मिल जाएगा; क्योंकि लोग प्रकृति के अनुशासन में रहकर आहार-विहार का संयम बरतेंगे और अन्य प्राणियों की तरह अन्तः प्रेरणा का अनुशासन मानेंगे, फलतः न दुर्बलता सतायेगी, न रुग्णता।

परिवार का गठन- व्यक्तित्व और परिवार को एक-दूसरे का पूरक माना जायेगा और संयुक्त परिवार की वैज्ञानिक आचार संहिता विकसित होगी। हिल-मिलकर रहने, मिल-बाँटकर खाने से हँसती-हँसाती जिन्दगी जीना ही पारिवारिकता है। प्रज्ञा युग का हर मनुष्य शरीर निर्वाह की तरह पारिवारिकता में भी पूरा रस लेगा और प्रयत्नरत रहेगा। प्रज्ञायुग में हर गृहस्थ को स्नेह, सद्भाव एवं उत्साह से भरा-पूरा पाया जायेगा। क्योंकि उसके सभी सदस्य श्रमशीलता, सुव्यवस्था, मितव्ययिता, उदार-सहकारिता और सुसंस्कारिता-सज्जनता के पंचशीलों को सुख-शान्ति का आधार मानेंगे। साथी एवं बालकों को सुसंस्कारी, सम्भ्रान्त एवं स्वावलम्बी नागरिक बना सकने की योग्यता एवं घर का उपयुक्त वातावरण है या नहीं, इन सभी बातों का गम्भीरतापूर्वक पर्यवेक्षण के उपरान्त ही विवाह एवं संतानोत्पादन का साहस किया जाया करेगा।

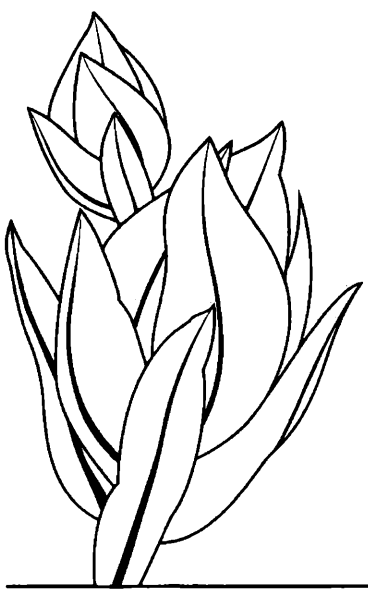
संतान-अभिभावक न तो सन्तान से वंश चलने, पिण्डदान मिलने, सेवा-सहायता पाने की अपेक्षा रखेंगे और न सन्तान अपने अभिभावकों की सम्पदा के सहारे गुलछर्रे उड़ाने की। दोनों के बीच विशुद्ध स्नेह-सद्भाव का रिश्ता होगा और श्रद्धा-शालीनता बढ़ाने का अभ्यास करेंगे। कन्या और पुत्र के बीच कहीं कोई भेदभाव नहीं किया जायेगा। दोनों को समान स्नेह एवं महत्त्व मिलेगा। प्रज्ञा युग का हर विचारशील सन्तानोत्पादन से बचेगा और यदि वात्सल्य-आनन्द लेने का मन होगा तो किसी को गोद लेने की अपेक्षा अनेकों असहाय बालकों को पालने और सुयोग्य बनाने का भार ग्रहण करेगा।

सबसे बड़ा परिवर्तन-आगामी युग प्रज्ञायुग में जो सबसे बड़ा परिवर्तन होगा, वह मनुष्य-मनुष्य के बीच में आत्मभाव की स्थापना होगी। अध्यात्म-भावना के प्रसार का परिणाम यह होगा कि मनुष्यों का दृष्टिकोण विशाल बनेगा और वे विश्व-मानव की भावना को ग्रहण करने लगेंगे। तब एक ऐसा समय आ जाएगा, जब एक परम पिता के पुत्र होने के नाते समस्त मनुष्य अपने को एक ही मानव जाति का सदस्य समझने लगेंगे। ◈

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

24 कला के अवतार के 24 चमत्कार

गायत्री के चौबीस अक्षर के वे पर्याय बन गए। प्रत्येक अक्षर प्रज्ञावतार का चौबीस कला का अवतार बन गया। इन कलाओं का परिचय जानकर आपको भी विश्वास हो जाएगा कि गायत्री को उनने किस गहराई से आत्मसात् किया था...



1. स्वतंत्रता संग्राम के जुझारू योद्धा पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य- देश-प्रेम में मस्त होने के कारण राजनीति क्षेत्र में मत्त के नाम से पुकारे जाते थे।

आचार्य जी के जीवन की यह शुरुआत उस समय हुई जब महात्मा गाँधी ने अंग्रेजों के खिलाफ देशव्यापी दौरा किया और सतत 1923-24 में श्री कृष्णदत्त जी पालीवाल ने दैनिक ''सैनिक''अखबार का प्रकाशन शुरू किया।

गणेश शंकर विद्यार्थी द्वारा प्रकाशित विद्यार्थी पत्रिका से प्रेरित होकर आचार्य जी ने क्रान्तिकारी गीत लिखना शुरू कर दिया जो दैनिक ''सैनिक'' और कलकत्ता से छपने वाले दैनिक ''विश्वामित्र'', ''किस्मत'' और ''मस्ताना'' जैसी पत्रिकाओं से छपने लगे। इन गीतों ने आगरा व अवध से लेकर बंगाल तक क्रान्ति की आग भड़काने में अपूर्व योगदान दिया। आज भी ''चिंरजीव पुस्तकालय'' ने पूज्य आचार्य जी के गीतों को सुरक्षित रखा है।

2. भगीरथ तप- वर्तमान समय में दुर्बुद्धि से त्रस्त मानव जाति की व्यथा का निराकरण करने के लिए युग के भगीरथ पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने कठोर तप किया और सद्बुद्धि प्रदायिनी महाप्रज्ञा को धरती पर अवतरित किया। महाप्रज्ञा माँ गायत्री की अनुकम्पा अन्त: धाराओं में प्रवाहित हो उठी, दुर्बुद्धि रूपी दुर्भिक्ष का विनाश हुआ, सद्बुद्धि रूपी ज्ञान गंगा ने धरती वासियों को धन्य कर दिया।

3. विश्वामित्र एवं वशिष्ठ का पुरुषार्थ- महर्षि विश्वामि गायत्री महामन्त्र के दृष्टा थे। उन्हें नूतन सृष्टि का सृजेता भी कहा जाता है। उन्होंने हरिद्वार के सप्तऋषि क्षेत्र में तप करके आद्य शक्ति गायत्री का साक्षात्कार किया।

विश्वामित्र की परम्परा को पूज्य गुरुदेव ने शानदार ढंग से पूर्ण किया। गायत्री माता की 24 वर्षों की कठोर तपश्चर्या के फलस्वरूप गायत्री की सिद्धि प्राप्त करके गायत्री मन्त्र रूपी अमृत संजीवनी जन-जन को देकर नवीन समाज के निर्माण को चरितार्थ करते हुए इस युग के विश्वामित्र कहलाये।

ऋषि वशिष्ठ की परंपरा का पालन करते हुए पूज्य आचार्य जी ने तर्क, तथ्य प्रमाण के द्वारा समाज में व्याप्त कुरीति, आडम्बर एवं रूढ़ियों को समाप्त किया। वेद, पुराण एवं उपनिषदों के गूढ़ तथ्यों को सरल भाषा में समझाते हुए धर्म के वास्तविक स्वरूप को उजागर किया। ''धर्म एवं विज्ञान'' तथा ''धर्म और राजनीति'' का अद्भुत समन्वय किया।

4. कबीर का पुरुषार्थ- 12 वीं-13 वीं शताब्दी में देश में आस्था संकट, भ्रम, रुढ़ि, आडम्बर, प्रचलित विवेकहीन मान्यताएँ इस कदर व्याप्त थीं कि धर्म एक मखौल और हँसी का पात्र बन गया

आत्म हत्यारे अनेक प्रकार के होते हैं, पर सबसे बुरे वे हैं जो आत्मा को भूख और प्यास से तरसा-तरसा कर मारते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

था तथा विभिन्न धर्म सम्प्रदायों समर्थकों में आपस में मतभेद एवं विवाद था। संत कबीर दास जी ने धर्म के वास्तविक स्वरूप को समाज में फैलाया तथा तर्क, तथ्य एवं विवेक के आधार पर सामाजिक एवं धार्मिक रूढ़िवादिता को समाप्त करने में सफल रहे।

वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य ने भी इस युग में कबीर की तरह तर्क, तथ्य, प्रमाण के आधार पर धर्म की विकृतियों को दूर कर इसके वास्तविक स्वरूप को समाज में प्रस्तुत किया। धर्म के नाम पर तथा देवी - देवताओं की मान्यताओं में चल रहे विवाद को समाप्त कर सत्य सनातन आदि शक्ति गायत्री मन्त्र को जन-जन तक पहुँचाया । धर्म-तर्क, तथ्य, प्रमाण एवं विज्ञान की कसौटी पर खरा सिद्ध होने के कारण बुद्धिजीवियों के बीच पहुँचा।

5. व्यास की अद्वितीय साहित्य साधना - सम्पूर्ण विश्व में ज्ञान विज्ञान का प्रसारण महर्षि व्यास की देन थी । उन्होंने अट्ठारह पुराणों के साथ महाभारत की रचना की।

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने व्यास परम्परा का निर्वाह किया। मानवता के लिए ज्ञान की संजीवनी के रूप में 3200 पुस्तकों की रचना की। इन पुस्तकों में मनुष्य जाति की प्रत्येक कष्ट कठिनाईयों का हल है । इन पुस्तकों के अध्ययन से जन मानस की चिंतन धारा में परिवर्तन हुआ।

इसके अतिरिक्त चारों वेद, छः शास्त्र, अट्ठारह पुराण एवं उपनिषदों का भाष्य किया और प्रज्ञापुराण चार भागों में उन्नीसवें पुराण के रूप में समाज को दिया।

पूज्य गुरुदेव की विचार क्रांति अभियान की सफलता में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण योगदान उनके साहित्य का रहा। पूज्यवर के विचारों ने बुद्धिजीवियों के विचारों को मथ दिया। पूज्य गुरुदेव के अनुसार उनका जीवन उनके साहित्य में है। देव संस्कृति के दिग्विजय करने में साहित्य का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

6. याज्ञवल्क्य के यज्ञ विज्ञान का पुनरुद्धार- मनुष्य की बौद्धिक क्षमता को विकसित करने, उसके दोष दुर्गुणों का शमन करने, सत्कार्य करने की प्रेरणा देने एवं प्रकृति को संतुलित बनाये रखने के लिए महर्षि याज्ञवल्क्य द्वारा वेद में वर्णित यज्ञ विज्ञान पर शोध किया गया था। कालान्तर में यज्ञ विद्या का लोप होता गया और यज्ञ एक साधारण, अग्नि होत्र तक सीमित रह गया।

युगऋषि ने भी यज्ञ की शास्त्रीय विवेचना करते हुए यज्ञ का नया स्वरूप दीपयज्ञ तथा यज्ञ के महत्त्व को जनमानस को समझाकर यज्ञ के प्रति उनकी श्रद्धा पुनःस्थापित करने में सफल रहे। यज्ञों में घुसे आडम्बरों को समाप्त किया तथा नर-नारी सभी को यज्ञ करने का अधिकार प्रदान किया। परिव्राजकों को प्रशिक्षित कर देश एवं विदेशों में यज्ञ का प्रचार प्रसार किया। इस तरह उन्होंने याज्ञवल्क्य की परम्परा का पुनरुद्धार किया।

7. महर्षि पतंजलि योग-प्राणायाम- महर्षि पतंजलि योग-प्राणायाम के जनक रहे हैं। परम पूज्य गुरुदेव वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पंडित श्रीराम शर्मा जी ने अध्यात्म का आधार योग-प्राणायाम की सुषुप्त हो चुकी विद्या को पुनः जागृत किया। शरीर, मन एवं आत्मा को स्वस्थ रखने के लिए योग-प्राणायाम एक अति महत्त्वपूर्ण उपाय है। वर्तमान युग की भागदौड़ आपाधापी एवं भावनात्मक प्रदूषण से मनुष्य हताश निराश एवं प्राण विहीन हो रहा था। पूज्य आचार्य जी ने योग प्राणायाम की महत्त्वपूर्ण विद्या को पुनः जागृत कर महत्त्वपूर्ण जीवन शक्ति का आधार प्रदान किया।

8. महर्षि चरक प्रणीत आयुर्वेद के उन्नायक- जड़ी-बूटियाँ, स्थूल, सूक्ष्म एवं कारण तीनों शरीरों को शान्त एवं स्वस्थ रखती हैं। भारतीय आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति अति प्राचीन तथा सम्पूर्ण विश्व में अपनायी जाने वाली पद्धति है।

पूज्य आचार्य जी ने आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति को पुनः जागृत करके लुप्त हो रही जड़ी-बूटियों को संरक्षण प्रदान किया एवं उसके कारगर परिणाम से विश्व मानव को परिचित कराया। अगले दिनों आयुर्वेद चिकित्सा सम्पूर्ण विश्व की चिकित्सा पद्धति बनने जा रही है।

9. अध्यात्म और विज्ञान के समन्वित स्वरुप के प्रतिपादक-महर्षि कणाद- अध्यात्म और विज्ञान एक दूसरे के पूरक हैं। विज्ञान विहीन धर्म को बुद्धिजीवी वर्ग में कभी मान्यता नहीं मिल सकती। तर्क, तथ्य, प्रमाण की कसौटी पर खरा उतरने वाले धर्म को मान्यता मिलती है। वैसे भी

आलसी और अव्यवस्थित, छिद्रान्वेषी और उद्विग्न मनुष्य के लिए संसार नरक के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

इस समय विज्ञान का जो विकसित स्वरूप दिखाई पड़ता है, इसका श्रेय भारतीय ऋषियों को ही जाता है। संचार, परमाणु विद्युत, चिकित्सा आदि के जनक एवं शोध करने वाले भारतीय ऋषि ही थे। पूज्यवर ने धर्म और विज्ञान का अद्‌भुत समन्वय कर धर्म के वास्तविक स्वरूप से मानव जाति को परिचित एवं आत्मसात् कराकर महर्षि कणाद की परम्परा का पुनरुद्धार किया।

10. महर्षि त्रियुगी नारायण-अखण्ड अग्नि के शोधकर्ता- महर्षि त्रियुगी नारायण ने अखण्ड अग्नि एवं यज्ञों पर शोध कार्य किया था। परमपूज्य गुरुदेव ने सन् 1926 में अखण्ड दीप प्रज्ज्वलित किया जो आज तक प्रज्ज्वलित है तथा अखिल विश्व गायत्री परिवार का प्रेरणा स्रोत है।

11. आदि शंकराचार्य की शक्तिपीठ स्थापना की परम्परा का निर्वाह- मानव जाति को जीवन सूत्र सिखाने तथा धार्मिकता का वातावरण विनिर्मित करने हेतु आदि गुरु शंकराचार्य जी ने देश के चारों कोनों में चार धामों की स्थापना की। पूज्य गुरुदेव श्रीराम शर्मा जी ने भारत व विदेशों में लगभग 4000 गायत्री शक्तिपीठों एवं प्रज्ञापीठों की स्थापना कर युगशक्ति गायत्री की सत्ता को जन-जन तक पहुँचाया।

12. देवर्षि नारद के रूप में सच्चे जन सेवक- पूज्य गुरुदेव सच्चे जन सेवक थे। लोगों के दु:ख दर्द देखकर उनका हृदय करुणा से भर जाता था। आगरा में मेहतर जाति की एक बूढ़ी औरत छपको रहती थी। उसकी सेवा पूज्यवर ने सच्चे मन से की। पूरे देश की यात्रा करके उन्होंने लोगों के दर्द को दूर किया एवं आशीर्वाद देकर मालामाल कर दिया। उनके पास जाने वाला व्यक्ति कभी खाली हाथ नहीं लौटा ।

13. महात्मा गाँधी की सादगी एवं संवेदना- नदी में नहाती हुई एक युवा नारी के फटे वस्त्रों को देखकर महात्मा गाँधी ने अपनी आधी धोती फाड़कर उसको दे दिया, तब से वे आधी धोती से अपना काम चलाते रहे। समाज के दर्द को देख पूज्य गुरुदेव का मन तड़प उठा। समाज का दर्द दूर करने का संकल्प लेकर उन्होंने सभी प्रकार के साधन सुविधा का त्याग कर दिया और आजीवन सादगी से रहे। उन्होने कहा है-''लोग मुझे संत, गुरु सद्‌गृहस्थ, ऋषि पता नहीं क्या-क्या कहते हैं, परन्तु मेरी छाती को चीर कर कोई देखे तो उसमें समाज की पीड़ा और पतन की चोट से छटपटाता एक हृदय मिलेगा। मेरी कितनी रातें इसी पीड़ा हेतु जागते हुए समर्पित हो गयीं।''

14. समर्थगुरु रामदास की भूमिका का निर्वाह- परमपूज्य गुरुदेव ने समर्थ गुरु रामदास की तरह भारतीय संस्कृति को ध्वस्त करने वाली पाश्चात्य सभ्यता के विरुद्ध जमकर लोहा लिया तथा शिवाजी की तरह नैष्ठिक शिष्यों को गढ़ कर सम्पूर्ण विश्व में देव संस्कृति का विस्तार किया।

15. रामकृष्ण परमहंस के सर्वधर्म समभाव का निर्वहन- रामकृष्ण परमहंस की तरह आचार्य श्री भी सभी धर्मों के प्रति एक उदारभाव एवं विवेकपूर्ण दृष्टिकोण का प्रतिपादन करते हैं। सभी धर्मों के सार तत्व के रुप में एक सार्वभौम जीवन दृष्टि एवं जीवनशैली का प्रतिपादन करते हैं।

16. पिछड़ों एवं दलितों के मसीहा- पूज्य गुरुदेव पिछड़ों एवं दलितों के मसीहा थे। समाज के दलित, पतित एवं गरीब लोगों के प्रति उनके हृदय में निरन्तर स्नेह, सहयोग एवं संवेदनशीलता की अविरल धारा प्रवाहित होती रहती थी। एक बार गुरुदेव ने पानी माँगा तो किसी शिष्य ने मौसम्मी का जूस दे दिया । गुरुदेव ने एक घूँट जूस पिया था कि उन्होंने तुरन्त मुँह में उँगली डालकर उल्टी कर दिया और कहा इस देश में ऐसे कितने बालक हैं जो दूध नहीं पाते, ऐसे कितने लोग हैं जिन्हें रोटी नहीं मिलती, मैं कैसे जूस पी सकता हूँ। मैं ऋषि हूँ, आत्मा हमें क्षमा नहीं करेंगी।

17. शिव की प्रवृत्ति- पूज्य गुरुजी ने आत्मबल को श्रेष्ठ बल माना। शिव की तरह उनमें सेवाभावी का गुण था। उन्होंने जीवन भर परमार्थ का बीज बोया और काटा तथा जो कुछ भी प्राप्त किया उसको समाज में बोते चले गए। अपने लिए कुछ भी नहीं बनाया। उन्होंने प्रचोदयात् की शक्ति की साधना की, जिससे असंख्यों को जीवनदान मिला। शिवजी के दरबार में अनगढ़ लोगों का मेला था, पर अनगढ़ता से सुघढ़ता किस प्रकार से लायी जाए, इस कला का ज्ञान गुरुजी ने पूरे विश्व को

युग का अवसान सद्‌विचारों और सत्प्रवृत्तियों के घट जाने से होता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बताया। विकट परिस्थितियों में भी चन्द्रमा की तरह शांत रहने की कला बताई। उन्हें हरदम केवल अपनी ही नहीं बल्कि दुनिया के करोड़ों लोगों के भविष्य की चिन्ता थी। युग निर्माण योजना उनकी शिव प्रवृत्ति की परिचायक थी ।

18. दयानन्द सरस्वती का संकल्प- पूज्य गुरुदेव ने वर्तमान समय में सबसे बड़ा संकट आस्था संकट बताया, जिसके कारण मानव जाति संकट के चक्रव्यूह में फँसती गयी। इससे उबरने के लिए उन्होंने स्वामी दयानन्द की भाँति धर्म ध्वजा उठायी और सनातन ऋषियों, मुनियों और सन्तों के द्वारा प्रचलित मान्यताओं को युगकालीन परिस्थितियों के अनुकूल चलाया। वैदिक धर्म जो विखण्डित हो चुका था, उसको पुनःस्थापित किया। यही कारण है कि वे युगऋषि दयानन्द की भाँति कहलाये।

19. बेकारी एवं बेरोजगारी के लिए कुबेर बन दिए संदेश- पूज्य गुरुदेव ने बेकारी एवं बेरोजगारी दूर करने के लिए सूत्र प्रदान किया है-

1. श्रम का सम्मान 2. कार्य, पूर्ण मनोयोग एवं विश्वास से करना 3. धैर्य। आचार्यजी ने उपरोक्त सूत्रों को अपने जीवन में अपनाया तथा कुबेर जैसा वैभव तथा साधन सम्पदा युग देवता के चरणों में समर्पित कर दिया।

20. नारी जाति के उद्धारक के रूप में: परम पूज्य गुरुदेव तथा वंदनीया माताजी नारी के मसीहा थे। हजारों वर्षों से गुलामी एवं दासता की जंजीरों से जकड़ी हुई नारी को बंधनमुक्त कराया, उन्हें वेद पढ़ने तथा यज्ञ करने एवं कराने का सौभाग्य प्रदान किया। अपनी गरिमा का आत्मबोध कराकर राष्ट्र की मुख्य धारा में शामिल किया।

21. संगीत साधना के तानसेन- पाश्चात्य सभ्यता की देन है पॉप संगीत। इस संगीत ने मनुष्य के चिन्तन के स्तर को गिराने में भरपूर सहयोग किया। पूज्य गुरुदेव संगीत साधना के तानसेन थे। उन्होंने संगीत के स्तर को आसमान की ऊँचाई तक पहुँचाया। इन गीतों से मनुष्य का मन झूम जाता है तथा हृदय भक्ति से भर जाता है। संगीत द्वारा मनुष्य के अन्तःकरण तथा प्रकृति पर पड़ने वाले प्रभाव को ध्यान में रखते हुए पूज्यवर ने युग संगीत की रचना की ।

22. भगवान बुद्ध की परिव्राजक एवं वानप्रस्थ परम्परा का निर्वाह- भारतीय ज्ञान विज्ञान से जन-जन को आलोकित करने के लिए गुरुदेव ने परिव्राजक तैयार कर उन्हें विश्व के कोने-कोने तक भेजा। एक लाख परिव्राजक तैयार करने का उनका लक्ष्य था।

23. नालंदा, तक्षशिला की परंपरा में देव संस्कृति की स्थापना- पूज्य गुरुदेव ने भारतीय संस्कृति के ज्ञान को सम्पूर्ण विश्व में प्रसारित करने के लिए नालन्दा एवं तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालय की स्थापना का मन बनाया था। शांतिकुंज के निकट गायत्रीकुंज में विश्वविद्यालय का निर्माण हो चुका है।

24. साक्षात् महाकाल के रूप में- आचार्य जी मनुष्य के रूप में साक्षात् महाकाल थे। उनको प्रत्येक विषय में दक्षता प्राप्त थी। जो कार्य गुरुवर ने कर दिखाया, वह अवतारी चेतना से नीचे का व्यक्ति नहीं कर सकता। गुरुदेव की दृष्टि विश्व के प्रत्येक दृश्य-अदृश्य एवं भावी समस्याओं पर थी, न केवल दृष्टि थी बल्कि उन समस्याओं का हल भी दिया। पूज्य गुरुदेव ने जो उपकार सम्पूर्ण मानव जाति पर किया है, उनका ऋण कई युगों तक नहीं चुकाया जा सकता है।

पीड़ितों की सेवा ही सच्चा धर्म

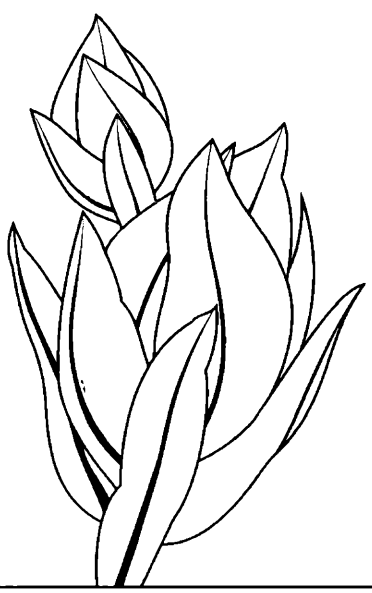
ईसा मसीह केपर नाम के नगर में पहुँचे। वे दुष्ट-दुराचारियों के मुहल्ले में ठहरे और वहीं रहना शुरू कर दिया। नगर के प्रतिष्ठित लोग ईसा के दर्शनों को पहुँचे तो उनने आश्चर्य से पूछा-भला इतने बड़े नगर में आपको सज्जनों के साथ रहने की जगह न मिली या आपने उनके बीच रहना पसन्द न किया? हँसते हुए ईसा ने पूछा-वैद्य मरीजों को देखने जाता है या चंगे लोगों को? ईश्वर का पुत्र पीड़ितों और पतितों की सेवा के लिए आया है। उसका स्थान उन्हीं के बीच तो होगा। जहाँ वह उनकी सेवा कर सके और शांति अर्जित कर सके।

जीवन में किसी सदुद्देश्य की सफलता के लिए दृढ़ निश्चय होना परमावश्यक है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

माताजी की कहानी - उन्हीं की जुबानी

"वे तुम सबकी ही नहीं, हमारी भी माताजी हैं। वे माताजी बनकर ही पैदा हुई थीं और उसी तरह इस मिशन का निर्वाह कर रही हैं। वे न होतीं, तो हम यह मिशन न खड़ा कर पाते।" ये उद्‌गार थे युगऋषि के परम वन्दनीया माताजी के विषय में। सन् 1961 के समय जब गुरुदेव हिमालय यात्रा पर गये, उस समय में व्यक्त किये गये माताजी के उद्‌गार...



आचार्य जी के घर में जब से मेरा प्रवेश हुआ है, तब से मैंने उन्हें देवता के रूप में पाया है और परमेश्वर के रूप में पूजा है। उनकी प्रत्येक इच्छा और आज्ञा में मुझे अपना सौभाग्य और कल्याण अनुभव होता रहा है। समय-समय पर वे मुझे कड़ी परीक्षाओं में डालते रहे हैं। गत नरमेध यज्ञ में उन्होंने अपनी सारी पैतृक एवं व्यक्तिगत सम्पत्ति, मेरे जेवर तथा प्रेस आदि जो कुछ था, सार्वजनिक घोषित कर देने, समाज को सर्वस्व दान कर देने का विचार किया, मुझसे सलाह ली, मेरी मनोभूमि में कुछ कच्चाई थी, पर उन्होंने कुछ गम्भीरता से उस बात का महत्व बताया तो मेरे लिये यही बात सर्वश्रेष्ठ थी। उतनी ही आत्मिक प्रसन्नता से मैं भी सहमत हो गई थी जितनी कि उनकी आन्तरिक इच्छा थी। इसी प्रकार जब उन्होंने शेष जीवन में ब्रह्मचर्य पूर्वक रहने की बात सोची और मुझसे सलाह ली तो मुझे वही परम कल्याण का मार्ग अनुभव हुआ। कुछ दिन पूर्व वे दोनों बच्चों को समाज को देकर और मुझे अपने साथ लेकर धर्मप्रचार के लिए देशव्यापी पर्यटन की बातें सोचते थे, तब भी मेरी पूर्ण सहमति थी। अब उन्होंने अपनी वर्तमान इच्छा, मुझे अखण्ड ज्योति चलाते रहने और स्वयं अन्यान्य महत्त्वपूर्ण कार्यों की ओर अग्रसर होने का निश्चय किया, तो इसमें भी मुझे क्यों इनकार होता? मेरी अयोग्यता बाधक थी, उसी के कारण संकोच भी था, पर जब उनका आदेश, आशीर्वाद सामने है, तो दूसरी बात सोचने की आवश्यकता अनुभव नहीं होती। मैंने अपने इस छोटे से जीवन में ऐसी अगणित घटनाएँ देखी हैं जिनमें उनके आशीर्वाद को पाकर तुच्छ व्यक्ति भी महान कार्य सम्पन्न कर सके हैं। उसी बलबूते पर मेरा संकोच समाप्त हो जाता है और अखण्ड ज्योति की गुरुतर जिम्मेदारी को अपने कंधे पर लेने का साहस किसी प्रकार कर पाती हूँ।

अखण्ड ज्योति के संपादन सम्बन्धी यह परिवर्तन आचार्य जी ने क्यों किया, इसकी एक विस्तृत पृष्ठभूमि है। उनका जीवन, साधना मय जीवन है। सच्चे अर्थों में उनका अन्त:विश्लेषण किया जाए तो वे और कुछ पीछे, साधक पहले हैं। यही उनका सबसे प्रिय कार्य रहा है, इसी में उनका मन रमता और रुचता है।

24-24 लक्ष के 24गायत्री महापुरश्चरण उन्होंने पूरे कर लिए थे, तो उन्होंने उसकी पूर्णाहुति स्वरूप कुछ धर्म प्रचार करने का संकल्प किया था। उसमें उन्हें 7 वर्ष लगाने थे। वे 7 वर्ष अगले साल पूरे हो जाते हैं। इसीलिए उन्हें अब फिर अपने साधना क्षेत्र में लौटना है। अखण्ड ज्योति का यह सम्पादन-परिवर्तन भी इसी योजना का एक अंग है। अपने 24 महापुरश्चरण पूर्ण कर लेने पर उन्होंने

सहायता के लिए दूसरों के सामने मत गिड़गिड़ाओ, क्योंकि यथार्थ में किसी में भी इतनी शक्ति नहीं है, जो तुम्हारी सहायता कर सके।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

पूर्णाहुति की सात सूत्री योजना बनाई थी, उसमें (1) गायत्री तपोभूमि की स्थापना, जिसके द्वारा विश्वव्यापी गायत्री प्रचार हो सके। (2) अखण्ड अग्नि की स्थापना, जिसमे नित्य यज्ञ होते रहने से यज्ञ शक्ति का परिपुष्ट होना। (3) गायत्री परिवार की स्थापना, जिसमें 2400 शाखाओं के अंतर्गत सवा लक्ष उपासक नित्य-नियमित उपासना का संकल्प लेकर प्रतिदिन कम से कम सवा करोड़ गायत्री जप करते रहें। (4) सहस्र कुण्डीय यज्ञ, जिसमें देश भर के गायत्री उपासक एक स्थान पर एकत्रित होकर एक सम्मिलित शक्ति का उद्भव कर सकें। (5) युग निर्माण के लिए नैतिक एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान आंदोलन का आरम्भ। (6) देश भर में 2400 कुण्डों के यज्ञ कराके गायत्री और यज्ञ का व्यापक प्रसार तथा भावी अशुभ समय में शान्ति की स्थापना। (7) चारों वेदों का सरल, सुबोध एवं सस्ता हिन्दी भाष्य करके वेदज्ञान का विस्तार। सात वर्षों में यह सात कार्य उन्हें सम्पन्न करने थे।

कार्य बहुत बड़े थे। जिन दिनों 24 महापुरश्चरण उन्होंने पूर्ण किए थे और ये सात सूत्री योजना मुझे बताई थी, तो मैं अवाक रह गई थी। अपने साधन जितने सीमित थे, योजना का प्रत्येक भाग उतना ही बड़ा था, उसे देखते हुए सातों तो क्या, एक कार्य का एक अंश भी पूरा होना सम्भव नहीं दीखता था, क्योंकि इन कार्यों के लिए प्रचुर धन, विशाल जन सहयोग और काफी समय एवं श्रम लगाने की आवश्यकता स्पष्ट थी। जिस छोटे से घर में हम पाँच प्राणी रहते हैं, उसके सीमित दायरे और सीमित साधनों को देखते हुए यह सात सूत्री योजना असम्भव जैसी लगी। मैंने अपना संदेह उनके सामने विनम्र शब्दों में रखा, तो वह मुस्कुराए और बोले- ''तुम्हें इतने दिन साथ रहते हो गए, पर अभी भी तुम इन कार्यों में हम लोगों की व्यक्तिगत तुच्छ सामर्थ्य के आधार पर सफल-असफल होने का अनुमान लगाती हो? इस संकल्प को हम नहीं वह शक्ति पूरा करेगी, जिसके साथ, जिसकी गोदी में हमने अपने आप को सर्वतोभावेन सौंपा हुआ है।'' मैं चुप हो गई। उनकी आत्मिक प्रेरणा के आधार पर अनेक लोगों को सफलताएँ प्राप्त करते देखा है, फिर अपना संकल्प अधूरा क्यों रहेगा? यह सोच मैंने मस्तक झुका लिया।

आचार्य जी की सभी योजनाएँ आध्यात्मिक आधार पर होती हैं- उनके पीछे दिव्य सन्देश रहते हैं, इसलिए उनमें हेर फेर करने, अनुरोध करने की अपनी हिम्मत नहीं होती। वैयक्तिक जीवन में कुछ मानसिक तथा बाहरी कठिनाइयाँ उनके सान्निध्य के अभाव में दु:खी करती हैं, पर इसके लिए मैं उनको महान लक्ष्य से विचलित नहीं करना चाहती। मैं अब तक कभी भी उनके मार्ग में बाधक बनी भी नहीं और न आगे बनना चाहती हूँ।

मेरे लिए एक ही कार्य उन्होंने सौंपा है कि ''साधना का प्रचण्ड स्रोत सूखने न पाए, जिसके आधार पर गायत्री परिवार की सारी गतिविधियों की सफलता निर्भर है।''..... ''गायत्री परिवार की प्रवृत्तियों में समुचित अध्यात्म तत्व सन्निहित रहे इसके लिए मैं भी एक विशेष साधना क्रम में लग जाऊँ।'' इसी में मैंने निरंतर संलग्न रहकर उनके निर्देशों का सदैव पालन किया। ◈

उन दिनों मैं सिविल सर्जन था। पूज्यवर कार्यक्रम हेतु दौरे पर थे, इस बीच में शान्तिकुञ्ज आया। माताजी अकेले ही बैठी थीं। मैंने श्रद्धा पूर्वक उन्हें प्रणाम करते हुए कहा-''माताजी! मेरा मन गुरुजी को प्रणाम करना चाहता है। मैं उन्हें प्रणाम करने को व्याकुल हो रहा हूँ।'' सुनते ही माताजी बोलीं, ''बेटा, तू गुरुजी को ही प्रणाम कर रहा है। वे तुम्हारा प्रणाम स्वीकार भी कर रहे हैं।''

इसके साथ ही मुझे वहाँ गुरुवर की स्पष्ट अनुभूति हुई। मैंने तुरंत दायें-बायें देखा पर स्थूल में तो केवल माताजी ही बैठी थीं। उस समय मैंने अनुभव किया, माताजी में ही गुरुदेव हैं एवं गुरुवर ही माताजी को धारण किए रहते हैं। हम ही उन्हें भिन्न-भिन्न समझते हैं।

जो जीव सत्ता अपने को परिष्कृत कर ब्रह्म सत्ता से आदान-प्रदान कर सकने की स्थिति में पहुँचा दे, वही सिद्ध है।

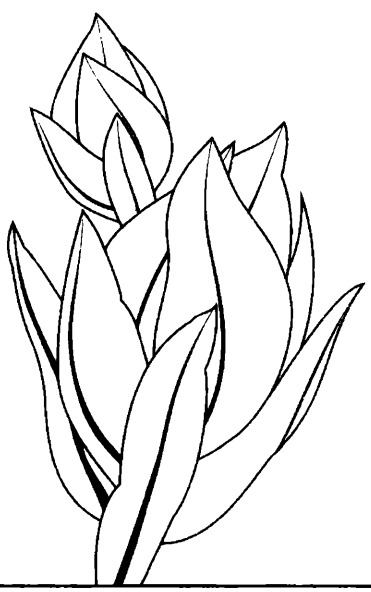
Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दो व्यक्तित्व- कहियत भिन्न न भिन्न

"गिरा-अरथ, जल-बीचि सम,
कहियत भिन्न न भिन्न।
बन्दौ सीता-राम पद,
जिन्हहि परम प्रिय खिन्न॥"

परमपूज्य गुरुदेव एवं परमवंदनीया माताजी से जिनका निकट का सम्बन्ध रहा है, वे जानते हैं कि वे दो शरीर होते हुए भी एक ही परमतत्त्व के रूप थे। अपने जीवन-वृत्तान्त अंक में पूज्यवर ने जून 1974 सावित्री साधना के दौरान लिखा था कि "माताजी ने प्रायःआधी शताब्दी हमारी ऐसे ही सहायता की, जिसे काया-छाया का अभिन्न सम्बन्ध कहा जाता है।.....दोनों एक दूसरे के चौकीदार, संरक्षक, सहयोगी, पूरक बनकर रहे हैं। इससे काम हलका हुआ है और मंजिल भी आसान पड़ती चली गयी है।" आगे वे लिखते हैं कि "माताजी की सेवा-सहायताओं का वर्णन करना तो यहाँ आत्मश्लाघा जैसा होगा, ऐसा करने पर तो अपनी काया की भी उतनी ही सराहना करनी पड़ेगी।.....एक शब्द में उन्हें सजल श्रद्धा कहा जा सकता है। उनकी काया में है तो हाड़-माँस ही पर इसका कोई कण ऐसा नहीं है जिसमें श्रद्धा कूट-कूट कर न भरी हो। सम्पर्क में आने वाले हमारी प्रज्ञा से निष्ठावान नहीं बने हैं, वरन् उनकी श्रद्धा के साथ वात्सल्य पाकर निष्ठावान बने हैं" प्रस्तुत शब्द न केवल परमपूज्य गुरुदेव की महानता का परिचायक है, वरन यह भी प्रमाणित करता है कि दोनों एक ही सत्ता के प्रखरप्रज्ञा, सजलश्रद्धा रूपी दो रूप थे, जिनने विराट गायत्री परिवार के निर्माण हेतु अपने कार्य बाँट लिए थे। माताजी के वे आराध्य थे एवं माताजी उनके लिए प्रेरणा व स्नेह का स्रोत।

1944 में पूज्यवर से जुड़ने वाली परमवंदनीया माताजी जिस घर में आयीं, उनके ऊपर दायित्व स्नेह बाँटने-आतिथ्य सँभालने-सीमित आय में असीम को भोजन-प्रसाद खिलाने का आया। यह कार्य वह कैसे करती रहीं, यह रहस्य ही बना रहेगा। बाद में परमपूज्य गुरुदेव की हिमालय यात्रा के दौरान सम्पादन ही नहीं, संगठन का भी भार सँभालती रहीं। नितान्त एकान्त में स्थित शांतिकुंज, साथ में मात्र दो-तीन पुरुष कार्यकर्त्ता-शेष 24 कुमारी कन्याएँ-जिनकी औसत आयु 13-14 वर्ष की ही थी, ऐसे में कौन उन्हें ढाँढस बँधाता। उनकी वेदना हृदय की व्याधि के रूप में निकली। गुरुसत्ता जो उन दिनों बांग्लादेश मुक्ति युद्ध की अवधि में दुर्गम हिमालय में तप कर रही थी, उनकी तकलीफ के कुछ ही घण्टों के भीतर उनके पास सशरीर आ गए। वे कुछ ही दिन की छुट्टी अपनी मार्गदर्शक सत्ता से लेकर आए थे, किन्तु इस आगमन ने संजीवनी का काम किया एवं पुनः अपने आराध्य से शक्ति पाकर वे भी उस मोर्चे पर डट गयीं, जिस पर गुरुदेव लगे हुए थे। देवकन्याओं के तप-अनुष्ठान के संकल्प को बढ़ा दिया गया एवं गुरुदेव उन्हें भावी उत्तरदायित्व सौंपकर वापस हिमालय चले गए, जून 1972 में वापस लौटने के लिए। गुरुदेव के लिए एक कक्ष



सुखी दाम्पत्य का आधार है - पति-पत्नी का शुद्ध सात्विक प्रेम।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बनने लगा जहाँ उन्हें अगले दिनों कठोर तप ही नहीं करना था, संगठन की नयी रूपरेखा भी बनानी थी। महिलाजागरण एवं प्राण-प्रत्यावर्तन ये दोनों ही कार्य एक ही परमसत्ता द्वारा संचालित हुए। एक का नेतृत्व वंदनीया माताजी ने किया, दूसरे का पूज्यवर ने। यहीं से भावी रूपरेखा स्पष्ट होती चली गयी।

जिनको यह लगता था कि कार्य अब गुरुदेव के हिमालय जाने एवं वंदनीया माताजी के शान्तिकुंज तक सीमित होने से रुक जाएगा, उनने देखा कि यह दिन-प्रतिदिन बढ़ने ही लगा। गायत्री तीर्थ एक संस्कारित सिद्धपीठ ही नहीं-गुरुकुल-आरण्यक-देवालय-आश्रम व तीर्थ परम्परा का एक समन्वित संस्करण बन गया। कार्यकर्त्ता जो 1972-73 से अब तक शांतिकुंज आते रहे हैं, एक बड़ी विलक्षणता पाते रहे हैं कि जो कुछ भी माताजी ने नीचे अपने कक्ष से कहा-उसी को पूज्यगुरुदेव ने ऊपर जाने पर दुहराया। भाषा अलग हो सकती है पर भाव स्पष्टत: वही थे। जब कभी भी ऊपर गुरुदेव ने रौद्ररूप में आकर निकटस्थ कार्यकर्त्ताओं को कुछ कह दिया तो नीचे शांतिपाठ वंदनीया माताजी द्वारा इस सुन्दर ढंग से कर लिया गया कि मन का सारा संताप धुल गया।

शिव और शक्ति के समन्वय का अद्भुत लीला संदोह

माता जी भगवान के वरदान की तरह हमारे जीवन में आयीं। उनके बगैर मिशन के उदय और विस्तार की कल्पना करना तक कठिन था। गुरुदेव की इन बातों से माताजी के प्रति उनके दृष्टिकोण का सहज अहसास हो जाता है। पर यह वरदान उनके जीवन में न अचानक आया और न अकस्मात उतरा। इसकी उन्हें वर्षों पूर्व जानकारी थी। उनकी मार्गदर्शक सत्ता ने अपने प्रथम दर्शन के दिन ही इसका संकेत करते हुए कहा था-'तुम्हारे विवाहित होने से मैं प्रसन्न हूँ। इसमें बीच में व्यवधान तो आएगा, पर पुन: पूर्व पत्नी के रूप में मिलेगी, जो आजीवन तुम्हारे साथ रहकर महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। पिछले दो जन्मों में तुम्हें सपत्नीक रहना पड़ा है। यह मत सोचना कि इससे कार्य में बाधा पड़ेगी। वस्तुत: इससे आज की परिस्थितियों में सुविधा ही रहेगी एवं युग परिवर्तन के प्रयोजन में भी सहायता मिलेगी।' (हमारी वसीयत और विरासत से)

अपनी गुरुसत्ता के आदेश को शिरोधार्य करते हुए माताजी के साथ दाम्पत्य सूत्र में बँधे। उन दिनों वह व्यस्तताओं और विवशताओं से घिरे थे। स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदारी के कारण स्वजनों का भरपूर विरोध था। चौबीस पुरश्चरणों की उग्र तपश्चर्या को कुछ लोगों ने पागलपन की सनक करार दे दिया था। भावनात्मक आघातों का सिलसिला जारी था। जरूरत थी टूटी-कुचली भावनाओं को फिर से पोषण देने की। माता जी ने अपने आगमन के साथ ही इस काम को बखूबी सँभाल लिया। इस तथ्य को गुरुदेव के शब्दों में कहें तो-'उन्होंने अपने आने के पहले दिन से ही स्वयं को तिल-तिल गलाने का व्रत ले लिया। विरोध का तत्व तो उनमें जैसे था ही नहीं। यदि वह चाहतीं तो साधारण स्त्रियों की तरह मुझ पर रोज नयी फरमाइशों के दबाव डाल सकती थीं। ऐसे में न तपश्चर्या बनती, न लोक सेवा के अवसर हाथ लगते। फिर जो कुछ आज तक हो सका, उसका कहीं नामोनिशान न होता।'

माताजी के आने के बाद गुरुदेव के जीवनक्रम में एक नया निखार आया। अखण्ड-ज्योति का प्रकाशन तो पहले से ही चल रहा था। पर अभी तक यह एक पत्रिका का प्रकाशन भर था। सामान्यक्रम में पत्रिका और पाठक के रिश्ते पढ़ने-पढ़ाने तक सीमित रहते हैं। माताजी की उपस्थिति के साथ ही अखण्ड-ज्योति पत्रिका ने 'अखण्ड-ज्योति परिवार' का रूप ले लिया। पत्रिका को पढ़ने वाले उनके अपने आत्मीय हो गए। इस क्रम में लोगों का घर आने-जाने, ठहरने, खाने-पीने, का सिलसिला चल पड़ा। आने वाले किसी व्यक्ति को उन्होंने स्नेह और ममत्व की कमी न महसूस होने दी।

तभी तो गुरुजी ने एक स्थान पर लिखा है-मिशन को बढ़ाने में माताजी ने हमारे बाएँ या दाएँ हाथ की तरह नहीं, हृदय की भूमिका निभाई है। उन्हीं की भावनाओं के संचार से मिशन पलता और बढ़ता रहा है। औरों की तरह हम भी उनका प्यार-दुलार पाकर धन्य हुए हैं। अन्यथा इतने आघातों के चलते कौन जाने हम कब टूट-बिखर कर चकनाचूर हो गए होते।' अन्य स्थान पर वे कहते हैं-वह

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

भावमयी हैं, प्यार तो जैसे उनके रोम-रोम में बसता है। उन्हें हमारी तरह बातें-बनाना तो नहीं आता, पर ममत्व लुटाने में वह हमसे बहुत आगे हैं। भले हमारी तरह वह बौद्धिक चातुर्य की धनी न हों, किन्तु ममता की पूँजी उनके पास हमसे कई गुनी अधिक है। इसी कारण हम उन्हें सजलश्रद्धा कहते हैं। मिशन के प्रत्येक परिजन ने उन्हें इसी रूप में अनुभव किया है।'

इसी विश्वास के सहारे गुरुदेव ने सन् 1950 एवं 1961 में लम्बे समय तक हिमालय में अज्ञातवास किया। उन्हें यह भरोसा था कि उनके चले जाने पर माताजी मिशन की साज सँभाल कर लेंगी। किसी को उनका अभाव न खटकेगा। परिजनों से मिलना, पत्रों के जवाब लिखना, लिखवाना, पत्रिकाओं को संपादित, प्रकाशित करना, इन सारे कामों को वह अकेले सँभालती रहीं। गुरुदेव के वापस लौटने पर सब कुछ पहले से अधिक अच्छा मिला। परिजन माता जी का गुणगान करते थकते न थे।

कुछ ने तो यहाँ तक कह डाला- 'गुरुदेव तो मध्याह्न के प्रचण्ड सूर्य हैं, उनकी ओर तो आँखें उठाकर देख पाना भी संभव नहीं है। माता जी चंद्रमा की तरह शीतल हैं। भले वह सूर्य से ऊर्जा प्राप्त करती हों, पर उसकी सारी गर्मी अपने अन्दर पचाकर हम बच्चों को शीतल प्रकाश देती रहती हैं।'

बात शान्तिकुंज में रहने तक सीमित न थी। इसके साथ अनेकों जिम्मेदारियाँ थीं। इसमें कठोर साधनात्मक प्रक्रियाएँ भी शामिल थीं। जिसे निभा लेना सरल न था। पर वह तो जैसे कठिन कार्य के लिए ही जन्मी थीं।

गुरुदेव इसे बड़ी मार्मिक भाषा में अभिव्यक्त करते हुए कहते हैं-'कार्य विभाजन में दूसरी जिम्मेदारी माता जी के ऊपर डाली गई है। यों वे रिश्ते में हमारी धर्म पत्नी लगती हैं, पर वस्तुत: वे अन्य सभी की तरह हमें भी माता की भाँति दुलारती रही हैं। उनमें मातृत्व की उदात्त गरिमा भरी पड़ी है कि अपने वर्तमान परिवार को भरपूर स्नेह दे सकें। हमारा अभाव किसी आत्मीय जन को खटकने न पाए, स्नेह के अभाव में कोई पौध कुम्हलाने न पाए, यह भार उनके कंधों पर डाल दिया गया है।'

'हमारे जाने के बाद हरिद्वार और ऋषिकेश के बीच सप्त ऋषियों की तपस्थली जहाँ गंगा की सात धाराएँ प्रवाहित हुई हैं, अपने छोटे से 'शान्तिकुंज' नामक आश्रम में निवास करेंगी। जिस प्रकार हमने 24 लक्ष के 24 महापुरश्चरण संपन्न किए थे उसी प्रकार वे भी करेंगी। अखण्ड घृत दीप मथुरा से उन्हीं के पास चला जाएगा। अपनी तपश्चर्या की उपलब्धियों से वे लोगों के उस दु:ख कष्ट निवारण के क्रम को जारी रखेंगी, जिसे हम जीवन भर निबाह रहे हैं। हमारे चले जाने पर कोई अपने को असहाय न समझे। अपने बाल-परिवार की साज-सँभाल करने के लिए हम माताजी को छोड़े जाते हैं। वे अपनी तपश्चर्या इसी प्रयोजन में लगाती, खर्च करती हमारी परम्परा को जीवित रखेंगी। (1) नव निर्माण अभियान का प्रत्यक्ष मार्गदर्शन (2) हमारी बौद्धिक एवं साधनात्मक उपलब्धियों से सर्वसाधारण को अवगत कराते रहने का माध्यम (3) अखण्ड दीपक एवं गायत्री पुरश्चरण शृंखला को गतिशील रखकर कष्ट पीड़ितों की सहायता यह तीन काम माताजी के जिम्मे हैं।'

माता जी ने यह जिम्मेदारी किस तरह निभाई, यह तथ्य किसी से छुपा नहीं है। इस दायित्व को स्वीकारने निभाने का क्रम गुरुदेव के हिमालय से वापस लौट आने के बाद भी चला व 1990 तक चलता चला गया। यह सारा लीला संदोह शिव शक्ति के साथ रहा है, हमारी आराध्य सत्ता के साथ भी यही सब हुआ, यही सब सोचकर हम सतत पुलकन अनुभव करें, अपने को उनके बताये मार्ग पर चलाकर स्वयं श्रेय-सौभाग्य पर संतोष रखें, यही हमारी सच्ची श्रद्धांजलि है। ◈

एक दिन परम वन्दनीया माता जी ने एक परिजन से कहा- "बेटा! मुझे और गुरुजी को कभी अलग मत करना।" फिर बोलीं, "बेटा, आने वाले समय में दुनिया अपनी समस्याओं का समाधान मेरे गीतों में और गुरुजी के प्रवचनों में ढूँढेगी।"

सुदृढ़ भावनाओं वाले व्यक्ति ही आत्मजयी होते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

काया में तुम बँधे नहीं

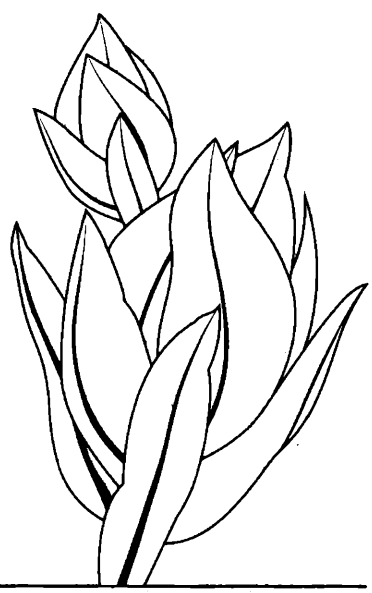
काया में तुम बँधे नहीं, शाश्वत विचार हो तुम।
एक शब्द में परिभाषित अनवरत प्यार हो तुम।।

ज्ञान रूप है केवल लघु-सा अंश तुम्हारा।
अखिल विश्व में फैला अपना वंश तुम्हारा।।
एक सहज अपनेपन को आधार बनाया।
प्यार बाँटकर एक बृहद् परिवार बनाया।।
अगणित सुमनवृंद से सुरभित कण्ठहार हो तुम।।

जिसे तुम्हारी मिली प्यार-ममता की छाया।
निज जीवन में अभयदान उसने है पाया।।
अनायास ही शौर्य, शक्ति, साहस वह पाता।
पूर्ण आत्मविश्वास, आत्मबल से हो जाता।।
मिथ्या भय से मुक्ति दिलाते सिंहद्वार हो तुम।।

नहीं मिलोगे कहीं प्रदर्शन-ऐश्वर्यों में।
विस्मित करते चमत्कार था आश्चर्यों में।।
पल-पल प्रेरक होता है सान्निध्य तुम्हारा।
शब्द-शब्द से मिलता जीवन-लक्ष्य हमारा।।
प्राणशक्ति के अंतहीन अक्षय प्रसार हो तुम।।

अस्थि-चर्म के तुम न आवरण हो अस्थाई।
नहीं शिरा-संचरित रक्त की हो अरुणाई।।
तुम कारण सत्ता से हो सुनियोजन करते।
अन्तरिक्ष से सबका सतत नियंत्रण करते।।
जो कुछ है उत्कृष्ट,उसी के सघन सार हो तुम।।
काया में तुम बँधे नहीं, शाश्वत विचार हो तुम।
एक शब्द में परिभाषित अनवरत प्यार हो तुम।।

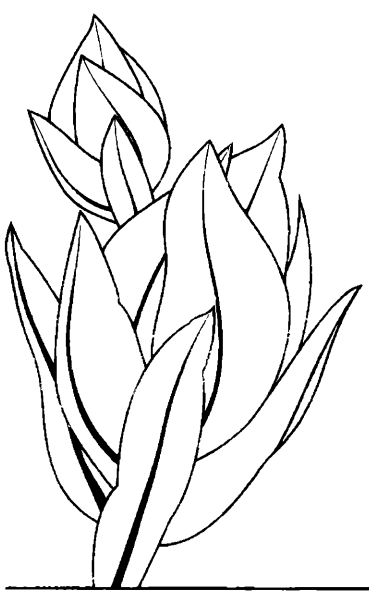


हमारा भविष्य आस्तिकता एवं उपासना का आश्रय लिए बिना उज्ज्वल नहीं हो सकता।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपने आराध्य के प्रति परम वंदनीया माताजी

शिव शक्ति की तरह दिव्य था यह ऋषि युग्म। वे अपने आपको उनकी शिष्या मानती हैं एवं वे कहते हैं कि वे हमारी माताजी हैं। सौभाग्यशाली हैं हम सब जिनको ऐसी ऋषि सत्ताओं ने पाल पोसकर बड़ा किया, खड़ा किया।



''यों मैं धर्मपत्नी समझी जाती हूँ, पर वस्तुतः उनकी सौभाग्यशाली शिष्या हूँ। उन्हें पति के रूप में नहीं, मैंने देवता के रूप में देखा।'' ये पंक्तियाँ अखण्ड ज्योति की 'अपनों से अपनी बात' स्तम्भ से उद्धृत हैं, जो पूज्यवर की विदाई के बाद उनने जुलाई 1971 में संपादन अपने हाथ में लेने के बाद लिखना आरंभ किया था।

पूज्यवर के तप में हमेशा साथ रहीं परम वंदनीया माताजी के लिए उनका विछोह बड़ा कष्टकारक था, फिर भी वे सब कुछ झेलती रहीं। जब यह वेदना असह्य हो गयी, अनेकानेक दायित्व पूरे परिवार की देखरेख के उनके कंधों पर आ गये, तो उनने करुण स्वर में मात्र उन्हें याद किया एवं जनवरी 1972 की 28 तारीख की मध्य रात्रि में जब माताजी असह्य हृदयाघात वाली वेदना से गुजर रही थीं, वे सशरीर प्रकट हो गए। उनका आना उनके लिए सबसे बड़ा मरहम बन गया।

चिकित्सकों ने तो माता जी को हृदयाघात बताया था, किन्तु उन्हें कहाँ मालूम था कि यह तो इस ऋषियुग्म की लीला है। परोक्ष जगत् में घट रहे उन दिनों 1971-72 के घटनाक्रम भारतवर्ष के इतिहास में एक नया क्रम जोड़ते हैं। दोनों ही सत्ताओं ने समष्टि का काफी कष्ट अपने ऊपर झेला था, किन्तु परम वंदनीया माताजी को अपने आराध्य की आवश्यकता थी प्रत्यक्ष अपने समीप, इसलिए वह हृदय-शूल एक निमित्त बन गया। आश्चर्य यह है कि ई0सी0जी0 में जो परिवर्तन आगरा-दिल्ली से आए बड़े-बड़े विशेषज्ञों ने पाए थे, वे पूज्यवर के आने के बाद स्वतः तिरोहित हो गए। यों विशेषज्ञों के अनुसार ऐसे परिवर्तन स्थायी होते हैं। कम से कम एक वर्ष तक वे बने ही रहते हैं।

माताजी के अतिरिक्त और कौन हो सकता है, जो उनके बारे में बता सके? अपनी 1971-72 की अखण्ड ज्योति की संपादकीय शृंखला में उनने लिखा है- ''गुरुदेव की साधना पद्धति को जितना मैंने देखा-समझा, उतना अवसर शायद ही और किसी को मिला हो। 24 वर्षों तक हर वर्षों एक 24 लक्ष का गायत्री महापुरश्चरण वे करते रहे सर्वसाधारण को इतनी भर जानकारी है कि प्रतिदिन छः-छः घण्टा बैठकर के 11 माला प्रति घण्टा के हिसाब से 66 माला का गायत्री जप करते थे। परम सात्विक पाँच मुट्ठी आहार (गाय को खिलाए जौ, गोबर से शोधित अन्न की रोटी) पर निर्भर रहते तथा अनुष्ठान काल में प्रयुक्त होने वाले बंधनों-प्रतिबंधों का कठोरता से पालन करते थे। वस्तुतः उनकी उपासना काया के कर्मकाण्डात्मक क्रियाकलापों से बहुत आगे बढ़कर मन

लघुता को विशालता में व तुच्छता को महानता में समर्पित कर देने की उत्कंठा का नाम प्रार्थना है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

और प्राण की सूक्ष्म शरीर व कारण शरीर की परिधि में प्रवेश कर गई थी। एक शरीर में रहकर भी पाँच शरीरों जितनी भिन्न प्रकार के पाँच कार्यों को उनने कैसे सम्पादित किया, यह रहस्य सिर्फ मैं ही जानती हूँ।''

परम वंदनीया माताजी भाव-संवेदना का पुंज थीं। पूज्यवर का वर्णन करते हुए उन्हें भगवान-अपना आराध्य कहते हुए वे भाव-विभोर हो उठती थीं, गला रुँध जाता था। उनके मुख से पूज्यवर का अतीन्द्रिय पक्ष किसे कहा जाता, क्योंकि दोनों ही-पूज्यवर एवं माताजी मिलकर उस पूरे घटना प्रसंग के कर्ता-धर्ता ही तो थे। शिव पार्वती की तरह-शिव शक्ति की तरह। फिर भी परम वंदनीया माताजी की लेखनी-वाणी से जब 1958 के सहस्र कुण्डीय यज्ञ का विवरण सुनते हैं, तो वहाँ उनका शिष्या वाला रूप स्पष्ट दिखाई देता है, जो गुरु के दिव्य पक्ष को, जन-जन को बता देना चाहता है। इस महायज्ञ को गायत्री परिवार की आधारशिला रखने वाला एक मील का पत्थर माना जाता है। परम वंदनीया माताजी के शब्दों में ''मार्गदर्शक का आदेश हुआ कि देश भर की सुसंस्कारी आत्माओं को एकत्र कर उन्हें नवनिर्माण के लिए तत्पर होने की प्रेरणा दी जाए।'' पाँच लाख से अधिक व्यक्ति इस आयोजन में आए। निवास कुछ हजार के लिए ही जुटाया जा सका था, खाद्य पदार्थ मात्र कुछ हजार के लिए पर्याप्त था एवं दान पेटियों में पैसा भी मात्र एक लाख से कम ही निकला था। खर्च की मदें सैकड़ों थीं। हर मद में हजारों-लाखों चुकाये जाने थे।

निर्धारित पेटी को वे स्वयं ही खोलते-बंद करते थे। वह पेटी अब भी मौजूद है, पर उन दिनों तो मानो उसने कुबेर के अक्षय भण्डार का रूप धारण कर लिया था। सब कार्य सानंद हो गए सारे खर्च पूरे हो गए। अंत में उतने ही बचे जितना प्रारंभ में खर्च का अनुमान लगाया गया था। एक भी काम बिना पैसे के रुका नहीं। कितने ही डॉक्टरों ने बताया कि वे सारे भारत से इस बड़े आयोजन में अपनी आधी कमाई की आशा से आए थे, किन्तु यहाँ तो उनके हाथ-पाँव बँध गए।

मन ऐसा बदला कि उस धर्मानुष्ठान में भावनापूर्वक संलग्न रहने के अलावा उनसे कुछ बना नहीं। मार्ग व्यय से अधिक जो उनके पास था, उसे दान-पेटियों में डालकर खाली हाथ घर न पहुँचे एवं वह धंधा एक प्रकार से सदा के लिए ही छूट गया। जिनके सामान खो गए थे, गिर गए थे, उन्हें घर पहुँचने पर मिल गए। हमें यह सब चीजें घर जाने पर कैसे मिलीं, यह समझ नहीं आया, अधिकांश का यही कहना था। इसे गुरुदेव का अतिमानवीय स्वरूप नहीं कहा जाए तो क्या कहा जाए? यह तो एक यज्ञ का प्रसंग है-परम वंदनीया माता जी ने तो उनके इस रूप के प्रतिदिन-प्रतिपल दर्शन किये हैं। ◈

एक कार्यकर्ता बताते हैं कि जब वे एक मासीय सत्र में आये हुए थे तो उन्होंने देखा कि कुछ लोग गुरुजी के चरणों से छुआ कर पादुका (खड़ाऊँ) ले जा रहे हैं। उनके मन में आया कि क्यों न मैं भी पादुका खरीद लूँ और गुरुजी के चरणों से छुआकर अपनी पूजा स्थली में स्थापित कर लूँ। उन्होंने पादुका खरीद ली, लेकिन मन में भाव आया कि मात्र छुआ कर रख लेने का क्या मतलब? यदि गुरुजी उसे पहन कर चलते, तब तो वे गुरुजी की चरण पादुका बनती। शिविर का अंतिम दिन था और उन्हें लौटना भी था। अचानक प्रणाम की लाईन में ध्यान आया कि पादुका तो गुरुजी के चरणों से छुआई ही नहीं। लाईन समाप्त होने वाली थी। वे दौड़कर गये और जब तक पादुका लाये, तब तक प्रणाम समाप्त हो चुका था। माताजी उठ चुकी थीं, परंतु गुरुदेव बैठे थे। मुझे देखते ही बोले, 'खड़ाऊँ लाया है! ला' और खड़े हो गये। मैंने जैसे ही पादुका उनके सामने रखी, उन्होंने उन्हें पहना और एक चक्कर कमरे में लगाया। फिर बोले, 'ले रख ले और चल दिये।' मुझे ऐसा लगा जैसे गुरुदेव मेरा ही इंतजार कर रहे थे। मेरा हृदय श्रद्धा से भर उठा कि गुरुदेव अपने बच्चों की छोटी-छोटी भावनाओं का भी कितना ख्याल रखते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

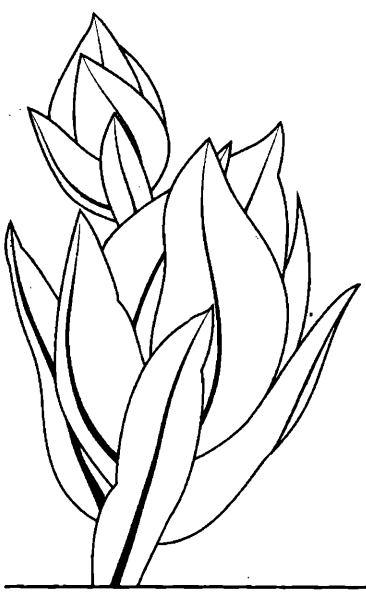
साधना से सिद्धावस्था तक साक्षी रही परम वंदनीया माताजी

तपोनिष्ठ गुरुवर को बड़े नजदीक से देखा माता जी ने। उनके हर पल की साझेदार बनीं। जानें उन्हीं की जुबानी-गुरुदेव के तपोनिष्ठ सिद्ध साधक बनने की कहानी...

परमपूज्य गुरुदेव की साधना-पद्धति को जितना समीप से, गहराई से वंदनीया माताजी ने देखा व समझा था उतना अवसर शायद ही किसी को मिला हो। वंदनीया माताजी कहा करती थीं कि गुरुदेव ने जितना कड़ा तप किया है, उतने ही दिव्य अनुदान उन्हें मिले हैं। उनका सारा जीवन ही तपोमय रहा है।

चौबीस महापुरश्चरणों के बारे में लोगों को मात्र इतनी जानकारी है कि प्रतिदिन लगभग छह से आठ घण्टा बैठकर वे 66 मालाएँ गायत्री का जप प्रतिदिन करते रहे। परम सात्विक, जौ की रोटी तथा छाछ पर निर्वाह करते रहे एवं अनुष्ठानकाल में प्रयुक्त बंधनों-प्रतिबंधनों का कठोरता से पालन करते रहे। गौ माता के गोबर में जो तिल-जौ निकलता है, उसे निथारकर स्वच्छ कर उससे जितना अन्न मिल जाता है उससे शरीरयात्रा चल जाती थी। तीन वर्ष तो वे नैमिषारण्य में रहे। जहाँ के व्यक्ति अभी भी बताते हैं कि श्रद्धालुओं द्वारा सरोवर में डाले गए चावलों को वे कपड़े की आड़ लगाकर एकत्र कर लेते थे व उतने को ही पकाकर बिना किसी मिर्च-मसाले के उदरस्थ कर नित्य 5 घण्टे जल में खड़े रहकर जप किया करते थे। यह तो वह पक्ष है जो अभी तक ज्ञात है, दृश्य है, प्रत्यक्ष है, पर उन दिनों प्रसिद्धि से दूर रहने के कारण वे उसे संपन्न कर सके। चालीस वर्ष तक की आयु जो युवावस्था का चरमोत्कर्ष मानी जाती है, उन्होंने कड़ी तप-साधना में नियोजित कर दी। इस अवधि में कितनी ही बार निराहार रहना पड़ा, मात्र मट्ठे पर ही जीकर अपनी काया का अनिवार्य, किन्तु सीमित पोषण वे करते रहे।

काया के कर्मकाण्डात्मक क्रिया-कलापों से बहुत आगे बढ़कर वह तो मन और प्राण की सूक्ष्मशरीर और कारणशरीर की परिधि में प्रवेश कर गई थी। अपनी पाँचों इन्द्रियों और पाँचों मन-संस्थान का परिष्कार करने हेतु उन्होंने अथक परिश्रम किया था और यह देखा कि दसों देवताओं को विनाश के मार्ग पर एक इंच भी न गिरने दिया जाए, वरन् उन्हें पवित्रता और प्रखरता के पथ पर ही अग्रसर रखा जाए। इस प्रकार अंत: को परिमार्जित कर वे पंचकोषों को जगाने में सफल हो गए, जिन्हें अनेकों अद्भुत ऋद्धियों-सिद्धियों का केन्द्र माना जाता है। वस्तुत: अगणित व्यक्ति जिन्हें साधना सम्बन्धी मार्गदर्शन देकर उन्होंने कहीं से कहीं पहुँचा दिया तथा जिन्हें अपने तप का एक अंश देकर विभूति संपन्न बना दिया अथवा कष्ट-निवारण में उनकी मदद की। वे ऐसे सिद्ध साधक थे जो सतत कमाने व पूँजी को दिल खोलकर सुपात्रों में बाँटने में ही विश्वास रखते थे। स्वयं



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अथवा स्वजनों के लिए अपने निज के तपोबल का, अर्जित सम्पदा का उन्होंने कभी उपयोग नहीं किया। वे लिखते हैं कि हमने अपने लिए व आत्मीय निकटस्थ परिजनों के लिए दवा दारू का ही प्रयोग किया है। वस्तुत: किसी दु:खी की वेदना बाँटनी पड़ी तो सबने मिलकर बाँटी है। इतना जरूर किया कि किसी के कष्ट को मृत्यु स्तर से कम कर छोटी-मोटी दुर्घटना के रूप में टाल दिया गया।

साधारणतया साधक अपने साधना के स्वरूपों को गोपनीय ही रहने देते हैं, किन्तु गुरुदेव का जीवन जो एक खुली किताब है। उन्होंने जो भी किया उसे लेखनी के माध्यम से जन-जन तक पहुँचा दिया। जिसे उचित समझा, वाणी से समझाया व जिसे और अधिक पात्र समझा उसके रोम-रोम में वह ज्ञान समाविष्ट कर दिया। 1950 से 1961 के बीच की उनकी अखण्ड-ज्योति पत्रिका गायत्री विज्ञान, गायत्री रहस्य, गायत्री के अनुभव गायत्री तंत्र एवं गायत्री योग नामक पाँच 200-200 पृष्ठ के ग्रंथ तथा तीन भागों में छपा गायत्री महाविज्ञान इसकी साक्षी देते हैं। बाद में विज्ञानसम्मत प्रतिपादनों के साथ जोड़कर अपनी सुबोध शैली में उन्होंने 1977 में चार विशेषांक अखण्ड ज्योति के प्रकाशित किये (मार्च से जून, 1977), जिसमें उन्होंने साधना विधान का निचोड़ लिखकर रख दिया। इन सबके बावजूद भी जो स्थूल में सब कुछ खोज रहा हो इसे क्या कहा जाए?

पूज्य गुरुदेव की जीवन-साधना के सार सूत्र थे 'मातृवत् परदारेषु' 'परद्रव्येषु लोष्ठवत्'। एवं 'आत्मवत् सर्वभूतेषु।' दुनिया के सारे वैभव, कौशल और समर्थता को एक पलड़े पर रखा जाए एवं सरस भाव-संवेदनाओं को तुला के दूसरे पलड़े पर, तो दूसरा अधिक वजनदार सिद्ध होगा। उसी में शक्ति है दूसरों का हृदय जीतने की, उसी के बल पर व्यक्ति आत्मसत्ता को क्रमश: ऊँचा उठाते हुए उच्चतम सोपानों को प्राप्त करता चला जाता है। वही है जिसके अंतराल के जागने पर साधारण मनुष्य देवमानव महामानव बन अगणित व्यक्तियों की श्रद्धा का केन्द्र बन जाता है। पूज्य गुरुदेव ने दुनिया की तीनों शक्तियों को परे रख महत्व दिया भावसक्ति अंत:करण को। उनके 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' के आत्म-विस्तार ने सर्वत्र अपना ही आपा बिखरा दिखलाया तो वह मात्र दृष्टि-दर्शन न रह गया वरन् दूसरों की व्यथा-वेदनाएँ भी उनकी अपनी बन गई और वे इतनी अधिक चुभन-कसक पैदा करती रहीं कि उन पर मरहम लगाने के अतिरिक्त और कुछ सूझा नहीं। फिर पुण्य-परमार्थ की अलग से कौन चिन्ता करता? मीरा की तरह से उनका अंत:करण पुकारता रहता—"हे, री! मैं तो प्रेम दीवानी, मेरा दरद न जाने कोय।" उनका दर्द था पीड़ित मानवजाति, शोषित प्राणी समुदाय को कैसे कष्ट से, व्यथा से, पतन से मुक्ति दिलाई जाए ताकि औरों के लिए एक ऐसा मार्ग प्रशस्त हो जिस पर चलकर लोक-सेवा की जा सके।

आत्मिक प्रगति के पथ पर एक सुनिश्चित एवं क्रमबद्ध योजना के अनुसार चलते हुए हमने एक सीमा तक अपनी मंजिल पूरी कर ली है और उतना आधार प्राप्त कर लिया है जिसके बल पर यह अनुभव किया जा सके कि परिश्रम निरर्थक नहीं गया, प्रयोग असफल नहीं रहा। ◈

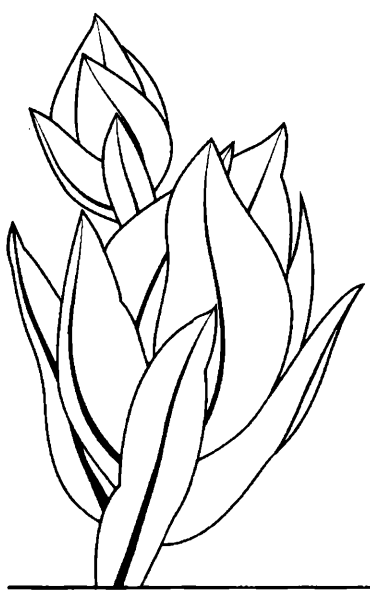
दिसम्बर 1989 में पूज्यवर ने वरिष्ठ कार्यताओं की गोष्ठी बुलाई और कहा - "बच्चो हमारा प्रमोशन हो गया है। हमें अब अधिक ऊँचे स्तर की आत्माओं के साथ बैठना पड़ रहा है। मैं चाहता हूँ कि तुम सब भी प्रमोशन ले लो। वर्तमान स्थिति में जब मैं वहाँ बैठकर तुम लोगों को देखता हूँ तो मुझे अपने अंगों की स्थिति रोगी जैसी होने की ग्लानि होती है। हमने तुम बच्चों को इसलिए बुलाया था कि तुम्हें भगवान् का दर्शन इन्हीं आँखों से करा सकूँ। यदि अभी तक भगवान् के दर्शन किसी रूप में नहीं करा सका तो एक बात कहता हूँ- मुझे ही भगवान मानलो और मेरे आदर्शवादी जीवन-दर्शन को अपनाकर अपना प्रमोशन करा लो, ताकि उच्च आत्माओं की जमात में बैठकर मुझे आत्म संतोष हो सके।"

देवत्व की रक्षा करने से बढ़कर और कोई धर्म नहीं तथा देवत्व अपनाने से बढ़कर और कोई कर्तव्य नहीं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऋषिसत्ता के अभियान का संक्षिप्त परिचय

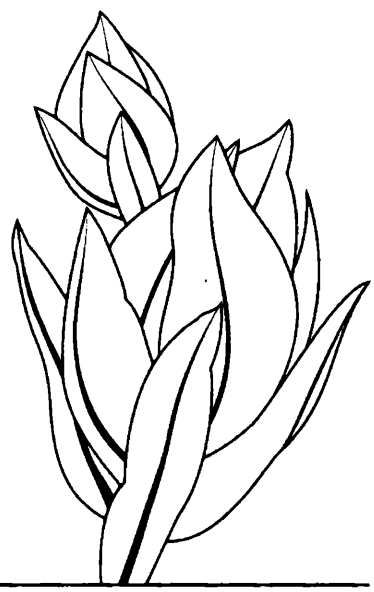
1. परमपूंज्य आचार्यवर का जन्म (अश्विन कृष्ण त्रयोदशी)	20 सितम्बर, 1911
2. महामना पं० मदन मोहन मालवीय द्वारा उपनयन	वर्ष-1919
3. पहली बार हिमालय यात्रा जाने का प्रयास	वर्ष-1921
4. आत्मबोध एवं अखण्ड दीप प्रज्वलन	18 जनवरी, 1926 (वसन्त पंचमी)
5. चौबीस-चौबीस लाख के 24 महापुरश्चरणों का शुभारम्भ	18 जनवरी, 1926 (वसन्त पंचमी)
6. परम वन्दनीया माताजी का जन्म	20 सितम्बर, 1926
7. राजनीतिक-सामाजिक जीवन शुभारंभ-श्री मत्त जी	वर्ष-1926-27
8. स्वाधीनता संग्राम के सैनिकों में प्रवेश-कांग्रेस शिविर में भर्ती	वर्ष-1927
9. प्रथम हिमालय यात्रा	वर्ष-1927
10. स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भागीदारी	वर्ष-1928-1933
11. पत्रकार की भूमिका का शुभारम्भ	वर्ष-1928
12. पहली बार साबरमती आश्रम-प्रवास	वर्ष-1931
13. स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के रूप में पहली गिरफ्तारी (केन्द्रीय कारागार आगरा में)	14 अप्रैल, 1931
14. दूसरी गिरफ्तारी (केन्द्रीय कारागार आगरा में)	वर्ष-1932
15. तीसरी गिरफ्तारी (आसनसोल जेल में)	वर्ष-1933
16. प्रतिष्ठित साहित्यकार बाबू गुलाबराय द्वारा 'पंडित' की उपाधि	वर्ष-1934
17. दूसरी हिमालय यात्रा	वर्ष-1937
18. 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका का आगरा से शुभारम्भ	वर्ष-1938, विधिवत जनवरी 1940
19. 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका का मथुरा से प्रकाशन	मार्च-1941
20. घीयामण्डी मथुरा में अखण्ड ज्योति संस्थान का शुभारम्भ गायत्री जयंती, 1941	
21. बाहर यात्राएं - एक कुण्डीय, पंचकुण्डीय यज्ञ, पत्रों द्वारा जन-जन को स्पर्श। देश की लाइब्रेरियों का मंथन, छह आना सीरिज पुस्तक माला प्रकाशन -वर्ष-1942	
22. युग निर्माण योजना के केन्द्र गायत्री तपोभूमि का शिलान्यास	वर्ष- 1953
23. तीसरी हिमालय यात्रा	वर्ष- 1960-61
24. मथुरा से बाहर विराट् स्तर पर सार्वजनिक कार्यक्रमों का शुभारम्भ	वर्ष- 1970-71



कलुषित विचार हमारे सुख में भी हमें डंक मारते हैं और सद्विचार हमें कष्टों में भी सांत्वना देते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

25. आचार्यश्री को आचार्य विनोबा भावे द्वारा 'वेदमूर्ति' का सम्बोधन
भूदान आन्दोलन के मध्य — वर्ष- 1970
26. ताई जी - प. पू. गुरुदेव की माता जी का स्वर्गवास — वर्ष-1971 (12 फरवरी)
27. बहराइच (उ. प्र.), टाटानगर (झारखण्ड), महासमुन्द (छ.ग.), — वर्ष- 1971
पोरबन्दर (गुजरात) तथा भीलवाड़ा (राजस्थान) में — 1008 कुंडीय
28. गायत्री तीर्थ शान्तिकुञ्ज की स्थापना — वर्ष-1971
29. मथुरा से हरिद्वार को विदाई — 20 जून, 1971
30. चौथी हिमालय यात्रा — वर्ष-1971
31. पूर्वी अफ्रीका की पहली विदेश यात्रा — दिसम्बर,1972 से फरवरी 1973 तक
32. शान्तिकुञ्ज में प्राण-प्रत्यावर्तन सत्रों का शुभारम्भ — वर्ष- 1973
33. शान्तिकुञ्ज में कन्याओं के प्रशिक्षण का शुभारम्भ — वर्ष- 1973
34. 'महिला जागृति अभियान' पत्रिका का शुभारम्भ — गुरुपूर्णिमा-1975
35. नारी जागरण का शंखनाद — वर्ष-1976
36. उ.प्र. संस्कृत परिषद् की सदस्यता — वर्ष-1976
37. हरिद्वार में गंगातट पर 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' की स्थापना — 03 जून, 1979
38. प्रथम 'गायत्री शक्तिपीठ' की स्थापना — वर्ष-1979
39. आयुर्वेद-आधारित चिकित्सा पद्धति का पुनर्जीवन — वर्ष-1979
एकौषधि-विज्ञान प्रज्ञापेय एवं प्रज्ञायोग का प्रारम्भ — वर्ष-1980
40. 'युगशक्ति गायत्री' पत्रिका का प्रकाशन — वर्ष-1980
41. शान्तिकुञ्ज में 'गायत्री विद्यापीठ' की स्थापना — 01 जून, 1980
42. आँवलखेड़ा शक्तिपीठ की स्थापना — वर्ष-1981
43. सूक्ष्मीकरण-साधना — राम नवमी-1984 से वसन्त पर्व 1986
44. 12 वर्षीय युगसंधि महापुरश्चरण की घोषणा — अक्टूबर, 1988
45. क्रान्तिधर्मी साहित्य की रचना — 1988-89
46. ब्रह्मदीपयज्ञों की घोषणा — वर्ष-1990
47. आचार्यश्री का महाप्रयाण — 02 जून, 1990 (गायत्री जयंती)
48. छः स्थानों पर ब्रह्मदीप महायज्ञ सम्पन्न — ज्येष्ठ पूर्णिमा-1990
49. हरिद्वार में विराट् संकल्प श्रद्धांजलि समारोह — 1-4 अक्टूबर, 1990
50. हरिद्वार में ऐतिहासिक शपथ समारोह — 07 से 10 जून, 1992
51. देश-विदेश में अश्वमेध महायज्ञों की घोषणा — 10 जून, 1992
52. प्रथम अश्वमेध महायज्ञ, जयपुर (राजस्थान) — 07-10 अक्टूबर, 1992
53. चित्रकूट में अन्तिम अश्वमेध महायज्ञ (सोलहवां)
(जिसमें वन्दनीया माताजी ने भागीदारी की) — 16-20 अप्रैल, 1994
54. वन्दनीया माताजी का महाप्रयाण 19 सितम्बर, 1994 (भाद्रपद पूर्णिमा)

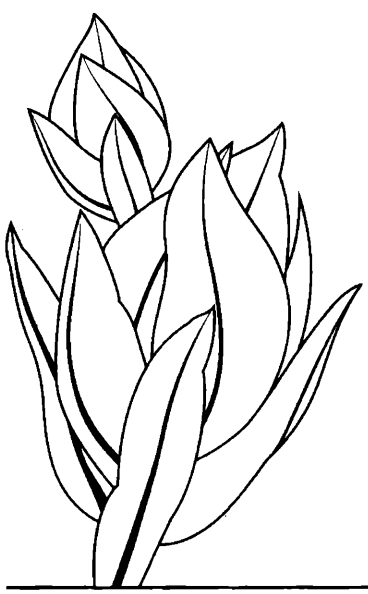


संकल्प में सूर्य रश्मियों का तेज है, जाग्रत चेतना का शृंगार है, विजय का हेतु और सफलता का जनक है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्मृति के पटल पर कौंधते वे क्षण

सबकी दीदी कही जाने वाली शैल बाला पण्ड्या ने परम वन्दनीया माताजी की स्नेह बाँटने की धरोहर को आगे बढ़ाया है। उनने भगवान् के घर जन्म लिया। उनने अपने गुरु-अपने भगवान को किस रूप में देखा-पढ़ें...



औरों के लिए उनके माता-पिता क्या होते हैं, मैं नहीं जानती, पर मैंने तो बचपन से ही अपने माता-पिता को भगवद्सत्ता के रूप में देखा है। बाल्यकाल हमारा खेलकूद-पढ़ाई की तन्मयता में सहेलियों के साथ अठखेलियों से भरा रहा। पर उसमें भी विशिष्टता रही। जब-जब भी पिताजी बाहर से लौटते, छोटे-छोटे खिलौने, मिठाईयाँ लेकर आते व सारा प्यार उड़ेल देते। उनका सार्वजनिक जीवन लोगों से भरा घर, कभी पिता-पुत्री के स्नेह में बाधक नहीं बना। हाँ यह बात अवश्य है कि ऐसे अवसर माह में दो या तीन ही आ पाते थे, पर उनकी प्रतीक्षा रहती थी। प्रात: जब आँख खुलती, पता चलता कि वे या तो परिजनों से मिल रहे हैं या तपोभूमि चले गए हैं।

ऐसे में स्कूल से आते ही आँखें पिताजी के दर्शन के लिए तरसती रहतीं। पर साध पूरी होती शाम को जब जल्दी ही भोजनादि से मुक्त हो कहानी सुनाने के लिए वे पास बुलाते। चार-पाँच वर्ष की उम्र थी। कई संबंधियों की हम उम्र लड़कियाँ सहेलियाँ थीं, वे भी आ जातीं। फिर वे तारों की, चंदा मामा की व उनके पीछे- छिपे गूढ़ रहस्यों की कहानी सुनाते। कहानी तो समझ में आ जाती, पर वे गूढ़ रहस्य बाद में ही समझ में आए, जब अखण्ड ज्योति को एक पाठ्य पुस्तिका की तरह पढ़ने का प्रयास किया। बाल्यकाल बीत गया-स्कूल से इंटर कॉलेज जाने का समय आया। बालिकाओं के इस इंटर कॉलेज में एन0 सी0 सी0 के कैडेट बनने की बात आयी तो माताजी ने उन कपड़ों में जाने के लिए एतराज किया। कहा कि यह एन0 सी0 सी0 तू सामान्य कपड़ों में ही कर ले। पिताजी ने समझाया कि लड़कियाँ यदि यूनिफार्म पहनकर उच्चस्तरीय शिक्षण लेती हैं तो इसमें नुकसान क्या है ? बस उस दिन के बाद कैडेट से उच्चतर पदोन्नति होती गयी एवं इंटर करने तक वायरलेस चलाने से लेकर दो-तीन एन. सी. सी. कैम्प सीनियर कैप्टन के रुप में अटेण्ड करने का भी सौभाग्य मिल गया। पिताजी की आज्ञा एवं माताजी की सहमति ही थी कि मैं उस जमाने में वह सब पढ़ सकी। अपनी योग्यताएँ बढ़ा सकी।

पिताजी के अज्ञातवास पर जाने का समय आ गया। उम्र थी मात्र अठारह वर्ष। अभी जी भर कर पिताजी से कभी बात करने का अवसर ही नहीं मिला था। उनने माताजी से कहकर शादी के विषय में निर्देश दिया। डॉ0 प्रणव जी से बात पिताजी कर ही चुके थे। हमसे भी पूछा गया कि क्या लड़के को शादी के पूर्व देखना है ? हमने कहा कि आपकी तसल्ली है, आज्ञा है तो हमें सब शिरोधार्य है। न डॉ0 साहब ने हमें देखा, न हमने उन्हें। 1970 में हमारी सगाई हो गयी। 1971 की जून में विवाह हो गया। पिताजी के विवाह

पूर्णतया अनियंत्रित कामनाओं का नाम ही तृष्णा है। इसी से मनुष्य जीवन में तरह-तरह की जटिलताएँ, दुःख और परेशानियाँ आती हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

के बाद दोनों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि दोनों पढ़ाई जारी रखना। दाम्पत्य जीवन के बंधनों में इसके बाद ही उलझना। हम तुम्हें शक्ति देते रहेंगे। ऐसा ही हुआ। हमने शादी के बाद बी0 ए0 व एम0 ए0 मनोविज्ञान से किया। डॉ0 साहब ने एम0 बी0 बी0 एस0 व एम0 डी0 किया। दोनों ने एक दूसरे का साथ निभाया पर सबसे बड़ा संबल था पूज्य पिताजी का आशीर्वाद-माताजी का प्रत्यक्ष समय-समय पर मिलने वाला सान्निध्य। शादी के बाद सबसे बड़े निर्णय की घड़ी तब आई जब पिताजी ने डॉ0 साहब से शान्तिकुन्ज में पूर्ण समयदानी के रुप में आने को कहा। मेरी मन:स्थिति तो शुरु से ही न्यूनतम में निर्वाह करने की रही। शान से किसी डाक्टर की पत्नी बन बड़े बंगले में रहूँ, यह मन में था ही नहीं। भोपाल छोड़ा तो ठीक उसी तरह जैसे कबीर ने चादर उतार कर रख दी थी। सब सामान बिक्री हेतु वहीं छोड़कर हम हरिद्वार आ गए। एक कमरे में ही निवास किया एवं जैसा माताजी चाहती थीं, गलने का प्रयास किया।

हरिद्वार आने के बाद कम ही मौके मिले जब पिताजी का अलग से अधिक देर सान्निध्य मिला हो। हाँ, सप्ताह में एक बार गोष्ठियों में व जब वे भोजन करने प्रतिदिन सबेरे शाम ऊपर से नीचे आते थे तो दर्शन होते। उनके व माताजी के परस्पर वार्तालाप को सुनने का मौका मिलता। उससे बहुत कुछ सीखने -जानने व मिशन के बारे में भविष्य की योजनाओं को समझने का शिक्षण मिला। डॉक्टर साहब को तो अक्सर मीटिंग में ऊपर बैठने का मौका मिलता मैं तो उनके लिखे नोट्स पढ़कर ही संतोष कर लेती थी।

मेरी सबसे बड़ी शिक्षिका-गुरु, मेरी माताजी रही हैं जिनने 1976 में डॉ0 साहब के एक्सीडेन्ट के समय से लेकर 1994 तक सतत मेरा मार्गदर्शन किया, मुझे पग पग पर चलना सिखाया। मानसिक संतुलन प्रतिकूलताओं के बीच भी कैसे रखा जा सकता है, यह मैंने माताजी से सीखा एवं आज मैं जो कुछ भी मिशन की जिम्मेदारियों का निर्वाह कर पा रही हूँ यह उन्हीं की दी हुई शक्ति के कारण है। मैंने सतत गलना, सहन करना, औरों को सुनना-सत्परामर्श देना ही सीखा है। परम वंदनीया माताजी के 1994 में बिछोह ने मुझे लगभग तोड़ ही दिया था। उन्हीं की सूक्ष्म व पूज्यवर की कारण सत्ता ने, मेरे पतिदेव के सतत साथ चलते रहने के आश्वासन ने मुझे यहाँ तक पहुँचाया है, जहाँ मैं लाखों परिजनों की प्रिय दीदी हूँ। ◈

संयमशीलता की साधना बचपन से ही कराई

"मैं तब लगभग 6-7 साल की थी। एक दिन स्कूल से लौटते समय रास्ते में एक रुपया पड़ा मिला। मैंने उसे उठा लिया। सामने खिलौने की दुकान थी। मेरा बालमन खिलौनों के लिये मचल गया। मन ने कहा पड़े हुए सिक्के को उठा लेना कोई चोरी तो है नहीं। सो मैंने खिलौने की दुकान से गुब्बारे, खिलौने आदि खरीदे और बड़ी प्रसन्न मुद्रा में घर पहुँची।

घर पहुँचते ही माताजी की पहली नजर मेरे नन्हें-नन्हें हाथों में थमे खिलौनों और गुब्बारों पर पड़ी। माताजी के पूछने पर मैंने सब बता दिया। माताजी ने प्यार से समझाते हुए कहा, "देखो बेटी, इन सब चीजों को दुकान पर वापिस कर आओ और पैसे को किसी मंदिर में डाल दो।" "आखिर क्यों?" मेरे मन में प्रश्न उठा। मैंने कहा- मैंने तो कोई चोरी नहीं की, पैसे तो पड़े मिले थे।" "पड़े मिले तो क्या हुआ, बिना मेहनत का पैसा भी चोरी का ही है।" माताजी ने समझाया और खिलौने लौटाने के लिये भेज दिया। कहा, "पैसा पास के मंदिर में चढ़ा देना।" मैंने वैसा ही किया। उस दिन मैंने जीवन में एक नया पाठ पढ़ा। थोड़ी देर पहले खेलने के लिये मचल रहा मन आदर्श के आगे झुक गया था।

सफलता का द्वार उन लोगों के लिए खुलता है, जो आशा, उत्साह और हिम्मत के सहारे द्वार पर बैठी हुई दुर्बलता रूपी सिंहनी को पछाड़ सकते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आचार्य जी की ब्रह्मवर्चस साधना -स्वामी चिन्मयानन्द

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एक ऐसे मनीषी थे, जिनकी मनीषा का प्रसाद सम्पूर्ण विश्व में बड़ी श्रद्धा और निष्ठा के साथ ग्रहण किया जा रहा है।

मेरा वर्षों तक आचार्य जी से सम्पर्क और व्यवहार रहा है। मानव-समाज में आचार्य जी को विभिन्न दृष्टियों से देखा जाता है। कोई उन्हें युग-निर्माण का द्रष्टा मानता है, कोई धर्म विधा का संशोधक, कोई धार्मिक ग्रन्थों का पुनरुद्धारक कहता है, कोई सुगम धर्ममार्ग का स्रष्टा, कोई उन्हें पत्रकार बताता, कोई वैज्ञानिक धर्म के मन्त्रदाता, तो कोई आर्यसमाजी कहकर विभूषित करता है।

जगद्गुरु श्री रामानन्दाचार्य के जीवन-चरित में आता है, जब उनके गुरु श्री राघवाचार्य ने उन्हें तारकमन्त्र की दीक्षा दी और बताया कि तारकमन्त्र जीव-जगत् का कल्याण करने वाला है। मन्त्र के जाप से या श्रवण से मनुष्य भवसागर से पार हो जाता है। तारक मन्त्र लोकमंगल-कारक है। गुरु के मुख से उपदेश को सुनकर रामानन्द जी उत्फुल्लित हो उठे। वे जहाँ भी जाते जोर-जोर से मन्त्र का जप करते थे। स्वामी जी के इस व्यवहार से उनके गुरुभाई खिन्न हो उठे। उन्होंने श्री राघवाचार्य से स्वामी जी की शिकायत करते हुए कहा कि रामानन्द गुरुमन्त्र की गरिमा को गिरा रहे हैं। इस रहस्यात्मक मन्त्र का गोप्यभाव से जप होना चाहिए, दीक्षा मन्त्र का उद्घोष उचित नहीं है। उस समय राघवाचार्य ने रामानन्द जी से जानना चाहा तो उन्होंने बताया कि जो तारक मन्त्र सम्पूर्ण जीव-जगत् का कल्याण करने वाला है, उसे व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए गुप्त क्यों रखा जाय।

मानव मात्र के कल्याण हेतु मन्त्र को प्रकट करना चाहिए। स्वामी राघवाचार्य ने उन्हें आशीर्वाद देते हुए कहा कि बेटा! ये तुम्हारें गुरुभाई तुम्हें बाधा उत्पन्न करेंगे, इसलिए तुम स्वतन्त्र रूप से अपने मतवाद का विस्तार करो, क्योंकि लोक कल्याण की तुम्हारी भावना यही चाहती है। उसके बाद रामानन्दाचार्य ने अपने दृष्टिकोण के अनुसार, देश में अपनी वैचारिक क्रान्ति का विस्तार किया और जगद्गुरु के रुप में पूजित हुए।

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के प्रकल्पों के साथ उनके व्यक्तित्व का जब हम विश्लेषण करते हैं तो उनमें स्वामी रामानन्द व सन्त कबीरदास के विचारों का प्रभाव-पुन्ज स्पष्ट प्रतिभासित होता है। उपर्युक्त बिन्दुओं पर हमारी चर्चा आचार्य जी से प्राय: हुआ करती थी। उनका दृष्टिकोण, लक्ष्य, विचार और स्वभाव सब कुछ बहुत स्पष्ट था। उन्होंने अनेक बार मुझसे

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कहा था कि ''मुझे युग-निर्माण करना है। ऐसी स्थिति में निर्माण से पूर्व युग-क्रान्ति भी स्वाभाविक है। किसी भी वस्तु या उद्देश्य की प्राप्ति हेतु श्रम और संघर्ष करना पड़ता है।''

उन्होंने एक जगह लिखा है, ''यदि नवजात बालक रोना, चिल्लाना और हाथ-पाँव फेंकना छोड़ दे, तो वह अपाहिज हो जाता है, उसका विकास रुक जांता है। पथिक दिन भर मार्ग से लड़ता है, एक के बाद दूसरा कदम लगातार उठाता-धरता रहता है, तब कहीं वह आगे बढ़ पाता है। विद्यार्थी, बलार्थी, यशार्थी और स्वार्थी सभी को प्रयत्न, परिश्रम एवं संघर्ष करना पड़ता है। जीवन भी संघर्ष से गढ़ता है, जीवन के विकास हेतु प्रयत्न और परिश्रम आवश्यक है।''जब मैंने उनसे कहा कि शास्त्रीय परम्पराओं में आपके द्वारा किये गये परिवर्तन को कुछ लोग अच्छा नहीं मानते हैं, तब उन्होंने उत्तर दिया था, ''कोई भी काम न तो अपने-आप में अच्छा है न बुरा। उसे जिस भावना से किया जाता है, उसी के अनुसार वह भला--बुरा बन जाता है।''

''पानी रंग रहित है, उसमें जैसा भी रंग डाल दिया जाय, वैसे ही रंग का बन जाता है। इसी प्रकार समस्त कार्य भावना के अनुसार भले-बुरे बनते हैं। कई बार सदुद्देश्य के लिये विवेकपूर्वक, सद्भावना के साथ हिंसा, चोरी, असत्य, छल, व्यभिचार तक बुरे नहीं ठहरते। इसी प्रकार अविवेकपूर्वक या बुरे उद्देश्य से किये गये सत्कर्म भी बुरें हो जाते हैं। आततायी पर दया करना, हिंसक, वधिक के पूछने पर पशु-पक्षियों के पता बताने का सत्य बोलना, कुपात्रों को दान देना आदि कार्यों से उलटे पाप लगता है। इसलिये कर्म के स्थूल रूप पर अधिक ध्यान न देकर उसकी सूक्ष्म गति पर विचार करना चाहिये। व्यापार, कृषि, शिल्प, युद्ध, उपदेश आदि को यदि यह सोचकर किया जाये कि इन कार्यों से संसार के सुख-शान्ति में वृद्धि हो, सात्विकता बढ़े, मेरे कार्य नर-नारायण को प्रसन्न करने वाले और सन्तोष देने वाले हों तो इन भावनाओं के कारण ही वे साधारण कार्य पुण्यमय, यज्ञ-रुप बन जाते हैं।''

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के व्यवहार से स्पष्ट होता था कि वे सच्चाई के धरातल पर खड़े होकर मानवता का विकास करना चाहते थे। वे भावना को कल्पनालोक की तुष्टि नहीं मानते थे। उनके अनुसार केवल कल्पना करने या झूठ-मूठ मन को समझा लेने को भावना नहीं कहा जाता। सच्चा संकल्प पक्का दृष्टिकोण और अटूट विश्वास मिलकर भाव बनाता है। उस भाव से किये हुए कार्य उच्च बनाकर, भावनाओं को परमार्थमयी रखकर धीर पुरुष विवेक द्वारा कर्मों को पवित्र कर लेते हैं।

उन्होंने कहा था कि मुझे युग-निर्माण करने के लिये आध्यात्मिक शक्ति और लोक-शक्ति दोनों को जागृत करना होगा। यही कारण है कि आचार्य जी उपासना के क्षेत्र में बुद्धि की अधिष्ठात्री वेदमाता गायत्री के शरणागत हुए तथा लोकशक्ति के विस्तार हेतु उपासना के क्षेत्र में वर्णव्यवस्था और वर्ग-भेद को अनदेखा किया। उन्होंने अपनी युग-निर्माण की योजना व परिकल्पना के अनुसार परम्परावादी धार्मिक रीति-रिवाजों में परिवर्तन किया। उनकी परिवर्तन-प्रणाली उनकी अपनी मौलिकता है, जो आज दुनिया के तमाम देशों में फल-फूल रही है।

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने वेदमाता गायत्री की उपासना को केन्द्र में रखकर लोकाराधन प्रारम्भ किया था। उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति ने ईश्वरेच्छा का रूप धारण कर लिया और वे युग निर्माण योजना में अग्रसर होने लगे। उन्होंने ब्रह्मवर्चस् की स्थापना के द्वारा गायत्री की उपासना को विस्तार दिया और उसके साथ अनेक लोकमंगल प्रकल्पों को आगे बढ़ाया। उनके द्वारा स्थापित गायत्री-केन्द्रों से आज विश्व की मानव-चेतना स्पन्दित हो रही है।

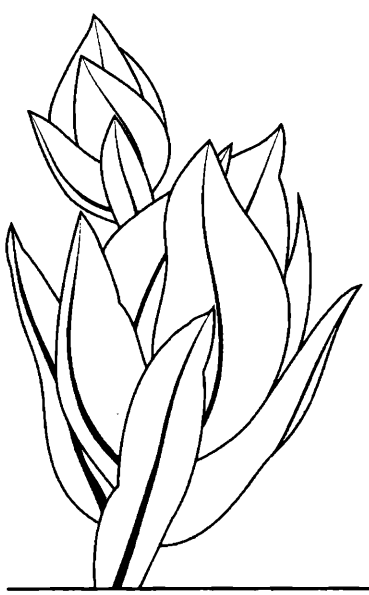
वस्तुत: लक्ष्य-प्राप्ति के लिये सामाजिक संघर्ष किस प्रकार किया जाय, इसकी प्रेरणा के ज्वलन्त उदाहरण आचार्य जी थे। उन्होंने ''पुनन्ति धीरा अपसो मनीषा'' इस श्रुतिवाक्य को अपने जीवन में उतार लिया था, अर्थात् धीर पुरुष विवेक-पूर्वक अपने कर्मों को पूरा कर लेते हैं। ◈

सर्वोपरिता प्राप्त करने के लिए घोर कष्टों का सामना किये बिना कोई बच नहीं सकता।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आचार्य जी मेरी दृष्टि में महामहिम डॉ. शंकर दयाल शर्मा

भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा ने देशमणि नाम से एक पुस्तक लिखी है जो भारत के महान विचारकों एवं महापुरुषों पर आधारित है। इसमें परमपूज्य गुरुदेव को लेकर दो अध्याय समर्पित हैं। प्रस्तुत है उन लेखों के कुछ अंश...



(श्रीराम शर्मा आचार्यजी पर प्रकाशित डाक-टिकट जारी करते हुए, नई दिल्ली, 27 जून, 1991)

मैं आचार्य श्रीराम शर्माजी को प्रखर प्रतिभा, दृढ़ इच्छाशक्ति तथा प्रचंड आत्मविश्वास से संपन्न अपनी तरह का एक विशिष्ट अध्यात्मवादी चिंतक मानता हूँ। उन्होंने अपना अध्यात्म चिंतन वर्तमान युग के वैज्ञानिक जीवन-दर्शन के संदर्भ में प्रस्तुत किया है। उनका चिंतन विज्ञान और अध्यात्म, मस्तिष्क और हृदय तथा तर्क और आस्था के संतुलन पर आधारित है। मैं समझता हूँ कि इसीलिए उनका दर्शन हमारे समाज के लिए इतना अधिक व्यावहारिक और उपयोगी बन पड़ा है। आचार्यजी ऐसा कर सके, इसका रहस्य मुझे इस बात में निहित मालूम पड़ता है कि वह समाज से जुड़े व्यक्ति थे। उन्होंने लोगों को, लोगों के परिवार और समाज को बड़ी निकटता से देखा था और उनकी मूल समस्याओं को बड़ी सूझबूझ के साथ समझा था।

मुझे आचार्य जी की यह बात बहुत महत्वपूर्ण लगती है कि युग परिवर्तन के लिए जिस अवतार की आवश्यकता है, वह पहले आकांक्षा रूप में ही अवतरित होगा।'' चूँकि यह आकांक्षा व्यक्ति में ही उत्पन्न हो सकती है, इसीलिए उन्होंने व्यक्ति के सुधार और विकास को प्रमुख माना। उन्होंने पृथ्वी पर देवत्व का आवाहन करने के बजाय मनुष्य में छुपे देवत्व को उभारने का प्रयास किया। उनका यह प्रयास मनुष्य को आचरणशील तथा उदात्त बनाने से जुड़ा हुआ था। अपनी पुस्तिका 'परिवर्तन के महान् क्षण' के पृष्ठ 17 पर उन्होंने लिखा है कि, ''ईश्वर के प्रति सुनिश्चित आत्मीयता की अनुभूति 'उपासना', जीवन में शालीनता की अविच्छिन्नता अर्थात् 'साधना' तथा करुणा और उदारता से ओत-प्रोत हृदय में निरंतर निर्झर की तरह उद्‌भुत होती रहने वाली 'आराधना'.... यही है कि वह त्रिवेणी, जो मनुष्य को सच्चे अर्थों में मनुष्य बनाती हैं।''

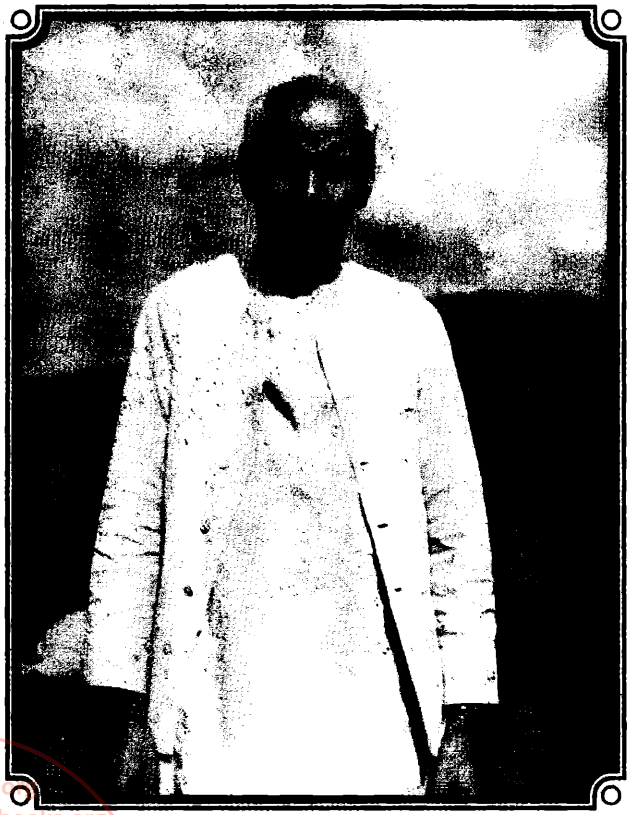
मैं समझता हूँ कि ये तीनों बातें हमारे चिंतन और हमारी संस्कृति के मूल में ही रही हैं। आचार्यजी ने इस सिद्धांत और साधना को आधुनिक युग के अनुकूल तर्क और शब्द देकर सामाजिक परिवर्तन का जो रास्ता दिखाया है, उसके लिए आने वाली पीढ़ियाँ युगों-युगों तक उनकी कृतज्ञ रहेंगी।

मैं आचार्यजी के आध्यात्मिक व्यक्तित्व को उनके समाज-सुधारक व्यक्तित्व में पूरी तरह से घुला-मिला मानता हूँ। बल्कि यह कहना अधिक सही होगा कि उनका अध्यात्मवाद इसीलिए है ताकि व्यक्ति की आत्मा का उत्कर्ष हो सके

हृदय में दया रखना, स्वभाव को नम्र रखना और दान में प्रवृत्ति रखना, इन तीन बातों से मनुष्य सद्‌गति को प्राप्त करता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org







विदेश यात्रा पर आचार्य श्री (1972)

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org





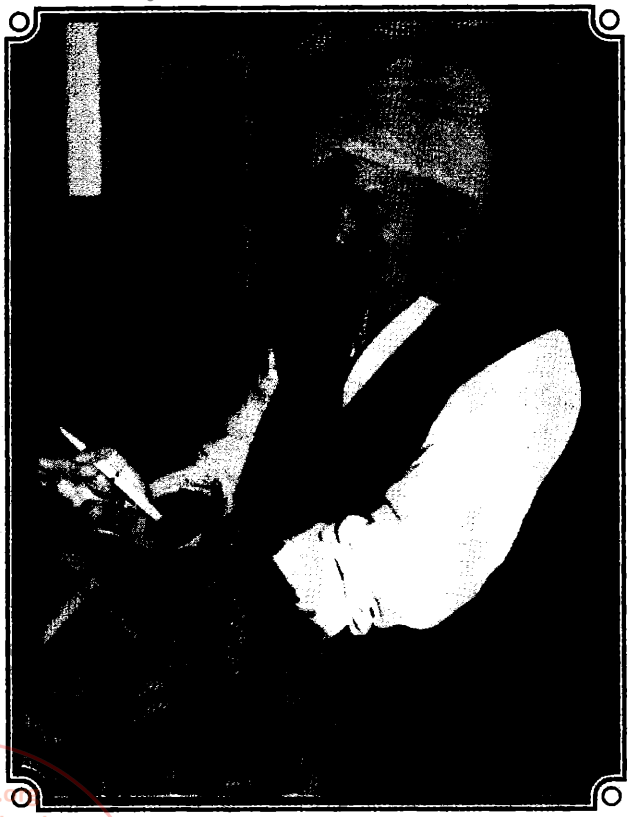
www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

"सैनिक" कार्यालय (आगरा) में उनकी एक लम्बी युवावस्था
पत्रकारिता, सैनिक एवं साधक-स्वयं सेवक की भूमिका निभाते हुए बीती

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



स्नेह की प्रतिमूर्ति- सच्ची सहयोगिनी
प्रथम शिष्या माता भगवती देवी





तप के धनी, ज्ञान के सागर, चिन्तन के उद्‌गाता

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



अभिव्यक्ति के धनी हमारे परम पूज्य गुरुदेव-उनकी अमृत वाणी में गजब का तेज है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org





श्रद्धाञ्जलि समारोह (अक्टूबर 1990) की झलकियाँ

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

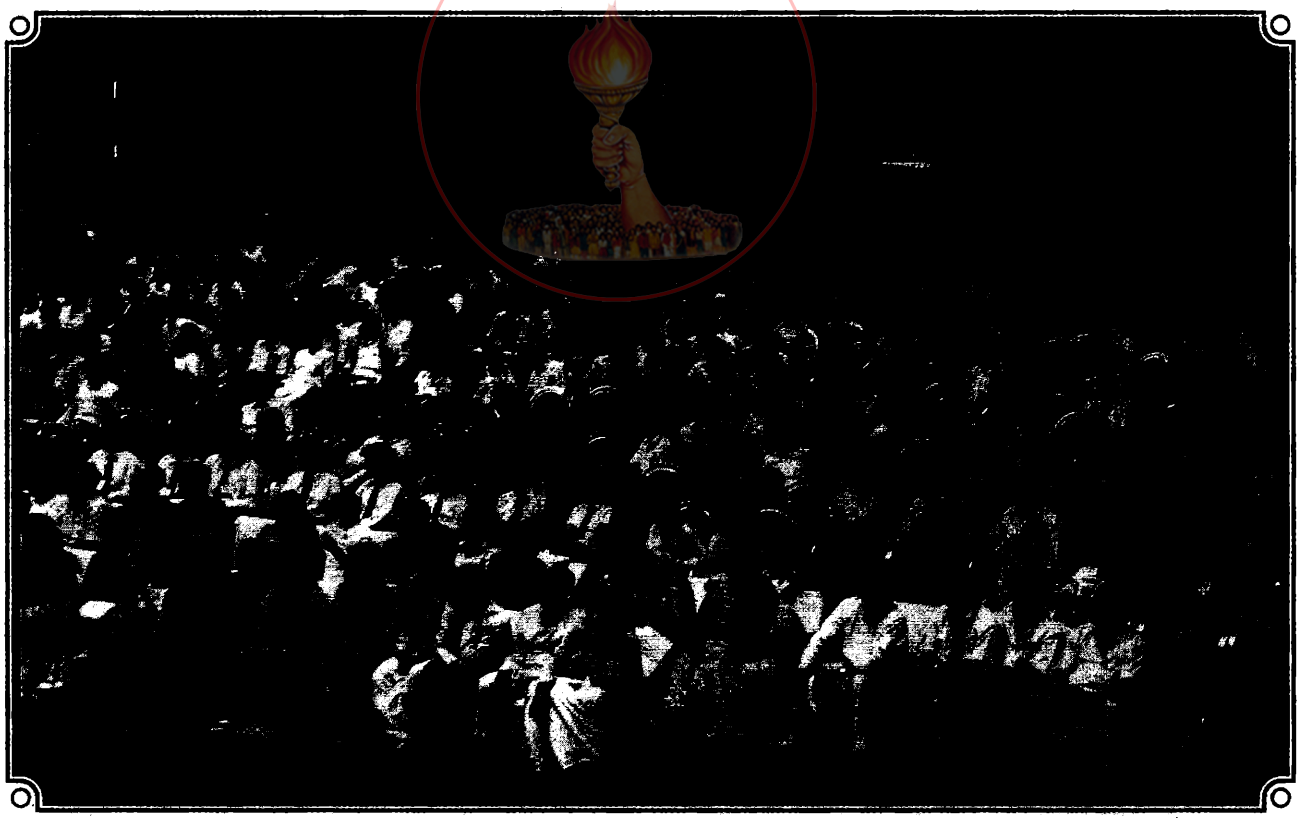




अपने शिष्यों-अंग अवयवों पर अपनी ममता लुटातीं जगज्जननी (श्रद्धाञ्जलि समारोह)

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

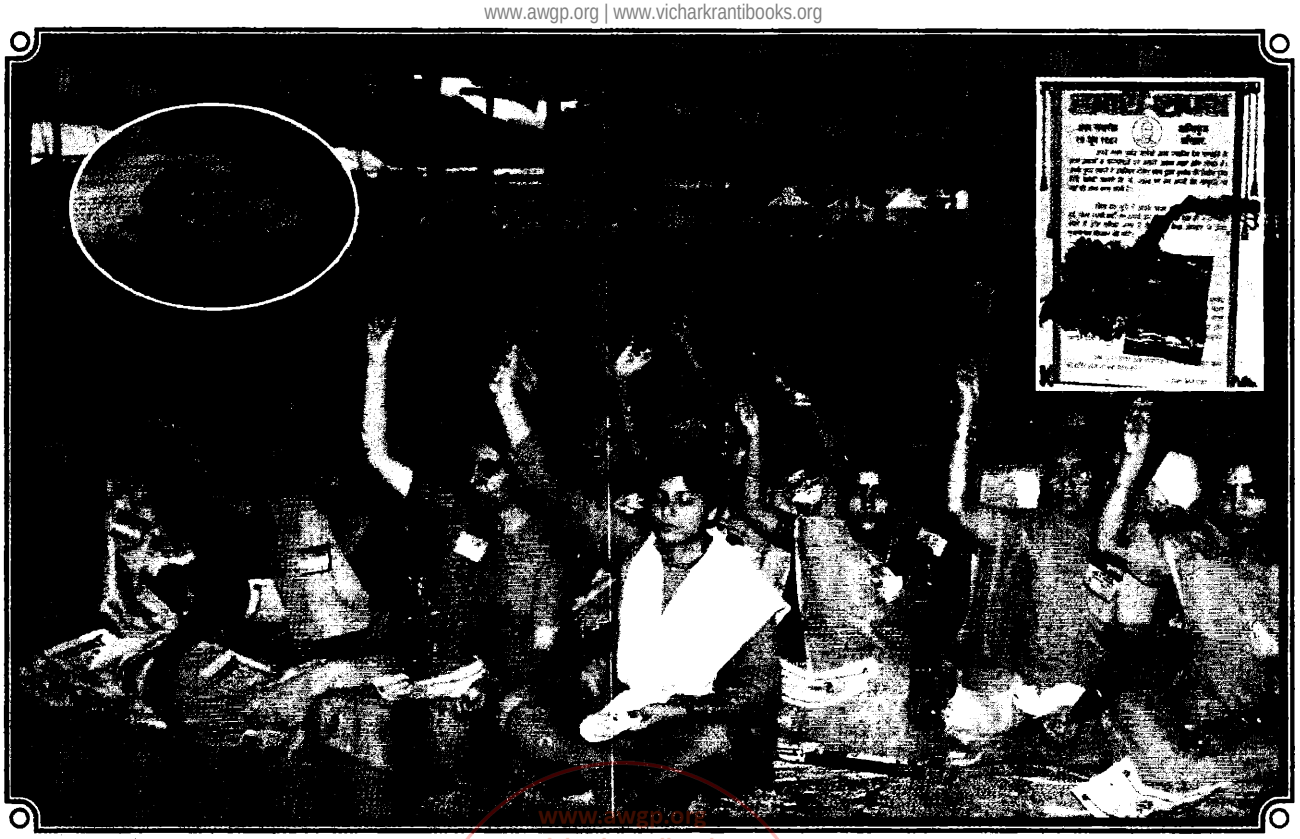




डाक टिकट विमोचन समारोह में माताश्री

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org





ऐतिहासिक शपथ समारोह

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और वह स्वयं को समाज की सेवा में लगा सके। उन्होंने लिखा भी है कि, ''वस्तुतः लोक-सेवी ही सच्चा अध्यात्मवादी हो सकता है।'' अपने समाज के प्रति इतना सचेत व्यक्तित्व अपने समाज की बुराइयों के प्रति चुप कैसे रह सकता हैं?

आचार्यजी की एक बहुत बड़ी देन यह है कि उन्होंने मनुष्य को मनुष्य बनकर तथा दूसरों को मनुष्य मानकर जीना सिखाया। उन्होंने जाति प्रथा और छुआछूत की कड़े शब्दों में निंदा की। उनकी मान्यता थी 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' अर्थात् सभी को अपने समान देखो। यह प्रसन्नता की बात है कि गायत्री परिवार का संचालन उनकी इसी मान्यता के अनुरूप हो रहा है तथा मेरा विश्वास है कि भविष्य में यह परिवार हमारे समाज के सामने मानवीय एकता के सुंदर उदाहरण प्रस्तुत करके उसका मार्ग-दर्शन करेगा।

आचार्य श्रीराम शर्माजी मुझे सच्चे अर्थों में एक योद्धा मालूम पड़ते हैं। शुरू में वह देश की आजादी के लिए लड़े। एक क्रांतिकारी सेनानी के रुप में उन्होंने देश की आजादी की लड़ाई में भाग लिया। वह गाँव-गाँव में घूमे, लोगों में राजनीतिक चेतना जागृत की तथा उन्हें संगठित करने का काम किया और उसके लिए कई बार जेल भी गए। 'सैनिक' समाचार पत्र के माध्यम से उन्होंने लोगों के मन में स्वतंत्रता की आकांक्षा जगाई। बाद में राजनीतिक स्वतंत्रता की यह आकांक्षा मानवीय स्वतंत्रता में तब्दील हो गई और वह व्यक्ति की चेतना को क्षुद्र भावों से आजाद कराने की लड़ाई लड़ने लगे। अपनी उदात्त चेतना, उदार भावना तथा कर्मठता के बल पर आचार्यजी बहुत जल्दी ही अपनी युगीन चेतना के शक्ति-केन्द्र बन गए और फिर वह लगातार लोगों में अपने आपको बाँटते रहे।

ऐसे महान् संतों का जीवन हमारे समाज में सद्भाव प्रवाहित करके उसे निर्मल बनाता है, उसकी संचित जीवन-शक्ति को उद्भूत करके उसमें ऊर्जा भरकर उसे लोकहित की ओर उन्मुख करता है। आचार्यजी का जीवन ऐसा ही महान था। समाज में चरित्र के संकट को रोकने के लिए उनके उपदेश मंत्र के समान हैं, जिसकी आज बहुत आवश्यकता है। (पंडित श्रीराम शर्मा आचार्यजी पर आयोजित एक संस्मरण संगोष्ठी में, नई दिल्ली, 4 अगस्त, 1990)

आचार्य जी का उस समय का एक महत्वपूर्ण कार्य माना जाता है-उनके द्वारा आगरा जिले के लगान संबंधी आँकड़े इकठ्ठे करना। आचार्य जी ने गाँवों में अकेले घूम-घूमकर किसानों के नाम, रकबा और लगान की राशि आदि के बारे में पूरी छानबीन करके सारे आँकड़े इकठ्ठे किये थे। उनके इस कार्य ने पं0 गोविन्द बल्लभ पंत को बहुत प्रभावित किया था।

छोटे-छोटे कस्बों में भी गायत्री शक्तिपीठ देखे जा सकते हैं और युग निर्माण योजना का साहित्य और सुभाषित वाक्य देखे जा सकते हैं। आचार्यजी ने अपनी सूक्ष्म सूझ-बूझ और कुशल सांगठनिक क्षमता द्वारा पूरे देश में करीब तीन हजार प्रज्ञा संस्थान स्थापित किए हैं और उनके पास करीब 25 लाख समर्पित कार्यकर्ताओं का समूह है। यह कोई छोटी-मोटी उपलब्धि नहीं है।

आचार्य श्रीरामजी के चिंतन के मूल आधार में वैचारिक क्रांति को मानता हूँ। आचार्यजी ने अपनी पुस्तक 'हमारी वसीयत और विरासत' के पृष्ठ सं0 149 पर लिखा है कि ''नवयुग यदि आएगा तो विचार शोधन द्वारा ही। क्रांति होगी तो वह लहू और लोहे से नहीं, विचारों की विचारों से काट द्वारा होगी। समाज का नव-निर्माण होगा तो वह सद्विचारों की प्रतिष्ठापना द्वारा ही संभव होगा।''

आचार्यजी की एक बात मुझे जो सबसे अधिक प्रभावित करती है, वह अपनी बात को समझाने की उनकी रोचक शैली। यह बात बहुत महत्वपूर्ण है कि उन्होंने आम लोगों के जीवन की छोटी-छोटी बातों और व्यवहार संबंधी प्रश्नों को उठाया और उदाहरणों तथा किस्से-कहानियों के माध्यम से उन प्रश्नों का समाधान समझाया। इससे उनकी बातें लोगों की समझ में आसानी से आईं और उसका प्रभाव भी हुआ। इस दृष्टि से आचार्यजी ने अनेक छोटी-छोटी पुस्तिकाएँ लिखी हैं, जो व्यावहारिक जीवन से संबंधित हैं, और अत्यन्त महत्व की हैं। मैं चाहूँगा कि ये पुस्तिकायें अधिकाधिक लोगों तक पहुँचाई जाएँ ताकि लोग उनसे अपने जीवन का निर्देशन प्राप्त कर सकें।

सब रोगों की एक दवा है--प्रसन्न रहना और प्रसन्न रहने के लिए आवश्यक है-अपना जीवन निष्कलुष, निष्पाप और निर्दोष बनाना।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पूज्य गुरुदेव - विशिष्ट संतों की दृष्टि में

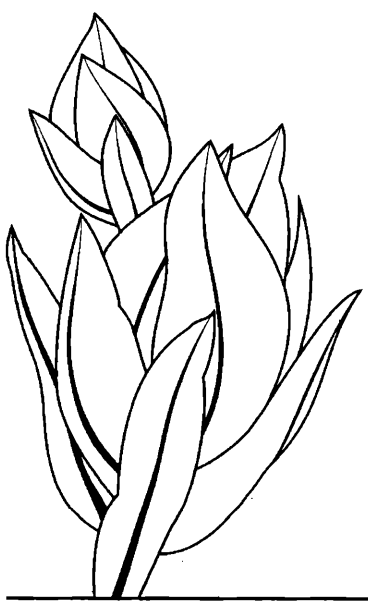
कुछ महापुरुषों एवं विद्वत्जनों के परम पूज्य गुरुदेव के प्रति भाव यहाँ प्रस्तुत हैं...

सिद्ध श्री गोदड़ी महाराज की भविष्यवाणी : हल्द्वानी की नन्दी चौधरी बताती हैं कि 1970 में वह अपनी बहिन के पास जोशीमठ गयी थी। अक्टूबर माह में दीपावली के दिन थे। विदित हुआ कि धौलीगंगा-नीतिघाटी में तपोवन के समीप एक सिद्ध गोदड़ी महाराज रहते हैं। महाराज अपना अधिकांश समय तपस्या में एक गुफा में व्यतीत करते थे। सौभाग्यवश वहाँ जाने पर हमें उनके दर्शन हो गये। कहा जाता है कि सिद्ध श्री गोदड़ी महाराज दो सौ वर्ष से भी अधिक की अवस्था के हैं। उन्होंने मुझसे कहा, ''बेटी, कलियुग की अवतार-शक्ति आँवलखेड़ा में अवतरित हो चुकी है। अभी दुनियाँ को पता नहीं है। 15 वर्ष पश्चात् तुम उनके दर्शन करोगी।''

वर्ष 1985-86में जब नैतिक शिक्षा के प्रशिक्षण कार्यक्रम में मुझे शान्तिकुञ्ज हरिद्वार आने का अवसर प्राप्त हुआ। तब पूज्यवर के एवं वंदनीया माताजी के प्रथम दर्शन किये। वर्ष 1989 में वसंत पर्व पर वंदनीया माताजी का प्रवचन सुना। प्रवचन में जब गुरुदेव के जन्म स्थान, शिक्षा इत्यादि के संबंध में सुना तो अनायास ही 'सिद्ध बाबा गोदड़ी महाराज' की बात याद आ गयी। मन ने कहा, ''बस यही भगवान् हैं'' और गुरुदेव एवं माताजी के प्रति श्रद्धा और भी दृढ़ हो गयी।

माँ आनंदमयी : एक बार गुरुजी-माताजी रिक्शा में बैठ कर कहीं जा रहे थे। श्री शिव प्रसाद मिश्रा जी भी साइकिल पर उनके पीछे-पीछे हो लिये। देखा तो वे माँ आनंदमयी के आश्रम में पहुँचे हैं। वे थोड़ा दूर में रहकर देखते रहे। उन्होंने देखा माँ आनंदमयी उन्हें देखते ही प्रसन्नता से भर गईं और बोलीं, ''आईये, आईये। माताजी-पिताजी, आईये।'' गुरुजी बोले, ''माँ तो आप हैं।'' इस पर वे बंगाली भाषा में बोलीं, ''आमी जानी, के बाबा के माँ।'' मिश्राजी बताते हैं कि वे केवल इतना ही देख पाये कि माँ आनंदमयी ने गुरुजी-माताजी के चरण पखारे और फिर गुरुजी-माताजी को भीतर ले गईं। अब भीतर तक तो वे जा नहीं सकते थे इसलिये बाहर से ही लौट आये।

काञ्चि काम कोटि पीठ के शंकराचार्य- श्री जयेन्द्र स्वामी : जब शान्तिकुञ्ज पधारे तो उन्होंने ऋषियुग्म के दर्शन किये। संतों की मंडली में उन्होंने अपनी अभिव्यक्ति दी व समय-समय पर कहते भी रहे कि आचार्य जी का एकाकी पुरुषार्थ सारे संत समाज की सम्मिलित शक्ति के स्तर का है। उन्होंने गायत्री व यज्ञ को प्रतिबंध रहित करने के निमित्त जो कुछ भी किया, वह शास्त्रों के अनुसार ही था। यह प्रशंसा कुम्भ में पधारे



लोहे की काई लोहे को खा जाती है, उसी प्रकार पाप व वासनाएँ मनुष्य को खा जाती हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पंडितगणों तक पहुँची, तो वे चौंके। उन्होंने प्रश्न किया, "आचार्य जी ने क्या शास्त्रों की अवहेलना कर जिस-तिस को गायत्री दीक्षा नहीं दी ? क्या आप इसे उचित मानते हैं ?" इस पर संत श्री का कहना था कि शास्त्र-विधि शास्त्र के अनुशीलन से निर्धारित होती है। शास्त्र को शस्त्र बना लेने से नहीं। आचार्य जी ऐसे युगपुरुष हैं, जिनका हर कार्य शास्त्र सम्मत, विधि सम्मत माना जाना चाहिये। ऐसा कहकर उन्होंने उत्तर दिशा में नमन किया और कहा, "मेरा उन्हें बारम्बार नमन है।" सभी पंडितगण निरुत्तर थे।

स्वामी विशुद्धानंद जी महाराज : हिमालय निवासी त्रिकालदर्शी परम सिद्ध महाराज जी ने पूज्यवर के विषय में दिसम्बर 1957 की अखण्ड-ज्योति में अपने विचार व्यक्त किये हैं। उन्होंने कहा, "आचार्य की नस-नाड़ियाँ फौलाद की हैं। विगत तीस वर्षों में घनघोर तप करके उन्होंने अपने आपको अष्टधातु का बना लिया है। हिमालय जैसे उदार हृदय एवं मानसरोवर जैसी निर्मल ये दोनों (गुरुदेव व माताजी) आत्माएँ हैं। असंख्यों को पार कराने वाले वे अनुभवी मल्लाह हैं। वे महान ही पैदा हुए हैं, महानता के साथ जी रहे हैं और उनका अंत भी महान ही होगा।"

करपात्री जी महाराज : जिनने सनातन धर्म की गरिमा स्थापित करने का महत् पुरुषार्थ सम्पन्न किया। अनेकों ग्रंथ इस विषय पर लिखे। जिन्हें हिन्दू धर्म का एक अधिकारी विद्वान् माना जाता रहा है। उन्होंने अपने भाव भरे उद्‌गार इस रूप में व्यक्त किये थे, "आचार्य जी, इस युग में गायत्री के जनक हैं। उन्होंने गायत्री को सबकी बना दिया। यदि इसे मात्र ब्राह्मणों की मानकर उन्हीं के भरोसे छोड़ दिया गया होता तो अब तक गायत्री महाविद्या संभवत: लुप्त हो जाती।"

स्वामी अखण्डानंद जी सरस्वती के रूप में विख्यात करपात्री जी के गुरुभाई एक महान् संत, सिद्ध पुरुष हैं। बिड़ला परिवार उन्हें गुरु रूप में मानता रहा है। सभी ग्रंथों पर उनको समान महारत प्राप्त थी। अनेकों बार पूज्य गुरुदेव से उनकी मुलाकात हुई। पूज्यवर के बारे में ऐसी संत स्तर की सत्ता की अभिव्यक्ति थी - "जो गायत्री का गंगाजल की तरह सेवन करना चाहते हों, वे आचार्य जी का मार्ग अपनाएँ। यह आसान है और निरापद भी। आचार्य जी ने तो यज्ञ को भी देवदर्शन की तरह सुलभ बना दिया है।"

प्रसिद्ध सिन्धी सन्त श्री चाण्डूराम जी साहब : शान्तिकुञ्ज के एक कार्यकर्ता जो पहले लखनऊ के प्रसिद्ध सिन्धी सन्त श्री चाण्डूराम जी साहब को अपना गुरुरूप मानते थे। वे जब गायत्री परिवार से जुड़े और शान्तिकुञ्ज जाने की अनुमति लेने के लिए उनसे निवेदन किया तो सन्तश्री ने उनकी श्रद्धा को और पुष्ट करते हुए कहा- "श्रीराम शर्मा आचार्य बहुत बड़ी हस्ती हैं। मैं भी उनसे मिलने गया था। मैं उनके समक्ष नीचे धरती पर बैठने लगा, तो उन्होंने नीचे बैठने नहीं दिया, अपने पास बिठाया, चाय आदि के लिए निवेदन किया, तो हमने उनसे पूछा कि आपने तो अखण्ड ज्योति में चाय एक धीमा जहर बताया, फिर आप चाय प्रस्तुत कर रहे हैं। इस परउन्होंने हँसते हुए कहा कि चाय लोक मानस में इतना अधिक प्रचलित हो गयी है कि अतिथि-सत्कार में चाय सहज-सामान्य बात हो गयी है। फिर भी हमने लोगों के सामने उसका एक विकल्प प्रज्ञा पेयं के रूप में दे दिया है। सन्तश्री ने बताया कि वे पूज्यवर की सहजता, आत्मीयता, मिलनसारिता एवं उनके व्यावहारिक चिन्तन से बहुत प्रभावित हैं। वे भी नियमित रूप से 'अखण्ड ज्योति' का अध्ययन करते हैं। आचार्य श्री की परिवार निर्माण विषय पर एक पुस्तक मुझे इतनी अच्छी लगी कि मैंने उसकी कई प्रतियाँ मँगाकर श्रद्धालुओं में बँटवायीं। उन्होंने कहा- आचार्य श्री का सम्पूर्ण साहित्य, उनकी लेखनी की हर बात आज के समयानुकूल है। हर किसी के लिये उपयोगी है और हर वर्ग में बाँटी जा सकती है।

संत श्री हरवंश सिंह निर्मल (श्री भादरिया जी महाराज) जैसलमेर (राजस्थान) : "श्रीराम शर्मा आचार्य आधुनिक युग के भारत में एक बहुत बड़े विचारक हो चुके हैं। हम उनको दूसरा वेद व्यास कह सकते हैं। मानव को दिशा निर्देश देने में उच्चस्तर पर जितनी लम्बी कलम उनकी चली, उसके मुकाबले इस युग में किसी दूसरे की नहीं। उनके साहित्य संग्रह की विरासत ने असंख्यों लोगों का जीवन बदला है और उसको पढ़कर

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

भविष्य में भी अधिकाधिक लोग अपना जीवन गठन करेंगे। उनके अनुयायियों में भारतीय संस्कृति को स्वस्थ रूप में जीवित देखा जा सकता है। उनकी विद्वता, व्यक्तित्व और आदर्श मानव के सृजन की महत्त्वपूर्ण भूमिका के लिये उनकी पवित्र सोच को पुनः नमन। (**''मानव कल्याण का राजमार्ग'' पुस्तक से, पृष्ठ-252**)

प्रसिद्ध सिन्धी संत श्री स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराजः प्रसिद्ध सिन्धी संत श्री स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज, उल्हासनगर- से शान्तिकुञ्ज के एक प्रतिनिधि मिले तो संतश्री ने उनसे कहा- ''तुम्हें आचार्य श्री जो साधना बतायें, वह करते रहना। उनका लिखा साहित्य अधिक से अधिक पढ़ते रहना। मैं भी उनका लिखा प्रज्ञा पुराण अपने सत्संग में पढ़वाता हूँ। ज्ञातव्य है कि वे संत स्वयं प्रज्ञाचक्षु थे, पर आचार्यश्री की महानता-विशिष्टता को वे अंतःचक्षुओं से जान गये थे। इसीलिए अपने भावों को प्रकट करने के लिए उन्होंने उन प्रतिनिधि को अपनी छाती से लगाकर खूब प्यार दिया और अपने इन शब्दों से पूज्यवर के प्रति उनकी श्रद्धा को और अधिक बढ़ा दिया।

विनोबा जी ने दी वेदमूर्ति की उपाधि : हीरे की परख जौहरी ही कर सकता है। इसी तरह ऋषि की परख वही करे जो स्वयं ऋषि हो इस कथन की सार्थकता विनोबा जी के ग्वालियर मुरार कार्यक्रम के अवसर पर अनुभव हुई। उनके निवास स्थान पर ग्वालियर के एक कार्यकर्त्ता पू. गुरुदेव के वेद भाष्य लेकर भेंट करने गए। यह वेद भाष्य का प्रथम प्रकाशन था। शाम के यही कोई चार बज रहे होंगे। विनोबा जी ठहरे ठेठ सत्यवादी। वेदों को उलटते-पलटते हुए बोले ''अभी अभी मैं तुम्हारी इस भेंट के बारे में कुछ नहीं कह सकता। कल सुबह आना।''

दूसरे दिन प्रातः पहुँचने पर वह वेद वापस करने लगे। लेते हुए कार्यकर्ता का मन थोड़ा मलीन था, कुछ आश्चर्यचकित भी। उसके आश्चर्य को तोड़ते हुए बोले-''मेरे शाम के कार्यक्रम में आना वहीं पर मैं यह भेंट स्वीकार करुँगा। ऐसी अमूल्य भेंट व्यक्तिगत नहीं सार्वजनिक स्तर पर स्वीकारी जानी चाहिए।'' कार्यकर्ता शाम के कार्यक्रम में पहुँचा-वेदों के महान पण्डित विनोबाजी ने उन्हें मंच पर बुलाया।

वेदों को उसके हाथ से लेते हुए मस्तक झुका कर वेद भगवान को प्रणाम करते हुए उन्होंने घोषणा की कि कल रात मैंने इस वेद भाष्य को भली-भाँति देखा है। ऐसा सुन्दर, भाष्य कोई वैदिक ऋषि ही कर सकता है अन्य में भला ऐसी सामर्थ्य कहाँ? विनोबा जी पूरी, भरी सभा में काफी देर तक वेद भाष्य की प्रशंसा में बोलते रहें। कार्यकर्ता एक ऋषि से दूसरे ऋषि के स्वरुप को सुनकर मुग्ध हो रहा था। ◈

संत बड़े जबरदस्त होते हैं। संतों की पहचान अलग होती है। संत जो होते हैं, वो दुनिया को हिला देते हैं। हमने ऋषि परंपरा अख्तियार की है। गाँधी ने, बुद्ध ने दुनिया को हिला दिया था। कबीर ने दुनिया को हिला दिया था। समर्थ गुरु रामदास ने, रामकृष्ण परमहंस ने दुनिया को हिला दिया था। गाँजा पीते रहे, कहीं ऐसे संत होते हैं? नहीं, संत ऐसे नहीं होते। इसलिये हमने संत परंपरा की ओर कदम बढ़ाया, ब्राह्मण परंपरा की ओर कदम बढ़ाया, आप भी कदम बढ़ाइये। ब्राह्मण अपरिग्रही होता है और संत सेवाभावी होता है, बस दो कसौटियाँ होती हैं। ब्राह्मण वो जिसके पास संपदा न हो और संत वो जो निरंतर सेवा कार्य में लगा रहे। इन दोनों की परिभाषा यही है। हमने अपने लिये यही रास्ता अख्तियार किया और आप लोगों से प्रार्थना की कि आप लोगों से जितना भी कुछ बन सके, कदम उठाना संभव हो सके, उतना आप करें। आपकी निजी महत्त्वाकांक्षाएँ, विलासितायें बहुत बड़ी नहीं होनी चाहिये। खासकर तब, जब आप हमारी बिरादरी में शामिल हो गये हैं।

त्याग में कितना बल तथा सुख है और अनुचित संग्रह से कितनी निर्बलता एवं तकलीफ होती है, इसका ठीक-ठीक अनुभव भुक्तभोगी ही कर सकता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गुरुसत्ता का आदर्श दाम्पत्य जीवन

गुरुजी माताजी का दाम्पत्य जीवन एक आदर्श दाम्पत्य जीवन था। हर एक को प्रेरणा देता हुआ कि परस्पर एक दूसरे का सहयोग जीवन के बड़े उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक होता है। इसी में जीवन का असली आनंद है।

परिजन तो बताते हैं, कि मथुरा में प्रारंभ के दिनों में जब माताजी सबको भोजन आदि कराकर बर्तन साफ करने बैठतीं तो गुरुजी भी उनकी मदद करने लगते। तब माताजी उन्हें कहतीं, ''साहब आप रहने दीजिये।'' इस पर गुरुजी कहते, ''माताजी, हमारे बच्चे कैसे सीखेंगे कि पत्नी का सहयोग कैसे करना चाहिये ?'' ◈

गुरुजी कभी-कभी गोष्ठी में कहते, ''बेटा, दाम्पत्य जीवन कैसा होना चाहिये, इसे हमारे जीवन से सीखना।'' माताजी की आँख का ऑप्रेशन हुआ था। एक कार्यकर्ता बहन माताजी से मिलने गई। गुरुजी उन दिनों सूक्ष्मीकरण साधना में थे। गुरुजी भी माताजी को देखने आये थे। उसे पता नहीं था कि गुरुजी, माताजी के पास बैठे हैं।

दरवाजा हल्का सा खुला था। उसने देखा, गुरुजी, माताजी के पास बैठे हैं। वह बाहर ही खड़ी रही, लौटी नहीं। गुरुजी, लगभग एक घण्टा माताजी का हाथ थाम कर बैठे रहे पर दोनों में बातचीत कुछ भी नहीं हुई। माताजी अक्सर बताया करती थीं, ''बेटा, दिन भर काम करके थक कर जब मैं ऊपर जाती तो गुरुजी पानी का गिलास भर कर रखते और सीढ़ियों के मध्य तक आते थे। मेरा हाथ थाम कर ऊपर ले जाते और बिठाते, फिर अपने हाथ से पानी का गिलास उठा कर देते।'' ◈

''सूक्ष्मीकरण साधना में जब वे गये तो मिशन के सब कार्यों की जिम्मेदारी मेरे कंधों पर सौंप दी। मैंने कहा, ''आचार्यजी, यह सब मैं कैसे कर पाऊँगी ?'' तो बोले, ''मैं जो तुम्हारे साथ हूँ।'' जब कभी मथुरा आदि जाना पड़ता तो वे ऊपर से खिड़की में से देखते रहते थे।'' ◈

मथुरा के दिनों की याद कर माताजी बताती थीं- ''बेटा, इस गायत्री परिवार को हमने और आचार्य जी ने अपने खून-पसीने से सींचकर खड़ा किया है। मथुरा में बंदर खूब परेशान करते थे। मैं खाना बनाती। गुरुजी परोसने में मदद करते। हाथ में लाठी भी रखते और बंदरों को धकेलते रहते।'' ◈

''मथुरा में घर छोटा ही था। लैट्रिन-बाथरूम भी कम थे। कभी- कभी, कोई-कोई बहन अपने छोटे बच्चों को छत पर ही टट्टी-पेशाब करा देती। अक्सर हमें धुलाई करनी पड़ती थी। गुरुजी पानी डालते थे और मैं झाड़ू लगाती थी। कभी-कभी मैं पानी डालती और गुरुजी झाड़ू लगाते थे। झाड़ू की रगड़ से हाथों में छाले पड़ जाते और कभी-कभी खून भी आ जाता। बेटा, इस मेहनत और प्यार से हमने परिवार को जोड़ा है।'' ◈

गृहस्थ एक तपोवन है, जिसमें संयम, सेवा और सहिष्णुता की साधना करनी पड़ती है।

''मैं जल्दी-जल्दी घर का सब काम निपटा कर गुरुजी के काम में मदद करने तपोभूमि पहुँच जाती थी। गुरुजी को पत्र व्यवहार में भी मदद करती थी। मैं पत्र पढ़ती जाती और गुरुजी जवाब लिखते जाते।'' ◈

एक बार गोष्ठी में गुरुजी ने कहा, ''बेटा, तुम सब लोग परस्पर प्रणाम करते हो कि नहीं। रोज सुबह अपने पति के चरण स्पर्श किया करो।'' फिर भाईयों से बोले, ''तुम लोग भी पत्नी को प्रणाम किया करो। परस्पर एक दूसरे का सम्मान करना चाहिये। तुमको देखकर बच्चे स्वयं ही सीख जायेंगे।'' ◈

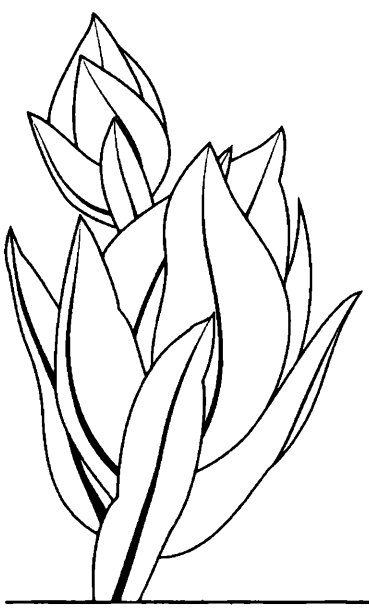
एक दिन गुरुजी ने किसी काम से अल्मारी खोली। उनकी अल्मारी में माताजी की तस्वीर रखी थी। गुरुजी पास बैठे कार्यकर्ता से बोले, ''बेटा, मैं माताजी को रोज प्रणाम करता हूँ। अपने सब कार्यों के लिये मैं माताजी से ही शक्ति लेता हूँ।'' ◈

जो व्यक्ति संध्या के डूबते हुए सूर्य को देखकर दुःखी होता है और प्रातःकाल के अरुणोदय पर विश्वास नहीं करता, वह नास्तिक है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपने अंग अवयवों से

परम पूज्य गुरुदेव द्वारा सूक्ष्मीकरण से पहले मार्च 1984 में लोकसेवी कार्यकर्ता-समयदानी-समर्पित शिष्यों को दिया गया महत्त्वपूर्ण निर्देश। यह पत्रक स्वयं परमपूज्य गुरुदेव ने सभी को वितरित करते हुए इसे प्रतिदिन पढ़ने और जीवन में उतारने का आग्रह किया था।



यह मनोभाव हमारी तीन उँगलियाँ मिलकर लिख रही हैं। पर किसी को यह नहीं समझना चाहिए कि जो योजना बन रही है और कार्यान्वित हो रही है, उसे प्रस्तुत कलम, कागज या उँगलियाँ ही पूरा करेंगी। करने की जिम्मेदारी आप लोगों की, हमारे नैष्ठिक कार्यकर्ताओं की है।

इस विशालकाय योजना में प्रेरणा ऊपर वाले ने दी है। कोई दिव्य सत्ता बता या लिखा रही है। मस्तिष्क और हृदय का हर कण-कण, जर्रा-जर्रा उसे लिख रहा है। लिख ही नहीं रहा है, वरन् इसे पूरा कराने का ताना-बाना भी बुन रहा है। योजना की पूर्ति में न जाने कितनों का-कितने प्रकार का मनोयोग और श्रम, समय, साधन आदि का कितना भाग होगा। मात्र लिखने वाली उँगलियाँ न रहें या कागज, कलम चुक जायें, तो भी कार्य रुकेगा नहीं; क्योंकि रक्त का प्रत्येक कण और मस्तिष्क का प्रत्येक अणु उसके पीछे काम कर रहा है। इतना ही नहीं, वह दैवी सत्ता भी सतत सक्रिय है, जो आँखों से न तो देखी जा सकती है और न दिखाई जा सकती है।

योजना बड़ी है। उतनी ही बड़ी, जितना कि बड़ा उसका नाम है- 'युग परिवर्तन'। इसके लिए अनेक वरिष्ठों का महान योगदान लगना है। उसका श्रेय संयोगवश किसी को भी क्यों न मिले?

प्रस्तुत योजना को कई बार पढ़ें। इस दृष्टि से कि उसमें सबसे बड़ा योगदान उन्हीं का होगा, जो इन दिनों हमारे कलेवर के अंग-अवयव बनकर रह रहे हैं। आप सबकी समन्वित शक्ति का नाम ही वह व्यक्ति है, जो इन पंक्तियों को लिख रहा है। कार्य कैसे पूरा होगा? इतने साधन कहाँ से आएँगे? इसकी चिन्ता आप न करें। जिसने करने के लिए कहा है, वही उसके साधन भी जुटायेगा। आप तो सिर्फ एक बात सोचें कि अधिकाधिक श्रम व समर्पण करने में एक दूसरे में कौन अग्रणी रहा?

साधन, योग्यता, शिक्षा आदि की दृष्टि से हनुमान उस समुदाय में अकिंचन थे। उनका भूतकाल भगोड़े सुग्रीव की नौकरी करने में बीता था, पर जब महती शक्ति के साथ सच्चे मन और पूर्ण समर्पण के साथ लग गए, तो लंका दहन, समुद्र छलाँगने और पर्वत उखाड़ने का, राम-लक्ष्मण को कंधे पर बिठाये फिरने का श्रेय उन्हें ही मिला। आप लोगों में से प्रत्येक से एक ही आशा और अपेक्षा है कि कोई भी परिजन हनुमान से कम स्तर का न हो। अपने कर्तृत्व में कोई भी अभिन्न सहचर पीछे न रहे।

काम क्या करना पड़ेगा? यह निर्देश और परामर्श आप लोगों को समय-समय पर मिलता रहेगा। काम बदलते भी रहेंगे और बनते-बिगड़ते भी रहेंगे।

आशा का प्रकाश लेकर चलने वालों के मार्ग को अंधकार स्वयं हटकर रास्ता देता चलता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आप लोग तो सिर्फ एक बात स्मरण रखें कि जिस समर्पण भाव को लेकर घर से चले थे, पहले लेकर आए थे (हमसे जुड़े थे), उसमें दिनों दिन बढ़ोत्तरी होती रहे। कहीं राई-रत्ती भी कमी न पड़ने पाये।

कार्य की विशालता को समझें। लक्ष्य तक निशाना न पहुँचे, तो भी वह उस स्थान तक अवश्य पहुँचेगा, जिसे अद्‌भुत, अनुपम, असाधारण और ऐतिहासिक कहा जा सके। इसके लिए बड़े साधन चाहिए, सो ठीक है। उसका भार दिव्य सत्ता पर छोड़ें। आप तो इतना ही करें कि आपके श्रम, समय, गुण-कर्म, स्वभाव में कहीं भी कोई त्रुटि न रहे। विश्राम की बात न सोचें, अहर्निश एक ही बात मन में रहे कि हम इस प्रस्तुतीकरण में पूर्णरूपेण खपकर कितना योगदान दे सकते हैं? कितना आगे रह सकते हैं? कितना भार उठा सकते हैं? स्वयं को अधिकाधिक विनम्र, दूसरों को बड़ा मानें। स्वयंसेवक बनने में गौरव अनुभव करें। इसी में आपका बड़प्पन है।

अपनी थकान और सुविधा की बात न सोचें। जो कर गुजरें, उसका अहंकार न करें वरन् इतना ही सोचें कि हमारा चिंतन, मनोयोग एवं श्रम कितनी अधिक ऊँची भूमिका निभा सका? कितनी बड़ी छलाँग लगा सका? यही आपकी अग्नि परीक्षा है। इसी में आपका गौरव और समर्पण की सार्थकता है। अपने साथियों की श्रद्धा व क्षमता घटने न दें। उसे दिन दूनी-रात चौगुनी करते रहें।

स्मरण रखें कि मिशन का काम अगले दिनों बहुत बढ़ेगा। अब से कई गुना अधिक। इसके लिए आपकी तत्परता ऐसी होनी चाहिए, जिसे ऊँचे से ऊँचे दर्जे की कहा जा सके। आपका अन्तराल जिसका लेखा-जोखा लेते हुए अपने को कृत-कृत्य अनुभव करे। हम फूले न समाएँ और प्रेरक सत्ता आपको इतना घनिष्ठ बनाए, जितना की राम पंचायत में छठे हनुमान भी घुस पड़े थे।

कहने का सारांश इतना ही है, आप नित्य अपनी अन्तरात्मा से पूछें कि जो हम कर सकते थे, उसमें कहीं राई-रत्ती त्रुटि तो नहीं रही? आलस्य-प्रमाद को कहीं चुपके से आपके क्रिया-कलापों में घुस पड़ने का अवसर तो नहीं मिल गया? अनुशासन में व्यतिरेक तो नहीं हुआ? अपने कृत्यों को दूसरे से अधिक समझने की अहंता कहीं छद्म रूप में आप पर सवार तो नहीं हो गयी?

यह विराट् योजना पूरी होकर रहेगी। देखना इतना भर है कि इस अग्नि परीक्षा की वेला में आपका शरीर, मन और व्यवहार कहीं गड़बड़ाया तो नहीं। ऊँचे काम सदा ऊँचे व्यक्तित्व करते हैं। कोई लम्बाई से ऊँचा नहीं होता; श्रम, मनोयोग, त्याग और निरहंकारिता ही किसी को ऊँचा बनाती है। अगला कार्यक्रम ऊँचा है। आपकी ऊँचाई उससे कम न पड़ने पाए, यह एक ही आशा, अपेक्षा और विश्वास आप लोगों पर रखकर कदम बढ़ रहे हैं। आप में से कोई इस विषम वेला में पिछड़ने न पाए, जिसके लिए बाद में पश्चात्ताप करना पड़े।

सत्पात्रों को मिलता रहेगा साधनात्मक मार्गदर्शन

कुण्डलिनी विधान सीखने के लिए किसी को भी आतुरता नहीं अपनानी चाहिए और न उसका कोई सिरा पकड़ कर पूर्णता तक पहुँचने की साध सँजोनी चाहिए। इस महान प्रयोग में से जितना जिसके लिए उचित और आवश्यक है, उतना सिखाते रहने की हमारी जिम्मेदारी कम से कम एक शताब्दी तक बनी रहेगी। उसे बताया और सिखाया जाता रहेगा। स्थूल शरीर न रहने पर भी हमारी सूक्ष्म सत्ता अपने सामयिक दायित्वों का निर्वाह भली प्रकार करती रहेगी। किसी सत्पात्र को ये अनुभव न होने दिया जाएगा कि सिखाने वाले के अभाव में हमारी आत्मिक प्रगति की उचित आवश्यकता कुण्डलिनी जागरण का विधान न मालूम होने के कारण पूरी न हो सकी।

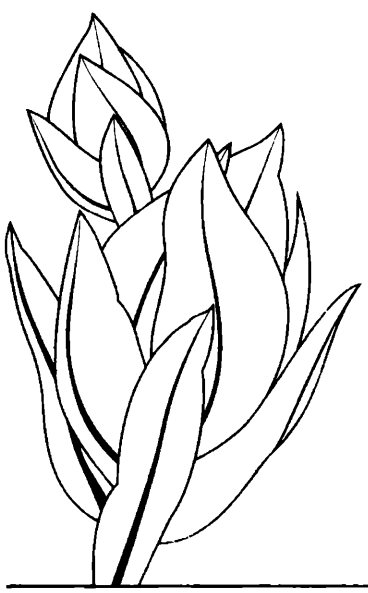
-अखंड ज्योति, जनवरी 1987, पृष्ठ - 65

सबकुछ अपने तथा अपनों के लिए चाहने वाला स्वार्थी व्यक्ति समाज का चोर है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपना परिवार उच्च आत्माओं का भाण्डागार

युग निर्माण मिशन एक ऐसा संगठन है, जिसे स्रष्टा ने गढ़ा है। पूज्यवर कहते थे तुम सबको माताजी उस काया से एक साथ जन्म नहीं दे सकती थी, इसलिए अलग-अलग घरों में जन्म देकर तुमको एकत्र कर दिया है। यही है हमारा गायत्री परिवार। गुरुसत्ता की लेखनी से लिखा एक विशेष लेख पढें..



जब कालचक्र घूमता है, तब होता है मानस मंथन। अंतर्जगत में छिपी-दुबकी बैठी महानताएँ मारती हैं ऊँची उछाल, तभी व्यक्ति स्वार्थी सीमाओं को लाँघकर आ खड़ा होता है, परमार्थी प्रयोजन के लिए। इस युगसंधि बेला में सामान्य से लेकर एक-एक बड़ी प्रतिभा थामे हैं- प्रज्ञायुग की लाल मशाल। महाकाल ने इन्हें कैसे जुटाया और कैसे उठा रहा है, ये साहसपूर्ण कदम? इसी का उल्लेख है इन पंक्तियों में।

युग परिवर्तन एक बहुत बड़ा प्रयोजन है। उसके लिए तदनुरूप बड़े साधनों एवं उपकरणों की भी अवाश्यकता होगी। यह साधन उत्कृष्ट स्तर के व्यक्तियों के रूप में अभीष्ट होंगे। संसार का भावनात्मक परिवर्तन करने के लिए भावनाशील-श्रद्धा और सद्भावना के धनी व्यक्तियों की आवश्यकता पड़ेगी। इन दिनों वही सब जुटाया जा रहा है। विभिन्न क्षेत्रों, विभिन्न क्षमता सम्पन्न ऐसे व्यक्तियों का इन दिनों सृजन हो रहा है, जो आगे चलकर युग-निर्माताओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका बड़ी खूबी से सम्पादन कर सकें।

यह एक विचित्र और विलक्षण रहस्य है कि जन्मजात रूप से तो महामानव कोई विरले ही-यदाकदा ही उत्पन्न होते हैं, शेष तो बीच में से ही उस महाकाल की दृष्टि में आते हैं और देखते-देखते कुछ से कुछ बन जाते हैं। पूर्ण अवतारों की बात जाने दीजिए, मध्यावतार अक्सर जीवन के किसी मध्यकाल मैं उन्हें अपनी भुजाओं में कस लेते हैं और देखते-देखते वे कुछ से कुछ बन जाते हैं।

बुद्ध जन्मजात अवतार नहीं थे। यदि होते तो उन्हें आरम्भ से ही अपने उद्देश्य का ज्ञान होता और विवाह करने, बच्चा उत्पन्न करने और उन्हें बिलखता छोड़ने की भूल न करते। गाँधी जी जन्मजात अवतार नहीं थे। यदि होते तो उनको लगभग तीस वर्ष तक की आयु तक इधर-उधर भटकना न पड़ता। रामायण के पात्रों में हनुमान, अंगद, सुग्रीव, जामवन्त, जटायु आदि की भूमिकाएँ बड़ी महत्त्वपूर्ण हैं। पर वे लोग यदि जन्मजात महापुरुष होते, तो उनका जीवन क्रम आरम्भ से ही निर्धारित दिशा में चल रहा होता। वाल्मीकि, अँगुलिमाल, अम्रपाली, सूरदास, सम्राट अशोक आदि के जीवन आरम्भ में कलुषित ही तो थे। अगणित सन्त, महात्माओं एवं महापुरुषों के जीवन क्रम ऐसे ही हैं जिन्हें ध्यानपूर्वक देखने से स्पष्ट होता है कि वे जन्मजात रूप से कोई महानता लेकर नहीं आए थे। जीवन का बहुत बड़ा भाग उन्होंने निरर्थक अथवा अस्त-व्यस्त गँवाया। समयानुसार उनकी अन्तः-चेतना ने पलटा खाया, दिशा बदली और फिर वे कुछ से कुछ हो गये। इससे

किसी आदर्श के लिए, सिद्धान्त की रक्षा के लिए हँसते-हँसते जीवन का उत्सर्ग कर देना सबसे बड़ी बहादुरी है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

प्रकट होता है कि महानता का कोई पूर्व संचित कण यदि अन्त:करण में विद्यमान है, तो वह कभी भी प्रतिफलित हो सकता है। महाकाल की एक दृष्टि किरण उसका कायाकल्प कर सकती है। गर्मी के दिनों मे घास सूख जाती है; पर वर्षा आते ही उसकी सूखी जड़े फिर हरी हो जाती हैं और घास की बेल देखते ही देखते भूमि को हरीतिमा से ढक देती है।

अनेक महात्माओं में पूर्व जन्मों की महानता प्रचुर मात्रा में विद्यमान रहती है। आवश्यक नहीं कि वह जन्मते ही प्रकट हो जाए। ऐसे महामानव आरम्भिक जीवन में सामान्य स्तर की नगण्य जैसी महत्त्व की गतिविधियों में रहते देखे जाते हैं; पर जैसे ही उपयुक्त अवसर आता है साहसपूर्वक अपनी पूर्व भूमिका में परिणत, परिवर्तित हो जाते हैं। इस दुस्साहस में ही इतनी महानता छिपी रहती है।

महाकाल का प्रबुद्ध आत्माओं में अवतरण स्वाति बूँद की तरह होता है, जिससे साधारण दीखने वाली सीपी को अपने गर्भ से महान मोती उगाने का सौभाग्य मिलता है। इस अनुग्रह से सामान्य व्यक्तित्व देखते-देखते महान हो जाता है।

यह एक प्रकट रहस्य है कि समुद्र मंथन करके चौदह रत्न ढूँढ़ निकालने की तरह उन आत्माओं को तलाश कर लिया गया है, जो पिछले युगों में महाकाल का पुण्य प्रयोजन पूरा करने में शानदार भूमिका सफलतापूर्वक प्रस्तुत करती रही हैं। जब आवश्यकता पड़ी है महाकाल ने उन्हें सेवानिवृत सैनिकों की तरह युद्धकाल की आवश्यकताओं को देखते हुए पुकार बुलाया है और वे खुशी-खुशी अपने चारों ओर बिखरे हुए मकड़ी के जाले जैसे जाल-जंजालों को तोड़-मरोड़ कर उस पुकार को पूरा करने के लिए उपस्थित होते रहे हैं। जिन्होंने अतीत में अपने-अपने समय पर महामानव, युगपुरुष, लोकनायक और वीर बलिदानी बनने का महानतम गौरव प्राप्त किया है, वे उस अनुपम-अलौकिक-आनन्द का रसास्वादन जानते हैं, अतएव जब अवसर आता है, तब उस सुअवसर का लाभ उठाने के लिए सबसे आगे आ जाते हैं। महारास में कृष्ण की वंशी सुन कर गोपियाँ अपना लौकिक जाल-जंजाल छोड़ कर उस अमृत का रसास्वादन करने को दौड़ पड़ी थीं। इस रहस्य की अब पुनरावृति होने जा रही है। नव निर्माण का कठिन कार्य एक प्रकार का धर्मयुद्ध है। इसमें प्रवृत होने की शंख ध्वनि से जब दिशाएँ गुँजन करने लगीं तो प्रबुद्ध आत्माओं के लिए भीरुता धारण किए रहना कठिन है। उन्हें अपने जाल-जंजाल तोड़ कर उस महान आह्वान की पूर्ति में संलग्न होना ही होगा।

इस संध्याकाल में सभी उच्च आत्माएँ महाकाल का पुण्य प्रयोजन पूर्ण करने के लिए उसी तरह विद्यमान हैं जिस प्रकार सभी ऋषि, मुनि वनवासी अपने निकटवर्ती जलाशय पर संध्यावंदन करने के लिए एकत्रित हो जाते हैं या विवाह, शादी जैसे उत्सवों में सभी कुटुम्बी संबंधी जमा होते हैं। युग परिवर्तन ऐसा ही अवसर है, इसमें अनादि काल से लेकर अब तक की प्राय: सभी प्रबुद्ध आत्माएँ मनुष्य शरीरों में विद्यमान हैं। विश्वामित्र, अत्रि, कपिल, कण्व, व्यास, वशिष्ठ, भारद्वाज, याज्ञवल्क्य, गौतम, नारद, लोमश, महावीर, बुद्ध, शंकराचार्य, कुमारिल आदि ऋषि, विवेकानन्द, रामतीर्थ, रामदास, तुकाराम, एकनाथ, ज्ञानेश्वर, कबीर, नानक, रैदास, रामकृष्ण परमहंस, सूर, तुलसी, आदि सन्त, अर्जुन, द्रोण, भीष्म, कर्ण आदि योद्धा, चाणक्य, शुक्राचार्य, आदि नीतिज्ञ, हरिश्चन्द्र, शिवि, दधीचि, मोरध्वज, कर्ण, भामाशाह, जैसे उदार परोपकारी, अनुसुईया, मदालसा, कुन्ती, द्रोपदी, सुभद्रा, सत्यवती, मैत्रेयी, गार्गी, भारती, दुर्गावती, मीरा लक्ष्मीबाई, अम्बपाली, शबरी, अहिल्याबाई,सारन्धां आदि जैसी देवियाँ, अभिमन्यु, ध्रुव, प्रह्लाद, फतेसिंह, जोरावर, जैसे वीर बालक इन दिनों मौजूद हैं। वे साधारण जीवन व्यतीत कर रहें हैं। अभी वे साधारण स्थिति में हैं; पर अगले ही दिनों उनको असाधारण बनते देर न लगेगी। लोग आश्चर्य करेंगे कि कल का साधारण समझा जाने वाला व्यक्ति आज इतना असाधारण-इतना महान् कैसे बन गया यह सब महाकाल का युग-निर्माण प्रत्यावर्तन-महारास का दिव्यदर्शन जैसी ही अद्‌भुत घटना होगी।

नव निर्माण की सीमा केवल भारत ही नहीं सारा विश्व है। किन्तु यह कार्य आरम्भ भारत से हो रहा है। कारण कि इस परिवर्तन का आधार अध्यात्म है। भारत अध्यात्म की मातृभूमि है।

शरीर हृष्ट-पुष्ट हो, हृदय उदार हो, मन प्रसन्न और बुद्धि निर्विकार हो, तभी जीवन का समुचित विकास संभव हो सकता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

इसलिए इस प्रकार का श्रीगणेश यहीं से हो सकता है। यह शुभारम्भ अवश्य गीता नायक भगवान् कृष्ण की जन्मभूमि से हो रहा है, पर उसका क्षेत्र व्यापक है।

यह प्रकाश विश्व के कोने-कोने में पहुँचाना है और सारी दुनिया को ही मानवता के उच्च आदर्शों को अपनाने के लिए प्रशिक्षित करना है। अस्तु, इस अभियान को विश्व आन्दोलन ही कहना चाहिए। इस प्रयास में विश्व भर की सभी आत्माओं का योगदान रहना है। अतएव वे भी भारत भूमि में ही इन दिनों अवतरित हो रही हैं। कुछ के जन्म हो चुके, कुछ के होने वाले हैं। विश्व के सभी धर्मों के देवदूतों का आगमन हो रहा है। समय पर जिनने विश्व की राजनैतिक, सामाजिक, नैतिक, बौद्धिक, आर्थिक परिस्थितियों को सुधारने के लिए अपने ढंग से मानव जाति की महत्त्वपूर्ण सेवा की है, ऐसी अनुभवी, प्रशिक्षित और परखी हुई आत्माएँ फिर से अवतरित हो रही हैं।

जो जन्म ले चुकीं, वे समय पर अपना आवरण हटा कर प्रकट होंगी। जिनका जन्म नहीं हुआ, वे घर ढूँढ़ रहीं हैं। कई आत्माएँ उपयुक्त नर-नारियों के रजवीर्य में प्रवेश कर चुकी हैं और अवसर मिलने पर वे जन्म धारण कर लेंगी। इस दृष्टि से कुछ ही समय में भारत महापुरुषों की एक रत्नराशि के रूप में अपना अस्तित्व प्रकट करेगा। गायत्री परिवार के सदस्यों में ऐसी अनेक उच्चस्तरीय आत्माएँ विद्यमान हैं। वे जब कभी अपने बारे में विचार करती हैं, तो उन्हें स्पष्ट विदित होता है कि वे साधारण नहीं, असाधारण हैं। इन दिनों उनकी आत्मा जोरों से कोंच रही है और निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप कोई साहसपूर्ण कदम बढ़ाने के लिए जोरदार धक्के देकर विवश कर रही है। अपने परिवार में ऐसी अनेक आत्माओं को नव-निर्माण के लिए ऐतिहासिक भूमिका प्रस्तुत करते हुए देखा जाए, तो उसे आश्चर्य नहीं स्वाभाविक मानना चाहिए। क्योंकि वे साधारण परिस्थितियों में पड़े हुए तो हैं, पर वस्तुतः साधारण नहीं हैं। समय आने पर वे साहसपूर्वक आगे बढ़ेंगे और अपने अवतरण उद्देश्य को पूरा करेंगे। ◈

एक बार ईसा मसीह और उनके शिष्य तीर्थयात्रा पर निकले। रास्ते में शिष्यों ने ईसा मसीह से पूछा कि प्रभु आपको तो सब पूजते हैं, हमें भी महान् बना दो। ईसा मसीह थोड़ा गंभीर हुए बोले! तुम लोगों को महान् तो बना दूँ लेकिन एक समस्या है, इसके लिए तुम लोगों को तिनका बनना होगा। क्या तुम तिनके के समान हलका बनने के लिए तैयार हो? शिष्य ईसा मसीह के इन दिव्य वचनों को सुन हैरानी भरी निगाहों से उनकी ओर देखने लगे। एक शिष्य ने जिज्ञासा की- प्रभु तिनके समान हल्का बनने का क्या अर्थ है?

ईसा मसीह ने शिष्य की जिज्ञासा का समाधान करते हुए कहा-"महानता का रहस्य व्यक्ति के अहंकार में छिपा है। जब तक व्यक्ति एक बीज की तरह गलने के लिये तैयार नहीं हो तो क्या वह वृक्ष बन सकता है?" शिष्य ने कहा नहीं। तभी एक दूसरे शिष्य ने जिज्ञासा की- परंतु प्रभु बीज की तरह गलने का रहस्य समझ में नहीं आया।

ईसा मसीह ने उत्तर दिया- जो गलता नहीं है वह वृक्ष नहीं बनता, नष्ट हो जाता है। महान बनने के लिये गलना पड़ता है। अपने अहं को तिरोहित कर चित्त को हल्का करना पड़ता है। तिनका हल्का होता है, तभी हवा के झोंके के साथ आसमान चूमता है। यही महानता का राजमार्ग है।

जो लोग सामाजिक जीवन में विषमताएँ पैदा कर रहे हैं, वे दुःखी, पीड़ित और दलित आत्माओं के अभिशाप से बच नहीं सकते।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आचार्यश्री की-समय साधना

काम के आगे उन्होंने भोजन को भी कभी महत्त्व नहीं दिया। कभी-कभी काम के सिलसिले में कार्यकर्ता ऐसे समय भी पहुँच जाते, जब वे भोजन कर रहे होते। गुरुजी भोजन करना बीच में ही छोड़कर पूछते, "बताओ क्या काम है?" वह चुप रहता, नहीं बताता तो भी खाना बीच में ही छोड़कर उठ जाते। कहते, "अच्छा चलो।" और साथ में चल देते। गुरुजी एक पल भी नष्ट नहीं करते थे। एक दिन सुबह-सुबह ही उन्होंने कुछ भाइयों को बुलाया, और बोले, "बच्चों, आज मैंने कुछ लिखा नहीं। मुझे रात को बुखार आ गया था। प्रणव से गोली भी ले ली, पर कुछ हुआ नहीं, नींद भी नहीं आ रही थी। तो मैंने सोचा क्या करूँ? लेटे-लेटे मैंने दो-चार साल की भविष्य की योजना ही बना डाली। देखो, कागज पर नोट कर दी है। उस योजना को बताने और समझाने के लिए ही मैंने गोष्ठी बुलाई है।"

एक दिन वे बोले, "मैं रात को 12 बजे उठा। आज मेरे पास लिखने को कुछ नहीं था, पर फिर भी अपनी कुर्सी पर बैठ गया। जब तक मुझे लिखना होता है, तब तक मैं बैठा रहा। मेरी पलकें बता रही थीं कि कितनी भारी हैं, फिर भी मैं सोया नहीं। कारण, यह मन बड़ा शैतान है, सो जाता, तो कल फिर सोने को कहता, इसलिए मैं उठकर अपनी कुर्सी पर बैठ गया। बेटा, इसी प्रकार मन पर आरूढ़ रहना चाहिये।"

एक बार गुरुजी ने सुबह-सुबह ही गोष्ठी बुलाई और बोले, "रात को मुझे नींद नहीं आ रही थी, हल्का सा बुखार भी लग रहा था। लेटे-लेटे सोचता रहा, और मैंने प्रज्ञा पुराण के एक खण्ड का प्रारूप बना लिया। देखो, बढ़िया है न। योजना भी बना डाली है। इसे चार खण्डों में निकालेंगे। अच्छा! अब चार दिन सुबह-सुबह मेरे पास मत आना। तुम लोगों को चार दिन का काम आज ही बता देता हूँ।" उन्होंने सबको काम बताया, और बोले, "तुम लोग जाते-जाते बाहर से ताला लगा देना।"

चार दिन में उन्होंने प्रज्ञा पुराण के सब श्लोक लिख डाले, और हम लोगों को यह कहकर सौंप दिया, अब इसमें कहानियाँ जोड़ देना। इस प्रकार प्रज्ञा पुराण तैयार हो गया।

किसी कारणवश एक क्षण भी यदि खाली हो तो गुरुजी उसके भी सदुपयोग की बात सोचते। एक दिन एक सज्जन उनसे मिलने आने वाले थे। गुरुजी उनका इंतजार कर रहे थे। उनको देर हो गई तो गुरुजी ने सोचा, कोई और काम नहीं है तो चलो, भोजन ही कर लेते हैं। उन्होंने माताजी को फोन किया "माताजी, भोजन करने आ जाऊँ।"

माताजी बोलीं, "अभी तो एक ही बजा है!" गुरुजी 3:00-4:00 बजे तक भोजन करते थे। बोले, "अच्छा! अभी एक ही बजा है क्या? अच्छा! अच्छा! ठीक है।"

गुरुजी के पास जाते तो कभी-कभी वे लेख लिख रहे होते। कार्यकर्ता चुप-चाप जाकर खड़े हो जाते और उनका लेखन पूरा होने का इंतजार करते। लेख पूरा हो जाने पर जब नज़र उठा कर गुरुजी देखते तो कहते, "अरे! कब से खड़े हो? बोल देते! तुम्हारा इतना समय बरबाद नहीं होता।" गुरुजी, "आप लिख रहे थे। आपको डिस्टर्ब होता।" "अरे! मैं बाद में भी लिख लेता।" इस प्रकार वे दूसरों के समय को भी महत्त्व देते थे।

समय ही जीवन है, समय ही उत्कर्ष है, समय ही उच्चतम शिखर तक चढ़-दौड़ने का सोपान। महाकाल का जो स्वरूप समझ सका है उसी को मृत्युंजयी बनने का सौभाग्य मिला है। और किसी के साथ भी मखौल किया जा सकता है, पर महाकाल के साथ नहीं। समय के दुरुपयोग की भूल अपने भाग्य और भविष्य को ठुकराने-लतियाने की तरह है। जो समय गँवाता है, वह प्रकारांतर से अपने उत्कर्ष और आनंद का द्वार ही बंद करता है।

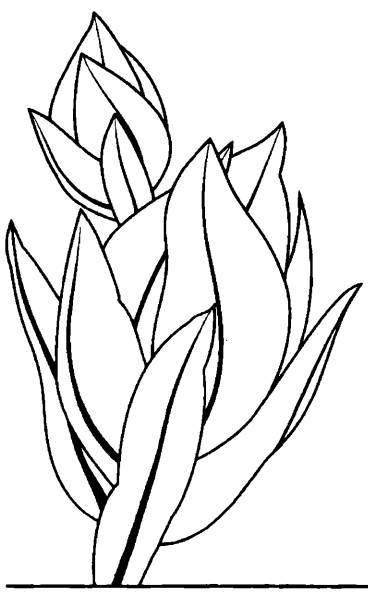
समय का सदुपयोग, पृष्ठ 8-9

शुभ, सात्विक और आशापूर्ण विचार एक ऐसा किला है, जिसमें मनुष्य हर प्रकार के आवेगों और आघातों से मुक्त रह सकता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विभूतियों का भावभरा आह्वान

समय बोलता है, समय पुकारता है। जब आवश्यकता पड़ती है, तो उसे पुकारना ही पड़ता है। उसकी पुकार सब कहाँ सुन पाते हैं, प्राणवान् विभूतियाँ ही उसकी पुकार सुन पाती हैं। आज भी समय पुकार रहा है विभूतियों को ! आइए! विश्व विभीषिकाओं से जूझने वाले 'महाकाल' के संगी-साथी बनकर, विश्व-मानव की सेवा करें और श्रेयाधिकारी बनें...



विभूतियों को सात भागों में विभक्त कर सकते हैं। 1. भावना, 2. शिक्षा-साहित्य, 3. कला, 4. विज्ञान, 5. सत्ता, 6. सम्पदा, 7, प्रतिभा। इन सातों के सदुपयोग से ही व्यक्ति और समाज का कल्याण होता है।

1. भावना (धर्म एवं अध्यात्म) : व्यक्तित्व को उत्कृष्ट और गतिविधियों को आदर्श बनाने की अन्त:प्रेरणा को भावना कहा जाता है। धर्म धारणा और अध्यात्म साधना के समस्त कलेवर को इसी प्रयोजन के लिए खड़ा किया गया है। युग निर्माण योजना ने बताया है कि चरित्र गठन का नाम धर्म और अपनी क्षमताओं को लोक मंगल के लिए समर्पित करने की पृष्ठभूमि का नाम अध्यात्म है। भावनाओं को कल्पनालोक में नहीं उड़ते रहना चाहिए वरन् उन्हें अपने तथा समाज के समग्र निर्माण में संलग्न होना चाहिए। यही उनका वास्तविक प्रयोजन भी है।

धर्म की प्राचीनता और दार्शनिकता से प्रभावित लोगों को कहा जा रहा है कि अपने सम्प्रदाय की संख्या बढ़ाने में धर्म परिवर्तन के अति उत्साह में शक्तियों का अपव्यय न करें। हमारा सतत प्रयास है- सब धर्मों में परस्पर सहिष्णुता और समन्वय की प्रवृत्ति उत्पन्न करना। वे अपने स्वरूप को भले ही बनाए रहें पर विश्व धर्म के घटक बनकर रहें और अपने प्रभाव को चरित्रगठन एवं परमार्थ प्रयोजन में ही नियोजित करें। धर्म और अध्यात्म क्षेत्र में लगी प्रचुर पूँजी, जनशक्ति और प्रभावशीलता को भविष्य में निहित स्वार्थों के पोषण के लिये प्रयुक्त नहीं होते रहने देना चाहिए।

राजतंत्र में उसकी शक्ति सृजनात्मक दिशा में लगनी चाहिए, भावनाशील लोग न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति से सन्तुष्ट रहकर अपनी भौतिक एवं आत्मिक क्षमताओं का उपयोग मानव जाति के लिए समर्पित कर दें, तो नि:संदेह सर्वोत्तम युग साधना होगी और उसका सत्परिणाम प्रत्यक्ष परिलक्षित होगा।

2. शिक्षा एवं साहित्य : व्यक्ति की समस्त गरिमा उसकी मन:स्थिति पर, विचार प्रक्रिया पर निर्भर है। इस जीवन प्राण के मर्मस्थल को शिक्षा एवं साहित्य के माध्यम से ही परिष्कृत बनाया जा सकता है। सरकारों को अपने ढंग से काम करने देना चाहिए। वर्तमान वातावरण में उनके लिए कठिन ही है कि वे नये युग के अनुरूप मस्तिष्क ढालने वाली शिक्षा पद्धति के बारे में सही ढंग से कुछ सोच सकें और वैसा ही कुछ सही कदम उठा सकें।

सरकारें भौतिक जानकारियाँ देने वाली जो शिक्षा प्रक्रिया चला रही हैं, उससे लाभ उठाना चाहिए; किन्तु भाव परिष्कार की पूरक-धर्म शिक्षा, नैतिक शिक्षा, भावनात्मक नव निर्माण की शिक्षा पद्धति का संचालन आम स्तर पर भी होना चाहिए।

भौतिक दृष्टि से सुखी- संपन्न बन जाने पर भी यदि मनुष्य उद्देश्य विहीन और आदर्श रहित बना रहे, तो वह अपने लिए संतोष और गौरव प्राप्त न कर सकेगा।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रौढ़ शिक्षा का कार्य भी जनता को अपने हाथ में लेना चाहिए। ये सरकारी स्तर पर नहीं, जन स्तर पर ही हल हो सकती हैं। विवाहित महिलाओं की शिक्षा का प्रबन्ध सरकारी विद्यालय कर सकेंगे, यह आशा रखना व्यर्थ है। दृष्टिकोण परिष्कार, आज की परिस्थितियों में चरित्र निर्माण का व्यवस्थित पथ समाज संरचना की अगणित समस्याएँ और हल, विश्व परिवार के लिए बाध्य करने वाले प्रचण्ड वातावरण का निर्माण, यह सब प्रयोजन, जन स्तर के विद्यालय ही पूरा कर सकेंगे।

लोकशिक्षण की महती आवश्यकता पूरी कर सकने वाले विद्यालय हर गाँव और हर मुहल्ले में स्थापित हो सकते हैं और सफलतापूर्वक चल सकते हैं। अब यह युग धर्म समझा जाना चाहिए और सोचने तक ही सीमित न रहकर इसकी स्थापना और संचालन के लिए कटिबद्ध होना चाहिए। हम अगले दिनों इसकी प्रचण्ड प्रेरणा भरने के लिए अपने प्रखर आत्मबल का प्रयोग करने जा रहे हैं।

साहित्यकारों से इसी दिशा में लेखनी उठाने के लिए कहा जा रहा है। कवियों से मूर्छित जनता को जागृति में परिणत कर सकने वाले अग्नि गीत लिखने के लिए कहा गया है।

पत्रकार अपने पत्रों में, पत्रिकाओं में इस प्रकार के समाचारों और लेखों को स्थान देना आरम्भ करें, प्रकाशक ऐसी ही पुस्तकें छापें। संसार में लगभग 600 भाषाएँ है। भारत में ही सरकारी मान्यता प्राप्त 17 भाषाएँ है और इससे कई गुनी संख्या उन भाषाओं की है, जिन्हें मान्यता प्राप्त नहीं हैं इन सभी भाषाओं में प्रचुर साहित्य लिखा जाना, अनूदित किया जाना, छापा जाना और विक्रय किया जाना आवश्यक है। मात्र लेखक नहीं, प्रकाशक भी जब इस क्षेत्र में उतरेंगे, तो उनके परस्पर सहयोग समन्वय से कुछ काम चलेगा। इस दिशा में प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से उपयुक्त व्यक्तियों को प्रेरणा दी जानी है, दी भी जा रही है।

3. कलामंच से भाव स्पन्दन : कलामंच में चित्र, मूर्तियाँ, नाटक, अभिनय, संगीत आदि आते हैं। संगीत विद्यालय हर जगह खुलें, सरल संगीत के ऐसे पाठ्यक्रम हों जो वर्षों में नहीं, महीनों में सीखे जा सकें। प्रचण्ड प्रेरणा भरे गीतों का प्रचलन-प्रसारण इन विद्यालयों द्वारा हो और प्रत्येक हर्षोत्सव पर प्रेरक गायनों की ही प्रधानता रहे। अग्नि गीतों की पुस्तिकाएँ सर्वत्र उपलब्ध रहें।

"आन्तरिक दुष्प्रवृत्तियों से लेकर प्रकृतिगत विषाणु एवं आस पास विचरने वाले सहज दृष्टि से न दिखने वाले दुष्ट हमारे ऊपर टूट पड़ेगें। उनसे निपटने का साहस तथा उन्हें नष्ट, निरस्त करने की तत्पर क्षमता हमारे अन्दर होनी चाहिए। उसे भी अपना आवश्यक धर्म मानकर चलना चाहिए।"

अस्पताल की चारपाई पर पड़े-पड़े वाल्टेयर ने अपने महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना की थी। कालिदास और वरदराज की मस्तिष्कीय क्षमता कितनी उपहासास्पद थी, इसकी जानकारी सभी को है, पर वे जब नया उत्साह समेटकर नए सिरे से विद्या पढ़ने में जुटे, तो मूर्धन्य विद्वानों में गिने जाने लगे। व्यक्ति की अन्तःचेतना, जिसे प्रतिभा भी कहते हैं, इतनी सबल है कि अनेकों अभावों और व्यवधानों को रौंदती हुई, वह उन्नति के उच्च शिखर तक जा पहुँचने में समर्थ होती है।

प्रतिभा वस्तुतः वह सम्पदा है, जो व्यक्ति की मनस्विता, ओजस्विता, तेजस्विता के रूप में बहिरंग में प्रकट होती है। आदर्शवादी प्रयोजन, सुनियोजन, व्यवस्था और साहस भरी पुरुषार्थ-परायणता को यदि मिला दिया जाए तो उस गुलदस्ते को प्रतिभा कहा जाएगा। यदि प्रसुप्त को उभारा जा सके, स्वयं को खराद पर चढ़ाया जा सके, तो व्यक्ति असम्भव को भी सम्भव बना सकता है। यह अध्यात्म-विज्ञान का एक सुनिश्चित सिद्धान्त एवं अटल सत्य है।

ईश्वर उपासना करने वाले व्यक्ति का श्रम और समय कभी व्यर्थ नहीं जा सकता। उसे आशाजनक सत्परिणाम प्राप्त होकर रहते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

चित्र प्रकाशन अपने आप में एक बड़ा काम है। कैलेण्डर तथा दूसरे चित्र आजकल खूब छपते-बिकते हैं उनमें प्रेरक प्रसंगों को जोड़ा जा सके, तो जनमानस को मोड़ने में भारी सहायता मिल सकती है। आदर्शवादी चित्र प्रकाशन की योजना सामने हो, तो चित्रकार उस तरह की तस्वीरें और भी अधिक प्रसन्नतापूर्वक बना देंगे। पुस्तकालयों की, चल पुस्तकालयों की तथा झोला पुस्तकालयों की योजना को छोटे रूप में अपना परिवार चला भी रहा है। इसे व्यापक और विस्तृत बनाया जाना चाहिए। स्थान-स्थान पर पुस्तकालय खुलने चाहिए। पुस्तक विक्रय के लिये चल पुस्तकालयों को व्यावसायिक रूप मिल सकता है।

यन्त्रीकरण और कला का समन्वय होने से ग्रामोफोन रिकॉर्ड, टेपरिकार्डर तथा फिल्म सिनेमा के नए प्रभावशाली माध्यम सामने आए हैं, उनका सदुपयोग होना चाहिए। चित्र प्रदर्शनियों के उपयुक्त बड़े साइज के चित्र छपने चाहिए। यों शुरूआत दस रिकॉर्डों से की गयी थी, पर अभी उसे सभी भाषाओं के लिए, सभी प्रयोजनों के लिए उपयुक्त बनाने में बड़ी शक्ति, पूँजी लगानी पड़ेगी। इस प्रकार फिल्म निर्माण का कार्य हाथ में लेना होगा। यदि यह उद्योग विवेकवान और दूरदर्शी हाथों में हों और वे उसका उपयोग जन-मानस को परिष्कृत करने तथा नवयुग के अनुरूप बनाने में कर गुजरें, तो उसका आश्चर्यजनक परिणाम सामने आ सकता है।

4. विज्ञान : विज्ञान की उपलब्धियाँ आश्चर्यजनक हैं, उसने मानवी सुख-सुविधाओं में आश्चर्यजनक अभिवृद्धि की है, पर यह भी सही है कि उसके दुरुपयोग से होने वाली हानियाँ भी कम नहीं उठानी पड़ रही हैं। अस्त्रों के उत्पादन में विशेषतया गैसें, किरण एवं अणु विस्फोट जैसे अस्त्रों ने तो अस्तित्व को ही संकट में डालने की विभीषिका उत्पन्न कर दी है, यदि यह शोध, आविष्कार, सृजनात्मक प्रयोजनों तक ही सीमित रहे, तो उसका प्रतिफल धरती पर स्वर्गीय परिस्थितियाँ उत्पन्न कर सकता है।

जमीन के नीचे बहने वाली विशाल नदियों को धरती पर लाया जा सकता है और सारी दुनिया सचमुच शस्य-श्यामला बन सकती है। कृषि, पशुपालन, बागवानी, वन-सम्पदा, स्वास्थ्य संवर्द्धन और मस्तिष्कीय विकास की दिशा में विज्ञान को अभी बहुत काम करना बाकी है।

प्रकृति के प्रकोपों से लोहा लेने के साधन जुटाने में अतिवृष्टि, अनावृष्टि, महामारी, भूकम्प, बाढ़-तूफान, शीत-ताप की असहनीयता का सामना करने योग्य शक्ति का उपार्जन हो सकता है। वाहनों को सरल एवं सस्ता बनाया जा सकता है, संचार साधनों के विस्तार की अभी बहुत गुँजाइश है।

सबसे बड़ा काम विज्ञान को यह करना है कि वह अध्यात्म के साथ अपनी संगति बिठाए और सिद्ध करे कि शक्ति जड़ पदार्थ की अणुसत्ता एवं ऊर्जा में नहीं वरन् चेतना के संकल्पों में, आत्मबल में सन्निहित है। पिछले दिनों अखण्ड ज्योति पत्रिका के माध्यम से विज्ञान और अध्यात्म का सम्बन्ध समन्वय प्रतिपादित किया भी जाता रहा है, अब उसे और भी अधिक स्पष्ट एवं प्रत्यक्ष करना पड़ेगा।

5. शासन तंत्र : राजसत्ता जिनके हाथ में इन दिनों है अथवा अगले दिनों आने वाली है उन्हें संकीर्ण राष्ट्रीयता के अपने प्रिय क्षेत्र या वर्ग के लोगों को ही लाभान्वित करने की बात छोड़कर समस्त विश्व की समान रूप से सुख-शान्ति की बात सोचनी चाहिए और समस्त संसार को एक परिवार की नीति अपनाकार प्रकृति प्रदत्त साधनों एवं मानवी उपार्जन को समान रूप से सर्वसाधारण के लिए उपलब्ध कराना होगा।

युद्धों की भाषा में सोचना बन्द कर न्याय का आधार स्वीकार करना होगा। वर्ग भेद और वर्ण भेद की जड़ें उखाड़नी होंगी। इसके लिए सत्ता संचालकों और शासकीय कर्मचारियों में बेतरह घुसी हुई स्वार्थपरता एवं अनैतिकता को जड़ मूल से उखाड़ना होगा। इसके लिए प्रजातांत्रिक देशों के वोटरों को अनेक कर्त्तव्य विशेष रूप से समझाने होंगे, ताकि वे सुयोग्य प्रतिनिधि चुनने और श्रेष्ठ सरकार प्राप्त करने में सफल हो सकें।

6. सम्पदा : विभूतियों में इन दिनों सर्वोपरि मान्यता पूँजी को मिली है। धन का वर्चस्व सर्वविदित है। सम्पत्ति में स्वयं कोई दोष नहीं। दोष उसके दुरुपयोग में है। अगले दिनों आर्थिक समता के आधार पर ही समाज व्यवस्था बनेगी। सामर्थ्य भर श्रम

असंयम और अनियमितताओं की कुल्हाड़ी चलाकर शरीररूपी मंदिर तोड़फोड़ डालने वाला मनुष्य धर्मात्मा नहीं हो सकता।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

एवं आवश्यकता भर साधन प्राप्त करने के ही क्रम चलें, तब सम्पदा पर व्यक्ति का नहीं, समाज का अधिकार होगा।

इस समय उचित तो यह है कि सम्पत्तिवान् लोग इस तथ्य को समझें तथा अपने धन का उपयोग समाज हितैषी कार्यों में करें। समाज का धन समाज को लौटा दें। धन से चिपके रहने में बड़प्पन की मान्यता बदले और उसे लोक मंगल के पुण्य कार्यों में नियोजित करें।

दान न सही कम से कम इतना तो होना चाहिए कि युग परिवर्तन का पथ प्रशस्त करने वाले प्रचारात्मक कार्यक्रमों में पूँजी की कमी न पड़े। यदि धन लगा सकें, तो भी बहुत कुछ हो सकता है। 1. साहित्य प्रकाशन, 2. चित्र, 3. अभिनय मण्डलियाँ, 4. टेप-रिकॉर्ड, 5. फिल्म निर्माण।। यह पाँच ऐसे कार्य हैं, जिनके लिए विशालकाय अर्थ संस्थान खड़े किए जाने चाहिए और लोकमानस को परिष्कृत बनाने की आवश्यकता पूरी की जानी चाहिए।

जन स्तर पर पूँजी इकट्ठी करने के लिए सरकारी समितियाँ, लिमिटेड कम्पनियाँ बनाई जा सकती हैं। उनमें पूँजी लगाने के लिए हर भावनाशील व्यक्ति को अपनी संग्रहीत पूँजी लगाने के लिए कहा जा सकता है। आवश्यकता केवल इस बात की है कि वस्तु स्थिति उन्हें समझाई जा सके तथा योजना को व्यावहारिक स्वरूप दिया जा सके।

7. प्रतिभा : प्रतिभा एक विशिष्ट और अतिरिक्त विभूति है। कुछ लोगों के व्यक्तित्व ऐसे साहसी, स्फूर्तिवान्, सूक्ष्मदर्शी, मिलनसार, क्रिया कुशल और प्रभावशाली होते हैं कि जिस काम को भी हाथ में लेते है, उसे उसी आधार पर गतिशील बनाते चले जाते हैं और सफलता के उच्च शिखर तक पहुँचा देते हैं। इस विशेषता को प्रतिभा कहते हैं।

प्रतिभाशाली व्यक्ति ही सफल सन्त, राजनेता, समाज-सेवी, साहित्यकार, कलाकार, व्यवसायी, व्यवस्थापक होते देखे गये हैं। प्रतिभावान् ही डाकू, चोर, ठग जैसे दुस्साहस-पूर्ण कार्य करते हैं। सेनानायकों के रूप में, लड़ाकू योद्धाओं के रूप में उन्हें ही अग्रिम पंक्ति में खड़ा देखा जाता है। क्रान्तिकारी भी इसी स्तर के लोग बनते हैं। युग निर्माण अभियान के हर पक्ष को प्रकाशवान् बनाने के लिए ऐसे ही लोग चाहिए। प्रतिभाशाली तत्त्व जहाँ कहीं भी चमक रहे हों, वहाँ से उन्हें आमन्त्रित किया जा रहा है कि वे अपने ईश्वरीय अनुदान को निरर्थक विडम्बनाओं में खर्च न कर दें, जिससे समस्त संसार का हित साधन हो सके।

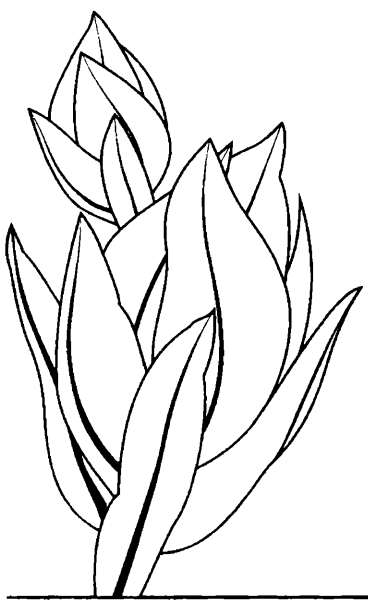
प्रतिभा एक दैवी स्तर की विद्युत चेतना है, जो मनुष्य के व्यक्तित्व और कर्तृत्त्व में असाधारण स्तर की उत्कृष्टता भर देती है। उसी के आधार पर अतिरिक्त सफलताएँ आश्चर्यजनक मात्रा में उपलब्ध की जाती है। साथ ही इतना और जुड़ता है कि अपने लिए असाधारण श्रेय, सम्मान और दूसरों के लिए अभ्युदय के मार्ग पर घसीट ले चलने वाला मार्ग-दर्शन वह कर सके। माँझी की तरह अपनी नाव को खेकर स्वयं पार उतरे और उस पर बिठाकर अन्यान्यों को भी पार उतारने का श्रेय प्राप्त कर सके।

गिरों को उठाने, डूबतों को उबारने और किसी तरह समय गुजारने वालों को उत्कर्ष की ऊँचाई तक उछालने में समर्थ हो सके। प्रतिभाशाली लोगों को असाधारण कहते हैं। विशिष्ट और वरिष्ठ भी कहा जाता है। साधारण जनों को तो जिन्दगी के दिन पूरे करने में ही जो दौड़-धूप करनी पड़ती है, झंझटों से निपटना और जीवनयापन के साधन जुटाना आवश्यक होता है, उसे ही किसी प्रकार पूरा कर पाते हैं। किन्तु प्रतिभावानों की बात ही दूसरी है, वे तारागणों के बीच चन्द्रमा की तरह चमकते हैं। उनकी चाँदनी सर्वत्र शान्ति और शीतलता बिखेरती है। वह स्वयं सुन्दर और अपनी छत्र-छाया के सम्पर्क में आने वालों को शोभा-सुन्दरता से जगमगा देते हैं।

पतित विचारों वाला व्यक्ति, इतना अशक्त एवं असमर्थ हो जाता है कि अपने फिसलते पैरों को स्थिर रख सकना उसके बस की बात नहीं रहती।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विचार क्रांति को इस सीमा तक उनने तीव्रता दी कि जन-जन को लगने लगा कि नया सफर यही है। इस पर चलकर ही विश्वमानवता आगे बढ़ सकती है। आज जो भी कुछ बदलाव नजर आ रहा है, उसी की फलश्रुति है...



क्रान्ति-नव सृजन का अनिवार्य आधार: समाज, शासन एवं विश्व व्यवस्था में यदा-कदा सुनियोजन एवं विकास की दृष्टि से हेर-फेर होते रहते हैं, किन्तु जब इनमें अराजकता, अव्यवस्था तथा अवांछनीयता सामान्य प्रयत्नों के बाहर हो जाती है, तो व्यापक परिवर्तन वाली क्रान्तियों का जन्म होता है। ये आँधी-तूफान की तरह आती हैं, पुराने ढाँचे को ध्वस्त कर कूड़े-कचरे को बहा कर ले जाती हैं और सृजन का आधार प्रस्तुत करती हैं। परिवर्तन एवं नव निर्माण वाली क्रान्तियों का प्रारम्भिक रूप वैचारिक होता है, बाद में ही वे साकार रूप लेती हैं।

विविध क्रान्तियों के मूल में विचार क्रान्ति : विश्व के इतिहास में जितनी भी महाक्रान्तियाँ हुईं, उनमें क्रान्तियों के इस स्वरूप को स्पष्ट देखा जा सकता है। इनके क्रान्ति बीज युग मनीषा के मस्तिष्क में आदर्शवादी ऊर्जा से अनुप्राणित होकर फूट पड़े और समवैचारिक सहचरों को खींचकर नव निर्माण के जन आन्दोलन खड़े किए। 18 वीं सदी में फ्रांस में निरंकुश शासकों के अत्याचार-अनाचार भरे कुशासन में नागरिकों की व्यक्तिगत स्वतंत्रता एवं अधिकार आदि प्राय: समाप्त हो गए थे।

जनमानस स्वतंत्रता और समानता के लिए तड़प रहा था। उसकी यह तड़पन 1789 की फ्रांस की क्रान्ति का आधार बनी। वाल्टेयर और रूसो इसके सूत्रधार बने। इसी तरह 17 वीं सदी में ब्रिटेन के साम्राज्यवादी शासन में असमानता की खाई असामान्य रूप से बढ़ चली थी। इसको पाटने के उद्देश्य से धार्मिक एवं राजनैतिक दोनों मंचों द्वारा समर्थित ट्यूरिटन क्रान्ति का सूत्रपात हुआ, जिसका वैचारिक आधार बाइबल में प्रतिपादित समानता के विचार बने।

सन् 1917 की रूसी बोल्शेविक क्रान्ति में भी यह तथ्य उजागर होता है। जारशाही की साम्राज्यवादी एवं दमनकारी नीतियों से तंग आकर वहाँ की जनता को आवाज उठानी पड़ी थी। उनकी वैचारिक चेतना जाग पड़ी और लेनिन के कुशल नेतृत्व में सफल क्रान्ति हुई।

इसी तरह भारत में अंग्रेजी उपनिवेशवाद व इटली में आस्ट्रेलियाई उपनिवेशवाद की समाप्ति, अमेरिका में दास प्रथा का अन्त, चीन, क्यूबा तथा यूरोपीय देशों में हुई साम्यवादी क्रान्तियों के प्रारम्भ में प्रखर वैचारिक चेतना ही काम करती रही, जिसके परिणामस्वरूप बाद में परिस्थितियाँ बदलीं।

इस तरह राष्ट्र एवं समाज के विभिन्न क्षेत्रों के हुए क्रान्तिकारी परिवर्तनों पर गौर करें, तो मूल में विचार क्रान्ति की प्रक्रिया स्पष्ट होती है। यहाँ तक कि सृष्टि की मूल रचना में भगवद् सत्ता का एक से अधिक बनने के विचार बीज को सक्रिय देखा जा सकता है।

मनुष्य के विचार एक तरह की सजीव तरंगें हैं, जो जीवन संसार और यहाँ के पदार्थों को प्रेरणा देती रहती हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

युग संकट के समग्र परिवर्तन की पुकार : आज हम पुन: इतिहास के उन विरल क्षणों से गुजर रहे हैं, जब एक और परिवर्तन की तीव्र माँग उठ रही है। वैज्ञानिक प्रगति ने मनुष्य जीवन को सुख-सुविधाओं से इतना भर दिया है, जिसकी हमारे पूर्वज कल्पना भी नहीं कर सकते थे, किन्तु इसके बावजूद वह पहले से अधिक दु:खी और हैरान-परेशान है।

बढ़ती हिंसा, अपराध एवं आत्महत्याओं की घटनाओं से उसकी स्थिति की गम्भीरता स्पष्ट हो रही है। परिवार संस्था टूट-बिखर चुकी है। समाज का ढाँचा कागजी पुतले के बतौर खड़ा है, जो अंदर से भ्रष्टाचार, नशेबाजी, अंधविश्वास, मूढ़मान्यताओं, कुरीतियों के कारण खोखला हो चुका है। यही स्थिति राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर युद्ध, आतंकवाद एवं तनाव के रूप में बनी हुई है। आणविक हथियारों से लेकर पर्यावरण का बिगड़ता संतुलन मनुष्य-अस्तित्त्व के लिए खतरा बना हुआ है।

भौतिक स्तर पर समाधान के प्रयास कम नहीं चल रहे हैं, किन्तु एक समाधान के साथ दस समस्याएँ खड़ी हो रही हैं। एक गज को जोड़ते दस गज टूटने का क्रम चल रहा है। ऐसे में चहुँ ओर अराजकता, अशान्ति एवं आशंका का वातावरण बना हुआ है। युग-संकट की इस ऐतिहासिक घड़ी में एक नए परिवर्तन, एक नई क्रान्ति की माँग उठ रही है। अब तक की क्रान्तियों में अपने-अपने वैचारिक आधार होते हुए भी मुख्य बिन्दु, व्यवस्था में हेर-फेर या बाहरी वातावरण ही रहा। इन्होंने तात्कालिक समाधान तो प्रस्तुत किए, किन्तु समस्या का स्थायी समाधान नहीं मिल पाया। राजतंत्र से लोकतंत्र, साम्यवाद, उपनिवेशवाद से मुक्ति आदि के बाद भी फ्रांस, रूस, भारत आदि की समस्या का समाधान कहाँ हो पाया?

वैज्ञानिक एवं आर्थिक क्रान्ति ने मनुष्य को सुख-सुविधाओं के साथ और बदतर स्थिति में ला दिया। अत: जन-चेतना में बाहरी या व्यवस्था परिवर्तन तक सीमित क्रान्ति की नहीं, एक मौलिक परिवर्तन की माँग उठ रही है, जिससे परिस्थितियों में आमूलचूल परिवर्तन आए। वह वस्तुत: ऐसी क्रान्ति का आह्वान है, जिसका केन्द्र व्यक्ति परिवर्तन है, क्योंकि व्यक्ति की मन:स्थिति के अनुरूप ही परिस्थितियों का निर्माण होता है।

वर्तमान विपन्नताओं के मूल में व्यक्ति की विकृत मन:स्थिति एवं चिन्तन ही सक्रिय है, अत: आवश्यकता एक ऐसी क्रान्ति की है, जो जनमानस के लिए चिन्तन और चेतना को प्रभावित कर उसे अभीष्ट दिशा दे। प्रख्यात विचारक लारेंस हाइड के शब्दों में एक ऐसी आध्यात्मिक महाक्रान्ति का श्री गणेश करना होगा, जो अहिंसक हो, वैचारिक हो, जिसका लक्ष्य सम्पूर्ण विश्व मानव हो, न कि सीमित व्यक्ति अथवा एक समाज विशेष का मात्र-परिवर्तन। इसके द्वारा ही व्यक्ति का बाह्याभ्यन्तर परिवर्तन और समाज का पुनर्निर्माण सम्भव होगा।

हम व्यक्ति नहीं, विचार हैं। जो हमारे शरीर तक ही अपना सम्बन्ध रखना चाहते हैं, विचारों का तिरस्कार करते हैं, उन्हें हमारा साथ छोड़ देना चाहिए।

हमारी आत्मीयता की एक ही कसौटी है कि हमारा दर्द किस-किस की नसों में कितनी मात्रा में भर चला और हमारी आग की कितनी चिनगारियाँ कितने अंशों में किसके कलेजे में सुलगने लगी? किसने हमारे प्राणों से सींचे गए संगठन को मजबूत बनाने का संकल्प लिया?

युग की महाक्रान्ति-विचार क्रान्ति अभियान : युग की इस सबसे बड़ी माँग को पूरा करता परम पूज्य गुरुदेव का विचार क्रान्ति अभियान युग की अभूतपूर्व महाक्रान्ति है, जो विश्व मानव की युग पीड़ा से सघन तादात्म्य स्थापित करने वाले युगऋषि की प्रचण्ड तप-साधना, गहन अध्ययन, अन्वेषण और युगमंथन से उद्भूत है। यही युग संकट का मूल समाधान है।

जो व्यक्ति के चिन्तन और चेतना को दिशा देता हुआ गुरुदेव के शब्दों में "इन दिनों जिस व्यापक परिवर्तनों की आवश्यकता है, वह पिछले सभी परिवर्तनों एवं क्रान्तियों से महत्त्वपूर्ण है। औंधे विचारों को पलटकर सही विचार करने का साहस जनमानस में उत्पन्न करना, यही हमारी उस विचार क्रान्ति का स्वरूप है, जो नये युग के नये व्यक्तित्व, नये समाज का नवनिर्माण करने में समर्थ हो सकती

हम आज जो कुछ दिखलाई दे रहे हैं अथवा आगे दिखलाई देंगे, वह हमारे विचारों के सिवाय और कुछ न होगा।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

है। संक्षिप्त में विचार क्रान्ति ही इस युग की सर्वोपरि आवश्यकता है।''

इसका श्रीगणेश हिमालयवासी गुरुसत्ता के प्रथम साक्षात्कार के साथ ही हो गया था, किन्तु पूज्यवर ने इसका बीजारोपण जनमानस के खेत में 'अखण्ड ज्योति' के साथ शुरू किया। इसके प्रथम दशक के प्रथम पृष्ठ की पंक्तियाँ गौर करने लायक हैं। ''संदेश नहीं मैं स्वर्ग लोक का लाई, इस धरती को ही स्वर्ग बनाने आई।'' इन पंक्तियों में युगऋषि के युग परिवर्तनकारी उद्घोष की गूँज स्पष्ट सुनाई देती है। इसके साथ ही जनमानस को झकझोरने वाला व आदर्शोन्मुख दिशा देने वाले युग साहित्य का सृजन हुआ, जिसके संदर्भ में पूज्यवर स्वयं लिखते हैं: **''साहित्य अपने आप में मौलिक है, इसके अन्तर्गत युग की हर समस्या का बहुत सूक्ष्म विवेचन किया गया है, जिसे बेजोड़ कहा जा सकता है। प्रचलित कुत्सित मान्यताओं पर पग-पग पर प्रहार किए गए हैं और नीर-क्षीर विवेक की एक स्पष्ट दृष्टि लोकमानस को प्रदान की गई है। यह विचारणा हर मस्तिष्क को, हर दिल को झकझोर डालने में समर्थ है। व्यक्ति को बदल देने की, उसके विचारों और क्रियाकलापों को उलट देने की परिपूर्ण क्षमता इस विचारणा में विद्यमान है।''** पूज्यवर ने अपने जीवन भर में 3200 पुस्तकों के रूप में अपने वजन से अधिक युग साहित्य की रचना की। इनमें अपने अंतिम वर्षों में 1989-90 के दौरान क्रान्तिधर्मी साहित्य की रचना की, जिसके संदर्भ में वे स्वयं कहते थे ''ये विचार क्रान्ति के बीज हैं, थोड़े से भी ये जहाँ पहुँचेंगे, धमाका करेंगे। इनमें युग बदलने की ताकत है।''

विचार क्रान्ति का ज्ञानयज्ञ अभियान : 1940 में गायत्री परिवार के सुगठित उभार के साथ विचार क्रान्ति अभियान को बल मिला। विचार क्रान्ति के सार सूत्रों के रूप में युग निर्माण सत्संकल्प को समझा जा सकता है। जिसकी घोषणा सन् 1961 में हुई।

परम पूज्य गुरुदेव इसके प्रत्येक सूत्र को युग निर्माण को सुनिश्चित करने वाले विचार बीज मानते थे, जब उन्होंने नित्य उपासना के साथ सत्संकल्प को दोहराने की बात कही। इसके सूत्र 'हम बदलेंगे - युग बदलेगा' में विचार क्रान्ति का सार निहित है। विचार क्रान्ति को पूज्यवर युग निर्माण का प्रथम चरण मानते थे। इसे ज्ञान यज्ञ के रूप में व्यापक बनाने की व्यवस्था की। उन्हीं के शब्दों में **''युग निर्माण योजना का प्रथम सृजन और प्रथम चरण यही (विचार क्रान्ति) है। जिन उत्कृष्ट सम्भावनाओं का स्वप्न हम देखते हैं , उनका बीजारोपण विचार क्रान्ति द्वारा ही सम्भव है। अपना ज्ञानयज्ञ अभियान इसी प्रयोजन की पूर्ति के लिए है।''**

ज्ञानयज्ञ के अन्तर्गत जहाँ व्यापक स्तर पर विभिन्न भाषाओं में युग साहित्य का सृजन हुआ, वहीं उसे जन-जन तक पहुँचाने के लिए न्यूनतम 20 पैसे धन और एक घण्टा समयदान का आह्वान किया गया।

इसकी अद्भुत सफलता के संदर्भ में पूज्यवर अप्रैल 84 की अखण्ड ज्योति में लिखते हैं- **''मथुरा में जिस विचार क्रान्ति अभियान ने जन्म लिया, जिसके माध्यम से आज करोड़ों व्यक्तियों के मन-मस्तिष्क को उलटने का संकल्प पूरा कर दिखाने का हमारा दावा सत्य होता दिखाई देता है।''** आज युग निर्माण के अनुकूल जो हवा बह रही है, उसके मूल में विचार क्रान्ति की तीव्र आँधी ही है, जो दिनों-दिन प्रबल होती जा रही है और यही नव सृजन का आधार बनेगी। युगऋषि के मस्तिष्क से उपजी एवं बड़े यन्त्र से जनमानस के उर्वर मस्तिष्क में बोई गई विचार क्रान्ति की फसल आज अपना चमत्कारी प्रभाव लहलहाती केसरिया फसल के रूप में दिखा रही है। इसका विहंगम दिग्दर्शन महापूर्णाहुति की विराट् जन-भागीदारी के रूप में हुआ और आज वह शताब्दी समारोह के पावन अवसर पर सृजन के लिए संकल्पित व्यक्तियों की आहुति पाकर और प्रचण्ड रूप में प्रज्वलित होगी व उस दावानल का रूप ग्रहण करेगी, जिससे सर्वत्र व्याप्त दुष्प्रवृत्तियों, विकृतियों, कुरीतियों एवं मूढ़मान्यताओं को जलाकर भस्म कर देगी और नए समाज, नए युग की नयी परम्परा, नयी गतिविधियों, नई हलचलों का आधार प्रस्तुत करेगी। ◈

हम जितने ही कुशल विचार शिल्पी होंगे, हमारी आत्मा का निर्माण उतना ही सुन्दर और स्थायी होगा।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गुरुदेव का सृजन सैनिक एल्बर्ट डेविड

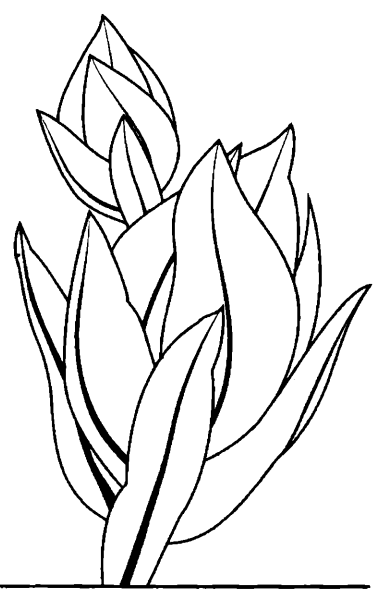
(सिलीगुड़ी क्षेत्र में मिशन से जुड़ा पादरी)

रात को दो बजे सर्द रातों में कोई हमें जगाता है और पकड़ कर गायत्री साधना करवाता है। ये अनुभव हैं एल्बर्ट डेविड के, जो आज एक नैष्ठिक गायत्री साधक हैं। अपने अनुभवों के आधार वह एक पुस्तक लिख रहे हैं- ''एज़ ए क्रिश्चियन गायत्री फॉर मी एंड ऑल...''

पूज्य गुरुदेव ने यह कहीं नहीं कहा कि क्रिश्चियन या मुस्लिम गायत्री परिवार से जुड़ें, तो उन्हें पीला कपड़ा पहना दिया जाये एवं यज्ञोपवीत पहना दिया जाये। गायत्री तो सबके लिए है। पूरे विश्व के हर धर्म के लिए है। मैं स्वयं असमंजस में था, अपने आपको हिन्दू महसूस करता था। जबकि हिन्दू एक सभ्यता एवं एक संस्कृति है। मुझे धोती-कुर्ता पहनने के लिए कई परिजनों के उपहास ने प्रेरित किया। लोगों ने मेरा उपहास किया, धोती-कुर्ता न पहनने के कारण। मुझसे भी कहा गया। मैं बड़ा दु:खित हुआ। संध्या ध्यान के समय मैंने गुरुजी से शिकायत की, मुझे मालूम नहीं था, वे तो सुन ही रहे थे, उन्होंने सान्त्वना दी, बोले- ''अच्छा! तेरे को ऐसा कहा क्या? मैं क्या जवाब देता? देख तू बता देना, अभी छद्म युद्ध का समय है, आमने-सामने के युद्ध कहाँ होते हैं? उसका जमाना चला गया। तू गुरुजी का सैनिक है, तू गुरुजी के लिए लड़ने आया है। मैं तो गुरुजी का फियादीन हूँ, मैं तो गुरुजी के लिए मरने आया हूँ।

अब तो आतंकवादी का जमाना है, उनकी कोई पोशाक नहीं होती।'' एक दिन प्रात: मैं गायत्री जप-ध्यान करके यज्ञ की तैयारी कर रहा था। तो पीछे से अचानक आवाज आयी, ओ मि. डेविड, तू तो हिन्दू हो गया है? मैं समझ गया कि ये कौन हैं? पूज्य गुरुदेव की आवाज थी, मैंने उनसे कहा-''ये सब तो आपने ही बताया है। जप-यज्ञ, पूजा आदि।'' उन्होंने कहा-''अगर हिन्दुओं को गायत्री बतानी थी, तो हिन्दुओं की कमी थी क्या? मैंने डेविड को इसलिए चुना क्या? तू धोती-कुर्ता पहनकर चर्च जाकर गायत्री बतायेगा, तो तेरी गायत्री को कौन सुनेगा? तू चर्च क्यों नहीं जाना चाहता?'' मैंने उनका जवाब दिया- ''वहाँ ध्यान नहीं लगता, वहाँ यज्ञ नहीं होता।''

उन्होंने जवाब दिया-''अरे मूर्ख! जीसस की क्रुसीफिकेशन यज्ञ ही तो है, दूसरों के लिए अपने आपको होम कर देना।'' मैं सब समझ गया, उन्होंने मुझे डेविड नाम से पुकारा, मेरा नाम नहीं बदला; नाम ही नहीं बदला, तो धर्म बदलने की तो बात ही नहीं आती। मैंने मन ही मन फिर प्रश्न किया, मैं गायत्री जप करता हूँ, और चर्च भी जाऊँगा, बड़ी असमंजस की स्थिति है। पूज्यवर ने फिर जवाब दिया-''देख, तू गायत्री जप करता है, और चर्च जाता है, तो इससे गायत्री को कोई प्रॉब्लम नहीं, लेकिन तू चर्च जाता है, और गायत्री जप करता है, तो इससे चर्च को प्रॉब्लम हो सकती है, तू बता, कौन सेक्युलर हुआ?'' उन्होंने मेरा नाम परिवर्तन भी नहीं किया, पोशाक बदलने के लिए भी मना किया। अब तो फुलपैण्ट पहनकर ही चर्च जाना है। ◈



जीवन व्यवसाय में ईश्वर की साझेदारी का प्रतिफल तत्काल दृष्टिगोचर होता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

युग निर्माण योजना - एक दृष्टि में

गायत्री परिवार/प्रज्ञा परिवार/युग निर्माण परिवार : युग निर्माण योजना को सफल एवं विश्वव्यापी बनाने के लिए पारिवारिक अनुशासन में गठित सृजनशील संगठन, जिसे गायत्री उपासना के आधार पर गायत्री परिवार, व्यक्तित्व परिष्कार के लिए आवश्यक दूरदर्शी विवेकशीलता के आधार पर प्रज्ञा परिवार एवं मानव मात्र के समग्र नव निर्माण के लिए प्रतिबद्धता के आधार पर युग निर्माण परिवार कहा जाता है।

◈ लक्ष्य एवं उद्देश्य

♦मनुष्य में देवत्व का उदय, धरती पर स्वर्ग का अवतरण।

♦ व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण, समाज निर्माण।

♦ स्वस्थ शरीर, स्वच्छ मन, सभ्य समाज।

♦आत्मवत् सर्वभूतेषु, वसुधैव कुटुंबकम्।

♦एक राष्ट्र, एक भाषा, एक धर्म, एक शासन।

♦ लिंगभेद, जातिभेद, वर्गभेद से ऊपर उठकर सबको विकास का अवसर।

◈ योजना के उद्घोषक-विस्तारक

♦युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा

♦प्रखर प्रज्ञा - सजल श्रद्धा।

◈ तीन समर्थ आयाम

♦योजना-शक्ति-ईश्वर की

♦अनुशासन-संरक्षण-ऋषियों का

♦पुरुषार्थ-सहकार-सत्पुरुषों का।

◈ आत्मनिर्माण के दो सूत्र

♦उत्कृष्ट चिन्तन, आदर्श कर्तृत्व

♦सादा जीवन - उच्च विचार।

◈ हमारे आधारभूत कार्यक्रम

♦ नैतिक क्रांति, बौद्धिक क्रांति सामाजिक क्रांति

♦ धर्मतंत्र-आधारित विविध माध्यमों से लोकशिक्षण

♦गायत्री-सामूहिक विवेकशीलता एवं यज्ञ-सहकारितायुक्त सत्कर्म।

◈ हमारा उद्घोष

♦हम बदलेंगे-युग बदलेगा, हम सुधरेंगे-युग सुधरेगा

♦इक्कीसवीं सदी - उज्ज्वल भविष्य

♦सबकी सेवा - सबसे प्रेम।

◈ हमारे प्रतीक

♦लाल मशाल-समग्र क्रान्ति के लिए सामूहिक

♦सशक्त प्रयास-युग शक्ति का विकास।

◈ हमारा संविधान

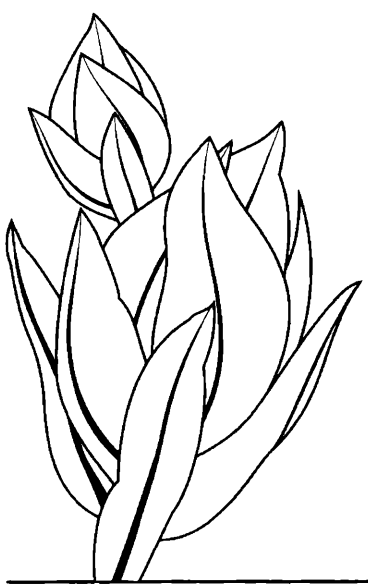
♦युग निर्माण सत्संकल्प के 18 सूत्र।

◈ हमारी ध्रुव मान्यताएँ

♦मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है।

♦ जो जैसा सोचता और करता है, वह वैसा ही बन जाता है।

♦ नर-नारी परस्पर प्रतिद्वन्द्वी नहीं, पूरक



परिवार निर्माण का तात्पर्य है, उस छोटी सी संस्था में सद्भावना और सत्प्रवृत्तियों का बीजारोपण, परिपोषण और अभिवर्धन।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

◈ **इक्कीसवीं सदी का मार्गदर्शक साहित्य :** क्रान्तिधर्मी साहित्य।

◈ **जीवन निर्माण के चार सूत्र :**

♦ साधना, स्वाध्याय, संयम, सेवा।

◈ **आध्यात्मिक जीवन के तीन आधार**

♦ उपासना, साधना, आराधना।

◈ **प्रगतिशील जीवन के चार चरण**

♦ समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, बहादुरी।

◈ **समर्थ जीवन के चार स्तंभ**

♦ इंद्रिय संयम, अर्थ संयम, समय संयम विचार संयम।

◈ **आत्मिक प्रगति के चार चरण**

♦ आत्मसमीक्षा, आत्मसुधार

♦ आत्मनिर्माण, आत्मविकास।

◈ **परिवार निर्माण के पंचशील :**

♦ श्रमशीलता, शालीनता (शिष्टता)

♦ मितव्ययिता, सुव्यवस्था, सहकारिता।

◈ **तीन को परिष्कृत करें**

♦ स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर।

◈ **तीन की साधना करें**

♦ ज्ञानयोग, कर्मयोग, भक्तियोग।

◈ **तीन का सन्तुलित समन्वय करें**

♦ भावना, विचारणा, क्रिया-प्रक्रिया।

◈ **तीन का विकास करें**

♦ श्रद्धा, प्रज्ञा, निष्ठा।

◈ **तीन को सुधारें :** गुण, कर्म, स्वभाव।

◈ **तीन को सँवारें**

♦ चिंतन, चरित्र, व्यवहार।

◈ **तीन को त्यागें**

♦ लोभ, मोह, अहंकार।

♦ वासना, तृष्णा, अहंता

♦ पुत्रेषणा, वित्तेषणा, लोकेषणा।

◈ **तीन को धारण करें**

♦ ओजस्, तेजस्, वर्चस्।

◈ **तीन का सम्मान करें**

♦ संत, सुधारक, शहीद।

◈ **तीन अभियान**

♦ प्रचारात्मक, रचनात्मक, संघर्षात्मक।

◈ **प्रचारात्मक अभियान :** जन-जन तक युगनिर्माण का संदेश।

◈ **रचनात्मक अभियान :**

♦ नव सृजन में प्रतिभाओं का रचनात्मक सहयोग।

◈ **संघर्षात्मक अभियान :** सृजन के मार्ग में आने वाली बाधाओं का निवारण।

◈ **सात आन्दोलन**

♦ साधना, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलम्बन, नारी जागरण, पर्यावरण, व्यसन मुक्ति एवं कुरीति उन्मूलन।

हमारा है यह दृढ़ संकल्प

हमारा है यह दृढ़ संकल्प, नया संसार बसाएँगे।
नया इन्सान बनाएँगे, नया संसार बसाएँगे॥

क्षीर सागर में सोया जो, उसे झकझोर जगाएँगे।
उसे प्रिय है केवल इन्साफ, जगत् को यह समझाएँगे॥
कर्मफल देना जिसका काम, नया भगवान् बनाएँगे।
विषमता नहीं टिकेगी कहीं, एकता समता लाएँगे॥

न होगा नारी का अपमान, उसे गुणखान बनाएँगे।
निकम्मे प्रचलन बदलेंगे, धरा को स्वर्ग बनाएँगे॥
न आलस बरतेगा कोई, उठेंगे और उठाएँगे।
पसीने की रोटी पर्याप्त, मुफ्त का माल न खाएँगे॥

करे जो आदर्शों से प्रीति, नया ईमान बनाएँगे।
चलेंगे नहीं छद्म पाखण्ड, सचाई सब अपनाएँगे॥
भ्रान्तियों की न गलेगी दाल, ज्ञान के दीप जलाएँगे।
अँधेरे को न मिलेगा ठौर, नया अभियान रचाएँगे॥

उनींदे नहीं रहेंगे हम, जगेंगे और जगाएँगे।
रहेंगे मिल-जुलकर सब एक, हँसेंगे और हँसाएँगे।
करे जो दुर्गा को साकार, नया सहकार जगाएँगे॥

-परमपूज्य गुरुदेव

जिन्होंने सुविधाएँ पाने का अधिकार तो जाना, पर कर्तव्य पालन की शर्त भूल गए, उनके लिए घर और नरक में कोई अंतर न रहेगा।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

युग निर्माण का शत सूत्रीय कार्यक्रम

परम पूज्य गुरुदेव जून सन् 1960 से 61 तक हिमालय अज्ञातवास में रहे। वहाँ से लौटकर उन्होंने नवसृजन के लिए 'युग निर्माण योजना' का उद्घोष किया। उसी क्रम में उन्होंने शत सूत्रीय योजना बनाकर उसे अखण्ड ज्योति मासिक के जून-1963 के अंक में प्रकाशित किया। उसे पुस्तिका रूप में प्रकाशित किया जा चुका है। शत सूत्रीय योजना एक नजर में देखी जा सके, इस दृष्टि से यह पत्रक प्रकाशित किया गया है। अपेक्षा की गई है कि इससे सृजनशील संघ को-संगठनों को अपनी-अपनी रुचि एवं क्षमता के अनुसार ठोस कार्यक्रम अपनाने में काफी सुविधा होगी। कोई भी व्यक्ति या संगठन इन कार्यक्रमों को यथावत् या सामयिक परिस्थितियों के अनुसार संशोधित रूप में नि:संकोच अपनाकर इनका लाभ उठा सकते हैं।

स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए आहार-विहार की सुव्यवस्था

१. दो बार का भोजन
२. भोजन को ठीक तरह चबाया जाए
३. भोजन अधिक मात्रा में न हो
४. स्वाद की आदत छोड़ी जाए
५. शाक और फलों का अधिक प्रयोग
६. हानिकारक पदार्थों से दूर रहें
७. भाप से पकाये भोजन के लाभ
८. स्वच्छता
९. खुली वायु में रहिए
१०. ब्रह्मचर्य का पालन

स्वास्थ्य संवर्धन के लिए सामूहिक प्रयास

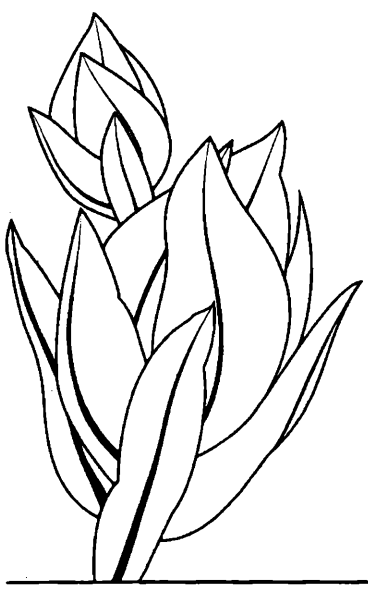
११. वनस्पतियों का उत्पादन
१२. पकाने की पद्धति में सुधार
१३. सात्त्विक आहार की पाक विद्या
१४. गंदगी का निराकरण
१५. नशे का त्याग
१६. व्यायाम और उसका प्रशिक्षण
१७. साप्ताहिक उपवास
१८. बड़ी दावतें और जूठन
१९. संतान की सीमा मर्यादा
२०. प्राकृतिक चिकित्सा की जानकारी

अशिक्षा का अंधकार दूर किया जाए

२१. बच्चों को स्कूल भिजवाया जाए
२२. शिक्षितों की पत्नी अशिक्षित न रहें
२३. प्रौढ़ पाठशालाओं का आयोजन
२४. प्रौढ़ महिलाओं की शिक्षा व्यवस्था
२५. शिक्षा के साथ दीक्षा भी
२६. नये स्कूलों की स्थापना
२७. रात्रि पाठशाला चलाई जाएँ
२८. शिक्षित ज्ञान-ऋण चुकाएँ
२९. पुस्तकालय और वाचनालय
३०. अध्ययन की रुचि जगाएँ

जनमानस को धर्म-दीक्षित करने की योजना

३१. आस्तिकता की आस्था
३२. स्वाध्याय की साधना
३३. संस्कारित जीवन



हर व्यक्ति अपनी कीमत की मुहर स्वयं लगाता है। अपने लिए हमें वही मूल्य संसार से प्राप्त होता है, जिसका हम दृढ़ इच्छाशक्ति से दावा करते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

३४. पर्व और त्यौहारों का संदेश
३५. जन्मदिन समारोह
३६. व्रतशीलता की धर्म धारणा
३७. मंदिरों को प्रेरणा केन्द्र बनाया जाए
३८. युग निर्माण के ज्ञान मंदिर
३९. साधु-ब्राह्मण भी कर्त्तव्य पालें
४०. वानप्रस्थ का पुनर्जीवन

सभ्य समाज की स्वस्थ रचना

४१. सम्मिलित कुटुम्ब प्रथा
४२. पारिवारिक विचार गोष्ठी
४३. सत्प्रवृत्ति का अभ्यास
४४. संतान और उसकी जिम्मेदारी
४५. सत्कार्यों का अभिनंदन
४६. सज्जनता का सहयोग
४७. नैतिक कर्त्तव्यों का पालन
४८. सहयोग और सामूहिकता
४९. कंजूसी और विलासिता छूटे
५०. श्रम का सम्मान

इन कुरीतियों को हटाया जाए

५१. वर्ण व्यवस्था का शुद्ध स्वरूप
५२. उपजातियों का भेदभाव हटे
५३. नर-नारी का भेदभाव
५४. अश्लीलता का प्रतिकार
५५. विवाहों में अपव्यय
५६. बाल विवाह और अनमेल विवाह
५७. भिक्षा व्यवसाय की भर्त्सना
५८. मृत्यु भोजन की व्यर्थता
५९. जेवरों में धन की बर्बादी
६०. भूत-पलीत और बलि प्रथा

विभूतिवान् व्यक्ति यह करें

६१. लेखकों और पत्रकारों से अनुरोध
६२. युग साहित्य के नव निर्माता
६३. प्रत्येक भाषा में प्रकाशन
६४. अनुवाद कार्य का विस्तार
६५. पत्र-पत्रिकाओं की आवश्यकता
६६. प्रकाशन की सुगठित शृंखला
६७. युग निर्माण प्रेस
६८. कविताओं का निर्माण और प्रसार

कला और उसका सदुपयोग

६९. वक्तृत्व कला का विकास
७०. गायकों का संगठन
७१. संगीत शिक्षा का प्रबंध
७२. चित्रकला का उपयोग
७३. प्रदर्शनियों का आयोजन
७४. अभिनय और लीलाएँ
७५. नाटक और एकांकी
७६. कला के वैज्ञानिक माध्यम

सद्भावनाएँ बढ़ाने के लिए

७७. सेवा कार्यों में अभिरुचि
७८. सार्वजनिक उपयोग के उपकरण
७९. जीव दया के सत्कर्म
८०. ईमानदार उपयोगी स्टोर
८१. सम्मेलन और गोष्ठियाँ
८२. नवरात्र में शिक्षण शिविर
८३. धर्मप्रचार की पदयात्रा
८४. आदर्श वाक्यों का लेखन
८५. संजीवनी विद्या का विधिवत् प्रशिक्षण
८६. छोटे स्थानीय शिक्षण सत्र

राजनीति और सच्चरित्रता

८७. गीता के माध्यम से जन-जागरण
८८. मतदान और मतदाता
८९. शिक्षा पद्धति का स्तर
९०. कुरीतियों का उन्मूलन
९१. सस्ता, शीघ्र और सरल न्याय
९२. अपराधों के प्रति कड़ाई
९३. अधिकारियों की प्रामाणिकता
९४. आर्थिक विषमता घटे

युग निर्माण की आध्यात्मिक पृष्ठभूमि

९५. गायत्री उपासना
९६. यज्ञ की आवश्यकता
९७. समयदान यज्ञ
९८. आत्म चिंतन और सत्संकल्प
९९. अविच्छिन्न दान परम्परा
१००. सत्याग्रही स्वयंसेवक सेना ◈

मित्रो! पूज्यवर चर्चा प्रसंग में अक्सर कहते थे-"मैंने पीले वसंती वस्त्रों का प्रावधान तुम सबके लिए इसलिए किया है कि सूर्य व बृहस्पति की, गायत्री व गुरु की दोनों की शक्तियों को ग्रहण कर पाना तुम सबके लिए संभव हो सके।" सूर्य व बृहस्पति के अंतर्सम्बन्ध जिस वर्ण को जन्म देते हैं, वह पीला ही है। उन्होंने कहा कि-"अब गेरुए वस्त्र की नहीं-वैराग्य लेकर भागने की नहीं, समर क्षेत्र में जूझने वाले पीत वस्त्राधारी बंदा-वैरागियों की आवश्यकता है। इन्हें सतत सूर्य की प्रखरता का अनुदान मिलता रहेगा।" वस्तुतः गुरुतत्त्व (बृहस्पति) को ग्रहण किए बिना गायत्री सावित्री तत्त्व (सूर्य सविता) को आत्मसात् किया भी नहीं जा सकता।

कठिनाइयाँ, प्रतिकूलताएँ साधना के व्यायाम हैं। इनका निर्माण इस उद्देश्य से किया गया है कि साधक की आत्मशक्ति, दृढ़विश्वास तथा अटल संकल्प की परीक्षा हो सके।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सादगी ऐसी कि जो कायल कर दे

ब्राह्मणोचित जीवन (सादगी भरा जीवन) जीने की प्रेरणा देते हुए वे अक्सर समझाते, "बेटा, ये हमारी ओढ़ी हुई गरीबी है। लोकसेवी को कम से कम सुविधा साधन बटोरने चाहिये।"

एक दिन गुरुजी ने एक कार्यकर्ता को मजदूर लाने के लिये भेजा। वह बढ़िया से तैयार होकर, नया कुर्ता पहनकर गया। उसे कोई मजदूर मिला नहीं। लौटकर गुरुजी से कहा, गुरुजी मजदूर तो मिला नहीं। गुरुजी ने उसे देखा और बोले, "250 रुपये का चश्मा लगायेगा। बढ़िया कुर्ता पहनेगा, राजेश खन्ना बनकर जाएगा, तो क्या तुझे मजदूर मिलेगा?"

एक दिन कुछ नेता लोग गुरुजी से मिलने आये। गुरुजी ने मुलाकात के बाद उनको भोजन कराया। चौके की बहनों से कहा, "बच्चियो! भोजन तुम लोग परोसोगे। महेन्द्र और शिव प्रसाद बरतन उठायेंगे।" जब वे लोग भोजन कर चुके तो उन दोनों ने बरतन उठाये। गुरुजी देख रहे थे। बोले, "अब इन्हें माँज कर भी रखो।" नेता जी आ रहे हैं सोचकर, वे बढ़िया से प्रेस इत्यादि करके नये कुर्ते पहन कर गये थे। बरतन माँजे, तो उन पर पानी के छींटे पड़ने स्वाभाविक थे।

जब बरतन मँज गये, तो गुरुजी ने बुलाया। कुर्ते पर छींटे पड़े देख कर बोले, "तुम लोग इस तरह फूहड़ तरीके से काम करते हो? कुर्ता खराब कर लिया।" फिर बोले, "अच्छा! तुम लोग बहुत बड़े आदमी हो..! बहुत बड़े बाप के बेटे हो..! टाटा, बिरला हो..! बढ़िया नया-नया कुर्ता पहन कर काम करोगे। ऐसे काम होता है?" "खादी की दुकान पर जाओ और वहाँ से सस्ती वाली, खादी की आधी बाजू की बनियान (हाफ कुर्ता) ले कर आओ। उसे पहन कर काम किया करो। जब कभी टोली में जाओ, बाहर जाओ, तो अच्छा, बढ़िया कुर्ता पहनो। खादी की आधी बाजू की बनियान पहन कर काम करोगे, तो कपड़े खराब नहीं होंगे।" इस प्रकार वे किफायत से रहना भी सिखाते थे।

एक बार शांतिकुंज की एक बहन कीमती कोट पहन कर गुरुजी के पास गई। जैसे ही गुरुजी को प्रणाम किया उन्होंने बड़े ध्यान से देखा और बोले, "अच्छा! कोट पहन कर आई है। कोट कहाँ से माँग लाई?" उनने कहा, "गुरुजी, मेरा ही कोट है। किसी से, कहाँ से माँगती?" इस पर गुरुजी बोले, "अच्छा बेटा, माँगना नहीं किसी से। अब पहन आई है तो कोई बात नहीं, पर बेटा, यहाँ हम सबको ब्राह्मण जीवन जीने की बात कहते हैं। सादगी से रहने की बात कहते हैं। तू इसका ध्यान रखना।"

एक बार करवाचौथ के त्योहार के दिन दो बहनों ने बढ़िया से गहने आदि पहने और गुरुजी-माताजी को प्रणाम करने व उनका पूजन करने गईं। गुरुजी ने उन्हें बड़े गौर से देखा। फिर माताजी से बोले, "माताजी, ये तो हमारी बेटियाँ नहीं लगतीं।" एक कहती है कि गुरुजी की दृष्टि में कुछ ऐसे भाव थे कि हम लोग उनसे नज़र नहीं मिला पाये, पर हम उनका भाव समझ गये थे।

हम दोनों ने एक दूसरे की ओर देखा, जैसे-तैसे फटाफट पूजा की और दौड़ कर नीचे आ गये। दोनों ने परस्पर कोई चर्चा नहीं की, अपने-अपने कमरे में गये और सब गहने आदि उतार कर रख दिये। फिर कभी दुबारा हम लोगों ने उस दिन जैसे गहने नहीं पहने। गुरुजी को बहनों का जरूरत से ज़्यादा सजना-धजना पसंद नहीं था। वे कहते थे, "बेटा, सादगी में ही असली सौंदर्य है।"

सादा जीवन-उच्च विचार, यह आत्मवादी की प्रथम साधना है। इस साधना को अपनाए बिना कोई भी व्यक्ति आत्मकल्याण की ओर अग्रसर नहीं हो सकता।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्राण प्रत्यावर्तन सत्र एक विलक्षण प्रयोग

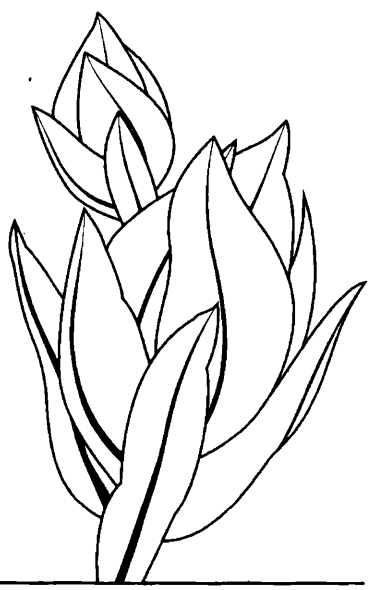
सन् 1973 परम पूज्य गुरुदेव ने प्राण प्रत्यावर्तन सत्रों की घोषणा की, जो फरवरी 1973 से प्रारंभ हुए थे। यह सत्र अति विशिष्ट स्तर के सत्र थे। इन सत्रों में परम पूज्य गुरुदेव ने साधक स्तर के कार्यकर्ताओं को बुलाया था और अति विशिष्ट साधनाएँ करवाईं। जिन परिजनों ने ये सत्र किये हैं, वे बताते हैं कि उसके पश्चात् हमारा जीवन ही बदल गया। उन दिनों तो हम समझ नहीं पाये, परंतु आज जब उस समय की याद करते हैं, तो ऐसा लगता है कि जैसे गुरुदेव ने हमारे भीतर नवीन प्राणों का संचार कर दिया था। उसके पश्चात् गुरु का कार्य किये बिना हमें चैन ही नहीं पड़ता था। इन्हीं परिजनों में से बहुत से परिजनों को पूज्य गुरुदेव ने शान्तिकुंज बुलाया और जो क्षेत्रों में रह गये, उन्हें भी विशेष जिम्मेदारियाँ सौंपी।

उन सत्रों के माध्यम से गुरुदेव ने अपनी तप-ऊर्जा द्वारा नया प्राण हमारे अंदर फूँका था। हमारे जन्म-जन्मांतरों के कुसंस्कारों का शमन किया और श्रेष्ठ संस्कारों को उभारा था। पूज्यवर सब साधकों से पहले उनकी समस्याएँ लिखवाकर ले लिया करते थे, तत्पश्चात् उनका पहला प्रवचन ही अति विशिष्ट रहता था। प्रस्तुत है उसके कुछ प्रमुख अंश:-

15. 2. 1973 के प्रवचन में गुरुदेव ने कहा- ''आपकी समस्याएँ आपके लिए पहाड़ हैं, किन्तु मेरे लिए राई हैं। मैंने आपके शरीरों को अलग रहने को कहा है। ऐसी ही साधना बताई है, मैं चाहता हूँ यह करने में आपको अपना प्राण, शरीर से निकालकर जरा देखना है कि आज तक कर्मकांडों में उलझने वालों को क्या मिल रहा है। आपको मैं सिखा रहा हूँ भावना द्वारा ऊँचा उठना। मैं आपको वेदान्त की अथवा जीवन की मूलभूत समस्या समझाऊँगा। पूजा का फल भगवान् से माँगना नहीं पड़ता, भक्त माँगता है कि भगवान् आप शरीर पर बैठ जाइये, इस पर कब्जा कर लीजिए। अपने मन को आपके (भगवान् के) चरणों में समर्पित करना है-ऐसा मनुष्य तब पाता है, जब वह स्वयं को भगवान् के चरणों के समीप पाता है। मैं आपका भगवान् से ब्याह करा रहा हूँ, कैसे?- कई प्रकार की योग साधनाएँ-कई रूपों में सिखा रहा हूँ।''

22. 2. 1973 में गुरुदेव के प्रवचन के अंश-''मैं आपके साथ 24 घण्टे रहता हूँ। अपना रक्त निचोड़ कर पिलाता हूँ। अपना खून आपमें पहुँचाता रहता हूँ और बराबर जाँचता रहता हूँ कि आपको चिंतन की दिशा मिली कि नहीं। मैंने पहले दो दिन-सोडा, साबुन, नील, टिनोपाल लगाकर धोया है। बाकी दो दिनों में आपका कपड़ा, बसन्ती रंग में रंग रहा हूँ। प्रयत्न कर रहा हूँ कि किसी भांति ये रंग न उतरे।

1971 में हिमालय प्रवास के बाद गुरुदेव वापस आ चुके थे। घोषणा हुई कि अगला काम बड़े स्तर पर होना है। इसके लिये समर्पित कार्यकर्ताओं में नये प्राण का संचार करना होगा। चुने हुए गायत्री साधकों के साथ इसकी शुरुआत की गई। उनके एकांत में रहने की व्यवस्था की गई। प्रातः के प्रवचन और रात्रि भजन संगीत के अलावा दिनभर साधक मौन एकांत में रहते। प्राण प्रत्यावर्तन सत्र अन्तर्मुखता प्रधान साधनात्मक प्रयोग था।



विचारवान् वे हैं, जो नाशवान् भौतिक वस्तुओं को बटोरने की अपेक्षा आत्मिक समृद्धि का संचय करते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हो सकता है, आप खाली के खाली रह जाएँ; किन्तु मैंने अपने कर्तव्य को पूरी तरह से निभाया है।''

23. 2. 1973 में गुरुदेव के प्रवचन के अंश : ''आप अपने को योद्धा बना लीजिए। आपको द्रोणाचार्य बनाया है। आप आगे ज्ञान रखिए और पीठ पर कर्तव्य रखिए। अनीति से लड़िए। यह आपके लिए तप है। आधा भाग आपके प्रायश्चित का हमने सहा है, आधा भाग आपके लिए है। जिन पापों से आप दूषित हुए थे, उनसे हमने आपको बचाया है। आप-लोगों को बचाइए। अपना आधा भाग तप का पूरा कीजिए। समाज इससे भी अधिक कुरीतियों, दुष्प्रवृत्तियों से पीड़ित है। आप उन्हें बचाइए, जिससे आप मुझसे उऋण हो सकें। यही मेरी गुरु-दक्षिणा है।''

प्राण प्रत्यावर्तन सत्र की साधनाओं का स्वरूप : पूज्य गुरुदेव के प्रवचनों में से संक्षिप्त व्याख्या - 21. 2.1973, **सोऽहं साधना** सोऽहम् की साधना सिखाता हूँ। जानिये- सोऽहम् रूप में खाली मन, जिस पर आपने माला का साबुन लगाया हुआ है तो सोऽ-अर्थात् भगवान् का आगमन। जानिये- जैसे जल पड़ने से पाप, ताप घुल गये और उज्ज्वल रूप प्रकाश फैल गया। अहम् निर्मल हो गया, तो निर्मल अहम् का कान-नाक वही रहते हुए भी सोऽहम् के प्रकाश से भरपूर हो गया। डूब गया किसी उत्ताल तरंग में, आप धन्य हो गये। भगवान् ने अपना प्रकाश आप में फैला दिया। इसी सोऽहम् की साधना अर्थात् भगवान् में डूब जाना सिखाया।

प्रकाश साधना (ज्योति अवधारण साधना) भगवान् में डूब जाना सिखाने के बाद मैंने प्रकाश की साधना बताई। प्रकाश अर्थात् नीली बत्ती की साधना, किन्तु बत्ती कहाँ जली आपकी। तीसरी अर्थात् आज्ञा चक्र-अर्थात् विवेक की आँख-अर्थात् वह दिव्य दृष्टि, जिसके द्वारा अपने भूत-भविष्य को देख और पहचान सकें। हम आपको आत्मा की आँख खोलने की और चमत्कार की सिद्धि सिखा रहे हैं। अब द्वैत साधना करा रहा हूँ-अद्वैत होने के लिए-केवल रोशनी याद ही मत रखिये। रोशनी में जो प्राण है, उसे देखिये। रग-रग में, अंग-अंग में रोशनी का प्रकाश देखिये। त्रैत से द्वैत और द्वैत से अद्वैत। शरीर से खाली, हर कार्य में भावना के लिये क्रिया करनी है।

पंचकोश जागरण की साधना : आज पाँच योगों के माध्यम से पाँच कोशों का अनावरण करने के लिए पाँच तन्मात्राओं का अर्पण करते हैं। शब्द से आकाश तत्त्व का अर्पण करते हैं। पंचोपचार केवल द्वैत, भगवान् अर्थात् इन्द्रियों की पहुँच तक हम काम करते हैं। आज तक चन्दन की माला, नाम-कर्मकाण्ड, उपासना त्रैत प्रकरण है- किन्तु आपको द्वैत साधना सिखाई जाती है। रूप की साधना में भगवान् का साकार रूप इसलिये बनाया कि एक-एक अंग से उठ-उठ कर कहीं, पर बैठने का प्रयत्न करते हैं। उच्च कोटि की साधना जहाँ कहीं जिस ने भी की है-उन्होंने अन्त में प्रकाश ही देखा है। पाँच कोश-पाँच तत्त्वों से बने हैं। पाँच तन्मात्राओं का अनावरण ही करना, इन शिविरों का उद्देश्य है।

नाद योग साधना: अब आपको भाव-ध्यान करना है। आपका साँप जैसा काला दिल- मीरा की भाँति लहराइये। लहरें आने तो दीजिये। लहरें भावनाओं से ही आती हैं। टंट-घंट ही प्रधान रखेंगे तो कुछ नहीं मिलेगा। काला मन नाद पर लहरा चुकने के बाद भोजन करिये।

भोजन के समय के भाव निर्देश: माता जी द्वारा संरक्षित अन्न इस भाव से ग्रहण करें कि यह काले मन को मलों से छुड़ा रहा है। भोजन के बाद सविता में टहलिये और दिव्य अंश प्रवेश करता अनुभव कीजिये। बाद में एकान्त सेवन कीजिये और भावी जीवन की रूपरेखा बनाइये कि किस प्रकार कार्य पद्धति बनायेंगे। फिर प्रवचन के लिये चले आइये-और सोचिये कि आचार्य जी का एक-एक शब्द केवल आपके अन्दर प्रवेश कराया जा रहा है।

दर्पण साधना : यह ध्यान रखिये कि वेदान्त की साधना उच्चकोटि की साधना है। यह साधना सिखाती है कि हम दो नहीं, एक ही हैं। बूँद सागर है और सागर बूँद है। यह वेदान्त की उच्चस्तरीय योग साधना है। योग के आठ अंग केवल कलेवर हैं, यह तो काया है। यह अद्वैत योग है। दर्पण में अपनी छवि देखिये कि किस प्रकार यह छवि लोभ, मोह में फँसे बन्दर की-सी है। फिर इसके भीतर घुस जाइये-देखिये अंग-अंग में जो तेज चमक रहा है-यह जीवात्मा है। जिस जीवात्मा

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

का तेज इस प्रकार लहरा रहा है, तो इसको शक्ति देने वाला कैसा है। खोज में पड़ जाइये- यह आत्मा ब्रह्म-सोऽहम्, अहं ब्रह्मास्मि, तत्त्वमसि है।

यह सोचिये कि मेरा प्रत्येक कार्य भगवान् का कार्य है। आपको केवल शक्ल की दाढ़ी, मूँछ, बिन्दी, काजल ही देखना है तो कबीर की वाणी याद कीजिये कि ''मुखड़ा क्या देखे दर्पण में।'' गीता में भी भगवान् ने कहा है- अपना सुधार आप करो, जिस दिन समझ गये, तो आत्मबोध हो गया। मैं चाहता हूँ शान्तिकुंज के पेड़ के नीचे आपको आत्मबोध हो जाए।

आत्मबोध-तत्त्वबोध साधना : मरना केवल गाते नहीं, सच्चाई है। जन्म जितना सत्य है, मरना भी उतना ही सत्य। खाना न खायें क्या? टट्टी न जायें, यह कैसे हो सकता है? मैं आपको मार डालूँगा-आप सोचिये कि आप मर गये, आप को उठा कर ले चले। अब आपकी भगवान् के दरबार में पेशी होनी है। पूछा गया, आपने क्या काम किया? कुछ नहीं किया, किया तो केवल जानवरों का ही किया। पिता जी, मैं पाप इकट्ठे कर लाया हूँ, तो पिता भी विवश होकर गधा, घोड़ा, बैल, सुअर बनने के लिये भेज देते हैं। कितनी पीड़ा और हाहाकार आपकी रंगीनियों में छिपा पड़ा है। संग्रह, स्वार्थ ने आपको आत्मबोध नहीं होने दिया। इस साधना से आपको असाधारण वेदना अनुभव होने लगी, तो आपको आधे घण्टे के लिए संगीत में डुबा दिया जाता है। इस आत्मबोध ने आप की आँख खोल दी, आप अपने वस्त्र बदलने के भय को दूर करने लगे। अगर ऐसा हो सके तो वैसे ही आप सफल हो जायेंगे, जैसे विवेकानन्द चार दिन में सफल हुए थे। मैं स्वयं सफल हुआ था। उपासना में चमत्कार न भी हो तो आप घबरायें नहीं, केवल भावनाओं को खोजिये।

मेरी महानता यही है कि अपने प्राण को खून के रूप में निचोड़ कर आप में डाल दूँ। आप को स्वर्ग और नरक की पहचान हो जायेगी। यह चमत्कार, वरदान, अनुग्रह ही है। मैंने ऋषियों और तपस्वियों की भाँति समझकर आपको बुलाया है। मैंने समझा है। आप हज़म कर सकते हैं। यह उच्चस्तरीय साधना है। ◈

शक्ति संचार साधना की दीक्षा एक कार्यकर्ता के शब्दों में

सन् 1961 की बात है। गुरुजी तपोभूमि गेट के दायीं ओर के हॉल में बीस-पच्चीस लोगों की गोष्ठी ले रहे थे। गोष्ठी के बाद उन्होंने पाँच लोगों का नाम लिया और ''विशेष बात करनी है'', कहकर घीया मंडी बुलाया। उस दिन गुरुजी ने अखण्ड दीपक साधना कक्ष के सामने बैठकर हम पाँच व्यक्तियों को शक्ति संचार साधना की दीक्षा दी। उन्होंने कहा ''मैं और मेरे गुरु रविवार और बृहस्पतिवार को सूर्योदय के एक घण्टे पूर्व से एक घण्टे बाद तक तथा रात को नौ से साढ़े नौ बजे तक शक्ति का संचार करेंगे। किसी एक समय तुम लोग सिर्फ चुप बैठना। यदि इस शक्ति का सही उपयोग करोगे, तो यह निरंतर मिलती रहेगी।'' मैं यह साधना आज भी लगभग नियमित करता हूँ।

एक दिन मैंने गुरुजी से पूछा, ''गुरुजी, मुझे तो कुछ भी मालूम नहीं पड़ता। लगभग 25 वर्ष तो हो गये साधना करते हुए।'' गुरुजी बोले ''बेटा, विटामिन सी खाने से कुछ फायदा होता है?'' मैंने कहा, ''गुरुजी, यदि कमी होती है तो जरूर फायदा होता है।'' वे बोले ''फायदा मालूम पड़ता है क्या?'' मैंने कहा ''गोली क्या कर रही है, यह तो मालूम नहीं पड़ता; लेकिन तकलीफ दूर हो जाती है।'' गुरुजी ने कहा ''बेटा, यह अच्छा है कि तुझे कुछ मालूम नहीं पड़ता, जिस दिन मालूम पड़ने लगेगा, उस दिन पगला जायेगा। ऐसे ही ठीक है।''

योग साधना का अर्थ है- उदात्त चिन्तन। तपश्चर्या का तात्पर्य है- आदर्शों के लिए कष्ट सहन।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गाँधी बनने की ललक

(लगभग बीस वर्ष के युवा श्रीराम की कलम से)

गुरुजी गाँधी बनने की तीव्र चाहत रखते थे, सो एक पत्र साबरमती आश्रम लिख भेजा, वहाँ से अनुमति पत्र भी आ गया। वह घर से तीन महीने की छुट्टी लेकर साबरमती आश्रम पहुँच गये। वहाँ सर्वप्रथम उनको जो कार्य दिया गया, वह था- लैट्रिन साफ करना और झाड़ू लगाना। शौचालय का बर्तन उन्होंने साफ किया, तो एक स्वयं सेवक उन पर नजर रखे हुए था। उसने कहा, ''क्या यह बर्तन उतनी अच्छी तरह साफ किया गया है कि तुम सूँघ सको या जितने कि रसोई घर के बर्तन साफ होते हैं ?'' उन्होंने कहा, ''नहीं, यह अभी उतना साफ नहीं हुआ है कि सूँघा जा सके।'' फिर उन्होंने फिर से उसे बहुत अच्छी तरह साफ किया। यह नित्य का क्रम था।

एक दिन जब वे दातून करने के लिए खड़े हुए तो आश्रम की मीरा बहिन दूर से उन्हें देख रही थीं। वे पास आकर बोलीं, ''आपने यह दातून इतना लम्बा क्यों तोड़ा ? अगर ज्यादा लम्बा टूट ही गया, तो इसे अन्यों के लिए छोड़ देना था जिससे कि दूसरों को तोड़ना न पड़ता। आपने इसकी पत्तियाँ भी इधर-उधर फैला दीं जिससे कचरा फैल गया। इन्हें कचरे के पात्र में ही डाला जाना चाहिए था। एक बात और, आप जो यहाँ दातून कर रहे हैं, इससे फर्श गन्दा हो रहा है, दातून नाली के पास खड़े होकर करना चाहिए जिससे कि फर्श गन्दा न हो।'' उन्होंने अपनी गलती सुधारी और फिर कभी ऐसी गलती न होने दी। आश्रम की यह व्यवस्था उन्हें बहुत भायी कि हर स्वयं सेवक कितनी जागरूक दृष्टि रखता है और नये आने वालों को अनुशासन ढंग से सिखाया जाता है। तीन महीने जब बीतने को आये, तो वे एक दिन महादेव भाई रानाडे के आफिस में चले गये। उनसे निवेदन किया कि मैं गाँधी जी से मिलना चाहता हूँ। मैं तो यहाँ गाँधी बनने आया था, पर तीन महीने पूरे होने को हैं और मैं गाँधी न बन सका। उन्होंने कहा, ''अच्छा, तुम सुबह पाँच बजे आश्रम के द्वार पर खड़े रहना, गाँधी जी जब टहलने निकलते हैं, तो तुम साथ में हो लेना। हम तुम्हारी गाँधी जी से बातचीत करवा देंगे।''

सुबह नियत समय पर वे गाँधी जी से मिलने के लिए द्वार पर खड़े हो गये। गाँधी जी टहलने के लिए निकले, तो बालक श्रीराम उनके साथ हो लिये। महादेव भाई ने परिचय करा दिया, और कहा, ''ये गाँधी बनने आया है, और कहता है मैं गाँधी बन नहीं पाया।'' गाँधी जी ने हँसते हुए बालक श्रीराम से पूछा, ''अच्छा बताओ, तुमने यहाँ क्या-क्या काम किया ?'' उन्होंने बताया, कि नित्य झाड़ू लगाना और शौचालय साफ करना। फिर गाँधी जी ने प्रश्न किया, ''अच्छा बताओ, तुमने वह सब कार्य पूरे मन से किये।'' उन्होंने कहा, ''हाँ बापू, मैंने अपने सारे कार्य पूरे मन से किये, पूरी लगन के साथ किये।'' तब गांधी जी ने कहा, तो बेटा, बस तुम बन गये गांधी। बालक श्रीराम को गांधी जी की बात पूरी तरह समझ नहीं आयी। बोले, ''कैसे बन गया गांधी ?'' गांधी जी ने चलते-चलते उन्हें एक वैज्ञानिक थामस डेवी अल्वा एडीसन का प्रसंग सुनाया। बचपन से ही उसके अंदर वैज्ञानिक बनने की ललक थी, लेकिन गरीब परिवार से होने के कारण वह ज्यादा कुछ कर नहीं सकता था। माँ ने उसे एक वैज्ञानिक के पास झाड़ू लगाने का काम दिला दिया। अपनी लगन एवं परिश्रम के बल पर वह उस वैज्ञानिक का सहयोगी बन गया। यह बही एडीसन था जिसने बल्ब का आविष्कार किया। बालक श्रीराम की जिज्ञासा का समाधान हुआ कि जो भी कार्य किया जाये यदि वह पूरी लगन से किया जाये तो उस कार्य में सफलता अवश्य मिलेगी। इन्हीं छोटे-छोटे गुणों से ही इन्सान महान् बनता है। गांधी बनने के सूत्र अपने मन में गाँठ बाँधकर युवा श्रीराम घर चले आये और गांधी बनने की साधना में जुट गये। ज़माना साक्षी है कि आगे चलकर यही बालक वेदमूर्ति, तपोतिष्ठ, युगऋषि कहलाया और युग निर्माण जैसे युगांतरकारी आंदोलन का सूत्रपात किया।

चरित्र साधना का मूलाधार मानसिक पवित्रता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हमेशा याद रहेंगे वे दिन

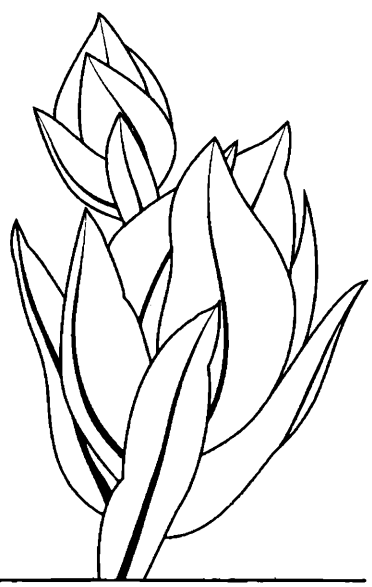
परम पूज्य गुरुदेव के विषय में उनके अति समीप रहने वाले उनके कनिष्ठ सुपुत्र सतीश जी (मृत्युंजय) से बेहतर और कौन हो सकता है, जो बता सके कि वे कैसे थे? उनने उनके समीप 20 वर्ष का जीवन बिताया है। उनके शब्दों में ही पढ़ें....

बाल्यकाल अपने पिताजी व माताजी की अमिट स्मृतियों से भरा हुआ है। हमने तो हर शाम ही देखा कि पिताजी के पास ढेरों व्यक्ति आ रहे हैं, माताजी ढेरों व्यक्तियों को भोजन करा रही हैं। घर (अखंड ज्योति संस्थान) में कई बच्चे जो गायत्री परिवार के कार्यकर्ताओं के बालक भी थे एवं नाते-रिश्तेदारों के बच्चे भी, साथ ही बने रहते थे। छोटा सा घर, पीछे बड़ी छत- पढ़ाई करके आते, फिर दिन भर खेलते। कभी-कभी डाँट भी पड़ जाती, पर मार कभी नहीं पड़ी। एक घटना हमेशा याद रहेगी, जिसने शरीर के साथ भी एक छाप छोड़ दी व प्रकृति भी पूरी तरह बदल दी।

मुझे खाना खाते समय यह कभी भी पसंद नहीं था कि कोई मेरी थाली को छेड़े। किसी के झूठे हाथ स्पर्श करें, इस संबंध में मेरी अपनी मान्यता थी। कई बार इसी बात पर गर्मा-गर्मी हो जाती। फिर माताजी सुलह करातीं। गुस्सा मन ही मन मुझे काफी आता था, जो ऐसे समय निकलता था। ऐसे ही एक दिन, एक साथ रहने वाले संबंधी के हाथ का स्पर्श थाली पर लग गया। मैं संभवत: तीन-साढ़े तीन वर्ष का था। शैलो का उस समय जन्म नहीं हुआ था। मैं गुस्से में उठा। थाली एक तरफ सरकायी एवं सीधा नीचे प्रेस की ओर भाग गया। गुस्से में आकर अपना हाथ मशीन पर रख दिया कि कटता है तो कट जाने दो। देखते-देखते हाथ मशीन में चला गया। जब तक मशीन मैन समझते कि क्या हो गया तब तक हथेली बुरी तरह पिस गई थी। एक उँगली, हड्डी सहित कटकर वहीं गिर गई। हाहाकार मच गया। माताजी व पिताजी दौड़ते हुए नीचे आए।

पिताजी ने डाँटा - कहा, देख लिया गुस्से का नतीजा। अपना ही हाथ कटा बैठा। माताजी कुछ न बोलकर सीधा रिक्शा लेकर मुझे अस्पताल ले गयीं। डाक्टर ने पूछा कि एक उँगली और भी थी, वह नहीं है। पीछे से बड़े भैया ओमप्रकाश जी उसे लेकर दौड़े आ रहे थे। सिविल अस्पताल मथुरा में उस समय कहाँ प्लास्टिक सर्जरी आदि की सुविधा थी, किंतु डाक्टरों ने परिश्रम करके टूटी उँगली भी जोड़ दी।

हाथ थोड़े ही दिनों में इस योग्य हो गया कि उससे सामान्य काम लिये जा सकें। अस्पताल से छुट्टी मिलने पर जब घर आये, तो पिताजी ने बिठाकर समझाया। गुस्सा नहीं करना चाहिए। तुम्हारा एक हाथ हमेशा इसकी याद तुम्हें दिलाता रहेगा। तबसे आज तक अपने क्रोध पर नियंत्रण रखा है। उनके निर्देशानुसार बनने का प्रयास किया है। जीवन भर यही देखा कि पिताजी कभी



पवित्र और प्रखर व्यक्ति ईश्वर के दरबार में प्रवेश पाने और अनुग्रह उपलब्ध करने के अधिकारी होते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

बाहर जा रहे हैं- एक नहीं पंद्रह-बीस दिनों के लिए। परिजनों का ताँता भी लगा ही रहता था। माताजी एवं ताईजी ही सारी देखरेख करती थीं। जब हमें अपने हम-वयस्क मित्र मिलते तो हम शरारतें करते थे। गुस्सा अब शरारती स्वभाव में बदल गया था। तपोभूमि में सब प्रवचन सुनते हम पास के बगीचों में खेलते रहते। एक दिन एक भक्त ढेर सारे नारियल लेकर आए। कुछ गायत्री माता को चढ़ाए, शेष अपने पास रख लिए। डॉ0 अमलकुमार उन दिनों पढ़ रहे थे। वे भी आते रहते थे। हम दोनों ने साथियों सहित योजना बनायी कि उनके पास रखे पानी वाले नारियल खाने हैं।

जब वे दिन में कमरे में विश्राम कर रहे थे, तब एक-एक करके सारे नारियल बाहर ले जाकर हमने फोड़े व प्रेम से खाए। उसके खाली खोल हमने इस तरह रख दिये, मानो उन्हें किसी ने छुआ ही न हो। जब उसने शाम को अपना खजाना देखा तो खूब खीझा। गुरुजी के पास जाकर शिकायत की कि कुछ बंदर आकर मेरा प्रसाद खा गये। उसे तो गुरुजी ने समझा दिया पर हमें बुलाकर अच्छी डाँट लगाई कि तुम्हें जिम्मेदारी भरा काम करना है। ऐसी शरारतें मत किया करो। नरमेध यज्ञ के बाद हम एक वर्ष तक गुरुजी -माताजी से दूर रहे। तब हमें बड़ी याद आती थी। उम्र भी हम दोनों भाई-बहनों की कम थी, पर हमने किसी तरह अपनी पढ़ाई भी चालू रखी व एक-दूसरे को आश्वस्त कर अपना जी हलका कर, वह समय काटा। एक वर्ष पूरा होते ही पिताजी आए- दोनों को छाती से लगाया और अपने साथ मथुरा ले गए।

हरिद्वार का आश्रम बन रहा था, माताजी भी एक दो बार होकर आ गयी थीं। उस समय लगभग इक्कीस वर्ष की उम्र हो रही थी। इतनी जल्दी-जल्दी पिताजी निर्णय ले रहे थे कि लगता था कैसे यह सब होगा? इधर बहिन शैल के लिए डॉ0 प्रणव को देख लिया था। उनकी शादी की तैयारी भी करनी थी। पिताजी 1971 की जून के मध्य में जाने के कारण विगत 5-6 वर्षों से अखण्ड ज्योति में लिख रहे थे। शादी भी हुई। हमने अपने मन की करने की खूब सोची, पर पिताजी ने सादगी पर जोर देकर जैसा जीवन स्वयं जिया वैसा हम सभी से कराया। हमें जिम्मेदारी का अहसास कराया व कहा कि अब अपने कंधे मजबूत करो। तुम्हें प्रेस-प्रकाशन की जिम्मेदारी सँभालनी है।

सन् 1971 में 20 जून को मथुरा छोड़ने के बाद पिताजी जीवन भर कभी वापस मथुरा नहीं आए। आज अखण्ड ज्योति संस्थान जो भी कुछ है, उन्हीं की शक्ति से खड़ा है। बाईस साल की उम्र में वे जिम्मेदारी सौंपकर गए थे, उसको उनकी ही कृपा से निभाने का प्रयास किया है। उनके अहसानों से मेरा रोम-रोम कृतज्ञ है। ◈

पूज्यवर ने एक आदर्श आचार संहिता के नाते प्रत्येक परिजन से (शान्तिकुञ में) प्रवेश के समय एक ही बात कही थी कि-"तुम सब यह मानकर चलना कि यह तुम्हारी ओढ़ी हुई गरीबी है। तुम्हारी इस गरीबी में ही तुम्हारी शान है। कभी किसी से कभी कुछ माँगना मत एवं जो कुछ भी कोई तुम्हें व्यक्तिगत रूप से दे, उसे अपना न मानकर माताजी को दे देना, ताकि वह समष्टिगत रूप से बँट सके।

जिस दिन तुम्हें दीन-हीन याचक माना जाने लगेगा, तुम पर भेंट तो न्यौछावर होगी, घर जाकर भी तुम्हें तुम्हारे वाक्-कौशल से प्रभावित हो, कोई न कोई कुछ दे जायेगा, पर बेटा उसी दिन से तुम्हारा ब्रह्मतेज समाप्त होने लगेगा। माताजी के दिए पैसे से तुम चने खाकर संतोष कर लेना, पर दूसरों के दिये बादाम मत खाना। जिस दिन इस स्तर का ब्राह्मणत्व तुम्हारे अंदर उतर गया, मानो एक लोकसेवी का सही मायने में उदय हो गया।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साधना सत्रों की दिव्य अनुभूतियाँ

प्राण प्रत्यावर्तन की साधना काल में साधकों को विलक्षण अनुभूतियाँ हुईं। सब अपनी-अपनी डायरी भी लिखते थे। प्रस्तुत है, उन अनुभूति के पलों के कुछ संक्षिप्त अंश-

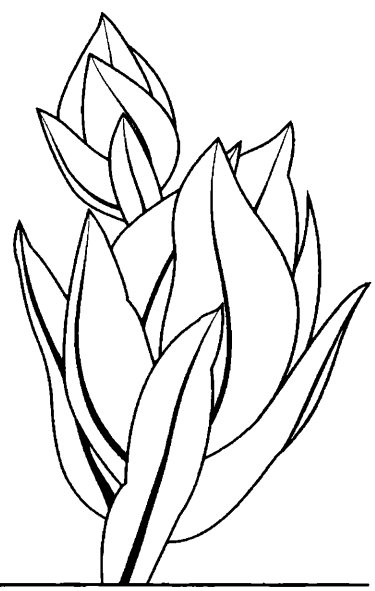
एक साधिका की डायरी, दिनांक 16-2-1973- "सोऽहम् साधना के समय आभास हुआ-जैसे सो स्वर में पूज्यवर की ओर से कुछ आकर अहं में घुला जा रहा है और दाईं ओर से दादा गुरुजी की ओर से कुछ आकर अहं में घुला जा रहा है। यह जो कुछ अनोखा घुलना प्रारंभ हुआ, उससे ऐसा आभास होने लगा कि किसी बड़ी ही अनुपम सत्ता का प्रभुत्व काया पर हो गया, जिससे रोम-रोम हर्षित होने लगा। अनोखा आनंद आने लगा, पर यह क्या आनंद के साथ एक चीत्कार का-सा आभास होने लगा और वह चीत्कार करुण क्रंदन में बदल गया।

कुछ अंदर-ही-अंदर हाहाकार होने लगा और जिस सत्ता का प्रभुत्व रोम-रोम में बसा हुआ था, उसने रोम-रोम में कुछ जलाना शुरू कर दिया। जलने का रूप किसी आकार में नहीं, अपितु तीव्र आभास होने लगा। नस-नस से कुछ जलकर बह चला और उसकी एक धारा जैसी बन गई, जो गंगा जी में गिरती-सी अनुभव होने लगी। जो हाहाकार हो रहा था, वह मानो पूज्यवर के युगल शरीर को पुकारने लगा। यह कहने लगा कि मुझे क्यों तपती धरती पर भेज दिया। मैंने क्या कसूर किया, जो मुझे अपने ठण्डे स्थान से इस जलती दुनिया में ढकेल दिया? आँखों से अश्रुधार बहने लगी और चीख-पुकार तीव्रतम होती चली गई।

पुकार हो रही थी, मुझे मेरे ठण्डे स्थान पर ले चलो, मुझे यहाँ जलती दुनिया से उठा लो, मुझे मेरे स्थान पर पहुँचा दो। मेरा जितना इस जलते संसार में शेष है, उसे अब आप स्वयं चुकता कर दो, बस एक बार बचा लो। मैं आपका सब भार चुकता कर दूँगी। जलन में भयंकर ताप महसूस हो रहा है और कुछ गल रहा है, कुछ बह रहा है, यह आभास हो रहा था। शरीर शिथिल पड़ा था, जलता रोम-रोम शांति का दान माँग रहा था। तभी नादयोग साधना प्रारंभ हुई और शीतलता का प्रवाह बढ़ने लगा। ऐसा अनुभव होने लगा कि माँ भगवती देवी झंकार के माध्यम से रोम-रोम की जलन बुझा रही हैं और अब शीतलता नस-नस में, अंग-अंग में फैल चली।

मन प्रफुल्लित होने लगा, इस आनंद में मग्न होकर अंतर मन इस प्रकार निढाल होकर पड़ा रहा, जैसे मिट्टी के ढेर में उठने की शक्ति ही नहीं है। अंत:करण ने पुकार की, मुझे गुरुदेव के पास जाना है, कोई उन तक पहुँचा दे। कैसे पहुँचूँ, क्या करूँ? इतने में भोजन की घंटी बज उठी और ध्यान की तंद्रा भंग

बड़े विलक्षण थे वे प्राण प्रत्यावर्तन सत्र। अगणित साधक स्तर के कार्यकर्ता इसमें उभरकर आए। ऐसे साधकों को अपनी साधना के दौरान जो अनुभूतियाँ हुईं, वे सभी को जानने योग्य हैं। मन, वाणी, अंत:करण को, जो शक्ति प्रवाह स्पर्श कर गया, वह अप्रतिम था...



पवित्र और प्रखर व्यक्ति ईश्वर के दरबार में प्रवेश पाने और अनुग्रह उपलब्ध करने के अधिकारी होते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

हो गई। बहुत प्रयत्न करके भोजन के लिए उठ खड़ी हुई, किन्तु अंतर की मस्ती इतनी थी कि कोई होश-हवास नहीं था।''

20. 2. 1973 एक साधक की डायरी के अंश: - आज प्रात: 7:30 बजे जैसे ही उपासना क्रम चालू किया, कुछ अजीब सा वातावरण छा गया। आसन, प्राणायाम, धूप, दीप, अक्षत किसी का भी मंत्र पूरा बोलना कठिन पड़ा और कुछ असाधारण सा अनुभव होने लगा, फिर एक अनोखे दृश्य पर मन टिक गया। विशाल सागर जिसका ओर-छोर नहीं है।

हलकी और बड़ी तरंगें भी अनुभव होने लगीं और दूर क्षितिज पर सुन्दर गोलाकार सूर्य देव के आगे कोई मानवीय आकृति झलकने लगी। मन समुद्र की उत्ताल तरंगों पर नाचने लगा, झूम उठा और आँसुओं की झड़ी लग गई। भावना उठी, यह मूरत किसकी है? यह इतनी दूर क्यों है? यह दूरी सहन नहीं हो पा रही। व्यग्रता बढ़ी, और बढ़ती गई। समीप से दर्शनों की आकुलता होने लगी। अचानक दूरस्थ प्रकाश पुञ्ज समीप आ गया और ऐसा दिव्य प्रकाश फैल गया कि आत्मा धन्य हो उठी और दूरस्थ मूर्ति भी समीप विराज गई। अरे!

यह क्या? यह तो दादा गुरुदेव हैं! गुरुदेव नहीं। तभी प्रकाशस्थ मूर्ति ने कहा कि मुझमें और उनमें अन्तर नहीं है-वे सूर्य हैं और हम सविता। मन कुछ समझा नहीं, फिर छाया गुरुदेव को प्रणाम करने की उमंग उठी-किन्तु यह क्या, हाथ नहीं उठते-अच्छा प्रभु मैं विवश हूँ-मैं आपके आगे नतमस्तक हूँ। आत्मा को स्पष्टीकरण देने के लिये ऐसा आभास हुआ कि सर्व श्री दादा गुरुदेव समझा रहे हैं कि मैं सविता साक्षात् ईश्वर हूँ और आचार्य जी धरती पर मेरे प्रतिनिधि। मैं अदृश्य हूँ, किन्तु मेरी दृश्यमान मूर्ति आचार्य जी हैं। यह संसार कल्याण के लिए, नवनिर्माण के लिए अनेकों रूपों में उद्यत हुए हैं। यह वही क्रम है, जैसे सविता देवता की शक्ति से सूर्य कार्य करता है। यदि अभी भी समझ में कुछ कमी हो, तो जैसे विराट् रूप दिखाया था, उसी प्रकार अपनी और आचार्यजी की कार्यपद्धति दिखा दूँ। किन्तु हर्षित आत्मा-हर्ष और असीम ज्ञान के पाने से कंपित-सा हो उठा और पुकार उठा, ''जो आप कह रहे हैं, मुझे इसमें संदेह नहीं है। मेरा गात (अस्तित्व) अब इससे आगे का वर्णन अपने में समा नहीं पाएगा, अत: मुझे सब कुछ मान्य है। फिर दादा गुरुजी ने कहा, ''माता भगवती भी साधारण नहीं हैं। यह गायत्री शक्ति, सरस्वती शक्ति, दुर्गा शक्ति सभी देवियों की अधिष्ठात्री देवी हैं।''

''फिर गायत्री की, प्राण-दायिनी की, सरस्वती की, दुर्गा शक्ति की व्याख्या हुई। गायत्री मंत्र के अर्थ की भी अनुपम व्याख्या हुई। फिर स्पष्ट हुआ कि आचार्य जी सविता देवता का काम करने को उद्यत हैं, जिसकी आज के समय को परम आवश्यकता है। इस बीच नादयोग साधना के लिए नाद की स्वर लहरी बज उठी जिसके साथ मन-आत्मा झूम उठे, हर्षित-पुलकित हो उठे और फिर भोजन की घण्टी के साथ ही ध्यान की यह तंद्रा टूटी। आज जीवन का अलौकिक आनंद पाकर जीवन धन्य हो गया।''

23. 2.1973 एक साधक की डायरी के अंश - आज ध्यान के क्षणों में अंतर मन में प्रश्न उठा कि शिव भगवान् ने सती के शरीर के दस टुकड़े क्यों कर दिये थे? मरी हुई सती को इस प्रकार क्यों काटा? उत्तर मिला कि ईश्वर के साथ जुड़ी हुई आत्मा की, दिखाई पड़ने वाली यह दुर्गति नहीं है। अपितु वास्तविकता यह है कि सती कक्षा में प्रविष्ट आत्मा जब अपना आपा भगवान् को सौंप देती है, तो भगवान्, कल्याण के सागर उस दृढ़ संकल्पवान् के विकारों वाले दसों द्वारों को बन्द करने को उद्यत होते हैं अर्थात् दस इन्द्रियों का निग्रह किये बिना आत्मा परवर्ती नहीं हो सकती। इस कारण भगवान् उच्चता की ओर बढ़ने वाली आत्मा को दसों द्वारों से संघर्ष करने के लिए दसों द्वारों पर नियुक्त कर देते हैं। यही सती के शरीर के दस टुकड़े करने का रहस्य है।

दसों इन्द्रियों को वश में करके आत्मा जब निर्मल, उज्ज्वल, पवित्र और सूक्ष्म हो जाती है। फिर उस परवर्ती आत्मा पर कल्याण के भण्डार भोलेनाथ अपना अक्षय भण्डार लुटा देते हैं-किन्तु जो शव जैसी आत्मा, मैं-मैं ही करती रहती है। वह दक्ष प्रजापति की भाँति नष्ट-भ्रष्ट हो जाती है।'' इतना अनुपम रहस्य वर्णन श्रीगुरु मुख से सुनकर आत्मा आनंद विभोर हो उठी। उस मस्ती का, आनंद का शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता। ◈

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org





प्रथम अश्वमेध महायज्ञ - जयपुर (नवम्बर 1992)

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

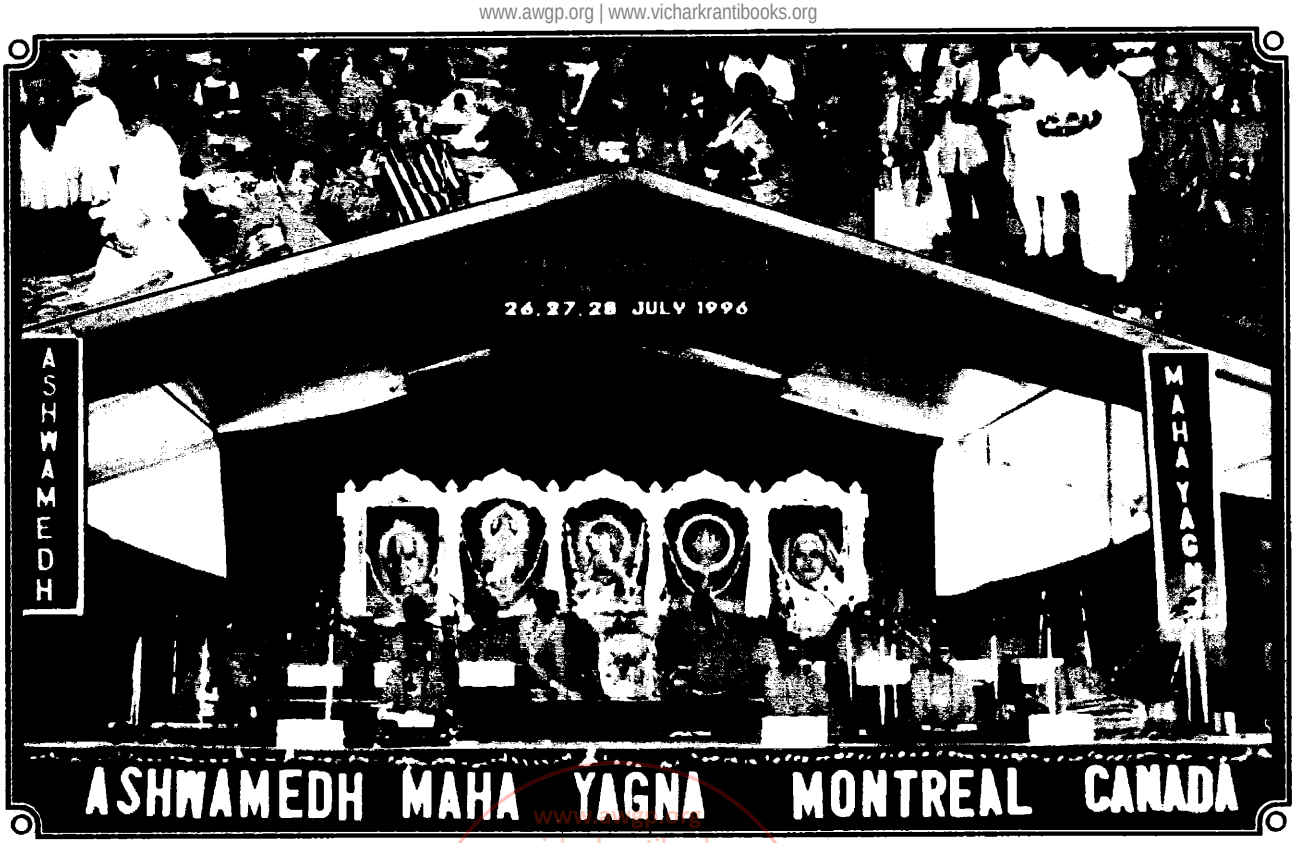






विदेश में संपन्न अश्वमेध महायज्ञ 1993-1994

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org





विदेश के अश्वमेध महायज्ञ

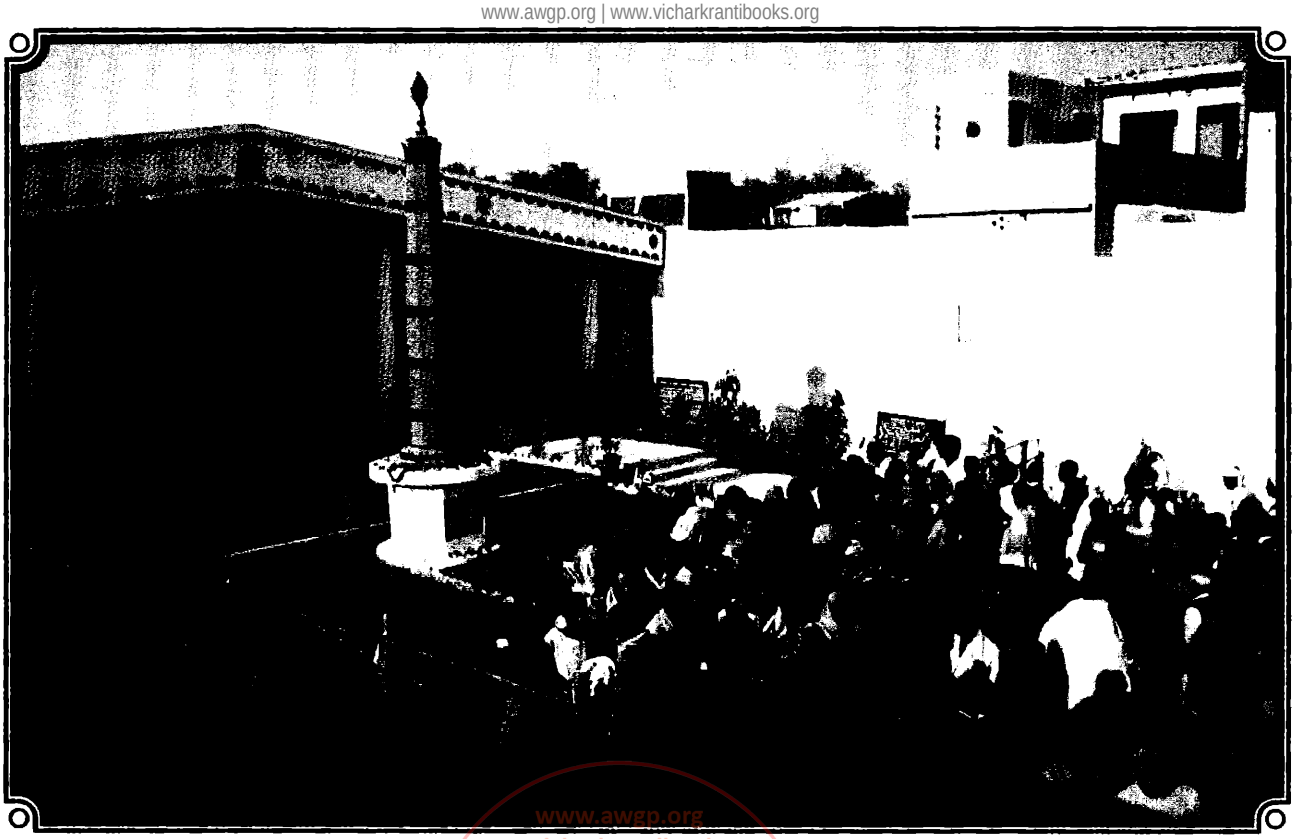
Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org





मातृसत्ता का महाप्रयाण, अक्टूबर 1994 में उन्हें श्रद्धाञ्जलि

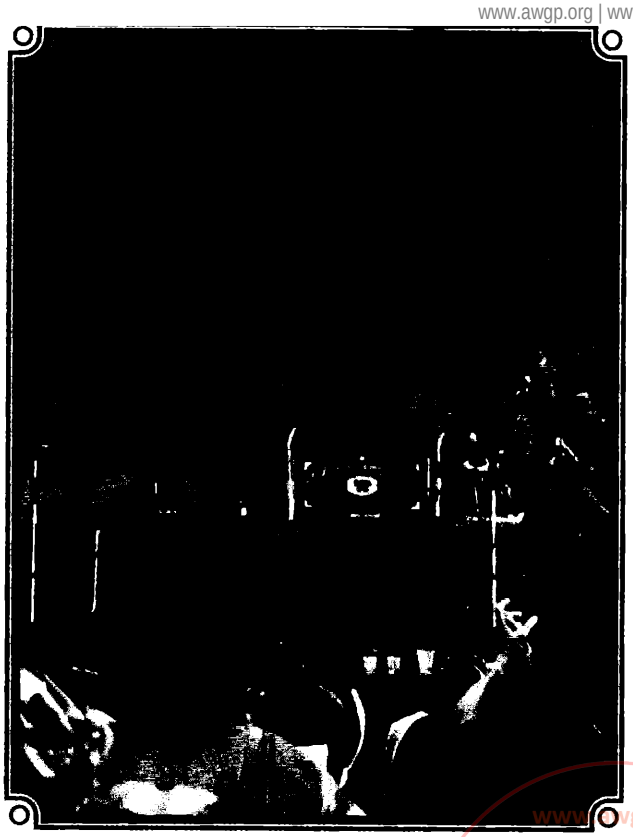
Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

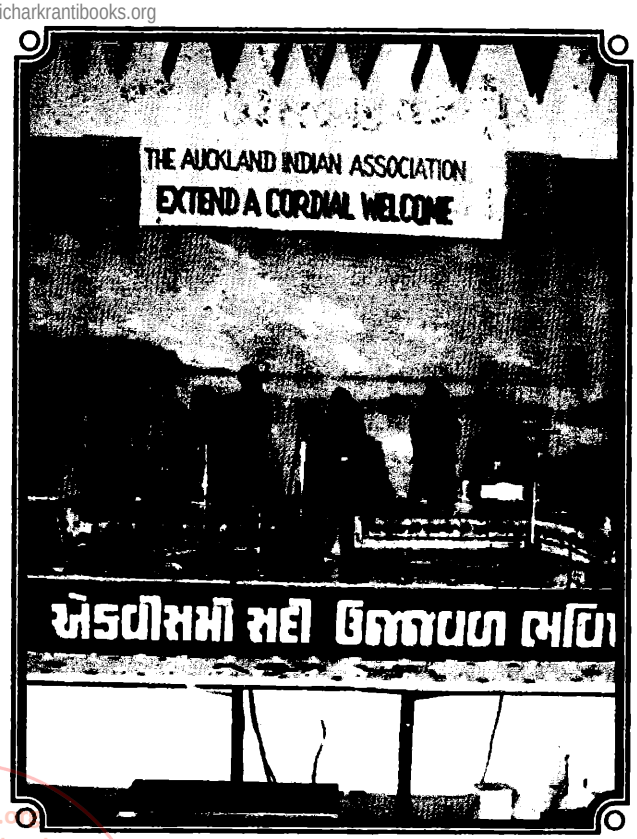




आँवलखेड़ा की प्रथम महापूर्णाहुति (1995)

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



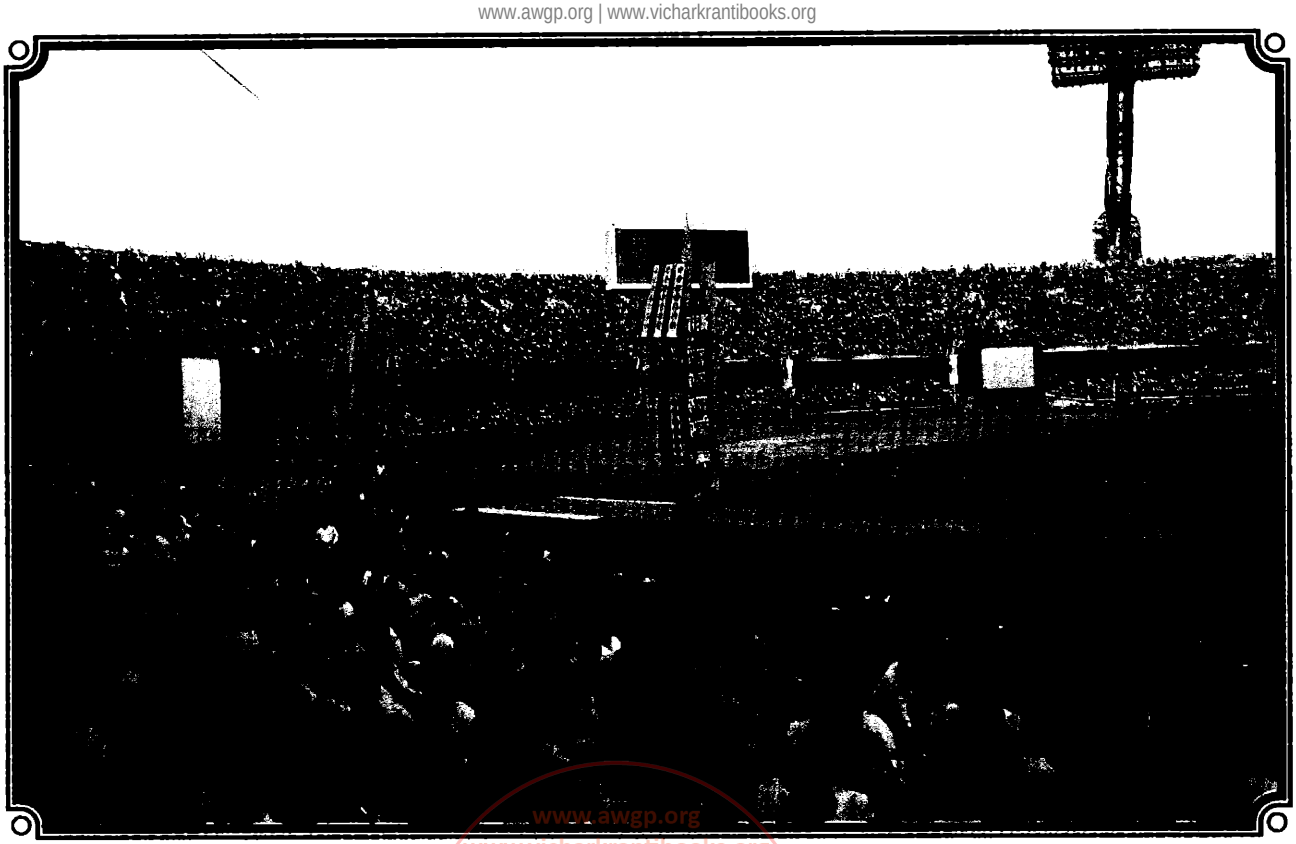


www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org



वाजपेय ज्ञानयज्ञ - न्यूजर्सी (1998)

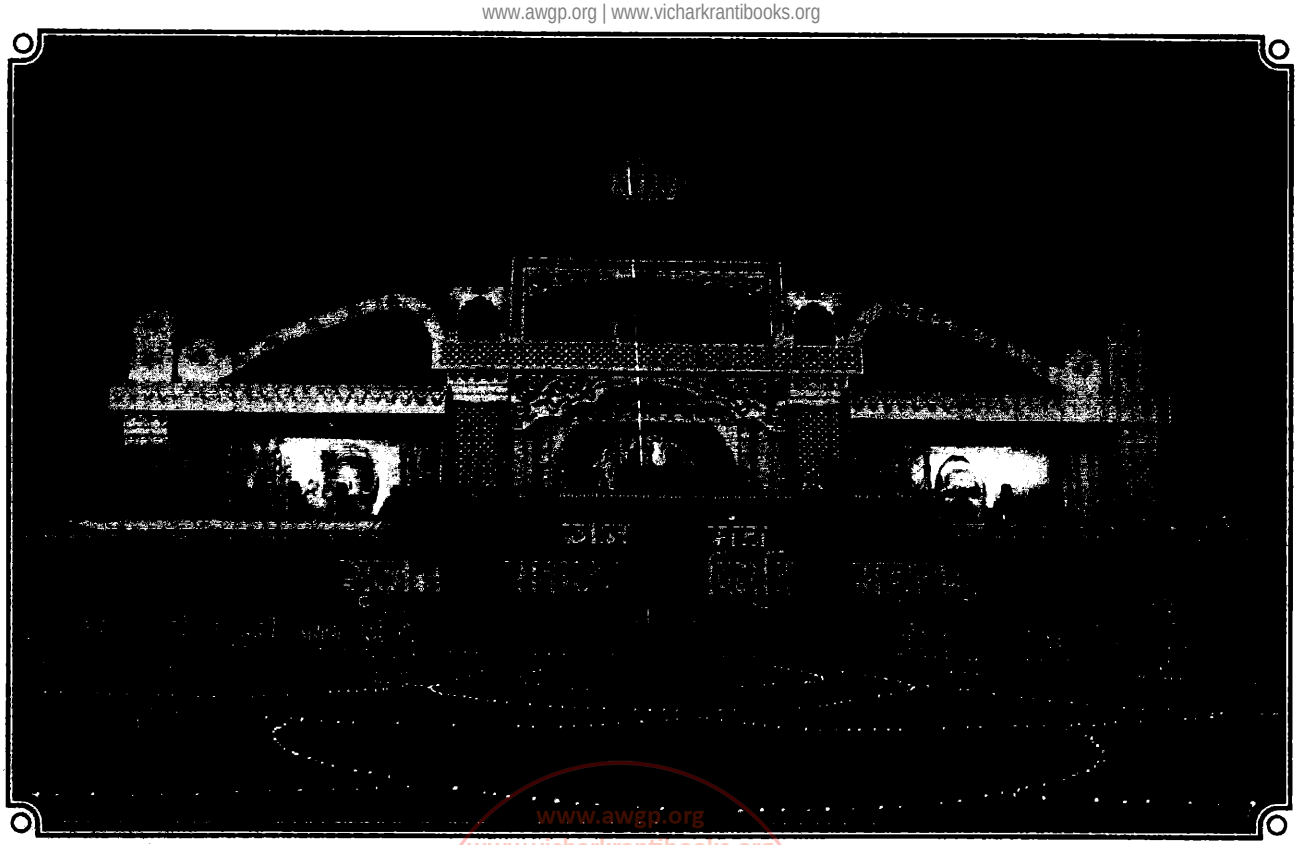
Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

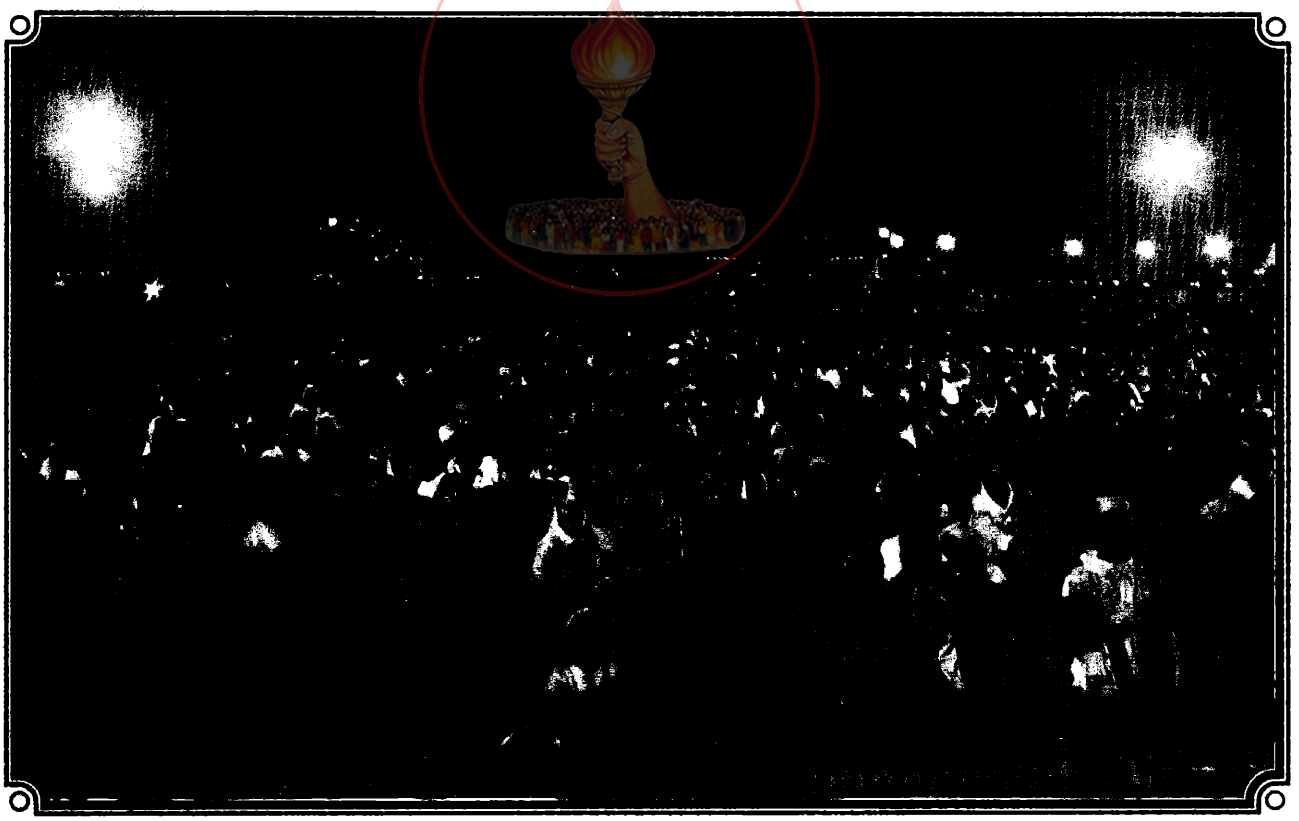




विराट विभूति ज्ञानयज्ञ - नई दिल्ली (2000)

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org





हरिद्वार में संपन्न महापूर्णाहुति (2000)

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गुरुजी का अलौकिक स्वरूप

आध्यात्मिक महापुरुषों का जीवन अलौकिक होता है। लेकिन वे सामान्यतः इसे छुपाए रहते हैं। कभी-कभी ही वे इसे आवश्यकता पड़ने पर प्रकट करते हैं या इसका संकेत देते हैं। आचार्य श्री के जीवन से जुड़ी ऐसी ही कुछ घटनाओं का वर्णन प्रस्तुत है; जो प्रामाणिक दस्तावेज के रूप में भक्त साधकों एवं शिष्यों के जीवन का अभिन्न अंग बन चुकी है।

कुएँ का पानी मीठा हो गया

शांतिकुंज की एक कार्यकर्ता बहन बताती हैं कि दिगौड़ा (टीकमगढ़) की बात है। वहाँ के एक कार्यकर्ता भाई, श्री सोनकिया जी ने कहा, ''बहन जी, आज हम आपको वहाँ ले चलते हैं जहाँ से गुरुजी कभी पैदल गये थे।'' वे हमें उस रास्ते से ले गये और बोले, ''इन गलियों में से गुरुजी कभी अपना सामान भी स्वयं लेकर चले थे।''

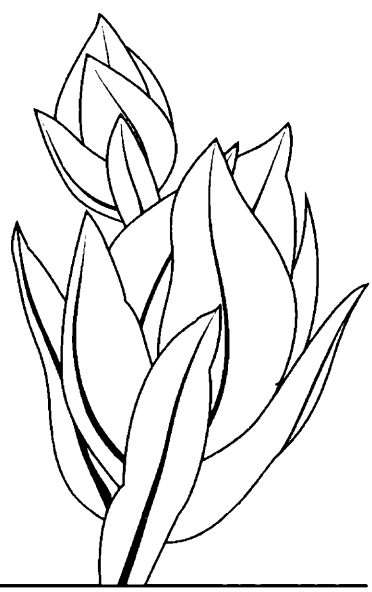
''गुरुजी, एक हाथ में लोहे का बक्सा और कंधे पर अपना बिस्तर लेकर चलते थे। उनकी इस सादगी से कोई जान ही नहीं पाया कि वे इतने बड़े महापुरुष हैं।'' मैंने कहा- ''गुरु जी, अपना सामान मुझे दे दीजिये'' तो वे बोले, ''नहीं-नहीं अपना ही सामान है।''

हम लोग वहाँ पहुँचे, जहाँ मंदिर बन रहा था। वहाँ पर एक कुआँ खोदा गया था, जिसका पानी खारा था। लोगों ने बताया कि कितनी मेहनत से कुआँ खोदा गया और इसका पानी खारा निकल गया। अब इसका क्या उपयोग? क्या करें? गुरुजी ने सब बात सुनी और कहा, ''अच्छा! खारा है बेटा! पानी खारा है! लाओ रस्सी, बाल्टी, देखें!'' गुरुजी ने स्वयं कुएँ से पानी निकाला और उसे पिया। फिर बोले, ''बेटा! ये तो मीठा है। कहाँ खारा है? देखो! कहाँ खारा है?'' और उन्होंने सबको थोड़ा-थोड़ा पानी पीने के लिये दिया। सबने पानी पिया और सब हैरान रह गये कि खारा पानी, मीठा कैसे हो गया? तब सबने गुरुजी की शक्ति को पहचाना और उनकी जय-जयकार करने लगे।

गंगाजल पीकर गंगा को रोका

एक कार्यकर्ता ने बताया कि अगस्त 1987 के आस-पास की बात है, पूज्य गुरुदेव ने मुझे बुलाकर कहा, ''बेटे, मुझे गंगाजल पीने का मन है। माताजी से पात्र लेकर गंगा जल ले आ।'' मेरे द्वारा लाया जल गुरुदेव लेंगे, यह सोचकर खुशी से दौड़ा हुआ गया और केन में जल भरकर ले आया। गिलास में जल भरकर पूज्य गुरुदेव को देकर लौटने लगा। गुरुदेव ने जल पीते हुए कहा, 'रुक जा।' मैं कमरे के दरवाज़े पर रुक गया। मुझे खड़ा देखकर गुरुदेव बोले, ''तुम्हें नहीं रोक रहा हूँ, तुम जाओ।'' मैं जल भरा केन वहीं छोड़ कर आ गया।

उसी वर्ष दिसम्बर में पूर्णिया जिले के तेल्दिया गाँव में प्राण प्रतिष्ठा के लिए मुझे भेजा गया। उन्हीं दिनों समाचार पत्रों में उत्तरी बिहार में भयावह बाढ़ के समाचार आ रहे थे। जिनके अनुसार आज़ादी के बाद बने उत्तरी बिहार की नदियों के अनेक तटबन्ध टूट गये थे। जान-माल की भारी क्षति हुई थी। गाँव के गाँव बह गए थे। प्लास्टिक की छत बनाकर लोग राजपथ पर, तटबन्धों के



ईश्वर उपासना वासना की आग को बुझाती है और तृष्णा की जलन को शांत करती है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

पास रह कर बचने का प्रयास कर रहे थे। पर इधर हर किसी की जुबान पर एक ही बात थी, ''हमें तो गंगा मैया ने बचाया।''

पूछने पर पता चला, जिन दिनों उत्तरी बिहार की सभी नदियों में बाढ़ थी, गंगा का जल स्तर नीचा था और सभी नदियों का जल उसमें समाकर समुद्र में जा रहा था। गंगा मर्यादा में ही बहती रही। लोगों की बात सुनकर मुझे उस दिन का प्रसंग याद आया, जब गुरुदेव ने गंगा जी से जल माँगा कर पिया था और घूँट भर कर कहा था ''रुक जा'' मैं बरबस ही यह सोचने के लिये मजबूर था कि क्या, गुरुदेव ने उस दिन माँ गंगा को रुकने का आदेश दिया था और बिहार को दोहरी त्रासदी से बचाया था? **राम-सीता के स्वरूप में दर्शन दिये :** एक कार्यकर्ता बताते हैं कि एक बार उनके मन में आया कि देखें, गुरुजी हमारे बुलाने पर घर आते हैं कि नहीं। वे हरिद्वार के पास ज्वालापुर के ही रहने वाले थे। वह बताते हैं कि जैसे ही हम पूज्यवर के पास पहुँचे, हमारे कुछ बोलने से पहले ही वे खुद बोल पड़े, ''बेटा, हम तुम्हारे यहाँ आने के लिये कई दिन से इन्तजार कर रहे हैं।''

मैं सुन कर दंग रह गया। सोचा कि यह अवश्य ही अंतर्यामी हैं, जो तुरंत मेरे मन की बात जान ली। 15 जनवरी सन् 77 को ठीक 12:00 बजे दोपहर में परम वंदनीया माताजी एवं परम पूज्य गुरुदेव हमारे घर पधारे। उन्होंने कहा- ''बेटा किसी को बुलाना मत।'' क्योंकि वे केवल भक्तों का ही सम्मान करने हेतु वचनबद्ध थे, सबकी मनोकामना हेतु नहीं। अपने भगवान् को अपने घर पाकर हम लोग निहाल हो गये। उस समय हमें वे स्पष्ट रूप से राम-सीता के स्वरूप में आभासित हुए।

एक साल बाद फिर उसी दिन 15 जनवरी सन् 1978 को वे दिन के 12:00 बजे ही आये। उस दिन भगवान् श्रीकृष्ण और शिव शंकर के रूप में दिखे। माथे पर पूर्ण चन्द्रमा था। दोनों बार वे एक-सवा घंटे तक बैठे, बातचीत की, मेरे मन की सम्पूर्ण गाँठें खोलते रहे। अनेक चर्चाओं के बीच उन्होंने दो महत्त्वपूर्ण बातें कहीं-

(1) बेटा, मेरे गुरु मेरे घर आये थे, देख! मैं भी तेरे घर आ गया।

(2) बेटा, मैंने तुझे तेरे और अपने दो जन्मों का बोध करा दिया है।

अन्त में उन्होंने हम दोनों से पूछा, ''बेटे! तुम्हारी कोई इच्छा है?'' हमने कहा ''नहीं गुरुजी, कोई इच्छा नहीं है।'' और फिर हम पूरी तरह गुरुजी को समर्पित हो गये।

गंगा को हमारा आशीर्वाद कहना : एक दिन भक्तिन अम्मा ने पूछा-''गुरुजी, आज कार्तिक पुन्नी ए, गंगा नहाये जाथन, सब लइकामन घलो जाबोन कहत हैं।'' (आज कार्तिक पूर्णिमा है, गंगा स्नान करने जाते हैं। सभी लड़कियाँ भी जाने के लिये कह रही हैं।)

गुरुजी ने कहा, ''अच्छा-अच्छा! आज कार्तिक पूर्णिमा है? ठीक है, ठीक है। चले जाना। कार्तिकेय को हमारा आशीर्वाद कहना। गंगा को हमारा आशीर्वाद कहना।''

वहाँ उपस्थित सभी बहिनें उनके शब्दों को सुन कर कुछ क्षणों तक सोचती रह गईं कि गुरुजी यह क्या कह रहे हैं? ''कार्तिकेय को हमारा आशीर्वाद कहना। गंगा को हमारा आशीर्वाद कहना।'' माँ गंगा व कार्तिकेय को आशीर्वाद कौन दे सकता है? माँ गंगा व कार्तिकेय को आशीर्वाद देने की सामर्थ्य रखने वाले साक्षात् शिव के अतिरिक्त और कौन हो सकते हैं?

उनकी सर्वज्ञता : एक परिजन बताते हैं कि एक दिन मैंने गुरुकुल काँगड़ी के पास दो रुपये का लाटरी टिकट खरीदा, पर यह बात किसी से कही नहीं। किन्तु गुरुदेव ने दो-चार दिन बाद मुझसे कहा, ''कहीं मुफ्त के पैसे से कोई रईस बना है क्या?'' मैं अवाक् रह गया। बिना कहे ही गुरुदेव ने जान लिया। मैं उनकी सर्वज्ञता पर नत मस्तक था। फिर मैंने वह टिकट फाड़कर फेंक दिया।

यह स्थान नोट कर लो: जनवरी 1969, में बिलासपुर में गुरुजी ने 'ग्रेजुएट कॉन्फ्रेंस, ठाकुर छेदीलाल सहकारी सभा कक्ष' में कहा था, ''यह स्थान नोट कर लो। मेरा यह भाषण नोट कर लो और यह समय नोट कर लो। ये भाषण मैं कहाँ-कहाँ कर रहा हूँ, पता लगा लेना।'' उस सभा में बिलासपुर के कर्मठ कार्यकर्ता श्री रामाधार विश्वकर्मा जी व उमाशंकर

अध्यात्म का उद्देश्य मनुष्य को पाप और कुविचारों की असुरता से छुड़ाकर सत्य और धर्म की सुख शांतिमयी गोदी में पहुँचा देने का है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चतुर्वेदी जी भी थे। इन दोनों भाइयों ने बाद में पता लगाया था। गुरुजी का वह प्रवचन उसी समय में पाँच जगहों में हुआ था। जिसमें से एक कलकत्ता, एक ग्वालियर में हुआ था।

तेरे शिव-पार्वती हम ही हैं : एक कार्यकर्ता बताते हैं कि उन दिनों मैं शान्तिकुञ्ज में निर्माण विभाग में था, मजदूरों के साथ चौबीस बार गायत्री मंत्र बोलता था तथा उन्हें बताता था कि पूज्यवर साक्षात् शिव के अवतार हैं।

एक दिन कुछ मजदूरों ने कहा, ''भाई साहब! हम लोग नीलकण्ठ जा रहे हैं, आप भी चलिए न। पिकनिक भी होगी। आप भी होंगे तो बहुत अच्छा लगेगा?'' मैंने उनसे कहा, ''मुझे गुरुदेव ने मना किया है। कहा है, उत्तर दिशा में नहीं जाना।'' वे सभी मन मार कर चले गये।

कुछ वर्ष बाद मेरे मन में भी इच्छा हुई। माताजी के पास गया, वहाँ दस-बारह बहिनें बैठी हुई थीं। मैं वापस जाने लगा। माताजी ने कहा, ''लल्लू जाना नहीं। एक मिनट रुको, क्यों आये हो?''

मैंने कहा, ''माताजी, नीलकण्ठ जा रहा हूँ।'' ''क्या है वहाँ?'' माताजी ने पूछ लिया। मैंने जवाब में कहा, ''माताजी शंकर जी का सिद्धपीठ है।'' माताजी गंभीर हो गईं व कहा, ''ना बेटे! तू मत जा। तेरा अगर श्रद्धा-विश्वास है, तो तेरे शिव-पार्वती हम ही हैं।''

मैं अचंभित होकर माताजी को एकटक निहारने लगा और मन में सोच लिया ''अब कहीं नहीं जाना।'' बाद में भी मन कहता रहा, यद्यपि हम जानते हैं कि वे शिव-पार्वती स्वरूप हैं। फिर भी क्यों बार-बार भूल जाते हैं? और वह करुणामयी माँ, हमें हमारी भूलों को सुधार कर पुनः-पुनः स्मरण करा देती हैं।

माँ शारदामणि और रामकृष्ण : घटना सन् 1963 की है। घीयामण्डी मथुरा के मकान में गुरुदेव खटिया पर बैठे थे। सामने माताजी परिजनों को खाना खिला रही थीं। तभी एक बहन ने कहा, ''गुरुजी! हमारे घर माँ शारदामणि और रामकृष्ण की दो बड़ी फोटो हैं। एक दिन मैंने दोनों चित्रों में आपका और माताजी का रूप बदलते देखा।''

गुरुजी ने कहा, ''बेटी, तुमने ठीक देखा है। यह शरीर जो आज श्रीराम शर्मा आचार्य और माताजी का है, यही माँ शारदामणि और रामकृष्ण थे।'' सभी उनकी बात सुन श्रद्धावनत थे।

काम पूरा होने पर शक्ति वापस आ जायेगी : श्री लाम्बा जी बताते हैं कि घटना सन् 84 सूक्ष्मीकरण में जाने से 3-4 माह पूर्व की है। मैं हरिद्वार गया था। गुरुजी मुझसे अकेले में मिले व कहा, ''बता बेटा, तेरा क्या-क्या चल रहा है?''

मैंने कहा, ''जप अधिक करता हूँ। अतः समय कम मिल पाता है। अपना काम भी करता हूँ व शाम को प्रचार में भी निकलता हूँ।''

एक-दो सेकन्ड के बाद उन्होंने कहा, ''बेटा ऐसा कर, तू जप कम कर, ध्यान अधिक कर। उगते सूर्य में गायत्री माता का ध्यान करो।'' 2-3 तरीके से गायत्री उच्चारण की विधि उन्होंने स्वयं बतलाई। गले से उच्चारण करना, तालु से उच्चारण करना, व नाक से उच्चारण करने की विधि बतलाई। नाक से आवाज को ऊपर उठाकर उच्चारण करने से मंत्र का कम्पन भृकुटि को ठोकर मारता है।

इसके साथ ही उन्होंने कहा, ''बेटे, मुझे तुझसे जितना काम लेना है, उतनी शक्ति दूँगा तथा वह अनवरत मिलती रहेगी। किन्तु जब काम पूरा हो जायेगा तब शक्ति वापस हो जायेगी।

श्री लाम्बा जी कहते हैं, ''उस अभ्यास को मैंने बहुत दिनों तक किया, सूक्ष्मीकरण तक वह शक्ति रही। साधना के क्षेत्र में पूज्यवर ने मुझे काफी ऊँचा उठाया। उन दिनों शरीर के किसी भी अंग को यहाँ तक सहस्त्रार तक को कंपित कर लेता था। जिसके लिये जो कह देता, वह पूरा होता। अतः घर वाले कहते किसी के प्रति मन में दुर्भावना मत रखना। अन्यथा उसका बुरा होगा। सूक्ष्मीकरण के बाद वह शक्ति चली गई। जैसा गुरुवर ने चाहा था, ठीक वैसा ही हुआ।''◈

जुगनू जब बैठा रहेगा तो उसकी पूँछ चमकेगी नहीं। उसकी चमक तो चलने के साथ ही दृष्टिगोचर होती है। मनुष्य का व्यक्तित्व उसके द्वारा किये जाने वाले कठोर परिश्रम के साथ ही चमकता है।

अपने आंतरिक उद्‌गारों को सतत प्रार्थनाशील रखने के लिए दुःख चाहिए, कष्ट चाहिए, निरंतर हृदय में उमड़ती वेदना चाहिए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन से लिखेंगे नई परिभाषा

अपने जीवन से लिख देंगे, युग निर्माणी जीवन गाथा।
गुरुवर ने है रच दी फिर से, त्याग समर्पण की परिभाषा॥

भोगवाद की भीषण आंधी में भी ज्योतित सदा हुए।
प्रखर साधना करके गुरुवर, परम प्रफुल्लित सदा हुए।
नई सदी में प्यार लुटाने वाले, गुरुवर ही बस आशा॥

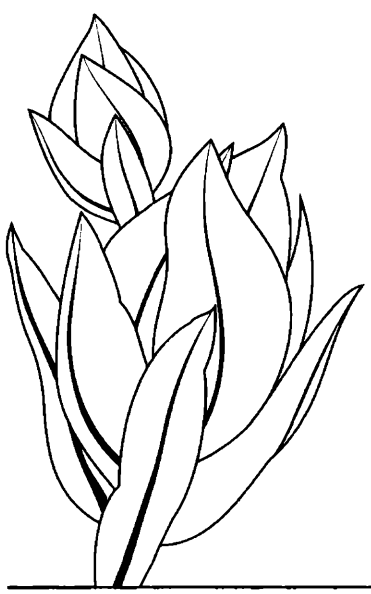
गायत्री को गुरुवर ने ही शाप मुक्त करवाया है।
पाखण्डों में बंधे यज्ञ को घर-घर तक पहुँचाया है।
स्वतंत्रता के महासमर में, पलट दिखा दी जिनने पासा॥

लोभ, मोह में फँसे मनुज को, सेवा पाठ पढ़ाया है।
जाति धर्म की खाई पाटी, सबको गले लगाया है।
गुरुवर के जीवन से सीखें, हम सब शिष्यों की अभिलाषा॥

जन्मशताब्दी में गुरुवर को यह श्रद्धाँजलि दे पायें।
युग निर्माणी संकल्पों को जन-जन तक पहुँचा पायें।
हम बदलेंगे युग बदलेगा, होगी नवयुग की परिभाषा॥

सद्विचार की जन्म शताब्दी, गुरुवर की यह जन्मशती।
प्यार भरा संगठन बनाओ, स्नेहपूर्ण तुम बनो व्रती।
नित्य झुकायें गुरु चरणों में, शिष्यों श्रद्धा से सब माथा॥

◇◇◇



श्रद्धा क्षणिक भावुकता-आवेश का नाम नहीं है, वरन् यह साधना की कठिनाइयों को झेलने की कसौटी है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विशाल संगठन की सुनियोजित शुरुआत

जितने भी बड़े-बड़े कार्य इस जगती पर सम्पन्न हुए हैं, वे संघशक्ति के बल पर ही हुए है। ऋषिरक्त के संचय से सीता का जन्म हुआ था, जो रावण के विनाश का कारण बनी तथा देवताओं की अंशधारी सत्ता महाकाली के रूप में जन्म लेकर शुम्भ, निशुम्भ, मधुकैटभ इत्यादि दैत्यों का संहार कर पायी। राम को रीछ-वानरों का सहयोग लेना पड़ा, तो कृष्ण को ग्वाल-बालों का, अर्जुन-सुदामा जैसे सखाओं का। बुद्ध का धर्मचक्र प्रवर्तन संघारामों में से निकले भिक्षुओं-भिक्षुणियों के बल पर ही संभव हो सका। गांधी ने भी सत्याग्रहियों की सेना एकत्र न की होती, तो परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्ति न मिलती।

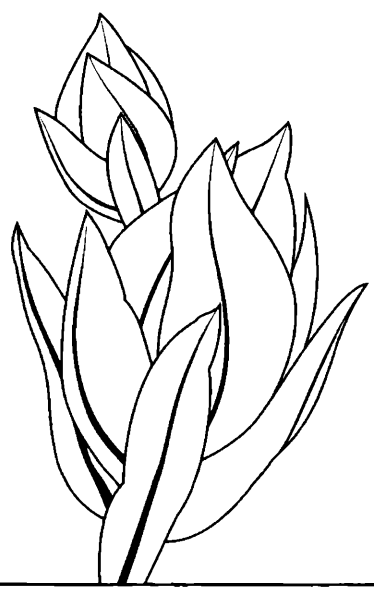
महाकाल की सत्ता जब परम पूज्य गुरुदेव के रूप में जन्मी और उनका साक्षात्कार अपनी परोक्ष मार्गदर्शक सत्ता से हुआ, तो उन्हें अपना उद्देश्य समझ में आ गया था कि उन्हें एक विशाल संगठन खड़ा करना है, जिसके माध्यम से वे विचार क्रांति को, जनमानस के परिष्कार को सम्पन्न कर दिखायें। इसके लिए चरण-चरण में मार्गदर्शन उनकी दुर्गम हिमालयवासी सत्ता करती रही।

महापुरश्चरणों की साधना की पूर्णाहुति के साथ जो दूसरा अध्याय आरंभ होता है, वह था- गायत्री परिवार के रूप में एक सुव्यस्थित संगठन की स्थापना। मणिमुक्तकों को ढूँढ़कर एकत्र कर उनमें प्राणशक्ति भरने का सुनियोजित कार्य यदि गायत्री जयन्ती सन् 1953 से आरंभ हुआ मानें तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। क्योंकि इसके पूर्व तो वे पृष्ठभूमि तैयार कर रहे थे, वातावरण गर्म कर रहे थे तथा हर परिजन को आने वाले समय के लिए अपनी तैयारी कैसे की जाय, यह मार्गदर्शन दे रहे थे। ''गायत्री चर्चा'' स्तम्भ द्वारा उनने गायत्री के तत्त्वज्ञान को व्यावहारिक जामा पहनाकर उसे इतना जनसुलभ बना दिया कि हर व्यक्ति जो उनके सम्पर्क में आया, वह गायत्री साधना न्यूनाधिक किसी न किसी रूप में करने लगा।

गायत्री महायज्ञ अभी बड़े रूप में संपन्न होने थे। यज्ञ की प्रेरणा— ''संगतिकरण'' अर्थात् परमार्थ प्रयोजनार्थ श्रेष्ठ व्यक्तियों का संघबद्ध होना, उन्हें भली-भाँति याद था। अतः उनने शतकुण्डी महायज्ञ व सहस्रकुण्डी महायज्ञों के रूप में बाजपेय, अश्वमेध, राजसूय यज्ञ परम्परा का पुनर्जीवन कर एक विशाल संगठन की स्थापना करने का संकल्प इसी दिन लिया।

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के नाते अपनी भूमिका निभाकर, ''सैनिक'' समाचार पत्र के सम्पादन से मुक्ति लेकर जब ''अखण्ड-ज्योति'' पत्रिका के रूप में अपने विचारों के विस्तार द्वारा उनने

साधना की शक्ति से यह विराट् संगठन खड़ा हुआ है। ऐसा कोई उदाहरण नहीं है अधुनातन विश्व में, जहाँ साधना की धुरी पर संगठन बना हो एवं उसने सतयुग की वापसी का संकल्प लिया हो। प्रस्तुत लेख में पढ़ें पूज्यवर के साधना अनुष्ठान एवं मथुरा के कार्यों की संक्षिप्त झलकियाँ ...



जिस तरह दुःख ही दुःख हमें प्रिय नहीं है। उसी तरह सदैव सुख की भी कल्पना नहीं की जा सकती।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

अपनी छूटी हुई तप-साधना को अगले चरण पर पहुँचाया, तो उनका लक्ष्य था, आत्मशक्ति का संवर्धन तथा तप से उद्भूत लेखनी द्वारा तत्कालीन समाज का बहुमुखी मार्गदर्शन। लेखनी दो तरह से चली, एक प्यार व ममत्व भरा व्यक्तिगत परामर्श, प्रत्येक व्यक्ति को पत्र द्वारा स्वयं की लेखनी से। दूसरे लेखों के रूप में, जिनमें व्यक्ति, परिवार, समाज से जुड़ी समस्याओं का आध्यात्मिक परिप्रेक्ष्य में समाधान समाहित रहता था। 1953 की गायत्री जयन्ती पर, जब उनने गायत्री तपोभूमि की स्थापना कर अपनी पहली गुरुदीक्षा दी, तो एक अध्याय का पटाक्षेप हो गया था— वह था चौबीस लक्ष के चौबीस महापुरश्चरण।

पूज्य गुरुदेव अगस्त 1953 की अखण्ड-ज्योति की ''गायत्री चर्चा'' स्तम्भ में लिखते हैं कि गायत्री तपोभूमि की स्थापना माँ भगवती की इच्छा और प्रेरणा से ही हुई है। इसका मुख्य कार्य होगा-भारतीय संस्कृति धर्म और आत्मविज्ञान की आधारशिला गायत्री का जन-जन तक विस्तार। तपोभूमि भारतवर्ष के तपस्वियों, गायत्री उपासकों का एक ऐसा केन्द्रीय संगठन बिन्दु है, जहाँ उनका पारस्परिक संगठन व सहयोग स्थापित होगा। जन-साधारण में गायत्री साधना का विस्तार करने की जो योजना है, उससे राष्ट्र में एक तपोमयी भूमिका का सूक्ष्म वायुमण्डल बनेगा और उस वातावरण में अनेक मनोरम पुष्प प्रस्फुटित होंगे।'' (पृष्ठ 29, अगस्त 1953 अखण्ड ज्योति) पहली बार वे इसी अंक में लिखते हैं कि ''अब सभी गायत्री उपासकों को, जो हमसे जुड़ें हैं, अपना दैनिक उपासना क्रम चालू रख रविवार के दिन साप्ताहिक कार्यक्रम रखना व सामूहिक हवन करना चाहिए।''

संभवत: गायत्री परिवार की विधिवत् स्थापना का यह शुभारंभ था। समयदान का आह्वान भी पहली बार इसी अंक में इसी स्तम्भ में किया गया था। उन दिनों ''अपनों से अपनी बात'' स्तम्भ आरम्भ नहीं हुआ था। ''गायत्री चर्चा'' स्तम्भ के अंतर्गत ही वे अपनी बात कह लिया करते थे।

अनेक व्यक्तियों को सन्मार्ग पर लगाने का पुण्यफल एकान्त साधना से कहीं अधिक बताते हुए वे गायत्री माता के निमित्त श्रम व समय सब से माँगते हैं व सेवा के लिए समर्पित कार्यकर्ताओं का आह्वान भी पहली बार इसी के माध्यम से करते हैं। क्रमश: इन्हीं प्रसंगों को आगे बढ़ाते हुए 1954 की जून में पहला पन्द्रह दिन का जीवन विद्या सत्र आयोजित हुआ जिसमें संजीवनी विद्या पर, जीवन जीने की कला पर व्याख्यानों का क्रम चला। संभवत: यह बौद्धिक स्तर का पहला समागम था।

प्राण, जीवन, इच्छा, आकांक्षा आदि की परमार्थ के लिए यज्ञ भगवान् को आहुतियाँ दिया जाना। इस विशाल यज्ञ से जुड़ी नरमेध प्रक्रिया द्वारा उनने ऋषिरक्त में छिपे त्याग तत्त्व का आह्वान किया तथा परिजनों, पाठकों की आत्माओं को झकझोरा। अखण्ड-ज्योति पढ़ने वाले पाठक निरन्तर प्रकाश-प्रेरणा पा रहे थे व गायत्री की सद्बुद्धि विस्तार की प्रेरणाओं को जन-जन तक फैला रहे थे। इसी वर्ष 1955 में पूज्य गुरुदेव ने मथुरा में भादों से महामृत्युञ्जय यज्ञ, विष्णु यज्ञ, शतचण्डी यज्ञ, नवग्रह यज्ञ तथा चारों वेदों के यज्ञों के आयोजन किया। इसके पश्चात् दूसरा महत्त्वपूर्ण कदम जो पूज्य गुरुदेव द्वारा उठाया गया, वह था संगठन निर्माण हेतु पन्द्रह माह का एक अनुष्ठान का शुभारंभ, जिसकी पूर्णाहुति 108 कुण्डी महायज्ञ के यज्ञ के रूप में अप्रैल 1956 में की जानी थी।

पन्द्रह माह के इस अनुष्ठान में गायत्री विद्या का अधिकाधिक प्रचार जन-जन तक करने के लिए सबसे कहा गया व वसंत पंचमी 1955 को उनने घोषणा की, कि वे 108 कुण्डी महायज्ञ में नरमेध यज्ञ करेंगे। घोषणा चौंकाने वाली थी, क्योंकि इससे तो पौराणिक आशय नरबलि का ही निकलता था। पूज्यवर ने अखण्ड-ज्योति के अंकों में इसका स्पष्टीकरण किया कि नरमेध का अर्थ है, विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा किसी उद्देश्य विशेष के लिए उच्चस्तरीय त्याग। अपना जीवन समाज को समर्पित करना तथा मन और बुद्धि को कलावा पहनाकर उन पर अक्षत पुष्प की वर्षा कर यज्ञ समाप्ति पर उन्हें समाज को समर्पित कर बंधनमुक्त कर दिया जाना।

इस यज्ञ में, जो 20 अप्रैल से 24 अप्रैल 1956 तक चला कई विशिष्ट अतिथियों व बीस हजार से अधिक

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

व्यक्तियों ने भाग लिया। लोकसभा के सभापति अनन्तशयनम् आयंगर ने इसका उद्घाटन किया। यह पूज्य गुरुदेव द्वारा तपोबल से जनशक्ति जुटाने के लिए किया गया संगतिकरण था। यह एक ऐसा महायज्ञ था, जिसकी परिणति पूरे भारत में स्थान-स्थान पर यज्ञायोजनों के रूप में होनी थी। अपने इस कार्यक्रम के अंतिम दिन गुरुदेव ने घोषणा की, कि भारत में वे 108 स्थानों पर गायत्री महायज्ञ छोटे-बड़े रूप में पूरे आगामी दो वर्षों में सम्पन्न करेंगे। वस्तुत: इनकी संख्या 108 न रहकर 1008 से भी अधिक हो गई एवं ये पाँच व नौ कुण्डीय से 108 कुण्डीय यज्ञ स्तर के हुए। पहली बार अखिल भारतीय गायत्री परिवार की सदस्यता का पत्र सितम्बर 1956 की अखण्ड ज्योति में छापा गया व बाकायदा अधिकृत शाखाएँ स्थापित कर दी गईं। यह प्रगतिक्रम बताता है कि कितने सुनियोजित ढंग से संगठन का सूत्रपात पूज्यवर द्वारा किया गया।

दिसम्बर 1956 में पूज्य गुरुदेव ने एक वर्ष तक 24 लक्ष गायत्री महामंत्र का महापुरश्चरण सामूहिक स्तर पर किये जाने की आवश्यकता पर बल दिया तथा इसे "आध्यात्मिक वरुणास्त्र" कहा, जो 1957 में संभावित प्रकृति प्रकोपों, अन्तर्ग्रही प्रभावों तथा युद्धोन्माद की संभावनाओं से मानव मात्र को बचाने के लिए किया जाना था। जून 1957 में पहला अखिल भारतीय गायत्री परिवार सम्मेलन 7 से 12 जून की तारीखों में बुलाया गया एवं गायत्री उपासक, शाखा कार्यवाहक या मंत्री तथा व्रतधारी सक्रिय कार्यकर्ता ये तीन श्रेणियाँ अपने परिजनों की करके प्रत्येक को जिम्मेदारियाँ बाँट दी। इस सम्मेलन में संगठन का महत्त्व सबको समझाया गया, विभिन्न प्रान्तों की गोष्ठियाँ की गयी तथा किस प्रकार गायत्री विद्या से संबंधित पुस्तकों द्वारा गायत्री व यज्ञ भावना का जन-जन तक विस्तार किया जाना है, यह बताया गया।

1957 की दिसम्बर अखण्ड-ज्योति में पूज्य गुरुदेव द्वारा बताया गया कि 14 सितम्बर 1958 से गुरु व नेपच्यून की युति आरंभ हो रही है। ऐसे में पाँच वर्ष भयंकर आपदाओं से भरे हो सकते हैं। इसके लिए गायत्री परिवार के संभावित एक लाख सदस्यों द्वारा ब्रह्मास्त्र अनुष्ठान 1958 में किया जाना चाहिए। वह इसकी महापूर्णाहुति स्वरूप 1008 कुण्डों का एक विशाल महायज्ञ कार्तिक सुदी 12 से 15 (23 नवम्बर से 26 नवम्बर) की विधिवत् घोषणा कर दी गयी। यह यज्ञ 101 यज्ञशालाओं में 1 लाख होताओं द्वारा संपन्न होना था। इस विराट् आयोजन द्वारा एक लाख गायत्री उपासकों की श्रद्धाशक्ति का केन्द्रीकरण कर पूज्य गुरुदेव ने इस विशाल संगठन को उस महायात्रा पर ला खड़ा कर दिया, जिसे अगले दिनों करोड़ों व्यक्तियों को अपनी चपेट में लेना था। यह उस मिशन का प्रगति की दिशा में अभूतपूर्व मोड़ था। ◈

माँ! आशीर्वाद दो हम समाज की सेवा करने में समर्थ हों

जीवन में 20 वर्ष तक मेरी आराधना और प्रार्थना के पश्चात् हमें जो वस्तुएँ, जो सांसारिक लाभ, जो सफलताएँ प्राप्त हुईं, उनका वर्णन करना अनावश्यक है। ब्राह्मण को परिग्रही नहीं होना चाहिए। जिनके पास जितना परिग्रह होगा, उनके पास आत्मबल की उतनी ही कमी होगी। आज हम अपनी समस्त शक्तियों को और हमारे पास जो कुछ भी भौतिक सामग्री है, यज्ञ भगवान् को अर्पण करते हैं। इस प्रकार जिस वस्तु अर्थात् ब्राह्मणत्व को प्राप्त करने के लिए हम बहुत इच्छुक थे, वह हमें आज इस त्याग द्वारा प्राप्त हो गया। अब यदि हमको कोई ब्राह्मण कहे, तो हमको संकोच नहीं जान पड़ेगा। इन थोड़े से भौतिक पदार्थों-जेवर, पुस्तकें, प्रेस, जमीन के सिवाय हमारे पास और कुछ भी नहीं है। माँ! तुम इनको स्वीकार करो। यही हमारी प्रार्थना है, हम ब्राह्मण बनकर समाज की सेवा करने में समर्थ हों। यह आशीर्वाद हमको दो। *(20 अप्रैल 1956 के प्रवचन से)*

नेत्रों से फूटने वाली धूर्तता, कामुकता, अपवित्रता के रहते हुए सारी बाह्य सफाई धोखा मात्र ही है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपना काम स्वयं करो

महापुरुष अनावश्यक सेवा लेना पसंद नहीं करते। गुरुजी ने भी विराट् परिवार को अपने आचरण से यह संदेश दिया कि जितना आवश्यक हो, उतनी ही सेवाएँ दूसरों से लो, बाकी काम स्वयं करो।

एक दिन गुरुजी दाढ़ी बना रहे थे। जब वे दाढ़ी बना चुके तो ब्रश, पानी की कटोरी आदि उठाने के लिये एक भाई आगे बढ़े, इसपर उन्होंने उसे डाँट दिया। कहा- "तुझे क्या मालूम, ब्रश कहाँ रखना है? पानी कहाँ फेंकना है। मुझे मालूम है? तू बैठ।" इस प्रकार वे अपना काम स्वयं ही करते थे। किसी की सेवा लेने के लिये तैयार नहीं रहते थे। ◈

ऐसे ही छत्तीसगढ़ के बिसाहू राम साहू अक्सर उनके बाल बनाया करते थे। वह जब कभी बाल बनाने के बाद दाढ़ी बनाने के लिए कहते, तो गुरुजी कहते, मैं खुद बनाऊँगा। कभी-कभी वह जिद पकड़ लेते "मैं बना देता हूँ, गुरुजी।" तब वे झल्ला जाते और कहते-"तू मेरी दाढ़ी क्यों बनायेगा? क्या मैं नहीं बना सकता? "तू मेरा सब काम करेगा, सब काम करेगा, जा! मेरा सब काम तू ही कर आ।" अब तो बेचारे चुप हो जाते, और चुपचाप चले जाते। धीरे-धीरे उन्हें मालूम हो गया था कि गुरुजी अपना वही काम दूसरों से कराते हैं, जो वे खुद नहीं कर सकते। बाकी अपने सब कार्य वे स्वयं ही करते हैं। ◈

जब कभी वे टोली में जाते तो अपना सामान स्वयं ही उठाते। यदि कोई कहता भी कि गुरुजी हम उठा लेते हैं तो गुरुजी कहते, "नहीं, नहीं, अपना ही तो सामान है।"

एक बार वे, एक कार्यकर्ता भाई के साथ कहीं जा रहे थे। जब वे ट्रेन से उतरे तो साथ के भाई कुली ढूँढ़ने लगे। जैसे ही वे कुली को ढूँढ़ कर लाये, क्या देखते हैं कि गुरुदेव अपना भी और उनका भी, दोनों का सामान लेकर चल पड़े थे। वे दौड़कर आये और बोले, "गुरुजी, आप क्यों उठाते हैं। कुली है न।" सुनकर गुरुजी बोले, "अपना ही तो सामान है, इसे उठाने में शर्म कैसी?" कार्यकर्ता को अपनी भूल समझ में आई और चुपचाप अपना सामान उठा कर चल दिये। ◈

एक दिन गुरुजी लेखन में मगन थे। उस दिन उन्होंने कार्यकर्ताओं को गोष्ठी के लिये बुलाया था। कार्यकर्ता गोष्ठी के लिये आकर बैठ गये। जब उनको लगा कि सभी आ गये हैं, तो लेखन बंद किया। वे अक्सर पैरों के नीचे चौकी रखकर बैठते थे। उस दिन चौकी पैरों के नीचे नहीं रखी थी, सो उनका ध्यान गया व उन्होंने चौकी की ओर देखा। वे चौकी लेने के लिये उठने लगे। उनको उठते देख एक भाई चौकी की ओर बढ़े, तो गुरुजी बोले- "बैठ! बैठ! तू बैठ! मैं अपना काम आप करता हूँ।" ◈

एक कार्यकर्ता ने बताया कि एक दिन शाम के लगभग 4:00 बजे थे। मैं उनके पास बैठा था। एक व्यक्ति उनके पास आया। उसने धोती-कुर्ता पहना था। कंधे पर साफा रखा था। गुरुजी ने पूछा, "कहाँ से आये?" वह बोला, "हाथरस से आया हूँ।" उसके पास एक छोटी सी थैली थी। जिसमें कुछ चीज रखी थी। उसने वह थैली उन्हें दी और चला गया।

गुरुजी ने थैली खोली, उसमें एक आम रखा था। गुरुजी बोले, "वो एक ही आम दे गया। दो होते तो एक तू खाता, एक मैं।" फिर वो उठे अलमारी में से चाकू निकाला। आम को काटा और गुठली प्लेट में रखकर मुझे दे दी। फिर बोले, "तू बहुत फायदे में रहा। आम के आम गुठली के दाम।" कल्पना से बाहर की बात है। इतने बड़े सिद्ध पुरुष! स्वयं प्लेट निकाली, चाकू निकाला और स्वयं ही काट कर दिया। चाहते तो आदेश भी दे सकते थे। ◈

हमारे जीवन से कुछ सीखें। कदमों की यथार्थता खोजें, सफलता जाँचें और जिससे जितना बन पड़े अनुकरण का, अनुगमन का प्रयास करें। यह नफे का सौदा है, घाटे का नहीं।

सबसे बड़ी हिम्मत का काम है, अपनी वास्तविकता समझना और अपने दोषों तथा दुर्बलताओं को स्पष्ट रूप से स्वीकार कर लेना।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

श्री गुरुदेव, न भूतो न भविष्यति

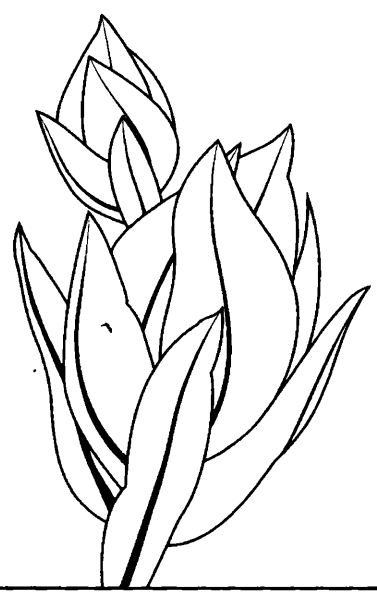
युगऋषि के अनगिनत जीवनचित्रों में से कुछ का करें पुण्यदर्शन- उनके अनन्य शिष्य, साधक एवं सहयोगी ध्रुवनारायण जौहरी जी की कलम से...

व्यक्ति की सामर्थ्यों के विकास की कोई सीमा नहीं होती। संकल्प व समर्पण को कर्म में ढाल कर व्यक्ति अपने चरित्र के अनेकानेक पक्षों को चमका सकता है। इस चमक से जगत् चमत्कृत हो उठता है और उसे महामानव, अवतार आदि उपाधियों से विभूषित कर श्रद्धापूर्वक नमन करता है। युगों-युगों तक उसकी कीर्ति दिग्-दिगन्त में फैलती और छायी रहती है, मानव को दिशा बोध देती है, तथा विकारों से ग्रस्त होते समाज को पुनः स्वस्थ होकर प्रगति करने की प्रेरणा देती है।

आइये, ऐसे ही युग-ऋषि, परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के अनगिनत टिमटिमाते जीवन-चित्रों में से कुछ का पुण्य दर्शन करें, भिन्न-भिन्न रूपों के, अद्भुत रूपों के दर्शन।

उनका दधीचि स्वरूप- रात्रि के दो बजे उसका दिन शुभारम्भ हो गया है। प्रातः छः बजे तक की अवधि में ऋषि ने आध्यात्मिक गायत्री की भाव समाधि में प्रविष्ट हो प्राणवान उपासना कर ली है, अपनी ही मैली परतें उधेड़ने की कठोर आत्म-शोधन साधना कर ली है, और लक्ष-लक्ष जीवन-साधकों के मनों की उमंग को ऊर्ध्व दिशा में अग्रसर करने वाले समर्थ साहित्य को निर्मित कर मानवता की आराधना भी पूरी कर ली है। अब वह तपोभूमि शान्तिकुंज की पूरे दिन पर्यन्त की अत्यन्त व्यस्त व सृजनात्मक दिनचर्या में अपनी प्राण ऊर्जा को उड़ेल रहा है। संध्या हो गई, पर वह थकता ही नहीं। शेष बची ऊर्जा को संध्यावन्दन के समय अपनी माँ को उसने समर्पित कर दिया है।

मैत्रावरुण स्वरूप- सब पर अहैतुकी कृपा बरसाने वाले वह एक वीतराग योगी हैं। टूटे मकान की दूसरी मंजिल पर छोटी सी कोठरी। बैशाख-ज्येष्ठ के मध्याह्न के अत्यन्त उग्र ताप से अप्रभावित, नंगे तख्त पर यह वीतराग अकेला बैठा है। सुविधा-साधनों को उसने अस्वीकार कर दिया है। लेखन पट्टी घुटने पर टिकी है। अपनी समस्त ऊर्जा को अक्षरों में उड़ेलती हुई उसकी लेखनी सतत चल रही है। अनायास कोई आगन्तुक आता है, चरण स्पर्श करता है। क्षण भर को दृष्टि उठती है, पहचान करती है, मुस्कान भरती है। दृष्टि पुनः झुक कर लेखनी के संग चलने लगती है। अपने अति उच्च स्तर को भुलाकर, आगन्तुक के मानसिक स्तर तक वाणी को उतार कर, लिखते-लिखते वह उससे आत्मीयता पूर्ण चर्चा भी कर रहा है। एक के बाद एक आगन्तुक आते रहते हैं और वह बच्चों-सी निश्छल मुस्कान, सन्तापहारी वाणी, शक्ति सम्पुटित आश्वासन तथा मित्रवत् व्यवहार से हृदय पर हृदय जीतता चला जा रहा है। मुरझाए चेहरे खिलते



जब क्रोध का आवेग आता है तो उसका एक ही लक्ष्य होता है - जो अपनी कामनाओं में बाधक बना है, उसे नुकसान पहुँचाना।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

हुए लौट रहे हैं। अनगिनत आते हैं, किन्तु कृपा व आत्मीयता की वर्षा थमती नहीं, चुकती नहीं, मैत्रावरुण के देने वाले मन और कोष की सीमाएँ पराशक्ति गायत्री ही जानती हैं।

सद्गुरु स्वरूप- 'जन्मना जायते शूद्रः' जन्म के समय सभी शूद्र रहते हैं, किन्तु यह विशाल मानव समुदाय को सदियों से कुसंस्कार ग्रस्त शूद्र बना भटक रहा है। सद्गुरु ने कुसंस्कारों की भारी परतों के नीचे दबे पड़े उनके देवत्व को देखा। वह उन्हें बुला रहा है, स्नेहमयी वाणी से समझा रहा है, अपनी-अपनी असुरता से युद्ध करने के लिये प्रेरणा और आत्मबल प्रदान कर रहा है। कृष्ण के समान वह उनके युद्ध स्वयं नहीं लड़ता, किन्तु उसकी प्राणिक उपस्थिति का अनुभव कर वे उमग-उमग कर कुसंस्कार-कौरवों पर सतत आघात किये जा रहे हैं।

कितना अद्भुत है यह आत्म युद्ध! इस युद्ध को लड़ते और जीतते हुए सहस्त्रों सहस्त्र कुसंस्कारी शूद्र श्रेष्ठ विचार व कर्मजात महानता से समुन्नत हो वास्तविक ब्राह्मण, कर्मणा ब्राह्मण बनते चले जा रहे हैं। निरन्तर बढ़ता हुआ कर्मणा ब्राह्मणों का नया समाज मत्स्यावतार की कथा को दुहरा रहा है। ब्रह्मकमल के बीज अबाध गति में अंकुरित हो रहे हैं।

स्वयं चली राह पर सद्गुरु के चरण-चिह्न अमिट हैं। आने वाली पीढ़ियाँ उन चिह्नों को देख कर वैचारिक, भावात्मक तथा सृजनात्मक कर्म पथ पर बिना दुविधा अग्रसर होती रहेंगी और उस मंजिल तक पहुँचती रहेंगी, जो मानव का वास्तविक अभीष्ट है।

कल्कि-शिव स्वरूप- एक काया में दो महासत्ताएँ ! आत्म शक्ति के अश्व पर आरूढ़, ज्ञान-खडग से कषाय-कल्मषों की विकराल सेना को कल्कि गाजर मूली के समान काट रहा है। इस कल्कि की खडग का लक्ष्य कोई तो जीवन-लक्ष्य के प्रति नेत्रहीन है, किसी को दोष देखने वाले सहस्त्र नेत्र हैं, कोई तो मीठी वाणी बोलने वाले मुख से रहित है, कोई कराहती मानवता की पुकार सुन सकने में असमर्थ कर्णविहीन है। सिर में समायी इन समस्त विषैली प्रवृत्तियों के कारण भूत जैसा जीवन, चुड़ैल जैसी मान्यताएँ। ऐसे शत् सहस्त्र भूत-चुड़ैल अपने विषैले सिर कटवाते स्वयं ही कल्कि के पास तपोभूमि-शान्तिकुंज भागे चले जा रहे हैं, और वह सहज मुस्कान बिखेरता उनके सिर उतार रहा है।

किन्तु क्या इससे भी अधिक कोई आश्चर्यजनक दृश्य होगा कि कल्कि में समाया शिव कटे हुए सिरों के स्थान पर नूतन सिर जोड़कर प्रत्येक को सदाशयी गणेश, सहृदया सरस्वती के रूप में पुनर्जीवित भी कर रहा है। विस्मयकारी परिणति है, अकल्पनीय दृश्य है। कल्कि और विश्व के कृत्यों की अलग-अलग कथाएँ तो व्यासजी ने लिख दी है, कल्कि-शिव के घुले-मिले अद्भुत कृत्य की गाथा कौन महामुनि लिखेगा... ?

युग-द्रष्टा स्वरूप- हटता हुआ कलियुग तथा विश्व मंच पर बढ़ता हुआ सतयुग उसे स्पष्ट दिख रहा है। दशकों पूर्व से वह इस नवयुग के आगमन की घोषणा विश्व भर में कर रहा है। अत्याचार, शोषण तथा उच्छृंखलता की विभीषिका में फँसा वर्तमान युग इक्कीसवीं सदी के उज्ज्वल भविष्य में प्रवेश करने जा रहा है-ऐसी कल्पना कर पाना भी कितना कठिन है? किन्तु उसके अनुयायी उस पर अविचल विश्वास करते हैं। उसकी प्रेरणा व निर्देश के अनुसार लाखों कार्यकर्ता देव समुदाय की वृद्धि के विचार-क्रांति अभियान में प्राणपण से संलग्न हो गए हैं, जिससे कि आ रहे नवयुग का उसके स्तर के अनुरूप स्वागत करने के लिये विपुल समुदाय तत्पर रहे।

लोकेषणा से सर्वथा रहित इस महाचेतन ने स्वयं की अगली भूमिका भी निर्धारित कर ली है। अपने लक्ष-लक्ष परिजनों को नवयुग के स्वागत का उत्तरदायित्व तथा अक्षय यश का वरदान देकर, नवयुग में अपनी नई भूमिका के अनुरूप तैयारी करने, कुछ समय के लिये वह चला गया है। आज की तथा आने वाले कल की पीढ़ियाँ विचार-क्रान्ति के इस अद्भुत शिल्पी को नवयुग के विश्वकर्मा के रूप में इसी धरा पर पुनः लौट आया पाकर आत्मविभोर हो उठेंगी, तथा उसके सृजनात्मक कार्यों में सहभागी बन कृतकृत्य होंगी। मोक्ष को जो ठुकरा चुका है, वह हृदयजयी अपनी प्रज्ञा-कन्याओं तथा प्रज्ञा-पुत्रों के बीच पुनः आएगा, पुनः आएगा, सम्भवामि युगे युगे....सम्भवामि युगे युगे।

क्रोधी व्यक्ति कभी अपने बारे में नहीं सोचता। इस कारण बड़े-बड़े अनर्थ हो जाते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

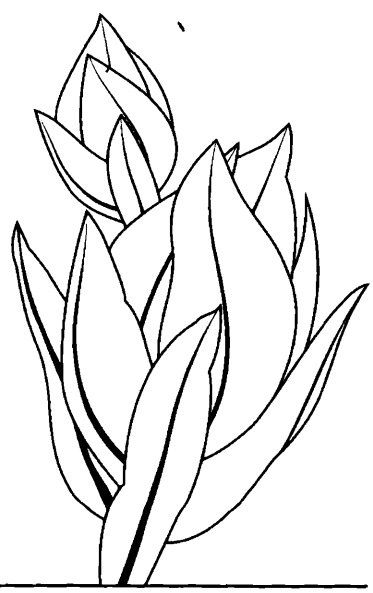
संगठन का महत्त्व एवं स्वरूप गुरुदेव के शब्दों में

''संगठन की शक्ति अपार है। तिनके-तिनके मिलकर रस्सा बनता है तो उससे मदोन्मत्त हाथी भी कसे जा सकते हैं। बूँद-बूँद मिलकर समुद्र बनने की उक्ति प्रसिद्ध है। एकाकी तुच्छ इकाइयों का मूल्य नगण्य है, पर जब वे मिलकर एकात्म हो जाती हैं, तो उनका स्वरूप और प्रभाव देखते ही बनता है। बिखरी पड़ी ईंटों का कोई महत्त्व नहीं, पर जब वे संगठित होकर विशाल भवन का रूप धारण करती हैं, तो उनका महत्त्व और उपयोगिता कुछ और ही होती है। अकेला सैनिक भला क्या कर सकता है, पर सेना के रूप में उनके संगठन के चमत्कार देखते ही बनते हैं।''

दुर्भाग्य से आज संगठन कुचक्र का पर्याय बन गये हैं, जिसमें फँसकर मानवीय शक्ति ही नहीं स्वयं मानवता भी रो-तड़पकर नष्ट होने के लिए विवश हो रही है। अच्छा हो, इसका विवेचन गुरुदेव के ही शब्दों में सुनें-''खेद इसी बात का है कि मानव जाति ने छुट-पुट संगठन बनाने के अस्त-व्यस्त प्रयत्न तो किए, पर जन-समाज की एकात्मता और संघबद्धता पर ध्यान नहीं दिया। आधार और स्वार्थ अलग-अलग होने से वर्ग, धर्म, भाषा, देश, संप्रदाय आदि के आधार पर बने छुट-पुट संगठन परस्पर टकराते रहे और विभीषिकाएँ उत्पन्न करते रहे। सच्चा और स्थिर लाभ तो तभी हो सकता था, जब वे समग्र रूप से एक आधार पर संगठित होते। समय आ गया है कि अब इस रोग का निदान प्रस्तुत किया जाए।''

सन् १९३७ में 'अखण्ड-ज्योति' पत्रिका की शुरुआत के साथ ही इस निदान का प्रस्तुतीकरण अखण्ड-ज्योति परिवार के रूप में हुआ। संगठन के रूप में इसका कलेवर भले छोटा हो, पर आदर्शों के उत्कर्ष में कोई कमी नहीं थी। यह कुछ मनुष्यों की बेतरतीब भीड़ नहीं, वरन् आदर्शों के लिए सर्वस्व बलिदान करने की ललक सँजोए मुट्ठी भर लोगों का समूह था जो संयोगवश नहीं, विधाता के सुनियोजित विधान के अनुसार एक माला के मनके बने थे। इस तथ्य को अभिव्यक्त करते हुए युगऋषि के शब्द हैं-''अखण्ड-ज्योति परिवार में असाधारण उच्च संस्कारों से सम्बन्धित आत्माएँ हैं। उन्हें प्रयत्नपूर्वक ढूँढ़ा और परिश्रमपूर्वक एक टोकरी में संग्रह किया गया है। वही हमारा परिवार है। इससे नवनिर्माण की भूमिका संपादन करने की, अग्रिम मोर्चा सँभालने की हमारी आशा अकारण नहीं है। उसके पीछे एक तथ्य है कि उत्कृष्ट आत्माएँ कैसे भी मलिन आवरण में क्यों न फँस जाएँ, समय आने पर वे अपना स्वरूप और कर्तव्य समझ लेती हैं और दैवी प्रेरणा एवं संदेश को पहचानकर सामयिक कर्तव्यों की पूर्ति में विलंब नहीं करतीं।''

पूज्य गुरुदेव ने प्रारंभ से ही प्यार बाँटा। प्यार की धुरी पर ही यह विशाल संगठन बनाया, जिसका नाम है गायत्री परिवार। दुनिया में कभी भी किसी को भी इस स्तर का संगठन खड़ा करना होगा तो उसे भी प्यार को ही आधार बनाना होगा। वे दुनिया के पहले सद्गुरु हैं वे जिनने अपने शिष्यों को अपना अंग-अवयव बना लिया...



क्रोध से मनुष्य के पुण्य कार्य, सद्भावनाएँ, सद्गुण उसी तरह नष्ट हो जाते हैं, जैसे बाढ़ आने पर उद्यान।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

संगठनकर्ता के रूप में गुरुदेव की मौलिक विशेषता संगठन को परिवार का स्वरूप देना रहा है। जहाँ अन्य संगठनों में शासन करने का लोभ और पद-प्रतिष्ठा की हवस को बढ़े-चढ़े क्रम में देखा जा सकता है, वहीं पारिवारिक वातावरण में एक-दूसरे से प्रेम करने, अपनाने की ललक-लालसा ही उभरते-पनपते दिखाई देती है।

परमपूज्य गुरुदेव के अनुशासन एवं वंदनीया माताजी के प्यार भरे आँचल के साये में अखण्ड-ज्योति परिवार ने पल-पल बढ़कर गायत्री परिवार का रूप लिया। सन् 1958 के सहस्रकुण्डीय महायज्ञ के बाद इसी का सुव्यवस्थित रूप 'युगनिर्माण योजना' के रूप में सामने आया। अपने में आश्चर्यकारी संभावनाएँ सँजोये इस संगठन के आदर्श और उद्देश्य भी विस्मयकारी हैं। इन्हें युगद्रष्टा गुरुदेव के शब्दों में घोषित करें तो "युगनिर्माण योजना के अंतर्गत प्रबल प्रयास यह किया जा रहा है कि समस्त मानव जाति को प्रेम, सौजन्य, सद्भाव, आत्मीयता, समता, ममता आदि उच्च आध्यात्मिक आदर्शों की आधारशिला पर एकत्रित और संघबद्ध किया जाए।"

यथार्थ में यह आज की बिखरी मानवता को संगठित रहने का शिक्षण देने वाला संगठन है। अखण्ड-ज्योति परिवार के रूप में अंकुरित हुआ नन्हा-सा बीज निकट भविष्य में विश्व-परिवार बनकर अपनी व्यापकता सिद्ध करेगा। इसका लक्ष्य भी यही है कि- "सारा विश्व एक कुटुम्ब बने। मनुष्य मात्र में आत्मीयता और उदारता की प्रवृत्ति जगे और लोग एक दूसरे को सुखी-संपन्न बनाने के लिए अपने स्वार्थों-सुविधाओं एवं अधिकारों का परित्याग करते हुए प्रसन्नता, संतोष एवं गर्व अनुभव करें। इस प्रकार की एकता से ही विश्व में सच्ची शांति स्थापित होगी।"

अपनी व्यापकता में उपर्युक्त परिणाम प्रस्तुत करने वाले इस संगठन के वर्तमान स्वरूप और प्रभाव को लोग दाँतों तले उँगली दबाकर देखते हैं। आखिर कौन-सा जादू इस संगठनकर्ता के पास है कि समाज के सभी वर्गों के लोग इससे जुड़ते-घुलते-मिलते चले जाते हैं। उच्चशिक्षित और अशिक्षित, करोड़पति और निर्धन, सवर्ण और हरिजन सभी के स्नेहमिलन का केन्द्र यह किस मंत्र के जोर से बन सका? आश्चर्य स्वाभाविक भी है। इन दिनों जबकि परिवार टूट रहे हैं, पति-पत्नी और माँ-बेटे के घनिष्ट आत्मीय सम्बन्ध तक दरक रहे हैं। ऐसे में डॉक्टर, इंजीनियर, पी-एच.डी. युवकों, युवतियों का स्वार्थ एवं महत्त्वाकांक्षाओं पर लात मारकर समाज निर्माण के लिए संकल्पित होना, किसे आश्चर्यचकित नहीं करेगा?

इस आश्चर्य का रहस्य संगठनकर्ता के प्रेम में निहित है। "यह एक स्पष्ट सच्चाई है कि अपने व्यापक परिवार में हमने चुन-चुन कर, गिन-गिनकर, परख-परख कर मणिमुक्तक खोजे हैं और उन्हें एक शृंखला में आबद्ध किया है।"

"जिनकी पूर्व तपश्चर्याएँ और उत्कृष्ट भावनाएँ बहुत थीं, जो हमारे साथ थे, उन्हें हम पहचानते हैं, वे भले ही भूल गए हों। यों भूले तो वे भी नहीं, अनायास ही आत्मीयता उमड़ते देखकर सोचते, तो वे भी यही हैं कि सामान्य परिचय से किसी विद्वान्, साधक एवं सुधारक के साथ उनकी घनिष्ट आत्मीयता यकायक नहीं उमड़ सकती, जैसी कि उनके मन में हमें देखते ही उमगती, उमड़ती है। आश्चर्य तो होता उन्हें भी है कि इस असाधारण भाव-प्रवाह और चिर परिचित-सी लगने वाली आत्मीयता एवं विश्वसनीयता का कारण कुछ तो होना ही चाहिए। निश्चित रूप से यह सब अकारण नहीं है।"

"अनेक जन्मों से चले आ रहे सम्बन्धों की अति आत्मीयता से भरी समीपता केवल चोला बदल लेने भर से समाप्त नहीं हो जाती। अंतर्मन में सूक्ष्म अनुभूतियाँ जमी रहती हैं और कई बार अपरिचित से परिचित होने जैसी अनुभूति होती है। अपने साथ भी यही बात है। अपना नगण्य-सा परिचय-सान्निध्य उन्हें ऐसा लगता है कि हम चिर-परिचित और चिर सहचर हैं, अब भी हैं या हो जाएँगे। हमारी स्थिति अलग है। हम उनके पूर्व विचार और चरित्रों को भी जानते हैं। इसलिए वन से लौटती हुई गाय जैसे अपने बछड़े को ही रँभाती, चाटती है, लगभग वैसा ही कुछ अपना भी मन करता है। संकोची स्वभाव और लोकाचार-शिष्टाचार का प्रतिबंध यदि बाधक न हो, तो हमारा मन इन सहचरों को छाती से लगाने, बगल में सुलाने, गोद में खिलाने को मचलने

सच्ची जिज्ञासा से ही भगवान् मिलता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लगे। इस उछाह को हमें जिस किसी तरह काबू में करना पड़ता है।'' ऐसा अद्‌भुत प्रेम भला किस संगठनकर्त्ता ने अपने सहयोगियों, सहकर्मियों को दिया होगा? ऐसे विलक्षण प्रेमी लोकनायक का सान्निध्य भला किसने कब पाया होगा? जिसके अंतर्हृदय की धड़कन हर पल कहती रहती है- ''हमने एकांगी प्रेम करना सीखा है। प्यार किया तो सदा के लिए निबाहा। बात-बात पर लड़ाई करना हमें नहीं आता। किसी ने अपना अहित किया हो या चोट पहुँचाई हो, तो उसकी कटु प्रतिक्रिया का लेश भी नहीं। अमिट रेखाओं की तरह स्वजनों की सद्‌भावनाएँ, सहकारिताएँ, श्रद्धा और आत्मीयता ही स्मृति-पटल पर जमी हैं, जो रह-रहकर उठती-उमड़ती रहती हैं।''

प्यार का प्रतिदान तो प्यार ही है। उनके शरीर से न होने की बात भी कभी किसी के मन में उठ सकती है। जिसका उत्तर देते हुए उनके अपने शब्द हैं-''आत्मा और परमात्मा की एक ही सम्मिलित प्रेरणा अनुभव करते-करते, कर्तव्य और धर्म का एक ही निर्देश-संकेत देखते-देखते अब हमारा व्यक्तित्व निर्दिष्ट लक्ष्य में एक प्रकार से तन्मय एवं सघन हो गया है। अलग से अपनी कोई हस्ती, कोई सत्ता नहीं। जो हमें प्यार करता हो, उसे हमारे मिशन से ही प्यार करना चाहिए। जो हमारे संगठन की उपेक्षा-तिरस्कार करता है, लगता है वह हमें ही उपेक्षित-तिरस्कृत कर रहा है। व्यक्तिगत रूप से कोई श्रद्धावान् है, उसके लिए कुछ करता है, सोचता है, तो लगता है, मानो हमारे ऊपर अमृत बिखेर रहा है और चंदन लेप रहा है। किंतु यदि केवल हमारे व्यक्तित्व के प्रति ही श्रद्धा है, शरीर से ही मोह है, उसी की प्रशस्ति पूजा की जाती है, तो लगता है हमारे प्राण का तिरस्कार करते हुए केवल मृत शरीर पर पंखा डुलाया जा रहा है।''

पूज्य गुरुदेव के स्नेह-तंतुओं से बुना अपना यह संगठन कई अर्थों में अद्‌भुत और अलौकिक है। जिनके पास सूक्ष्म दृष्टि है, उन्होंने इस संगठन और इसके आश्चर्यजनक संगठनकर्ता के प्रभाव को देखा, जाना और श्रद्धा-सुमन अर्पित किए। अपने संगठन के बारे में उनके ये उद्‌गार बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं।

''अन्यान्य संगठन तो निहित स्वार्थों के लिए बनते, टूटते व बिखरते रहे हैं, किंतु हमने जो गायत्री परिवार के रूप में चुने हुए पुष्पों की एक माला तैयार की है, उसका एक ही लक्ष्य है- इक्कीसवीं सदी का स्वरूप क्या होगा, उसकी एक झलक-झाँकी सारे विश्व को दिखाना तथा अध्यात्म को अपने जीवन में उतारकर सारे जमाने को बता देना कि यह जीवन का शीर्षासन अवश्य है, पर इसे व्यवहार में उतारकर चैन की, आंतरिक आनंद की मस्ती भरी जिंदगी गुजारी जा सकती है।'' ◈

अपनी योजना विश्वव्यापी है। उसकी परिधि में अकेला भारत ही नहीं, समूचा संसार भी आता है। अस्तु प्रयत्न यह चलेगा कि विचार क्रांति की प्रक्रिया को परिस्थितियों के अनुरूप व्यापक बनाने के लिये जागृत आत्माओं का समुदाय हर क्षेत्र में-हर देश में मिले। जैसे गोताखोर गहरे समुद्र में से बहुत मेहनत करके कुछ मोती खोज पाते हैं, वैसे ही हमने अपनी सबसे ज्यादा तप शक्ति ऊँचे स्तर की, संस्कारवान्, दिव्य आत्माओं को अपने आँचल में समेटने में लगाई है। बेटा हमारा-तुम्हारा जन्म-जन्मान्तरों का साथ है। मैंने आप सबके रूप में हीरे-मोती खोजे हैं व उन्हें एक सूत्र में पिरोया है।

अपने इस परिवार को उन्होंने प्रज्ञा परिवार का नाम दिया। जून 1984 की अखण्ड ज्योति में पृ. 62 पर उन्होंने लिखा है- ''हमें अनेक जन्मों का स्मरण है, लोगों को नहीं। जिनके साथ पूर्व जन्मों के सघन संबंध रहे हैं, उन्हें संयोगवश या प्रयत्न पूर्वक हमने परिजनों के रूप में एकत्रित कर लिया है और वे जिस-तिस कारण हमारे इर्द-गिर्द जमा हो गये हैं। इस जन्म-जन्मांतरों से संग्रहित आत्मीयता के पीछे जुड़ी हुई अनेकानेक गुदगुदी उत्पन्न करने वाली घटनाएँ हमें स्मरण हैं।''

मनुष्य का पहला पुरुषार्थ है - जीवन लक्ष्य में प्रमाद न होने देना।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पाठक अपने आराध्य से यही सीख लें

बड़े पुत्र ओमप्रकाश जी की कलम से अपने पिता आचार्य श्री के विषय में अभिव्यक्ति, अपने आपमें बड़ी बेबाक है। जन्मशताब्दी महोत्सव की पावनवेला में ये बातें सभी के मन को गुदगुदाएँगी...

पूज्य पिताजी करोड़ों गायत्री परिवार के सदस्यों के हृदय में बसते हैं। लोग उन्हें भगवान् मानते हैं, उनके विषय में कुछ भी कहना कम है। उनके अनेकों गुणों में से एक गुण जिससे मैं सर्वाधिक प्रभावित हुआ, वह है कि वह अपने कर्तव्य का ध्यान रखते थे। संसार की कोई वस्तु उन्हें मोह के बंधन से रोक नहीं सकती थी। मोह और विरक्ति का निरंतर एक घमासान उनके जीवन में चलता रहा, पर मैंने देखा, लक्ष्य के आगे मोह के योद्धा निरंतर पराजित होते रहे। घर, परिवार, धन-दौलत, भाई-बंधु, रिश्ते-नाते, तपोभूमि, अखण्ड ज्योति, यहाँ तक कि शांतिकुंज भी उन्हें अपने मोह पाश में बाँध नहीं सके। वे निरंतर अपने महातप में रत रहे। अपने कर्तव्य के प्रति सदैव सजग रहे। वह सशरीर थे, तब भी और आज कारण शरीर में हैं, तब भी अपने कर्तव्य पूरा करने तक उपस्थित रह सकते हैं। सोचता हूँ शायद महापुरुष ऐसे ही होते होंगे।

पिताजी ने अपनी सब धन-संपत्ति, माता जी ने अपने सब जेवर लोक-हित में समर्पित कर दिये। यहाँ तक कि उन्होंने सर्वमेध यज्ञ में अपने बच्चों का भी दान कर दिया था। अखण्ड ज्योति का प्रकाशन, गायत्री तपोभूमि का निर्माण, 1958 का सहस्र कुण्डीय यज्ञ, मथुरा का विदाई समारोह और फिर शांतिकुंज का निर्माण। इस सबके बीच उनकी साधना, हिमालय यात्रा और मिशन का मत्स्यावतार की तरह विस्तार इन सबका मैं साक्षी रहा हूँ।

मुझे सब घटनाएँ ज्यों की त्यों स्मरण हैं। वह दृश्य कभी नहीं भूलता, जब सतीश का हाथ ट्रेडिल मशीन से कट गया था। 'उँगलियाँ कट कर लटक गई थीं।'

विद्यार्थी जीवन में एक पुस्तक 'कुछ' के एक अध्याय नाम से प्रेरित होकर मैंने घर में आने-जाने वालों के उपनाम रखे। कौशल्या को 'सूखी', गुलाब देवी को 'एजू' नाम दिया। दया ने मृत्युंजय को 'सतीश' नाम दिया। मेरा उपनाम ताऊ जी ने 'गत्ता' रखा। वे मुझे मत्ता का गत्ता अर्थात् मत्त जी का लड़का कहते थे। पिता जी ने भी इसका खूब आनंद लिया। मृत्युंजय का नाम मैंने घोड़ू सिंह रखा। जिसे पिताजी ने घोंडू फिर घोंटा कर दिया। यहाँ तक एक बार पत्र में लिखा, "घर में घोंटा आदि सब कुशल होंगे।" उसे पढ़कर हम सब खूब हँसे। बाद में पिताजी ने उसका एक स्थिर नाम मृत्युंजय रख दिया।

1953 में मैं बी. ए. की परीक्षा दे चुका था। तब तक पिताजी साहित्य का संपादन प्रारम्भ कर चुके थे। वे मुझे कई भाषाएँ पढ़ाकर गुजराती, तमिल, तेलुगू और उड़िया भाषाओं का अनुवाद कार्य देना चाहते थे। उन्हें गुजराती भाषा से

जिसने जीवन में कोई संघर्ष न किया, परिस्थितियों से टकराकर मानव जीवन की दिव्यता न हासिल की, भला वह भी कोई जीवन है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

विशेष लगाव था। उनका कथन था, "गुजराती भारत की समृद्ध भाषा है।" मेरा नाम रखा, आचार्य वैशम्पायन। जो मुझे बहुत अच्छा लगा। उनके अनेक रूपों में से देशभक्त, मत्त जी, और लेखक श्रीराम शर्मा आचार्य का स्वरूप मुझे सर्वाधिक प्रिय है। मैंने कुछ दिन प्रेस में प्रूफ रीडिंग आदि का कार्य किया, पर मैं नौकरी करना चाहता था। अत: पिताजी ने अध्यापक का प्रशिक्षण दिलवाया और मैं नौकरी में लग गया। पिताजी का साहित्यकार "वैशम्पायन" सदा के लिए खो गया, नहीं सो गया। मैं साहित्यकार की जगह अध्यापक बन गया।

उनका जीवन अत्यन्त सादगी भरा था। पिताजी सदैव खादी के वस्त्र धारण करते थे। 'सादा जीवन, ऊँचा विचार' उनका संकल्प था, वही उनकी जीवन शैली थी। उन्हीं का अनुकरण करते हुए माताजी ने भी अपनी बहुमूल्य साड़ियों का त्याग कर खद्दर के बने साधारण कपड़ों को अपनाया। माताजी जीवन भर सीता की तरह अपने राम का अनुसरण करती रहीं। माताजी क्या चाहती हैं? पिताजी पहले से ही जान लेते थे। माताजी को आश्चर्य पूर्वक कहती कि मैंने तो अभी कहा भी नहीं था। और इसी तरह पिताजी के कहने के पूर्व ही माताजी भी उनकी रुचि और आवश्यकता के अनुसार व्यवस्था कर देतीं। इस प्रकार बिना कहे, एक-दूसरे के लिए समर्पण भाव से जीते रहे। जैसे दोनों दूध और पानी कहना तो उचित नहीं, मैं यह कहूँगा कि दूध में दूध मिलकर एकाकार हो गये थे। मैं उनके दाम्पत्य जीवन के 47-48 वर्षों का साक्षी हूँ। लड़ाई तो बहुत बड़ी बात है, मनोमालिन्य का भी एक भी उदाहरण मैंने उनके जीवन में देखा-सुना तक नहीं। धन्य है, एक-दूसरे के प्रति समर्पण का भाव। मेरे फोटो एलबम में अनेक फोटो हैं, जिनमें दोनों खिल-खिलाकर हँस रहे हैं। माताजी, पिताजी की पति-परायण नारी की तरह सेवा करती रहीं और पिताजी भी माताजी का पूरा-पूरा ध्यान रखते। कभी वे बीमार हो जातीं, तो पिताजी पूरा ध्यान रखते, कि कब कितनी दवा लेनी है। अभी ली कि नहीं। नहीं लीं तो क्यों नहीं लीं। स्वयं सुराही से पानी भरकर गिलास लिये खड़े रहते। दोनों एक-दूसरे का खूब सम्मान करते रहे। पिताजी ने माताजी के विषय में लिखा है, मैं लोगों को तप-अनुदानों एवं विचारों के माध्यम से आकर्षित करता हूँ। माताजी आने वालों को अपने ममत्व से बाँध लेती हैं।

मथुरा में अपने प्रवचन के पूर्व वन्दनीया माताजी से वे भी गवाते थे, एवं कहते थे, माताजी के संदेश गीतों के माध्यम से दिये जाते हैं। वे भाव जगाती हैं, तब मैं विचार देता हूँ। माताजी मेरी तप-साधना, अनुष्ठानों की मेरुदण्ड हैं। उन्होंने मुझे अध्यात्म के मार्ग पर अग्रसर होने के लिए मार्ग प्रशस्त किया है।

यदि पाठक अपने आराध्य परम पूज्य गुरुदेव एवं वन्दनीया माताजी से यही सीख लें, तो उनका जीवन धन्य हो जाये। ◈

आध्यात्मिक जीवन कठिन या भौतिक?

लोग कहते रहते हैं कि आध्यात्मिक जीवन कठिन है, पर अपनी अनुभूति इससे सर्वथा विपरीत है। वासना और तृष्णाओं से घिरा और भरा जीवन ही वस्तुतः कठिन एवं जटिल है। इस स्तर का क्रिया-कलाप अपनाने वाला व्यक्ति जितना श्रम करता है, जितना चिन्तित रहता है, जितनी व्यथा-वेदना सहता है, जितना उलझा रहता है, उसे देखते हुए आध्यात्मिक जीवन की असुविधा को तुलनात्मक दृष्टि से नगण्य ही कहा जा सकता है।

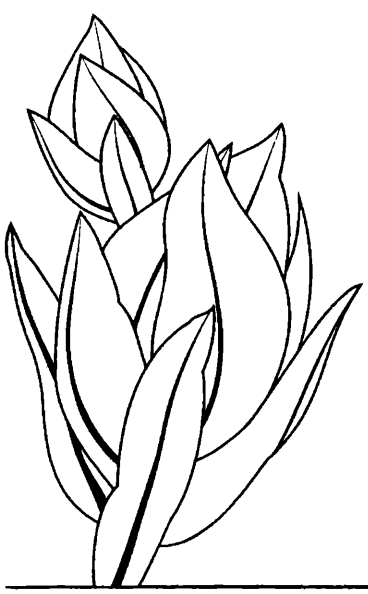
इतना श्रम, इतना चिन्तन, इतना उद्वेग - फिर भी क्षण भर चैन नहीं, कामनाओं की पूर्ति के लिए अथक प्रयास, पर पूर्ति से पहले ही अभिलाषाओं का और सौ गुना हो जाना इतना बड़ा जंजाल है कि बड़ी से बड़ी सफलताएँ पाने के बाद भी व्यक्ति अतृप्त और असंतुष्ट ही बना रहता है।

मनुष्य वह है, जो कठिनाईयों को हँस-हँसकर गले लगता है और परेशानियों के तूफान को उज्ज्वल भविष्य का प्रतीक मानकर उनसे जूझ पड़ता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आध्यात्मिक चिकित्सा के पंचशील

एक नयी दृष्टि आचार्यश्री के विषय में विकसित करें। अथर्ववेदीय अध्यात्म चिकित्सा के विशेषज्ञ आचार्य जी स्वयं में एक विलक्षण वैज्ञानिक हैं। अध्यात्म चिकित्सा के ये पंचशील ही ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान एवं बाद में देव संस्कृति की शोध परम्परा के मूलाधार बने...



आध्यात्मिक चिकित्सा बोध, निदान एवं विधान का पूर्ण तंत्र है। इसमें जीवन की दृश्य-अदृश्य संरचना का संपूर्ण बोध है। इसी के साथ इसमें जीवन के दैहिक, दैनिक एवं आध्यात्मिक रोगों के निदान की सूक्ष्म विधियों का समग्र ज्ञान है। इतना ही नहीं, इसमें इन सभी रोगों के सार्थक समाधान का प्रायोगिक विज्ञान भी समाविष्ट है, जो मानव जीवन की संपूर्ण चिकित्सा के ऋषि-संकल्प को दोहराता है।

अथर्ववेदीय चिकित्सा पद्धति के प्रणेता युगऋषि आध्यात्मिक चिकित्सा के आचार्य परम पूज्य गुरुदेव ने वैदिक महर्षियों की परंपरा को इस युग में नवजीवन दिया। उन्होंने अध्यात्म चिकित्सा के वैदिक सूत्रों, सत्यों एवं रहस्यमय प्रयोगों की कठिन साधना दुर्गम हिमालय में संपन्न की। अध्यात्म चिकित्सा दरअसल वेदविद्या है। यों तो इसका प्रारंभ ऋग्वेद से ही हो जाता है, यजुष् और साम में भी इसके प्रयोग मिलते हैं, लेकिन इसका समग्र व संवर्द्धित रूप अथर्ववेद में मिलता है। इस आथर्वण विद्या को सही व सम्यक् ढंग से जानने पर ही अध्यात्म चिकित्सा के सभी रहस्य जाने जा सकते हैं।

शब्द व्युत्पत्ति के आधार पर 'अथर्वा' शब्द का अर्थ 'अचंचलता की स्थिति' है। 'थर्व इति गतिर्नाम न थर्व इति अथर्वा'। थर्व का मतलब गति है और गति का अर्थ चंचलता है। शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक आदि सभी प्रकार की चंचलता को अथर्ववेदविद्या की अध्यात्म चिकित्सा से नियंत्रित करके साधक संपूर्ण स्वस्थ व स्थितप्रज्ञ बनाया जाता है। परमपूज्य गुरुदेव कहते थे कि वैदिक वाङ्मय में अथर्ववेद के 'ब्रह्मवेद' 'भैषज्यवेद' आदि कई नाम मिलते हैं। इन्हीं में से एक नाम 'अथर्वांगिरस' भी है।

इसका सत्य यह है कि 'अथर्वा' या 'अथर्वण्' और 'अंगिरस्' ये दो अलग-अलग ऋषि थे। इन्होंने ही सर्वप्रथम अग्नि को प्रकट करके यज्ञ चिकित्सा का आविष्कार किया था। अथर्ववेद में अथर्वा ऋषि द्वारा दृष्ट ऋचाएँ अध्यात्मपरक, सुखकारक, अभ्युदय प्रदान करने वाली और श्रेय-प्रेय देने वाली हैं। अथर्वण् और अंगिरस् ऋषि द्वारा दृश्य ऋचाएँ अभिचारपरक ,शत्रुसंहारिणी, कृत्यादूषण, शापनिवारिणी, मारण, मोहन, वशीकरण आदि प्रधान हैं। सार तथ्य यह है कि आथर्वण् मंत्र सृजनात्मक हैं और आंगिरस् मंत्र संहारात्मक हैं। अथर्ववेद में आथर्वण् और आंगिरस् दो प्रकार की चिकित्सा-विधियाँ होने के कारण अथर्ववेद को 'अथर्वांगिरस' कहा जाता है।

युगऋषि परमपूज्य गुरुदेव इस अथर्ववेदीय अध्यात्म चिकित्सा के विशेषज्ञ थे। उनका कहना था कि असाध्य

ईर्ष्या, द्वेष, प्रतिशोध, कपट और मत्सर की दुष्प्रवत्तियाँ जिन पर सवार रहती हैं, उनका अंतःकरण निरंतर उद्विग्न रहता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रोग, भयंकर दुर्घटना, मारण, कृत्या आदि अभिचार कर्म- दुर्भाग्य, दैत्य और प्रेतबाधा, पागलपन को अध्यात्म चिकित्सा का मर्मज्ञ केवल सिर पर जल छिड़ककर या सिर पर हाथ रखकर अथवा मणियाँ बाँधकर दूर कर सकता है। जो इन प्रयोगों को जानते हैं, उन्हें इस सत्य का ज्ञान है कि अथर्ववेदीय अध्यात्म चिकित्सा कोई चमत्कार न होकर एक प्रायोगिक एवं वैज्ञानिक व्यवस्था है। गुरुदेव के द्वारा आध्यात्मिक चिकित्सा का जो प्रवर्तन हुआ है, आज उसे विश्वदृष्टि में मान्यता मिल रही है। परम पूज्य गुरुदेव ने जन सामान्य के लिए पंचशीलों के रूप में आध्यात्मिक चिकित्सा के सर्वसुलभ सूत्रों का प्रतिपादन किया है।

आध्यात्मिक चिकित्सा के पंचशील- स्वास्थ्य किसी एक की समस्या नहीं है। अकेले अपने महादेश भारत में ही नहीं, संपूर्ण विश्व के कोटि-कोटि जन इससे ग्रसित हैं। जिनका तन ठीक है, उनका मन बीमार है। आध्यात्मिक स्वास्थ्य के अर्थ से प्राय: सभी अपरिचित हैं। हालाँकि इसका परिचय, इसकी परिभाषा इतनी ही है कि तन और मन ही नहीं, हमारी जीवात्मा भी अपने 'स्व' में स्थित हो। हमारी आत्मशक्तियाँ जीवन के सभी आयामों से अभिव्यक्त हों। हम भगवान् के अभिन्न अंश हैं, यह बात हमारे व्यवहार, विचार व भावनाओं से प्रमाणित हो। यदि ऐसा कुछ हमारी अनुभूतियों में समाएगा, तभी हम आध्यात्मिक स्वास्थ्य का सही एहसास कर पाएँगे। इसी के साथ हमारे, हम सबके कदम साहसिक साधनाओं की ओर बढ़ने चाहिए। तभी हम आध्यात्मिक चिकित्सा की ओर बढ़ सकते हैं और भविष्य में आध्यात्मिक चिकित्सक होने का गौरव पा सकते हैं। आध्यात्मिक चिकित्सा कतिपय क्रियाओं-कर्मकांडों व प्रयोगों तक सीमित मान लिया जाता है और आध्यात्मिक जीवन-दृष्टि की उपेक्षा-अवहेलना की जाती है। इस सच को हर हालत में समझा जाना चाहिए कि आध्यात्मिक जीवन-दृष्टि ही सभी आध्यात्मिक उपचारों व प्रयोगों की ऊर्जा का स्रोत है। इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती है। इसी वजह से जो अध्यात्म चिकित्सा के सिद्धांतों व प्रयोगों के विशेषज्ञ व मर्मज्ञ हैं, उन्होंने पाँच सूत्रों को अपनाने की बात कही है।

इन्हें आध्यात्मिक चिकित्सा के पंचशील की संज्ञा दी जा सकती है। इन्हें माँ गायत्री के पंचमुख और उनकी पूजा में प्रयुक्त होने वाला पंचोपचार भी कहा जा सकता है। जिन्हें आध्यात्मिक चिकित्सा में अभिरुचि है, उन्हें इस बात की शपथ लेनी चाहिए कि इनका पालन अपने व्यक्तिगत जीवन में संकल्पपूर्वक होता रहे।

१. बनें अपने आध्यात्मिक विश्व के विश्वामित्र—जिस दुनिया में हम जीते हैं, उसका चिंतन व व्यवहार ही यदि अपने को प्रेरित-प्रभावित करता रहे, तो फिर आध्यात्मिक जीवन-दृष्टि अपनाने की आशा नहीं के बराबर रहेगी। इसके लिए हमें आध्यात्मिक चिकित्सा के मर्मज्ञों व विशेषज्ञों को अपना प्रेरणास्रोत बनाना होगा। हाँ, यह सच है कि ऐसे लोग विरले होते हैं। ऐसी स्थिति में हमें उन महान् आध्यात्मिक चिकित्सकों के विचारों के संसर्ग में रहना चाहिए, जिनका जीवन हमें बार-बार आकर्षित करता है। हमारे प्रेरणा स्रोत युगऋषि परम पूज्य गुरुदेव, महर्षि श्रीअरविंद, स्वामी विवेकानंद स्तर के कोई महामानव हो सकते हैं। इनमें से किसी से और इनमें से सभी से अपना भाव-भरा नाता जोड़ा जा सकता है। अपने जीवन की महत्त्वपूर्ण समस्याओं के समाधान के लिए इनके व्यक्तित्व व विचारों से परामर्श किया जाना चाहिए। इन सबकी हैसियत हमारे जीवन में परिवार के सदस्यों की तरह होनी चाहिए। महर्षि विश्वामित्र की भाँति हमें संकल्पपूर्वक अभी इन्हीं क्षणों में अपना यह नया आध्यात्मिक विश्व बसा लेना चाहिए। दैनिक क्रिया-कलापों को करते हुए हमें अपना अधिकतम समय अपने इसी आध्यात्मिक विश्व में बिताना चाहिए। ऐसा हो सके तो समझना चाहिए कि अपनी आध्यात्मिक चिकित्सा का एक अति महत्त्वपूर्ण आधार मिल गया।

२. साधना के लिए बढ़ाएँ-साहसिक कदम- आज के दौर में साधना का साहस विरले ही कर पाते हैं। कायर और भीरू जनों की आध्यात्मिक चिकित्सा संभव नहीं। जो साहसी हैं, वे मंत्र-जप व ध्यान आदि प्रक्रियाओं के प्रभाव से अपनी आस्थाओं, अभिरुचि व आकांक्षाओं को परिष्कृत करते हैं, सचमुच में साधना करते

मनोविकार एक प्रकार की आग भीतर ही भीतर जलाए रखते हैं, जिससे स्वास्थ्य के उत्तरदायी तत्त्व, स्वत: ही नष्ट होते चले जाते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

हैं, वे पल-पल अपने अंतस् को बदलने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। आध्यात्मिक प्रयोगों को ये उत्खनन-विधियों के रूप में इस्तेमाल करते हैं। कोई भी क्षुद्रता उन्हें छू नहीं पाती। कष्ट के कंटकों की परवाह किए बगैर वे निरंतर महानता और आध्यात्मिकता के शिखरों पर चढ़ते जाते हैं।

3. मालिक नहीं, माली बनें-मालिक की झूठी शान को छोड़कर माली बनने से जिंदगी हलकी-फुलकी हो जाती है। 'सबका मालिक एक' को झुठलाकर स्वयं मालिक होने के आडंबर में, झूठी अकड़ में केवल मनोरोग पनपते हैं। जीवन का सत्य निर्झर सूख जाता है। आध्यात्मिक चिकित्सा के विशेषज्ञों का मानना है कि यह संसार ईश्वर का है। मालिकी भी उसी की है। हमें नियत कर्म के लिए माली की तरह नियुक्त किया गया है। उपलब्ध शरीर का, परिवार का, वैभव का वास्तविक स्वामी परमेश्वर है। हम तो बस, उसकी सुरक्षा व सुव्यवस्था भर के लिए उत्तरदायी हैं। ऐसा सोचने से अपने आप ही मन हलका रहेगा और अनावश्यक मानसिक विक्षिप्तताओं और विषादों की आग में न जलना पड़ेगा। हम न भूतकाल की शिकायतें करें और न भविष्य के लिए आतुर हों, वरन् वर्तमान का पूरी जागरूकता एवं तत्परता के साथ सदुपयोग करें-न हानि में सिर पटकें, न लाभ में खुशी से पागल बनें। विवेकवान्, धैर्यवान्, भावप्रवण भक्त की भूमिका निभाएँ। जो बोझ कंधे पर है, उसे जिम्मेदारी के साथ निभाएँ और प्रसन्न रहें।

४. बरबादी से बचें-गलत कामों में अपनी सामर्थ्य को बरबाद करने के दुष्परिणाम सभी जानते हैं। ऐसे लोगों को बदनामी मिलती है, घृणित, तिरस्कृत बनते हैं, आत्म-प्रताड़ना सहते हुए सहयोग से वंचित होते हैं और पतन के गर्त में जा गिरते हैं। यह सब केवल अपनी सामर्थ्य के गलत नियोजन से होता है। आमतौर पर बरबादी के चार तरीके देखने को मिलते हैं-1. शारीरिक श्रम-शक्ति को व्यर्थ में गँवाना-आलस्य 2. मन को अभीष्ट प्रयोजनों में न लगाकर उसे इधर-उधर भटकने देना-प्रमाद 3. समय का, धन का, वस्तुओं का, क्षमता का बेसिलसिले उपयोग करना, उन्हें बरबाद करना-अपव्यय 4. तत्परता, जागरूकता, साहसिकता, उत्साह का अभाव, अन्यमनस्क मन से बेगार भुगतने की तरह कुछ उलटा-सुलटा करते रहना-अवसाद। इन चार दुर्गुणों की चतुरंगिणी से हम हर समय सजग सैन्यप्रहरी की तरह मुकाबला करें। कभी किन्हीं क्षणों में इन्हें स्वयं पर हावी न होने दें। आलस्य, प्रमाद, अपव्यय व अवसाद के असुरों से हमें पूरी क्षमता से निपटना चाहिए। श्रमनिष्ठा, कर्म-परायणता, उत्साह, स्फूर्ति, सजगता, विनम्रता, व्यवस्था, स्वच्छता अपने स्वभाव का अंग होनी चाहिए। भीरूता, आत्महीनता, दीनता, निराशा, चिंता जैसी किसी दुष्प्रवृत्ति को, अपनी सामर्थ्य को बरबाद करने की इजाजत हमें नहीं देनी चाहिए।

५. उदार बनने से चूकें नहीं-कृपणता व विलासिता, दोनों ही आध्यात्मिक रोगी होने के चिह्न हैं। उदारता तो स्वयं के अस्तित्व का विस्तार है, अपने परमप्रिय प्रभु से साझेदारी है, उनके इस विश्व-उद्यान को सजाने-सँवारने का भावभरा साहस है। जो भक्त हैं, वे उदार हुए बिना रह नहीं सकते। इसी तरह जो शिष्ट हैं, वे अपना समय-श्रम सद्गुरु को सौंपे बिना नहीं रह सकते। हमारे भंडार भरे रहें और गुरुदेव की योजनाएँ श्रम और अर्थ के अभाव में अधूरी ही रहें, यह भला किन्हीं सुयोग्य शिष्यों के रहते किस तरह संभव है! यह न केवल सेवा की दृष्टि से, बल्कि स्वयं की आध्यात्मिक चिकित्सा के लिए भी उपयोगी है। उदार भावनाएँ, उदार कर्म स्वयं ही हमारी मनोग्रंथियों को खोल देते हैं। मनोग्रंथियों से छुटकारे के लिए भावभरी उदारता एक समर्थ चिकित्सा-विधि का काम करती है। ◈

आचार्यश्री के अनुसार मनोरोग और कुछ नहीं कुचली, मसली और रौंदी हुई भावनाएँ हैं, इनकी यह दशा हमारे अपने अथवा परिवेश के दूषित चिंतन के कारण होती है। विकृतियाँ दिखती भर ऊपर हैं। इनकी जड़ें गहराई में कुसंस्कारिता के रूप में छिपी होती हैं।

सांसारिक विषयों में जो कुछ थोड़ा सुख का भाव भी होता है, वह भी हमारी आत्मा का ही सुख है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक पुनरावृत्ति

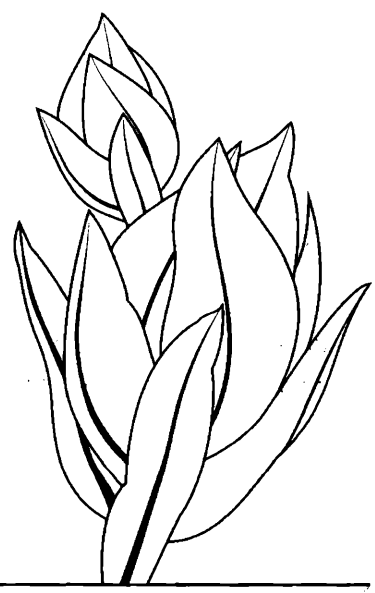
विवेकानन्द और अरविंद की उद्घोषणाएँ।
पुनः दोहरा रही हैं विश्व की सारी दिशाएँ।।

कि ठाकुर के जनम के बाद पौने दो सदी का।
समय है शेष दुनिया की भयंकर त्रासदी का।।
शताब्दी वर्ष में ही वह समय अब आ गया है।
अँधेरा बस इसी अनुमान से घबरा गया है।।
इसी विश्वास को हम और भी दृढ़तर बनाएँ।।

हृदय में आदमी के कसमसाहट हो रही है।
किसी विस्फोट की सुस्पष्ट आहट हो रही है।।
स्वयं हर व्यक्ति सैनिक-सा सजग होने लगा है।
बहुत सामान्य जन का धैर्य भी खोने लगा है।।
उसी उत्साह को हम अब सृजन-शैली सिखाएँ।।

धरित्री पर सुनिश्चित क्रान्ति की शुरुआत है यह।
समझ लो ध्यान से, कोई न छोटी बात है यह।।
मगर इसमें न कोई रक्त की धारा बहेगी।
कि अब जनशक्ति अपनी बात दृढ़ता से कहेगी।।
उसी के आत्मबल को हम उचित पथ पर बढ़ाएँ।।

कि जितना सद्विचारों का अधिक फैलाव होगा।
व्यवस्था में यहाँ उतना सुघड़ बदलाव होगा।।
हमें ऋषि ने थमाईं सद्विचारों की मशालें।
हमारी हैं वही संघर्ष में मज़बूत ढालें।।
वही जलती मशालें आज जन-जन को थमाएँ।।
विवेकानन्द और अरविंद की उद्घोषणाएँ।
पुनः दोहरा रही हैं विश्व की सारी दिशाएँ।।

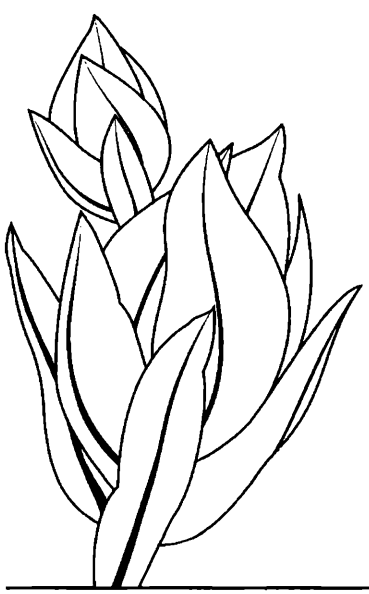


धर्म ही हमें वर्तमान मुहूर्त के क्षणिक सुख के बदले भविष्य में होने वाले अक्षय सुख का मार्ग बताता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रज्ञापुरुष का आध्यात्मिक मानवतावाद बनाम मनुष्य में देवत्व का उदय

जो दर्शन आचार्यश्री ने विश्व की प्रबुद्ध मनीषा को दिया, वह अपने में विलक्षण है। उनका अध्यात्मवाद अपने में समग्र है। इसमें विज्ञान भी है एवं समाज के समुत्कर्ष के सूत्र भी। उनने अगणित मनुष्यों को अध्यात्म सम्बन्धी भ्रांतिपूर्ण मान्यताओं की भूल-भूलैया में भटकने से बचाया।



आध्यात्मिक मानवतावादी जीवन का समग्र तत्त्वदर्शन आचार्य जी के अध्यात्मवाद में सन्निहित है। उनके अनुसार 'अध्यात्मवाद का व्यावहारिक स्वरूप है- संतुलन, व्यवस्था एवं औचित्य। हमारे आध्यात्मिक लक्ष्य की पूर्ति का प्रथम सोपान सुव्यवस्थित जीवन है। स्वस्थ शरीर, स्वच्छ मन, सभ्य समाज उसके तीन आधार है।' व्यक्ति-परिवार-राष्ट्र-विश्व-इसी क्रम में नये आविष्कार की निर्माण कर प्रक्रिया सम्भव होती है। अध्यात्मवाद का मर्म है व्यक्ति संयम, सदाचार और साधना के माध्यम से जीवन के अंतरतम क्षेत्र में प्रवेश करता है और अस्तित्व में समाहित दिव्य और पवित्र सृष्टि में मानवता को विभूषित करने वाली अनुपम क्षमताओं, विभूतियों को प्राप्त करता है।

मनुष्य का मानवता से पतित होने का एकमात्र कारण है साधनात्मक जीवनचर्या का अभाव। इसी के फलस्वरूप व्यक्ति अपने जीवन-पथ से भटकता है। मानवीय जीवन की दिव्यता के आधार पर ही आचार्य जी मनुष्य को भटका हुआ देवता कहते हैं। उनके मानवतावाद का लक्ष्य इसी देवत्व की पुन: प्राप्ति का रहा है। जैसा कि महायोगी श्री अरविन्द का कथन है-'जिस प्रकार मिट्टी और पत्थर में से पौधा उत्पन्न हुआ है, पौधे में से पशु-पशु में से मनुष्य प्रकट हुआ है, उसी प्रकार मानव में भी एक दिन दिव्य मानव अवश्य प्रकट होगा।' श्री अरविन्द की इस विकासवादी अवधारणा के समान ही आचार्य जी की आशावादी दृष्टि भी आध्यात्मिक जीवन के प्रकटीकरण को प्रस्तुत करती है।

मानवता के दिव्य स्वरूप को प्रकट करने वाला एक मात्र आधार है-अध्यात्म। आचार्य जी के शब्दों में-'अध्यात्म का महत्त्व संसार की महानतम् वस्तुओं से ऊँचा है, उसका लाभ सृष्टि के समस्त लाभों से अधिक है। संसार में मनुष्य ने पशुत्व की कोटि से उठकर देवत्व की ओर जो प्रगति की है, आत्मा की अनन्त शक्तियों का जो भण्डार खोला है, उसका कारण आध्यात्मिक उन्नति ही है।'

अध्यात्मवाद के व्यावहारिक स्वरूप का प्रतिपादन करते हुए आचार्य जी ने जीवनदर्शन के रूप में एक नया मार्ग खोजा है। अपने ध्येय की अनन्त गहराई में उन्होंने मानवता के उस स्वरूप को स्पर्श किया है, जिसकी बिलखती आत्मा तिल-तिल की घुटन से तड़प कर अपनी मुक्तावस्था के लिए प्रतिक्षण छटपटा रही थी। मानवता को इस संकट से उबारने के लिए ही दिव्य आत्मायें स्वयं के जीवन को क्षण-क्षण तपा-गला कर इसका समाधान प्रस्तुत करती हैं। इस

ईश्वर दर्शन की आकाँक्षा मनुष्य की सम्पूर्ण कामनाओं की साधक है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दृष्टि से आचार्य जी का अध्यात्मवाद इस युग की अवश्यंभावी प्रक्रिया है। उनकी युग निर्माण योजना का विस्तृत होता स्वरूप जीवन के नये आयाम के सुनिश्चित प्रकटीकरण का बोध कराते हैं।

आचार्य जी मानवतावाद की नवसृजन प्रक्रिया में जिस महाक्रांति का आह्वान करते हैं, उसके लिए अपनी योजना को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि-'हम सब मिलकर आज युग निर्माण के लिए उपयोगी एवं आवश्यक विचारों का प्रचार और कल उन आयोजनों, कार्यक्रमों, आन्दोलनों एवं अभियानों की व्यवस्था करें जो आज की अव्यवस्था को उखाड़ दें और उसके स्थान पर स्वर्गीय वातावरण को पृथ्वी पर अवतरित करने के उपकरण उपस्थित कर दें। हमें यही करना है-यही करेंगे भी। युग परिवर्तन का अर्थ है-विचार परिवर्तन। युग निर्माण का अर्थ है-व्यक्तित्व एवं विचार स्तर को सत्प्रवृत्तियों से ओतप्रोत रखना। विश्वशान्ति का यही एकमात्र मार्ग है। हमें इस पुण्य परम्परा को पुनर्जीवित करके नये युग के अवतरण में महत्त्वपूर्ण योगदान देना है। मानव जाति का भविष्य उज्ज्वल है। अगला समय स्वर्गीय सम्भावनाओं से ओतप्रोत है। अगले दिनों मानव जाति का आध्यात्मिक उत्कर्ष होना है। इसके अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं है।' इसी दिव्य संदेश के साथ आचार्य जी स्वयं के जीवन प्रयोजन एवं मर्म को स्पष्ट करते हुए कहते हैं-'हमारा कार्यक्रम एक ही था, एक ही है और एक ही रहेगा। पशु को मनुष्य और मनुष्य को देवता बनाने का, नर से नारायण और पुरुष से पुरुषोत्तम बनाने का मार्ग ही अध्यात्म है। हम उसी पर चलेंगे और उसी पर चलने की अपने साथी-सहचरों को प्रेरणा देंगे।' यही आध्यात्मिक मानवतावाद का मूलभूत तत्त्व है जिसकी प्रेरणा में पल्लवित मानव जीवन नये आयाम की सृष्टि करता है। वस्तुत: अध्यात्म कोई अजूबा न होकर एक जीवन दृष्टि है। जिसके अनुसार जीवन जीने का अर्थ है सबमें अपनत्व। भावी युग में मानवीय जीवन का, व्यवहार का केन्द्र बिन्दु यही होगा।

उनकी आध्यात्मिक अनुभूति कहती है कि महाकाल और उसके लीला सहचरों की सक्रियता जगत् के महानतम ऋषिगण धर्मचक्र प्रवर्तन में संलग्न हैं। इतना बृहद् महान कार्य इतिहास के सम्मुख कभी उपस्थित नहीं हुआ है। आचार्य जी के अनुसार- 'हम सबके जीवन के इन क्षणों में आज और कल ने कुछ और अधिक व्यापक हो वर्तमान और भविष्य का बाना पहन लिया है। दृश्य जगत् के स्पन्दन किसी अदृश्य महाशक्ति के संकेतों के अनुसार तीव्र से तीव्रतर होते चले जा रहे हैं।' महायोगी श्री अरविन्द ने इस अलौकिक समय को भागवत मुहूर्त की संज्ञा दी है। आचार्य जी अपने चिन्तन में इस भागवत मुहूर्त को वह युग संधिकाल कहते हैं, जहाँ मानवता आध्यात्मिकता के नये युग में प्रवेश करती है।

उक्त परिकल्पना के आधार पर आचार्य जी कहते हैं कि यह आध्यात्मिक संरचना मानव जीवन को सुव्यवस्थित-सुविकसित एवं ऊर्जावान् बनायेगी। इस सुव्यवस्था, विकास एवं जीवन ऊर्जा के प्राण प्रवाह को सतत क्रियाशील और प्रवाहित रखने के लिए आध्यात्मिक समाज में श्रेष्ठ, आदर्श परम्पराओं की नवीनता के साथ प्रतिष्ठा होगी। इनका उद्देश्य होगा- 'मानव जीवन की वह गौरवमयी अभिव्यक्ति, जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को उल्लास, ऊर्जा और नवीन चेतना वितरित कर सके।' इस तरह अध्यात्मवादी तन्त्र में, जीवन और समाज के स्वरूप में आध्यात्मिक मानवतावाद स्वत: उभरकर सामने आयेगा। यह तन्त्र मानवता के प्रत्येक आयाम को समुन्नत करने और प्रकाशित करने में समर्थ है। सतयुगी स्वप्न इसी आधार पर सम्भव हुआ है और आगे भी होगा। युगनिर्माण, विचार क्रान्ति, प्रज्ञा अभियान आदि विविध नामों के माध्यम से इन दिनों समाज में, विश्व के कोने-कोने में जिन सद्वृत्तियों का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है, उन्हें मानवता के इसी नये सृजन को ठोस आधार माना जा सकता है।

आध्यात्मिक मानवतावादी चिन्तन का वैशिष्ट्य-

आचार्य जी के दार्शनिक चिन्तन और उनके विभिन्न क्रान्तिकारी आन्दोलनों में जिस आध्यात्मिक मानवतावाद की परिकल्पना प्रस्तुत हुई है, उसको व्यावहारिक धरातल पर साकार बनाने के लिए उन्होंने इस विराट् लक्ष्य के अनुरूप

संसार मनुष्य के विचारों की ही छाया है। किसी के लिए संसार स्वर्ग है, तो किसी के लिए नरक।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

ही विश्वव्यापी एक व्यवस्थित और विशाल तन्त्र (अखिल विश्व गायत्री परिवार) खड़ा किया, जिसके माध्यम से इस युग प्रवाह की चैतन्यधारा को विश्वसमाज के प्रत्येक स्तर तक पहुँचाया जा सके। इसमें मानवता को समर्पित करोड़ों लोगों की भागीदारी आज प्रत्यक्ष देखी जा सकती है, जो प्राणपण से इस महान उद्देश्य की पूर्ति में अपनी रचनात्मक प्रतिभा का योगदान दे रहे हैं। आध्यात्मिक मानवतावादी समाज के मॉडल के रूप में प्रमुख केन्द्र शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार को उस प्रयोगशाला के रूप में देखा जा सकता है जहाँ सच्चे अर्थों में इनसान को इनसान बनाने की तकनीकें और गतिविधियाँ संचालित होती हैं। यहाँ से अनवरत् नवसृजन के आध्यात्मिक आधार गायत्री का तत्त्वज्ञान, ज्ञान गंगोत्री के रूप में जन-जन तक पहुँचाने वाली प्रक्रियाओं का विश्वव्यापी संचालन सक्रिय है। आधुनिक मस्तिष्क को बौद्धिक प्रवृत्तियों जन्य दुराग्रह से उबारने के लिए 'वैज्ञानिक अध्यात्मवाद' के रूप में एक नये दर्शन का प्रायोगिक मॉडल यहाँ के ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान की अपनी विशेषता है।

इस क्रम में मिशन की नयी संस्थापना देवसंस्कृति विश्वविद्यालय युवा मस्तिष्क और हृदय के रूप में अपने विश्वव्यापी आयामों के विकास की ओर द्रुत गति से अग्रसर है। मिशन की इन आधार स्रोतों और विश्वव्यापी विशाल संघबद्ध जनशक्ति के साथ लक्ष्य की ओर बढ़ते निरन्तर सफलतम प्रयासों के आधार पर निःसन्देह कहा जा सकता है कि भावी समय में 'मनुष्य में देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग का अवतरण' के रूप में आध्यात्मिक मानवतावाद का स्वरूप अभिव्यक्त होकर रहेगा।

मानवतावादी विचारकों में आचार्य जी स्वामी विवेकानन्द की भाँति मनुष्य के दिव्यत्व को स्वीकार करते हैं और श्री अरविन्द के समान मानवीय जीवन के विकास में आध्यात्मिकता का योगदान अनुभव करते हैं। परमहंस जी की सर्वधर्म समन्वय की अनुभूति उनके चिन्तन में धर्मतन्त्र से लोकशिक्षण की प्रक्रिया बनकर अपना व्यावहारिक कलेवर ग्रहण करती है। व्यक्तिवाद और समाजवाद उनके आध्यात्मिक समाजवाद में पारस्परिक पूरकता के साथ समन्वित होते हैं। अपना सुधार संसार की सबसे बड़ी सेवा- जैसा सूत्र वाक्य आत्मकल्याण से लोककल्याण का मार्ग प्रशस्त करता है। उनके आध्यात्मिक मानवतावादी लक्ष्य की प्राप्ति हेतु मूलभूत इकाई व्यक्तिनिर्माण, जीवन निर्माण आवश्यक है, किन्तु इसका चरम लक्ष्य विश्व निर्माण और विश्व-मानवता की सृष्टि है। मनुष्य के लिए देवत्व का आदर्श है साथ ही समाज की सतयुगी अवधारणा भी है। इसीलिए आचार्य जी के चिन्तन में व्यक्तिवाद के साथ-साथ समूहवाद की, सामूहिकता की अधिक महत्ता है, उपयोगितावादी दृष्टि के स्थान पर एकता, समता, सद्भावना, सहयोग जैसे मानवीय मूल्यों की अवधारणा है। अध्यात्म के सर्वोच्च शिखर एवं मानवता के चरम मूल्य '**अहं ब्रह्मास्मि**' की भावधारा के साथ वैदिक सूत्र '**सर्वं खल्विदं ब्रह्म**' का बोधपूर्ण प्रतिदान है। इस तरह आचार्य जी का मानवतावादी दर्शन विशुद्धतः आध्यात्मिक ही नहीं, अपितु आधुनिक युग का एक नवीन मॉडल, एक नूतन दर्शन भी है, जो अपनी भवितव्यता में विश्वमानवता को अध्यात्मावादी जीवन का उपहार और भावी युग को आशावाद का ठोस आधार प्रदान करता है। ◈

समुद्र में भारी तूफान आया। नाव डगमगाने लगी। मल्लाहों में से एक लड़का मस्तूल पर चढ़ा और पाल को मजबूती से बाँधकर रस्सी के सहारे नीचे उतरने लगा। लड़के की निगाह गरजते और उफनते हुए समुद्र की सतह पर गई, तो वह डर के मारे घबरा गया। काँपते हुए स्वर में चिल्लाया-कोई बचाओ। बूढ़े मल्लाह ने कड़ककर कहा-बेवकूफ छोकरे, नीचे को मत देख, आँखें आसमान पर रख और धीरज के साथ रस्सी के सहारे नीचे चला आ। लड़के ने हिम्मत बाँधी और आसमान को देखता हुआ नीचे उतर आया। बूढ़े ने कहा-जिन्दगी में रोज ही आँधी-तूफान आते हैं। उनसे जो डरा, सो मरा। आशा की किरणों से भरे आकाश पर जिसकी निगाह रहेगी, वही तो अपने पैरों खड़ा रह सकेगा।

भूत अब लौटने वाला नहीं है। भविष्य का कोई निश्चय नहीं है। सँभालने और बनाने योग्य तो वर्तमान ही है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्राण संचार करते ये पत्र

परमपूज्य गुरुदेव अब स्थूल रूप से तो हमारे बीच नहीं हैं, किन्तु उनका बहुमूल्य परामर्श जो दैनन्दिन जीवन सम्बन्धी था, साधना से जुड़ा हुआ था तथा अन्तरंग की गहन परतों को उघाड़कर अन्त:करण की चिकित्सा करता चलता था। उनकी पत्र शैली सम्भवत: आने वाले वर्षों में अगणित छात्रों के लिए शोध का विषय बने। फिर भी जो इस पक्ष से अभी तक अनभिज्ञ हैं, सम्भवत: उन दिनों नहीं बाद में इस महामानव व ऋषियुग्म के तंत्र से जुड़े हों, उनको लाभान्वित करने के लिए ऐसे कुछ पत्रों के महत्त्वपूर्ण अंश यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

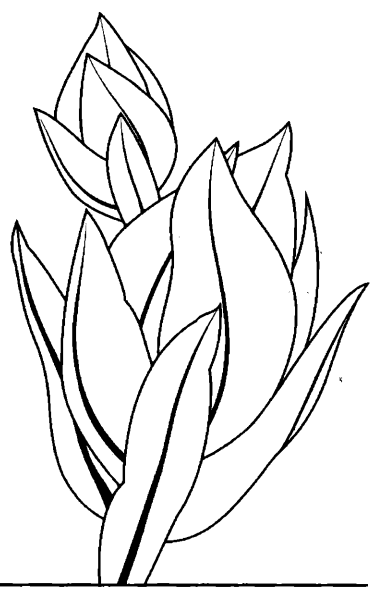
21-6-1951 को लिखे गए अपने एक पत्र में पूज्य गुरुदेव अपने एक परिजन को लिखते हैं-''आप हमारी आत्मा के टुकड़े हैं। इस मानव-शरीर से परम नि:स्वार्थ एवं सात्त्विक प्रेम जितना कोई किसी से कर सकता है, उतना ही हम आपसे करते हैं। यह आपसे कहने की नहीं, वरन् मन में रखने की बात है, आप विश्वास रखें, जब तक हमारी सत्ता है, आपको सदा ही अविरल पितृ-प्रेम प्राप्त होता रहेगा।'' इसी प्रकार 5 दिसम्बर, 1950 को एक आत्मीय शिष्य को अपने पत्र में वे लिखते हैं-''आप अपनी आत्मा के एक भाग हैं। आप जैसे स्वजनों को भूल जाने का अर्थ है-अपने आपको भूल जाना। यह किसी प्रकार भी सम्भव नहीं। आपके आत्मिक विकास का हमें पूरा-पूरा ध्यान है।''

मनोदशा सब की यदा-कदा गड़बड़ाती है। ऐसी स्थिति में सही मार्गदर्शन मिले तो कहाँ से? हर व्यक्ति हर समय तो चलकर किसी के पास जाकर अपने मन की बात कहता नहीं रह सकता। ऐसी स्थिति में अगणित परिजन अपने मन की बात पूज्य गुरुदेव को लिख भेजते व हल्के हो जाते, क्योंकि वे निश्चिन्त थे कि उनके मन पर छाया घटाटोप इसके साथ ही मिट जाएगा। समाधान भी ऐसा मर्मस्पर्शी आता कि व्यक्ति अन्दर से हिल जाता था। एक सज्जन को ऐसी ही परिस्थितियों में लिखे गए एक पत्र का जवाब इस प्रकार मिला-

''हमारे आत्मस्वरूप,

आपका पत्र मिला। धूप-छाँह की तरह मनुष्य के जीवन में तीनों गुणों के उभार आते रहते हैं। समुद्र में ज्वार भाटे की तरह मन भी कई बार उतार-चढ़ाव के झोंके लेता रहता है। महाभारत के बाद पाण्डवों ने श्रीकृष्णजी से युद्ध के समय कही हुई गीता पुन: सुनाने की प्रार्थना की, तो श्रीकृष्णजी ने उत्तर दिया कि उस समय मेरी जो आत्मिक स्थिति थी, वह अब नहीं है, इसलिए वह गीता तो नहीं सुना सकता, पर दूसरा उपयोगी ज्ञान 'अनुगीता' के नाम से सुनाता हूँ। इस प्रसंग से यह विदित होता है कि बड़े-बड़ों की मनोदशा

उनका पत्राचार अति विलक्षण था। वे उँगली पकड़कर मार्गदर्शन करते थे। उनने आत्मीयता का अनन्त खजाना पत्रों के माध्यम से जी भरकर चुराया। समाधान करते पत्र ऐसे होते थे कि प्रश्नकर्ता को लगता कि यह मुझे दिया गया व्यक्तिगत मार्गदर्शन है...



समय हर किसी को बाधित करता है कि युगधर्म पहचाना जाए और उसे अपनाने में आनाकानी न की जाए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

में भी उभार आते रहते हैं। आपको भी वैसा हुआ हो तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। बदली हटते ही सूर्य का प्रकाश प्रकट हो जाएगा। आपका आधार बहुत मजबूत है। उसे पकड़े रहने वाले व्यक्ति की कभी दुर्गति नहीं होती।''

यह पत्र **21 नवम्बर, 1952** को लिखा गया था। कितना सशक्त मनश्चिकित्सक के स्तर का प्रतिपादन है एवं प्रमाणित करता है कि यदि व्यक्ति की अन्तरंग परतों को स्पर्श कर मन:स्थिति ठीक बनाये रखने का परामर्श दिया जाए, तो उन्हें ऊँचा उठने हेतु समर्थ आधार दिया जा सकता है। पूज्य गुरुदेव ने आजीवन यही सेवा की।

12-11-53 को एक 'अखण्ड-ज्योति' पाठक को लिखे एक पत्र में पूज्य आचार्य श्री लिखते हैं-''आप हमें हमारी आत्मा के समान प्रिय हैं। हम सदा आपके समीप हैं। जिस क्षण भी आप आवश्यकता समझें, आपके घर पहुँचने को अविलम्ब तत्पर हैं।'' यही नहीं, वे पत्रों में ममत्व भरे मार्गदर्शन के साथ रचनात्मक दिशा-निर्देश भी दिया करते थे। इसी पत्र में वे लिखते हैं-''आपका समय अमूल्य है। इसे आत्मवत् ही महत्त्वपूर्ण कार्यों में लगाना है।

आपके आस-पास का मण्डल आपके द्वारा आत्मिक-ज्ञान के प्रकाश से आलोकित होगा। इस दिशा में आपको विश्वामित्र और भगीरथ जैसा प्रयत्न करना है। राजनीतिक झंझटों से आपकी शक्ति बचाकर उसी क्षेत्र में लगायी जानी है। आप इसके लिए तैयारी करते रहने में संलग्न रहें।''

अपनी तप-साधना से औरों को लाभान्वित करना ही सदैव पूज्य गुरुदेव का लक्ष्य रहा। वे 21 जनवरी 1959 को लिखे गए एक पत्र में एक घनिष्ठ आत्मीय को लिखते हैं-''हम अधिक शक्ति प्राप्त करने जा रहे हैं और उसका परिपूर्ण लाभ आपको मिलने वाला है। आपके साथ हमारी आत्मा अविच्छिन्न रूप से जुड़ी हुई है और वह तब तक जुड़ी रहेगी, जब तक हम दोनों पूर्णता का लक्ष्य प्राप्त नहीं कर लेते।''

परिजन विभिन्न साधनाओं की जटिलताओं से उलझकर उनसे मार्गदर्शन लेते थे। कोई कुण्डलिनी, चक्रबेधन तथा कोई हठयोग अथवा विरक्ति प्रधान साधना का विधान जानने व मार्गदर्शन प्राप्त करने का हठ करता, तो उनका उत्तर यों होता था-''शबरी, निषाद, रैदास आदि अनेक साधारण स्थिति के साधन बिना विशिष्ट योग-साधनाओं के ही उच्च लक्ष्य को प्राप्त कर सके थे। आप भी वैसा ही कर सकेंगे। गृहस्थ त्यागने की, नौकरी छोड़ने की आपको आवश्यकता न पड़ेगी।

कोई चमत्कारिक अनुभव आपको भले ही न हो, पर आप गृहस्थ योग की भूमिका का ठीक प्रकार पालन करते हुए योगी और यतियों की गति प्राप्त कर लेंगे। आप इस सम्बन्ध में पूर्ण निश्चिन्त रहें और सब सोचना-विचारना हमारे ऊपर छोड़ दें।'' यह पत्र 21 फरवरी, 1954 को एक जिज्ञासु आत्मीय परिजन को लिखा गया था। इससे प्रतिपादित होता है कि वे साधक के भटकने की सारी सम्भावनाओं की जानकारी रखते हुए मन:स्थिति के अनुरूप चिकित्सक के स्तर का ऐसा परामर्श देते थे, जिससे कोई आकस्मिक कदम न उठाकर व्यक्ति सहज जीवन-साधना के पथ पर सुगमतापूर्वक चलता रह सके।

आध्यात्मिक यात्रा ठीक चल रही है या नहीं, इस सम्बन्ध में अपने सारगर्भित पत्र में लिखते हैं-''सांसारिक झंझट तो आपके साथ इसलिए चलते रहेंगे कि जिसका जितना आपको देना-लेना है, उसको चुकाने की व्यवस्था करनी है; ताकि आगे के लिए कोई हिसाब-किताब ऐसा न रह जाए, जो बन्धनकारक हो। आपका वर्तमान तो हम स्वयं परिमार्जित करते रहते हैं। उसकी तनिक भी चिन्ता नहीं करनी है। चिन्ता तो केवल पूर्व संचय की है, जिसका लम्बा हिसाब-किताब इसी जीवन में बेबाक करना आवश्यक है।'' कितना आश्वासन देता था यह कथन, उस व्यक्ति को, जो कर्म-बन्धन, मोह की ऊहापोह में फँसा इधर-उधर भटकता रहा था।

अपनी समस्या, पत्र पाते ही सुलझती देख सहज ही भावनाशील परिजन कभी-कभी कुछ राशि 'अखण्ड-ज्योति संस्थान' के नाम भेज देते, तब उनका जवाब होता था-''आपका भेजा हुआ 211-रु० का मनीऑर्डर मिला। आपके पैसे इतनी उच्चकोटि की श्रद्धा से भरे होते हैं कि उनको व्यक्तिगत उपयोग में लाते हुए हमारा अन्त:स्थल काँप जाता है। इन्हें पचाने के लिए उच्चकोटि का

भीतर का ईमान, बाहर का भगवान् इन दो को मजबूती से पकड़ें और विवेक तथा औचित्य के दो पग बढ़ाते हुये लक्ष्य की ओर एकाकी आगे बढ़ें, तो इसमें ही सच्चा शौर्य, पराक्रम है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ऋषित्व अपने अन्दर होना आवश्यक है। इसलिए आमतौर से आपके पैसों को परमार्थ में लगा देते हैं। यदि इस राशि का, अन्न का एक कण भी हमारे उपयोग में आएगा, तो उतने दिन की हमारी तपश्चर्या एवं सेवा-साधना आपकी होगी व पुण्य आपको हस्तान्तरित होगा।''

24 जनवरी, 1945 को लिखे एक पत्र में वे परिजन को सम्बोधित करते हैं-''गुरुतत्त्व में हम सब की वैसी ही निष्ठा होनी चाहिए, जैसी कि अपने मन में धारण करने का आप प्रयत्न कर रहे हैं, परन्तु इतना स्मरण रखना चाहिए कि मनुष्य आखिर मनुष्य ही है। उसमें दोष होना सम्भव है। मुझे आप निर्दोष न समझें। इतना मानने-समझ लेने के बाद ही अपनी निष्ठा को केन्द्रीभूत करें। देवता मान लेने से आपकी साधना को हानि पहुँच सकती है।'' कितना बेबाक स्पष्टवादी मार्गदर्शन है। यहाँ यह बताना उचित होगा कि उस समय वे 'मैं क्या हूँ?' जैसी गूढ़ उपनिषद् स्तर की पुस्तक लिख चुके थे। तथापि सभी को सत्साहित्य पढ़ते रहने व सत्यधर्म की दीक्षा लेने का ही आग्रह करते थे। गुरुदीक्षा तो उन्होंने तब देनी आरम्भ की, जब चौबीस लक्ष के चौबीस महा पुरश्चरण पूरे कर उन्होंने पूर्णाहुति कर ली।

ज्येष्ठ सुदी 10 **गायत्री जयन्ती, 1953** को उन्होंने अपने जीवन की पहली दीक्षा तीस साधकों को देकर एक महान् शुरुआत की। लगभग पाँच करोड़ व्यक्तियों को मात्र 36-38 वर्ष में अध्यात्म-पथ पर दीक्षित कर, जिसने उच्च प्रगति के सोपानों पर चढ़ा दिया हो, वह स्वयं शक्ति अर्जित किए बिना औरों को अनुदान कैसे देता? इसी कारण उनके सत्परामर्श, मनोवैज्ञानिक, आध्यात्मिक सूत्रों से युक्त होते थे।

फरवरी, 1943 के एक पत्र में वे लिखते हैं-''ईश्वर भक्ति के सम्बन्ध में आपका विचार ही हमें अधिक उचित प्रतीत होता है। राम और कृष्ण यद्यपि ऐतिहासिक पुरुष भी हुए हैं, पर उनसे हमारे इष्टदेव भिन्न हैं? व्यक्ति आदर्श हो सकते हैं, ईश्वर नहीं। ईश्वरीय-सत्ता वाले राम या कृष्ण की अन्त:करण में धारणा करनी चाहिए। ऐतिहासिक राम, कृष्ण के चरित्रों में कुछ दोष भी हैं। उनको इष्टदेव मानने से हम घाटे में रहेंगे।

ध्यान प्रतिमा इष्टदेव की उच्च आदर्शों एवं दिव्य गुणों से ही सम्पन्न होनी चाहिए। मानवीय दोषों का उनके साथ समन्वय कर देने से उलझनें बढ़ जाती हैं। अच्छा हो, आप भी एक आदर्श नियत कर लें। राम, कृष्ण या बुद्ध की प्रतिमाएँ ध्यान के योग्य उत्तम हैं। आप हमें या किसी अन्य जीवित पुरुष को उस आसन पर बिठाने की भूल न करें।''

अक्टूबर, 10, 1968 को एक परिजन को साधना संबंधी समाधान, मार्गदर्शन एवं आश्वस्त करते हुए वे लिखते हैं-' आत्म विकास की अधिकांश आवश्यकता तुम दोनों इसी जीवन में पूरी कर सकोगे। उपासना काल में पूर्व जन्मों के असत् संस्कारों का निष्कासन होता है। फलस्वरूप कई बार मन विलक्षण स्थिति में अशांत होता है। उसे अपनी साधना की प्रगति मानकर प्रसन्नता अनुभव करनी चाहिये। यह स्थिति थोड़े ही दिन रहती है। इस अवधि में हम बराबर सँभालते रहेंगे।

4 जून 1970 को एक परिजन को झोला पुस्तकालय का महत्व बताते हुए वे लिखते हैं- आपको आत्मानुभूति के द्वार तक पहुँचाने का सारा उत्तरदायित्व हमारा है। आप इसी शरीर से योगियों जैसी अनुभूतियाँ प्राप्त करेंगे। अपना झोला पुस्तकालय और नए शिक्षित व्यक्तियों से संपर्क बराबर प्रारंभ रखें। इन सदस्यों में से कई प्रतिभाएँ ऐसी निकलेंगी, जो उस क्षेत्र के लिये प्रकाशपुञ्ज सिद्ध होंगी। उपलब्धियाँ कैसी ही कम हों, उन्हें छोटी न मानें। हमारे आगे के कार्यक्रम विशद हैं। वह राष्ट्र को जाग्रत् कये बिना रहेंगे नहीं।

स्वयं अपने सम्बन्ध में बार-बार परिजनों के लिखने पर वे उन्हें प्रत्युत्तर देते- भविष्यवाणियाँ (जो आपने लिखीं) हमारे अपने ही सम्बन्ध में हैं। लोग पहचान नहीं पा रहे हैं। समय निकल जाने पर पहचानेंगे और पछताएँगे। आपको इस सन्दर्भ में क्या करना होगा, सो हम मिलने पर बताएँगे। इन सब विस्तृत जानकारियों के बाद भी क्या किसी के मन में कोई संदेह होना चाहिए? एक युगपुरुष के सम्बन्ध में, उस उच्च मार्गदर्शक सत्ता के विषय में जो उन्हें उँगली पकड़ कर चलना सिखाती रही व अपने साथ नाव में बिठाकर उन्हें जन्म-जन्मान्तरों के लिए निहाल कर गयी। ◈

हमारा प्रियतम कितना अच्छा है। उससे अधिक रूपवान्, सौंदर्यवान्, दयालु और संपत्तिवान् और कोई हो नहीं सकता।

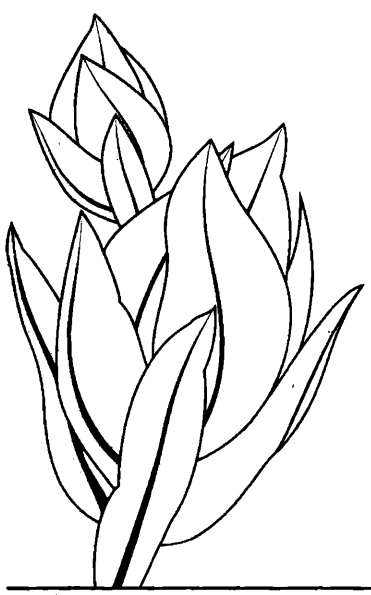
Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उन अनजान जड़ों को शत शत नमन

जिनके तप ने दिया मिशन को, हृष्ट-पुष्ट जीवन।
उन अनजान जड़ों को अपना, सौ-सौ बार नमन।।
-सबका वन्दन-अभिनन्दन।।
गुरुवर ने जब स्वयं बीज सा, निज सर्वस्व गलाया।
तब हर घटक प्रकृति का आया, निज सहयोग बढ़ाया।।
कोई अंकुर बना, बन गया डाल, सुकोमल कोई।
शाखाओं पर उभरा बनकर, फूल और फल कोई।।
किन्तु जड़ों को देख न पाए, कोई कुशल नयन।।

इसकी फुनगी, फूल-फलों को, सबने बहुत सराहा।
इसकी छाया के सुख को भी, सबने पाना चाहा।।
गंध, मधुरता, शोभा सबने, मान-प्रशंसा पाई।
किन्तु जड़ों को मौन तपस्या देती नहीं दिखाई।।
कभी किसी ने सुना न उनका, कलरव या क्रन्दन।।

आज विश्व तक फैल गई है, इस वट की शाखाएँ।
शांति यहाँ से लेकर उड़ती, हैं हर ओर हवाएँ।।
यहाँ ठहरकर मानव, मन को, शीतलता मिल जाती।
हारे मन की थकन-निराशा, यहाँ स्वतः मिट जाती।।
इस विशाल वैभव की जो हैं, मौन भूल कारण।।



रहे मिशन में भूल सरीखे, जो परिजन अनजाने।
करी समर्पण सेवा रहकर, सदा बिना पहचाने।।
गुरु की कृपा जन्म-जन्मों तक, वे परिजन पाएँगे।
हर परिजन को देव सहायक, निश्चय हो जाएँगे।।
उनका ऋणी रहेगा सारा, युगनिर्माण मिशन।।

जिनके तप ने दिया मिशन को, हृष्ट-पुष्ट जीवन।
उन अनजान जड़ों को अपना, सौ-सौ बार नमन।।
-सबका वन्दन-अभिनन्दन।।

जो मनुष्य जितना प्रसन्न रहता है, वह अपना आध्यात्मिक बल उतना ही बढ़ा लेता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अगर परम पूज्य गुरुदेव का अवतरण न होता, तो क्या होता?

जो लोग भगवान् के अवतार लेने में विश्वास रखते हैं, वे पूज्य गुरुदेव को प्रज्ञावतार मानते हैं। जो भगवान् के अवतार में विश्वास नहीं रखते; किन्तु समय-समय पर पैगम्बरों के आगमन में विश्वास रखते हैं, वे पूज्य गुरुदेव की तुलना ईसा, मुहम्मद या बुद्ध से करते हैं।

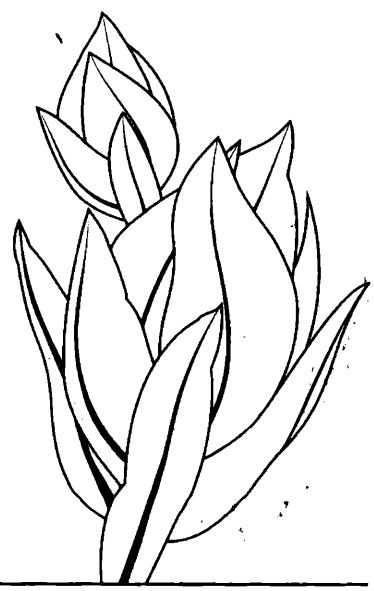
जो अवतार या पैगम्बर दोनों में से किसी को कभी नहीं मानते, वे भी यह अवश्य मानते हैं कि पूज्य गुरुदेव एक महान् युगमनीषी, एक महान् लेखक, एक महान् संगठक, एक महान् सन्त, एक महान् सुधारक, एक महान् चिन्तक, एक महान् त्यागी, एक महान् स्वतंत्रता सेनानी, एक आध्यात्मिक वैज्ञानिक तथा दुनिया के दु:ख से आकुल-व्याकुल एक अद्भुत और अभूतपूर्व व्यक्ति थे। सम्भवत: एक समय आयेगा, जबकि बहुत से लोग यह विश्वास नहीं करेंगे, कि सचमुच पूज्य गुरुदेव जी जैसे व्यक्ति ने जन्म लिया और मानव रूप में इस संसार में विचरे। जिन व्यक्तियों ने पूज्य गुरुदेव जी को जीवित जाग्रत् अवस्था में देखा तथा जिनको उनके सान्निध्य में रहने का सौभागय प्राप्त हुआ उनके लिए भी यह कल्पना करना कठिन है कि पूज्य गुरुदेव जी क्या थे? यदि पूज्य गुरुदेव जी न हुए होते तो क्या होता?

पूज्य गुरुदेव के पैदा होने से पहले ही लोगों का विश्वास धर्म गुरुओं से उठ चुका था, लोग शोषण के शिकार हो रहे थे, लोग गुरुओं को अश्रद्धा से देखने लगे थे, यहाँ तक कि गुरु शब्द का मखौल उड़ाने के लिए वाह गुरु का प्रयोग धूर्त लोगों के लिए किया जाने लगा। ऐसे समय में पूज्य गुरुदेव ने अपने गुरु के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास रखते हुए अपने जीवन को उन्हें पूरी तरह समर्पित कर दिया और यह सिद्ध कर दिया कि सद्गुरु के मार्ग निर्देशन में व्यक्ति चलकर गुरु से भी महान् बन सकता है।

जब लोग साधनाएँ अपने स्वार्थ के लिए अपनी उन्नति के लिए, अपने कष्ट निवारण के लिए, अपने मोक्ष के लिए अपनी सिद्धि के लिए कर रहे थे ऐसे समय में पूज्य गुरुदेव जी ने विश्व की पीड़ित जनता के दु:ख-दर्द को हरने के लिए लोगों के अज्ञान एवं आसक्ति को दूर करने के लिए आजीवन तपस्वी जीवन जिया। पूरे विश्व को अध्यात्म का सच्चा स्वरूप बताया तथा अपने द्वारा प्रयुक्त आदर्शों को अपनाने का उपदेश देकर क्षुद्र से महान् बनाने का पाठ पढ़ाया।

जिस समय धर्मगुरु लोभ, मोह के पाश में जकड़े हुए थे अध्यात्म को धन कमाने का एक माध्यम बना लिए थे नाना प्रकार से पाखण्ड करते हुए लोगों की श्रद्धा का दोहन कर रहे थे। ऐसे में पूज्य गुरुदेव जी ने अपनी पूरी पैतृक सम्पति, अपनी धर्म पत्नी के जेवर लोक

युग को बदलने आयी सत्ता, जरा सोंचे कि न आती तो क्या होता। हम बर्बर आदिम युग में जी रहे होते। भौतिकवाद में आकण्ठ सराबोर हम निकृष्टतम जीवन जी रहे होते। इसीलिए हम उनके जन्म व कर्म सभी को दिव्य मानते हैं एवं स्वयं को सौभाग्यशाली...



आत्मोन्नति संसार की किसी भी बड़ी से बड़ी उन्नति से उच्च एवं गरिमामय होती है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

कल्याण के लिए लगा दिये तथा उद्घोष किया कि दान लेने का अधिकार उसी को है, जिसने अपना सर्वस्व दान कर दिया हो एवं अपना जीवन लोक कल्याण में लगा दिया हो। पूज्य गुरुदेव जी ने लोगों के सामने अपना उदाहरण प्रस्तुत कर धर्म गुरुओं को एक नवीन संदेश एवं दिशा प्रदान की।

पूज्य गुरुदेव के समय में छुआ छूत अपनी चरम सीमा पर था। उस समय लोग ऊँची जाति के सामने बैठ भी नहीं सकते थे, कुएँ से पानी नहीं भर सकते थे। पूज्य गुरुदेव एक कुलीन ब्राह्मण परिवार में पैदा हुए थे। जिनके पिता जी एक प्रसिद्ध भागवत कथावाचक थे। पूज्य गुरुदेव ने बचपन में एक अछूत वृद्ध महिला की सेवा की, उसको दवा पिलाई, तथा उसके घाव की नित्य मरहम पट्टी की तथा अछूत के घर जाकर कथा सुनायी। अपने आचरण से बताया कि छुआ-छूत करना व्यर्थ है। उन्होंने मानव मात्र एक समान-जाति वंश सब एक समान का नारा दिया तथा गायत्री का जप करने का अधिकार सारी मानव जाति को प्रदान किया।

पूज्य गुरुदेव 24 वर्ष की महापुरुषचरण साधना में रत थे, उस समय अंग्रजों का अत्याचार बढ़ने लगा था। पूज्य गुरुदेव ने कहा- जब घर में आग लगी हो वह समय पूजा करने का नहीं, बल्कि आग बुझाने का होता है। युगधर्म निभाने के लिए पूज्य गुरुदेव जी ने स्वतंत्रता के लिए लड़ने का बीड़ा उठाया। बाल सेना का गठन किया तथा अंग्रेजों से लोहा लिया। सैनिक अखबार का क्रान्तिकारी सम्पादन कर लोगों को प्रेरित किया तथा कई बार जेल गये। धर्म क्षेत्र में रहकर भी स्वतंत्रता के लिए जेल जाना स्वीकार किया तथा लोगों के सामने एक उदाहरण प्रस्तुत किया। यदि पूज्य गुरुदेव न हुये होते, तो क्या ऐसा हुआ होता?

ऐसे समय में जब तीर्थों एवं देवालयों से लोगों का विश्वास समाप्त हो गया था, लोग ठगे जा रहे थे, तीर्थ एवं देवालयों द्वारा चलाये जाने वाले कार्य लुप्त हो गये थे। साधु-महात्मा उपहास के पात्र बन गये थे, ऐसे समय में पूज्य गुरुदेव ने मथुरा एवं शान्तिकुंज हरिद्वार में तथा विश्व के 2400 स्थानों पर शक्तिपीठें बनवाकर नाना प्रकार के नि:शुल्क संस्कार कराने की व्यवस्था, जप-तप यज्ञ एवं रचनात्मक कार्य चलाकर समाज को नई दिशा देने का कार्य किया तथा तीर्थों एवं देवालयों की गरिमा को पुन: स्थापित किया।

पूज्य गुरुदेव जी के समय में अश्लील साहित्य की बाढ़ आ गई थी, नई पीढ़ी का आचार-विचार बिगड़ गया था, लोगों की मानसिकता विकृत हो गयी थी। लोग अश्लील साहित्य, पत्र-पत्रिकाएँ, उपन्यास पढ़ना, बड़प्पन समझते थे तथा पश्चिम की अंधी दौड़ में शामिल हो गये थे। ऐसे समय में पूज्य गुरुदेव ने आर्ष ग्रन्थों का सरल हिन्दी भाष्य किया तथा सस्ते मूल्यों में लोगों को उपलब्ध कराया। अखण्ड ज्योति, युग निर्माण योजना, युग शक्ति गायत्री, नारी जागरण अभियान, आदि सत्साहित्य सृजन कर समाज को सन्मार्ग पर चलने के लिए नई दिशा प्रदान किया जिससे लोगों को जीवन जीने की कला का सही ज्ञान हो सका।

भारतीय संस्कृति की जननी गायत्री एवं भारतीय संस्कृति के पिता यज्ञ को लोग भूल गये थे। पूज्य गुरुदेव जी ने गायत्री की साधना स्वयं किया तथा सारे समाज से लोहा लेकर सर्वजनीन बनाया। गायत्री को देशकाल जाति, धर्म, लिंग, भाषा, प्रान्त सम्प्रदाय के बन्धनों से मुक्त कराने में सफल हुए। गायत्री सारे विश्व के कल्याण के लिए है, इसे पुन: विश्वमाता का दर्जा दिलाया, जो इस युगपरिवर्तन का आधार है। आज गायत्री प्रज्ञा अवतार के रूप में प्रतिष्ठित हो चुकी है, इसी के द्वारा नवयुग सृजन (21वीं सदी उज्ज्वल भविष्य) होने जा रहा है।

जब पौरोहित्य कर्म में लगे लोग केवल कर्मकाण्ड को ही महत्व देने लगे, उसके पीछे क्या तत्त्व दर्शन छिपा है, उनकी शिक्षा एवं प्रेरणाओं को भूल गये। षोडश संस्कारों को विस्मृत कर दिया गया, फलस्वरूप व्यक्ति निर्माण एवं परिवार निर्माण का ढाँचा चरमरा गया। पूज्य गुरुदेव ने धर्मतन्त्र से लोक शिक्षण का उपदेश दिया तथा पौरोहित्य कार्य करने के लिए नई पीढ़ी तैयार कर पाखण्डियों को बेनकाब किया। रूढ़ियों को तोड़कर, विवेक को महत्त्व दिया। कर्मकाण्डों को सच्चा स्वरूप प्रदान किया तथा व्यक्ति परिवार एवं समाज निर्माण के लिए नई दिशा प्रदान किया। समाज में जब यह भ्रान्ति फैला दी गयी थी कि कोई भी पाप एवं दुष्कर्म क्यों न

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

करो केवल कथा, भागवत, रामायण का पाठ सुन लेने मात्र से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं, जिससे लोगों में गलत कार्य करने की प्रवृत्ति घर कर गयी। ऐसे में पूज्य गुरुदेव ने सारे विश्व को उपदेश किया कि साधना से ही सिद्धि मिल सकती है। आदर्शों पर चलकर स्वयं द्वारा जप, तप साधना एवं आराधना कर के ही निर्मल एवं पवित्र बना जा सकता है। मानव जीवन का अन्तिम लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। आत्म साक्षात्कार किया जा सकता है। इसके लिए लोगों को व्यावहारिक प्रशिक्षण देने हेतु पूज्य गुरुदेव ने साधना सत्रों की नियमित शृंखला चलाकर लाखों लोगों को भटकाव के मार्ग से हटाकर जीवन जीने की कला का ज्ञान कराया।

हमारे ऋषि मुनियों ने मानव को सुसंस्कारी बनाने के लिए षोडश संस्कारों का प्रतिपादन किया था। जब तक यह संस्कार पद्धति प्रचलित रही, हमारा देश धर्मगुरु बना रहा। ज्यों-ज्यों संस्कार पद्धति विलुप्त होती गयी, त्यों-त्यों समाज अंधकार के गर्त में गिरता चला गया। पूज्य गुरुदेव ने घर-घर संस्कार पद्धति अपनाने के लिए मनुष्य को देवतुल्य बनाने के लिए, भारत को विश्वगुरु बनाने के लिए, सारे भारत में विराट् संस्कार महोत्सवों की शृंखलाएँ चलाकर लोगों को नई दिशा प्रदान की। वर्ष 1962 के नवग्रही योग भारत, चीन युद्ध, वर्ष 1965 में पाकिस्तान युद्ध, तथा 1971 में पाकिस्तान-बांगलादेश युद्ध में पूज्य गुरुदेव ने साधनाओं द्वारा जो ऊर्जा उत्पन्न की, उसका व्यापक असर परोक्ष रूप से पड़ा। जिसे सारा विश्व जानता है। इसी प्रकार सन 1979 में जब स्काई लैब गिरने वाला था सारे वैज्ञानिक निष्फल हो चुके थे, विश्व महाविनाश की आशंका से भयभीत था। ऐसे में पूज्य गुरुदेव ने सायंकालीन साधनाओं द्वारा ऐसी प्रचण्ड आध्यात्मिक ऊर्जा उत्पन्न की, जिसके द्वारा स्काई लैब की दिशा धारा को मोड़ा जा सका, और मानव विहीन क्षेत्र में गिरने को बाध्य किया जा सका।

जब सारे विश्व में भारतीय संस्कृति को हेय दृष्टि से देखा जाने लगा था, ईसाई एवं मुस्लिम धर्म का प्रसार बढ़ने लगा था, पूज्य गुरुदेव जी ने सारे विश्व में अश्वमेधों की शृंखला चलाकर भारतीय संस्कृति को दिग्विजयी बनाया। आज सारा विश्व भारत की तरफ आशान्वित निगाहों से देख रहा है तथा गायत्री महा मंत्र में निहित शिक्षाओं को अपनाने के लिए विश्व के समस्त धर्मावलम्बियों को प्रेरित कर रहा है, जिस अश्वमेध यज्ञ को बड़े-बड़े राजा महाराजा भी कराने में सक्षम नहीं होते थे। पूज्य गुरुदेव ने 27 अश्वमेध यज्ञ सामान्य जनों की सहभागिता से करवा लिया।

गृहस्थ आश्रम में रहकर व्यक्ति द्वारा साधना सम्पन्न करना तथा शास्त्र विहित नियमों को अपनाना असंभव नहीं तो दुष्कर कार्य अवश्य ही है। गृहस्थ आश्रम में नाना प्रकार के गलत कार्य एवं आचरण करने पड़ते हैं। पूज्य गुरुदेव जी ने नारा दिया कि गृहस्थ एक तपोवन है जिसमें संयम, सेवा एवं सहिष्णुता की साधना करनी पड़ती है। मनुष्य के आचरण की असली परीक्षा तो गृहस्थ आश्रम में ही होती है, जंगल एवं गुफा में जहाँ कोई होता ही नहीं वहाँ आदर्शों की परीक्षा सम्भव नहीं। बिना पानी के कोई कैसे तैर सकता है? पूज्य गुरुदेव जी ने गृहस्थ जीवन में रहकर जो तप, साधना, उपासना, आराधना की, वह सन्यासियों के लिए भी सम्भव नहीं है। पूज्य गुरुदेव जी ने गृहस्थ आश्रम में रहकर युग परिवर्तन का जो शंखनाद फूँका वह दृष्टि गोचर होने लगा है।

मनुष्य में देवत्व का उदय, तथा धरती पर स्वर्ग का अवतरण मूर्धन्यों पर दिखाई पड़ने लगा है। पूज्य गुरुदेव ने सिद्ध कर दिया कि गृहस्थ आश्रम सर्वश्रेष्ठ है इसके द्वारा हर असंभव कार्य संभव किया जा सकता है। ◈

समय बदल रहा है

रात्रि का पलायन और प्रभात का उदय हो रहा है। उसका निमित्त कारण एक ही बनने जा रहा है कि लोग अपने को बदलेंगे। स्वभाव में परिवर्तन लायेंगे। गिरने और गिराने के स्थान पर उठने और उठाने की रीति-नीति अपनाएँगे और पतन के स्थान पर उत्थान का मार्ग ग्रहण करेंगे। यही नवयुग है; सतयुग है, जो अब निकट से निकटतम आता जा रहा है।

दैवी उन्नति के पथ पर आरूढ़ व्यक्ति के लिए क्रोध साक्षात् विष तुल्य है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गुरुवर आप महान् हैं

आप बसंती पवन हमारे, आप बसंती तान हैं।
जन्म शताब्दी लक्ष्य हमारा, गुरुवर आप महान् हैं॥

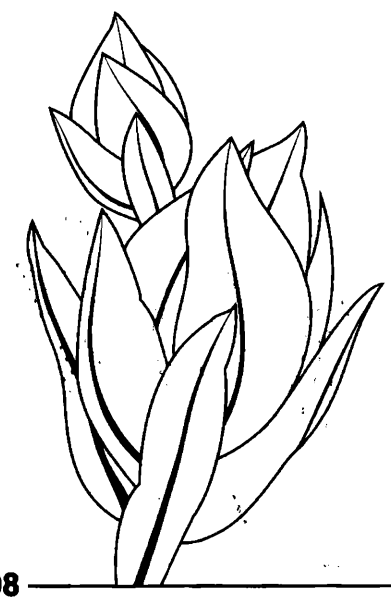
शुभ बसंत बन जब से आये, ठिठुरन सबकी दूर हो गयी।
लोभ, मोह और अहंकार की, माया चकनाचूर हो गयी।।
आप हमारे लिए सरस्वती, मातु ज्ञान की खान हैं॥
जन्म शताब्दी लक्ष्य हमारा, गुरुवर आप महान् हैं॥

हम सबके ऋतुराज आप हैं, सरसों सा मन को सरसा दो।
कूक भरो कोयल सी गुरुवर, भक्ति प्रेम की धार बहा दो॥
युग परिवर्तन करने वाले, आप कृष्ण श्री-राम हैं॥
जन्म शताब्दी लक्ष्य हमारा, गुरुवर आप महान् हैं॥

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

गुरुवर के शुभ जन्म दिवस पर, बोध स्वयं का हम सब कर लें।
गुरुवर के हम सब अंशी हैं, हृदय बुद्धि में भाव ये भर लें॥
महाकाल गुरुदेव हमारे, हमको हर-क्षण ध्यान हैं॥
जन्म शताब्दी लक्ष्य हमारा, गुरुवर आप महान् हैं॥

जन्म शताब्दी वर्ष आपका, ऐसा कुछ हम कर गुजरेंगे।
घर-घर पहुँचे जीवन विद्या, गाँव-गाँव में यही कहेंगे॥
स्वीकारेंगे लोग सहज ही, गुरु जगती की शान हैं॥
जन्म शताब्दी लक्ष्य हमारा, गुरुवर आप महान् हैं॥



मुक्तक-

जब जीवन में गुरु अनुशासन की प्रेरक उमंग आती है।
तब साधक के अन्तस्थल में बासंती ऋतु छा जाती है॥

◈◈◈

जिसे केवल अपने ही लाभ की बात सूझती है, दूसरों के दुःख दर्द से कोई वास्ता नहीं, वह सबसे बड़ा नास्तिक है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

युगऋषि का आध्यात्मिक समाजवाद

आचार्य जी द्वारा प्रतिपादित आध्यात्मिक समाजवाद के तत्त्व चिंतन में आध्यात्म को वैज्ञानिक और सामाजिक क्रियाकलापों का प्रेरणा केन्द्र, ऊर्जा स्रोत माना गया है। आध्यात्मिक समाजवाद का स्वरूप पूर्व प्रचलित विचारधाराओं से भिन्न है। इसमें बाह्य अनुशासनों, नीतियों, कानूनों की बहुतायत की जगह आध्यात्मिक जीवन दृष्टि को अपनाकर मनुष्य के सद्गुणों, सत्प्रवृत्तियों, सद्भावनाओं को उभारने, विकसित करने पर बल दिया गया है।

आचार्य जी के अनुसार-'एकता के नाम पर ज्यादातर कोशिशें आधिपत्य स्थापना की रही हैं। विश्वानुभूति के लिए आध्यात्मिक संवेदना चाहिए। आध्यात्मिक जीवन दृष्टि से उपजी एकता अपने विकसित रूप में समता को जन्म देती है। जब तक बिखराव है-तभी तक विषमता है। आत्मीयता, संवदेना जैसे ही एकता रूप में प्रकट होती है, वैसे ही उत्सर्ग भावना में असमानता स्वभावतया अपना अस्तित्व खो बैठती है और समता का विकास होता है।'

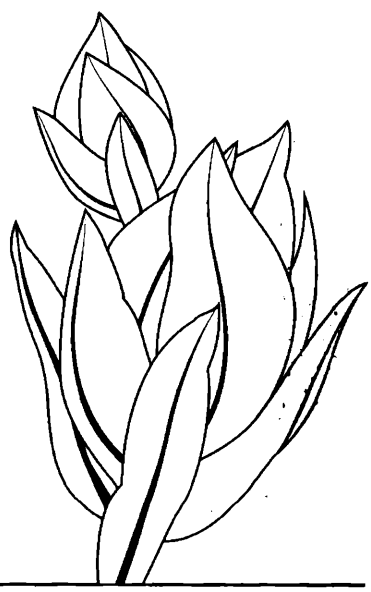
''जिस युग निर्माण आन्दोलन के लिए हमारी जीवन साधना रही है, जिसके लिए हम जलते और तपते रहे हैं, जिसके लिए अपने समस्त साधनों को प्रयुक्त कर रहे हैं और जिसके लिए जीवित रहे हैं, उसका दूसरा चरण समता ही है।''

मनुष्य जाति एक है। इस एकता में जाति-पाँति की, वर्ण-भेद की असमानता बुरी तरह अवरोध उत्पन्न कर रही है। आज नहीं तो कल, इसे छोड़ना ही होगा। परिस्थितियाँ इसके लिए विवश करेंगी। समझदारी का तकाजा, उदारता और व्यापकता अपनाने का है। आज भले ही यह बात गले न उतरे, पर कल तो यह एक अनिवार्य आवश्यकता अनुभव होगी।

अगला समय अनीति सहन नहीं करेगा। नए युग में किसी को इस आधार पर ऊँच-नीच न माना जाएगा कि उसका अमुक वंश में जन्म हुआ है। बड़प्पन के आधार केवल गुण, कर्म स्वभाव रह जाएँगे। आज निर्धन व्यक्ति वस्त्र, घर, चिकित्सा, शिक्षा जैसी सुविधाओं से वंचित रह जाता है। यह विषमता न ईश्वर प्रदत्त है, न भाग्य का खेल और न पुरुषार्थ की न्यूनता पर अवलम्बित। यह समाज में प्रचलित अर्थ प्रणाली के दोष पूर्ण होने का परिणाम है। आचार्य जी का कहना है-''जिस नवयुग की आराधना में हम संलग्न हैं, उसकी अर्थ प्रणाली में समानता को ही आधार माना जाएगा।''

पदों के कारण आज जन साधारण में जो असमानता, विषमता उत्पन्न की जा रही है, यदि वह समाप्त न की जाएगी तो हमारा नेतृत्व हर क्षेत्र में केवल अवाँछनीय व्यक्ति ही करेंगे और उसका दुष्परिणाम अनन्त काल तक जनता

इक्कीसवीं सदी का समाज कैसा होगा, उसके सूत्र वे बीसवीं सदी में ही रच गए। भविष्य के वे द्रष्टा थे और जो भी उन्हें पढ़ता है, सोचता है कि उनने यह सब पहले ही सोच लिया था। एकता, समता, ममता, शुचिता के चार आधारों पर टिका उनका यह आध्यात्मिक समाजवाद, भावी विश्व का मेरुदण्ड बनेगा...



जो अपनी अंतरात्मा की आवाज को अनसुनी करते हैं, वे पापी हैं क्योंकि वे आत्मारूपी परमात्मा की अवहेलना करते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

को भोगना पड़ेगा। वर्ग, लिंग, धन की तरह हमें पदों का भी स्वरूप बदलना पड़ेगा अन्यथा किसी भी संस्था का स्वरूप निर्मल न रह सकेगा।

इस तरह आध्यात्मिक समाजवाद के दो तत्त्व अथवा उपलब्धियाँ एकता और समता हैं। ये दोनों ही एक दूसरे पर अन्योन्याश्रित हैं। आध्यात्मिक संवेदना से उत्पन्न भावनात्मक एकता ही समता का आधार है। आचार्य जी के अनुसार-''एकता की उपयोगिता एवं आवश्यकता को यदि हम समझते-स्वीकार करते हैं तो उनके आधारों को ढूँढ़ना होगा। एकता के भी चार स्तम्भ हैं- 1. धर्म 2. संस्कृति 3. भाषा 4. शासन। विश्व को एकता के सूत्र में आबद्ध करना हो, तो इन चार आधारों में भी सार्वभौम स्तर पर एकता उत्पन्न करनी होगी। युग निर्माण योजना के विविध कार्यक्रमों के पीछे यही मूल भावना एवं प्रक्रिया काम कर रही है।'' आचार्य जी का मानना है कि एकता और समता की सुखद परिणति ही अगले दिनों विश्व धर्म, विश्व संस्कृति, विश्व भाषा और विश्व राष्ट्र के रूप में दिखाई पड़ेगी।

आचार्य जी द्वारा प्रेरित और प्रवर्तित आध्यात्मिक समाजवाद की परिणति भविष्य में विश्व धर्म, विश्व, संस्कृति, विश्व भाषा एवं विश्व शासन के रूप में व्यापक आध्यात्मिक समाज के रूप में देखी जा सकेगी। आचार्य जी के अनुसार आध्यात्मिक समाज की भावी व्यवस्था ऋषितंत्र द्वारा संचालित होगी। व्यवस्थाक्रम में इनके तीन स्तर होंगे - विचारक, प्रशासक और लोकशिक्षक। उन्हें ब्रह्मर्षि, राजर्षि और देवर्षि भी कहा जा सकता है।

ब्रह्मर्षि -ब्रह्मर्षियों का क्षेत्र चिंतन है। इनकी अपनी शक्ति होती है। जो चेतना की गहराई में जाकर, विश्व की सूक्ष्मता में प्रवेश कर जीवन के सिद्धान्तों की शोध करती है।

राजर्षि - ब्रह्मर्षियों के चिंतन के आधार पर समाजसेवी लोकसेवा में निरत रहते हैं, इन्हें ही राजर्षि कहा जाता है। ऐसे सेवा करने वाले समाज में न रहे तो समाज सूख कर कुम्हला जाएगा। ऐसे लोकसेवी विचारशील समाज में आवाज बुलन्द करते हैं। आन्दोलन की जरूरत हो, तो आन्दोलन खड़ा करते, संगठन की जरूरत हो, तो वह भी बनाते हैं। इस समूची कर्मठता के पीछे उनका कोई निजी स्वार्थ नहीं रहता। इधर महर्षि से सूत्र लेते एवं लोकसेवा के क्षेत्र में उस पर अमल करते हैं। ज्ञान द्वारा लोकरंजन करते हुए ये लोकसेवी राजर्षि समाज एक बहुत बड़ी शक्ति की भूमिका निभाते हैं।

आचार्य जी ने इस प्रशासक वर्ग को लोकनायक की भी संज्ञा दी है। उनके अनुसार अध्यात्म साधनाओं द्वारा स्वयं के जीवन को उत्कृष्टतम बनाने वाली आत्माएँ ही लोकजीवन को सच्चा नेतृत्व दे सकने में समर्थ हो सकती हैं। नए समाज में ओछे-हलके, वाचाल व्यक्तियों का कोई स्थान न होगा। यह महान् कार्य महान् आत्माएँ ही कर सकेंगी।

देवर्षि - तीसरी शक्ति सुगम बोध पूर्ण साहित्य व प्रेरक वाणी की है। जिन विचारों का ज्ञानियों को अनुभव होता है उन विचारों को ऐसे चुने हुए शब्दों में ये ज्ञानी ही प्रकट करते हैं, ताकि लोकवाणी में लोग उन्हें ग्रहण कर सकें। यह तीसरी शक्ति-जनता के हृदयों तक सद्विचार पहुँचाने की कुशलता की शक्ति जिनमें होती है उन्हें देवर्षि कहते हैं। समूचे शिक्षण तंत्र की आधारशिला यही हैं। आचार्य जी के अनुसार 'ऋषियों का यह तंत्र कभी समूचे भारत में सक्रिय था।' निकट भविष्य में पुनः यही गौरवमयी परम्परा दुहराई जाने वाली है। ऋषि संस्कृति का तेजोमय प्रखर सूर्य अपने सद्विचारों, सद्गुणों व सत्कर्मों की शुभ रश्मियों से शीघ्र ही पुनः समाज रूपी क्षितिज को प्रकाशित करेगा।

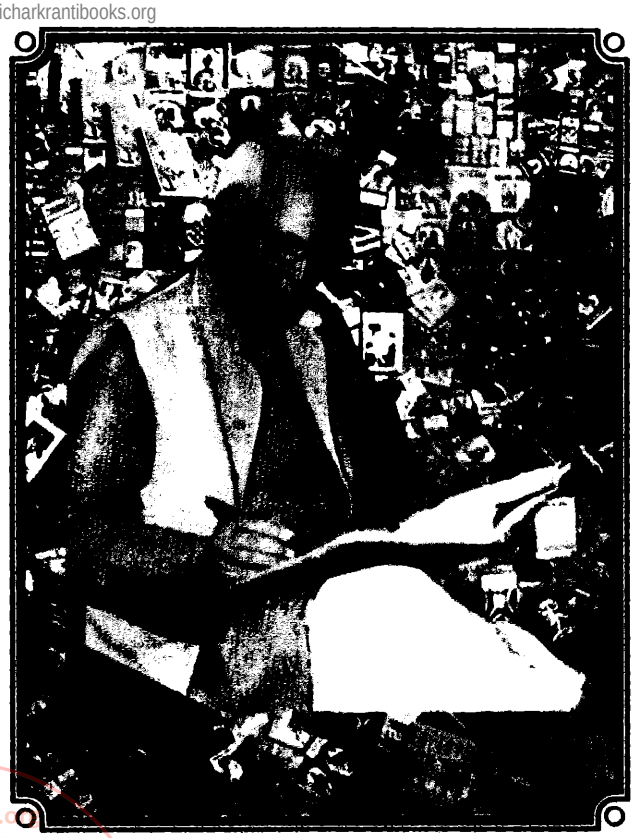
आध्यात्मिक समाज की उपर्युक्त सभी व्यवस्थाएँ मानव जीवन को

यदि बिचार बदल जायेंगे तो कार्यों का बदलना सुनिश्चित है। कार्य बदलने पर भी विचारों कर न बदलना संभव है, पर विचारों के बदल जाने पर उनसे विपरीत कार्य देर तक नहीं होते रह सकते। विचार बीज हैं, कार्य अंकुर; विचार पिता कार्य पुत्र।

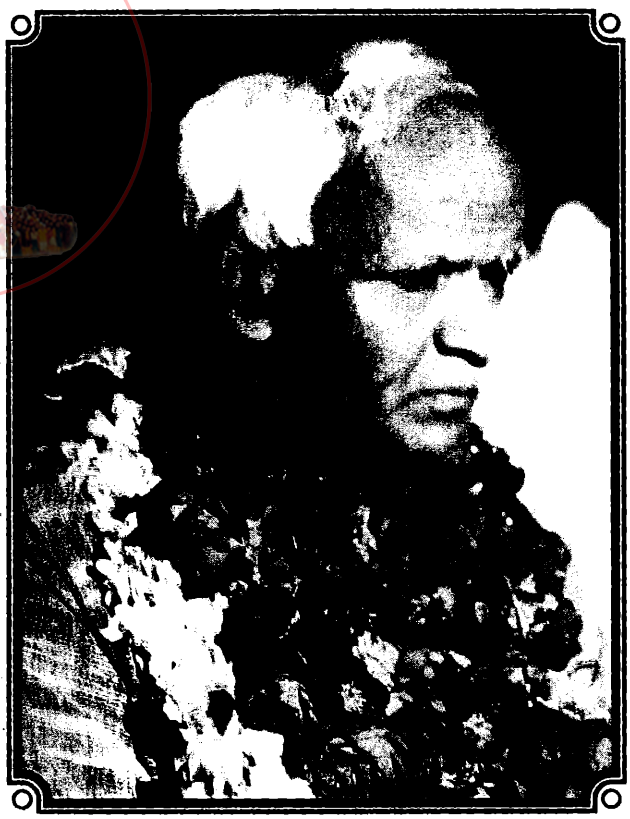
ईमानदारी, निष्कपटता, सरलता, सच्चाई ऐसी वृत्तियाँ हैं, जो जीवन को खुले पन्ने की तरह रखती हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org









www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

मैं विचार पुरुष-मेरा परिचय तो जानो

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



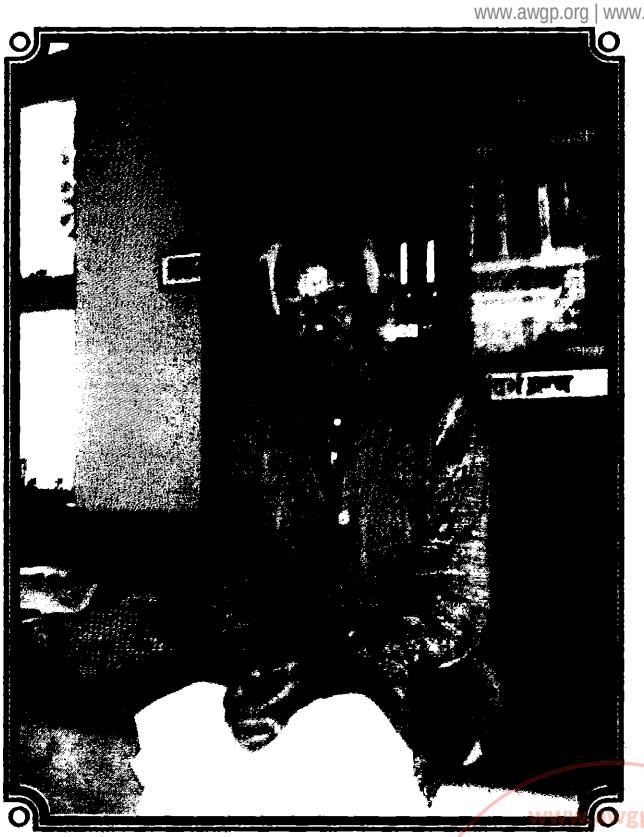


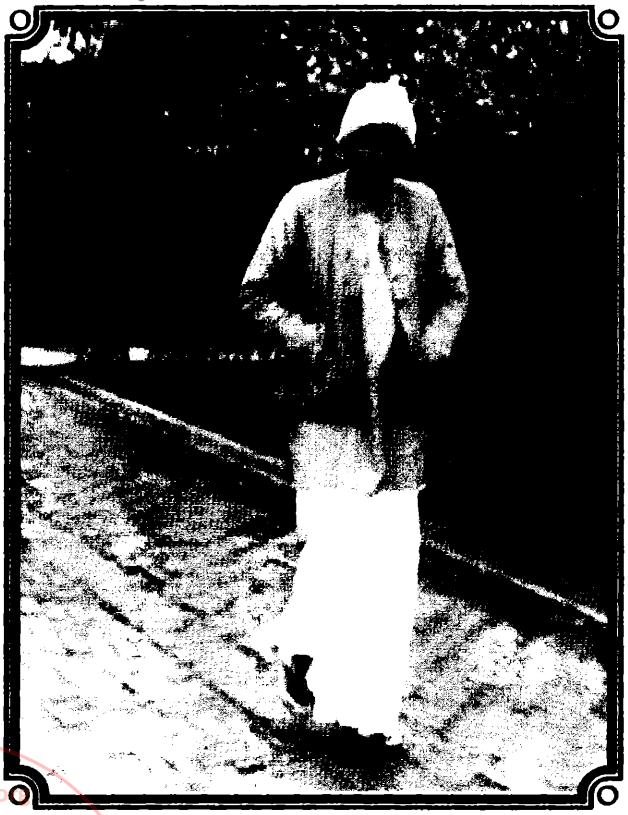


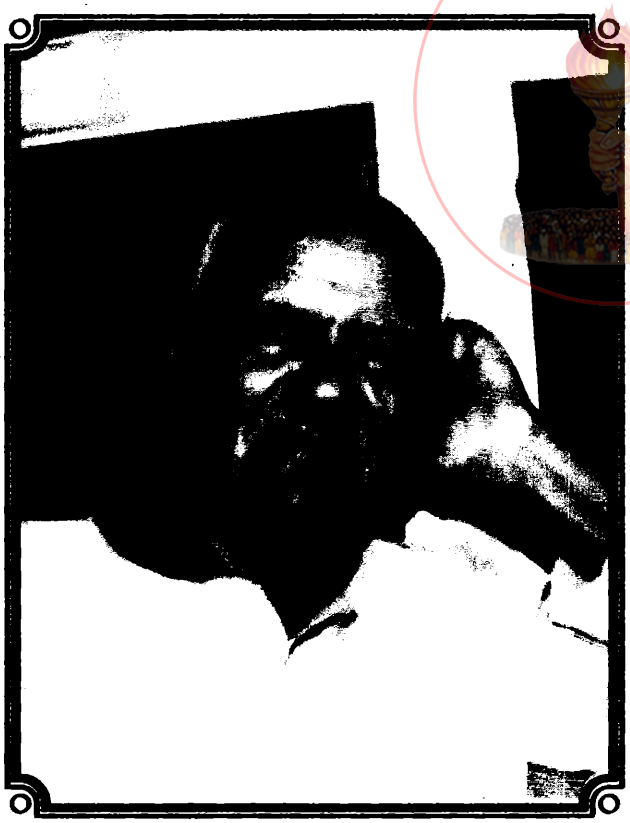


अगर चल सको तो साथ चलकर देखो

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org









www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

सबके जीवन में मधुमास लाने वाली हमारी गुरुसत्ता

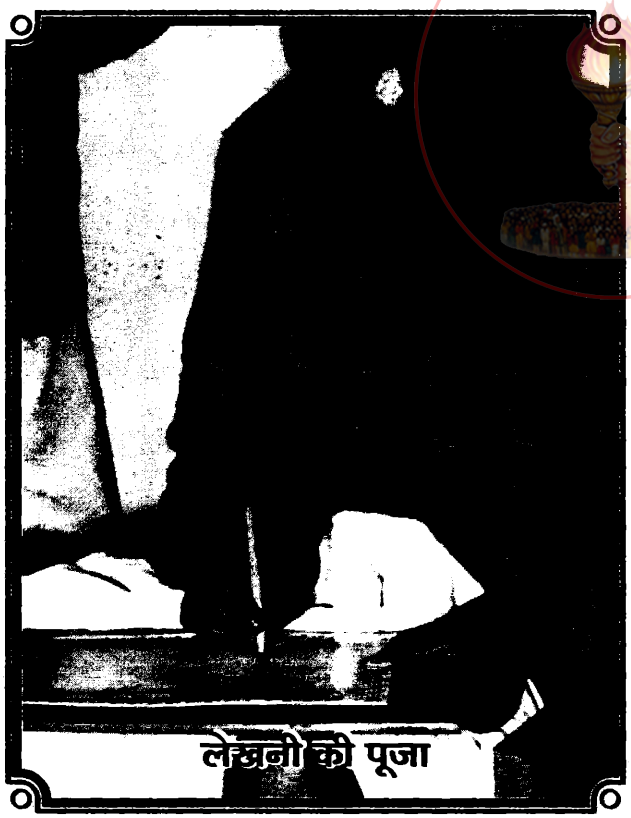
Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



पादपूजन



ज्ञानघटों का पूजन



लेखनी की पूजा



लेखन की साधना

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



सप्तसूत्री कार्यक्रम - मिशन का दहेज विरोधी आदर्श विवाह आंदोलन

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



सप्तसूत्री कार्यक्रम -सबको शिक्षा-सब को विद्या पहुँचे दिग दिगन्त तक जीवन विद्या

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



सप्तसूत्री कार्यक्रम - सबको स्वास्थ्य-शारीरिक-मानसिक-आध्यात्मिक फिटनेस

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



समसूत्री कार्यक्रम - देश के कोने-कोने में चिकित्सा शिविर

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सुव्यवस्थित सुविकसित एवं ऊर्जावान् बनाएँगी; परन्तु सुव्यवस्था, विकास एवं जीवन ऊर्जा की सार्थकता तभी है, जब उनका प्राण-प्रवाह सतत क्रियाशील और प्रवाहित रहे। इसे क्रियाशील एवं प्रवाहित बनाए रखने का काम आध्यात्मिक समाज की परम्पराओं के द्वारा सम्पन्न होगा।

परम्पराओं के इस क्रम में आचार्य जी ने ऋषि परम्परा, संस्कार परम्परा, पर्व त्यौहार परम्परा, साधु ब्राह्मण परम्परा, संस्कार परम्परा, वानप्रस्थ परम्परा एवं आश्रम-देवालय एवं तीर्थ परम्परा को बहुमूल्य माना है।

ऋषि परम्परा-ऋषि परम्परा सभी परम्पराओं का मूल है। आचार्य जी की तीसरी हिमालय यात्रा के दौरान उनकी मार्गदर्शक सत्ता एवं दुर्गम हिमालय में तपस्या निरत ऋषि सत्ताओं ने उनके सामने आज की वस्तुस्थिति स्पष्ट कर उनको ऋषि परम्परा की नवीन स्थापना का कार्य सौंपा। उनके मार्गदर्शक ने कहा -''यही इच्छा इन सभी ऋषियों की है। तुम उनकी परम्पराओं का नए सिरे से बीजारोपण करना'' तथ्य को और अधिक स्पष्ट करते हुए आचार्य जी के शब्द हैं- ''जिन ऋषियों के छोड़े गए कार्य को हमें आगे बढ़ाना है, उनका संक्षिप्त विवरण बताते हुए उन्होंने कहा।''

विश्वामित्र परम्परा - में गायत्री महामंत्र की शक्ति से जन-जन को अवगत कराना एवं एक सिद्धपीठ गायत्री तीर्थ का निर्माण करना है, **व्यास परम्परा में** - आर्ष साहित्य के अलावा अन्यान्य पक्षों पर साहित्य सृजन एवं प्रज्ञा पुराण के 18 खण्डों को लिखने का, **पतंञ्जलि परम्परा में** - योग साधना के तत्त्वज्ञान के विस्तार का, **परशुराम परम्परा में**-अनीति उन्मूलन हेतु जनमानस के परिष्कार के वातारण निर्माण का तथा, **भगीरथ परम्परा में** - ज्ञान गंगा को जन-जन तक पहुँचाने का दायित्व सौंपा गया, **चरक परम्परा में** - वनौषधि पुनर्जीवन एवं वैज्ञानिक अनुसंधान, **याज्ञवल्क्य परम्परा में**-यज्ञ से मनोविकारों के शमन द्वारा समग्र चिकित्सा पद्धति का निर्धारण, **जमदग्नि परम्परा में**- साधना आरण्यक का निर्माण एवं संस्कारों का बीजारोपण, **नारद परम्परा में** सत्परामर्श - प्रव्रज्या के माध्यम से धर्म चेतना का विस्तार, **आर्यभट्ट परम्परा में** खगोल अध्ययन की नयी शुरुआत, **वशिष्ठ परम्परा** में धर्मतंत्र के माध्यम से राजतंत्र का मार्गदर्शन, **शंकराचार्य परम्परा** में स्थान-स्थान पर प्रज्ञा संस्थाओं के निर्माण का, **पिप्पलाद परम्परा** में आहार कल्प के माध्यम से समग्र स्वास्थ्य संवर्धन एवं **सूत-शौनक परम्परा** में स्थान-स्थान पर प्रज्ञा आयोजनों द्वारा लोकशिक्षण की रूपरेखा के सूत्र हमें बताए गए। **अथर्ववेदीय विज्ञान परम्परा के कणाद ऋषि प्रणीत** वैज्ञानिक अनुसंधान पद्धति के आधार पर ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान की रूपरेखा बनी।'' उनके अनुसार यही परम्पराएँ भावी समाज का स्वरूप एवं आधार निर्माण करेंगी। भविष्य में उन्हें प्रगतिशील और सक्रिय रूप में स्पष्ट देखा जा सकेगा।

संस्कार परम्परा - आचार्य जी ने अपनी दृष्टि युगानुकूल बनाते हुए दो संस्कार नए जोड़े हैं, जो आज के प्रचलन के अनुरूप हैं। वे हैं-जन्म दिवसोत्सव तथा विवाह दिवसोत्सव संस्कार मनाना। सामयिकता, उपयोगिता, सार्वजनिक और सत्परिणामों को सुनिश्चित करने वाली परिपाटी ही इक्कीसवीं सदी के मुहाने पर खड़ी युवाशक्ति-प्रबुद्धों तथा नारी शक्ति को स्वीकार्य होगी। यह मानते हुए युग निर्माण योजना-प्रज्ञा अभियान ने बारह संस्कारों को जन-जन तक लोकप्रिय बनाया व इन्हें सम्पन्न किए जाने की विराट् स्तर पर व्यवस्था भी है।

आचार्य जी के अनुसार अगले दिनों संस्कार परम्परा को आध्यात्मिक समाज में गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त होगा।

पर्व-त्योहार परम्परा - आचार्य जी ने त्योहारों को सामाजिक संस्कार की प्रक्रिया कहा है। व्रत साधना से व्यक्ति, संस्कारों से परिवार तथा पर्वोत्सवों से समाज का स्तर ऊँचा उठाने की इस ऋषि पद्धति को उनने दूरदर्शिता पूर्ण बताते हुए इनके माध्यम से लोकशिक्षण, लोकरंजन की प्रवृत्तियों को उभारने की बात कही है। यदि भावनाओं को परिष्कृत उल्लास में बदलकर समूह की शक्ति का उसमें समावेश किया जा सके व उसे एक आध्यात्मिक उत्सव का रूप दिया जा सके तो इससे समाज स्वस्थ बना रहेगा।

साधु-ब्राह्मण परम्परा - साधु और ब्राह्मण सामाजिक चिंतन, चरित्र व

दुर्बलता का छोटा सा छिद्र भी मनुष्य के पतन के लिए काफी है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

व्यवहार का कायाकल्प कर देने वाले वर्ग का नाम है। ''साधु अर्थात निर्वाह व्यवस्था जुटाते हुए लोक मानस के परिष्कार में यथासंभव अधिक से अधिक समय नियमित रूप से लगाना।''

आचार्य जी साधु को वेश और ब्राह्मण को जाति नहीं मानते। उनके अनुसार ब्राह्मण शब्द जाति, कुल, गोत्र, रूप-रंग का द्योतक न होकर एक मनोवैज्ञानिक अवस्था का द्योतक है। उनके शब्दों में 'ब्राह्मण उत्कृष्टतम व्यक्तित्व है, जिसके हर अणु में विद्या और तप संजोया रहता है।

साधु-ब्राह्मण इन दोनों में कुछ विशेष अंतर नहीं है - ''गृहस्थ होने की स्थिति में ब्राह्मण और प्रव्रज्या पर निकल पड़ने से साधु कहा जाता है, पर उनके लक्ष्य और प्रयास में तनिक भी भिन्नता नहीं है। अगले दिनों साधु-ब्राह्मण की यह महान् परम्परा आध्यात्मिक समाज का मेरुदण्ड होगी।''

वानप्रस्थ परम्परा- लोकजीवन की सार्वधिक सशक्त परम्परा 'वानप्रस्थ परम्परा' धर्मतंत्र से लोकशिक्षण साधु स्तर के परिव्राजक ही कर सकते हैं। आचार्य जी के अनुसार वानप्रस्थ जीवन तीन भागों में विभक्त है - 1. तपश्चर्या द्वारा संचित कुसंस्कारों का परिशोधन तथा प्रसुप्त आत्मबल का सम्वर्धन 2. ब्रह्मविद्या के सहारे आत्मज्ञान एवं व्यवहारिक अनुभव अभ्यास 3. लोक सेवा अगले दिनों यही परम्परा आध्यात्मिक समाज के अभ्युदय का आधार बनेगी।

आश्रम देवालय परम्परा - विद्या विस्तार का व्यापक तंत्र जिनके माध्यम से चलता था। युग निर्माण आन्दोलन के अंतर्गत आचार्य जी ने आश्रम को जीवन जीने की कला का प्रशिक्षण देने वाली संस्था का स्वरूप देने का प्रयास किया था। देवालयों के माध्यम से प्रतीकोपासना का मूलभूत तत्त्वदर्शन समझाने तथा जनमानस का जागरण करने का सफल प्रयत्न किया था। अगले दिनों उनके इन प्रयत्नों का स्वरूप आश्रम एवं देवालय परम्परा के माध्यम से विद्या विस्तार के व्यापक तंत्र में क्रियाशील होते देखा जा सकेगा।

तीर्थ परम्परा - तीर्थों की विकृति को दूर कर उसे पुनः अपना खोया सौन्दर्य वापस करने के उद्देश्य से आचार्य जी ने अपने युग निर्माण आंदोलन के अंतर्गत देश भर के सभी तीर्थ क्षेत्रों में लगभग 3 हजार से भी अधिक गायत्री शक्तिपीठों की स्थापना की इनके त्रिविध उद्देश्य हैं- 1. अतीत का पुनरागमन 2. वर्तमान का निर्धारण 3. भविष्य का संयोजन। इस स्थापना को समर्थ रामदास द्वारा स्थापित हनुमान मंदिर, शंकराचार्य द्वारा नवजीवित चारों धामों एवं भगवान् बुद्ध द्वारा स्थापित बौद्ध विहारों और संघारामों जैसा है। जिसे व्यापक, समग्र और भवितव्यता से सामंजस्य रखने की दृष्टि से सार्थक प्रयोग समझा जा सकता है। आगे तीर्थ परम्परा पुनः अपने कल्मषहारी स्वरूप में दिखाई पड़ने लगेगी। उपर्युक्त प्रकार की सामाजिक व्यवस्था एवं परम्परा का आदर्श स्वरूप आचार्य जी की दार्शनिक दृष्टि तक सीमित नहीं है। इस पर उन्होंने शान्तिकुंज आश्रम में सफल वैज्ञानिक प्रयोग भी संपन्न किया है। उनके द्वारा स्थापित शान्तिकुंज को आध्यात्मिक समाज के भव्य स्वरूप का छोटा मॉडल कहा जा सकता है। ◈

अपने 'विचारों' पर पैनी दृष्टि रखें, क्योंकि आपके विचार ही एक दिन 'शब्द रूप' में प्रस्फुटित होते हैं। अपने 'शब्दों' पर और भी पैनी दृष्टि रखें, क्योंकि आपके शब्द ही एक दिन 'कार्य रूप' में परिणत होते हैं। अपने 'कार्यों' पर और अधिक पैनी दृष्टि रखें, क्योंकि आपके कार्य ही धीरे-धीरे आपकी 'आदतों' में शामिल होने लगते हैं। अपनी 'आदतों' पर और भी अधिक पैनी दृष्टि रखें, क्योंकि आगे चलकर ये आदतें आपके व्यवहार में शामिल हो जाती हैं और अपका चरित्र बन जाती हैं, संस्कार बन जाती हैं। प्रकारांतर से यही संस्कार चित्त में जड़ जमा कर बैठ जाते हैं, और फिर यह संस्कार एक जन्म तक नहीं बल्कि जन्म-जन्मांतरों तक हमारे साथ चलते हैं।

बड़प्पन बड़े आदमियों के संपर्क से नहीं, अपने गुण-कर्म-स्वभाव की निर्मलता से मिला करता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साक्षात्कार में उभरते अलौकिक लीला प्रसंग

परमपूज्य गुरुदेव के एक अति निकटतम शिष्य जो आगे चलकर उनके समधी भी बने। प्रस्तुत हैं उनके साथ साक्षात्कार के कुछ अंश...

लोग जिज्ञासावश यह पूछते हैं कि विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिभाशाली मूर्धन्य व्यक्ति बड़ी-बड़ी नौकरियाँ, वेतन की मोटी-मोटी रकम छोड़कर किस उद्देश्य से शान्तिकुन्ज चले आये ? और कैसे यहाँ स्वयं के व्यय पर या नाम मात्र जीवन निर्वाह की स्वल्प राशि पर रहना स्वेच्छा से स्वीकार कर लिया ? जबकि समाज में एक ओर तो भौतिकवाद की अंधी दौड़ लग रही है और दूसरी ओर यहाँ आदर्शमय औसत जीवन जीने की ऐसी चाह ? आखिर कोई खास बात तो है। इसका सही जवाब तो वे ही दे सकते हैं जो यहाँ की जीवन शैली में प्रसन्नता-पूर्वक रह रहे हैं।

प्रस्तुत है सेवा निवृत्त डिस्ट्रिक्ट एण्ड सेशन जज श्री सत्यनारायण पण्ड्या जी से एक भेंट वार्ता-

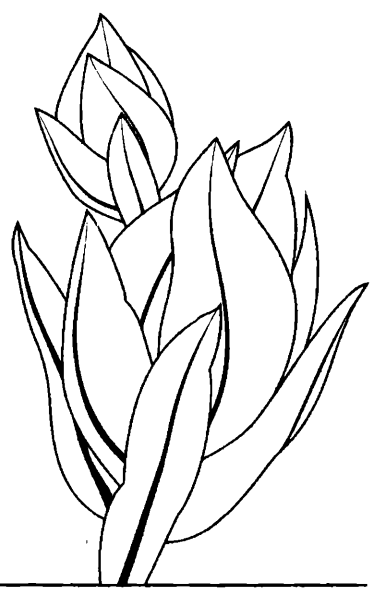
''जज साहब ! आज हम विशेष कारणवश आपसे भेंट करने आए हैं। हमारा अनुभव यह रहा है कि न्यायपालिका के जज, आम लोगों के सम्पर्क में प्राय: कम ही आते हैं, पर आपको तो हम तब से देख रहे हैं, जब आप डिस्ट्रिक्ट एण्ड सेशन जज के पद पर कार्यरत थे। आपका इस मिशन से जुड़ना कब, कैसे, किस प्रकार हुआ ?''

''मैं सन् 1956 में सुसनेर जिला राजगढ़ (म. प्र.) में सिविल जज था। तब वहाँ गुरुदेव पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य जी का आगमन हुआ था। गुरुदेव ने वहाँ के गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ता श्री नन्दकिशोर शर्मा से पूछा, यहाँ कौन-कौन अधिकारी रहते हैं ? उन्होंने गुरुदेव को अन्य अधिकारियों के साथ-साथ मेरा नाम भी बताया। गुरुदेव ने उनसे कहा, ''आज शाम के प्रवचन में जज साहब को लाना।'' उन्होंने आकर मुझे गुरुदेव का संदेश दिया।

तब तक न मैं गुरुदेव को जानता था और न मैंने उन्हें देखा था। श्री नन्दकिशोर जी से मैंने पूछा, ''आचार्य जी कौन हैं ?'' उन्होंने कहा, ''गायत्री के प्रकाण्ड पंडित हैं।'' चूँकि मैं बचपन से गायत्री उपासना करता रहा हूँ, इसलिए मुझमें उनके दर्शन की तीव्र उत्कण्ठा जाग उठी। मैं शाम को प्रवचन में गया। कुछ देर से पहुँचने के कारण मैं पीछे बैठ गया। पूज्य गुरुदेव ने मुझे देख लिया। उन्होंने मंच से ही नन्दकिशोर जी को इशारा करके मुझे आगे बुलवा लिया। मैं भावविभोर होकर अमृतवाणी सुनता रहा। ऐसा ओजस्वी प्रवचन जीवन में पहली बार सुना था। प्रवचन समाप्त होने पर उनसे औपचारिक परिचय हुआ।''

कृपया चर्चा के कुछ बिन्दुओं पर प्रकाश डालें-

चर्चा में पूज्यवर ने ''अखण्ड ज्योति'' पत्रिका का एक अंक देते हुए यह कहा, ''इसे पढ़ना यह पत्रिका प्रतिमाह आपके पास आती रहेगी।



अपयश और तिरस्कार का दंड जेल और फाँसी से भी मँहगा है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

फिर कहा- कल हमारा अन्तिम प्रवचन है अवश्य आएँ।''

''तो क्या फिर आप दूसरे दिन भी प्रवचन में आए थे।''

''दूसरे दिन तो मैं ठीक समय पर पहुँचा। उस दिन के प्रवचन ने मेरे मन-मस्तिष्क को ही झकझोर दिया। साधना संबंधी मेरी सभी शंकाओं का स्वत: ही समाधान हो गया तथा पूज्यवर के प्रति मेरे मन में अटूट विश्वास बना। 6 मई को प्रात:काल अनुष्ठान पूरा हुआ, उसी दिन दोपहर को पूज्यवर का अमरेली (सौराष्ट्र) से 4 मई का लिखा हुआ पत्र मिला-

अमरेली (सौराष्ट्र) से लिखा हुआ पत्र

अमरेली सौराष्ट्र

4.5.67

प्रिय पुत्री सरस्वती,

आशीर्वाद।

पत्र मिला। तुम्हारे पत्र लिखते ही हमें तुम्हारी कठिनाइयों की जानकारी मिल गई थी।

समय के कुचक्र, प्रारब्ध भोग तथा कुसमय कभी-कभी तुम जैसे सज्जनों को भी कष्ट देते हैं। इन्हें धैर्य और साहस पूर्वक सहन करना पड़ता है।

अस्वस्थता का जो दौर घर में आया है वह जल्दी ही समाप्त हो जाएगा। कुछ ही समय में सबकी तबियत ठीक हो जाएगी। चिन्ता न करना, तुम सभी जल्दी रोगमुक्त एवं कष्ट मुक्त हो जाओगे। तुम्हारे कष्ट निवारण के लिए कुछ विशेष उपचार कर रहे हैं। माता इस विपत्ति को दूर करेगी।

घर में सबको स्नेह आशीर्वाद।

श्रीराम शर्मा आचार्य

'' अस्पताल के अधीक्षक और वरिष्ठ डॉक्टर उपचार करते रहे। किसी तरह काल-रात्रि व्यतीत हुई। प्रात:काल होते-होते सुधार के चिह्न नजर आए। फिर तेजी से सुधार होने लगा। कुछ ही दिनों में स्वस्थ होकर चि0 प्रणव ने कॉलेज जाना शुरु कर दिया। दृष्टव्य यह है कि 28 अप्रैल को इन्दौर से डाला गया पत्र मथुरा होता हुआ अमरेली (सौराष्ट्र) पहुँचा और वहाँ से पूज्य गुरुदेव ने उसका उत्तर 4 मई को लिख दिया और दो दिन में वह पत्र इन्दौर में डिलीवर भी हो गया। यह सब बड़े अप्रत्याशित ढंग से हुआ। पत्र की यह यात्रा तो मात्र औपचारिक थी। जैसा कि उन्होंने अपने पत्र में लिखा है, वस्तुस्थिति का भान तो पूज्यवर को पत्र लिखते समय ही हो गया था।''

''आपने बताया कि डॉ0 प्रणव ने प्रथम श्रेणी में एम.डी0 (मेडिसिन) उत्तीर्ण किया।

डॉक्टरों के तो बड़े ऊँचे स्वप्न होते हैं, फिर इनका रुझान इधर कैसे हो गया। इसके अलावा उनका यहाँ समर्पित हो जाना आपको कैसा लगा?''

''सन् 1976 में एम. डी. करने के बाद तत्काल उनकी नियुक्ति बी. एच. ई. एल. अस्पताल में चिकित्सक के पद पर हो गई थी। सन् 78 में चि0 प्रणव ने शान्तिकुन्ज में आजीवन रहकर सेवा करने के अपने विचार से जब हमें अवगत किया तो हम चिन्ता में पड़ गये। धर्मपत्नी को तो बड़ा आघात लगा, यहाँ तक कि वे बीमार पड़ गईं। उन दिनों मैं होशंगाबाद में डिस्ट्रिक्ट जज था। अपनी मनोदशा हमने गुरुदेव को नहीं लिखी थी, फिर भी 26.9.78 को गुरुदेव ने पाँच पृष्ठीय पत्र लिखकर डॉ0 रामप्रकाश जी पाण्डेय के हाथ होशंगाबाद भेजा।'' (जज साहब के पास आज भी यह पत्र सुरक्षित है)

इस मार्मिक, हृदयस्पर्शी पत्र को पढ़कर तथा विचारों को प्रेरित करने की पूज्यवर की सूक्ष्म प्रक्रिया से हमारे सारे असमंजस, सारी भ्रान्तियों का निवारण हो गया। उनके प्रत्यक्ष और परोक्ष स्वरुप ने हमें बहुत प्रभावित किया, इसीलिए पूज्यवर के निर्देशानुसार सेवा-निवृत्त होकर सन् 1983 में हम गंगा की गोद हिमालय की छाया में स्थित युगतीर्थ शान्तिकुन्ज में स्थाई निवास हेतु आ गये।

गुरु सत्ता की अनुकम्पा, उनके अजस्र अनुदान शेष जीवन में ही नहीं, जन्म जन्मान्तर तक प्राप्त होते रहेंगे इसमें तनिक भी संदेह नहीं।

''जज साहब आपकी चर्चा के लिए धन्यवाद। आपने गुरुदेव के बड़े प्रेरक प्रसंग सुनाए और बड़े प्रेरक पत्र भी उपलब्ध कराये। ऐसी प्रेरणा हम सबको मिले और सब पर गुरुसत्ता का आशीष बना रहे। आपको नमन।''

कर्तव्य और उत्कर्ष के सात्विक संकल्प से किया गया विवाह ही संतोष तथा प्रसन्नता दे सकता है और प्रगति की ओर ले जा सकता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

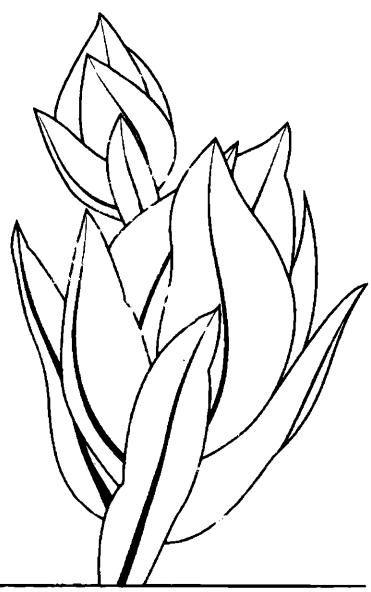
महिला जागृति के प्रणेता इक्कीसवीं सदी-नारी सदी के उद्घोषक

''केवल नारी नहीं,
सुनो हम साथी हैं, भगिनी माँ हैं।
नहीं वासना का साधन हैं,
हम ममता हैं, गरिमा हैं।।
आँचल में जीवन धारा है,
कर में आतुर राखी है।
मस्तक पर सिन्दूर बिन्दु,
अनुराग त्याग की सीमा है।
हैं गृहिणी, सहधर्मचारिणी,
कुल दीपक की बाती हैं।।''

प्रस्तुत कविता की पंक्तियाँ अखण्ड-ज्योति अप्रैल 1963 के अंक से ली गयी हैं। ये बताती हैं कि सूत्र-संचालक ने कितनी अंत:पीड़ा के साथ इन्हें अपनी पत्रिका में प्रकाशित किया होगा। वस्तुत: नारी जागरण अभियान स्वयं में एक ऐसा आन्दोलन है जिसका शुभारम्भ कर, गति देकर लाखों महिलाओं में प्रगति की उमंग भर देने का जो पुरुषार्थ सूत्र-संचालक पूज्य गुरुदेव द्वारा सम्पन्न हुआ, यह अकेला कार्य ही उन्हें युगनिर्माताओं की श्रेणी में बिठा देता है। आधी जनशक्ति के दमन, शोषण, उत्पीड़न पर वस्तुत: पिछले दो हजार वर्षों में कहा तो बहुत गया, पर उसे आन्दोलन का रूप छिट-पुट स्तर पर ही दिया गया। सड़ी-गली मूढ़-मान्यताओं से भरे इस समाज को जब तक जमकर झकझोरा नहीं जाता, तब तक बदलने की बात तो दूर उनमें गतिशीलता भी नहीं आती। पूज्य गुरुदेव ने 'अखण्ड-ज्योति' के शुभारम्भ के साथ ही अपनी लेखनी यदि 'मैं क्या हूँ' जैसे जटिल, आत्मोपनिषद् प्रधान विषय पर चलाई थी, तो 'दाम्पत्य जीवन की निर्मलता' एवं 'गृहस्थ एक तपोवन' जैसे व्यावहारिक विषयों पर भी विशद् विवेचन किया था। उद्देश्य एक ही था, पुरुष अपने घर में बैठी अपनी पत्नी को यथोचित सम्मान देना सीखे, नारी शक्ति की महत्ता को पहचानें व उन्हें भी आगे बढ़ने के उपयुक्त अवसर प्रदान करें। मात्र बच्चे जनने की मशीन न समझकर उन्हें बराबर का साझीदार बनाएँ। यह संयोग नहीं है कि उन्हीं दिनों शरतचन्द्र चटर्जी, प्रेमचन्द्र आदि की कृतियाँ उपन्यास जगत् में इन्हीं विषयों पर लिखी जा रही थीं। रवीन्द्रनाथ टैगोर की नारी की व्यथा-वेदना पर मार्मिक कथाएँ उन दिनों खूब पढ़ी जा रही थीं। मिशन के सूत्र-संचालक पूज्यवर ने शुरुआत कुदृष्टि के शोधन से की। यदि नर अपने कामुक चिन्तन को बदल लेता है तो नारी पर अनावश्यक दबाव, शोषण स्वत: ही बन्द जो जाता है। सुखी गृहस्थ कैसे बनाया जाए, इसके लिए भी उन्होंने दाम्पत्य जीवन की पवित्रता पर जोर दिया।

क्रमश: गायत्री व यज्ञ का प्रतिपादन करते-करते उन्होंने नारी पाठकों को याद दिलाया कि वे अपनी गरिमा को

नारी उत्पीड़न की चर्चा समाचार पत्रों में पढ़ते हुए वे रो पड़ते थे। कहते थे, 'कब ऐसा समय आएगा जब नारी अभ्युदय होगा?' फिर कहते थे मेरा यह मिशन-इसकी प्रथम वरीयता नारी सशक्तीकरण ही है। इसी के लिए वे जीवन भर जिए...



नर बुद्धि का प्रतिनिधित्व करता है और नारी भावना की प्रतिमा है। बुद्धि और हृदय के समन्वय से ही व्यक्तित्व में पूर्णता आती है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पहचानें। जून सन् 1951 की अखण्ड-ज्योति में वे लिखते हैं कि वैदिक काल में ऋषिकाएँ ही समाज की विभिन्न गतिविधियों का संचालन करती थीं। सभी ब्रह्मवादिनी थीं तथा कइयों ने मंत्रों की रचना तक की है।

वेदाध्ययन, ब्रह्म-उपासना, यज्ञ, शिक्षण आदि गृहस्थ संचालन के अतिरिक्त उनके द्वारा सम्पादित कार्य थे। बृहदारण्यक उपनिषद् का उदाहरण देते हुए उन्होंने लिखा कि-"जिस प्रकार पुरुष ब्रह्मचारी रहकर तप, स्वाध्याय, योग आदि द्वारा ब्रह्म को प्राप्त करते हैं, वैसे ही स्त्रियाँ ब्रह्मचारिणी रहकर आत्म-निर्माण एवं परमार्थ का सम्पादन करती हैं।" अथर्ववेद का उल्लेख करते हुए वे लिखते हैं कि **"ब्रह्मचर्येण कन्या ३युवानं विन्दते पतिम्"** (अथर्व, 11/7/18) अर्थात् कन्या ब्रह्मचर्य का अनुष्ठान करती हुई, उपयुक्त पति को प्राप्त करती है।

सम्भवत: पूज्य गुरुदेव धर्म-क्षेत्र में ऐसे पहले प्रवक्ता रहे हैं, जिन्होंने आध्यात्मिक पुरुषार्थ से लेकर बौद्धिक जगत् के, सामाजिक क्षेत्र के विभिन्न कार्यों में पुरुष व स्त्री दोनों को समान अवसर दिये जाने की वकालत उस जमाने में की, जबकि ऐसा समाजशास्त्री भी खुलकर नहीं कह पा रहे थे। गायत्री तपोभूमि की स्थापना के बाद जब वहाँ 108 एवं 1008 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुए, तो वंदनीया माताजी एवं पूज्य गुरुदेव दोनों की उनके संचालन, व्यवस्था में समान जिम्मेदारी थी। सभी आमंत्रित नर व नारियों को यज्ञोपवीत, दीक्षा, गायत्री अनुष्ठान एवं यज्ञ में भाग लेने की पूरी स्वतंत्रता दी गयी एवं वहीं से उस अभियान की शुरुआत हुई जिसे उन्होंने नारी जागृति या महिला जागरण अभियान नाम दिया। मार्च 1958 में गुरुदेव अपनी पत्रिका में लिखते हैं कि —"नारी जाति के बौद्धिक व भावनात्मक उत्कर्ष के भारी महत्त्व को समझते हुए यह विचार उठता है कि हमारी धर्मपत्नी की शक्ति, योग्यता व भावना का उपयोग क्यों न इस कार्य में किया जाए।"

उन दिनों वंदनीया माताजी की इच्छा कन्याओं के लिए गुरुकुल आरम्भ करने की थी। इसके लिए पूज्य गुरुदेव व माताजी दोनों कई कन्या गुरुकुलों का निरीक्षण करके आए थे। संभवत: उन दिनों परिजनों की कन्या को घर से बाहर भेजने की हिचक को देखते हुए वे इस चिन्तन के कार्य को स्वरूप नहीं दे पायीं, पर बाद में शान्तिकुञ्ज आने पर सुनियोजित ढंग से इस कार्य को चला सकीं।

सन् 1958 के महायज्ञ के बाद अगले वर्ष ही 1959 की गायत्री जयंती पर उन्होंने पहली महती जिम्मेदारी वंदनीया माताजी के कंधों पर डाली। वह थी अखण्ड-ज्योति के सम्पादन की। 2 वर्ष तक अपनी हिमालय यात्रा एवं आर्ष ग्रन्थों के भाष्य हेतु प्रवास पर रहने के कारण वे वंदनीया माताजी का परोक्ष मार्गदर्शन करते रहे, किन्तु सारा प्रत्यक्ष दायित्व वंदनीया माताजी ने बड़ी कुशलतापूर्वक सँभाला। यहीं से उन्हें दस वर्ष बाद सौंपे जाने वाले अति महत्त्वपूर्ण कार्य की नींव पड़ चुकी थी।

अपनी विदाई से एक वर्ष पूर्व उन्होंने 'आध्यात्मिक काम विज्ञान' के नाम से एक छह अंकों तक धारावाहिक चलाने वाली एक लेखमाला प्रकाशित की। इसमें मूल प्रतिपादन यह था कि—"प्रजनन प्रक्रिया के मूल में छिपी पवित्रता को पहचाना जाना चाहिए। नर और नारी दोनों मिलकर एक व्यवस्थित शक्ति का रूप धारण करते हैं।

जब तक यह मिलन न हो, चेतना व गति उत्पन्न ही न होगी। कामबीज का दुरुपयोग न कर उसका परिष्कार किया जाना चाहिए। नर-नारी का निर्मल सामीप्य ही आध्यात्मिक काम विज्ञान है।" यह एक क्रान्तिकारी प्रतिपादन था, जिसके माध्यम से नर की शक्ति का स्रोत नारी को बताया गया था व मर्यादित यौन सम्बन्धों का निर्वाह करते हुए किस प्रकार दोनों प्रगति पथ पर बढ़ सकते हैं, इसका मार्गदर्शन किया गया था।

वंदनीया माताजी को मातृत्व की उदात्त गरिमा से भरा-पूरा बताते हुए मई, 1971 की अखण्ड-ज्योति में उन्होंने लिखा कि-"जून के बाद माताजी शान्तिकुंज हरिद्वार में रहेंगी। अखण्ड दीप उनके साथ चला जाएगा। वे भी 24 लक्ष के 24 महापुरश्चरण संपन्न करेंगी।" गुरुदेव 30 जून, 1971 को हिमालय चले गए एवं सारा कार्यभार वंदनीया माताजी ने सँभाला। यह पूज्य गुरुदेव के स्थूल से सूक्ष्म की ओर जाने का प्रथम चरण था। उन्होंने

कोई व्यक्ति अच्छा, सच्चरित्र, ईमानदार है तो उसका अधिकांश श्रेय उसकी माँ को जाता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रत्यक्ष से अपना स्वरूप काफी पीछे कर वंदनीया माताजी के माध्यम से मिशन का मार्गदर्शन-संचालन आरंभ कर दिया था। एक वर्ष की अवधि जब तक गुरुदेव अपनी मार्गदर्शक सत्ता के पास रहे; माताजी के पास बारह कन्याएँ आ गईं, जो 12-13 वर्ष की सुसंस्कारी विभूतियाँ थीं। इन्होंने अखण्डदीप के पास 24-24 लाख का महापुरश्चरण वंदनीया माताजी के मार्गदर्शन में आरंभ कर दिए, जो चार वर्ष में समाप्त हो गया। इन्हीं कन्याओं की संख्या बढ़ी व इनको प्रशिक्षिका करके शान्तिकुंज में नारी-जागरण के 3-3 माह के सत्र चलाये गये।

इन नारी-जागरण सत्रों की विशेषता यह थी कि इनमें गुरुकुल स्तर की शिक्षा के साथ-साथ परिवार-निर्माण व लोकसेवी बनने का समग्र शिक्षण दिया जाता। आठवें दर्जे से अधिक पढ़ी वयस्क कन्याओं व महिलाओं को प्रवेश दिया गया। स्वास्थ्य-संरक्षण, शिशुपालन, घर की स्वच्छता, परिवार-व्यवस्था, कुरीतियों से संघर्ष, सामान्य संगीत शिक्षा, लाठी, व्यायाम, स्काउटिंग, संस्कार कर्मकाण्ड तथा स्वावलम्बन की शिक्षा इनमें दी जाती थी। युग-नेतृत्व तथा समूह संचालन भी इन्हें यहाँ सिखाया गया। प्रवेश संख्या बढ़ती गई, शान्तिकुञ्ज का भी विस्तार होता गया एवं जुलाई 1975 में 'महिला जागृति अभियान' नाम से एक स्वतंत्र पत्रिका प्रकाशित होना आरंभ हो गई। इस पत्रिका में ऊपर बताये गये विषयों का विवेचन व मार्गदर्शन समाहित था। आरंभिक वर्षों से ही इसकी पाठक संख्या बीस हजार पहुँच गई, जो बताती है कि ऐसे साहित्य की कितनी आवश्यकता उस समय थी। इस पत्रिका में चुनौती थी—

जब तक नारी के नयनों से बहता है जल खारा।
तब तक नवयुग का न पूर्ण होगा मृदु-स्वप्न तुम्हारा।।

पूरी पत्रिका सारे परिकर को संबोधित थी व इसके लेखों ने न केवल परिवार के मुखिया को, बच्चों को व अन्यान्य सदस्यों को भी जीवन जीने की नयी दिशा दी। पाँच वर्ष बाद इस पत्रिका को युगनिर्माण पत्रिका से समन्वित कर इन विषयों का विवेचन इसमें किया जाने लगा।

सबसे महत्त्वपूर्ण व चौंका देने वाली घोषणा पूज्यवर ने अक्टूबर 75 में की, जब उन्होंने देवकन्याओं के जत्थे क्षेत्रों में नारी सम्मेलन हेतु भेजे जाने का निर्णय लिया व नवम्बर में उन्हें रवाना कर दिया गया। वंदनीया माताजी व पूज्य गुरुदेव द्वारा प्रकाशित इन तपस्विनी देवकन्याओं के जहाँ-तहाँ ओजपूर्ण व्याख्यान हुए। इस प्रकार एक नई क्रांति का तूफान आया। सभी ओर महिला नेतृत्व की, युग-परिवर्तन की दुंदुभि बजती चली गई।

यह दृश्य देखने योग्य था कि जिस सभा को बड़े-बड़े वक्ता नहीं सँभाल पाते, उसे वासंती वस्त्रधारी इन देवकन्याओं ने न केवल बाँधे रखा, बल्कि उनके चिन्तन को भली-भाँति झकझोरा। यह क्रम, नवम्बर 1975 से 1979 तक निर्बाध गति से चलता रहा, फिर शक्तिपीठों के निर्माण की घोषणा कर गुरुदेव ने क्षेत्रीय कार्यक्रमों को नई दिशा प्रदान की। देवकन्याओं के प्रशिक्षण के साथ त्रैमासिक महिला शिक्षण शान्तिकुंज में सतत चलता रहा। अब उसका परिवर्द्धित स्वरूप युग-शिल्पी शिक्षण के रूप में चलता है जिसमें स्वावलम्बन, संगीत, कर्मकाण्ड एवं संभाषण कला का बहुमुखी शिक्षण दिया जाता है।

इन्हीं प्रशिक्षित कन्याओं-महिलाओं ने क्षेत्र का नेतृत्व सँभाला एवं लगभग पच्चीस हजार महिला संगठन पूरे देश में गठित किये। यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि क्षेत्र की सक्रियता, कार्यकर्त्ताओं की तत्परता एवं स्फूर्ति के मूल में इन महिलाओं का ही सबसे बड़ा हाथ है।

पूज्य गुरुदेव संभवतः पहले युगपुरुष हैं जिन्होंने 'इक्कीसवीं सदी-नारी सदी' की घोषणा की है। उनकी घोषणा है कि अब नारी का वर्चस्व प्रमुख होगा तथा वही नवसृजन के निमित्त प्रमुख भूमिका निभाएगी। उनके महाप्रयाण के बाद माँ शारदामणि की तरह वंदनीया माताजी द्वारा संगठन का समग्र सूत्र-संचालन कुशलतापूर्वक संभाल लिए जाने से यह भविष्यवाणी साकार होती चली गई। नारी जागृति के लिए इस महामनीषी द्वारा सम्पन्न पुरुषार्थ युगों-युगों तक याद किया जाता रहेगा। ◈

नारी के संबंध में संकीर्ण दृष्टिकोण अपनाकर हम अपने परिवार व समस्त संसार का अहित ही करते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

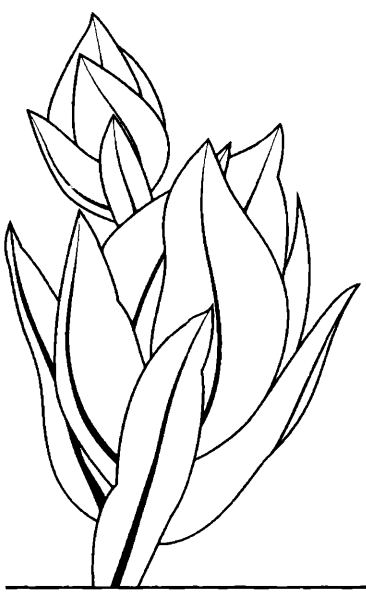
सृजन शक्ति संधान यज्ञ में

सृजन शक्ति संधान यज्ञ में, आओ साधक आओ।
आहुति देकर महायज्ञ में, जीवन धन्य बनाओ।।

माँ गंगा के पावन तट में, यह शुभ अवसर आया।
जिसने भी भाग लिया है इसमें, जीवन को महकाया।।
गंगा, यमुना, सरस्वती का, पावन संगम इसमें।
ब्रह्मा, विष्णु, महाकाल का, वरद हस्त है इसमें ।।
यज्ञ भूमि की परिक्रमा कर वैदिक गान सुनाओ।

माँ मनसा, माँ चण्डी देवी, स्वयं यज्ञ संरक्षक।
सती रूप में मातु भगवती, यहाँ बनी अनुरक्षक ।।
सप्तर्षि तज देव लोक को, दर्शन देने आये।
तत्त्व वेदिका पंचतत्त्व भी, दिव्य छवि दिखलाये ।।
याजक बनकर महायज्ञ में झोली भरते जाओ।

चरण पादुका पूजन दर्शन, जन्म-मरण काटेंगे।
दीप अखण्ड जलेगा मन में ,भेद-भाव पाटेंगे।
कल-कल करती माँ गंगा खुद, गान सुनाने आई।
चौसठ रूप योगिनी देखो, स्नेह लुटाने आई ।।
सहस्र कोटि मंत्र जाप का पुण्य लाभ ले जाओ।



सृजन शक्ति संधान यज्ञ, जीवन का दुर्लभ क्षण हैं।
देवी और देवताओं से, महक उठा हर कण हैं।
सूक्ष्म रूप में ऋषि मुनि गण, भी आन बिराजे देखो।
सूर्य चन्द्र ब्रह्माण्ड स्वयं ही, प्यार लुटाते देखो।।
पहचानो सब महाकाल को अनुदानों को पाओ।
सृजन शक्ति संधान यज्ञ में, आओ साधक आओ।
आहुति देकर महायज्ञ में, जीवन धन्य बनाओ।।

◈◈◈

तात्कालिक प्रलोभन के आकर्षण में अंधे होकर घुस पड़ना और भविष्य के दुष्परिणाम को भूल जाना, इसी का नाम लोभ है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इक्कीसवीं सदी-नारी सदी के प्रवक्ता व द्रष्टा

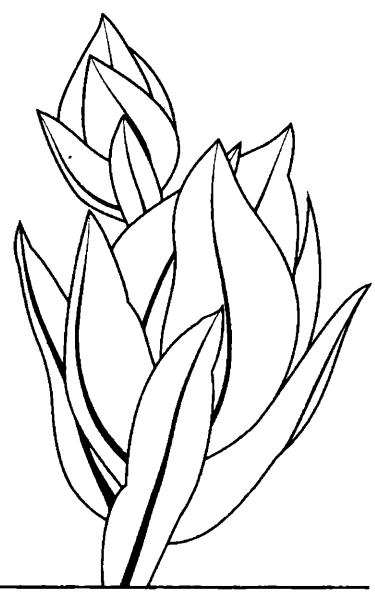
नारी की पीड़ा, व्यथा, वेदना को समझ सकना, गहराई से अनुभव कर लेना उसी से संभव है, जिसने नारी जैसा कोमल हृदय पाया हो। हृदय की इन विशिष्ट धड़कनों में ही एक सहस्राब्दी से भी अधिक समय तक पददलित, शोषित नारी का जीवन-शास्त्र पढ़ा जा सकता है। इसके अभाव में बौद्धिक विवेचनाओं के आकर्षण, ग्रंथों के भंडार, लेख मालाओं-वक्तृताओं के अंबार तो पैदा किए जा सकते हैं, पर वह आकुलता-आतुरता पैदा नहीं की जा सकती है, जिससे प्रेरित होकर सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए, मन हुलस उठे। मन-प्राण में वह तड़प भरी बेचैनी पैदा हो सके, जो क्षत-विक्षत हो रहे नारी अस्तित्व के लिए मरहम का रूप देने के लिए कृत संकल्प हो जाय।

पूज्य गुरुदेव के जीवनक्रम में ''नारी अभ्युदय का नवयुग'' लाने के लिए जिस संवेदनशील पौरुष को उमड़ते-उफनते देखते हैं, उसके पीछे उनके अन्त: अस्तित्व की यही प्रेरणा शक्ति थी। जिसे उन्हीं के शब्दों में कहें तो ''पुरुष की तरह हमारी आकृति बनाई तो गई है, किन्तु कोई चमड़ी फाड़ कर देख सके तो भीतर माता का हृदय मिलेगा। जो करुणा, ममता, स्नेह और आत्मीयता से हिमालय की तरह निरंतर गलते रहकर गंगा-यमुना बहाता रहता है।'' हृदय की इसी सामर्थ्य से उन्होंने मातृशक्ति की अंतर्वेदना को अनुभव किया। यही अनुभूति उनमें व्याकुलता, आतुरता और आक्रोश के रूप में उभरी और अंतत: नारी शक्ति को युगशक्ति का रूप देने के महान् संकल्प के रूप में परिणत हुई।

व्याकुलता इस बात के लिए कि मातृशक्ति के प्रति आज इतना दूषित दृष्टिकोण है कि अभिभावक उसे पराए घर का कूड़ा मानकर उपेक्षा करते और लड़कों की तुलना में कहीं अधिक निचले दर्जे का पक्षपात करते हैं। पति की दृष्टि में वह कामुकता की आग को बुझाने का एक खरीदा गया माध्यम है। उसे कामिनी, रमणी और भोग्या के रूप में ही निरखा-परखा और संतान का असह्य भार वहन करने के लिए बाधित किया जाता है। ससुराल के समूचे परिवार की दृष्टि में वह मात्र ऐसी दासी है, जिसे दिन-रात काम में जुते रहने और बदले में किसी अधिकार या सम्मान पाने के लिए अनधिकृत मान लिया जाता है।

स्थिति यह है कि आधी जनसंख्या को शिक्षा एवं स्वावलम्बन के अभाव ने पर्दाप्रथा, अनुभवहीनता एवं सामाजिक कुरीतियों ने बेतरह जकड़ रखा है। नारी की पराधीनता का एक रूप यह है कि ''उसे पर्दे, पिंजड़े, बन्दी गृह की कोठरी में ही कैद रहना चाहिए।'' इस मान्यता को अपनाकर नारी को असह्य,

यदि गुरुदेव न आते तो नारी का खेवनहार कौन बनता? ऋषियुग्म ने पूरे देश व विश्व में नारी जागरण का एक उफान पैदा किया। क्रौंचवध को देखकर जैसे वाल्मीकि के अंदर काव्य की प्रेरणा जगी और वाल्मीकि रामायण प्रस्फुटित हुई, वैसे ही नारी उत्पीड़न को देखकर युगसाहित्य सृजा गया।



पुरातन के लिए हठवादी बने रहना, किसी भी प्रकार, किसी के लिए भी हितकारी नहीं हो सकता।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

अनुभवहीन ही बताया जाता रहा है। अबला की स्थिति में पहुँचने में वह अब आक्रान्ताओं का साहसपूर्वक मुकाबला कर सकने की भी हिम्मत गँवा बैठी है। आड़े समय में अपना और अपने बच्चों का पेट पाल सकने तक की स्थिति में नहीं रही है। उसे व्यवसाय चलाना, ऊँचे पद का दायित्व निभाना तो दूर, औसतन पारिवारिक व्यवस्था से सम्बंधित अनेक कार्यों में हाट-बाजार, अस्पताल तथा अन्य किसी विभाग का सहयोग करने-पाने के लिए जाने में झिझक, संकोच से रहकर मूक- बधिर हो जाना पड़ता है।

हृदयद्रावक स्थिति का अंत यहीं पर नहीं होता है, आये दिन अखबार स्त्रियों के अपहरण, बलात्कार और सामूहिक बलात्कार से रंगे रहते हैं। नव वधुओं के जलने-जलाने की खबरें तो जैसे सामान्य बात हो गई है। आखिर क्या हो गया है कि बूढ़े-बच्चियों, पिता-पुत्रियों तक के कुत्सित सम्बन्ध अखबारों में देखने-पढ़ने को मिलते हैं। जब कभी गुरुदेव इन विडंबनाभरी स्थितियों का ब्यौरा समाचार पत्रों में पढ़ते, उनकी व्याकुलता सीमा का अतिरेक कर जाती। ऐसे ही क्षणों में उभरी हृदय की सिसकियों को शब्द देते हुए वे कहते हैं- ''क्या करूँ! मेरा हृदय नारियों के कष्ट को देखने-सुनने में स्वयं को असमर्थ पाता है। उनकी वेदना का स्पर्श पाकर ऐसा लगने लगता है कि हृदय का सारा रक्त निचुड़कर उसकी वेदना का मरहम बन जाने के लिए आतुर है। यह वेदना मेरे अंदर पीड़ा का ज्वार ला देती है, जिसे मैं सह नहीं पाता, सह भी नहीं सकता। लोग कहते हैं कि आँखें रोती हैं, दर्द होते ही होंठ बिसुरते हैं, पर क्या किसी ने मेरी तरह रोम-रोम के रो-पड़ने का अनुभव किया होगा। क्या किसी का अस्तित्व जार-जार रोया होगा?''

उनकी यह व्याकुलता जितनी गहरी हुई, आश्चर्य भी उतना ही घना हुआ। आखिर कैसे हो सकी नारी, अवमानना-अवहेलना? जिसके कारण उनकी स्थिति पंख कटे पक्षी की सी हो गई। युग ऋषि के शब्दों में कहें तो 'आज के इन प्रचलनों का प्राचीन भारतीय संस्कृति के साथ कोई तालमेल नहीं खाता। स्वर्ग और नरक - आकाश और पाताल में जितना अंतर है, उतना ही नारी के प्रति प्राचीनकाल में उच्चस्तरीय श्रद्धा रखे जाने और सुविधा दिए जाने की स्थिति में एवं इस हेय प्रतिबंधन की स्थिति में समझा जा सकता है।'

जिसे सामंती काल के असुर युग- 'द्वारं किमेकं नरकस्य नारी'। अर्थात् नरक का द्वार कहकर उपेक्षणीय ठहराया। वैदिक ऋषिगण उसी की प्रशंसा करते नहीं अघाए। एक स्थान पर तो शास्त्रकार ने यहाँ तक बेबाक भाव से कह दिया।

नारी त्रैलोक्य जननी,
नारी त्रैलोक्य रूपिणी।
नारी त्रिभुवनाधारा,
नारी शक्ति स्वरूपिणी।।

इसका सबसे बड़ा प्रमाण वैदिक भारत में ईश्वर की मातृ रूप में प्रतिष्ठा है। माँ की गरिमा एवं महत्ता को आदिकाल से मनीषियों ने समझते हुए मातृ शक्ति की आराधना एवं पूजा का विधि-विधान बनाया। चेतनशील मानव ने सभ्यता की ओर जैसे ही कदम रखना प्रारंभ किया

लोकनायक जयप्रकाश नारायण, आचार्य कृपलानी एवं जापान के गांधी कागावा जैसे महामानवों ने एक और एक मिलकर ग्यारह बनने की संभावना पूरी तरह जानने के उपरांत ही विवाह किए थे और उसके साथ उच्चस्तरीय आदर्शों को जुड़ा रखकर विवाह शब्द को सार्थक बनाया था। इन दिनों भी ऐसे ही आदर्श विवाह अपनाए जा सकें, तो परस्पर सघन सहयोग को जीवंत रखने, अनेकानेक कठिनाइयाँ सरल करने और सर्वतोमुखी प्रगति के संदर्भ में एक-से-एक बड़े काम करने के लिए सामने पड़े हैं। इसे संयोग ही कहना चाहिए कि इन दिनों विकासोन्मुखी सेवा-साधना और अवांछनीयताओं से जूझने वाली संघर्षशीलता के दोहरे पराक्रम दिखाने की अनिवार्य आवश्यकता पड़ रही है। अच्छा हो कि इन दिनों ऐसी युग्म आत्माएँ-पति-पत्नी मिलकर संयुक्त प्रयासों में भागीदार बनकर विवाह-संस्था को सार्थक करें।

अमर्यादित कल्पनाएँ मनुष्य को निरंतर तड़पाती रहती हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उसके मस्तिष्क के समक्ष यह प्रश्न उभरा वह आया कहाँ से ? यहीं से माँ के प्रति श्रद्धा भाव उत्पन्न हुआ और ईश्वर को आदि जननी मानकर आराधना प्रारंभ की। यहीं से प्रेरणा पाकर संसार की सभी संस्कृतियों में मातृशक्ति की उपासना किसी न किसी रूप में प्रचलित है।

चाहे वह इटली की फारचुना के रूप में हो, रोम की साइवेलें, ग्रीक की हेरा, मध्यपूर्व की माण्ट हो अथवा उत्तरी अफ्रीका की तिवायत। मैक्सिको की एसिस हो, यूनान में अनोन्का, सीरिया में अस्टीटें, मोआब में आख्तर और अबीसीनियाँ में आसार के नाम से नारी शक्ति ही पूजित रही है। प्राय: विश्व के हर कोने ने परमेश्वर को नारी के रूप में पूजित कर नारीत्व के प्रति अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए हैं और इसकी प्रेरक शक्ति भारत भूमि रही है। आज इससे अधिक महान् शोचनीय और क्या होगा कि जहाँ से नारी को सम्मान देने की प्रेरणा उमगी, परम्परा के रूप में पनपी, समूचे विश्व में व्यापक बनी, वहीं का नारी जीवन दुर्दशाओं और विडंबनाओं से ग्रस्त है।

इस महान् आश्चर्य से चकित पूज्य गुरुदेव तनिक आक्रोश भरे स्वर में समाज के कर्णधारों से प्रश्न करते हैं- ''इस पीड़ित नारी से नर को क्या मिला ? घर-परिवार के लोगों की इससे क्या सुविधा बढ़ी ? पति को उससे क्या सहयोग मिला ? बच्चे क्या अनुदान पा सके ? देश की अर्थव्यवस्था एवं प्रगति में पिछड़ी नारी ने क्या योगदान दिया ? समाज को समुन्नत बनाने में वह क्या योगदान दे सकी ? इन प्रश्नों पर विचार करने से लगता है, नारी को पीड़ित, पददलित, उपेक्षित रखा जाना किसी प्रकार नफे का सौदा नहीं। समय पूछता है कि अनुचित को कब तक सहन किया जाएगा और कब तक ऐसा ही चलने दिया जाएगा ?''

इससे उनके संवेदना के आँसू ही नहीं छलके, वरन् पौरुष की प्रचंडता से भुजाएँ भी फड़कीं, महाकाल का संकल्प उनके स्वरों में मुखरित हुआ। ''इक्कीसवीं सदी नारी सदी''। यह उद्घोष नारी जागरण का मंत्र बना और वे बने इस महामंत्र के द्रष्य। साथ ही प्रारंभ हुआ, अविराम प्रयासों का सिलसिला। उनके भावपूर्ण प्रयासों को उन्हीं के शब्दों में समझें, तो ''शांतिकुंज की स्थापना का मूल प्रयोजन महिला जागरण अभियान का आरंभ कर उसके माध्यम से नारी के समग्र उत्कर्ष की अनेकानेक गतिविधियों को विश्वव्यापी बनाना है।'' अभियान के क्रियाकलाप चार भागों में विभक्त किए गए-

1-साहित्य प्रकाशन 2-नारी शिक्षण सत्र 3-संगठन द्वारा संघ शक्ति का उदय 4-रचनात्मक कार्यक्रमों का व्यापक विस्तार। साहित्य प्रकाशन के सिलसिले में न केवल शत-सहस्र पुस्तकें प्रकाशित हुईं, बल्कि ''महिला जागृति अभियान'' पत्रिका ने भी नारी जागरण में महती भूमिका निभाई।

साहित्य प्रकाशन का उद्देश्य जहाँ एक ओर नारी की व्यथा वेदना से संवेदनशील जन-मानस को अवगत कराना था, वहीं दूसरी ओर उसकी गरिमा की गौरवपूर्ण प्रतिष्ठा का अदम्य प्रयास भी था। संवेदना को झकझोरते हुए उनके शब्द द्रष्टव्य हैं।'' आर्थिक दृष्टि से परावलंबी नारी पग-पग पर मन मसोसकर रहती है, पाई-पाई के लिए दूसरे के सामने गिड़गिड़ाती है। घर की खुशहाली में कोई योगदान नहीं दे पाती। उपेक्षिताओं, परित्यक्ताओं, विधवाओं की दुर्गति होती है। उन्हें और उनके बच्चों को क्या-क्या नहीं सहना पड़ता है ? इसके हाहाकार भरे दृश्य पर्दे के पीछे रहते हैं। यदि उन्हें देखा, सुना और अनुभव किया जाये तो पाषाण हृदय भी फफक-फफक कर रो पड़ेगा। इसका स्वरूप प्रस्तुत कर सकना न लेखनी के लिए संभव है, न वाणी के लिए। उस भुक्तभोगी शरीर और अन्तरात्मा को रेतने वाली असहनीय पीड़ा को कोई आप बीती के रूप में अनुभव कर सके तो ही जान सकता है।

इस कारुणिक प्रस्तुतीकरण के साथ ही हैं नारी की गौरव गरिमा चित्रित करते हुए शब्द ''नारी ब्रह्मविद्या है, श्रद्धा है, शक्ति है, पवित्रता है, कला है और वह सब कुछ है जो इस संसार में सर्वश्रेष्ठ के रूप में दृष्टिगोचर होता है। नारी कामधेनु है, अन्नपूर्णा है, सिद्धि है, ऋद्धि है और वह सब कुछ है जो मानव प्राणी के समस्त अभावों, कष्टों एवं संकटों का निवारण करने में समर्थ है। यदि उसे श्रद्धासिक्त सद्भावना के साथ सींचा जाये तो यह सोमलता विश्व के कण-कण को स्वर्गीय परिस्थितियों से ओत-प्रोत कर सकती है।''

कोई देश, समाज, वर्ग, समूह और धर्म तब तक समुन्नत नहीं हो सकता, जब तक उसके लोग स्वस्थ न हों।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

एक अन्य स्थान पर द्रष्टव्य है- ''नारी को वरिष्ठ और नर को कनिष्ठ ठहराने वाली अपनी सांस्कृतिक मान्यता हर दृष्टि से सही है। दानी बड़ा होता है उपभोक्ता छोटा। उस अनुदानी की समता कौन कर सकता है, जिसने अपने स्वेद कणों और स्नेह बिन्दुओं के मणिमुक्तकों से उस हार-उपहार को विनिर्मित किया और गले में धारण कराया। इतना ही नहीं ''नारियाँ तो अद्वितीय मूर्तिकार हैं। पत्थर की नहीं वे प्राणवान् प्रतिमाएँ अपने शरीर की प्रयोगशाला में बनाकर प्रस्तुत करती हैं। उनके समान मूर्तिकार, चित्रकार, श्रद्धाकार कौन हो सकता है? परमेश्वर ने अपना सर्वोत्तम दृश्यमान और चेतनात्मक सौंदर्य उसी में उड़ेल दिया है।''

इसी गरिमा की जीवन्त प्रतिष्ठा के लिए युगावतार का समूचा जीवन क्षण-क्षण कर्मरत रहा। कन्या प्रशिक्षण सत्र हो, चाहे महिलाओं की संगठन चेतना का जागरण, सबके पीछे यही प्रेरणा क्रियाशील रही। सामान्य क्रम में स्थूल क्रियाकलापों की समीक्षा करने वाले इन महान् प्रयासों की तुलना नारी जागृति के लिए विगत समय में समाज सेवकों ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, आचार्य कर्वे, राजा राम मोहन राय आदि के प्रयासों से कर सकते हैं।

परन्तु इस प्रयास में बहुत कुछ ऐसा है, जो अतुलनीय है। अच्छा हो इसे उन्हीं के शब्दों में ग्रहण करें'' यह नहीं सोचना चाहिए कि यह बरसाती बादल कुछ घड़ी गर्जन-तर्जन करके ठंडा पड़ जाएगा। यदि यह कुछ व्यक्तियों का या संगठनों का प्रयास होता तो वैसी आशंका की जा सकती थी। पर यथार्थता कुछ और ही है। कालचक्र गतिशील हो रहा है और उसने युग बदलने जैसी करवट ली है। सूक्ष्मजगत् में वे संभावनाएँ बन चली हैं जो अपने प्रचंड प्रवाह से कितने ही महत्वपूर्ण परिवर्तन प्रस्तुत करेंगी। नारी का पुनरुत्थान उन्हीं में से एक सुनिश्चित तथ्य है।

वस्तुत: महाकाल का यह प्रथम आश्वासन है, जिसके पीछे पिछड़ों को उँचे उठाकर समता का धरातल बनाने के लिए वचनबद्ध दैवी शक्तियों ने आश्वासन दिलाया है। लोकमानस भी समय की प्रचंड धारा के विपरीत बने रहने का देर तक प्रयास नहीं करता रह सकता। तूफान मजबूत पेड़ों को भी उखाड़ फेंकता है। घटाटोप वर्षा में छप्परों से लेकर झोंपड़ों तक को बहते देखा जाता है।

पानी का दबाव बड़े-बड़े बाँधों में भी दरार डालने और उन्हें बहा ले जाने का दृश्य प्रस्तुत करता है। यह महाकाल की हुँकार रही है, जिसने नारी को पिछड़े क्षेत्र से हाथ पकड़कर आगे बढ़ाने के लिए धकेला और घसीटा है। अब न सिर्फ नारी के भाग्य में स्वत: की बेड़ियों से मुक्ति लिख दी गई है। वरन् विधाता ने उसे मुक्ति दूत बनने का गरिमापूर्ण दायित्व भी सौंपा है। जिन्हें सूक्ष्म दृष्टि प्राप्त है- वे अनुभव कर सकते हैं कि यह अपने युग का सुनिश्चित निर्धारण है। जो इन्हीं दिनों पूरा होने वाला है।'' इक्कीसवीं सदी- नारी सदी'' के महामंत्र की साधना इसी पुण्यवेला में युग ऋषि के संरक्षण में की जानी है। इसके लिए पूर्वकाल के स्वस्थ सांस्कृतिक परंपराओं एवं वर्तमान के विवेक पूर्ण विचारों का सामंजस्य बैठाकर समाज को प्रशिक्षित करना होगा।

भारतीय आध्यात्मिक धरातल पर मातृ शक्ति की पुन: प्रतिष्ठापना करनी होगी। तभी समाज एवं विश्व का उज्ज्वल भविष्य संभव है। तथा नारी धात्री एवं निर्मात्री की महत्त्वपूर्ण भूमिका संपादित करने में सक्षम होगी। जिसके लिए वह अभी भी अपनी कारणसत्ता में प्रयत्नरत है। ◈

अप्रैल, 1-1968 को एक बहन को पूज्यवर ने लिखा...

... तुम्हारी श्रद्धा भक्ति का स्मरण करने से हमें उस युग की याद आती है, जब हमारी बालिकाएँ पुरुषों के समकक्ष समाज सेवा और उच्च आदर्शों की रक्षा के लिये अग्रणी बनी रहती थीं। तुम उसी इतिहास को एक नया रूप दोगी, ऐसा हमारा विश्वास है। तुम्हारे जीवन में कई कष्ट और अभाव हैं, उसका हमें पता है। तुम्हारी वर्तमान स्थिति पर सहृदय पिता की तरह हमारी करुणा उमड़ती है। आगे तुम्हारी यह स्थिति समाप्त हो जायेगी। तुम इच्छानुसार स्थिति में ही रहोगी।...

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

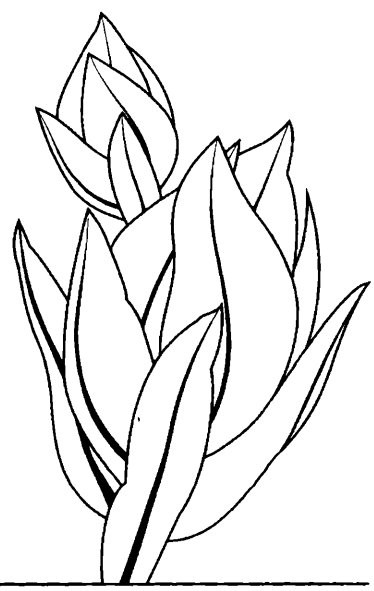
नारी समाज के प्रति असीम करुणा

पंडित लीलापत जी गुरुदेव के साथ साये की तरह रहे। 2002 में वे भी गुरुसत्ता के साथ एकाकार हो गये। उनने जितने नज़दीक से गुरुसत्ता की अंतर्वेदना समझी, उतनी शायद कुछ ही विरलों को नसीब हुई है। यहाँ उनकी ही जुबानी प्रस्तुत है- एक विधवा की कहानी जिसके दुःख गुरुदेव ने हरे...

मध्य प्रदेश में यज्ञ चल रहा था। गुरुदेव के साथ मैं भी वहाँ गया हुआ था। एक दिन एक हॉल में तीन-चार सौ बहिनें उनके साथ बैठी थीं। बातचीत के साथ-साथ हँसी के फव्वारे छूट रहे थे। गुरुदेव बात-बात में हँसाते जाते थे। सभी बहिनें उनकी बातों पर हँस रही थीं। एक बहिन उन सबमें गुमसुम बैठी थी। उसे हँसी नहीं आ रही थी। उसे दुःखी देख गुरुदेव ने पास बुलाया और पूछा-बेटी तुझे क्या दुःख है?

वहाँ बैठी सभी बहिनें सज-धज कर आई थीं, अच्छे-अच्छे कपड़े-जेवर पहनी हुई थीं और वह लड़की सिर्फ सफेद धोती पहनी थी। गुरुदेव की बात का उसने कोई जवाब नहीं दिया, केवल सिर झुका लिया। गुरुदेव ने फिर दुलारते हुए पूछा-"बेटी क्या कष्ट है तुझे, तू हँस भी नहीं रही है? उसे निरुत्तर देख गुरुदेव उसे अलग ले गए। मैं भी उनके साथ चला गया। मैं हमेशा उनकी हरेक बातचीत सुनने का प्रयास करता। उनसे काफी कुछ सीखने को मिलता था।

अलग ले जाकर उन्होंने उससे पूछा-बेटी बता तुझे क्या दुख हैं? तेरे सारे दुःख दूर कर दूँगा। उसने लम्बी साँस ली। फिर बोली-गुरुदेव मुझे कोई दुःख नहीं है। उसकी आँखें आँसुओं से डबडबा आईं गुरुदेव के बहुत पूछने पर उसने बताया कि उसकी शादी बहुत बचपन में ही हो गई थी। उसके पति का स्वर्गवास हो चुका है। और अब वह स्वनिर्भर जीवन जी रही है। एक विद्यालय में शिक्षिका है। और अपना सब काम स्वयं करती है। विधवा होने का दुःख तो वह झेल ही रही थी, मगर समाज की बेरुखी से वह बुरी तरह टूट चुकी थी। वह कह रही थी "मैं 100 अखण्ड ज्योति मँगाती हूँ। उसे लेकर सुबह किसी के घर जाती हूँ, तो सभी मुझसे नाराज होते हैं कि "तू विधवा है। सुबह-सुबह आकर मुँह दिखला दिया, जाने आज का दिन कैसा बीतेगा। सब गाली भी देते हैं, मैं चुप होकर सुन लेती हूँ और वापस चली आती हूँ। शाम को अखण्ड ज्योति बाँटने जाती हूँ, तब भी वे यही कहते हैं कि शाम को आकर मुँख दिखला दिया। कल से हमारे घर मत आया कर।" वह सिसकते हुए कह रही थी "मैं जहाँ जाती हूँ, वहीं सब मुझसे नफरत करते हैं। पत्रिका बाँटने घरों में न जाऊँ तो उनके पैसे अपने वेतन में से भरने पड़ते हैं। अपने खर्च में कटौती करनी पड़ती है। समाज के इस नफरत को लेकर जीने की इच्छा नहीं होती। कभी-कभी सोचती हूँ आत्महत्या कर लूँ, पर आप कहते हैं आत्महत्या पाप है। मगर मैं जीऊँ तो कैसे? बोलते-बोलते वह फूट-फूट कर रोने लगी। उसके साथ-साथ गुरुदेव भी रोने लगे। मेरे भी आँसू नहीं रुक रहे थे। गुरुदेव ने उससे कहा-चल बेटी मेरे साथ चल। फिर हॉल में सबके बीच आकर वे कहने लगे "बेटी मैं



वस्तुओं और परिस्थितियों में सुख ढूँढ़ना, एक प्रकार की मानसिक मृगतृष्णा है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

अपनी बात नहीं कहता, वेद की बात कहता हूँ। तू तो पवित्र गंगा जैसा जीवन जीती है। श्रम करती है, लोक मंगल का कार्य करती है, ब्रह्मचर्य से रहती है। तू साक्षात् गंगा है, जो तेरे दर्शन करेगा-सीधे स्वर्ग को जाएगा और जो ये सब बैठी हैं शृंगार करती हैं, फैशन करती हैं। अनेक बच्चे पैदा करती हैं, देश के सामने अनेक प्रकार की समस्याएँ पैदा करती हैं- जो भी इनके दर्शन करेगा, सीधे नरक को जाएगा।'' गुरुदेव को इतना क्रोधित होते मैंने कभी नहीं देखा था। वे कह रहे थे ''जो दुःखी है, उसको और दुःख देना पाप है। जो यह कहता है कि विधवा को देखने से पाप लगता है, वह सबसे बड़ा पापी है। तू तो शुद्ध और पवित्र है।'' उनकी इस बात पर वहाँ बैठी सभी बहिनों ने गर्दन नीची कर ली।

थोड़ी देर बाद गुस्सा ठण्डा होने पर उन्होंने उनसे कहा-''कहो बेटियों, आपको क्या कहना है ?'' इस पर किसी ने कुछ नहीं कहा। सभी शान्त होकर बैठी रहीं। थोड़ी देर बाद जब उठकर जाने लगीं तो मैंने दरवाजे तक जाकर उनसे कहा- ''बहनों, गुरुदेव की बातों का बुरा नहीं मानना, गुस्से में हैं, लेकिन उनकी बातों पर विचार करना।''

वे लज्जित होकर बोलीं- भाई साहब गुरुदेव की बातों का बुरा क्यों मानेंगे। उन्होंने तो सही बात कही है। विधवा तो शुद्ध पवित्र जीवन जीती है। आज उन्होंने हमारी आँखें खोल दीं। आज से हम जब भी किसी विधवा का दर्शन करेंगे, उसमें गंगा माता का दर्शन करेंगे और उसे कोई कष्ट हो तो उसकी मदद करेंगे। हम दूसरों को भी बतायेंगे कि विधवा का दर्शन करने से पाप नहीं होता।

वे कह रहीं थीं गुरुदेव ने हमारी आँखें खोल दीं। हम सौभाग्यशाली हैं कि ऐसे गुरु हमें मिले। ऐसे गुरु हों तो देश में फैला हुआ अज्ञान शीघ्र ही दूर हो जाए। वह दुःखी बहिन भी वहीं खड़ी ये सब बातें सुन रही थी। उसके मुख पर सन्तोष के भाव थे। दुख के बादल छँट चुके थे। हल्की सी धूप झिलमिला रही थी।

पंडित जी बताते थे कि गुरुजी को बहनों का कष्ट बिलकुल सहन नहीं होता था। वे कहते थे, ''जब तक मातृशक्ति रोती रहेगी, समाज का उद्धार संभव नहीं है।'' उन्होंने बताया, ''एक बार हम और गुरुदेव असम की यात्रा पर थे। ट्रेन में एक महिला बहुत बड़ा घूँघट ओढ़े बैठी थी। वह बहुत दुखियारी जान पड़ रही थी, क्योंकि वह लगातार रोये जा रही थी। गुरुजी की दृष्टि से वह भला कैसे ओझल रहती ? एक स्टेशन पर जब उसके साथ के परिजन नीचे उतरे तो गुरुजी ने उसे पानी पिलाया और चना मुर्रा खाने को दिया। उसका कष्ट पूछा, पर वह अपने मुख से कुछ बता नहीं पाई। गुरुजी तो अंतर्यामी थे, उसे सांत्वना दी। बोले, ''रो मत बेटी, तेरा कष्ट दूर होगा।'' साथ ही कहा, ''यह घूँघट खोल दे।''

उस महिला ने बस इतना ही कहा, ''यह सब मुझे मार डालेंगे।'' तब गुरुजी ने कहा, ''मैं उन्हें समझाता हूँ।''

महिला के परिजन जब ट्रेन पर चढ़े तो गुरुजी ने उन्हें समझाया। ''मनुष्य-मनुष्य के बीच क्या परदा ? परदा तो आँखों का होता है। शिष्ट व्यक्ति शालीन वैसे भी रहता है अन्यथा घूँघट से शर्म ढकी नहीं रह सकती आदि-आदि।''

गुरुजी की बात का उन लोगों पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि उन्होंने वहीं पर उसका घूँघट खुलवा दिया। इस प्रकार गुरुजी रास्ते में भी जनकल्याण करते चलते थे। ◈

नारी और पुरुष परिवार संस्था के दो मूल स्तंभ हैं। दोनों मानो नदी के दो तट हों, जिसके मध्य से परिवार के जीवन की धारा बहती है। वैदिक साहित्य में स्त्री पुरुष की उपमा पृथ्वी और द्युलोक से दी गई है। विवाह संस्कार के अवसर पर भी पुरुष स्त्री से कहता है- द्यौरहं पृथ्वी त्वम्। मैं द्यौ हूँ तू पृथ्वी। आकाश और धरती, पुरुष और प्रकृति के संयोग से ही विश्व परिवार का उदय हुआ, ठीक इसी तरह स्त्री और पुरुष के संयोग से परिवार संस्था का निर्माण होता है। भारतीय संस्कृति में परिवार संस्था की मूल भावना में स्थूल और नश्वर का संबंध विश्वव्यापी चिरंतन नित्य सूक्ष्म सत्ता के विधान से मिलाया गया है।

विशृंखल मन और बिखरी शक्ति से संसार में कोई भी बड़ा काम नहीं किया जा सकता।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उन्होंने हरिद्वार को नई पहचान दी

उत्तराखण्ड का हरिद्वार नगर युगों-युगों से देश-विदेश के करोड़ों-करोड़ लोगों की आस्था का केन्द्र रहा है। पतित पावनी माँ गंगा अपने पिता देवात्मा हिमालय से उतरकर यहीं से भारतवर्ष के जन-जन को प्राण व ऊर्जा देने आगे बढ़ती हैं। हरिद्वार में जहाँ लोग गंगा में स्नान कर, तन-मन को शुद्ध कर पवित्र जीवन जीने का संकल्प लेते हैं, वहीं यहाँ अपने पितरों की आत्माओं की शान्ति के लिए श्राद्ध करके पितृ ऋण से उऋण होने, वर्ष भर आम व खास जन हरिद्वार आते रहते हैं।

साधु-सन्तों की इस नगरी के लिए 1971 का वर्ष एक ऐतिहासिक वर्ष कहा जा सकता है, जब एक सच्चे गायत्री-साधक, मनीषी, श्रेष्ठ चिन्तक, सन्त-शिरोमणि पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य ने यहाँ पदार्पण किया। हिमालय के सूक्ष्म ऋषियों की दिव्य इच्छा को पूरा करने के लिए भगवान् श्रीकृष्ण की पावन जन्मस्थली मथुरा से पूरे देश में युग-निर्माण योजना का आगाज करने वाले आचार्यश्री गायत्री तपोभूमि मथुरा को हमेशा-हमेशा के लिए छोड़कर हरिद्वार आ गए और उन्होंने यहाँ सप्त-सरोवर क्षेत्र में शान्तिकुंज आश्रम की स्थापना की। डेढ़ एकड़ क्षेत्र से शुरू हुआ यह आश्रम आज 150 एकड़ क्षेत्र में फैला है और देश के कोने-कोने तथा दुनिया के 80 से अधिक देशों के करोड़ों लोगों के गायत्री-परिवार के मुख्यालय के रूप में इसने ख्याति प्राप्त की है। हरिद्वार को गायत्री-तीर्थ के रूप में इस आध्यात्मिक केन्द्र का मिलना धर्मनगरी, कुम्भनगरी का बड़ा सौभाग्य है। देव संस्कृति विश्वविद्यालय भी उन्हीं के दिव्य स्वप्नों की फलश्रुति है।

मुझे गर्व है कि विश्व का जाना-माना यह गायत्री तीर्थ मेरे निर्वाचन क्षेत्र में स्थित है। इस तीर्थ ने हमें निष्ठावान्, लोकसेवी, जमीनी कार्यकर्त्ता और निष्ठावान् राजनेता बनने की भावभूमि दी। मैं व्यक्तिगत रूप से तो शान्तिकुंज के प्रति श्रद्धावान् हूँ ही, आचार्यश्री के इस महान् मिशन के बहाने, लाखों निःस्पृह सन्त हृदय गायत्री-साधकों का समय-समय पर हरिद्वार आगमन मेरे निर्वाचन क्षेत्र का परम सौभाग्य है। हरिद्वार रेलवे स्टेशन पर ट्रेनों से उतरने वाले पर्यटकों में शान्तिकुंज का मार्ग पूछने वाले लोगों की संख्या बहुतायत में होती है। यह गुरुद्वारा अनेकानेक रचनात्मक कार्यक्रम चलाकर लोक-सेवा के कार्य करता है, यही शान्तिकुंज की विशेष पहचान है।

मुझे आचार्यश्री के चरणों में बैठने का सुअवसर अनेक बार मिला है। उनकी एक विशेषता यह थी कि वह एक बार मिलने पर ही सदा-सदा के लिए व्यक्ति को अपना बना लेते थे। 'अपने लिए सर्वथा कठोर और दूसरों के लिए परम उदार' आचार्य जी का पिता रूप भुलाए नहीं भूलता। वह थे तो पुरुष काया में; लेकिन वस्तुतः उनका हृदय स्नेहमयी माँ का था।

आचार्यश्री को मैं एक बहादुर योद्धा मानता हूँ। मथुरा से यहाँ आकर पण्डितों के इस नगर में गायत्री महामंत्र को सभी जातियों, पंथों, धर्मों में व्यापक बना देना, उनके अनेक कार्यों में अकेला ही उनको योद्धा सिद्ध करता है। यज्ञ-मंचों पर ब्रह्मवादिनी महिलाओं और सभी बिरादरियों के आचार्यों को बैठा देना और उन्हें सफल बना देना उनकी महत्ता का दूसरा बड़ा उदाहरण है।

मुझे लगता है कि विज्ञान के इस युग में आचार्य जी ने अध्यात्म का वैज्ञानिक प्रतिपादन करके ही यह सफलता अर्जित की। इसी कारण शान्तिकुंज हरिद्वार की जनता का, उत्तराखण्डवासियों का और गंगा मय्या का अविभाज्य अंग बन गया है। यह सब कुछ आचार्यश्री की कठोर तपस्या का फल है। पूज्यवर आचार्य जी की सत्ता को मेरा शत-शत नमन।

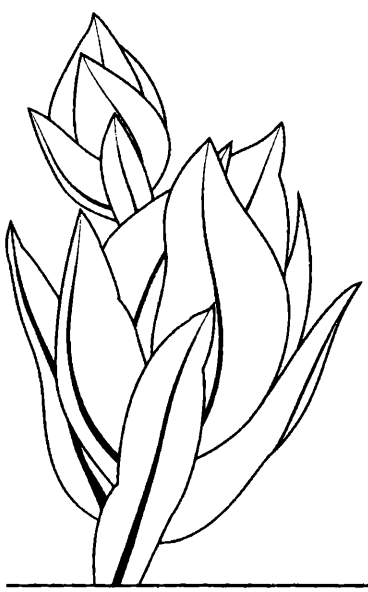
-मदन कौशिक (मंत्री, नगर विकास, पर्यटन, गन्ना विकास, चीनी उद्योग एवं आबकारी, उत्तराखण्ड)

भूख से अधिक खाना एक ऐसा अपराध है, जिसके बदले में अकाल मृत्यु का दंड भुगतना पड़ता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बलि प्रथा के प्रबल विरोधी पूज्य गुरुदेव

एक ऐसे ओजस्वी ऋषि, जिनने मूढ़ मान्यताओं से मोर्चा लिया। वे जन्मजात यति थे, योद्धा थे एवं अनाचार के खिलाफ मोर्चा खोल देते थे। दैवी चेतना उनकी परोक्ष सहयोगी थी। कहा जाय तो निरन्तर उनके साथ चलती थी। ऐसे में अवांछनीयताएँ टिकतीं कैसे?



कोरबा के श्री कैलाश प्रसाद लाम्बा जी कहते हैं कि जांजगीर तहसील छत्तीसगढ़ के कुलीपोटा ग्राम के श्री साध राम साहू अक्सर अपने जीवन की एक अविस्मरणीय घटना सुनाया करते थे। यह सन् 67-68 की घटना है। एक दिन गुरुदेव प्रवचन कर रहे थे। प्रवचन करते-करते ही अचानक उनका चेहरा गुस्से से लाल हो गया व कहने लगे- नहीं मानती, नहीं मानती, देखता हूँ कैसे नहीं मानती? बंद करना पड़ेगा। आदि-आदि।

राजस्थान के कोटा जिले के बूँदी तहसील में इन्द्रगढ़ देवी का मंदिर है। उन दिनों वहाँ प्रति वर्ष एक हजार से भी अधिक बकरों की बलि दी जाती थी। संभवत: उसी परिप्रेक्ष्य में पूज्यवर ने वह कथन कहे थे, क्योंकि इसके तुरंत बाद वे शिविरार्थियों की ओर मुखातिब होकर बोले, "गुरु गोविन्द सिंह के पंच प्यारे थे, जिन्होंने आदर्शों के लिये स्वयं को बलिदान कर दिया। गुरु आज्ञा पर अपना सिर कटाने को तैयार हो गये थे। क्या आज हमारे शिष्यों में भी ऐसे पंच प्यारे हैं? जो हमारी आज्ञा पर अपना सिर देने को तैयार हैं।" शिविरार्थी शिष्य जो लगभग 50-60 की संख्या में थे, उनमें से 27-28 व्यक्तियों ने हाथ उठाया। पुन: गुरुदेव ने पूछा, "देखो भई, ये बताओ कितनों को घर से परमीशन लेनी पड़ेगी? अभी यहीं से जाने के लिये कौन-कौन तैयार है?"

कहाँ जाना है? क्या करना है? अभी यह बात स्पष्ट नहीं थी। बात, सिर कटाने की थी, सो घर से परमीशन की आवश्यकता नहीं लेने वाले केवल आठ ही हाथ ऊपर उठे, बाकी सभी नीचे हो गये।

प्रवचन समाप्त हुआ। उन आठों को घीयामंडी बुलाया गया। सारी बातें समझाई गईं। तुम्हें एक माह के लिये इन्द्रगढ़ जाना है। पशु बलि के विरुद्ध अभियान छेड़ना है। सुबह यज्ञ करना व दिन भर प्रचार-प्रसार।

माताजी ने सारी बातें सुनीं तो रो पड़ीं। कहने लगीं- "बेटा, वहाँ रेगिस्तान की तपती रेत में तुम्हें नंगे पैरों चलना होगा। जब वहाँ रेत की आँधी चलती है, तब कुछ सूझता नहीं। खाने-पीने का कोई ठिकाना नहीं।" भारी मन लिये उन्होंने हमारे साथ पाँच किलो सत्तू व एक किलो गुड़ बाँध दिया। कहा, "बेटा, जब भूख लगे खा लेना।"

दिये हुए पते पर आठों बलिदानी गये। देखा पूरा खटीकों का गाँव था। गाँव से बाहर अपना तम्बू लगाया। जैसा समझाया गया था, वैसा कार्य सबने दूसरे दिन से प्रारंभ कर दिया। तीसरे दिन एक साधु मिला, केवल लँगोटीधारी। बातचीत हुई, सबने अपना उद्देश्य बताया। उसने कहा, आप लोग अच्छा काम कर रहे हो। आपके गुरु महान् हैं। मैं भी आपके

जिस घर में कलह, अशांति और असंतोष हो, वह नरक के समान है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

साथ चलूँ तो नौ हो जायेंगे। सब मान गये। नौ की टोली प्रचार-प्रसार हेतु जुट गयी। दूसरे दिन यज्ञ के उपरान्त सबके चलने की बारी आई तो उस साधु ने कहा- मुझे घर पर ही रहने दें तो अच्छा हो।

हम सब चले गये। रात को वापस आये तो देखा, आस-पास से फूस लाकर तम्बू में लगा दिया गया है। गरम पानी किया रखा है। भोजन भी तैयार हो चुका है। सबने इसे गुरु कृपा माना। इसके बाद साधु सबके पैर गरम पानी से धोने लगा। हम सब मना करते, फिर भी वह खींच-खींच कर पैर धोता। रोज वही भोजन बना कर खिलाता। इस प्रकार वह साधु हमें वरदान बनकर मिला।

पूरे एक माह तक सबने पशु बलि निषेध का प्रचार किया। इसकी हानियाँ समझाईं। देवताओं के रुष्ट होने की बात कही। प्रतिदिन 20 किलोमीटर तक अलग-अलग क्षेत्रों में पैदल नापते थे। सबके पैरों में छाले पड़ जाते थे। फिर भी गुरु श्रद्धा के वशीभूत हो, सभी ने एक माह के अन्दर जन-जागृति की हवा फैला दी।

अब वह गाँव जो खटीकों का था, उन्हें भी भय लगा कि क्या सचमुच पशुबलि बंद हो जायेगी? अत: पूरा गाँव इकट्ठा हुआ और तय किया कि आठ ऐसे बुड्ढे जो मरने वाले हों, वे खड़े हो जाएँ व आठों की गर्दन उड़ा दें। फिर भले फाँसी पर लटक जाना पड़े। इस प्रकार दोनों तरफ के जागरण का असर प्रशासन के कानों तक भी पहुँचा। वह भी कैसे चुप रहता? पूरे जिले के प्रशासन की बैठक हुई। वातावरण ऐसा बन गया था कि कब क्या हो जाय? अत: पुलिस भी पूरी तरह चौकन्ना थी। किसी भी अप्रत्याशित घटना से निपटने के लिये वहाँ पुलिस छावनी बन गई थी।

नवरात्रि के अंतिम दिन हम आठों बलिदानियों ने सुबह चार बजे ही नहा-धोकर मंदिर को घेर लिया। ताकि कोई भी व्यक्ति हमारे जीवित रहते तक बलि न दे सके। उस समय वह साधु साथ नहीं था। सभी अंध श्रद्धालु अपने साथ बकरा लिये हुए मंदिर की ओर आ रहे थे। वहाँ भीड़ बढ़ती जा रही थी। इस सबसे मंदिर के अन्दर जाने में दिक्कत होने लगी। हम आठों ने भी स्पष्ट कर दिया कि बिना हमको मारे आप मंदिर के अन्दर नहीं जा सकते। हालात नाजुक बनते जा रहे थे। अचानक वे लंगोटीधारी साधु अपने कन्धों पर बकरा लादे हुए प्रकट हो गये। अपने साथी को इस प्रकार बकरा लाते देखकर हम सभी आश्चर्य में पड़ गये। सब, कुछ सोच पाते, इसके पहले ही उन्होंने बकरे को नीचे पटका और जोर की गर्जना करते हुए बोल पड़े। पशु में भी आत्मा का निवास है। यह बात किसी को समझ में नहीं आ रही है? हिम्मत है, तो इस बकरे को काटकर दिखाओ। उस साधु के सिंह नाद में वह गर्जना थी कि जो व्यक्ति थोड़ी देर पहले पशु बलि के पक्ष में खड़े थे, सभी भाग खड़े हुए। मौका देखकर पुलिस ने भी कमान सँभाल ली और धारा 144 लागू हो गयी। सभी तितर-बितर हो गये। गर्दन उड़ाने वाले खटीक भी खिसक लिए।

हम आठों को लग रहा था कि आज तो हमारी गर्दन उड़ेगी ही, क्योंकि, इसके लिये ही तो मथुरा से चले थे। किन्तु पलक झपकते ही वह साधु आया, ललकारा और भीड़ को तितर-बितर कर अंतर्ध्यान हो गया। फिर कहीं ढूँढने पर भी नहीं मिला। तभी कुछ लोगों ने कहा, हमने तो उसे उसी समय नीचे देखा था। साढ़े सात सौ सीढ़ियाँ दो-चार मिनटों में कैसे तय की जा सकती हैं?

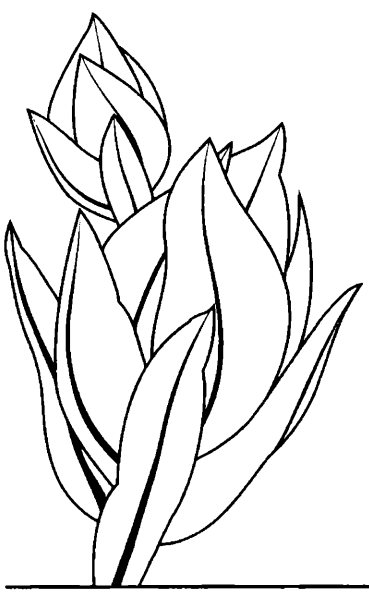
अत: सबने एक स्वर से उन्हें चमत्कारी बाबा ही माना, जो ऐन वक्त पर अपने शिष्यों की रक्षा हेतु प्रकट हुए थे। अन्यथा क्षण भर की भी देर होती तो सभी की गर्दन कट जाती। पूज्यवर भला ऐसा कैसे होने देते? साधु का भी कहीं अता-पता नहीं था। अत: आठों अपना डेरा उठाकर मथुरा आये। गुरुदेव ने मुस्कुराते हुए समाचार पूछा, "कहो, क्या हाल चाल है?" सबने एक स्वर से कहा, "आप हमसे क्यों पूछते हैं गुरुदेव? आप स्वयं तो वहाँ मौजूद थे। आपकी क्षण भर की देरी हम सब की गर्दन उड़ा देती।" सुनकर, गुरुदेव मुस्कुरा दिये।

तब से वहाँ पशु बलि बिल्कुल बंद है। ऐसे क्रांतिकारी और परीक्षक भी थे, पूज्य गुरुदेव। ◈

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मानव को देवात्मा हिमालय का संदेश

दुर्गम हिमालय में दिव्य सत्ताओं की निरंतर उपस्थिति है। इसके साक्षी हैं डॉ. गोपीनाथ कविराज। इस वृतान्त में उसी हिमालय के गुप्त रहस्यों की रोमांचक कथा-गाथा एवं संदेश बयाँ किया जा रहा है...



घटना आज की नहीं, पर है इसी शताब्दी की। उस वर्ष हिमालय में हिमपात अधिक हुआ था। श्री बद्रीनाथ जी के मन्दिर के पट वैसे सामान्य स्थिति में अक्षय तृतीया को खुल जाया करते हैं। किन्तु वे जब जोशीमठ पहुँचे तो यात्री वहीं रुके थे। वह अक्षय तृतीया वाराणसी में ही मनाकर चले थे। मार्ग में तीन-चार दिन तो ऋषिकेश तक में ही रुकते-रुकाते लग गए और तब मोटर, बसें केवल देव-प्रयाग तक जाती थीं। आगे का मार्ग उन्होंने पैदल पार किया।

भाग्य-देवता कुछ अनुकूल लग रहे थे। जोशीमठ पहुँचने पर पता लगा कि आज ही शाम को पट खुलने वाला है। बद्रीनाथ पहुँचने पर देखा-मार्गों पर तीन-चार फुट बरफ पड़ी थी और दुकानदार फावड़ों से बरफ हटाकर अपनी दुकानों के द्वार खोलने की कोशिश में लगे हैं।

याद नहीं, दूसरे या तीसरे दिन बद्रीनाथ से आगे व्यासगुफा, सहस्रधारा तक चले गए। साथ में एक युवक पर्वतीय ब्राह्मण थे मार्गदर्शन के लिए। दो-तीन स्थानों पर उन्होंने अलकनन्दा की धारा बरफ के प्रकृति निर्मित पुल से पार की। लेकिन जब वे दोनों वसोधारा के ऊपर की गुफा पर चढ़ने लगे, तब मार्गदर्शक ने मना किया। लेकिन जैसे उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। इसी बीच पता नहीं कब उन्हें भाग्य भरोसे छोड़कर-मार्गदर्शक और मित्र दोनों वापस लौट गए। ऊपर किसी तरह वे पहुँचे भी और लौटे भी। लौटते समय या तो उनका मार्ग भूल गया अथवा जिस हिमनिर्मित पुल से उनने अलकन्दा पार की थी, वह इतनी देर में टूट गया था। हुआ कुछ भी हो, उनको माना गाँव के पास होकर घूमकर आने के लिए विवश होना पड़ा।

माना गाँव सुनसान पड़ा था। घरों के दरवाजों पर ताले सीलबन्द पड़े थे। वहाँ के निवासी जो सर्दियों में नीचे चले गये थे, अभी तक नहीं लौटे थे। जीवन में पहली बार एक जनहीन गाँव देखा-अद्भुत लगा वह सुनसान। वह कुछ और आगे बढ़ गए। सन्ध्या समीप थी। अस्ताचल से एक बार दिनपति ने जगती को देखा और उनके विराम की छाया सम्पूर्ण धरातल पर फैल गई। सम्पूर्ण हिमाच्छादित गिरि शिखर गैरिकवर्णी वीतराग संन्यासी के वेश में परिवर्तित हो गए। तरु- वीरुध और लताओं ने भी उसी वर्ण को अपना लिया। प्रत्येक शिला भी रंग गई उस रंग में। पक्षियों ने दिशाओं में मन्त्रपाठ प्रारंभ किया। अचानक बादल घिर गए, वर्षा किसी भी क्षण सम्भव थी। उनके पास न छाता था न बरसाती कोट। अतः स्थान पर पहुँचने की शीघ्रता स्वाभाविक थी।

सहसा उनके पैरों ने चलना अस्वीकार कर दिया। उनकी क्या अवस्था हुई कहना कठिन है। स्वयं सोच लें-

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आस-पास कोई नहीं था। उज्ज्वल हिमाच्छन्न पर्वत और उसके पीछे जनहीन गाँव। मार्गदर्शक और मित्र तो कभी के चुपचाप खिसक चुके थे। जानने का कोई साधन था नहीं।

सहसा सामने केवल दस गज दूर एक महाकार आकृति आ खड़ी हुई। एक गम्भीर स्वर उभरा। कुछ क्षण लगे उन्हें अपने को आश्वस्त करने में। उनके सम्मुख वे जो कोई भी थे, कुछ आश्वासन दे रहे थे कि भय करने की जरूरत नहीं है। हाँ, वे पुरुष थे, मानव पुरुष; किन्तु उनका विशाल शरीर जिसके सामने खड़े वह उनके घुटनों से कुछ ही ऊँचे लग रहे थे। नाभि से नीचे तक लटकती हिम धवल दाढ़ी- सुपुष्ट दीर्घ भुजाएँ और लेकिन उनके तेजोमय मुख को भली प्रकार देख पाना सम्भव कहाँ था। वह वहाँ खड़े थे, यही कहाँ कम था।

"कौन हो तुम ?" उन्होंने शुद्ध देववाणी में पूछा था। ये भी संस्कृत के आचार्य थे। "गोपीनाथ" अपना नाम बताकर संक्षिप्त परिचय दिया। इतनी देर में वे अपने को कुछ अधिक आश्वस्त अनुभव कर रहे थे। उन्हें पृथ्वी पर मस्तक रखकर प्रणाम किया। "गोत्र" प्रश्न हुआ। "सावर्णि" उत्तर सुनकर वे इतने हँसे कि पर्वतमालाएँ काँपती हुई प्रतीत हुईं। "कोई विशेष बात नहीं" वे सौम्य स्वर में बोले "तुम्हारे कुलपुरुष भगवान् विवस्वान के आत्मज सावर्णि हैं- आगामी मन्वंतर के मनु। तुम्हारा यह क्षीणकाय - उन मार्तण्ड तनय के सम्मुख मैं भी इतना ही ह्रस्वदेह, अल्पप्राण प्रतीत होने लगता हूँ। कहीं तुम अपने उन कुल पुरुष का साक्षात् कर सको तो ?। लेकिन वे इस बार हँसे नहीं।

"भगवन् आप ?" जिज्ञासा उभरी। "मेरा जन्म त्रेता के अन्त में हुआ था।" उन्होंने सहज भाव से कहा। "तब तक मानवदेह ह्रास को प्राप्त हो चुका था और तुम्हें तो देखकर लगता है।" "पता नहीं क्यों उन्होंने अपनी बात अधूरी छोड़ दी।" इतने में गोपीनाथ जी को ध्यान आया कि पुराण वर्णित कलाप ग्राम यहीं-कहीं पास होना चाहिए। अवश्य सामने जो दिव्य पुरुष उपस्थित हैं, वे वहीं के निवासी होंगे। उनके मन में उस भूमि के दर्शन की इच्छा प्रबल होने लगी।

वत्स! तुम ठीक सोचते हो - हिमालय का गौरव और वैभव अनन्त है। कलाप ग्राम ही क्यों देवात्मा के इस ध्रुव केन्द्र में ऐसे अनगिनत स्थल हैं, जहाँ युग-युगान्तर साधनाएँ, तपश्चर्या, विशिष्ट-प्रयोग सम्पन्न होते रहे हैं। जहाँ तक भूमि का प्रश्न है, इन स्थानों पर तुम और तुम्हारे अनेक साथी आते-जाते रहते हैं, किन्तु उसके निवासी जब तक स्वयं न चाहें, उन्हें तुम देख नहीं सकते।"

अद्भुत-आश्चर्यजनक लगा- उस लोकोत्तर मानव का कथन। भला इन अति विशिष्ट मानवों के लिए प्रयोगों की क्या जरूरत ? अन्तराल में उभरे प्रश्न को उनकी सुविकसित संवेदना ने अनुभव कर लिया। "ऐसा मत सोचो इनके प्रयोगों का उद्देश्य स्वार्थ का जखीरा इकट्ठा करना अथवा अहं का सिक्का चलाना नहीं है। ये सभी देवपुरुष-ब्रह्माण्ड के हित में समर्पित हैं। तुम्हारे वैज्ञानिक और ज्योतिषी अनेक भविष्यवाणियाँ कर मानव के मन में हलचल पैदा कर देते हैं। सभी सुख-चैन की नींद को त्याग चिन्तातुर हो उस वक्त की प्रतीक्षा करते हैं और जब वक्त आता है - तब कुछ नहीं होता। भविष्यवक्ताओं के कथन अपने स्थान पर सही होते हैं। पर ये ही महापुरुष अपने प्रयोगों से स्थिति को टाल देते हैं। आज नहीं आगे भी देखोगे, युद्ध छिड़ेंगे, पर महाविनाश के पूर्व समझौते हो जायेंगे। लगेगा सभ्यता समाप्त हुई, पर कोई शान्तिदूत स्थिति सँभाल लेगा।"

"प्रयोग तो आश्चर्यजनक है, पर मानव भी विनाश के कगार पर है। हाँ- आमंत्रित तो यही कर रहा है। आज वह और उसका समाज अस्वस्थ है।" समाज, भी अस्वस्थ "बात समझ में नहीं आ रही थी।" "मनुष्य सदा दुर्बल रहा है।" वे कह रहे थे- "उससे त्रुटि नहीं होगी, उसके पद वासना-विचलित नहीं होंगे, यह कभी संभव नहीं हुआ, पर पहले वह सुसंस्कृत बनने, स्वस्थ रहने के विज्ञान और विधान को स्वीकार कर देवत्व की ओर छँलाग लगाता था, आज इन्हें अस्वीकार कर कीट-पतंगों की तरह बिलबिला रहा है।"

यह सब सुनकर उन्हें अनेक पौराणिक कथाएँ याद हो आयीं। मानस चक्षुओं के सामने उभरने लगे - वशिष्ठ, अगस्त्य, याज्ञवल्क्य के वे प्रयास जिन्होंने समूचे मानव जीवन को संस्कार महोत्सव

आत्महीनता अकारण ही मनुष्य को आलसी, असंतुष्ट, चापलूस और क्षुब्ध बना देती है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

बना डाला था। यदि ऐसी स्थिति आज बनायी जा सके। विचार तरंगों से स्पन्दित हो वे कह उठे- "स्थिति बनेगी वत्स! धरती के मानव को हिमालय का संदेश देना- वह संस्कार के मंगल विधान को पुनः अपनाए। देवत्व की ओर बढ़ते प्रत्येक कदम को यहाँ की ऋषि सत्ताएँ सम्बल देंगी।

देवात्मा हिमालय के संरक्षण में चल रहे प्रयोग भारत को केन्द्र बनाकर समूचे विश्व का कायाकल्प कर लेंगे। उन दिव्य पुरुषों का यह प्रयोग अगले पचास वर्षों में पूरा होकर रहेगा, हाँ इस बीच धरती और धरती पुत्रों को बहुत कुछ सहना पड़ेगा।"

कुछ क्षण, पता नहीं कितने क्षण वे मस्तक झुकाये अपने चिन्तन में लीन रहे - अगली शताब्दी की दुनिया का स्वर्णिम चित्र उनके अस्तित्व में पुलकन भर रहा था। पता नहीं कितना समय इसमें बीत गया और जब उन्होंने नेत्र उठाए, सम्मुख कोई नहीं था। वही हिमाच्छादित पर्वतमालाएँ, वही तीव्र-वेगा अलकनन्दा और वही पीछे सुनसान माना गाँव और हिमालय का शाश्वत सन्देश - जिसके अनुरूप स्वयं को ढालकर गोपनाथ प्राच्य विद्या के महान साधक महामहोपाध्याय डॉ0 गोपीनाथ कविराज बन गए। सन्देश के स्वर शाश्वत हैं- बस ग्रहणशीलता के लिए हमारी प्रतीक्षा है। ◈

हिमालय अध्यात्म चेतना का ध्रुव केन्द्र है। ऋषि सत्ताओं की तपःभूमि है, उनकी तप उर्जा को प्राप्त करने की भावना से हम हिमालय का ध्यान कर सकें, इसके लिये पूज्यवर हिमालय का मंदिर बनवाना चाहते थे। सन् 1981-82 की बात है, गुरुजी ने एक कार्यकर्ता को बुलाया और कहा, "बेटा, यहाँ शांतिकुंज में हिमालय का मंदिर बनाने का हमारा मन है, इसके लिये योजना बनाकर उसका निर्माण तुझे करना होगा।" उसने कहा, गुरुजी, मैं भवन निर्माण का काम जानता हूँ। हिमालय का मंदिर कैसे बनाऊँगा? मैंने तो अभी तक हिमालय देखा भी नहीं है और किसी पर्वत का मंदिर भी अभी तक नहीं बनाया। यह काम तो मुझे बहुत मुश्किल लग रहा है।" तब परम पूज्य गुरुदेव ने बहुत ही मार्मिक बात कही, उन्होंने कहा, "बेटा, मैंने हिमालय देखा है। किंतु मैं बना नहीं सकता और तूने हिमालय देखा नहीं, परंतु तू बना सकता है। सो हम और तुम मिलकर हिमालय का मंदिर बनायेंगे।" मुझे यह बात बड़ी अद्भुत और प्रोत्साहन देने वाली लगी। परिणामस्वरूप शांतिकुंज में गायत्री मंदिर के ठीक सामने वाले हॉल में हिमालय का मंदिर बनाया गया। निर्माण के दौरान समय-समय पर परम पूज्य गुरुदेव स्वयं वहाँ आते थे और निर्देश देते थे।

1988-89 में पूज्यगुरुदेव ने पुनः शांतिकुंज बुलाया और कहा, " अब की बार तुझे एक खास काम करना है। यह हिमालय जो तूने बनाया है न, इसे अब तोड़ देना है।" फिर गंभीर होकर कहा, "तुम तो नहीं देख सकते, परंतु मैं देख रहा हूँ। आने वाले दिनों में यहाँ बहुत भीड़ आएगी और हमें एक-एक इंच जगह की आवश्यकता होगी। यह हॉल अब हिमालय के लिये नहीं रहेगा। इसे निकालना ही उचित होगा, तू काम से लग और हिमालय तोड़कर निकाल दे।" मैं बहुत दुखी हृदय से माता जी के पास आया। माताजी ने कहा, मैं बात करूँगी। पर तीसरे दिन मुझे हिमालय तोड़ना ही पड़ा। माता जी ने स्नेह से मेरे सिर पर हाथ फेरा और कहा, "बेटा, यह हिमालय टूटने ही वाला था। आगे इससे भी बड़ा हिमालय तुम्हीं से बनवाएँगे।" बाद में देवात्मा हिमालय को बनाने का सौभाग्य सभी के साथ मुझे भी मिला। एक अन्य अवसर पर कहे गये गुरुदेव के अमृततुल्य शब्द मेरे लिये प्रेरणा स्रोत और शक्ति के भंडार हैं। उन्होंने मुझसे कहा था, "बेटा, ऊँची कल्पनाएँ करते रहना, अपना दिमाग आसमान तक ऊँचा करना। परंतु बेटा अपने पैर धरती पर ही रखना। धरती का आधार छूटना नहीं चाहिए।" निर्माण कार्य संबंधी कल्पनाएँ और प्रत्यक्ष निर्माण का इतना सुंदर समन्वय मैंने अपने हृदय पर सदा के लिये अंकित कर लिया है।

असंतोष एक घातक दुर्गुण है। यह जिसको आखेट बना लेता है, उसकी जीवन वाटिका के सारे फूल जला डालता है, जीवन की ताजगी-हरियाली का अपहरण कर लेता है ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सृजन क्रांति का केन्द्र होगा भारत

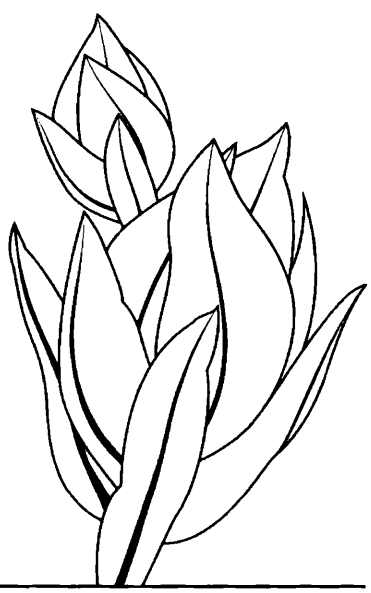
''भयावह ध्वंस के साथ सकारात्मक सृजन को मैं स्पष्ट अनुभव कर रहा हूँ।'' यह बात अर्नोल्ड जोसेफ टॉयनबी ने अपनी पत्नी श्रीमती वेरोनिका एम.बौल्टर से कही। श्रीमती वेरोनिका उनकी पत्नी होने के साथ उनकी शोध-सहायिका भी थीं। इस समय वह अपने पति अर्नोल्ड के साथ अपने ही घर के पुस्तकालय में बैठी हुई थीं। उनके साथ टॉयनबी के विश्वासपात्र सहयोगी विलियम रोजर्स भी थे। इस समय टॉयनबी अपनी आयु के ८५ वर्ष पूरा कर रहे थे। उनके अध्ययन एवं अनुभव की समूचे विश्व में चर्चा होती रहती थी। उनके द्वारा लिखा गया ग्रंथ ''ए स्टडी ऑफ हिस्ट्री'' 12 खण्डों में प्रकाशित हुआ था। इसे विश्व भर के सभी विश्वविद्यालयों एवं विशेषज्ञों ने सराहा था। इसके अलावा उनकी रचनाएँ ''सिविलाइज़ेशन ऑन ट्रायल'', ''ईस्ट टु वेस्ट'' एवं ''हेलेनिज्म'' भी बहुप्रशंसित रहीं।

अर्नोल्ड विश्व इतिहास के पारखी विद्वान् थे। विश्व भर के सभी देशों की सभ्यताओं, संस्कृतियों एवं उनके इतिहास पर उनकी सूक्ष्म पकड़ थी। ब्रिटेन की सरकार अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर हमेशा उनकी सलाह लेती थी। अपने जीवन में समय-समय पर उन्होंने अनेक महत्त्वपूर्ण दायित्व निभाए थे। विश्व के सभी इतिहास विशेषज्ञ व राजनीतिक विश्लेषक उनकी किसी भी टिप्पणी को प्रमाण के रूप में स्वीकार करते थे। विद्वान् होने के साथ वे उच्च कोटि के तपस्वी, साधक थे। लंदन में उनका जीवन भारत के प्राचीन ऋषियों की भाँति था। दैवी विभूति के रूप में उन्हें भविष्य दर्शन की अपूर्व क्षमता प्राप्त थी। तभी तो सुप्रसिद्ध टाइम पत्रिका ने उन्हें अंतराष्ट्रीय संत की उपाधि दी थी।

इस समय भी वे अनुभव की चर्चा कर रहे थे। यह ऐसा अनुभव था, जो उन्होंने ध्यान की गहराइयों में पाया था। साथ ही उनका संपूर्ण ऐतिहासिक व राजनीतिक ज्ञान इसे सही ठहरा रहा था। वे कह रहे थे - ''वेरोनिका! मैंने दो महायुद्धों को अपने सामने होते हुए देखा है। इन महायुद्धों में हुई विभीषिकाएँ और त्रासदी मैंने अपने सामने प्रत्यक्ष घटित होते देखी हैं। इनमें से द्वितीय महायुद्ध में तो एक प्रकार से मेरी भागीदारी ही रही है। मैंने स्वयं जाकर हिटलर का इंटरव्यू लिया था। इस दूसरे महायुद्ध से संबंधित अनेक शांतिवार्त्ताओं में मेरा महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।'' ऐसा कहते हुए उन्होंने पुस्तकालय से बाहर खिड़की की ओर झाँका और चुप हो गए।

बाहर हलकी बूँदा-बाँदी के साथ बरफ गिर रही थी। हलकी बूँदों के साथ झरते बरफ के श्वेत कण, ऐसा लग रहा था कि पुस्तकालय के बाहर अहाते में लगे पेड़ स्नान करने के साथ अपना

'पश्चिम के खण्डहरों से भारत का पुनर्जीवन' यह निबंध ग्रंथ लिखाया श्री अरविंद ने। इसका एक और प्रमाण है यह अर्नोल्ड टॉयनबी का भविष्य कथन। वे संकेत करते हैं कि भारतीय जीवन दर्शन एवं शैली ही विश्व-मानवता का त्राण करेगी...



मनुष्य जीवन का यदि कोई दर्शन न हो, उसके साथ आस्थाएँ, मान्यताएँ और किन्हीं सिद्धांतों का समावेश न हो, तो वह एक जानवर मात्र रह जाता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

श्रृंगार कर रहे हों। उन्हें इस तरह चुप देखकर वेरोनिका उठीं और घर के अंदर से तीन कप कॉफी बना लाईं। उसने एक कप कॉफी अर्नोल्ड के सामने और एक कप रोजर्स के सामने रखी। तीसरा कप स्वयं अपने हाथों में ले लिया। अर्नोल्ड को इस तरह चुप देखकर रोजर्स ने वेरोनिका की ओर देखा, फिर धीरे से कहा – ''क्या सोचने लगे सर?''

रोजर्स की इस बात पर उन्होंने गंभीर स्वर से कहा – ''इस बार का ध्वंस पहले हुए सभी ध्वंसात्मक रूपों से अधिक भयावह होगा। लेकिन इसमें सबसे आश्चर्यपूर्ण बात यह है कि इसके साथ सकारात्मक सृजन की गतिविधियाँ भी चलती रहेंगी। जो ध्वंस होगा, उसमें प्रकृतिनिर्मित एवं मानवनिर्मित सभी ढाँचे ढहेंगे, साथ ही सृजन के नए सूत्र और सत्य उभरकर सामने आएँगे।''

टॉयनबी की यह बात थोड़ी अटपटी सी थी, जो वेरोनिका एवं रोजर्स को कम समझ में आई। इसलिए उन दोनों ने लगभग एक साथ कहा – ''इसे थोड़ा और स्पष्ट करें।'' इस पर वे हलके से हँसे और कहने लगे – ''प्रकृति निर्मित ढाँचा है–पर्यावरण,जलवायु, मौसम, इसी के साथ प्रकृति का सहज दृश्य रूप जैसे कि जंगल, नदियाँ, पर्वत आदि । सो अगले दिनों प्रकृति में ऐसी विचित्र लहरें उठेंगी कि यह सब का सब परिवर्तित होता नजर आएगा। भूकंप, समुद्री तूफान, अतिवृष्टि, अनावृष्टि और भी ऐसे अनेक प्राकृतिक कारण इसके लिए जिम्मेदार होंगे।''

इतना कहकर वे शांत हुए और उन्होंने अपने हाथ की कॉफी समाप्त कर बड़ी गहरी श्वास ली। फिर बोले – ''यह सत्य कहने में, स्वीकारने में थोड़ी असहजता तो लगती है, फिर भी सत्य तो यही है कि पश्चिम ने जो भी ढाँचे बनाए हैं, विनाश के जो भी सरंजाम जुटाए हैं, वे सभी धीरे-धीरे समाप्त होते जाएँगे और इसमें आश्चर्य की बात यह होनी है कि सर्वनाशी विश्वयुद्ध की स्थितियाँ बनते हुए भी विश्वयुद्ध नहीं होगा।''

टॉयनबी की ये बातें चकित करने वाली थीं। इसे सुनकर विलियम रोजर्स तो उठकर खड़े ही हो गए और कहने लगे – ''सर ! इस अगले महायुद्ध को रोकेगा कौन?'' ''उत्तेजित मत होओ रोजर्स! बैठ जाओ, इस महायुद्ध को रोकेगा – भारत देश से उठता आध्यात्मिक ऊर्जा का प्रचंड प्रवाह। इसी प्रेरक प्रवाह से नवसृजन के सभी सूत्र उभरेंगे। इन्हीं सूत्रों से भविष्य के प्राकृतिक एवं मानवीय ढाँचों को जाना-समझा जाएगा।''

इतना कहकर वे थोड़ा रुके फिर गंभीर स्वर में बोले – ''यह स्पष्ट हो चुका है कि जिस अध्याय की शुरुआत पश्चिम से की गई है, उसका समापन भारत से करना होगा, यदि अंत को, मानव जाति के लिए, आत्मघाती होने से बचाना है। इतिहास के इस खतरनाक मोड़ पर मनुष्यता के लिए उद्धार का एकमात्र उपाय भारतीय तौर-तरीके और भारतीय जीवनशैली में निहित है। ऐसा या तो विश्वमानवता स्वयं कर लेगी अथवा परमेश्वर उसे ऐसा करने के लिए विवश कर देंगे। होना यही है– कैसे भी हो, भारतीय जीवनशैली की ओर सभी की वापसी निश्चित है।''

''वर्तमान समय विश्व इतिहास में अद्‌भुत एवं अभूतपूर्व स्तर का है। इसमें एक ओर महाविनाशी प्रलयंकारी तूफान अपनी प्रचंडता का परिचय दे रहा है, तो दूसरी ओर सतयुगी नवनिर्माण की उमंगें भी उछल रही हैं। विनाश और विकास एक दूसरे के प्रतिद्वंद्वी हैं, तो भी उनका एक ही समय में अपनी-अपनी दिशा में चल सकना संभव है। इन दिनों आकाश में सघन तमिस्रा का साम्राज्य है, तो दूसरी ओर ब्रह्ममुहूर्त का आभास भी प्राची में उदीयमान होता दीख पड़ता है।''

-परमपूज्य गुरुदेव, अपनों से अपनी बात, प्राणवान् प्रतिभाओं की खोज (अखण्ड-ज्योति, अक्टूबर १९८८, पृ०४२ - ४३)

हृदयहीन होना मनुष्य जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रखर जीवन साधना के सजल सूत्र

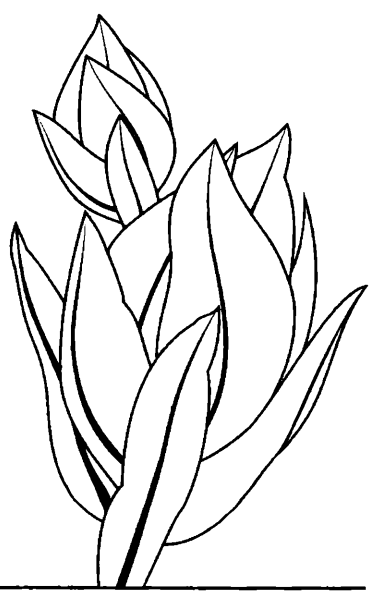
जीवन साधक के रूप में पूज्य आचार्यजी के जीवन का प्रत्येक आयाम प्रेरक है। जीवन साधना के प्रत्येक जिज्ञासु-अभिलाषी के लिए पूज्यवर का व्यक्तित्व प्रतिपल मननीय और अहर्निश अनुकरणीय है। साधना से ही जीवन सँवरता है। रचनात्मकता की कोपलें फूटती हैं, नवसृजन के अंकुर निकलते हैं। सभी तरह की सफलताएँ जीवन साधक का स्वयं ही वरण करती हैं।

पहला कदम जीवन साधना का- स्वयं के प्रति जागरूक बनना है। जीवन साधक जागरूकता की स्थिति में अपनी शक्तियों को पहचानते हैं, सम्भावनाओं से अवगत होते हैं। मन:स्थिति की सही पहचान एवं परिस्थितियों का सार्थक सदुपयोग इसी स्थिति में होता है। जागरूकता की प्रगाढ़ता ही जीवन बोध बनती है। जिन्दगी का हर कोना बोध के उजाले से भर जाता है। जिन्दगी में होने वाली हर छोटी-बड़ी घटना एक सिखावन बनती है। जो बोध में जीता है सुख के क्षणों को वह योग बना लेता है, तो दु:ख के क्षण उसके लिए तप बन जाते हैं। स्वजागरण की सबसे महत्त्वपूर्ण उपलब्धि स्वयं के व्यक्तित्व में छुपी सम्भावनाओं और क्षमताओं का परिचय प्राप्त होना है। यह जीवन साधना की पहली सफलता है। इसी आधार पर चिंतन, चरित्र और व्यवहार का त्रिआयामी क्षेत्र विकसित होता है। इन तीनों क्षेत्रों का समुचित विकास ही जीवन साधना के अगले कदम की आधारभूमि बनता है।

स्वयं की क्षमताओं का परिचय और व्यक्तित्व की समझ हो जाने पर जीवन साधक के लिए अगला कदम-सबसे महत्त्वपूर्ण है, वह है-सही लक्ष्य का निर्धारण करना। लक्ष्य ऐसा हो जिसकी डगर पर चलकर सम्भावनाओं का जागरण, क्षमताओं का सदुपयोग और व्यक्तित्व का समग्र विकास संभव हो सके। लक्ष्य कैरियर सम्बन्धी हो या फिर आर्थिक, मानसिक, पारिवारिक अथवा आध्यात्मिक, इसका चयन करते समय कुछ बातों का अवश्य ध्यान रखना चाहिए। जैसे-स्वयं के भीतर की अन्त:प्रेरणा, हमारे अपने जीवन मूल्य, पास मौजूद संसाधन, अवसरों की पहचान तथा परिस्थितियों से लड़ने-जूझने की क्षमता आदि। इन बिन्दुओं पर विचार करके यदि लक्ष्य निर्धारित किया जाये तो फिर जिन्दगी में गलत लक्ष्य चुने जाने की संभावना नहीं रह जाती है।

आचार्यजी की साधना दृष्टि में व्यक्तित्व का एक सुनिश्चित लक्ष्य अवश्य होना चाहिए। और इस लक्ष्य के अनुरूप ही हमारी जीवनशैली हो, तभी सफलता प्राप्त होती है। उद्देश्यपूर्ण जीवन में ही आदर्श जीवनशैली विकसित होती है। जीवन-शैली का सबसे महत्त्वपूर्ण अंग

जीवन को प्रत्यक्ष देवता मानो एवं उसकी 24 घंटे साधना करो, यह पूज्यवर ने जीवन भर संदेश दिया। प्रस्तुत लेख जीवन साधना पर है एवं सफलता के स्वर्णिम सूत्रों को उद्धरित करता है। इसमें जीवन के सर्वांगीण उत्कर्ष का प्रखर दिशा बोध मिलता है...



संकीर्ण स्वार्थपरता की कीचड़ में सना व्यक्तिवाद ही भव बंधन है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

दिनचर्या है। ऊपरी तौर पर दिनचर्या जिन्दगी का एक छोटा सा टुकड़ा अवश्य लगती है, किन्तु जीवन के मूल्य, मकसद, दिशा, आदर्श, लक्ष्य सभी कुछ दिनचर्या में ही झलकते नजर आते हैं। व्यवस्थित दिनचर्या का मतलब है, अपने शरीर, प्राण, अन्त:करण की समस्त शक्तियों को सँवारना एवं इन्हें एक विशिष्ट दिशा में सुनियोजित करना। जीवन साधक की दिनचर्या में तप और व्रत अभिन्न अंग है। जब कोई व्यक्ति तप और व्रत के सूत्रों से अपनी दिनचर्या सुव्यवस्थित कर लेता है, तो सभी कुछ सुलभ हो जाता है। तप का अर्थ है—अपनी जीवन ऊर्जा को बरबाद होने से रोकना। और व्रत का मतलब है जीवन के महत्त्वपूर्ण उद्देश्य के लिए व्रतशील होना। आचार्यजी ने आत्मबोध एवं तत्त्वबोध की साधना को दिनचर्या के मूल्यांकन एवं विकास हेतु अनिवार्य साधना बताया है। जीवन साधना के सूत्रों में उद्देश्यपूर्ण जीवन शैली का होना जितना जरूरी है, उतना ही आवश्यक उद्देश्य के अनुरूप आदर्श का होना भी है। आदर्श स्वयं की प्रकृति के अनुसार कोई भी हो सकता है। पवित्र विचार, पवित्र भावना अथवा फिर कोई उत्कृष्ट व्यक्तित्व। ये तीनों ही समान रूप से उपयोगी एवं प्रभावशाली हैं। जिसे भी आदर्श चुनें, वह ऐसा हो जिसमें भावनाएँ, विचार, मन, प्राण घुलकर जीवन एकरस हो जाये। सम्पूर्ण अस्तित्व को आदर्श में घोल देने पर आदर्श साकार हो उठता है। आदर्शों का प्रकाश ही लक्ष्य के कठिनतम मार्ग में सफलता का एकमात्र उपाय है।

जीवन साधना के पथिकों को अपनी सफलता सुनिश्चित बनाने हेतु संकल्प शक्ति, आत्मविकास और आत्मसम्मान की भावना जैसी आध्यात्मिक विभूतियों को धारण करने की आवश्यकता होती है। दृढ़ संकल्प शक्ति से ही हमारी आन्तरिक शक्तियाँ प्रबल होती हैं, संकल्प बल बढ़ता है और समस्त नकारात्मकता पराजित होती है। आचार्यजी की जीवन दृष्टि में सर्वशक्तिमान परमेश्वर के अभिन्न अंश मानते हुए साधक की उनमें गहरी आस्था का होना ही आत्मविश्वास का रहस्य है। स्वसम्मान का अर्थ है अपने भीतर की मानवीयता और उच्च गुणों से युक्त गरिमा की पहचान एवं सम्मान। यह सम्मान कभी दूसरों द्वारा नहीं दिया जाता।

जीवन क्षेत्र के साधना समर में अग्रसर होने वाले साहसी वीरों की सच्ची कसौटी निरंतर स्वमूल्यांकन की प्रक्रिया है। सद्गुणों का सतत संवर्धन और विकास ही स्वमूल्यांकन की अनिवार्य शर्तें हैं। इसी से जीवन साधना परिपक्व और प्रखर बनती है। जीवन साधना की सफलता के लिए पूज्यवर आचार्यजी का एक महावाक्य है—'मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है।' इस महामंत्र को वे सम्पूर्ण सफलता की कुंजी मानते हैं। आचार्य जी के अनुसार जीवन में उन्नति-प्रगति के लिए उपयोगी प्रक्रियाओं का अवलम्बन लेना पड़ता है। इसे ही सफलता के आधारभूत तत्त्व कहा गया है। सप्तद्वीप, सप्तचक्र एवं सप्त लोकों की भाँति जीवन साधना की सफलता के भी सात तत्त्व हैं। इन्हीं की ऊर्जा धाराओं से जीवन में सफल होने का गौरव मिलता है। सफलता के यह सात सूत्र हैं-(1) अटूट आत्मविश्वास के साथ प्रचंड पुरुषार्थ, (2) ईश्वरीय कृपा पर अडिग आस्था, (3) उद्देश्य के लिए सम्पूर्ण समर्पण का भाव, (4) आगे बढ़ने के लिए कुछ भी कर गुजरने का बलिदानी साहस, (5) परिवेश में सभी से पारस्परिक सौमनस्यपूर्ण व्यवहार, (6) कठिन परिस्थितियों में मानसिक सन्तुलन की क्षमता, (7) प्रसन्न रहने एवं प्रसन्नता बाँटने की क्षमता। ◈

हमें कोई गुमराह न कर सके, इतना हम में विवेक हो, कोई हम पर दबाव न डाल सके, इतना हममें आत्मबल हो, हम अपनी कृति को प्रामाणिक बना सकें, इतना हममें आत्म-विश्वास हो। हम अन्याय के विरुद्ध लड़ सकें, इतना हममें शौर्य हो। हम अपने आदर्शमय पथ पर अडिग होकर समुन्नत रहें, ऐसी हमारी साधना हो, पलायन नहीं संघर्ष, बुजदिली नहीं साहस, अकर्मण्यता नहीं शौर्य ही मनुष्य की गौरवपूर्ण परिभाषा है।

उत्तेजना एक भयानक मानसिक रोग है, इससे बचे रहने में ही मनुष्य का हित है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पूज्य गुरुदेव के रहस्यमय क्षण

परम पूज्य गुरुदेव में सीखने की बड़ी ललक थी। उन्होंने आसनसोल जेल में मदनमोहन मालवीय, रफी अहमद किदवई, स्वरूपारानी नेहरू आदि महान् नेताओं के साथ प्राय: एक वर्ष बिताया। वहाँ एक अँग्रेजी पत्र 'लीडर' आया करता था। उनकी सीखने की लगनशीलता इतनी तीव्र थी कि लोहे के तसले को ही स्लेट बनाया और जेल में बिखरे पड़े कोयले के टुकड़ों को चॉक, और अंग्रेजी का अभ्यास करते रहे। एक साल में ही बहुत अच्छी अंग्रेजी उन्होंने वहाँ सीख ली थी। वे वहाँ बाल कैदियों को अच्छी-अच्छी बातें भी बताया करते थे। उनकी लगन अध्ययनशीलता और व्यक्तित्व से प्रभावित होकर जेलर ने उन्हें बाल कैदियों का अध्यापक नियुक्त कर दिया।

सन् 1972 में जब वे दक्षिण अफ्रीका के प्रवास पर गये तब जलयान से लम्बा सफर करना था। इस यात्रा के दौरान उन्होंने एक अफ्रीकी से रुचिपूर्वक अफ्रीकन भाषा "स्वाहिली" सीख ली। ऐसी थी उनकी लगनशीलता।

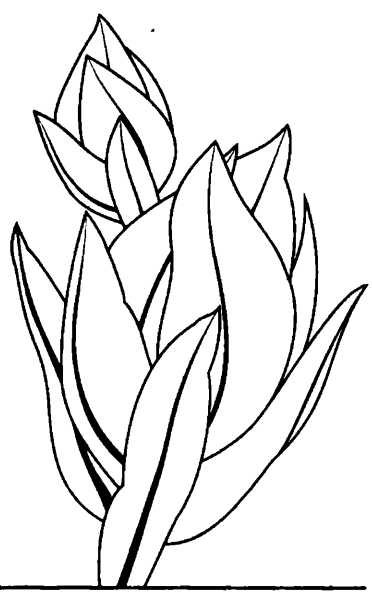
उनकी अध्ययनशीलता भी प्रशंसनीय थी। वे नित्य कम से कम 2 घण्टे अध्ययन करते थे। एक घण्टे में 40 पेज, दो घण्टों में 80 पेज। इस प्रकार उन्होंने 60 वर्षों में लाखों उपयोगी पृष्ठ पढ़ लिये। जिस किसी क्रान्तिकारी से मिलने जाते, एक अच्छी पुस्तक सदा साथ में रखते, वे पूरे मार्ग में पढ़ते हुए ही जाते। कोई मिल जाता तो उससे वार्ता कर पुन: पढ़ते हुए ही आते। मथुरा में कुछ लोग उन्हें सड़क पर पढ़ने वाले बाबाजी कहते थे। एक स्थान पर उन्होंने लिखा है कि मैंने एक भी पेज कभी मनोरंजन के लिए नहीं पढ़ा। जो भी पढ़ा, हमेशा उपयोगी, हितकारी, सत्साहित्य ही पढ़ा और पढ़ते हुए इतनी तन्मयता में डूब जाता मानो शोध कार्य करना हो।

जयपुर में एक प्रसिद्ध विद्वान् श्री मधुसूदन ओझा के घर उनकी व्यक्तिगत लाइब्रेरी बहुत बड़ी थी, वे वहाँ कई दिन रहकर उपयोगी पुस्तकों का अध्ययन करते रहे।

जब गुरुजी ने संगीत सीखा

मथुरा में एक बार गुरुजी को संगीत सीखने का विचार आया। उन्होंने एक संगीत टीचर भी नियुक्त कर लिया और सबसे कहा कि सब लोग संगीत सीखेंगे। माताजी, गुरुजी और बाकी सब लोग भी संगीत की कक्षा में बैठने लगे। माताजी ने हारमोनियम पर स्वर लिख लिये और रीड दबा-दबाकर सीखने लगीं। गुरुजी बोले, "मैं भी सीखूँगा" और नियमित रूप से कक्षा में आने लगे। गुरुजी बड़ी गहराई से सीखने लगे। मास्टरजी को पूछते, "ऐसा क्यों, ऐसा क्यों नहीं? इससे क्या होगा? ऊँचा क्यों, नीचा क्यों नहीं?" मास्टर साहब सिखाते रहे। सात

वे क्या थे, कैसे थे? कहा जाये तो उनका संपूर्ण जीवन एक जीती जागती किताब था। जहाँ से पन्ना खोलो, कुछ नया ही नया मिलता है। कभी वे संगीत सीखते हैं, कभी भिन्न-भिन्न रुपों में स्थान-स्थान पर सीखते हैं।



कार्य रूप में परिणत हुए बिना योजनाएँ चाहे कितनी ही अच्छी क्यों न हों, लाभ नहीं दे सकतीं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

दिन बाद उन्होंने आना बंद कर दिया। गुरुजी ने कहा, "पता लगाओ, मास्टर साहब बीमार तो नहीं हो गये?" एक व्यक्ति को घर भेजा। पत्नी ने कहा, "मास्टर साहब बाहर गये हुए हैं।" एक दिन मास्टर जी गुरुजी को बाजार में मिल गये। गुरुजी ने उन्हें नमस्कार किया और बोले, "मास्टर साहब, आपका स्वास्थ्य कैसा है? आप बाहर गये, लौटे, तो आये क्यों नहीं? मास्टर जी ने हाथ जोड़े और बोले,"आचार्य जी, आपके पास बहुत कलायें हैं। मेरे पास तो एक ही कला है, वो भी थोड़ी सी। आप मेरे पीछे क्यों पड़ गये? मुझे दाल-रोटी खाने दीजिए। आपको सिखाऊँगा, तो मैं ही भूल जाऊँगा। मुझको आप कृपा करके माफ कर दीजिए।" (जबकि उन्हें संगीत का अच्छा ज्ञान था)

जब गुरुजी ने इलाहाबाद में पुस्तकें पढ़ीं : माधवपुर के **श्री बहादुर सिंह** बताते हैं कि इलाहाबाद वाले श्री रामलाल जी ने मुझे एक घटना सुनाई। पूज्य गुरुदेव मध्य प्रदेश के दौरे पर थे, उन्हें इलाहाबाद होते हुए जाना था। स्टेशन के लिये निकलते समय बोले, "ट्रेन तो देरी से है, इस बीच यूनिवर्सिटी पुस्तकालय हो लेते हैं।" पहले भी गुरुदेव पुस्तकों के लिये 2-3 बार इलाहाबाद पुस्तकालय आ चुके थे। यह सोचकर कि यदि देर हो जायेगी तो यूनिवर्सिटी से ही सीधे स्टेशन निकल जायेंगे। मैं, गुरुदेव का सामान आदि लेकर चलने लगा। गुरुजी बोले, "भई रामलाल! यहीं आकर जायेंगे? अभी आते हैं।" मैंने सामान रख दिया।

विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में पहुँचकर पूज्यवर ऐसे डूब गये कि उन्हें दीन-दुनिया का होश ही नहीं रहा। जैसे-जैसे ट्रेन के आने का समय समीप आ रहा था, मेरा मन घबरा रहा था। मैंने दो-तीन बार कहा कि गुरुजी! सामान भी लेना है और स्टेशन भी पहुँचना है। थोड़ी देर बाद गुरुजी बोले, "समय हो गया होगा। यह भी तो एक यज्ञ है। इसे बीच में छोड़कर नहीं चल सकते।" गुरुदेव पुस्तकें पढ़ने में पूरी तरह मगन थे। एक पुस्तक में लगभग 10 मिनट लगाते। वे पुस्तक पढ़ते व एक तरफ रख देते, हिन्दी, अंग्रेजी, प्राकृत, पाली, संस्कृत सभी भाषाओं की किताबें देख गये।

इसी बीच मेरे मित्र भटनागर जी गुरुदेव को लेकर स्टेशन जाने के लिए घर पहुँचे तो उन्हें पता चला कि गुरुजी और मैं दोनों साथ में ही हैं। उन्होंने अनुमान लगाया कि हम लोग स्टेशन ही गये होंगे, सो वे सीधे वहीं पहुँच गये। थोड़ी देर ढूँढा पर यह सोचकर कि कहीं बैठ गये होंगे, और वे छूट जायेंगे। भटनागर जी ने टिकिट लिया व चलती गाड़ी में बैठ गये।

निर्धारित कार्यक्रम में पूरा भाग लिया, लौटे तो बहुत खुश। कहने लगे कि न जाने कैसे गुरुदेव ने ट्रेन में हमें ढूँढ लिया और अगले स्टेशन पर ही हमारे पास आकर बैठ गये, पर आप नहीं मिले। उन्होंने बताया कार्यक्रम बहुत बढ़िया रहा। हम सीधे स्टेशन से ही आ रहे हैं, पर स्टेशन पर उतरने के बाद गुरुदेव दिखे ही नहीं! इसलिए सीधा आपके पास ही आ रहा हूँ। मुझे थोड़ा आश्चर्य हुआ कि वे क्या कह रहे हैं? गुरुदेव तो लाइब्रेरी से ट्रेन टाइम के निकल जाने के भी आधे घण्टे बाद मेरे साथ घर लौटे व चादर ओढ़कर सो गये। कार्यक्रम में तो वे गये ही नहीं थे। पिछले तीन-चार दिन से गुरुदेव तो हमारे घर पर ही थे। वे रोज इलाहाबाद विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी में किताबें पढ़ने जाते रहे थे। मैंने पूछा भी कि अब कार्यक्रम का क्या होगा? तब वे हँसकर टाल गये थे और बोले, "कार्यक्रम की व्यवस्था भी हो जायेगी।" मैंने भटनागर जी से कहा, "गुरुदेव तुम्हें दिखते भी कैसे, वे तो यहीं हैं। कार्यक्रम में तो वे गये ही नहीं थे।" भटनागर जी ने आश्चर्य मिश्रित स्वर में कहा, "क्या कह रहे हैं आप? मैं झूठ बोल रहा हूँ क्या? मैं, गुरुजी के साथ था। मैं तो यह सोच रहा था कि आप कैसे हैं, जो गुरुजी को अकेले भेजकर खुद घर पर रह गये?"

हम दोनों का वार्तालाप गुरुजी अन्दर लेटे-लेटे सुन रहे थे। उन्होंने हमें बुलाया और कहा, "क्या लड़कपन करते हो? दोनों की बात सच्ची है। मैं यहाँ भी था, वहाँ भी था। वहाँ रेल में भी भटनागर जी के साथ मैं ही था, यज्ञ में भी मैं ही था। तुम इस बात को गोपनीय ही रखना। यह मेरा स्वरूप मेरे महाप्रयाण के बाद ही लोगों को पता लगे, यह ध्यान रखना। समय आने पर ऐसी ढेरों बातें लोगों को पता चलेंगी, तब वे हमारे स्वरूप को पहचान पायेंगे।"

सौभाग्य ऊपर से नहीं टपकता, वरन् भीतर से उभरता है, जिसे पाने के लिए आत्म निरीक्षण के क्षेत्र में उतरकर अंतःकरण की असीम क्षमताओं को उत्थान के लिए उभारा जाता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बाच्चों में स्नेह-वात्सल्य लुटाते पूज्यवर

पूज्य गुरुदेव का व्यक्तित्व अत्यंत गंभीर जान पड़ता था परंतु जब वे बच्चों के बीच होते तो बच्चों के जैसे ही सरल बन जाते। प्रस्तुत हैं ऐसे कुछ प्रसंग-

ये जादू नहीं, सिद्धि है

गुरुजी ने हाथ की सफाई के ऊपर एक पुस्तक लिखी थी। गुरुजी के भानजे चंद्रशेखर ने उसका अभ्यास किया और बोले मामाजी ये सब जादू तो मैंने सीख लिये अब कोई नया सिखाओ।

गुरुजी ने कहा, अच्छा! एक जादू है मेरे पास। तुम मुझे सोते से कभी भी उठाना और टाईम पूछना। मैं बिना देखे ही केवल पलकें झपकाकर सही टाईम बता दूँगा। अब चन्द्रशेखर जब-तब गुरुजी को झकझोर कर जगा देता, और टाईम पूछता। गुरुजी तुरंत टाईम बता देते, जो सही ही होता।

एक दिन चन्द्रशेखर ने कहा, मामाजी मुझे भी ये जादू सिखा दो। तब गुरुजी ने कहा, ये जादू नहीं, सिद्धि है, जो लम्बे समय के अभ्यास से आती है। यह मेरे जीवन भर का अभ्यास है कि पलकों के भारीपन से ही मुझे समय का अन्दाजा हो जाता है।

एक-एक रुपया दिया

एक बार एक कार्यकर्ता अपनी बच्चियों के साथ गुरुजी से मिलने आये। उनके प्रणाम कर लेने के पश्चात् गुरुजी ने बच्चों से पूछा, इम्तहान हो गये? उनकी बच्चियों ने कहा, जी गुरुजी। तो गुरुजी ने एक-एक से पूछा, ''तू किस डिवीजन में पास हुई और तू किस डिवीजन में पास हुई।'' सबने बताया, ''गुरुजी, फर्स्ट डिवीजन।'' गुरुजी बोले, ''बहुत अच्छा!'' फिर अपनी कुर्सी से उठे, अल्मारी खोली और एक-एक रुपया तीनों बच्चियों को दिया। फिर मज़ाक करते हुए बोले, ''अच्छा हुआ फर्स्ट डिवीजन पास हुए, कहीं सेकण्ड डिवीजन पास होते तो दो-दो रुपये देने पड़ते।''

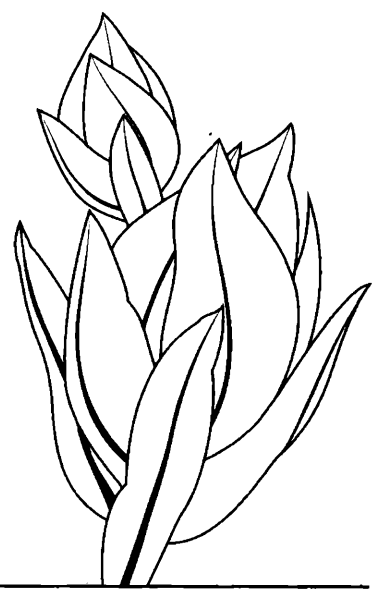
मच्छर आये तो मुझे बताना

जब कभी कोई गुरुजी से मिलने आते तो वे उनसे बात करते-करते बच्चों से भी बात-चीत करते रहते। बच्चे उनसे इतने घुल-मिल जाते थे कि एक दिन जब वे परिजनों के साथ चर्चा कर रहे थे तो एक छोटी सी बच्ची आई और अपना हाथ आगे करके कहने लगी, ''गुरुजी, गुरुजी, देखो मुझे मच्छर ने काट लिया।'' गुरुजी ने उसके हाथ को सहलाया और बोले, ''ला, मैं ठीक कर दूँ। कैसे काट लिया? अबकी बार मच्छर आये तो मुझे बताना, मैं उसे ठीक कर दूँगा।''

अंतरिक्ष विज्ञान की जानकारी

जब गुरुदेव आँवलखेड़ा व मथुरा में थे तो अपने पास बच्चों को बुलाकर तारों में से एक-एक की पहचान करवाते। उन सभी ग्रह-गोलकों, नक्षत्रों के बारे में विस्तार से समझाते। बालसुलभ

छोटी-छोटी, अटपटी, प्रेम में लिपटीं, रस से सराबोर गुरुजी का शिशुवत् स्वरूप दर्शाती कथाएँ।



प्रेम ही एकमात्र ऐसी भाव-संवेदना है, जिससे स्वजन-सहचरों से लेकर प्रकृति के जीव-जंतुओं और वनस्पतियों तक को वश में किया जा सकता है और उन्हें सुधारा, सँवारा जा सकता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

जिज्ञासाओं का वर्णन करते हुए बताते- ''इन नक्षत्रों व पृथ्वी की स्थिति में क्या अन्तर है। चन्द्रमा कैसे बढ़ते-बढ़ते पूर्णिमा का चन्द्रमा व घटते-घटते अमावस्या बन जाता है, गुरुत्वाकर्षण शक्ति क्या है व किस आधार पर सितारों से ढकी यह चादर ऊपर लगी हुई, हमारे ऊपर नहीं गिरती? बिजली पहले चमकती है कि गरजती है?'' जिन सौभाग्यशालियों को यह अवसर मिला है, वे बताते हैं कि विज्ञान की विशद जानकारियाँ, जो उनने अध्ययन से बढ़ाई थीं, उनसे उन्हें किस तरह लाभान्वित कर उनकी रुचि विज्ञान की ओर मोड़ दी। अंतरिक्ष विज्ञान की उन्हें उतनी ही विस्तृत जानकारी थी, जितनी कि उस विषय के किसी विशेषज्ञ को हो सकती है।

गुरुजी का बच्चा गुरुजी

डॉ. दत्ता जी बताते हैं कि उनका छोटा बेटा सिद्धार्थ 3-4 वर्ष का था। उन दिनों हम लोग अशोक नगर में रहते थे। गुरुजी अशोकनगर आये हुये थे। लोगों ने उन्हें बहुत सी फूल मालायें पहनाई थीं। गुरुजी फूलमाला रखकर अपने स्थान से उठे तो सिद्धार्थ ने वह सब अपने गले में पहन लीं। इतने में पंडित लीलापत शर्मा जी वहाँ से निकले। वह बच्चे से हिले-मिले हुए थे। सिद्धार्थ ने उन्हें बुलाया और कहा,''मुझे प्रणाम करो, मैं गुरुजी हूँ।'' लीलापत शर्मा जी भी उसे ''गुरुजी प्रणाम! गुरुजी प्रणाम!'' कहते हुए गोद में उठा कर गुरुजी के पास ले गये और बोले, यह कहता है, ''मैं गुरुजी हूँ।'' गुरुजी ने उसे गोद में उठाया और बोले, ''ठीक तो कहता है यह अमलकुमार का बेटा। शेर का बच्चा शेर। बकरी का बच्चा बकरी। गुरुजी का बच्चा गुरुजी।'' और ठहाका लगाकर हँस दिये। हम सब भी जो वहाँ खड़े थे, हँसने लगे। पर उनकी इस बात के पीछे गहरी प्रेरणा भी छिपी थी, जिसे हम सबने हृदयंगम भी किया। वे अपने प्रवचनों में भी अक्सर कहते थे, ''बेटा! शेर का बच्चा शेर होता है। तुम शेर के बच्चे बनना। बकरी के नहीं।''

तांबे का नया सिक्का

नागपुर के कार्यकर्ता श्री वसंत गोखले बताते हैं कि मैं पहली बार 1956 में मथुरा ''तपोभूमि'' गया। तब मेरी उम्र करीब 5 साल की थी। उस समय तपोभूमि के प्रमुख द्वार के अंदर कार्यालय के सामने की जगह पर खुला प्रांगण हुआ करता था। वहाँ बाहर एक टंकी में गाय, बैल, घोड़े, आदि चौपाया प्राणियों के लिये पीने का पानी और अंदर की ओर चिड़िया, तोते, कबूतर और मोर जैसे पक्षियों के लिये दाने और पानी की व्यवस्था थी। उसी प्रांगण की बैठक में शाम को आरती के बाद पूज्य गुरुदेव कभी-कभी हम बच्चों को महापुरुषों की छोटी-छोटी प्रेरणाप्रद कहानियाँ सुनाया करते थे।

एक दिन आरती के चढ़ावे में मुझे तांबे का एक पैसे का नया चमचमाता सिक्का दिखाई दिया। मैंने पुजारीजी से सिक्का बदलकर नया माँगा, पर उनका ध्यान न होने से उन्होंने वह सिक्का भी दान पेटी में डाल दिया। मैं दयनीय नेत्रों से उनकी तरफ देखता रह गया। घूमकर जाने को हुआ तो पास से जाते हुए गुरुदेव ने मुझसे पूछा क्या हुआ?

मैंने अपनी बात बताई तो वे ''हूँऽऽ'' कहते हुए आगे बढ़ गये। हम रोज की तरह प्रांगण में पक्षियों को दाने चुगाते हुए खेलने लगे। कुछ समय पश्चात् गुरुदेव तीन-चार लोगों के साथ आकर प्रांगण की बैठक में बैठ गये। उनको विदाकर गुरुदेव ने हम लोगों को भी कहानी सुनाई। फिर उठकर जाने को हुए पर मेरी निगाहें तो अभी भी उनसे आस लगाये हुए थीं। उन्होंने पास में रखी अपनी नोट बुक उठाते हुए मेरी ओर देखा और बोले ''आजा'' मैं दौड़कर उनके पास चला गया। उन्होंने सिक्का माँगते हुए मुझे पास में पड़ी रेत उठाकर देने को कहा, मैंने रेत उठाकर उनके हाथ में दे दी।

गुरुदेव ने सिक्का रेत से घिसा और नया चमचमाता सा कर दिया, फिर उसे मुझे देकर हँसते हुए पूछने लगे, ''हो गया ना नया?'' मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा, मैं खुशी से उछलकर उनके हाथों को पकड़कर झूल गया। उन्होंने भी मुझे प्यार से गोद में भर लिया। आज भी गुरुवर के साथ का वह पल याद आते ही मैं अपने अंत:करण में अजीब सी सुखानुभूति का अनुभव करता हूँ।

वही धन फलता-फूलता है, जो परिश्रम और ईमानदारी से कमाया जाता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सृजन सेनानियों से गुरुदेव की अपेक्षा

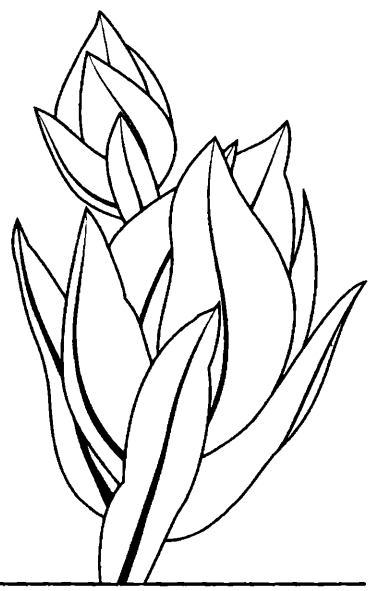
तुम सब के बीच आने का हमारा एक ही उद्देश्य है कि हम समाज को सही व्यक्ति देकर जायें। सही व्यक्ति होते तो यह सारा समाज नया हो जाता। पचास आदमी गाँधी के, बुद्ध के साथ थे। वे युग परिवर्तन कर सके; क्योंकि उनके पास काम के इन्सान थे। विवेकानन्द के साथ निवेदिता थी और कुछ काम के व्यक्ति थे। आज जहाँ देखो, वहीं जानवर नजर आते हैं। यदि काम के इंसान होते तो जमीन पलट दी गयी होती। तुम सब यहाँ आये हो तो काम के आदमी बन जाओ। हमने जीवन भर व्यक्ति के मर्म को छुआ है व अपना ब्राह्मण स्वरूप खोल कर रख दिया। नतीजा यह है कि हमारे साथ अनगिनत आदमी जुड़े। तुम यदि सही अर्थों में जुड़े तो अपना भीतर वाला हिस्सा भी लोक सेवी बना लो व समाज के लिए कुछ कर डालने का संकल्प ले डालो।

यहाँ शान्तिकुञ्ज में न्यूनतम पाँच सौ सशक्त कार्यकत्ताओं की, सही मायने में आदमियों की जरूरत है। आदमियों के लिए जमीन प्यासी है व आकाश प्यासा है। यदि पूर्ति हो जाए तो हमारा सारा सपना पूरा हो जाए। हमने ठहरने, खाने-पीने की सारी व्यवस्था कर दी है। यहाँ आने वाला हर व्यक्ति अध्यात्म के, समाज सेवा के रंग में रंग कर जाये, यही हमारा उद्देश्य है। यह काम अकेले संभव नहीं है। तुम्हारा सहयोग इसके लिए हमें चाहिए। इसके लिए हमें तुमसे कुछ नहीं, व्यक्तित्व की साधना व तुम्हारा निष्काम समर्पण चाहिए।

गाँधीजी ने अपने साथ में रहने वाले सभी व्यक्तियों का व्यक्तित्व बना दिया था। वे जो पूरी तरह जुड़े, धन्य हो गये। श्रेय-सौभाग्य के अधिकारी बने। तुम भी सही अर्थों में जुड़ जाओ तो तुम सबका व्यक्तित्व बने। सभी सँवर जाये। आज से 63 वर्ष पूर्व हमने वसंत पर्व पर अपने भगवान् से दीक्षा ली थी। यह कहा था कि "अब मैं समाप्त होता हूँ" व "आप" जीवित होते हैं। आपकी इच्छा मुख्य, मेरी इच्छा गौण। समर्पण किया था हमने। अनगिनत उसकी उपलब्धियाँ हैं। हमारा कर्तव्य हमारी मार्गदर्शक सत्ता ने शानदार बना दिया। तुम सबका भी ऐसा ही बन जाए, यदि तुम मन व आत्मा से समर्पण कर दो। यह हम इसलिए कह रहे है कि कहीं भावावेश में घर छोड़ कर आए हो व मन में तुम्हारे दुःख-क्लेश बना रहे, इसके स्थान पर एक ही बार में सारी स्थिति स्पष्ट हो जाए, कहीं के तो बन सको तुम।

हमने जो समर्पण किया, बदले में हमारी मार्गदर्शक सत्ता ने हमें स्वयं को सौंप दिया। हमारे अंदर प्रभावोत्पादकता भर दी। वाणी में, लेखनी में, व्यक्तित्व में, दैनन्दिन आचरण में। यही तुम्हारे अन्दर भी आ जाएगी। भगवान् के हम कोई

एक सद्य शिष्य कैसे बना जाता है? सृजन सेनानियों से युग नायक की क्या अपेक्षा हो सकती है? इसका प्रत्यक्ष मार्गदर्शन है, इन पंक्तियों में।



सच्ची उपासना का प्रतिफल यही है कि मनुष्य अधिकाधिक आदर्शवादी एवं उत्कृष्ट जीवन जी सके।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

संबंधी थोड़े ही है, जो उनने हमारे साथ कोई विशेष पक्षपात किया हो। तब तुम्हें भी वह क्यों नहीं वही सब मिल सकता, जो हमें मिला। बस कसौटी एक ही है- "अहं" का गलना-विसर्जन, समर्पण। जब तक अंहकार जिन्दा है, आदमी दो कौड़ी का है। जिस दिन यह मिट जायेगा, आदमी बेश-कीमती हो जायेगा। "अहं" ही है, जिसके कारण न सिद्धान्त, न सेवा, न आदर्श आ पाते हैं। व्यक्ति लोक सेवा के क्षेत्र में प्रवेश करके भी उच्छृंखल बना रहता है। तुम्हें ईसा मसीह की बात सुनाता हूँ। उनके शिष्य ने उनसे कहा कि हम भी आपके समान महान्-बड़ा बनना चाहते हैं, हम क्या करें ? तो उनने एक ही जवाब दिया। बच्चों! जीवन में मैं तिनका बना, विनम्र बना, गला तथा इसलिए इतने बड़े वृक्ष के रूप में विकसित हो सका। अपनी इच्छा समाप्त कर दी तो सही अर्थों में बड़े बन गए, पहले तुम सब भी तिनके के समान छोटे बनो। तुम वैसा बन गए तो पेड़ भी बन सकोगे, इसमें कोई सन्देह नहीं है। वास्तव में सेन्टपॉल भी सच्चे ईसाई थे व ईसा के बाद विकसित हुए। उनकी पीढ़ी के दूसरे महापुरुष विनम्र सेवा-भावना, निरहंकारिता के कारण ही बने।

व्यक्ति को पहचानने की एक ही कसौटी है कि उसकी वाणी घटिया है या बढ़िया। व्याख्यान कला अलग हैं मंच पर तो सभी शानदार मालूम पड़ते हैं। प्रत्यक्ष सम्पर्क में आते ही व्यक्ति नंगा हो जाता है। जो प्राण वाणी में है वही परस्पर चर्चा व्यवहार में परिलक्षित होता है। वाणी ही व्यक्ति का स्तर बताती है। व्यक्तित्व को बनाने के लिए वाणी में विनम्रता जरूरी है, प्याज को खाने वाले के मुँह से जिस प्रकार गंध आती है, पायरिया वाले मसूड़े के मुँह से जिस प्रकार बदबू आती है। ठीक इसी प्रकार मुँह से वाणी निकलते ही अशिष्टता छिप नहीं सकती। यह वाणी से पता चल ही जाती है। अनगढ़ता मिटाओ, दूसरों का सम्मान करना सीखो।

तुम्हें प्रशंसा करना आता ही नहीं मात्र निंदा करना आता है। व्यक्ति के अच्छे गुण देखो, उनका सम्मान करना सीखो। तुरंत तुम्हें परिणाम मिलना चालू हो जायेंगे। वाणी की विनम्रता का अर्थ चाटुकारिता नहीं है। फिर समझो इस बात का कतई मतलब नहीं है, चापलूसी का वाणी की मिठास से। दोनों नितान्त भिन्न चीजें है। दूसरों की अच्छाइयों की तारीफ करना मीठी वाणी बोलना एक ऐसा सद्गुण है, जो व्यक्ति को चुम्बक की तरह खींचता व अपना बनाता है। दूसरे सभी तुम्हारे अपने बन जायेंगे, यदि तुम यह गुण अपने अंदर पैदा कर लो। इसके लिए अन्तः के अहंकार को गलाओ।

अपनी इच्छा, बड़प्पन, कामना, स्वाभिमान को गलाने का नाम समर्पण है जिसे तुमसे करने को मैंने कहा है व इसकी अनन्त फलश्रुतियाँ सुनाई है। अपनी इमेज विनम्र से विनम्र बनाओ मैनेजर की, इन्चार्ज की, बॉस की नहीं, बल्कि स्वयं सेवक की जो स्वयं सेवक जितना बड़ा है वह उतना ही विनम्र है। उतना ही महान बनने की बीजांकुर उसमें है। तुम सबमें वे मौजूद है। अहं की टकराहट बंद होते ही वे विकसित होना आरंभ हो जायेंगे। तुमने हम से दीक्षा तो ली है पर यह अपने अंदर टटोलो कि तुमने समर्पण किया कि नहीं। यही पर्यवेक्षण अपने अंतरंग का करो। हमारी एक ही महत्त्वाकांक्षा है कि हम सहस्रभुजा वाले सहस्रशीर्षा पुरुष बनना चाहते है। तुम सब हमारी भुजा बन जाओ हमारे अंक बन जाओ यह हमारे मन की बात है। गुरु-शिष्य एक-दूसरे से अपने मन की बात कहकर हल्के हो जाते हैं।

हमने अपने मन की बात तुमसे कह दी। अब तुम पर निर्भर है कि तुम कितना बनते हो। पति-पत्नी की तरह गुरु और शिष्य की आत्मा में भी परस्पर ब्याह होता है। दोनों एक दूसरे से घुल-मिलकर एक हो जाते हैं। समर्पण का अर्थ है, अपना अस्तित्व मिटाकर हमारे साथ मिला दो व अपनी क्षुद्र महत्त्वाकांक्षाओं को विलीन कर दो। जिसका अंह जिन्दा है, वह वेश्या है। जिसका अहं मिट गया, वह पतिव्रता है। देखना है कि हमारी भुजा, आँख, मस्तिष्क बनने के लिए तुम कितना अपने अहं को गला पाते हो। इसके लिए निरहंकारी बनो। स्वाभिमानी तो होना चाहिए पर निरहंकारी का प्रथम चिन्ह है- वाणी की मिठास।

वाणी व्यक्ति का प्रमुख हथियार है। सामने वाले पर वार करना हो तो तलवार नहीं, कलाई नहीं, हिम्मत की पूछ

प्रतिशोध की भावना अपने आपको ही मलिन, दुष्ट और दुराचारी बना देती है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

होती है। हिम्मत न हो तो हाथ में तलवार भी बेकार है। यदि वाणी सही है तो तुम्हारा व्यक्तित्व जीवन्त हो जायेगा बोलने लगेगा व सामने वाले को अपना बना लेगा। अपनी विनम्रता, दूसरों का सम्मान व बोलने में मिठास यही व्यक्तित्व के प्रमुख हथियार है। इनका सही उपयोग करोगे तो व्यक्तित्व वजनदार बनेगा।

तुम्हीं को कुम्हार व तुम्हीं को चाक बनना है। हमने तो अनगढ़ सोना चाँदी के ढेरों लाकर रख दिए हैं तुम्ही को साँचा बनाकर सही सिक्के ढालना है। साँचा सही होगा तो सिक्के भी ठीक आकार के बनेंगे। आज दुनिया में पार्टियाँ तो बहुत हैं पर किसी के पास कार्यकर्त्ता नहीं हैं। लेबर सबके पास हैं, पर समर्पित कार्यकर्त्ता जो साँचा बनता है व कई को बना देता है। वह कहीं भी नहीं है। हमारी यह दिली ख्वाहिश है कि अपने पीछे कार्यकर्त्ता छोड़कर जाएँ। इन सभी को सही अर्थों में डाई एक साँचा बनना पड़ेगा तथा वही सबसे मुश्किल काम है। रॉ मटेरियल तो ढेरों कहीं भी मिल सकता है, पर डाई कहीं-कहीं मिल पाती है। श्रेष्ठ कार्यकर्त्ता श्रेष्ठतम डाई बनता है। तुम सबसे यही अपेक्षा है कि अपने गुरु की तरह एक श्रेष्ठ साँचा बनोगे। तुम से दो और अपेक्षाएँ हैं। एक श्रम का सम्मान। यह भौतिक जगत् का देवता है। मोती, हीरे, श्रम से ही निकलते हैं। दूसरी अपेक्षा यह कि सेवा बुद्धि के विकास के लिए सहकारिता का अभ्यास। संगठन शक्ति सहकारिता से ही पहले भी बढ़ी है और आगे भी इसी से बढ़ेगी।

हमारे राष्ट्र का दुर्भाग्य यह है कि श्रम की महत्ता हमने समझी नहीं। श्रम का माद्दा सबसे असीम है। हमने कभी उसका मूल्यांकन किया ही नही। हमारा जीवन निरंतर श्रम का ही परिणाम है। बीस-बीस घण्टे तन्मयतापूर्वक श्रम हमने किया है। तुम भी कभी श्रम की उपेक्षा मत करना। मालिक बारह घण्टे काम करता है नौकर आठ घण्टे तथा चोर चार घण्टे काम करता है। तुम सब अपने आप से पूछो कि हम तीनों में से क्या हैं। जीभ चलाने के साथ कठोर परिश्रम करो अपनी योग्यताएँ बढ़ाओ व निरंतर प्रगति पथ पर बढ़ते जाओ।

दूसरी बात सहकारिता की। इसी को पुण्य-परमार्थ, सेवा-उदारता कहते हैं। अपना मन, हमारे मन से मिलाओ, साथ मिल-जुलकर रहना, अपना सुख बाँटना, दुःख बँटाना सीखो। यदि सही अर्थों में ब्राह्मणत्व साधना करोगे तो पहले ब्राह्मण बनोगे। साधु अपने आप बन जाओगे। पीले कपड़े पहनते हो कि नहीं, पर मन को पीला कर लो। सेवा-बुद्धि का कार्य दूसरों के प्रति पीड़ा का, भावसंवेदना का विकास करना व साधुता को जगाना है। आज हमें तुमसे कुछ अपेक्षाएँ है। आशा है कि तुम इन्हें अवश्य पूरा करोगे व हेमाद्रि संकल्प के साथ ही गुरु की भुजा, आँख व पैर बन जाने का संकल्प लोगे। यही आत्मा की हमारी वाणी है जो तुम से कुछ कराना चाहती है। इतिहास में तुम्हें अमर देखना चाहती है। देखना है कितना तुम हमारी बात को हृदय में उतार पाते हो।

मेरठ के एक कार्यकर्ता परम पूज्य गुरुदेव के पास आये, बोले, गुरुजी मेरी कन्या 28 साल की हो गयी है, मुझे उसकी बहुत चिन्ता सताती है। जो भी सम्बन्ध आते हैं, वे किसी भी प्रकार बन नहीं पाते। पूज्यवर ने उनकी समस्या को गंभीरता से लिया, और बोले, बेटा तुम्हारी कन्या का ख्याल मुझे भी है। पर मैं देख रहा था, कि तू चिन्ता करता है, तो मैं क्यों करूँ? तू भी चिन्ता करे, मैं भी चिन्ता करूँ, ये नहीं चलेगा। या तो तू ही चिन्ता कर, या मैं चिन्ता करूँ। बस पूज्य गुरुदेव की बात हृदय में लग गयी। उस दिन उन्होंने अपनी कन्या की चिन्ता पूज्यवर के चरणों में समर्पित कर दी, तो सात दिन में ही एक संस्कारित परिवार उनके घर आया, और उनकी कन्या को लेने के लिए आग्रह करने लगे। कन्या की शादी जल्द ही हो गयी, और वह अपने ससुराल में सुखी भी है। गुरु और इष्ट का सहारा ही इसीलिए लिया जाता है, कि व्यक्ति अपनी चिन्ता, भय, शंका एवं द्वन्द्व को उनके चरणों में अर्पित कर अपने मन को हल्का रखा करे।

उत्थान का आधार है - सही दिशा का निर्धारण और सज्जनता भरा आचरण।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आध्यात्मिक समाजवाद का मॉडल 'शान्तिकुंज'

शान्तिकुञ्ज इक्कीसवीं सदी का केन्द्र है, नवयुग की गंगोत्री है। महाकाल का घोंसला है, क्रान्तिकुञ्ज है। पूज्यवर के शब्दों में यह उनका स्थूल शरीर है। उनकी चेतना इसके कण-कण में निवास करती है।

शान्तिकुंज ने इक्कीसवीं सदी के उपयुक्त उज्ज्वल भविष्य की संरचना के स्वरूप के अनुसार अपने आपको छोटे मॉडल के रूप में प्रस्तुत किया है। यहाँ पर भावी आध्यात्मिक समाज को जीवन्त और क्रियाशील देखा जा सकता है।

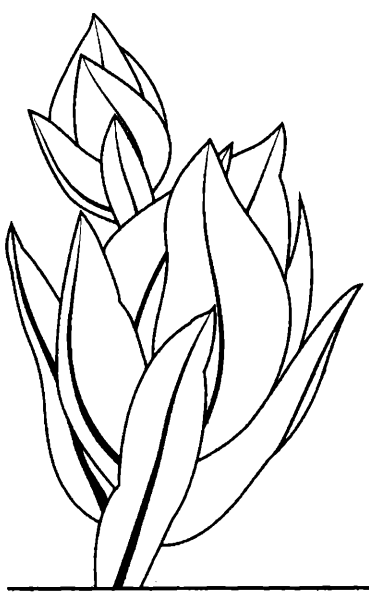
गंगा की गोद, हिमालय की छाया में बने-बसे सप्तऋषि क्षेत्र हरिद्वार में स्थित शान्तिकुंज का आचार्य जी के द्वारा प्रवर्तित आध्यात्मिक समाजवाद की जीवन रीति को मूर्त करना ही उद्देश्य है।

शान्तिकुंज में निवास करने वाले व्यक्तियों का सिर्फ एक ही वर्ण है ब्राह्मण। सभी के जीवन में नवयुग के समाज के आध्यात्मिक आधार गायत्री और यज्ञ का अविच्छिन्न स्थान है। ये सभी 'मानव मात्र एक समान' 'नर और नारी एक समान' सूत्र में विश्वास करने वाले हैं।

सभी का उनकी वैयक्तिक योग्यता, क्षमता की अभिवृद्धि के लिए न केवल पूरी छूट है, बल्कि यहाँ की समाज व्यवस्था इसके लिए उन्हें प्रोत्साहित करती और यथायोग्य सरंजाम जुटाती रहती है। ये व्यक्ति भी समाज हित के लिए स्वयं का जीवन तक उत्सर्ग करने के लिए तत्पर देखे जाते हैं। व्यक्ति और समाज के मधुर संबंधों के उत्कर्ष को यहाँ सहज चरितार्थ होते देखा जा सकता है। आध्यात्मिक समाज, व्यवस्था के सभी पक्ष एवं सभी विवेकशील परम्पराएँ यहाँ अपने विकसित रूप में सक्रिय हैं।

यहाँ की अर्थ व्यवस्था का सूत्र है - योग्यता के अनुसार कार्य और आवश्यकता के अनुसार खर्च-सम्पदा पर तो किसी व्यक्ति का स्वामित्व है और न ही किसी को उत्तराधिकारी की चिन्ता। सभी को शान्तिकुंज की ओर से औसत भारतीय स्तर का निर्वाह खर्च मिलता है। पारस्परिक प्यार-स्नेह में कहीं कोई कमी नहीं। एकता-समता का यह अभूतपूर्व संगम यहाँ की अपनी विशेषता है।

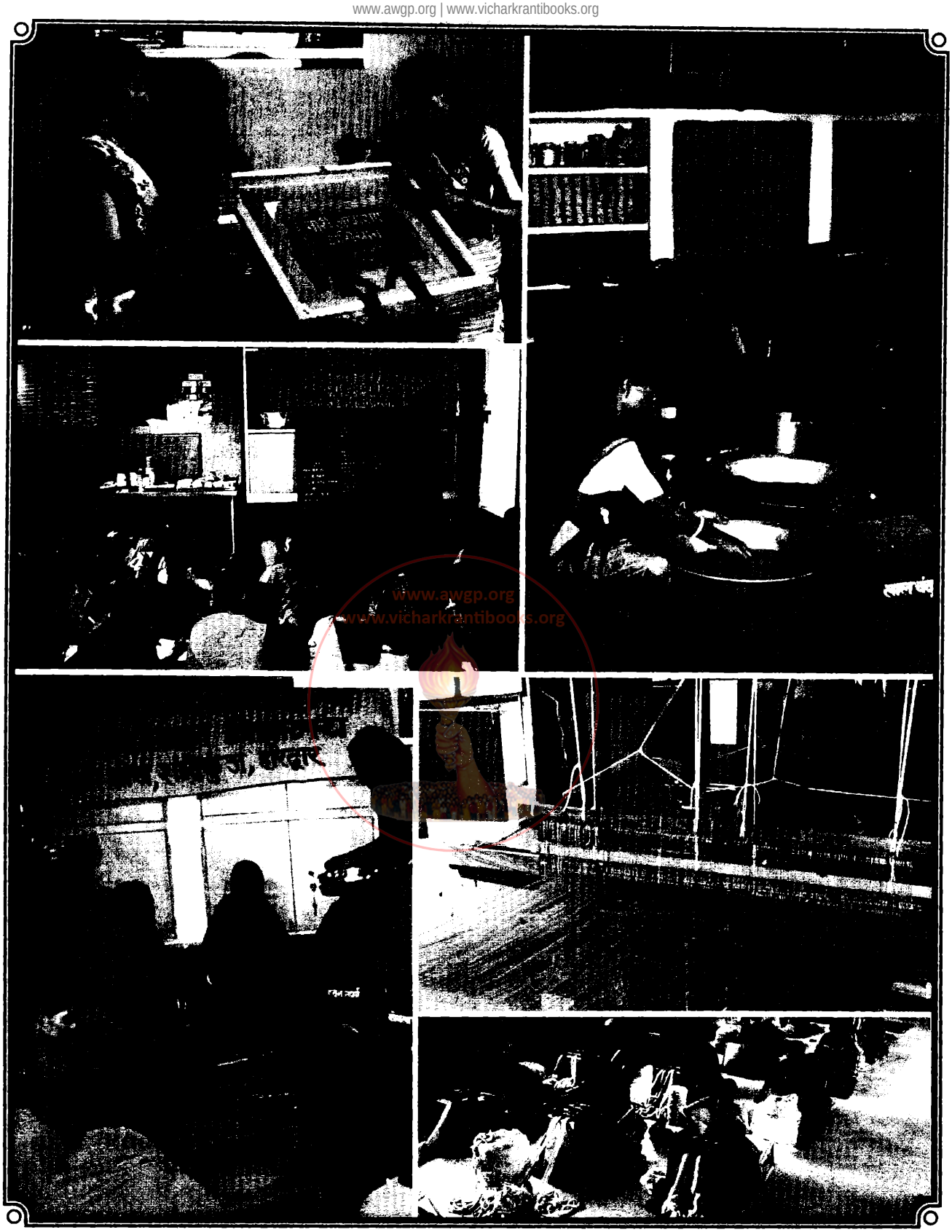
उद्धत अंहकार अथवा हीन भावना कहीं नजर नहीं आती। शान्तिकुंज की सामूहिक अर्थव्यवस्था का मूल स्त्रोत विश्व भर में फैले गायत्री परिवार के करोड़ों सदस्यों द्वारा एक रुपए रोज के रूप में दी जाने वाली अनुदान राशि है। आचार्य जी का कहना था- कि समाजसेवी को पूर्ण रूप से समाज पर ही निर्भर रहना चाहिए। क्योंकि परिग्रह का अर्थ है- स्वयं पर अविश्वास, समाज पर अविश्वास एवं ईश्वर पर अविश्वास। इस महत्त्वपूर्ण सूत्र को यहाँ प्रतिपादित होते देखा जा सकता है। ◈



सद्गुणों के प्रति निष्ठावान् होने से सम्मान मिलता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



सप्तसूत्री कार्यक्रम - नारी स्वावलम्बन : एक महत्त्वपूर्ण अभियान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



नारी के भिन्न-भिन्न रूप : सशक्त समर्थ नारी २१वीं सदी की

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



सप्तसूत्री कार्यक्रम - नशा नाश की जड़ है, युवाओ! इससे दूर रहो

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



स्वच्छता, श्रमदान, हरीतिमा विस्तार आंदोलन

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



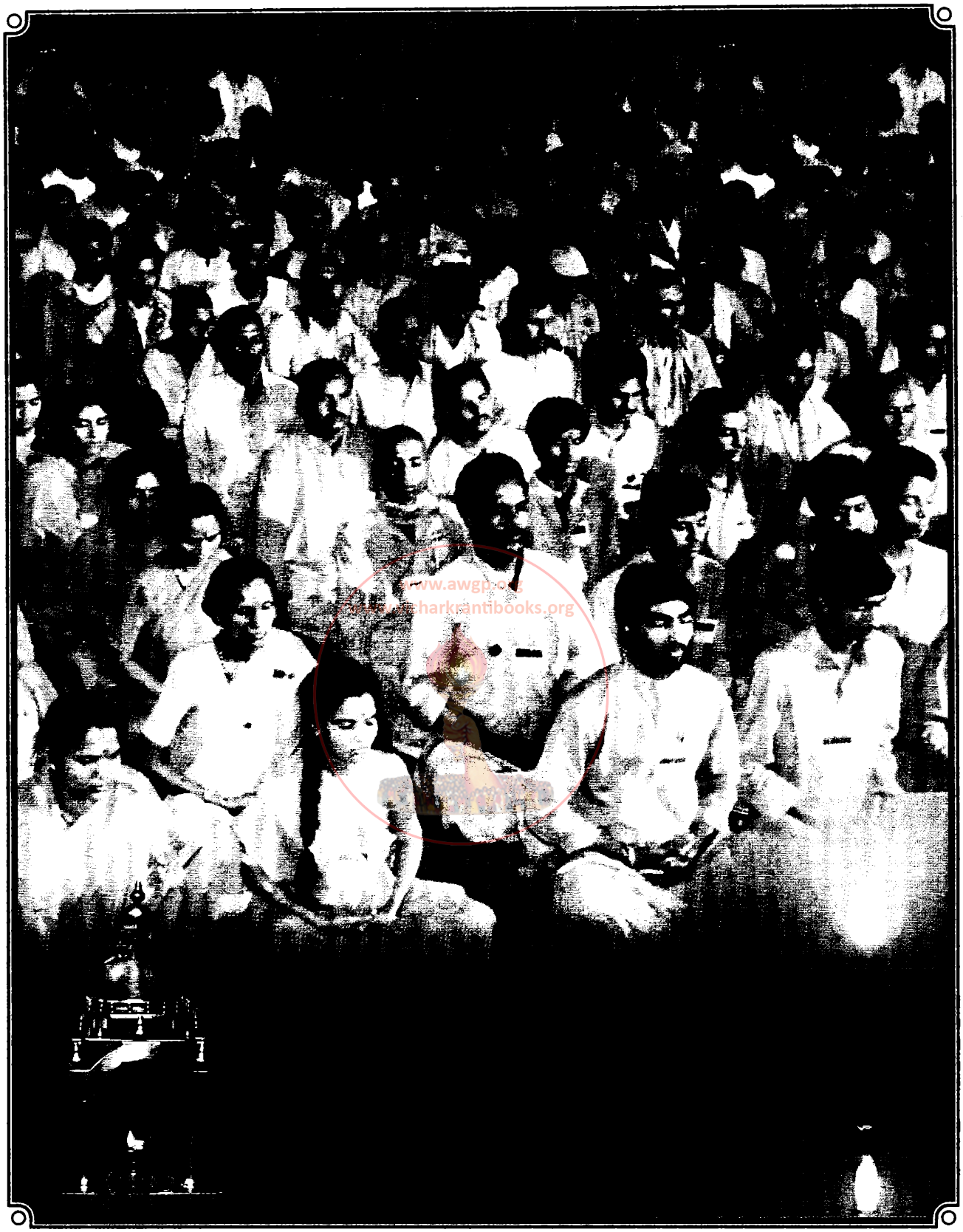
पर्यावरण जागृति अभियान हो माँ गंगा निर्मल अविरल, बहे भागीरथी कलकल

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



एक करोड़ वृक्षों के आरोपण का विलक्षण वृक्ष गंगा अभियान

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



अखण्ड दीपक साधना की क्रान्ति : सबके लिए उज्ज्वल भविष्य : सबके लिए सद्‌बुद्धि ध्यान करने विश्वविद्यालय के बच्चे

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org





गुजरात के भूकम्प (2001) में राहत कार्य : आपदा प्रबंधन

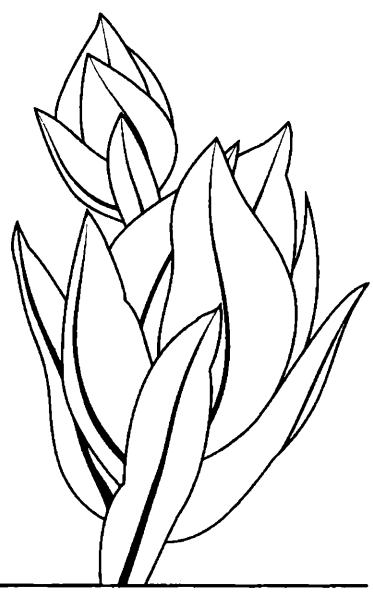
Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सफल संचालिका परम वंदनीया माताजी

अक्टूबर, सन् 1959 की अखण्ड ज्योति पत्रिका के पृष्ठ 4 पर एक लेख छपा था 'अखण्ड ज्योति के उत्तरदायित्वों में परिवर्तन' लेखिका के स्थान पर लिखा था भगवती देवी शर्मा-धर्म पत्नी पं. श्रीराम शर्मा आचार्य। लेख का शीर्षक पढ़कर सब चौंके कि अकस्मात् यह परिवर्तन क्यों ? सम्पादक के रूप में तो हम आचार्य जी को जानते आये हैं ? उनने अपना नाम या दायित्व क्यों माता जी को सौंप दिया, क्या वे अब हमें पत्रों-पत्रिकाओं-स्थूल दर्शनों के माध्यम से नहीं मिलेंगे ? तरह-तरह की जिज्ञासाएँ सभी के मन में थीं।

माताजी ने बड़े सरल भाव से उस लेख में लिखा था, अखण्ड ज्योति के इस अंक पर सम्पादक के स्थान पर मेरा नाम पढ़कर पाठकों को आश्चर्य होगा। काफी दिन हो गये परिवार के परिजनों की भोजन व्यवस्था का कार्य मेरे जिम्मे है, वह कार्य मेरे स्वभाव का एक अंग बन गया है। परिवार के परिजनों, आगन्तुक अतिथियों की आये दिन बड़ी संख्या देखकर मुझे भोजन संबंधी अधिक कार्यभार की वृद्धि से परेशानी होना तो दूर उल्टे दूने आनन्द की अनुभूति होती है। बहुत दिनों से मेरी यही कार्यशैली रही है। अब उस कार्य से भिन्न अखण्ड ज्योति के सम्पादन के कार्य में भी मुझे संलग्न देखकर पाठकों को निश्चय ही आश्चर्य होगा। आगे पाठकों को हुए असमंजस का समाधान भी था। मैंने अपने इस छोटे से जीवन 1943 से 1959 में ऐसी अगणित घटनाएँ देखी हैं, जिनमें उनके आशीर्वाद को पाकर तुच्छ व्यक्ति भी महान् कार्य सम्पन्न कर सके हैं। उसी बलबूते पर मेरा संकोच शान्त हो जाता है और अखण्ड ज्योति की गुरुतम जिम्मेदारी को अपने कंधे पर लेने का साहस किसी प्रकार समेट पा रही हूँ। उन्हें अब फिर साधना क्षेत्र में लौटना है। अखण्ड ज्योति का यह सम्पादन-परिवर्तन भी इसी योजना का एक अंग है। पूरी बात तो उनने अभी स्पष्ट नहीं की है, पर मालूम होता है कि किन्हीं विशेष स्थानों पर किन्हीं विशेष आत्माओं के सान्निध्य में मथुरा से बहुत दूर रहने की उनकी योजना है। वे राष्ट्र के लिये एक विशेष शक्ति का आविर्भाव करने के लिए कुछ विशेष साधनात्मक कार्यक्रम बना रहे हैं।

अखण्ड ज्योति का यह सम्पादकीय परिवर्तन भी उसी का एक पूर्व भाग माना जा सकता है। वस्तुत: परम वंदनीया माताजी के कंधों पर जो जिम्मेदारी मात्र बत्तीस वर्ष की आयु में ही जिन विशिष्ट उद्देश्यों के लिए पूज्यवर ने डाली थी, वह गायत्री परिवार की जीवन यात्रा में एक नया मोड़ था। वे परख रहे थे कि उनकी जीवन संगिनी- शिष्या-



ईश्वर की इच्छा के अनुरूप हम अपनी इच्छा मोड़ लें, यही ईश्वर के प्रति सच्चा समर्पण है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

समर्पित साधिका उनकी आगामी हिमालय प्रवास की अवधि में, जहाँ वे कठोर तप कर ऋषि सत्ताओं के सान्निध्य में प्रचण्ड ऊर्जा उत्पादन हेतु जा रहे थे- वेदों के अतिरिक्त पुराण-ब्राह्मण-उपनिषद्-आरण्यक सहित समग्र आर्ष ग्रन्थों के भाष्य का दायित्व भी पूरा करने को संकल्पित हो प्रस्थान कर रहे थे।

परिवार की अभिभाविका संरक्षिका का दायित्व भी सम्भाल सकेंगी या नहीं। कुल चौबीस माह की अवधि तक यह परीक्षाक्रम चला। पूज्यवर गुरुदेव वापस हिमालय प्रवास से लौटे। इस बीच दुर्गम हिमालय से जहाँ देवता- ऋषि आत्माएँ सतत विश्व कल्याण के निमित्त तप करती रहती हैं- हिमालय के हृदय यमुनोत्री से लेकर नन्दादेवी के तप:पूत ऊर्जा पुँज क्षेत्र से एक साधक की डायरी के कुछ पृष्ठ भी लिख- लिखकर भेजते रहे, जो अखण्ड ज्योति में छपे। अखण्ड दीप इसी बीच जलता रहा व वंदनीया माताजी की परीक्षा लेता रहा। पूज्य गुरुदेव ने आते ही पुन: संपादन क्रम अक्टूबर 1961 से सम्भाल लिया और साधकों के मार्गदर्शन के निमित्त युग निर्माण योजना एवं सत्संकल्परूपी घोषणा पत्र द्वारा मिशन को एक नया मोड़ दिया।

सितम्बर 1961 के अखण्ड ज्योति अंक के अंतिम दो पृष्ठों 38, 39 पर बड़ी विनम्रतापूर्वक उनने लिखा कि उनके दुर्बल कंधों ने गुरुदेव की अज्ञातवास की अवधि में जो जिम्मेदारियाँ सम्भाली, उनमें कई त्रुटियाँ रही होंगी, जिसके लिए वे क्षमाप्रार्थी हैं। उनने लिखा ''सदा की भाँति अब पूज्य आचार्य जी ही अखण्ड ज्योति का कार्यभार आगामी माह से सम्भालेंगे। यद्यपि पिछले अंकों में भी उनके ही विचार और भावनाओं की प्रतिध्वनि ही पत्रिका के पृष्ठों पर गूँजती रही है, पर आगे तो वे स्वयं ही हम सबका मार्गदर्शन करेंगे।'''' अखण्ड ज्योति अब आत्मविकास के व्यावहारिक मार्ग- दर्शन की पत्रिका रहेगी।'' दस वर्षीय एक शिक्षण योजना पूज्य आचार्य जी ने बनाई है, उसी से साधनात्मक मार्गदर्शन अब चलेगा।

एक परीक्षा पूरी हुई। कितनी विधि व्यवस्था पूर्ण- सुनियोजित लीलापुरुषों का जीवनक्रम होता है यह अखण्ड ज्योति के पिछले पृष्ठों को पलट कर देखा जा सकता है। ठीक दस वर्ष बाद पूज्यवर ने अज्ञातवास पर मथुरा से स्थायी रूप से विदाई लेकर परम वंदनीया माताजी के कंधों पर पूरे मिशन की। जिम्मेदारी सौंपकर साधना उपक्रम हेतु हिमालय प्रस्थान किया। दोनों ने जिसे कर्मभूमि बनाया था व अखण्ड ज्योति संस्थान (घीयामण्डी मथुरा) तथा गायत्री तपोभूमि (वृन्दावन रोड मथुरा) से क्रमश: साधना लेखन एवं सत्र संचालन- प्रचार-संगठन का कार्य बखूबी 30 वर्षों तक सम्पन्न किया था, उसे सदा के लिए छोड़कर पूज्यवर 20 जून को चले गए।

परम वंदनीया माताजी को शान्तिकुञ्ज सप्त-सरोवर हरिद्वार में अखण्ड दीपक, चौबीस-चौबीस लक्ष के चौबीस महापुरश्चरण करने वाली छ: कुमारी कन्याएँ व तीन वरिष्ठ कार्यकर्त्ता-गणों के साथ नीरव एकान्त में रहने का निर्देश दे गए। कैसा निष्ठुर सा लगता है यह कदम एक बैरागी सन्त का, जिसने जीवन भर औरों के हित स्वयं को तिल-तिल कर जलाया था, अगाध स्नेह लुटाकर एक विराट् परिवार का अभिभावक कहलाया था, किन्तु ऐसा लगता भर है। यह एक सुनियोजित कार्य स्थानान्तरण की प्रकिया भर थी।

परम वंदनीया माताजी के विषय में अपने विदाई संदेश में ''अपनों से अपनी बात'' के क्रम में मई 1971 के अंक में पूज्य गुरुदेव लिखते हैं अभिभावक का दिशा निर्धारण माताजी ठीक तरह करती रहेंगी। उन्हें हमारी तरह अधिक बातें करना नहीं आता, पर आत्मिक गुणों की दृष्टि से वे हमसे आगे ही हैं, पीछे नहीं। परिवार को प्यार और प्रकाश देने की जिम्मेदारी उन पर छोड़कर हम एक प्रकार से निश्चिन्त हैं।

हमें रत्ती भर भी भय नहीं है कि आंदोलन या संगठन हमारे जाने के पीछे लड़खड़ा जाएगा। इस बाल परिवार की साज सम्भाल करने के लिए हम माताजी को छोड़ जाते हैं। वे अपनी तपश्चर्या इसी प्रयोजन में लगाती- खर्च करती, हमारी परम्परा को जीवित रखेंगी। कितना सुव्यवस्थित शक्ति हस्तान्तरण। जबकि स्वयं वे प्रत्यक्ष सशरीर आगामी गायत्री जयंती के पूर्व वहीं शान्तिकुञ्ज आकर रहने वाले थे,

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

किन्तु उनने स्वयं को पीछे कर लिया व प्रत्यक्ष भूमिका आमूलचूल परम वंदनीया माताजी को सौंप दी।

इसके पश्चात् पूज्यवर की सुनियोजित पाँच पंचवर्षीय योजनाएँ आरम्भ हुई, जिनमें प्रारम्भिक चार में दोनों गुरुदेव व माताजी को तथा अन्तिम में मात्र परम वंदनीया माताजी को सक्रिय भूमिका निभानी थी। 1971 में जब परम वंदनीया माताजी ने पत्रिका संपादन, साधना से शक्ति उपार्जन, अनुदान वितरण की महती जिम्मेदारी अपने कंधों पर लीं, तब यह 1958 की तुलना में और भी अधिक कठिन कार्य था। नया स्थान, नन्हीं-नन्हीं कुमारी कन्याएँ, जिन्हें साधना पथ पर प्रशस्त करना था तथा मात्र तीन कार्यकर्त्ता साथ थे।

शान्त-साधना के लिए सर्वाधिक उपयुक्त स्थान, किन्तु मथुरा में आते-जाते रहने वाले आगन्तुक दर्शनार्थी यहाँ नहीं थे, पूज्यवर भी साथ नहीं थे। अत: यह और भी कड़ी परीक्षा की घड़ी थी, अपनों से अपनी बात के क्रम को जारी रखते हुए जुलाई 1971 की अखण्ड ज्योति में "पत्रिकाओं का सम्पादन और मैं" शीर्षक से वंदनीया माताजी लिखती हैं, मेरे लिए गुरु अवलम्बन और भगवान आचार्य जी ही हैं। उनकी आज्ञानुवर्तिनी और इच्छा अनुगामिनी बनने के अतिरिक्त और कभी कुछ सोचा नहीं। सो मथुरा छोड़ना, हरिद्वार रहने, चौबीस लक्ष के चौबीस पुरश्चरण करने के आदेश शिरोधार्य करने के अतिरिक्त और कुछ सोच ही नहीं सकती थी- सम्पादक की जगह पर कानूनी दृष्टि से किसका नाम छपता है, इसका कुछ मूल्य-महत्त्व नहीं वस्तुत: स्थिति यही रहेगी कि भूतकाल की तरह भविष्य में भी गुरुदेव के विचार ही परिजनों को निरंतर उपलब्ध होते रहेंगे। अखण्ड ज्योति शत-प्रतिशत उन्हीं की अभिव्यक्तियों से आगे भी उसी तरह परिपूर्ण रहेगी, जैसी अब तक रही है। कितनी सरलता व विनम्रता से दिया गया आश्वासन है पाठकों को? वह पूरी तरह निभा भी।

पूज्यवर के प्राण चेतना का प्रवाह अखण्ड ज्योति पत्रिका के रूप में परिजनों तक पहुँचता रहा व क्रमश: पाठकों - उसके निर्धारणों को जीवन में उतारने वालों की संख्या बढ़ती चली गई। अपना पूर्व से चला आ रहा संकल्प उनने पूरी तरह निभाया- लागत मूल्य पर पत्रिका सभी को मिले तथा उसमें किसी प्रकार का विज्ञापन न प्रकाशित हो, यह आज भी निभ रहा है।

पूर्व में निर्दिष्ट पंचवर्षीय योजनाओं को जरा हम परिजनों के समक्ष खोल दें कि किस सुनियोजित ढंग से 1971 के बाद से 2001 तक के समय का पूज्यवर पूर्व से विभाजन कर गये थे। इससे महापुरुषों की लीला को समझने का भी अवसर सभी को मिलेगा। 1972 में जनवरी माह के उत्तरार्ध में कुछ समय के लिए माताजी की अन्तर्वेदना को जो कार्य भाराधिक्य एवं अचानक आए हृदय के दौरे से उठी थी, सुनते हुए पूज्यवर दुर्गम हिमालय में जहाँ थे, वहीं से सीधे शान्तिकुञ्ज आये। माताजी के लिए वह एक अलौकिक रोमांचकारी क्षण था। सारा कष्ट-सन्ताप उनको देखते ही दूर हो गया। ठीक भी है, शक्तिस्वरूपा को हो भी क्या सकता था? इन पंक्तियों का लेखक जनवरी 1972 के उन क्षणों का साक्षी है, जब पूज्यवर ने अपनी सारी आगामी योजनाएँ हृदयाघात के कष्ट से उबर रहीं वंदनीया माताजी को समझायीं तथा जैसे आये थे, वैसे ही वे चले गये, पुन: गायत्री जयन्ती तक कभी भी आने का आश्वासन देकर। अप्रैल 1972 की अखण्ड ज्योति "अपनों से अपनी बात में" गुरुदेव क्यों आये, क्यों चले गये? शीर्षक से परम वंदनीया माताजी ने विस्तार से इन सभी घटनाक्रमों का, भावी योजनाओं- प्राण प्रत्यावर्तन से लेकर अन्य सत्रों की भूमिका पर विवेचन प्रस्तुत किया है, जो कि सभी के लिए पठनीय है। 1971 के बाद की प्रथम पंचवर्षीय योजना में पूज्यवर के अज्ञातवास के बाद- प्राण प्रत्यावर्तन के, जीवन साधना के, वानप्रस्थों आदि महत्त्वपूर्ण शिक्षण सत्र ऋषि परम्परा के बीजारोपण प्रक्रिया के अन्तर्गत चलने थे। 1975 तक यही क्रम चला, इस बीच पूज्यवर अपने प्रथम विदेश प्रवास पर तंजानिया व केन्या की यात्रा पर पानी के जहाज से गये तथा डेढ़ माह बाद फरवरी 1973 में लौट आये।

उनके प्रवास के दौरान प्रवासी भारतीयों को भी लगा कि कोई हमारा अपना भी है, जो मीलों दूर से हमारी

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

संस्कार परम्परा को पुनर्जीवित करने आया है। देव संस्कृति के विस्तार का यह प्रारम्भिक चरण था, जिसे बाद में वन्दनीया माताजी ने गति दी। 'समस्त विश्व को भारत के अजस्र अनुदान' नाम का ग्रन्थ इसी के बाद लिखा गया, जिसे संस्कृति-इतिहास का मील का पत्थर माना गया।

1976 तक वंदनीया माताजी की तप:पूत बालिकाएँ अनुष्ठान सम्पन्न कर नारी जागरण सत्रों का संचालन कर रही थीं। पूज्यवर का प्रत्यक्ष शिक्षण ले, एक नयी लहर नारी जागरण की पूरे भारत में फैली व पाँच-पाँच देवकन्याओं के जत्थे प्रव्रज्या पर निकल पड़े। तीन-तीन माह के नारी जागरण सत्र शान्तिकुञ्ज में चलने लगे। इसी बीच ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान की भी स्थापना हो गयी। गंगा तट पर कणाद ऋषि की तपोभूमि में विनिर्मित इस शोध संस्थान में देश-विदेश से ढेरों शोध ग्रन्थ एवं उपकरण जुटाए गए तथा वैज्ञानिक अध्यात्मवाद का ढाँचा खड़ा किया जाने लगा। युवा, सुशिक्षित, चिकित्सक व वैज्ञानिक आजीवन काम करने आ गए।

तृतीय पंचवर्षीय योजना 1980 के पूर्वार्ध में आरम्भ हुई, जब पूज्यवर ने प्रज्ञापीठों, शक्तिपीठों, स्वाध्याय मण्डलों के निर्माण व संगठन को सुव्यवस्थित बनाने का निर्देश किया। देखते-देखते भव्य निर्माण होते चले गए व दो वर्ष तक पूज्यवर स्वयं प्रवास पर गए एवं अनेकों शक्तिपीठों में प्राण प्रतिष्ठा अपने हाथों सम्पन्न की।

1984 का आरम्भ ही चौथी पंचवर्षीय योजना में उनके द्वारा सूक्ष्मीकरण साधना से हुआ। तत्पश्चात् वसंत 1986 से भारत भर में युगसंधि महापुरश्चरण साधना का तीव्र गति से सम्पादन, राष्ट्रीय एकता सम्मेलनों व 108 कुण्डीय महायज्ञों का भारत भर में सम्पन्न होने के साथ दीप महायज्ञों का प्रचलन घर-घर होना उत्तरार्ध की चौथी व अति महत्त्वपूर्ण योजना का अंग था, अंतिम 6 माह में पूज्यवर ने महाकाल की प्रेरणा से क्रान्तिधर्मी साहित्य लाये जाने की घोषणा की। उनने 2 जून 1990 (गायत्री जयंती) को महाप्रयाण के साथ ही सारी शक्ति परम वंदनीया माताजी को सौंप कर सूक्ष्म में स्वयं को विलीन कर मिशन को प्रचण्ड शक्ति सम्पन्न बना दिया।

पूज्यवर के श्रद्धांजलि स्वरूप आयोजित 4 अगस्त 1990 के आगाखाँ आडिटोरियम नयी दिल्ली के कार्यक्रम तथा विराट् श्रद्धांजलि समारोह (1 से 4 अक्टूबर 1990) से पाँचवी पंचवर्षीय योजना आरम्भ हुई, जिसका संचालन परम वंदनीया माताजी को प्रत्यक्षत: 19 सितम्बर 1994 तक करना था। शक्ति साधना समारोहों, संस्कार महोत्सवों, रजवन्दन समारोहों, विराट् अश्वमेध महायज्ञों द्वारा मिशन की गति सौ गुनी बढ़कर मिशन के पक्षधरों की संख्या साढ़े पाँच करोड़ से अधिक जा पहुँची। 18 अश्वमेधों तक की जिम्मेदारी प्रत्यक्ष रूप से पूरी कर, परम वंदनीया माताजी अपने बच्चों को सूक्ष्म रूप से सतत संरक्षण देते रहने का आश्वासन देकर 19 सितम्बर 1994 को अपनी आराध्य सत्ता के साथ जा मिलीं। ◈

माँ शारदामणि को पग-पग पर रामकृष्ण परमहंस जी के शरीर छोड़ने के बाद भी संरक्षण मिलता रहा। माँ शारदामणि आगे सब अनुयायियों को भरपूर प्रेम-आत्मीयता के साथ-साथ दिव्य ज्ञान के अनुदानों से भरती रहीं। ठीक इसी प्रकार वन्दनीया माताजी हमेशा अपने सहज स्वरूप में एक समर्पित गृहिणी के रूप में ही रहती थीं। परन्तु जब-जब पूज्य गुरुदेव हिमालय यात्रा को जाते, या दौरों पर निकलते, तो पूज्यवर के सारे कार्य माँ सहज ही सँभाल लेती थीं। पूज्यवर का प्रखर प्रज्ञा का स्वरूप भी उनके भीतर से जैसे जाग उठता, और कठिन से कठिन जिम्मेदारियाँ अकेले ही सहज ही उठाती चली गयीं। पूज्यवर के महाप्रयाण के बाद भी श्रद्धांजलि समारोह, शपथ समारोह एवं बड़े-बड़े अश्वमेध यज्ञों का संचालन, विशाल संगठन की जिम्मेदारी, एवं अन्य सब कार्य यथावत् होते ही रहे। पूज्यवर की कमी का वे अपने बच्चों को, विशाल गायत्री परिवार को कभी अहसास भी न होने दीं।

जीवन की सार्थकता अपने अस्तित्व को मिटाकर परहित के लिए आत्म-बलिदान की भावना में है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

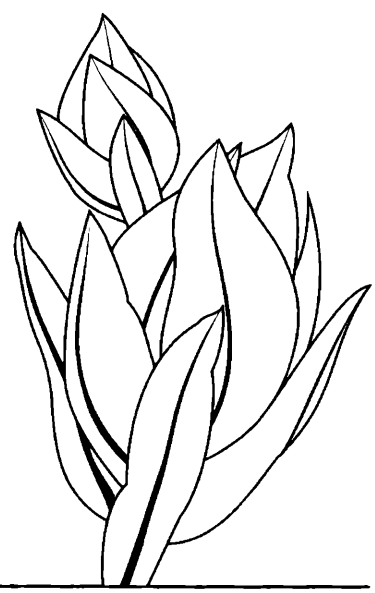
सतत सूक्ष्म संरक्षण देती हमारी गुरुसत्ता

गायत्री परिवार रूपी विराट् संगठन को-उसके क्रियाकलापों को देख कइयों को लगता है कि अन्य संगठनों की तरह ही यह भी विनिर्मित हुआ है व समय के प्रवाह के कारण इसकी लोकप्रियता बढ़ी है। अब चूँकि मार्गदर्शक सत्ता प्रत्यक्ष रूप में नहीं है, क्या मालूम इसका भी वही हश्र हो जो औरों का होता है। कतिपय घटनाक्रमों का, जो समुद्र में समाई एक बूँद की तरह होते हैं, हवाला देकर मात्र बहिरंग तक ही जानकारी के आधार पर वे कहते भी देखे जाते हैं कि अब कौन है, जो इस विराट् परिवार को संरक्षण देगा। वे भूल जाते हैं कि इस तंत्र का नियामक, कर्त्ता-धर्त्ता सूक्ष्म-परोक्ष में विद्यमान है एवं वह हर उस भक्त के-समर्पित परिजन के योगक्षेम के वहन के लिए सतत तैयार रहता है। संभवत: यही कारण है कि उच्चस्तरीय आध्यात्मिक चिंतन-दूरदर्शी रीति-नीति एवं एक समग्र समाज, राष्ट्र व युग के नवनिर्माण के संकल्प को लेकर खड़ा हुआ यह विराट् संगठन विगत छह सात दशक से विश्वविश्रुत एवं प्रेरणा स्रोत है।

कुछ अनुभूतियाँ- घटनाओं-पत्रों के हवाले से इस स्तम्भ में परिजनों को बताने का प्रयास करेंगे कि किस प्रकार सूक्ष्म में समाई प्रज्ञापुरुष की, ऋषियुग्म की सत्ता सतत न केवल इस विराट् वटवृक्ष को पोषण देती रही है, अपितु उसके विस्तार का हेतु भी है, कण-कण में समाई है एवं सदैव उन्हें संरक्षण देती रहेगी। परमपूज्य गुरुदेव ने अपने स्थूलशरीर की उपस्थिति में ही यह लिख दिया था, हम दोनों का अस्तित्त्व सूक्ष्म रूप में शांतिकुंज गायत्री तीर्थ, गायत्री तपोभूमि के कण-कण में प्रज्ञापरिजनों के हृदय स्थानों में सन् 2000 तक बना रहेगा एवं उसके पश्चात् यह प्राय: छह अरब विश्ववासियों के कल्याण के निमित्त एक शताब्दी तक सूक्ष्म-कारण दोनों ही रूपों में न केवल युगतीर्थ में अपितु सारे विश्व में फैल जाएगा। इस पर हमें विश्वास करना चाहिए, क्योंकि हमारी आराध्यसत्ता इक्कीसवीं सदी में उज्ज्वल भविष्य का आश्वासन हमें दे गई है।

बाराँ राजस्थान के एक परिजन की एक अनुभूति गुरुसत्ता के सूक्ष्मीकरण के परिप्रेक्ष्य में यहाँ उल्लेखनीय है। वे प्रथम बार जुलाई 1984 की गुरुपूर्णिमा पर शांतिकुंज नौ दिवसीय सत्र के लिए पहुँचे। गुरुदेव के सामीप्य-दर्शन से वे वंचित रहे, क्योंकि उन दिनों गुरुदेव की सूक्ष्मीकरण साधना चल रही थी। सत्र में शिक्षण के दौरान उन्हें प्रेरणा मिली अपने ग्राम पाठेड़ा में वसन्तपर्व के अवसर पर गायत्री यज्ञ कराने की। नए-नए जुड़े थे। चिंता हो रही थी कि कैसे सब कुछ होगा

"जैसे एक उड़ती हुई चिड़िया अपने घोंसले में अण्डों का, छोटे-छोटे बच्चों का ध्यान रखती है, ऐसे हम भी जहाँ कहीं भी रहेंगे, तुम्हारा ध्यान रखेंगे।" ये पंक्तियाँ उनके एक पत्र से ली गयी हैं। वे हर क्षण 600 करोड़ लोगों के कर्मानुसार योग-क्षेम का वहन करते थे।"



स्वार्थ की भावना और साधन प्राप्त करने की दृष्टि से की जाने वाली सेवा परोपकार नहीं प्रवंचना है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

किन्तु ऐसी परिस्थितियों में दिसम्बर 1984 में सूक्ष्मीकरण से स्वप्न में गुरुसत्ता ने अनुभूति कराई कि तू इस कार्य की चिंता छोड़ दे और पूर्ण लगन के साथ प्रयत्न करता चल। तेरे यज्ञ में मैं स्वयं उपस्थित रहूँगा। दो माह पश्चात् जब वे तैयारी में लगे थे उन्हें ऐसा लगा कि आज यज्ञ का दिन है, गुरुसत्ता निश्चित ही उपस्थित होगी। इस बीच गाँव के दस-बारह व्यक्ति आए व बोले कि गाँव के बाहर एक पेड़ की छाया में तुम्हारे गुरु जी आकर बैठे हैं, चलो उन्हें लेकर ससम्मान यज्ञ में आएँ। परिजन हमें लिखे पत्र में लिखते हैं कि ''मैंने उन्हें समझाया कि गुरुदेव शांतिकुंज से बाहर ही नहीं निकलते व आजकल तो वहाँ भी किसी को दर्शन नहीं देते। अत: उनके आने का प्रश्न ही नहीं उठता। अगर गुरुदेव ही हैं तो आपने कैसे पहचाना, जबकि मैंने स्वयं आज तक उन्हें देखा नहीं है। तब लोगों ने मेरे घर में लगे उनके फोटो को बताते हुए कहा कि ये जिनका फोटो है, वही आए हैं। भागे-भागे सभी वहाँ पुहँचे।

गुरुदेव सशरीर तो नहीं थे, मात्र झलक देकर जा चुके थे, किन्तु गाँव में चारों ओर से आने वालों का ताँता लग गया था। सब यज्ञ करने पधारे थे। वातावरण में उल्लास व दिव्यता सभी को अनुभव हो रही थी। प्राय: हजार ग्रामीणों की उपस्थिति में एक विराट् यज्ञ उस दिन वसन्त की वेला में हो जाना व 19,000 रुपयों की व्यवस्था भी स्वत: बन जाना, यह परिजन को गुरुसत्ता की कृपा का प्रसाद ही मानते हैं। कुछ ग्रामीणों को तो दर्शन पूज्यवर ने दे दिए थे। परिजनों ने प्रत्यक्ष दर्शन सूक्ष्मीकरण के समापन पर शांतिकुंज आकर स्वयं किए, गद्गद हृदय-अश्रुभरे नेत्रों से अपने आराध्य को जी भरकर देखा व एक समर्पित कार्यकर्त्ता के रूप में तब से ढल गए।''

यह किसी को भी एक छोटी-सी घटना लग सकती है, किन्तु इस विलक्षण विराट् संगठन का प्राण है वह अनुभूति, जो एक सामान्य अपरिचित परिजन को जिसने अपने गुरु को देखा तक न था, एक इकाई के रूप में विनिर्मित कर गई। ऐसी एक नहीं सैकड़ों अनुभूतियाँ हैं, जिन्हें लिखने के लिए एक विश्वकोश भी कम पड़ जाएगा।

बाधाएँ कइयों के जीवन में आती हैं। गुरुकार्य करने में भी कम प्रतिकूलताओं का सामना नहीं करना पड़ता। फिर भी गुरुसत्ता अपना दिव्य संरक्षण किस प्रकार प्रदान करती है, उसकी एक बानगी पानीपत के एक दम्पत्ति की इस आपबीती से मिलती है। उन दिनों वे अमृतसर में थे। एक सत्र में शांतिकुंज आए। झोला पुस्तकालय चलाने का संकल्प दोनों ने ले लिया। उग्रवाद उस समय पंजाब में चरम पर था। शहर में कई-कई दिन कर्फ्यू लगा रहता था। मात्र एक घंटे चौबीस घंटों में खुलता था। ऐसे में झोला पुस्तकालय कैसे चले? सोचा गया कि एक घंटे की जो गैप मिलती है, इसमें वे घर-घर साहित्य पढ़ने को दे आएँगे एवं दूसरे राशन-सब्जी आदि ले आया करेंगे। रोज नियम निभता रहा। एक बार सतत् तीन दिन-तीन रात कर्फ्यू चला, पर दो घंटे की छूट मिली। कमला जी ने झोला टाँगा, निकल गई।

जब वे समीप के मोहल्ले को पार कर थोड़ी दूर पहुँची तो पता चला कि पुन: गोली चल जाने से कर्फ्यू लग गया है। वे वहीं घिर गईं। सी.आर.पी.एफ. के जवानों ने उन्हें रोककर झोला खोलकर दिखाने को कहा। बड़े सम्मान से कमला जी ने कमांडिंग ऑफीसर के समक्ष रखी टेबल को अपने पल्लू से साफ कर उस पर पुस्तकें रखना आरंभ कीं। अखण्ड ज्योति व अन्य पुस्तकें रखी थीं कि एक और कांस्टेबल वहाँ आया, बोला-''यह माता जी मुहल्ले-मुहल्ले घूमकर साहित्य पढ़ने को देती हैं। मुझे गायत्री चालीसा व अन्य पुस्तकें भी दी हैं।''

कमांडिंग ऑफीसर ने अखण्ड ज्योति पत्रिका देखते ही कहा कि यह आप कहाँ से मँगाती हैं, यह तो मेरे घर भी आती है। इतना कहकर उसने पत्रिका रख ली एवं इसी कांस्टेबल से उनको मिलिट्री की जीप में छोड़ आने को कहा। जब वे सुरक्षित तनावग्रस्त वापस पहुँची व कहा कि गुरु जी के साहित्य के कारण मैं सुरक्षित आ गई। ठीक चार दिन बाद माता जी का लिखा पत्र मिला-''बच्चों! तुम उतना ही काम करो जितना आसानी से कर सको। अपनी जान को जोखिम में डालकर हमारा ध्यान अपनी तरफ मत खींचो। हमें और भी बड़े-बड़े काम करने

दु:ख एवं कातरता की औषधि है - प्रेम। वह पूरे हृदय में संचरित होता है और सारे शरीर को स्वस्थ तथा सजीव कर देता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हैं। तुम ज्ञानयज्ञ में भाग लो, पर अब खतरा मोल न लेना'' बिना किसी सूचना के गुरुसत्ता की ओर से चेतावनी भी आ गई एवं स्पष्ट बता गई कि इस दिन सुरक्षा किस सत्ता ने की थी। यह अवधि वही थी, जब परम पूज्य गुरुदेव सूक्ष्मीकरण में गए ही थे।

ग्राम नरौका, जिला रायबरेली के अपने एक परिजन की कहानी भी कुछ ऐसी ही है। उन्हें समय-समय पर पूज्यवर की अनुभूतियाँ होती रही हैं, जबकि स्वयं वे अप्रैल 1990 में प्रथम बार शांतिकुंज आकर संस्था से जुड़े थे। परम पूज्य गुरुदेव के प्रत्यक्ष दर्शन तो कर नहीं सके थे,पर कई विलक्षण घटनाक्रमों का वर्णन उनकी अनुभूतियों में है। एक विशेष उल्लेखनीय है- 12 जून 1992 के दिन वे मोटरसाईकिल से अपने कार्य से वापस घर लौट रहे थे, मार्ग में उनके एक मित्र मिले और रोककर कुछ बातें करने लगे। दोनों बात करके अलग हुए ही थे व उन्होंने मोटरसाईकिल स्टार्ट ही की थी कि ऊपर से बिजली के तीन वायर उनके ऊपर टूटकर गिर गए, मोटसाईकिल समेत तारों में लिपटकर वे जमीन पर आ गिरे।

उनके मुख से एक ही शब्द निकला-''अरे गुरु जी'' थोड़ी देर में होश आ गया। उनके साथी ने बताया कि ''आप बिलकुल सुरक्षित हैं। तार गिरने के मात्र कुछ सेकेण्ड पूर्व बिजली चली गई थी। मात्र गिरने व शॉक के कारण आप थोड़ी देर बेहोश हो गए, लेकिन यदि बिजली के तारों में प्रवाह दौड़ रहा होता तो आप नहीं बचते।'' त्रिपाठी जी लिखते हैं कि मेरा रोम-रोम कृतज्ञता से भरा पड़ा है, गुरुसत्ता के लिए जो सूक्ष्म में निरंतर सक्रिय रह कर कई बार मेरी प्राण रक्षा कर चुकी है।

एक अन्य पत्र जो इतिहास बन गया है, उद्धृत कर इस माह का यह कथा प्रसंग समाप्त करेंगे। यह पत्र परम पूज्य गुरुदेव द्वारा मु. पो. खूड़ जिला सीकर के परिजन को 29-09-62 को लिखा गया था। उन्हें मारकेश की चिंता थी जो उनके ज्योतिषी की घोषणा के अनुसार उनकी कुंडली में था। उन्हें लगा कि वे अब बचेंगे नहीं, उन्होंने पूज्यवर को जो पत्र लिखा, उसी का प्रत्युत्तर एक छोटे से पोस्टकार्ड रूप में आया, जो आज भी हमारे पास सुरक्षित है।

उनके संबंधीगण आज भी खूड़ में हैं, वे बताते हैं कि ज्यों ही यह अवधि पूरी हुई, गुरुदेव ने उन्हें मथुरा में स्मरण किया, मूक प्रणाम किया व उनका पत्र लेकर आने वालों के समक्ष यह घोषणा भी की कि अब वे रहे नहीं। उन्हें हमारा प्रणाम। यह घटना विस्तार से कभी बाद में कहेंगे।

यह पत्र यह बताता है कि सतत एक दैवी संरक्षण, एक सुनिश्चित आश्वासन प्रज्ञावतार रूपी सत्ता के साथ चलने वालों पर रहता है। आवश्यकता मात्र यह विश्वास करने, दृढ़ बनाए रखने की है। हम कभी-कभी विचलित हो जाते हैं, व्यथित हो जाते हैं कि हमारा क्या होगा, जब गुरुदेव थे, माताजी थीं तो हमारा कष्ट वे सुनकर ठीक कर देते थे। अब कौन करेगा ? वस्तुत: इस लेखमाला के माध्यम से हम अपने परिजनों को आश्वासन देना चाहते हैं कि मानवी पुरूषार्थ तो पूरा हो, किन्तु दृढ़ मनोबल के साथ गुरु सत्ता पर विश्वास प्रबल हो, तो कोई भी कष्ट यदि पूर्णत: समाप्त नहीं, कम तो किया ही जा सकता है। अभी भी इस जन्मशताब्दी की वेला में उनका सतत आश्वासन है कि यह ज्योति कभी बुझेगी नहीं।

इन दिनों जब समूची मानव जाति का भाग्य नए सिरे से लिखा जा रहा है। हर गायत्री परिजन का योगक्षेम वहन करने वाली ऋषियुग्म की अवतारी सत्ता उनका कष्ट सुनने व यथायोग्य समाधान करने हेतु उद्यत है। जरा पुकार लगाकर तो देखें।

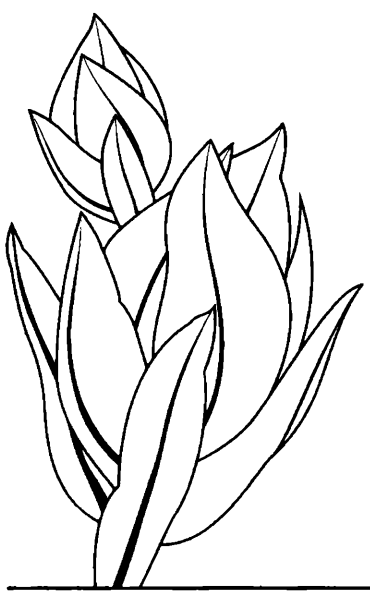
नवयुग का आगमन- अवतरण निकट है। उसे स्रष्टा किसके माध्यम से पूरा करने जा रहे हैं, यह जानना हो तो समझना चाहिए कि युग-अवतरण का श्रेय उन्हीं को उपहारस्वरूप भगवान् दे रहे हैं, जो उनके काम में लगे हैं। ऐसे लोगों को ही बड़भागी और सच्चा भगवद्-भक्त मानना चाहिए।

प्रेम मनुष्य की निर्बलता, दरिद्रता और दुःख को शक्तिमता, सम्पन्नता और सुख में परिवर्तित कर देता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गुरुदेव के सपनों का विश्वविद्यालय

परम पूज्य गुरुदेव ने एक दिव्य स्वप्न देखा कि भारत को महामानव, बड़े मानव, उदार संस्कृति प्रधान मानव बनाने वाले एक आलोक केन्द्र की आवश्यकता है, जो नालन्दा-तक्षशिला परम्परा का पुनर्जीवन कर सके। देवसंस्कृति विश्वविद्यालय (सन् 2002) उन्हीं के स्वप्नों को पूरा करने वाला एक केन्द्र है।



इस देश और धरती में जब भी नया जीवन अंकुरित हुआ, विश्वविद्यालयों में हुआ। जब भी नया युग आया, तो उसकी शुरुआत विश्वविद्यालयों से हुई। जब नए मनुष्य गढ़े गए, उन्हें नई दिशा मिली तो विश्वविद्यालयों में। महामानवों-देवपुरुषों की पौध तैयार करने वाले नालंदा एवं तक्षशिला के विश्वविद्यालय ऐसे ही थे। यहाँ के ऊर्जावान आचार्य और प्राणवान् विद्यार्थी मिलकर प्राण ऊर्जा का ऐसा प्रवाह पैदा करते थे कि पूरे देश में सृजन का प्रवाह उमड़ पड़ता था। सारी धरती पर जीवन मूल्यों के वरदान बरस जाते थे।

ऐसे ही विश्वविद्यालय की स्थापना का स्वप्न युगऋषि ने भी देखा था। देव संस्कृति विश्वविद्यालय आचार्य श्री के इस स्वप्न को साकार करने की दिशा में एक अभिनव प्रयोग है।

विश्वविद्यालय-एक विहंगम दृष्टि : गंगा के पावन तट एवं देवात्मा हिमालय की पवित्र गोद में हरिपुर कला गाँव के पास हरिद्वार की सीमा पर जिला देहरादून में स्थित है। लगभग 92 एकड़ भूमि में फैला इसका परिसर दिल्ली-देहरादून-ऋषिकेश राष्ट्रीय राजमार्ग पर हरिद्वार रेलवे स्टेशन से 7 कि. मी. की दूरी पर स्थित है। यह विश्वविद्यालय उत्तराखण्ड सरकार के अध्यादेश 04, 2002 (संख्या 122/विधायी एवं संसदीय कार्य/2002), देहरादून, 11 अप्रैल 2002 के तहत स्थापित किया गया है। यह विश्वविद्यालय यूनिवर्सिटी ग्रांट कमीशन से पूर्णतया संबद्ध है। पूर्णतया आवासीय इस विश्वविद्यालय में लगभग 1000 विद्यार्थियों के रहने की व्यवस्था है। 23 जुलाई 2002 को प्रथम ज्ञान दीक्षा के साथ ही विश्वविद्यालय के प्रथम एकेडमिक सत्र का श्रीगणेश हुआ।

मूलभूत उद्देश्य : देव संस्कृति का शिक्षण एवं प्रसार करना, इसके ज्ञान की धाराएं-धर्म, दर्शन, शिक्षा आदि पर आधारित पाठ्यक्रमों का शिक्षण एवं इनके समसामायिक बिंदुओं पर शोध करना। देव संस्कृति पर आधारित विज्ञान धाराओं-ज्योतिष, आयुर्वेद, मंत्र विज्ञान, योग विज्ञान, मनोविज्ञान आदि पर शिक्षण एवं इनके समसामायिक बिंदुओं पर आधुनिक वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में शोध एवं नवीन सामाजिक संरचना के लिए आवश्यक रोजगार परक पाठ्यक्रमों का शिक्षण, आपदा प्रबंधन, ग्राम प्रबंधन, कम्प्यूटर विज्ञान, पत्रकारिता आदि का अध्यापन एवं शोध।

कतिपय मौलिक विशेषताएँ: आध्यात्मिक वातावरण, ज्ञान दीक्षा, गीता एवं ध्यान की कक्षाएँ, जीवन प्रबंधन की कक्षाएँ, अनुशासित जीवन शैली, इटर्नशिप ट्रेनिंग आदि के द्वारा छात्रों का संपूर्ण व्यक्तित्व विकास। शिक्षा एवं विद्या का अद्वितीय संगम इसे अन्य विश्वविद्यालय से अलग बनाता है।

संकल्प से प्राप्त धन -बल द्वारा स्वल्प साधनों में भी मनुष्य अधिकतम विकास कर सकता है और मस्ती का जीवन बिता सकता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पाठ्यक्रम एक नज़र में : यहाँ स्नातक,स्नातकोत्तर ,डिप्लोमा, प्रमाणपत्र आदि के विभिन्न पाठ्यक्रम संचालित होते है जिनमें एम.ए/एम.एस.सी मनोविज्ञान, एम. ए. व्यावहारिक योग एवं मानव उत्कर्ष, एम.एस.सी योग विज्ञान एवं समग्र स्वास्थ्य प्रबंधन, एम.ए -पर्यटन प्रबंधन,भारतीय संस्कृति, पत्रकारिता एवं जनसंचार, एप्लाइड एजुकेशन, एम.एस.सी. कम्प्यूटर साइंस, पी.जी. डिप्लोमा - पत्रकारिता एवं जनसंचार, मानव चेतना एवं वैकल्पिक चिकित्सा, योग थैरेपी एवं स्प्रिचुअल काउंसिलिंग, स्नातक- मनोविज्ञान, भारतीय संस्कृति, पर्यटन प्रबंधन,अंग्रेजी साहित्य, शिक्षा शास्त्र, योग विज्ञान एवं मानव चेतना, संस्कृत, गणित, कम्प्यूटर साइंस। प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम- समग्र स्वास्थ्य प्रबंधन, योग एवं वैकल्पिक चिकित्सा, ग्राम प्रबंधन एवं उद्यमिता विकास, धर्मविज्ञान, डिप्लोमा इन थ्री डी एनीमेशन एंड विजुअल इफेक्ट्स, एडवांस डिप्लोमा इन एनीमेशन एंड विजुअल इफेक्ट्स।

इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय दूरस्थ शिक्षा केंद्र के माध्यम से विभिन्न कोर्स संचालित कर रहा है। इसमें इग्नू के माध्यम से भी कोर्स चलाए जा रहे हैं।

सात समंदर पार : देव संस्कृति को अभी केवल 10 वर्ष हो रहे हैं। इस छोटे कार्य काल में विश्वविद्यालय, भारतीय संस्कृति एवं युगऋषि के संदेश को विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी के मार्गदर्शन में बहुत तीव्रता से विदेशी विश्वविद्यालयों और संस्थाओं में पहुंचाने का कार्य कर रहा है। इसी क्रम में विश्वविद्यालय ने विदेशों के निम्न विश्वविद्यालयों से शैक्षणिक अनुबंध (एमओयू) कर चुका है-इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट आफ वैदिक साइंस वर्लिन-जर्मनी, मैमोनाइडज यूनिवर्सिटी बूनोसएरीज -अर्जेंटिना, युज्हनी इंस्टीट्यूट आफ मैनेजमेंट क्रास्नोडर- रुस,इंस्टीट्यूट आफ कैंसर एंड जेनेटिक्स क्रास्नोडर- रुस, जिआंज्सी यूनिवर्सिटी आफ ट्रेडिशनल चाइनीज मेडिसिन नानचंग, चीन इन संस्थानों के साथ विश्वविद्यालय के शैक्षिक आदान-प्रदान के हुए कतिपय प्रयास वर्ष 2009 में 4 से 10 जनवरी, 2009 के मध्य मैमोनाइडज यूनिवर्सिटी, अर्जेंटिना के सात प्रतिभागियों ने देव संस्कृति विश्वविद्यालय में वैदिक विज्ञान, वैज्ञानिक अध्यात्म और वैकल्पिक चिकित्सा पर प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। 17 से 21 फरवरी 2009 के बीच रूस, मास्को के टेट्राडा इंस्टीट्यूट आफ यूनिवर्सल नॉलेज के चार प्रतिनिधि वैदिक विज्ञान और वैकल्पिक चिकित्सा के अनुबंध के लिए हरिद्वार आए। 24 फरवरी से 4 मार्च, 2009 रूस, मास्को की संस्था आर्लेट के 46 सदस्यों ने रिडिफाइनिंग स्प्रिचुअलिटी कार्यक्रम में भाग लिया। इसमें उन्होंने गायत्री जप के साथ योग का अभ्यास किया। वैदिक विज्ञान, चिकित्सा, भारतीय संस्कृति के साथ गायत्री परिवार की गतिविधियों से उन्हें परिचित कराया गया। वर्लिन जर्मनी से 10 सदस्यों का दल 1 मार्च, 2009 को एक दिवसीय वैकल्पिक चिकित्सा पर प्रशिक्षण के लिए आया। कुलाधिपति की जर्मन यात्रा : 23 से 27 मई 2009 के बीच इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट आफ वैदिक साइंस (आइ आइ वीएस) बर्लिन के साथ अध्ययन एवं शोध को लेकर महत्त्वपूर्ण अनुबंधों पर हस्ताक्षर हुए। इसके साथ ही ऑनलाइन शिक्षा के तहत वास्तुशास्त्र, एस्ट्रोलॉजी, चेतना विज्ञान, योग विज्ञान आदि पर पाठ्यक्रमों एवं शोध पर सहमति हुई। अक्टूबर, 2009 में सेंट पीट्सबर्ग, रूस से 18 सदस्यों का दल स्वास्थ्य शिविर में आया। दल में पार्लियामेंट के सदस्य, चिकित्सा विज्ञान के प्रोफेसर, आर्किटेक्ट, ज्योतिषविद् और मनोवैज्ञानिक थे। इनमें से 10 व्यक्तियों ने गायत्री महामंत्र की दीक्षा ली और देव संस्कृति विश्वविद्यालय की शाखा की स्थापना के लिए 25,800 वर्ग किमी भूमि देने का प्रस्ताव किया। वैज्ञानिक अध्यात्म और समग्र स्वास्थ्य प्रबंधन पर देसंविवि और इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी इन फंडामेंटल एजुकेशन सेंट पीट्सबर्ग रूस ने संयुक्त रूप से भाग लिया।

आगामी मार्च 2012 में वेद और विचार क्रांति को लेकर एक अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन विश्वविद्यालय में किया जाना है।

विशिष्ट उपलब्धियाँ : अब तक के 10 वर्ष के छोटे से कालखंड में विश्वविद्यालय उच्चस्तरीय शिक्षा के क्षेत्र में एक आशा की किरण के रुप में सामने आया है। चारों ओर जब शिक्षा के नाम पर लूट मची हो,

जिनके संस्कारों में दृढ़ता, तीव्र मनोबल और सुदृढ़ संकल्प शक्ति विद्यमान है, सफलता सदैव उनकी दासी बनकर काम करती है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

ऐसे में लागत मूल्य से भी कम में उत्कृष्ट शिक्षा की व्यवस्था स्वयं में एक मिसाल है। विश्वविद्यालय ने न केवल शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धियाँ हासिल की हैं, बल्कि मूल्यपरक शिक्षा एवं नैतिक प्रशिक्षण के क्षेत्र में नए प्रतिमान स्थापित किए हैं। योग ही नहीं बल्कि कम्प्यूटर, एनीमेशन एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में भी विश्वविद्यालय ने राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई है। यहां के वैज्ञानिक अध्यात्म एवं जीवन प्रबंधन जैसे मूल्यपरक शिक्षा के प्रयोग का अनुकरण करने के लिए जैसे होड़ सी लगी है। संक्षेप में विश्वविद्यालय युगऋषि के नालंदा एवं तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालय के स्वप्न को साकार करने की दिशा में अग्रसर है। योग, संस्कृति एवं अध्यात्म को लेकर आयोजित किए जाने वाले यहां के अन्तर्राष्ट्रीय महोत्सवों ने जनसामान्य, विज्ञजनों, मीडिया के बीच अपनी सनातन विरासत के प्रति एक गौरवपूर्ण भाव पैदा किया है और विदेशी अध्यात्मप्रेमी पर्यटकों एवं शोधार्थियों के बीच खासा आकर्षण पैदा किया है।

ऐसे विश्वविद्यालय की कल्पना युगऋषि के मन में बहुत पहले से थी। निम्न उदाहरणों से स्पष्ट होता है-''एक ऐसा विश्वविद्यालय देश में होना ही चाहिए जो सच्चे मनुष्य, सर्वांगपूर्ण मनुष्य बनाने की आवश्यकता को पूर्ण कर सके। माना कि आज हर आदमी अपने बच्चों को नौकरी कराने के लिए पढ़ाता है। सरकारी डिग्रियों का ही कुछ मूल्य माना जाता है। फिर भी ऐसे समझदार लोग अभी दुनिया में बाकी हैं, जो यह सोचते हैं कि उनका बालक यदि मानवीय गुणों से संपन्न हुआ तो किसी भी प्रकार अपनी आजीविका उनसे अच्छी तरह कमा लेगा, जो ग्रेजुएट बनने के बाद तरक्की करते हुए सड़ी-गली जिंदगी बिताते रहते हैं। फिर कुछ लोग ऐसे भी तो हैं जिनके पास कृषि, उद्योग आदि ऐसे काम मौजूद हैं जिन्हें करते हुए उनके बच्चे सुविधापूर्वक निर्वाह कर सकें। इस प्रकार के लोग तो इस संजीवनी शिक्षा का प्रशिक्षण अपने बच्चों के लिए उपयोगी समझ सकते हैं।''

(अखण्ड ज्योति 1964 मार्च, पृष्ठ 62)

''संजीवनी विद्या का एक सर्वांगपूर्ण विश्वविद्यालय अखण्ड ज्योति परिवार भी चला सकता है। इसके लिए धन की नहीं, भावनाओं की आवश्यकता है। भावनापूर्ण परिजन यदि चाहेंगे तो यह शिक्षण पद्धति एक स्थान से आरंभ होकर देशव्यापी रूप में विस्तृत होकर युगनिर्माण के उपयुक्त वातावरण तैयार करने में सहायक सिद्ध हो सकेगी।''

(अखण्ड ज्योति 1964 मार्च, पृष्ठ 63)

विज्ञान जीवित रहेगा, पर अध्यात्म विज्ञान होकर

अदृश्य अध्यात्म की सामर्थ्य दृश्यमान विज्ञान की तुलना में कम तो नहीं है, इस असंमजस को इतने दिनों जीकर, अभीष्ट प्रयोग की दिशा में निरत रहकर यह भली-भाँति जान लिया है कि आत्मबल संसार के समस्त बलों की तुलना में अधिक सामर्थ्यवान् है। विज्ञान की पहुँच मात्र जड़ पदार्थों तक है, जबकि अध्यात्म जड़ ही नहीं, चेतना को भी प्रभावित, परिष्कृत करने में समर्थ है। उसका अमृत, पारस, कल्पवृक्ष, कामधेनु आदि के नामों से आलंकारिक सम्बोधन किया जाता है। विज्ञान आगे भी अनर्थ पैदा करता रह सकेगा; ऐसी आशंकाएँ किसी को भी नहीं करनी चाहिए; क्योंकि खनिज तेल, विद्युत उत्पादन जैसे स्रोत ही सूख जाएँगे, तब विज्ञान जीवित कैसे रह सकेगा? विज्ञान जीवित रहेगा; पर उसका नाम भौतिक विज्ञान न होकर अध्यात्म विज्ञान ही हो जाएगा। उस आधार को अपनाते ही वे सभी समस्याएँ सुलझ जाएँगी, जो इन दिनों अत्यन्त भयावह दीख पड़ती हैं। उन आवश्यकताओं को प्रकृति ही पूरा करने लगेगी, जिनके अभाव में मनुष्य अतिशय उद्विग्न, आशंकित, आतंकित दीख पड़ता है। न अगली शताब्दी में युद्ध होंगे, न महामारियाँ फैलेंगी और न जनसंख्या की अभिवृद्धि से वस्तुओं में कमी पड़ने के कारण चिन्तित होने की आवश्यकता पड़ेगी।

(परिवर्तन के महान् क्षण)

सुख का आधार धर्म और सदाचार है। इसके बिना मनुष्य वास्तविक सुख प्राप्त नहीं कर सकता।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

निजी खर्च के प्रति सजग एवं कठोर

एक कार्यकर्ता बताते हैं कि, यह मथुरा के उन दिनों की बात है, जब माता जी घीया मंडी वाले घर में स्वयं खाना बनाया करती थीं। खाना चूल्हे पर बनता था। एक दिन मैं घीया मंडी गया हुआ था। जैसे ही घर में घुसा, धुएँ से मैं परेशान हो गया। उस दिन लकड़ी कुछ गीली थी, पर प्राय: रोज ही यही क्रम रहता। माता जी चूल्हा फूँक-फूँककर परेशान हो जाती। धुएँ से उनकी आँखें जलने लगती। अतिथि भी आते ही रहते थे। एक दिन लकड़ी कुछ ज्यादा ही गीली थी, सो घर में धुआँ ही धुआँ हो रहा था। मैंने सोचा कहीं से कुछ सूखी लकड़ी ही ले आऊँ। इसलिए मैं तपोभूमि गया, वहाँ बेकार की कुछ लकड़ी पड़ी थी। मैं उस लकड़ी को बोरे में भरकर ले आया।

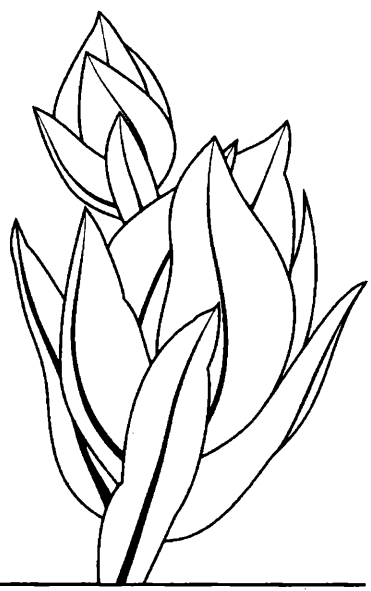
चूल्हा आसानी से जल गया, पर गुरुजी ने मुझे बोरा लाते हुए देख लिया था, सो पूछा- बोरे में क्या था? मैंने बताया, लकड़ी के बचे हुए टुकड़े। गुरुजी ने पूछा, ''कहाँ से लाए हो?'' मैंने बताया, ''तपोभूमि से।'' इस पर गुरुजी ने कुछ नाराज होते हुए कहा- क्यों? किसने कहा था, वहाँ से लकड़ी लाने के लिए? मैंने कहा- ''किसी ने नहीं।''

गुरुजी फिर बोले, ''माता जी ने कहा था?'' मैंने कहा, ''नहीं।'' ''फिर कैसे ले आए? अभी जाओ और ये लो पाँच रुपए, तपोभूमि से रसीद कटवाकर लाओ और हाँ, रसीद मुझे देना।'' मैंने चुपचाप पाँच रुपए लिए और सीधे तपोभूमि पहुँचा। दान की रसीद कटवाकर लाया और गुरुदेव को दी। उन्होंने देखी और फाड़कर फेंक दी। मैं देखता ही रह गया। बात यहीं समाप्त नहीं हुई। गुरुजी अभी भी नाराज थे और बोले, ''सुनो! गायत्री तपोभूमि से कभी कोई चीज मत लाना, वह न मेरी है, न तुम्हारी।'' मैं चुपचाप सुनता रहा।

जब माताजी ने देखा, गुरुदेव कुछ जोर से बोल रहे हैं, तो वह बोलीं क्यों क्या बात है? मैंने बताया कि तपोभूमि से लकड़ी लाने के कारण गुरुदेव नाराज हो रहे हैं। सुनकर माता जी ने कहा- बेटा, वह समाज की सम्पत्ति है। वहाँ की किसी वस्तु को हम निजी खर्च में इस्तेमाल नहीं कर सकते।

श्री चैतन्य जी व उस समय के अन्य परिजन डॉ० दत्ता, लीलापत शर्मा जी आदि बताते हैं कि जब पूज्य गुरुदेव के बड़े बेटे, श्री ओमप्रकाश शर्मा जी, गुड़गाँव में अपना मकान बना रहे थे। उन्हें कुछ पैसों की आवश्यकता थी। यह बात मथुरा में तपोभूमि के कार्यकर्त्ताओं को पता चली। उधार में पैसे की व्यवस्था कर देना, कोई बड़ी बात नहीं थी। किन्तु

सच्चे ऋषि की पहचान है अपने प्रति कठोरता - औरों के प्रति उदारता। ब्राह्मण मन - ऋषि कर्म वाले गुरुदेव ने अपने आचरण से शिक्षण दिया। हर पल, हर क्षण उनका संस्कृति के निमित्त था - जीवन मूल्यों का सतत शिक्षण देता था।



संकल्प तप और क्रिया शक्ति का विधायक है। इसीलिए उसमें अनेकों सिद्धियाँ और वरदान समाहित हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

पूज्यवर से कहे कौन ? किसी की हिम्मत नहीं पड़ रही थी। उनकी परेशानी देखकर, एक कार्यकर्त्ता से रहा नहीं गया, सो एक दिन उसने हिम्मत बटोर कर गुरुजी से कह ही दिया, "गुरुदेव, ओमप्रकाश भाई साहब को पैसे की आवश्यकता है। उधार में कुछ पैसे की व्यवस्था कर देते तो अच्छा होता।"

सुनकर, गुरुजी नाराज होकर बोले, "आप लोगों ने मुझे समझ क्या रखा है? मिशन का पैसा, बेटे को मकान बनाने के लिये दे दूँ? क्या मुझे चोर समझ रखा है? बेईमान-उचक्का समझ रखा है?"

अब तो कहने वाले भाई की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई थी। फिर भी सफाई के तौर पर धीरे से बोले, "गुरुजी, हमने तो उधार की बात कही थी।" परन्तु वे कहाँ सुनने वाले थे। इस पर और भी नाराज हुए और बोले, "घर उसे बनवाना है, तो उधार की व्यवस्था भी स्वयं करे। हम मिशन के पैसे को अपने बेटों के लिये छू भी नहीं सकते।" ◈

श्री सतीश भाई साहब (गुरुदेव के सुपुत्र) की शादी के समय का प्रसंग है- सतीश भाई साहब की शादी का उत्सव प्रारंभ हो चुका था। सब मेहमान घीयामंडी, मथुरा पहुँच चुके थे। फिर भी पूज्यवर के सभी कार्यक्रम पहले की तरह ही नियमित रुप से चल रहे थे। कहीं कोई सजावट या परिवर्तन नहीं था।

शिविरार्थी तो पूज्यवर के आदर्श पर निहाल थे, किन्तु रिश्तेदारों को सजावट के कुछ भी चिह्न दिखाई न देने से खल रहा था। पर गुरुदेव से कहे कौन ? गुरुजी से कहने की किसी की हिम्मत नहीं पड़ रही थी ? सभी आपस में काना-फूसी कर रहे थे। आखिर में श्री सत्यप्रकाश जी, सतीश भाई साहब की मौसी के लड़के, जिन्हें घर में सब "सत्तो" कहकर पुकारते थे। उन्होंने जाकर गुरुजी से अपनी ब्रज भाषा में कह ही दिया। "क्या मौसा जी ? कुछ अच्छो ना लागत है। लड़को को ब्याह है, कुछ झालर-वालर तो होना ही चाहिए।" गुरुदेव ने उनकी बात सुनी व कहा- "अच्छा देखता हूँ।" उन्होंने वीरेश्वर भाई साहब को इशारे से बुलाया व कहा- "देख वीरेश्वर! सत्तो क्या कह रहा है ? जा एकाध झालर लगवा दे।" उनके स्तर के अनुरूप कम से कम पचास रुपये का झालर तो लगना ही चाहिए, ऐसा सोचकर, उन्होंने आर्डर दे दिया। दूसरे दिन प्रातः पूज्यवर ने पूछा, "वीरेश्वर, झालर के लिये कहा क्या ?" "कितने का आर्डर दिया ?" "जी, पचास रुपये का" सुनकर गुरुजी बोले, "जा, जा! मनाकर दे। मुझे नहीं लगाना पचास रुपये का झालर।" वह चौंक कर गुरुदेव का मुँह ताकने लगे सोचा, कल आर्डर दिया, आज कैसे मना करूँ ? क्या सचमुच मना करना पड़ेगा ? अभी सोच ही रहे थे कि इतने में उन्होंने फिर कहा-"जा, जल्दी मना कर दे, नहीं तो वह लगा जायेगा।" साइकिल उठाकर वे मना करने हेतु चल पड़े। ◈

एक कार्यकर्ता ने बताया। "यह उन दिनों की बात है जब आश्रमवासियों की आवश्यकता हेतु त्रिपदा- 15 में, कुछ आवश्यक सामान रखने हेतु छोटी सी दुकान बनाई गई थी और मुझे इस काम के लिये नियुक्त कर दिया गया था।

दीपावली का दिन था। दुकान में पटाखे भी आये हुए थे। तब चीनू (श्री चिन्मय पण्ड्या का घरेलू नाम) बहुत छोटा था। गुरुजी उसे गोदी में लिये हुए दुकान पर आये और बोले- "बेटा! चीनू के लायक पटाखे निकाल दो।" "जो चाहिए, ले लीजिए गुरुजी।" मैंने कुछ पटाखे सामने रखते हुए कहा। गुरुजी ने कुछ पटाखे बच्चे के हिसाब से छाँटे और कहा-"इसे बाँध दो और कितना पैसा हुआ, बताओ ?"

मैं हैरान होकर, गुरुजी की ओर देखने लगा। सोचा, दुकान तो गुरुजी की ही है। फिर भी इतने थोड़े से पटाखों के पैसे पूछ रहे हैं। मैंने झट से कहा-"गुरुजी, दुकान आप ही की है, इसके पैसे नहीं लगेंगे।"

यह सुनकर गुरुजी नाराजगी भरे स्वर में, पर समझाते हुए बोले-"देख बेटा! फिर ऐसी बात मत कहना। दुकान मिशन की है। मैं पैसे दिए बिना नहीं लूँगा। तू चाहे तो इन्हें रख ले।"

अब तो मेरी बोलती बंद हो गई। बच्चे के पटाखे, कैसे रख लेता ? मैंने तुरंत हिसाब जोड़ कर पैसे बताये, "दो रुपये, नौ आने।" पैसे देकर ही गुरुजी पटाखे लेकर गये। ◈

आत्मा की एकमात्र प्यास परमात्मा बनने की है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मितव्ययिता उनके जीवन में कूट-कूटकर भरी थी

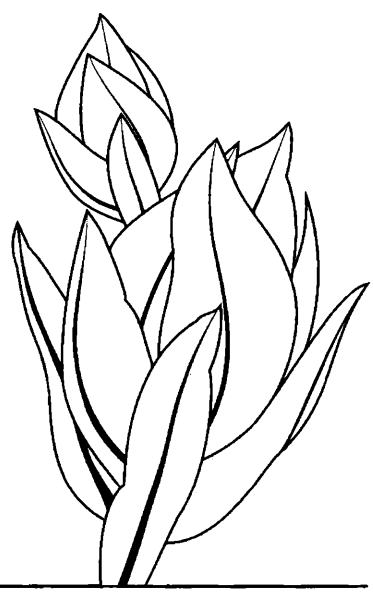
औसत भारतीय नागरिक स्तर का जीवन जीना गुरुजी-माताजी का संकल्प था। एक बार श्री गजाधर सोनी जी भाई साहब ने देखा कि गुरुजी का जूता फट रहा है। उनके मन में आया कि वे गुरुजी के लिये जूता खरीद लायें। उन्होंने गुरुजी से पूछा और जूता खरीद लाये। गुरुजी बहुत महँगा जूता नहीं पहनते थे पर गजाधर जी के मन में आया कि वे थोड़ा अच्छा वाला जूता खरीदेंगे। उन दिनों आज के जैसी महँगाई नहीं थी। गुरुजी जिस ब्रांड का जूता पहनते थे वह 11 रुपये का था। गजाधर जी को लगा थोड़ा अच्छा वाला खरीद लेता हूँ। उन्होंने दो जोड़ी खरीदी। मन में सोचा कि एक गुरुजी के चरणों से स्पर्श करा कर अपनी पूजा में स्थापित करूँगा। वे जूता खरीद कर गुरुजी के पास पहुँचे। जैसे ही गुरुजी ने उसे पहना तुरंत बोले, ''यह तो वैसा नहीं है जैसा मैं पहनता हूँ। यह जरूर महँगा होगा। कितने का लाये हो?'' सोनी जी को सुनकर गुरुजी बोले, ''मैं जो पहनता हूँ, वह 11 रुपये में आ जाता है। इतने में तो दो जोड़ी जूते आ जाते और कितने दिन निकल जाते। इसे ले जाओ और पहाड़िया जी से कहना, कि वे इन्हें लौटा कर वही जूता खरीद लायेंगे, जो मैं पहनता हूँ।''

◈◈◈

एक कार्यकर्ता ने बताया कि गुरुजी के बाथरूम का दरवाजा बहुत पुराना हो गया था। बाहर से तो ठीक दिखता था परंतु अंदर से सड़ गया था। वह कभी भी टूट सकता था। उपाध्याय जी व प्रणव जी भी उसे बदलने के पक्ष में थे। परंतु समस्या यह थी कि गुरुजी से कहे कौन? वह तो तैयार नहीं होंगे।

योजना बनाई गई कि गुरुजी को बरामदे में ले जाकर बातचीत में व्यस्त कर लेंगे। इतनी देर में बढ़ई दरवाजे का नाप ले लेगा। उन दिनों बाबूराम बढ़ई यहाँ काम करता था। उसे समझा दिया गया और योजना अनुसार उसने नाप भी ले लिया। उसे कहा भी गया था कि तुम गुरुजी के सामने मत आना किंतु वह गुरुजी को प्रणाम करने का लोभ संवरण नहीं कर पाया। सो नाप लेने के बाद उसने बरामदे में आकर गुरुजी को प्रणाम किया। उसके प्रणाम करते ही गुरुजी ने उससे पूछा, ''तुम किस काम से आये?'' उसने कहा, ''बस गुरुजी, आपको प्रणाम करने आया था।'' गुरुजी को उसके जवाब से संतुष्टि नहीं हुई। बोले, ''नहीं, तुम जरूर किसी काम से आये होगे। या तुम्हें लाया गया होगा। बताओ किस काम से आये थे?'' उसने डरते-डरते कहा, ''गुरुजी, बस थोड़ा बाथरूम के दरवाजे का नाप लेना था।'' गुरुजी तुरंत समझ गये और

सादगी में ही सच्चा सुख है। इसे किसी को अहसास करना हो तो ऋषि-युग्म का जीवन दर्शन समझें- उनके जीवन से कुछ सीखें।



सच्ची जिज्ञासा से ही भगवान मिलते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

कहा, "किसने कहा बदलने को? हमने तो कहा नहीं।" उस कार्यकर्ता की ओर मुखातिब होकर बोले, "क्यों, उसे क्या हुआ है?" उसने बताया, "गुरुजी, वह अंदर से सड़ गया है। बदलना आवश्यक है।" गुरुजी ने दरवाजे को खोला, बंद किया। फिर बोले, "इसे केवल मैं ही तो इस्तेमाल करता हूँ। यह ठीक है। अभी काफी दिन तक चलेगा। तुमको मालूम है दरवाजा 1000 रुपये का आता है। हमारा दरवाजा ठीक है। हमारा दरवाजा नहीं बदलेगा।" और वह उनकी डाँट सुनकर चुप-चाप नीचे आ गया। उनकी दृष्टि में यह अपव्यय था। जब तक किसी वस्तु से काम चल रहा है तब तक उसको काम में लाया जाना चाहिये। वे अपने प्रति थोड़ा भी अतिरिक्त खर्च सहन नहीं करते थे।

◈◈◈

ऐसे ही माताजी के पलँग का एक पाया हिल गया था। बार- बार कील आदि ठोंक कर उसे ठीक करते। वह बार-बार बाहर निकल जाता। उसे बदलना जरूरी था। माताजी, जब सोने के लिये ऊपर जातीं, तो उस पाये के पास गुरुजी ने कुछ ईंटें रखवा दी थीं। उन्हें पहले पाये के पास लगा दिया जाता, फिर माताजी उस पलँग पर लेटतीं। पलँग भी काफी पुराना हो गया था। गुरुजी से पलंग बदलने के लिये पूछा तो उन्होंने मना कर दिया। बोले, "1200 रुपये में पलँग आता है। इसे ही ठीक कर दो काम चलता रहेगा।" हम भाइयों ने योजना बनाई कि हम लोग माताजी के लिये पलंग बनायेंगे। माताजी के लिये नया पलँग बनाया गया। अब उसे कमरे में पहुँचाना था। योजना अनुसार डॉ. प्रणव जी गुरुजी को ब्रह्मवर्चस ले गये। पीछे से हम लोगों ने पलंग बदल दिया। रात को जब माताजी लेटने लगीं, तो ईंट रखने कोई नहीं गया। गुरुजी ने लड़कियों से कहा, "सुनो-सुनो! यहाँ कहीं चार ईंटें रखी होंगी, लाओ।" ईंटें तो हम उठा लाये थे, सो मिलती कहाँ? गुरुजी बोले, "वो महेंद्र कहीं रख गया होगा, उसे बुलाओ।" वे गए। उनने माताजी से कहा, "आप बैठो।" माताजी बैठ गईं। उनने कहा, "पलंग हिल तो नहीं रहा। आज ईंट की जरूरत नहीं है।" गुरुजी बोले, "क्यों नहीं है? ईंट लगाओ।" माताजी बोलीं, "जब हिल नहीं रहा है, तो रहने दो।"

गुरुजी अपने पलंग से उठे और बोले, "हिल नहीं रहा है!" उसे हिलाया-डुलाया, फिर बिस्तर उठा कर देखा और बोले, "बदल तो नहीं दिया?" अब तो सच बताना ही था। उनने कहा, "जी साहब, बदल दिया।" गुरुजी थोड़ा नाराज हुए और बोले, "1200 रुपये में पलंग आता है। तुम्हें मालूम है? एक-एक पैसा जनता देती है। वह कितनी कठिनाई से कमाती है, फिर हमें भेजती है।"

उनने कहा गुरुजी, "हम लोग माताजी के लिये कुछ नहीं कर सकते क्या? वह हमारी भी तो माताजी हैं।" गुरुजी बोले, "जरूर करो, पर अपनी कमाई में से करना। मैं जनता की कमाई में से अपने लिये एक भी पैसा खर्च नहीं कर सकता। और देखो, तुम लोग भी कभी जनता की कमाई में से अपने लिये एक भी पैसा खर्च मत करना।"

◈◈◈

माताजी भी सहज में पैसा खर्च करने नहीं देती थीं। एक बार एक बहन माताजी के लिये एक साड़ी खरीद लाई। माताजी ने जब देखा तो बोलीं, "छोरी! मेरे पास तो पर्याप्त साड़ी रखी हैं और तू तो महँगी साड़ी ले आई। ऐसा कर, इसे वापस कर दे।" उसने कहा, "नहीं माताजी, ज्यादा महँगी नहीं है।"

माताजी बोलीं, "तेरे पास बिल होगा, दिखा। मैं किसी को भेज दूँगी, वो वापस कर आयेगा।" उसने कहा, "माताजी मेरे पास बिल नहीं है और यह वापस भी नहीं हो सकती। मैंने आपके लिये खरीदी है। आपको इसे पहनना ही है।" उसने माताजी के साथ जिद की तो माताजी बोलीं, "अच्छा, तू जिद करती है, तो रख लेती हूँ पर देख! पैसा तेरा है, तो भी वो हमारा ही है। आगे से खर्च करना तो देख कर करना।"

वे कहते थे- सादगी में ही सच्चा सुख है। बेटा, ये हमारी ओढ़ी हुई गरीबी है। लोकसेवी को 'सादा जीवन उच्च विचार' की रीति-नीति पर चलना चाहिए।

◈◈◈

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करुणा की जीवंत मूर्ति हमारे गुरुदेव

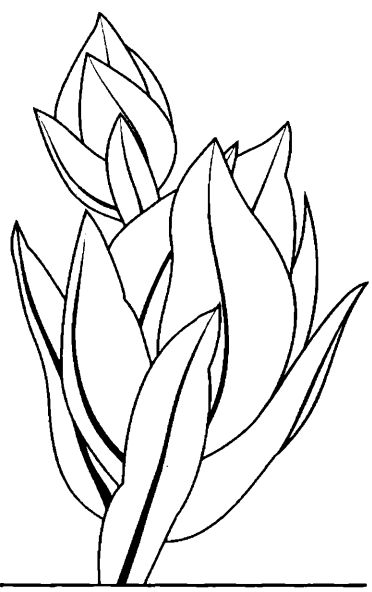
करुण हृदय वाले, औरों की पीड़ा से सतत विगलित हृदय वाले आचार्यश्री के जीवन के छोटे-छोटे वृतान्त हमें जीवन कला का पाठ पढ़ाते हैं।

गुरुजी तब युवक ही थे। यमुना में बाढ़ आई हुई थी। बहुत पानी भरा था। जानवर भी खूब मरे थे। लोगों के घर बह गये थे। बहुत हानि हुई थी। गुरुजी रोज बाढ़ का पानी देखने जाते थे। एक दिन देखा कि एक छोटे से टापू जैसे ज़मीन के टुकड़े पर एक कुत्ता घिरा हुआ है। पता चला वह तीन दिन से वहाँ फँसा है। तीन दिन से उसने कुछ नहीं खाया है। सब उसके प्रति दयाभाव प्रकट कर रहे थे, पर उसे बचाये कौन? कौन जाता? कोई जाने को तैयार नहीं था। वह भी एक कुत्ते को बचाने! कोई आदमी तो है नहीं जो सीधी तरह नाव पर बैठ जाय।

उन्होंने बड़ी मुश्किल से तीन रुपये में एक डोंगी वाले को तैयार किया। डोंगी उसके चारों तरफ चक्कर लगाती रही, पर कुत्ता ऐसा डरा हुआ था कि वह कैसे भी नाव पर आने को तैयार नहीं था। युवक श्रीराम रोटी दिखाते रहे, पर वह नहीं आया। 2-3 चक्कर लगाने के बाद डोंगी वाला बोला, "चलो भाई। मरने दो कुत्ते को।" युवक श्रीराम बोले, "एक चक्कर और।" जैसे ही डोंगी उसके पास पहुँची कि युवक श्रीराम नाव से जमीन के उस टुकड़े पर कूद पड़े और बड़ी फुर्ती से उस कुत्ते को उठाकर वापस डोंगी में कूद पड़े। कुछ क्षण डोंगी जोर से डगमगाई, पर श्रीराम कुत्ते के साथ डोंगी पर थे। डोंगी वाले ने युवक श्रीराम को बेहिसाब गाली दी "बोला, खुद मरे तो मरे, मुझे भी मारेगा।" वह तब तक गाली देता रहा जब तक कि किनारे पर नहीं आ गया। उन्होंने डोंगी वाले को 5 रुपये दिये। फिर भी डोंगी वाले ने उतरते समय कुत्ते को एक ज़ोर की लात मारी और कुत्ता, कूँ-कूँ, कऊँ-कऊँ, करता हुआ एक तरफ को दौड़ गया। ◈

दूसरों के कष्ट से उन्हें ऐसी पीड़ा अनुभव होती थी, जैसे वे स्वयं ही कष्ट भोग रहे हों। हमने उन्हें दूसरों के कष्ट में रोते भी देखा। तब एक पल को तो हम स्तब्ध रह गये, इतनी करुणा! वे श्रीरामकृष्ण परमहंस की ही भाँति शिष्यों के कष्टों को अपने ऊपर ले लेते थे और उन्हें कष्ट से मुक्ति दिलाते थे।

तुलसीपुर, के गोयल जी बड़े ही समर्पित कार्यकर्ता एवं शान्तिकुञ्ज के ट्रस्टी रहे हैं। उनकी बेटी, विजय गोयल का बहुत जबरदस्त ऐक्सीडेंट हुआ था। हालत बहुत गंभीर थी। पूरा जबड़ा इस तरह से टूट गया था कि चेहरा पहचानना भी मुश्किल हो रहा था। गोयल जी ने तुरंत शान्तिकुञ्ज गुरुजी के पास टेलीग्राम किया। बेटी की हालत गंभीर होती गई। डॉक्टरों ने जवाब दे दिया तो गोयल जी तुरंत रात में 8:00 बजे ही पत्नी सहित शान्तिकुञ्ज के लिये चल दिये। सुबह जब वे गुरुजी से मिलने पहुँचे, तब गुरुजी टेलीग्राम देख रहे थे और टेलीग्राम देखकर



ज्ञान की आराधना से मनुष्य तुच्छ से महान् बनता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

बोले कि गोयल जी की बेटी में अब कुछ रहा नहीं है। इतने में दोनों पति-पत्नी गुरुजी के पास पहुँचे और बिलख-बिलख कर रोने लगे, ''गुरुजी, कैसे भी हो, हमारी बेटी को बचा लीजिये।'' दोनों की हालत देख कर गुरुजी के नयन भी भर आये। उनकी आँखों से अश्रु बहने लगे। फिर बोले, ''अच्छा बेटा! मैं प्रार्थना करूँगा, तू लौट जा।''

शांतिकुंज के वे कार्यकर्ता जा कल इस घटना के समय वहाँ उपस्थित थे अगले दिन जब प्रणाम करने पहुँचे तो देखा गुरुजी का चेहरा बिलकुल नीला दिखाई दे रहा है, जैसे बहुत गहरी कोई चोट आई हो। उननेपूछा, तो बोले, ''कुछ नहीं, कुछ नहीं, तुझे ऐसे ही दिख रहा है, कोई भ्रम हो रहा है।'' अगले दिन उनका चेहरा सामान्य हो गया। उधर गोयल जी की बेटी की हालत में आश्चर्यजनक सुधार हो गया था। गुरुजी ने अपने शिष्य का कष्ट स्वयं पर लेकर उसे संरक्षण दिया था।◈

भिलाई की एक कार्यकर्ता कामिनी बहन के विवाह को कई वर्ष हो गए थे, पर संतान नहीं थी। इस कारण परिवार के लोग उन्हें परेशान करते थे। यहाँ तक कि पति भी अब दूसरा विवाह कर लेने की बात कहने लगे थे। मिशन का काम करने पर भी पति उन्हें ताने देते और कहते कि हम तुम्हें छोड़ देंगे। तुम आराम से अपने गुरु का काम करना।

गुरुजी के पास जाकर उन्होंने अपनी व्यथा सुनाई और फूट-फूट कर रोने लगीं। उनकी व्यथा सुनकर गुरुजी की आँखों से भी अश्रुधारा बहने लगी। जितना वह रो रही थीं, उतना ही गुरुजी भी रो रहे थे। पास खड़े कार्यकर्ता देखकर हतप्रभ थे। फिर थोड़ी देर में गुरुजी बोले, ''जा बेटी, अब तुझे कोई तंग नहीं करेगा। तू बस मेरा काम करती रहना।'' कामिनी बहन को शान्तिकुञ्ज से लौटने के नौ माह बाद ही एक सुंदर बालक की प्राप्ति हुई। ◈

खूँड़, सीकर की एक घटना है। पूज्य गुरुदेव यज्ञ में वहाँ गए थे। शोभा यात्रा वहाँ से निकलनी थी जहाँ से वे गाँव में प्रवेश करने वाले थे। स्व. वैद्य पं. रामगोपाल जी जोशी ने उनका स्वागत किया। देखा तो स्वागत करने वालों के पीछे आँखों में याचना भाव लिए साठ से अधिक कुष्ठ रोगियों की एक पंक्ति भी खड़ी थी। पूज्यवर तुरन्त उनके पास पहुँचे, सबको स्पर्शकर आशीर्वाद दिया एवं फिर कहा कि ''मैं आपकी तो कोई सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि यह अनिवार्य प्रारब्ध है, जो आपको भुगतना पड़ रहा है। किन्तु एक आशीर्वाद व आश्वासन आपको देता हूँ कि आप लोगों के बाद आपकी संतानों को यह रोग नहीं होगा।'' रोगी निहाल होकर उनके चरणों में गिर पड़े।

आज तीस वर्ष से भी अधिक हो गये हैं। उन कुष्ठ रोगियों के परिवारजनों में से किसी को भी रोग नहीं है। पूरी पंचायत क्षेत्र से उन रोगियों की मृत्यु के बाद कुष्ठ उन्मूलन हो गया है। ऐसा फलदायी प्रत्यक्ष आशीर्वचन स्वयं परमसत्ता ही दे सकती है। ◈

महामानव संवेदनाओं के घनीभूत रूप होते हैं। सन् 1984 में किसी सिरफिरे ने उनके ऊपर हमला कर दिया था। इस हमले के समाचार ने परिजनों के दिलों को झकझोर कर रख दिया। आने-जाने वालों का ताँता लग गया। एक दिन एक बहुत ही गरीब वृद्धा उनके दर्शनों के लिए आईं और गुरुदेव के पास पहुँचते ही रोने लगीं, बड़ी मुश्किल से अपनी सिसकियों को सँभालते हुए वह बोलीं, गुरुजी में आपके लिए दवा लाई हूँ। फिर बताने लगीं, मेरे गाँव में एक साइकिल वाला डॉक्टर आता है। मैंने उसे बताया कि मेरे गुरुजी को चोट लगी है, तो उसने एक ट्यूब और पट्टियाँ दे दीं। उस वृद्धा ने अपने झोले से एक दवा की ट्यूब और कुछ बेडेंज निकालकर गुरुजी को दे दिये। गुरुजी ने पास खड़े कार्यकर्ता को वह सब देते हुए कहा, ''आज इसी से मेरी पट्टी करना'' और बड़े प्रेम से, समझा-बुझाकर उस वृद्धा को रवाना किया। शाम को उसी सामान से पट्टी करवाई गई।

विपत्तियों की तुला पर जो अपनी सहनशक्तियों को तौलते रहते हैं, वही अंत में विजयी होते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शिक्षक धर्म - ब्राह्मण धर्म

शिक्षा ज्ञान का प्रतिपादन है, उसका मूर्तरूप शिक्षक है। अध्यापक को अपनी गरिमा समझने और चरितार्थ कर दिखाने में वर्तमान परिस्थितियाँ भी बाधा नहीं पहुँचा सकती। जहाँ तक शिक्षणतंत्र के वेतनमान सुविधा साधनों को बढ़ाए जाने की बात है, वहाँ तक तो अधिकाधिक साधन जुटाने का समर्थन ही किया जाएगा पर इसमें यदि कुछ कमी रहे, अड़चन पड़े तो भी यह तो हो ही सकता है कि अध्यापकगण अपनी गुरु महिमा को अपने ही बलबूते बनाए रहें और अपने गौरव का महत्त्व अनुभव करते हुए बढ़ते चलें।

विद्यार्थी अपने समय का महत्त्वपूर्ण भाग अध्यापकों के साथ रहकर विद्यालयों में गुजारते हैं। उनके प्रति सहज श्रद्धा और कृतज्ञता का भाव ही रहता है। उनके उपकारों को कोई कैसे भुला सकता है ? उनसे आयु में ही नहीं, हर हालत में छोटी स्थिति वाले छात्रों पर उनके व्यक्तित्व और कर्तृत्व की छाप पड़नी ही चाहिए।

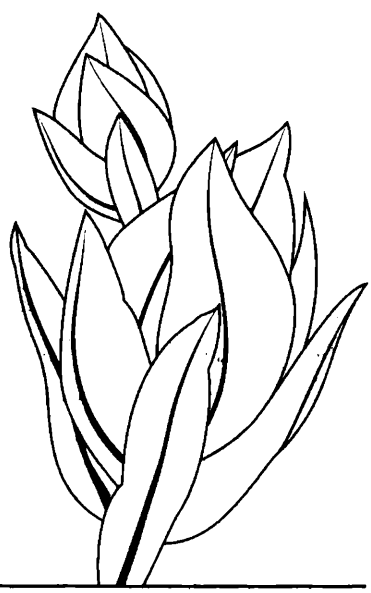
शिक्षा के सम्बन्ध में एक महान सत्य हमने सीखा था। हमने यह जाना था कि मनुष्य से ही मनुष्य सीख सकता है। जिस तरह जल से ही जलाशय भरता है, दीप से ही दीप जलता है, उसी प्रकार प्राण से प्राण सचेत होता है। चरित्र को देखकर ही चरित्र बनता है। गुरु के सम्पर्क-सान्निध्य, उनके जीवन से प्रेरणा लेकर ही मनुष्य, मनुष्य बनता है। इस प्रकार शिक्षक अपने श्रेष्ठ आचरण से श्रेष्ठ मनुष्य (शिष्य) का निर्माण करता है।

शिक्षक का व्यक्तित्व-सक्रिय विचार क्रांति की सफलता के लिए चुने जाने वाले वर्गों में से अध्यापकों से विश्वासपूर्ण अपेक्षा करने का विशेष कारण यह है कि अध्यापक वर्ग अपेक्षाकृत अधिक जागरूक, चिंतक, स्रष्टा, संतोषी तथा उत्तरदायित्वपूर्ण होता है। उसका ऐसा होना स्वभावतः इसलिए है कि वह देश के भावी नागरिकों का निर्माता होता है। वह अपने छात्रों को जिस प्रकार का बनाकर समाज को देगा, ठीक उसी प्रकार का प्रशासन तथा राष्ट्र बनेगा।

अध्यापक महानुभावों से निवेदन है कि वे अपनी गरिमा को समझें। यदि अध्यापक स्वयं को एक शिक्षाकर्मी के रूप में, सरकारी सेवारत कर्मचारी के रूप में देखता है तो इससे बड़ा दुर्भाग्य इस देश का कुछ हो नहीं सकता।

शिक्षक का दायित्व महान्-हमें अपने स्वाभिमान की रक्षा करनी है, आत्मसम्मान की रक्षा करनी है और यह तभी संभव है जब हम अपने दायित्व को समझें और उसके निर्वाह में कोताही न बरतें। शिक्षकों का दायित्व महान् है। वह ओछे चिंतन, ओछे व्यक्तियों की भावनाओं द्वारा पूरा नहीं किया जा सकता। शिक्षक व्यक्तित्व निर्माण का ढाँचा हैं। जैसा ढाँचा

परम पूज्य गुरुदेव कहते थे, कि शिक्षक व चिकित्सक - ये दो ही ब्राह्मण के कर्तव्य पक्ष से जुड़े हैं। सर्वाधिक जोर उनका शिक्षकों को युग निर्माण मिशन से जोड़ने का रहा। उन्हें ब्राह्मण बनाकर उनने युग सैनिक बना लिया।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

होता है, वैसे ही प्रतिरूप ढलते हैं। शिक्षक छात्र के लिए आदर्श है, जब वह अपने को परिष्कृत नहीं कर पाता, वहीं श्रद्धा और सम्मान में कटौती होती चली जाती है और फिर शिक्षक एक अभिनेता से अधिक और कुछ नहीं रह जाता है।

हमें अपने प्राचीन गौरव को समझना चाहिए और उसे खो देने के कारणों पर विचार कर अपने आप को बदलना चाहिए। एक शेर का बच्चा भूल से भेड़ियों के झुंड में चला गया। समयांतर में वह, यह भूल गया कि वह शेर का बच्चा है। जब एक शेर ने उसे उसकी शक्ति का आभास कराया, तो वह बहुत पछताया।

ज्ञानदान महान् दान- शिक्षक केवल छोत्रों को ही नहीं, उनके अभिभावकों को भी ज्ञान के आलोक से आलोकित कर सकता है। छात्रों के माध्यम से शिक्षक, अच्छी पुस्तकें उनके अभिभावकों तक समय-समय पर पहुँचाकर उन्हें भी स्वाध्याय परम्परा से जोड़ने का प्रयास करते रहें। इस प्रकार ज्ञान का आलोक घर-घर पहुँचाकर राजकीय सेवा के साथ-साथ महान् पुण्य का भागीदार बनने का सौभाग्य भी मिलता है।

शिक्षक छात्रों को पारिवारिक दायित्व का बोध कराएँ, समाजनिष्ठ बने रहने की प्रेरणा दें, स्वार्थपरता की हानियाँ एवं परमार्थ में ही स्वार्थ के सूत्रों को हृदयंगम कराएँ, स्वच्छता एवं स्वास्थ्य का महत्त्व समझाएँ तथा विद्यार्थियों को जीवन जीने की कला के सूत्रों का ज्ञान कराएँ। जिन कुरीतियों पर विजय पाना शासन, धर्माचार्य, पुलिस, अदालत एवं सामाजिक संगठनों के लिए असंभव है, उसे संभव बनाना शिक्षकों के लिए बड़ा आसान है। यदि वे अपने विषय के शिक्षण के साथ-साथ इन कुरीतियों से परिचित कराकर भविष्य में इनसे बचने की प्रेरणा दें तो उनका प्रभाव छात्रों के जीवन पर पड़ेगा। महान् कार्यों के प्रतिफल के रूप में समाज में सम्मान और आत्मसंतोष की उपलब्धियाँ अवश्य मिलती हैं। जिन छात्रों का लेख अच्छा है, उनको दीवार लेखन की प्रेरणा देकर दीवारों पर प्रेरणाप्रद वाक्य लिखवाने चाहिए। इस प्रकार रास्ते चलते व्यक्तियों को सद्विचार देकर आप बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य करा सकते हैं।

विद्यालयों में समय-समय पर उत्सव, जयंतियाँ, राष्ट्रीय पर्व मनाए जाते हैं। ध्यान रखना चाहिए कि उनमें जो गीत गाये जाएँ वे राष्ट्रीयता, देशभक्ति से ओतप्रोत अपनी देश जाति के गौरव-गरिमा के अनुरूप हों तथा कविता सम्मेलन इत्यादि के द्वारा उनकी प्रतिभा को विकसित किया जा सकता है। ◈

अखण्ड ज्योति पत्रिका मात्र नहीं है, उसमें लेखक का, सूत्र-संचालक का दिव्य प्राण भी आदि से अन्त तक घुला है, अन्यथा मात्र सफेद कागज को काला करके न कहीं किसी ने इतनी बड़ी युग-सृजेताओं की सेवा-वाहिनी खड़ी की है और न इतने ऊँचे स्तर के, इतनी बड़ी संख्या में सहायक-सहयोगी, अनुयायी भी मिले हैं। फिर इन अनुयायियों की भी यह विशेषता है कि जिस लक्ष्य को उनने हृदयंगम किया है, उसके लिए निरंतर ही प्राणपण से मरते-खपते भी रहते हैं। देश के कोने-कोने में बिखरी हुई प्रज्ञा पीठें, हरिद्वार और मथुरा की संस्थाएँ जो कार्य करती दीखती हैं, उनके पीछे इन्हीं सहयोगियों का रीछ-वानरों जैसा और अंगद-हनुमान्, नल-नील जैसा पराक्रम एवं त्याग काम करता देखा जा सकता है। यह सब अनायास ही नहीं हो गया। उन्हें बनाने, पकाने और शानदार बनाने में कोई अदृश्य ऊर्जा काम करती देखी जा सकती है। उसकी तेजस्विता और यथार्थता हजारों बार हजारों कसौटियों पर कसी जाती रही है और सौ टंच सोने की तरह खरी उतरती रही है, चमत्कार उसी का है। योजनाबद्ध सत्साहित्य का सृजन, अखण्ड ज्योति के प्रकाश पुंज की एक जाज्वल्यमान किरण है। इसका चमत्कारी प्रभाव तो अगले दिनों युग सृजन के रूप में देखने को मिलेगा। -पूज्य गुरुदेव

अपने स्वार्थ, अपनी तृष्णा की पूर्ति के लिए कोई भी अनुचित कार्य परमात्मा को प्रिय नहीं है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शिष्यत्व को धन्य बनाने वाली शिष्य संजीवनी

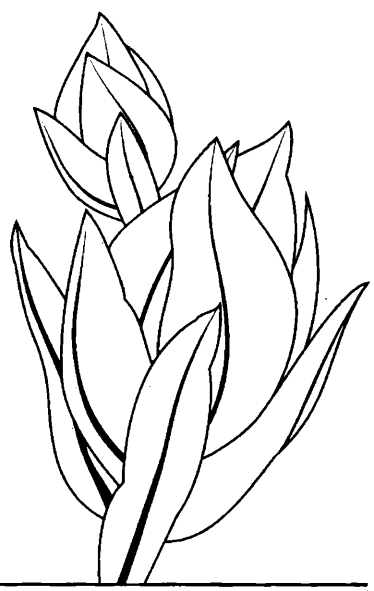
शिष्य संजीवनी की यह महाऔषधि उनके लिए है- जो श्रेष्ठ शिष्यों की अग्रिम कतार में खड़ा होना चाहते हैं। जो बार-बार अनेक बार, अनगिनत बार अपने गुरुवर द्वारा ली जाने वाली कठोरतम परीक्षा में खरे उतरना चाहते हैं। जिनकी एक मात्र चाहत है कि जीएँगे तो गुरुदेव के लिए और मरेंगे तो गुरुदेव के लिए। गुरुवर के लिए जीवन, गुरुवर के लिए मरण, जिनके जीवन का मकसद है। ऐसे शिष्यों के लिए जीवन औषधि है यह शिष्य संजीवनी।

1. ऐसे मरजीवड़े शिष्यों के लिए शिष्यत्व की कठिन साधना में उतरने के लिए कुछ विशेष बातें माननी जरूरी हैं। गुरु भक्त शिष्यों की महान् परम्परा उनसे कहती है- इससे पहले तुम्हारे नेत्र देख सकें, उन्हें आँसू बहाने की क्षमता से मुक्त हो जाना चाहिए। इसके पहले तुम्हारे कान सुन सकें, उन्हें बहरे हो जाना चाहिए। और इसके पहले तुम सद्गुरुओं की उपस्थिति में बोल सको, तुम्हारी वाणी को, चोंट पहुँचाने की वृत्ति से मुक्त हो जाना चाहिए। इसके पहले तुम्हारी आत्मा सद्गुरुओं के समक्ष खड़ी हो सके, उसके पाँवों को हृदय के रक्त से धो लेना चाहिए।

2. महत्त्वाकांक्षा को दूर करो। क्योंकि शिष्यों के लिए महत्त्वाकांक्षा पहला अभिशाप है। जो कोई अपने साधना पथ पर आगे बढ़ रहा है, उसे यह मोहित करके पथ से विचलित कर देती है। सत्कर्मों एवं पुण्यों को समाप्त करने का यह सबसे सरल साधन है। बुद्धिमान, परम समर्थ एवं महातपस्वी लोग भी इसके जाल में फँस कर बराबर अपनी उच्चतम सम्भावनाओं से स्खलित होते रहते हैं। महत्त्वाकांक्षा कितनी भी सम्मोहक व आकर्षक क्यों न हो, पर इसके फल चखते समय मुँह में राख और धूल बन जाते हैं। मृत्यु और विछोह की ही भाँति इससे भी यही सीख मिलती है कि स्वार्थ के लिए अहं के विस्तार के लिए कार्य करने से परिणाम में केवल निराशा ही मिलती है। महत्त्वाकांक्षा प्रकारान्तर से साधना का महाविनाश ही है।

3. जीवन की तृष्णा और सुख प्राप्ति की चाहत को दूर करो। किन्तु जो महत्त्वाकांक्षी हैं उन्हीं की भाँति कठोर श्रम करो। जिन्हें जीवन की तृष्णा है, उन्हीं की भाँति सभी के जीवन का सम्मान करो। जो सुख के लिए जीवन यापन करते हैं, उन्हीं की भाँति सुखी रहो। अपने हृदय के भीतर पनपने वाले पाप के अंकुर को ढूँढ़कर, उसे बाहर निकाल फेंको। यह अंकुर श्रद्धालु शिष्य के हृदय में भी यदा-कदा उसी तरह पनपने लगता है जैसे की वासना भरे मानव हृदय में। केवल महावीर साधन ही उसे नष्ट कर डालने में सफल होते हैं।

शिष्यों के लिए संजीवनी के रूप में यह संदेश गुरुसत्ता की प्रेरणा से ही लिपिबद्ध किया गया है। इसमें वे सारे सूत्र हैं, जो दयानन्द विवेकानन्द एवं भगिनी निवेदिता का निर्माण कर सकते हैं।



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

जो दुर्बल हैं, वे तो उसके बढ़ने-पनपने के साथ भी नष्ट हो जाते हैं।

4. द्वैत भाव को समग्र रूप से दूर करो। यह न सोचो कि तुम बुरे मनुष्य से या मूर्ख मनुष्य से दूर रह सकते हो। अरे! वे तो तुम्हारे ही रूप हैं। भले ही तुम्हारे भिन्न अथवा गुरुदेव से कुछ कम तुम्हारे रूप हों, फिर भी हैं वे तुम्हारे ही रूप। याद रहे कि सारे संसार का पाप व उसकी लज्जा, तुम्हारी अपनी लज्जा व तुम्हारा अपना पाप है। स्मरण रहे कि तुम संसार के एक अंग हो, सर्वथा अभिन्न अंग और तुम्हारे कर्मफल उस महान् कर्मफल से अकाट्य रूप से सम्बद्ध हैं। ज्ञान प्राप्त करने के पहले तुम्हें सभी स्थानों में से होकर निकलना है, अपवित्र एवं पवित्र स्थानों से एक ही समान।

उत्तेजना की इच्छा को दूर करो। इसके लिए इन्द्रियजन्य अनुभवों से शिक्षा लो और उसका निरीक्षण करो, क्योंकि आत्मविद्या का पाठ इसी तरह शुरु किया जाता है और इसी तरह तुम इस पथ की पहली सीढ़ी पर अपना पाँव जमा सकते हो।

5. उन्नति की आकांक्षा को भी पूरी तरह से दूर करो। तुम फूल के समान खिलो और विकसित होओ। फूल को अपने खिलने का भान नहीं रहता। किन्तु वह अपनी आत्मा को वायु के समक्ष उन्मुक्त करने को उत्सुक रहता है। तुम भी उसी प्रकार अपनी आत्मा को शाश्वत के प्रति खोल देने के लिए उत्सुक रहो, परन्तु उन्नति की किसी महत्त्वाकांक्षा से नहीं। शाश्वत ही तुम्हारी शक्ति और तुम्हारे सौन्दर्य को आकृष्ट करे, क्योंकि शाश्वत के आकर्षण से तो तुम पवित्रता के साथ आगे बढ़ोगे, पनपोगे, किन्तु व्यक्तिगत उन्नति की बलवती कामना तुम्हें केवल जड़, कठोर, संवदेनहीन व आध्यात्मिक अनुभवों से शून्य बना देगी।

6. जो तुम्हारे भीतर है, केवल उसी की इच्छा करो। क्योंकि तुम्हारे भीतर समस्त संसार का प्रकाश है। इसी प्रकाश से तुम्हारा साधना पथ प्रकाशित होगा। यदि तुम इसे अपने भीतर नहीं देख सकते, तो कहीं और उसे ढूँढ़ना बेकार है। जो तुमसे परे है, केवल उसी की इच्छा करो। वह तुमसे परे है, इसलिए जब तुम उसे प्राप्त कर लेते हो, तो तुम्हारा अहंकार नष्ट चुका होता है। जो अप्राप्य है, केवल उसी की इच्छा करो। वह अप्राप्य है, क्योंकि पास पहुँचने पर वह बराबर दूर हटता जाता है। तुम प्रकाश में प्रवेश करोगे, किन्तु तुम ज्योति को कभी भी छू न सकोगे।

7. शक्ति की उत्कट अभीप्सा करो। लेकिन ध्यान रहे कि जिस शक्ति की कामना शिष्य करेगा, वह शक्ति ऐसी होगी जो उसे लोगों की दृष्टि में "ना कुछ" जैसा बना देगी। इसी के साथ शान्ति की अदम्य अभीप्सा भी करो। पर ध्यान रहे कि जिस शान्ति की कामना तुम्हें करनी है, वह ऐसी पवित्र शान्ति है, जिसमें कोई विघ्न न डाल सकेगा। और इस शान्ति के वातावरण में आत्मा उसी प्रकार विकसित होगी, जैसे शान्त सरोवर में पवित्र कमल विकसित होता है। शक्ति और शान्ति के साथ ही स्वामित्व की भी अपूर्व अभीप्सा करो। परन्तु ये सम्पत्तियाँ केवल शुद्ध आत्मा की हों। और इसलिए सभी शुद्ध आत्मा इनकी समान रूप से स्वामी हों।

8. मार्ग की शोध करो। थोड़ा ठहरो और सोचो कि तुम सचमुच ही गुरु भक्ति का मार्ग पाना चाहते हो या फिर तुम्हारे मन में ऊँची स्थिति प्राप्त करने के लिए, आगे बढ़ने और एक भव्य भविष्य निर्माण करने के लिए स्वप्न हैं। सावधान! केवल और केवल गुरुभक्ति के लिए ही मार्ग को प्राप्त करना है। ध्यान रहे गुरुभक्ति किसी महत्त्वाकांक्षा पूर्ति का साधन बनकर कलंकित न होने पाए। इसके लिए कहीं बाहर भटकने की बजाय अपने अन्त:करण में समाहित होकर मार्ग की शोध करो।

9. भयंकर आँधी के बाद जो नीरव-निस्तब्धता छाती है, उसी में फूलों के खिलने का इन्तजार करो। उससे पहले यह शुभ क्षण नहीं आएगा। क्योंकि जब तक आँधी उठ रही है, बवंडर उठ रहे हैं, महाचक्रवातों का वेग तीव्र है, तब तक तो बस महायुद्ध के प्रचण्ड क्षण हैं। ऐसे में तो केवल साधना का अंकुर फूटेगा, बढ़ेगा। उसमें शाखाएँ और कलियाँ फूटेंगी।

10. समर्पित भावनाओं की प्रगाढ़ता में नीरवता प्रकट होती है। यह नीरवता ही वह परम शान्ति है, जिसकी कामना सभी साधक करते हैं। इस शान्ति से ही परा वाणी की अनुगूँज प्रकट होती है। वह वाणी अपने परम मौन में शिष्य को कहती है कि काट तो तुम चुके अब तुम्हें बोना

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भारतीय संस्कृति के सजीव दर्पण : आचार्य प्रवर

दिनांक 25 अक्टूबर, 1983 को जब मैं पहली बार शान्तिकुंज गया तो गायत्री परिवार के सरल, सहज, विनम्र, मृदुभाषी परिजन पीत-वस्त्र धारण किये, अत्यन्त अनुशासित ढंग से, समर्पित भावना से सेवाकार्यों में संलग्न थे। वहाँ का प्राकृतिक सौन्दर्य देखकर, मैंने सोचा कि कदाचित् मैं स्वर्ग में आ गया हूँ। प्रांगण में लगी विभिन्न प्रकार की औषधियों को शान्तिकुंज में रह रहे विशेषज्ञों की देखरेख में पुष्पित, पल्लवित देख मैं चकित रह गया।

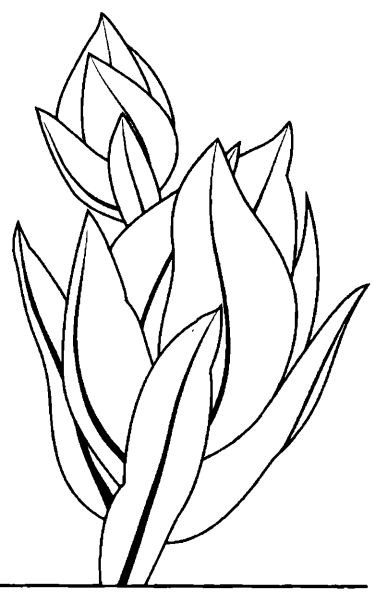
आचार्य जी एवं माता जी से प्रथम भेंट मेरे लिए चिरस्मरणीय रहेगी। सबसे पहले मेरी भेंट श्रद्धेया श्रीमती भगवती देवी शर्मा जी से हुई। उस समय मेरी धर्मपत्नी भी मेरे साथ थीं। उन्होंने हमारे पूरे परिवार की जानकारी ली। उनके सान्निध्य में स्नेह एवं वात्सल्य की जो सरिता बही उसे मैंने आजीवन संजोकर रखा है। उन्होंने कहा-शान्तिकुंज तुम्हारा घर है, यहाँ आते रहा करो। उनकी आज्ञा शिरोधार्य कर, मैं अक्सर इस पवित्र स्थल पर आता रहता हूँ।

इसके पश्चात् पू.गुरुदेव के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनके मुख पर दिव्य तेज विद्यमान था। बातचीत के दौरान, उन्होंने कहा कि तुम पिछले जन्म के संत हो, तुम्हारी संत प्रवृत्ति को मैं आगे बढ़ाऊँगा । मैं अभिभूत हो गया और कृतज्ञ आँखों से उन्हें निहारता रहा। उसी दिन, मैंने उनसे गायत्री मंत्र की दीक्षा ली।

यहाँ का वातावरण अन्य स्थानों से भिन्न है। प्रात: काल 3.30 बजे घंटा बजता है। सब लोग इकट्ठे होते हैं। सामूहिक यज्ञ होता है। गायत्री मंत्र एवं महामृत्युंजय मंत्र की आहुतियाँ दी जाती हैं। फिर लोग गुरुदेव एवं माता जी के कक्ष में जाते हैं। शान्तिकुंज जाने पर हर बार लगता है कि मेरी 'बैटरी' चार्ज हो गई। हम नई ऊर्जा लेकर लौटते हैं।

गुरुदेव के पास देखता था कि तरह-तरह की पत्रिकायें मेज पर रहती थीं। एक बार मैंने देखा कि 'लैंसेट' के ब्रिटिश मेडिकल जर्नल्स, रखे हैं। मुझे आश्चर्य हुआ कि चिकित्सा विज्ञान की प्रतिष्ठित पत्रिकाएँ भी गुरुदेव पढ़ते हैं। उनकी सोच व दृष्टि वैज्ञानिक थी और उनको संसार के विभिन्न क्षेत्रों की जानकारियाँ थी। गुरुदेव को मेरे स्वास्थ्य की भी चिन्ता थी। मुझको मधुमेह का रोग है। वह आयुर्वेदिक औषधियाँ मुझको देते थे और कभी-कभी कैप्सूल में भर कर दवा मुझको भेजते थे। यह मेरा परम सौभाग्य था कि उनकी कृपादृष्टि मेरे तथा मेरे परिवार पर सदैव रही। पूज्य माता जी का आर्शीवाद मुझको सदैव मिलता था।

एक भेंट जिसने एक प्रबुद्ध व्यक्ति को हमेशा के लिए युग तीर्थ से जोड़ दिया। यह वृतान्त किसी को भी इस पावन स्थान की महिमा को समझाने में सक्षम है।



अध्यात्म उस दूरदर्शिता का नाम है जो व्यक्ति यदि अंगीकार कर ले, तो उसका देवत्व की ओर अग्रगमन का पथ कण्टकविहीन होता चला जाता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

कभी-कभी मै उनको पत्र द्वारा अपना तथा परिवार का हाल लिख कर भेजता था। उनका उत्तर लौटती डाक से आता था और मुझको सांत्वना तथा शक्ति मिलती थी।

एक बार मुझको भयंकर निमोनिया का प्रकोप हुआ था। ज्वर ठीक नहीं हो रहा था। भूख-प्यास समाप्त-सी हो गई थी। सामने परोसी हुई थाली फेंक देने की इच्छा करती थी। एक्सरे से पता चला कि बाएँ फेफड़े मे विकार है और कुछ चिकित्सक कैन्सर रोग का अनुमान कर रहे थे। मुझको बताया गया कि चेन्नई जाकर परीक्षण और इलाज करवाऊँ। मैंने अपना हाल लिखकर माता जी को भेजा। इधर मेरा परीक्षण होना था, जिसमें श्वाँस की नली में आला डालकर टेलिस्कोप (ब्रांकोस्कोपी) द्वारा देखा जाता है। यह जाँच एक विशेषज्ञ डाक्टर द्वारा उनके अस्पताल में होना था।

उसी दिन माता जी का उत्तर आया कि हम तुम्हारे लिए पूजा कर रहे हैं। तुम तनिक चिन्ता मत करो। पत्र के साथ छोटी पुड़िया में भभूत भी थी और लिखा था कि तुम इसको खा लो। मैंने जैसे ही भभूत का सेवन किया, तुरन्त जोर की उल्टी आई और ढेर सारा मवाद खून के साथ निकल गया। इसके साथ मेरा ज्वर ठीक हो गया और धीरे-धीरे स्थिति सामान्य हो गई। लगता था कि फेफड़े का फोड़ा फूट गया और उसका मवाद और खून निकल गया। मैंने माता जी को पत्र द्वारा सूचित किया और उनका आशीर्वाद प्राप्त किया।

गुरुदेव ने स्वयं 3000 से अधिक पुस्तकों की रचना की है। समस्त भक्तजन, शिष्य अनुयायी तथा असंख्य सामान्य पाठकगण इनके गहन तात्विक ज्ञान से लाभान्वित हो रहे है। शान्तिकुंज द्वारा प्रकाशित 'अखण्ड ज्योति' राष्ट्रीय अतंर्राष्ट्रीय स्तर की मासिक पत्रिका 10 लाख से अधिक लोगों द्वारा पढ़ी जाती है, जिसमे अध्यात्म, विज्ञान एवं पर्यावरण से परिपूर्ण ज्ञानवर्धक सामग्री उपलब्ध रहती है। आश्रम से संबधित प्रत्येक स्तर पर नैतिक मूल्यों पर विशेष ध्यान दिया जाता है। इसके अतिरिक्त, एक पाक्षिक पत्रिका भी प्रकाशित होती है जिसे लोग बड़े चाव से पढ़कर संवार कर रखते हैं। आध्यात्मिक उन्नयन के साथ-साथ समाजसेवा गायत्री परिवार के जीवन का अभिन्न अंग है।

जब कभी आपदा की स्थिति आती है तो इस परिवार के असंख्य सेवक नि:स्वार्थ भाव से बढ़ चढ़ कर बचाव कार्य में भाग लेते है। देश के ही नहीं, विश्व के अनेक श्रेष्ठ स्वयंसेवी संगठनों में शान्तिकुंज एवं गायत्री परिवार का विशाल नेटवर्क प्रथम पंक्ति में प्रतिष्ठित है। सभी जागरूक, प्रबुद्धजनों के लिए यह एक तीर्थस्थल के समान है, जिसकी तपोभूमि से वे निरन्तर प्रेरणा प्राप्त करते रहते हैं। इस पुण्य भूमि में परम पूज्य गुरुदेव सूक्ष्म शरीर से सतत प्रेरणा और आशीर्वाद से सब को अनुगृहीत करते हैं। उनको मेरा शत्-शत् नमन। ◈

एक दिन धीयामंडी में बैठे गुरुदेव मिशन की भावी रुपरेखा पर चिंतन कर रहे थे। इसी समय एक संस्कृत प्रेमी सज्जन जो काफी प्रतिष्ठित थे, गुरुदेव से मिलने पधारे। उन्होंने उनको साथ लेकर तपोभूमि की विविध गतिविधियों की जानकारी कराई। उसी क्रम में विद्यालय की बारी आयी। स्वावलंबन संबंधी शिक्षा, जीवन परिशोधन प्रयोगों के साथ विद्यार्थियों का लोकसेवियों के रूप में गठन आदि सारा कुछ स्पष्ट किया। लेकिन वह सज्जन बार-बार एक ही बात कहते जा रहे थे। "यहाँ सब कुछ संस्कृत में क्यों नहीं पढ़ाया जाता? आप सारा जोर संस्कृत पर क्यों नहीं देते?" काफी कुछ सुन लेने के बाद गुरुदेव ने कहा-मेरा सारा जोर संस्कृत की जगह संस्कृति पर है। मैं यहाँ संस्कृत नहीं, संस्कृति का शिक्षण देता हूँ। तनिक तेज स्वर में कहे गए इन वाक्यों को सुनकर आगंतुक बोले, "आप ठीक कह रहे हैं संस्कृति बची रहेगी तो मानवता भी बच जाएगी।"

भगवान् में सम्पूर्ण श्रद्धा रखनी चाहिए। भगवान् जो कुछ कमी देखते हैं, उसे दूर करने के लिए सब कुछ करते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चाहिए। यह वाणी-शिष्य के अन्त:करण की परम शान्ति एवं सघन नीरवता का ही एक रूप है। यह स्वयं तुम्हारे सद्गुरु के स्वर हैं। उन्हें विश्वास है कि तुम उनके आदेश का पालन करोगे। इस अवस्था में तुम अब ऐसे शिष्य हो जो अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है। तुम ब्राह्मी चेतना के संकेतों को सुन सकते हो, देख सकते हो, बोल सकते हो। ऐसा इसलिए हो सका है, क्योंकि तुमने अपनी वासनाओं को जीत लिया है और आत्मज्ञान प्राप्त कर लिया है।

11. भावी साधना समर में साक्षी भाव रखो और यद्यपि तुम युद्ध करोगे, पर तुम योद्धा मत बनना। हाँ यह सच है कि वह तुम्हीं हो, फिर भी अभी की स्थिति में तुम सीमित हो। अभी तुमसे भूल सम्भव है। लेकिन वह शाश्वत और नि:संशय है। जब वह एक बार तुममें प्रवेश करके तुम्हारा योद्धा बन गया, तो समझो कि वह कभी भी तुम्हारा त्याग न करेगा। और महाशान्ति के दिन तुमसे एकात्म हो जाएगा।

अपने भीतर उस महासेनापति का आह्वान करो और उन्हें युद्ध की बागडोर सौंप दो। उन्हें बुलाने में सतर्क रहो, नहीं तो लड़ाई के उतावलेपन में तुम उन्हें भूल जाओगे और याद रहे जब तक उन्हें तुम अपनी बागडोर नहीं सौंपोगे, वे तुम्हारा दायित्व स्वीकार नहीं करेंगे। यदि उन तक तुम्हारी प्रार्थना के स्वर पहुँचेंगे तभी वह तुम्हारे भीतर लड़ेंगे और तुम्हारे भीतर के नीरस शून्य को भर देंगे। साधना के महासंग्राम में उन्हीं का आदेश पाना है और उसका पालन करना है। उन्हीं के प्रति समर्पण के स्वरों को अपनी साधना के संगीत में पिरोकर ही यह महायुद्ध जीता जा सकता है।

12. जीवन का संगीत सुनो। इस संगीत को सुनने के लिए तुम्हें अपने दिल की गहराइयों में उतरना होगा। यह काम आसान नहीं है। शुरुआत में यही अहसास होगा कि यहाँ तो ऐसा कोई संगीत नहीं है। कितना ही खोजो पर एक बेसुरे कोलाहल के सिवा और कुछ भी सुनायी नहीं पड़ता। पर तुम्हें थकना नहीं है, बस और अधिक गहराइयों में उतरना है। इसके बावजूद भी यदि निष्फलता हाथ लगे तो हारे नहीं, बल्कि और ज्यादा गहरे में उतर कर फिर से ढूँढ़ो। भरोसा करो, एक नैसर्गिक संगीत का दिव्य स्रोत हम सभी के हृदयों में है।

13. सुने गए स्वर माधुर्य को अपनी स्मृति में अंकित करो। जब तक तुम केवल मानव हो, तब तक उस महागीत के कुछ अंश ही तुम्हारे कानों तक पहुँचते हैं। परन्तु यदि तुम ध्यान देकर सुनते हो, तो उन्हें ठीक-ठीक स्मरण रखो, जिससे कि जो कुछ तुम तक पहुंचा है, वह खो न जाए। और उससे उस रहस्य का आशय समझने का प्रयत्न करो, जो रहस्य तुम्हें चारों ओर से घेरे हुए है। एक समय आएगा जब तुम अपनी अन्तर्चेतना में सद्गुरु की वाणी की अनुभूति कर सकोगे। इसी परमवाणी में सर्वव्यापी अस्तित्व के संकेत हैं। इन दिव्य संकेतों की स्वर लहरियों से स्वर बद्धता का पाठ सीखो। ध्यान दो इस सत्य पर कि जीवन की अपनी भाषा है और वह कभी मूक नहीं रहती और उसकी वाणी एक चीत्कार नहीं है, जैसा कि तुम भूलवश समझ लेते हो। वह तो एक महागीत है, उसे सुनो और उससे सीखो कि तुम स्वयं उस सुस्वरता के अंश हो, और उससे उस सुस्वरता के नियमों का पालन करना सीखो।

14. समग्र जीवन का सम्मान करो, जो तुम्हें चारों ओर से घेरे हुए है। अपने आसपास के अनवरत बदलने वाले प्रवाहमान जीवन को गहराई से देखो, क्योंकि यह मानवीय संवेदनाओं का ही सघन रूप है और ज्यों-ज्यों तुम इसकी बनावट को परखोगे, बनावट पर ध्यान दोगे, त्यों-त्यों तुम क्रमिक रूप से जीवन के विशालतम शब्द एवं व्यापकतम अर्थ को पढ़ और समझ सकने लायक होगे। इसी के साथ तुम्हें मानवीय हृदय में झाँकने की कला सीखनी होगी। हमेशा मानव हृदय से उफनती भाव संवेदनाओं की गंगोत्री में स्नान करने की कोशिश करो। तभी तुम जान पाओगे कि यह जगत् कैसा है और जीवन के रूप कितने विविध हैं। इसे जानने के लिए निष्पक्षता और तटस्थता अपनाओ। बुद्धि को साक्षी बने रहने दो। तभी तुम समझ पाओगे कि न कोई तुम्हारा शत्रु है और न कोई मित्र, सभी समान रूप से तुम्हारे शिक्षक हैं। तुम्हारा शत्रु तुम्हारे लिए एक रहस्यमय प्रश्न की भाँति है, जिसे तुम्हें हल करना है। एक अनबूझ

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

पहेली की भाँति है, जिसे बूझना है। भले ही इसे हल करने में, बूझने में युगों का समय लग जाये। क्योंकि मानव को समझना तो है ही। तुम्हारा मित्र तुम्हारा ही अंग बन जाता है, तुम्हारे ही विस्तार का एक अंश हो जाता है, जिसे समझना कठिन होता है।

१५. अपनी अन्तरात्मा का पूर्ण रूप से सम्मान करना सीखो। क्योंकि तुम्हारे हृदय के द्वारा ही वह उजाला मिलता है, जो जीवन को आलोकित कर सकता है। और उसे तुम्हारी आँखों के सामने स्पष्ट करता है। ध्यान रहे, हमेशा ही अपने हृदय को समझने में भूल होती है। इसका कारण केवल इतना है कि हम हमेशा बाहर उलझे-फँसे रहते हैं। जब तक बाहरी उलझनें कम नहीं होती, जब तक व्यक्तित्व के बन्धन ढीले नहीं होते, तब तक आत्मा का गहन रहस्य खुलना प्रारम्भ नहीं होता।

जब तक तुम उससे अलग एक ओर खड़े नहीं होते, तब तक वह अपने को तुम पर प्रकट नहीं करेगा। तभी तुम उसे समझ सकोगे और उसका पथ प्रदर्शन कर सकोगे, उससे पहले नहीं। तभी तुम उसकी समस्त शक्तियों का उपयोग कर सकोगे। और उन्हें किसी योग्य सेवा में लगा सकोगे, उससे पहले यह सम्भव नहीं है। जब तक तुम्हें स्वयं कुछ निश्चय नहीं हो जाता, तुम्हारे लिए दूसरों की सहायता करना असम्भव है। जब तुमको पहले कहे गए सभी सूत्रों का ज्ञान हो चुकेगा, और तुम अपनी शक्तियों को विकसित एवं अपनी इन्द्रियों को विषय-भोग की लालसाओं से मुक्त करोगे। तभी अन्तरात्मा के परम ज्ञान मन्दिर में प्रवेश मिलेगा और तभी तुम्हें ज्ञात होगा कि तुम्हारे भीतर एक स्रोत है, जहाँ से वह वाणी मुखरित होती है, जिसमें जीवन के सभी रहस्यार्थ छुपे हैं।

१६. आन्तरिक इन्द्रियों को उपयोग में लाने की शक्ति प्राप्त करके, बाह्य इन्द्रियों की वासनाओं को जीतकर, जीवात्मा की इच्छाओं पर विजय पाकर और ज्ञान प्राप्त करके, हे शिष्य! वास्तव में मार्ग में प्रविष्ट होने के लिए तैयार हो जा। मार्ग मिल गया है, उस पर चलने के लिए अपने को तैयार कर। इस मार्ग के रहस्यों का ज्ञान तू पूछ पृथ्वी से, वायु से, जल से- इन्हीं में इन रहस्यों को तेरे लिए छुपाकर रखा है। यदि तूने अपनी आन्तरिक इन्द्रियों को विकसित कर लिया है, तो तू इस काम को कर सकेगा। इन रहस्यों को तू पृथ्वी के पवित्र पुरुषों से पूछ, यदि तू शिष्यत्व की कसौटी पर खरा है, तो वे तुझे इन रहस्यों का ज्ञान देंगे। तू भरोसा कर- बाह्य इन्द्रियों की लालसाओं से मुँह मोड़ लेने भर से तुझे यह रहस्य, ज्ञान पा लेने का अधिकार प्राप्त हो जाएगा।

१७. पूछो अपने अन्तरतम् से, उस एक से, जीवन के परम रहस्य को, जो कि उसने तुम्हारे लिए युगों से छिपा रखा है। अनुभव कहता है कि जीवात्मा की वासनाओं को जीत लेने का कार्य बड़ा कठिन है। इसमें युगों लग जाते हैं। इसलिए उसके पुरस्कार को पाने की आशा मत करो, जब तक कि वासनाओं को जीत लेने का दुष्कर कार्य पूरा न हो जाए। इस कार्य के पूरा हो जाने पर ही इस नियम की उपयोगिता सिद्ध होती है। तभी मानव-अतिमानव अवस्था की ड्योढ़ी पर पहुँच पाता है। इस अवस्था में जो ज्ञान मिलता है, वह इसी कारण मिल पाता है कि अब तुम्हारी आत्मा सभी शुद्धतम् आत्माओं में से एक है। और उस परम तत्त्व से एक हो गयी है।

यह ज्ञान तुम्हारे पास उस परमात्मा की धरोहर है। उन प्रभु के साथ तनिक सा भी विश्वासघात अथवा इस दुर्लभ ज्ञान का दुरुपयोग अथवा अवहेलना शिष्य या साधक के पतन का कारण भी हो सकता है। कई बार ऐसा होता है कि परमात्मा की ड्योढ़ी तक पहुँच जाने वाले लोग भी नीचे गिर जाते हैं। इसलिए इस क्षण के प्रति श्रद्धा एवं भय के साथ सजग रहो।

१८. जो दिव्यता के द्वार तक पहुँच चुका है, उसके लिए कोई भी नियम नहीं बनाया जा सकता, और न कोई पथ प्रदर्शक ही उसके लिए हो सकता है, फिर भी शिष्यों को संकेत देने के लिए कुछ संकेत दिए गए हैं, कुछ शब्द उचारे गए हैं- 'जो मूर्त नहीं है और अमूर्त भी नहीं है, उसका अवलम्बन लो। केवल नाद रहित वाणी ही सुनो। जो बाह्य और अन्तर दोनों चक्षुओं से अदृश्य है, केवल उसी का दर्शन करो। तुम्हें शान्ति प्राप्त हो।'

◈◈◈

दीन-हीन की तरह दुःख को भोगते रहना अभिशाप है, किन्तु उसके प्रभाव से प्रभावित होकर सचेत होना निश्चय ही जीवन का वरदान है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शान्तिकुञ्ज की संस्कारित भूमि

पूज्य गुरुदेव शांतिकुञ्ज के लिए जमीन तलाश रहे थे। 1968 के दिन थे, आराध्य सत्ता का निर्देश था- अब हरिद्वार को कर्मभूमि बनाना है। वहाँ एक ऐसा केन्द्र बनाओ जहाँ से सम्पूर्ण विश्व को मार्गदर्शन मिलता रह सके। वे हरिद्वार आये, आस पास की सभी जमीनों को देखा। ठेकेदारों ने उन्हें अच्छी-अच्छी जमीनें दिखाईं पर किसी पर भी दृष्टि जम नहीं रही थी। कहीं पर भी ऊर्जा के स्पंदन मिल नहीं रहे थे। आस-पास की प्राय: सभी जमीनों को देखते कुछ परखते हुए वे एक स्थान पर आ कर ठहर गए। पास में कुछ और भी लोग खड़े थे, जो देखे गए भूखण्डों की अनुमानित कीमतें, विविध दृष्टिकोणों से उनकी विशेषताएँ बता रहे थे। पता नहीं इस बात-चीत ने उनके कानों में प्रवेश किया या नहीं। वह यथावत् खड़े रहे, जैसे अविज्ञात की किन्हीं रहस्यमयी तरंगों को पकड़ रहे हों। यहाँ उन्हें अंतरिक्ष की, दैवी सत्ताओं की चेतन तरंगों का, दिव्य प्राण प्रवाह का आभास हो रहा था। परंतु मुखमण्डल में किसी तरह की प्रतिक्रिया का कोई चिन्ह नहीं उभरा। अचानक उन्होंने अपनी धोती समेटी और सामने खड़े भूखण्ड का एक चक्कर लगाया। एक सन्तोष की रेखा झलकी मानो खोज पूरी हुई।

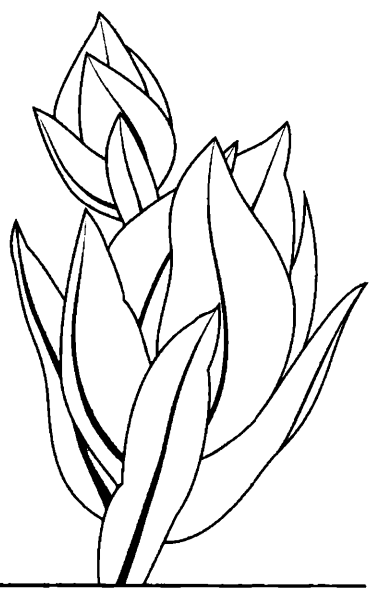
"मुझे यह जमीन खरीदनी है, बात चलाओ।" "यह ?" एक शब्द के उच्चारण के साथ सभी के चेहरे पर आश्चर्य घनीभूत हो उठा। सामान्य तौर पर यह उचित भी था। घुटनों से भी गहरा दलदल, छाती तक बढ़ी घास, यातायात की असुविधा। ऐसी जगह को खरीदने की सोचना कम से कम बुद्धिमत्ता की दृष्टि से तो कतई ठीक नहीं था।

"हाँ, यही।" उनका जवाब था जो शायद बुद्धि की सीमाओं से अछूते किसी क्षेत्र से उभरा था। पर यहाँ की दलदली भूमि में न तो मकान बन सकेंगे। फिर कीमतें भी ज्यादा हैं। प्राय: सभी ने अपनी अक्ल की सीमाओं को छूते हुए अपने-अपने तर्क प्रस्तुत किये।

इन दिनों उनके मन में अध्यात्म की एक जीती जागती प्रयोगशाला बनाने की योजना उतरी थी। एक ऐसी प्रयोगशाला जहाँ मानव की आंतरिक संरचना में फेर बदल किया जा सके, उसकी अन्तर्शक्तियों को जगाया निखारा जा सके। समाज के लिए लोकसेवियों को गढ़ना, नवयुग को मूर्त करना भी महत्वपूर्ण उद्देश्य थे। ये सभी कल्पनाएँ जहाँ से मूर्त हो सकें ऐसी कार्यशाला हर स्थान पर तो नहीं बन सकती, पर सहयोगियों के अपने तर्क थे। कुछ वैसी ही स्थिति आ पड़ी जैसी श्री अरविन्द के सामने चन्द्रनगर से पाण्डिचेरी प्रस्थान करते समय आयी थी।

उनके समक्ष भी सहयोगियों के सुझाव थे। तप करने के लिए वहीं क्यों

शांतिकुंज युगतीर्थ है, कल्पवृक्ष है। करोड़ों, गायत्री साधकों का यह गुरुद्वारा है। यहाँ दैवी चेतना की सतत् उपस्थिति है। इस नवयुग की गंगोत्री के उद्गम की कहानी बड़ी ही अद्भुत है...



Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

फ्रांस शासित दूरस्थ प्रदेश, यात्रा की कठिनाइयाँ, स्वजनों का विछोह। एकान्तवास तो कहीं भी किया जा सकता है, फिर स्थान विशेष का आग्रह किसलिए? श्री अरविन्द का जवाब था- भगवान का, गुरु का आदेश। तुम लोग बाद में देखोगे समझोगे। इस कथन के सम्मुख सभी तर्क मौन हो गये। बाद में रहस्य उद्घाटित हुआ कि पाण्डिचेरी दुर्धर्ष तपस्वी महर्षि अगस्त्य की तपस्थली थी। अध्यात्म की अकूत सम्पदाओं को स्वयं में संजोये स्थान था यह। इन प्रचण्ड संस्कारों वाली भूमि के अलावा अतिमानस की प्रयोगशाला और कहाँ स्थापित होती?

इस बार भी जवाब यही था कि गुरु का आदेश है। दिव्यसत्ता ने इसी स्थान के बारे में निर्देशित किया है। तुम लोग बाद में देखोगे समझोगे। सभी तर्क शिथिल हो गए। आर्थिक हानि, असुविधाओं का रोना-धोना बेकार रहा। सब कुछ निश्चित हो जाने पर एक दिन पूज्य गुरुदेव ने धीरे से कहा—जानते हो, यह स्थान ब्रह्मर्षि विश्वामित्र की तपस्थली रही है। गंगा की सप्त धाराओं में एक कभी इसी स्थान को सींचती रही है। सुनने वाले भौंचक्के थे। प्रखर से भी प्रखर बुद्धि, महायोगी के सम्मुख कितनी बौनी हो जाती है, आज स्पष्ट था। कोई क्या बोलता?

वह कह रहे थे। देवदारु को रेगिस्तान में नहीं उगाया जा सकता। शुष्क स्थानों पर उगने वाली कंटीली झाड़ियाँ, वहाँ के पशु पक्षी हिमादि में अपना अस्तित्व गँवा बैठेंगे। संसार की प्रत्येक वस्तु, प्राण, जीवन को अपना पूर्ण विकास करने के लिए एक निश्चित वातावरण चाहिए। आध्यात्मिकता भी इसकी अपेक्षा करती है।

अपेक्षा पूरी हुई। गंगा की गोद, हिमालय के पद प्रान्त में स्थित विश्वामित्र की तपःस्थली ऋषि युग्म की दीर्घ तपश्चर्या, नित्य यज्ञ, लक्षाधिक साधकों के साधनात्मक पुरुषार्थ से तीर्थ, महातीर्थ और अब युगान्तर चेतना के गोमुख के रूप में परिवर्तित हो गई। शांतिकुंज नाम से जाना जाने वाला यह दिव्य क्षेत्र सहस्राधिक वर्षों तक मानवता को नवीन प्राण देता रहेगा। ◈

भिखारी नहीं, बेटा बनकर आओ

एक बार एक कार्यकर्ता गुरुजी के पास आये। गुरुजी उस समय गोष्ठी ले रहे थे। उनके आते ही गुरुजी ने अपना विषय बदला और बोले, 'आ गया बेटा! आ बेटा आ। आज एक बात कहता हूँ। जब भी मेरे पास आओ तो बेटा बनकर आओ, भिखारी बनकर नहीं।' 'अच्छा, बताओ भिखारी जब आता है, तो उसकी क्या स्थिति होती है।' कार्यकर्ता ने कहा, 'गुरुजी भिखारी जब आता है, तो वह दरवाजे पर ही खड़ा रहता है। बाहर से अजीब-अजीब सी आवाजें लगाता रहता है। घर के अंदर से भी आवाज आती है कि रुको! कोई बासी रोटी होगी तो देते हैं और अगर ज्यादा भिखारी होते हैं तो घर के भीतर से कोई प्रतिक्रिया नहीं होती। वह कुछ देर तक आवाज लगाकर चले जाते हैं।

फिर गुरुजी बोले, 'अब मैं बताता हूँ, बेटा जब आने को होता है तो क्या होता है? उसकी चिट्ठी के अनुसार माँ उसका इंतजार करती है। उसके लिये लड्डू बनाती है, सकरपारे बनाती है, तैयारी करती है। एक-एक दिन पूछती है, अब 6 दिन रह गये.. 5 दिन रह गये.. 4 दिन रह गये.. दिन गिनती रहती है। उसकी राह देखती है। बता बेटा! बेटे का महत्तव है कि भिखारी का।' इतना सम्मान! इतना प्यार-दुलार!.. सुनकर मेरी आँखें सजल हो गईं। गुरुजी के यह शब्द आज भी ज्यों के त्यों मेरे स्मृति पटल पर अंकित हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गायत्री परिवार के प्रति मूर्धन्यों के मत

पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम : ''युगऋषि श्रीराम शर्मा आचार्य वर्तमान भारत में ज्ञान क्रांति के अगुआ है।'' उन्होंने यह जान लिया था कि आने वाली दुनिया तर्क की दुनिया होगी। बिना बौद्धिक संतुष्टि के ज्ञान की कोई भी धारा स्वीकार्य नहीं हो सकती। इसीलिए उन्होंने इक्कीसवीं सदी का धर्म वैज्ञानिक अध्यात्मवाद को बताया। वैज्ञानिक अध्यात्मवाद वास्तव में एक ऐसी विधा है जहाँ तर्क और संवेदना का संगम हो जाता है। वैज्ञानिक अध्यात्मवाद की इस धारा को दुनिया के कोने-कोने में पहुँचाने के महाभियान में आज भी 'अखिल विश्व गायत्री-परिवार' के प्रमुख डॉ. प्रणव पण्ड्या संलग्न हैं।

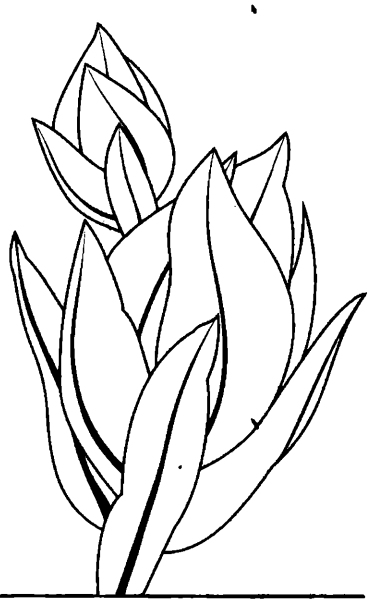
राज्यपाल महामहिम चेन्ना रेड्डी : हिमालय से विशेष तप शक्ति लेकर गुरुजी ने शान्तिकुञ्ज लौटकर देव संस्कृति के अभियान, 21 वीं सदी उज्ज्वल भविष्य को कार्यरूप देने हेतु प्राण-प्रत्यावर्तन सत्र आरम्भ किये थे। इसी बीच एक दिन उत्तर प्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल महामहिम चेन्ना रेड्डी शान्तिकुञ्ज पधारे। उनके आगमन पर शान्तिकुञ्ज में एक सभा का आयोजन हुआ।

गुरुदेव ने देव संस्कृति की मीमांसा करते हुए उसके वर्तमान विकृत स्वरूप की जो व्याख्या की, उसकी दयनीय दशा पर बोलते हुए स्वयं गुरुदेव कई बार सजल-नयन हो गये थे। हमने देखा, उनका विद्वतापूर्ण विवेचन और भावी योजना सुनकर, स्वयं राज्यपाल महोदय भी सजल-नयन हो गये थे। अपने धन्यवाद भाषण में राज्यपाल महोदय ने उनके भाष्य को सराहा व कहा कि ''आज मैं अपने जीवन में प्रथम बार एक महान् संत, तपस्वी और भारतीय संस्कृति के सच्चे उपासक का दर्शन कर पाया हूँ।'' इसके बाद वे सदा के लिए गुरुजी के अनुयायी बन गये।

श्री निरंजननाथ आचार्य: श्री निरंजननाथ आचार्य का व्यक्तित्व अनोखा था। पूज्य गुरुदेव जब हिमालय से लौटकर शान्तिकुंज रहने लगे तो वे अक्सर उनसे मिलने हरिद्वार पहुँच जाया करते थे। उस समय वे विधानसभा अध्यक्ष थे। श्री हरदेव जोशी मुख्यमंत्री थे और श्री भैरोसिंह शेखावत विरोधी दल के नेता थे।

एक बार वे अपनी कार में अपने साथ श्री जोशी जी एवं शेखावत जी दोनों को एक साथ बिठाकर पूज्य गुरुदेव से मिलाने ले आए। उन दिनों वानप्रस्थ सत्र चल रहे थे। पूज्य गुरुदेव के साथ तीनों नेता एक साथ मंच पर बैठे। उस समय उन्होंने मंच से यही कहा था कि मैं पूज्य गुरुदेव के पास पहली बार कोई अच्छी नीयत से नहीं पहुँचा था, लेकिन उनके अद्भुत व्यक्तित्व ने मुझे अपना अनन्य अनुयायी बना लिया।

शांतिकुंज-युगान्तरकारी चेतना-युग निर्माण योजना-गायत्री परिवार प्रज्ञा अभियान सभी एक - दूसरे के पर्यायवाची हैं। इस दिव्य साधना स्थली में ढेरों नामचीन हस्तियाँ आयी हैं और अपनी अभिव्यक्तियाँ दी हैं।



मनुष्य अपना सुधार करने में लग जाए तो वह संसार का बहुत भारी सुधार कर सकता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

सन् 1969-70 की बात है, जब वे पूज्य गुरुदेव से पहली बार मिले थे। पूज्य गुरुदेव की मथुरा से विदाई का समय निकट आ रहा था। देश में जगह-जगह बड़े-बड़े यज्ञायोजन किए जा रहे थे, जिनमें पूज्य गुरुदेव भी पहुँच रहे थे। ऐसे ही एक आयोजन की तैयारी राजस्थान की राजधानी जयपुर में चल रही थी। वहाँ की प्रमुख कार्यकत्री प्रबुद्ध जनों को भी यज्ञायोजन में भागीदारी के लिए आमंत्रित कर रही थीं।

श्री निरंजननाथ आचार्य उन दिनों राजस्थान विधान सभा के अध्यक्ष (स्पीकर) थे। वे बड़े विद्वान्, विचारक एवं लेखक और स्वभाव के रौब-दौब वाले व्यक्ति थे। श्रीमती रस्तोगी बहनजी उनके पास गईं और पूज्य गुरुदेव का परिचय देते हुए यज्ञायोजन में पधारने का आमंत्रण दिया। श्री निरंजननाथ आचार्य जी अपने उसी रौब वाले अंदाज में बोले, ''बहिन जी, आप गलत जगह पहुँच गईं हैं, मैं तो नास्तिक किस्म का व्यक्ति हूँ।'' परन्तु श्रीमती रस्तोगी भी कम नहीं थीं,

उन्होंने उत्तर दिया, ''भाई साहब, हम बहुत ठीक जगह पहुँचे हैं। हमें पता है, आप आस्थाहीन नहीं हैं। लेकिन जिन कारणों से आप स्वयं को नास्तिक कहते हैं, उन कारणों का निवारण भी तो जरूरी है। उसका सुयोग बन रहा है, पूज्य आचार्य जी मथुरा से (विदाई के पूर्व तक पूज्य गुरुदेव के लिए पूज्य आचार्य जी संबोधन ही प्रचलित था) पधार रहे हैं। आप आयोजन में अवश्य पधारें।''

ऐसे उत्तर की श्री निरंजननाथ आचार्य जी को उम्मीद नहीं थी, उन्होंने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। आयोजन के दौरान पूज्य गुरुदेव से मिले, प्रवचन सुने, व्यक्तिगत स्तर पर चर्चाएँ भी कीं और फिर तो वे उनके मुरीद बन गए। फिर गायत्री तपोभूमि पहुँचकर भी आचार्य जी के विदाई सम्मेलन में पांचों दिन (16से 20 जून 1971) मथुरा में रहे। पूज्य गुरुदेव के सम्बन्ध में अपने भाव व्यक्त करते हुए उन्होंने एक पुस्तिका लिखी 'पूज्य आचार्य जी के सान्निध्य में'। उसके प्रथम पृष्ठ पर समर्पण पद में उन्होंने लिखा है-

''मैं पूज्य आचार्य जी के पास आया था, अपने ज्ञान का अहंकार लेकर और बैठ गया उनके चरणों में, अपनी सारी श्रद्धा समर्पित करके।''

श्री रंगनाथ मिश्र : पूज्य गुरुदेव के सम्मान में भारत सरकार ने डाक टिकिट जारी किया। उस समय इस समारोह में सर्वोच्च न्यायालय के चीफ जस्टिस श्री रंगनाथ मिश्र भी तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ० शंकरदयाल शर्मा के साथ शामिल हुए थे। उन्होंने पूज्य गुरुदेव के व्यक्तित्व और कर्तृत्व पर एक आस्थावान् अध्येता की तरह सुन्दर ढंग से प्रकाश डाला।

पूज्य गुरुदेव के सम्बन्ध में उनके इतने सुलझे विचार सुनकर परिजनों को प्रसन्नता हुई और उनकी आस्था का आभास मिला।

कटक में शान्तिकुंज के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं से भेंट के दौरान अश्वमेध यज्ञों की शृंखला के अंतर्गत भुवनेश्वर और ब्रह्मपुर अश्वमेध यज्ञ के अवसर पर शान्तिकुञ्ज के प्रतिनिधियों से वार्तालाप के क्रम में उन्होंने बतलाया कि वे जब वकील थे, तब पहली बार पूज्य गुरुदेव से कैसे मिले, फिर कब-कब उनकी गुरुदेव से भेंट हुई। उसी प्रवाह में उन्होंने कहा ''शरीर छोड़ने के बाद भी पूज्य आचार्य जी एक बार मुझे मार्गदर्शन दे गए।''

पूछने पर उन्होंने बताया कि उन दिनों उन्हें सिक्खों के ऊपर हुए हमले के मुआवजे देने के केस दिये गये थे। वे निर्णय करते, और 15-20 लाख रु. मुआवजा देने के लिए लिख देते। पर पुलिस वाले कहते हमारे पास पैसे कहाँ हैं कि हम मुआवजे दे सकें। हम कुछ नहीं कर सकते। वे उस विषय में काफी उलझे थे और हल न निकल पाने से चिंतित थे। बैठे-बैठे वे चिन्तन कर रहे थे और लगा कि पूज्यवर सामने प्रकट हो गए हैं। उन्होंने मेरी चिन्ता के विषय का जिक्र करते हुए कहा, ''तुम प्रधानमंत्री राजीव गांधी से मिल लो, तुम्हारा काम हो जायेगा। तुम्हें शक क्यों हो रहा है?'' और दो वाक्यों में उसका समाधान कर दिया।

उनकी बात सुनकर शान्तिकुञ्ज के समर्पित कार्यकर्ता डॉ० दत्ता ने प्रश्न किया, मान्यवर यह स्वप्न या भ्रम भी तो हो सकता है? इस पर मानो श्री मिश्र के अन्दर का चीफ जस्टिस जाग उठा और उन्होंने मेज ठोककर कहा, ''नहीं, ऐसा नहीं है। मैं कहता हूँ, यह सच है।'' उनने फिर कहा, ''हम भी इसे सच ही मानते

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

हैं, पर वैज्ञानिक तो यह प्रश्न करेगा ही ?'' तब वे बोले, ''उन्होंने जो समाधान दिया, मैं उस निष्कर्ष पर पहुँच नहीं सकता था। साथ ही मैंने उस समाधान के साथ एक शक्ति संचार का भी अनुभव किया। ऐसा भ्रम या स्वप्न में नहीं हो सकता। मेरी समस्या का समाधान हुआ भी। प्रधानमंत्री जी ने अपनी कोरी चेक बुक सिग्नेचर कर दे दी, और बोले, अपने निर्णय के साथ चेक अटैच कर दिया करना।''

श्री विश्वनाथ दासः सन् 1961-62 की घटना है। उस समय उ.प्र. के महामहिम राज्यपाल श्री विश्वनाथ दास, दर्शनार्थ मथुरा-वृन्दावन पहुँचे। जिज्ञासावश गायत्री तपोभूमि भी आये। पूज्य गुरुदेव ने उनका स्वागत किया, संस्था का परिचय देते हुए अपना लिखा साहित्य भेंट किया। श्री दास हिन्दी ठीक से नहीं बोल पाते थे। उन्होंने अंग्रेजी में अपनी बात की, जिसका हिन्दी रूपान्तर पू. गुरुदेव के मित्र श्री दर्शनलाल अग्रवाल (एडवोकेट) ने किया। श्रीदास ने अपने वक्तव्य में कहा-I have seen Lord Krishna in person to-day. (आज मैंने, व्यक्ति में भगवान् श्रीकृष्ण के दर्शन किए हैं।)

श्री जुगल किशोर बिड़लाः बिड़ला परिवार जो आज अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की ख्याति, व्यापार क्षेत्र में बहुत बढ़ा रहा है। बिड़ला जी की धर्म के प्रति रुचि, संतों का सत्संग करने की सतत इच्छा, अनेकों बार उन्हें पूज्यवर के पास खींच लाती थी। वे अक्सर गायत्री तपोभूमि मथुरा आते व पूज्यवर से सत्संग करते थे। उन्होंने कई बार प्रस्ताव रखा कि पूज्यवर अनेकों व्यक्तियों से अंशदान एकत्र करने के स्थान पर उनसे एकमुश्त दान पच्चीस लाख रुपये जितना प्रतिवर्ष ले लिया करें ताकि उनका कार्य चलता रहे। पूज्यवर ने कई बार के प्रस्ताव के बाद एक ही जवाब दिया कि यह ब्राह्मण की पूँजी है, जिससे यह मिशन खड़ा किया है। इसमें जन-जन की भागीदारी है।

जिस दिन एक पूँजीपति के धन से यह संस्था चलने लगेगी, उस दिन मठ बनकर रह जाएगी। यह धन जो आप देना चाहते हैं, जिस भगवान से आपको मिलता है, उसी से हम ले लेंगे पर करोड़ों व्यक्तियों के भाव भरे अंशदान के रूप में, ताकि यह संस्था जन-जन की बनी रहे।

भाव भरे शब्दों में बिड़ला जी कहा करते थे, ''मैंने गुरुदेव में - पंडित जी में साक्षात् ब्राह्मण के दर्शन किए हैं। उनका कोई कार्य कभी रुक नहीं सकता, क्योंकि स्वयं भगवान् उनमें समाये हुए हैं।''

स्नेह से वे गुरुदेव को कभी-कभी पण्डित जी कहकर पुकारते थे। उन्होंने एक बार अपने मन की बात पूज्यवर से कही कि पण्डित जी, जब मैं शरीर छोड़ूँ तो आपकी वहाँ उपस्थिति चाहता हूँ। आपकी गोद में मेरे प्राण छूटें, यही मेरी इच्छा है। गुरुदेव ने मौन सहमति दे दी। जब अंतिम समय आया, तब उनका टेलीग्राम आया था, और गुरुदेव उनसे मिलने दिल्ली गये। संत-भामाशाह सी उस दिव्यात्मा ने अपने प्राण पूज्यवर की गोद में ही छोड़े। ◈

जीवन लक्ष्य को प्राप्त करने की ऐसी अभिलाषा उठते ही मन को बुद्धि के अनुशासन में ले आने की बड़ी आवश्यकता है। दरअसल मनोनिग्रह की कठिनाई ही ईश्वर प्राप्ति की प्रमुख कठिनाई है। मन मनुष्य जीवन का संचालन और महत्तर शक्ति वाला है, पर उसमें एक बुराई भी है। बिगड़े हुए घोड़ों की तरह यदि वह स्वेच्छाचारी हो जाय तो न रथ की खैर रहती है, न सारथी की। मनुष्य का मन स्वभावतः अधोगामी है। नीचे गिर जाना सरल बात है। कठिनाई तो उसे ऊँचे उठाने में आती है, पर यह तभी सम्भव है, जब मन पर बुद्धि का नियन्त्रण-पहरा रहे। बुद्धि मन को ऊर्ध्वगामी बनाती है और कुसंस्कारों को नष्ट करती है। अतः साधननिष्ठ व्यक्ति के लिए यह आवश्यक है कि वह मन की स्वेच्छाचारिता पर बौद्धिक विवेक का अंकुश बनाये रहे।

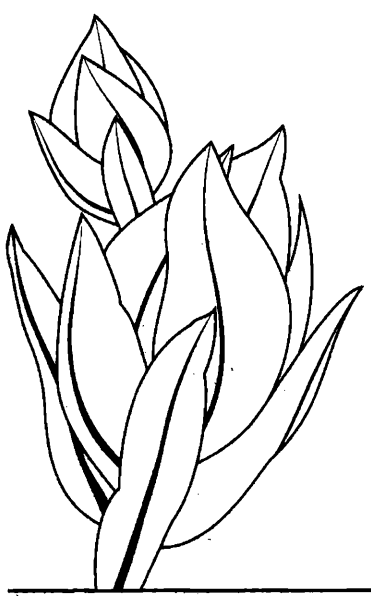
भूल सुधार मनुष्य का सबसे बड़ा विवेक है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

श्रीराम शर्मा आचार्य के व्यक्तित्व पर सम्पन्न शोधकार्य-1

डॉ. मन्दाकिनी शर्मा	श्रीरामकृष्ण परमहंस एवं आचार्य श्रीराम शर्मा के दार्शनिक विचारों का तुलनात्मक और विवेचनात्मक अध्ययन (डी.लिट्.) भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
डॉ. सुशीला गुप्ता	प्रज्ञा पुराण-एक अध्ययन (डी.लिट्.) मेरठ विश्वविद्यालय
डॉ. गोविन्द मिश्रा	पं.श्रीराम शर्मा आचार्य के साहित्य में उपासना, साधना और आराधना गोरखपुर विश्वविद्यालय
डॉ. पूनम सिंह	पं.श्रीराम शर्मा आचार्य के साहित्य में युग-चेतना जौनपुर विश्वविद्यालय
डॉ. मंदाकिनी शर्मा	आचार्य श्रीराम शर्मा का सर्वांगीण दर्शन आगरा विश्वविद्यालय
डॉ. दीनदयाल शर्मा	प्रज्ञा पुराण का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन मेरठ विश्वविद्यालय
डॉ. वर्षा वानखेड़े	पं.श्रीराम शर्मा आचार्य के साहित्य में नारी-संवेदना सागर विश्वविद्यालय
डॉ. उमा अग्रवाल	पं.श्रीराम शर्मा आचार्य एवं संत कबीर के साहित्य में दार्शनिक मान्यताओं का तुलनात्मक अध्ययन मेरठ विश्वविद्यालय
डॉ. उषा खण्डेलवाल	आध्यात्मिक मान्यताओं का वैज्ञानिक प्रतिपादन (पं.श्रीराम शर्मा के सम्बन्ध में) जबलपुर विश्वविद्यालय
डॉ. गायत्रीकिशोर त्रिवेदी	गायत्री-सावित्री:एक अध्ययन कानपुर विश्वविद्यालय
डॉ. सविता द्विवेदी	पं.श्रीराम शर्मा आचार्य के शिक्षादर्शन का आलोचनात्मक अध्ययन, फैजाबाद अवध विश्वविद्यालय
डॉ. शशिकान्त त्रिपाठी	संस्कार परम्परा द्वारा समाजोत्थान की दिशा में गायत्री परिवार। जौनपुर विश्वविद्यालय की भूमिका
डॉ. रमेश परमार	पं.श्रीराम शर्मा आचार्य का शिक्षण-चिन्तन सूरत विश्वविद्यालय

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

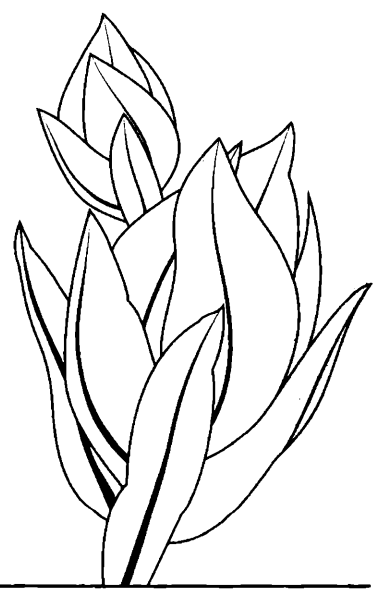


जहाँ व्यक्ति का मिथ्या अहंकार समाप्त हो जाता है, वहीं से उसकी गरिमा आरंभ होती है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

श्रीराम शर्मा आचार्य के व्यक्तित्व पर सम्पन्न शोधकार्य-2

डॉ. सुलोचना शर्मा	पं.श्रीराम शर्मा आचार्य का समाज-दर्शन गढ़वाल विश्वविद्यालय
डॉ. हेमाद्रि साव	Physiological and Behavioral Re sponses of Human Subjects following Japa Yagya (Yajna) and Selected Yo gic Exercises. गुरुकुल कांगड़ी वि.वि.
डॉ. कृष्णा झरे	मानवतावाद: एक दार्शनिक अनुशीलन (आचार्य श्रीराम शर्मा के विशेष सन्दर्भ में) हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय
डॉ. आलोक कुमार	Rural Social Transformation: A Study of the Impact of Yug Nirman Movement चौधरी चरण सिंह वि.वि.
डॉ. इन्देश पथिक	वैदिक चिन्तन के परिप्रेक्ष्य में पं.श्रीराम शर्मा गुरुकुल कांगड़ी वि.विद्यालय
डॉ. विजय कुमार मिश्र	हिन्दी पत्रकारिता में पं.श्रीराम शर्मा आचार्य का योगदान लखनऊ विश्वविद्यालय
डॉ. जेजे चौहान	पं.श्रीराम शर्मा का राजनीतिक एवं सामाजिक योगदान: अमरावती विश्वविद्यालय एक मूल्यांकन
श्रीमती अंजली सिंह	पत्रकारिता में ''अखण्ड ज्योति'' का योगदान गुरुकुल कांगड़ी वि.वि.
श्री अजय कुमार मिश्र	उपनिषद् परम्परा में पं.श्रीराम शर्मा आचार्य रचित प्रज्ञोपनिषद् की प्रासंगिता, लखनऊ वि.वि. लखनऊ
श्रीमती विजयलक्ष्मी निगम	आध्यात्मिक पत्रकारिता के ''अखण्ड ज्योति'' का योगदान, कानपुर विश्वविद्यालय
श्रीमती विद्योत्तमा रस्तोगी	प्राचीन भारत में सूर्योपासना: एक विवेचन गुरुकुल कांगड़ी वि.वि.
सुश्री रश्मि शुक्ला	पं.श्रीराम शर्मा आचार्य का युगीन कर्मकाण्ड: एक विवेचन कानपुर विश्वविद्यालय

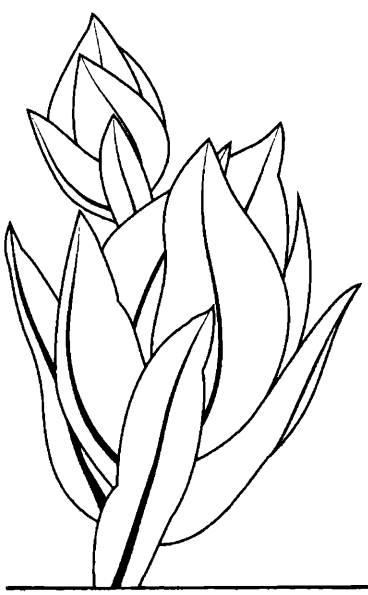


चिंतन बहुतों ने पाया है, पर ऐसे बहुत कम होते हैं, जो चिंतन को जीवन में उतार पाते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

श्रीराम शर्मा आचार्य के व्यक्तित्व पर सम्पन्न शोधकार्य-3

श्रीमती महिमा माहेश्वरी	पं.श्रीराम शर्मा आचार्य के साहित्य में लोकमंगल की भावना, जीवाजी वि.वि.ग्वालियर
श्री ओंकारनाथ पाण्डेय	Social Changes and Yug Nirman Movement of Shantkunj- A Geo graphical Study, गोरखपुर विश्वविद्यालय
सुश्री भावना द्विवेदी	आचार्य श्रीराम शर्मा के वाङमय में मानव चेतना एक समीक्षात्मक अध्ययन गुरुकुल कांगड़ी वि.वि.
श्रीमती ममता अरोड़ा	पं.श्रीराम शर्मा आचार्य का सर्वांग शिक्षा-दर्शन एवं उनके शिक्षण-प्रशिक्षण सम्बम्धी प्रयोगों का मूल्यांकन दयानन्द महिला महाविद्यालय कानपुर
श्री राजीव कुमार वर्मा	पं.श्रीराम शर्मा आचार्य के सामाजिक विचार: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन डॉ.भीमराव अम्बेडकर महाविद्यालय आगरा
श्री गोविन्द शुक्ला	अभिनव समाज के नवनिर्माण में गायत्री परिवार की भूमिका एक कला एवं वाणिज्य समाजशास्त्रीय अध्ययन (पं.श्रीराम शर्मा आचार्य के सन्दर्भ में) महाविद्यालय सेमरिया, रीवां
श्री गुलाबराव पान्से	पं.श्रीराम शर्मा आचार्य के दर्शन में मृत्युपरक जीवन परिदृश्य पर आधारित दार्शनिक अनुशीलन, हमीदिया कॉलेज, रीवां
श्रीमती शशिकला	पं.श्रीराम शर्मा आचार्य का आचार दर्शन आधुनिक दार्शनिक सन्दर्भ में: एक अध्ययन, गुरुकुल कांगड़ी वि.वि हरिद्वार
श्री सुशील शर्मा	पं. श्रीराम शर्मा के साहित्य में अध्यात्म एवं विज्ञान का समन्वय - एक अनुशीलन, विक्रम वि.वि., उज्जैन

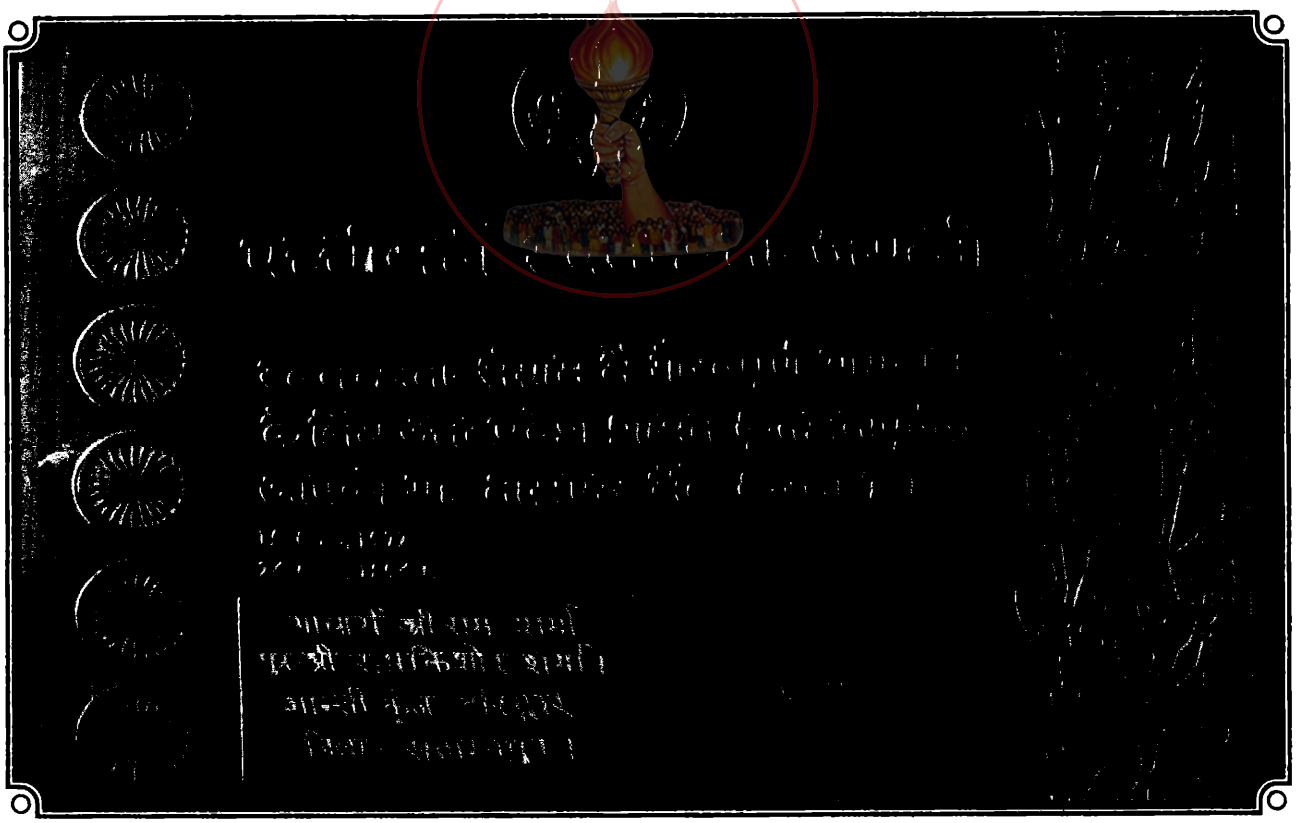


विचारवान् वे हैं, जो नाशवान् भौतिक वस्तुओं को बटोरने की अपेक्षा आत्मिक समृद्धि का संचय करते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



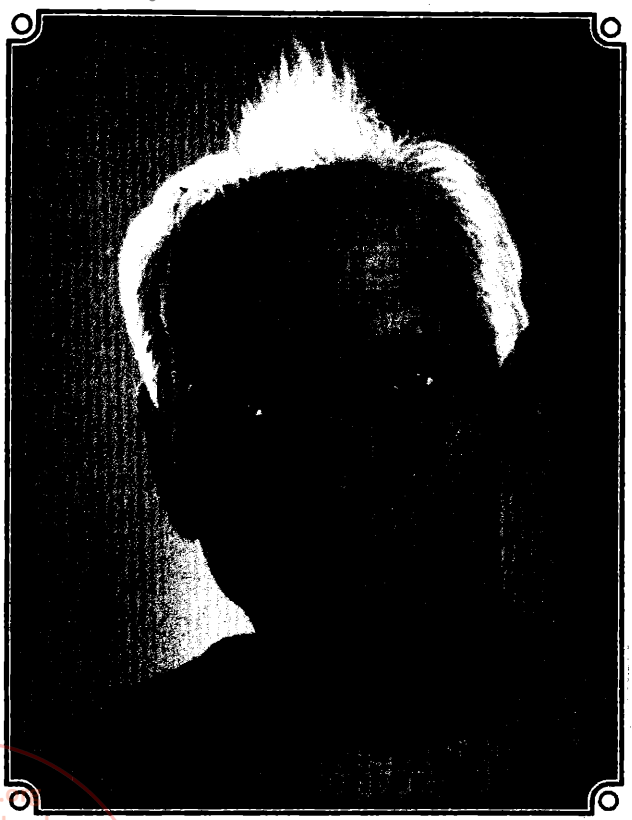




स्वतंत्रता संग्राम सेनानी आचार्य श्रीराम मत्त

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org





www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org



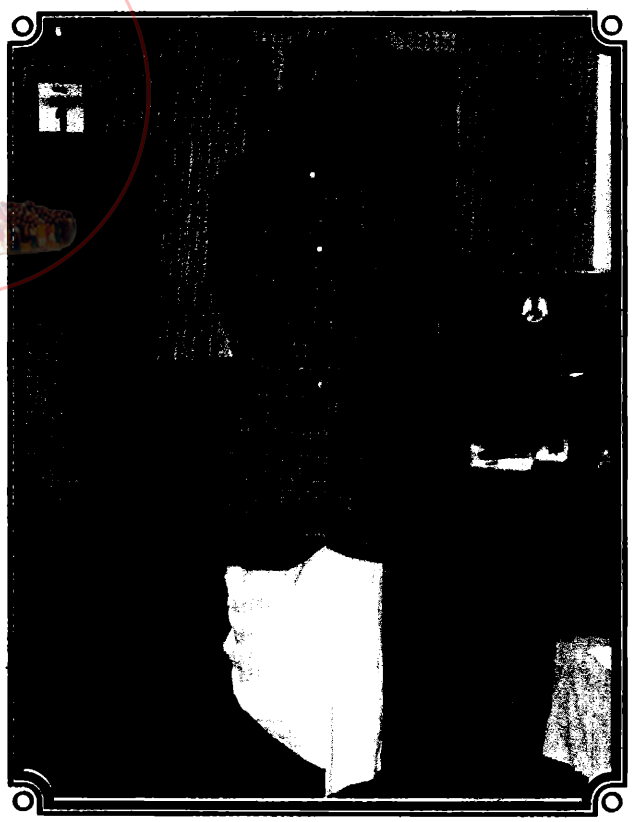
आप क्या मिल गए स्वर्ग ही मिल गया

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org







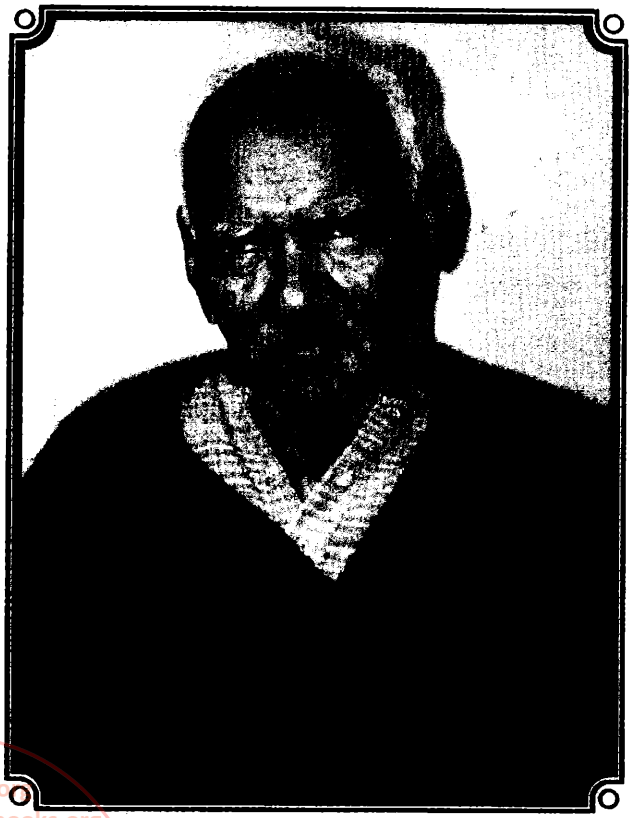


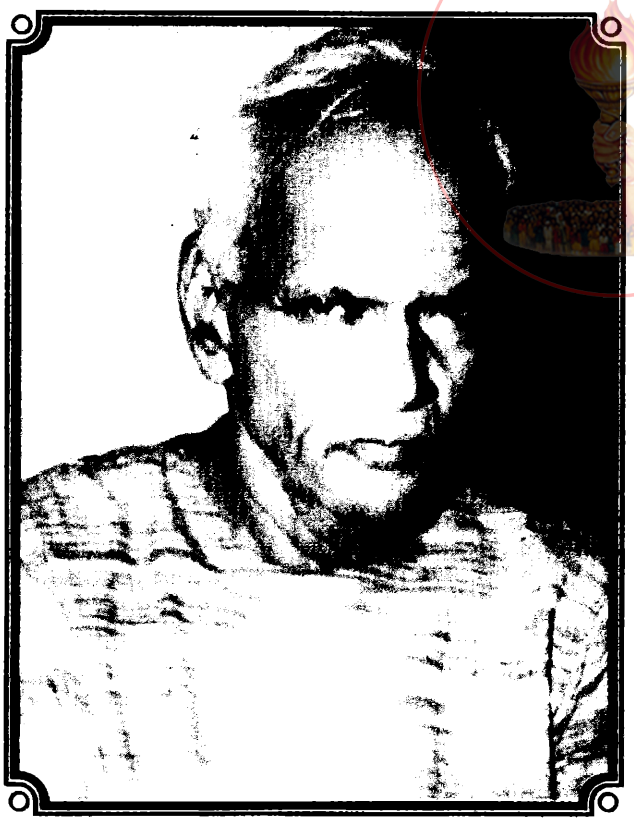
www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

जीवन जिनका सुरभित पुष्प

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org









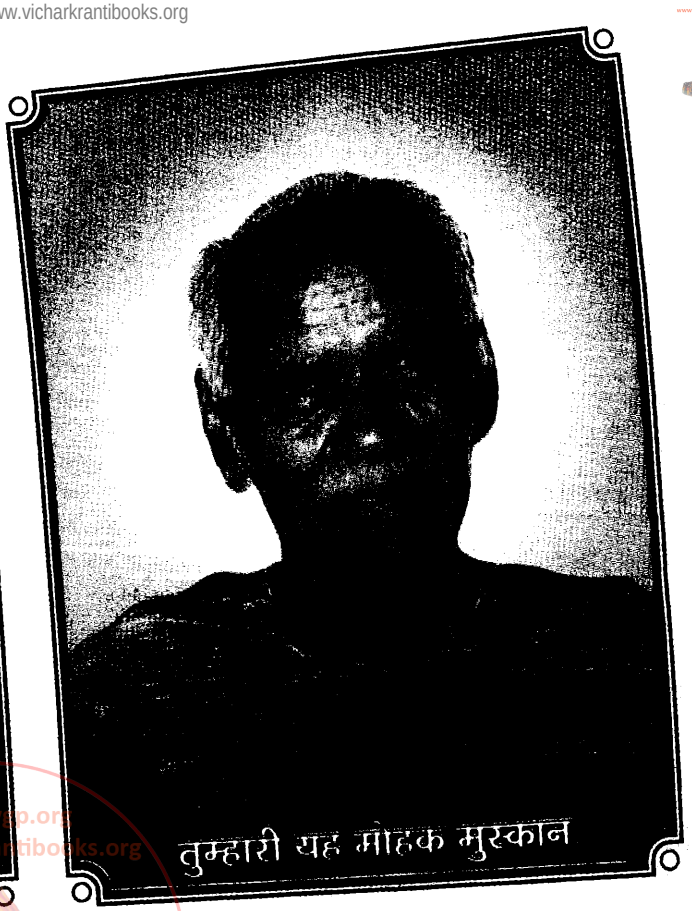
www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

एक ब्राह्मण, एक ऋषि एक परिव्राजक

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org



कृपादृष्टि सभी पर एक समान



तुम्हारी यह मोहक मुस्कान



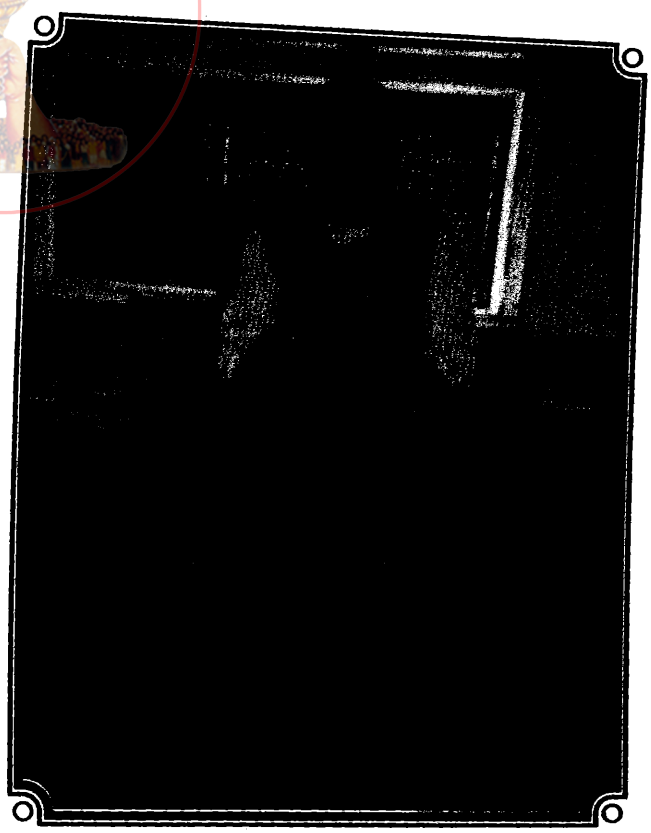
महाप्रयाण से कुछ पूर्व के क्षण

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org









मेरी आवाज, मेरा स्वर तुम सदा अनुभव करोगे

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org





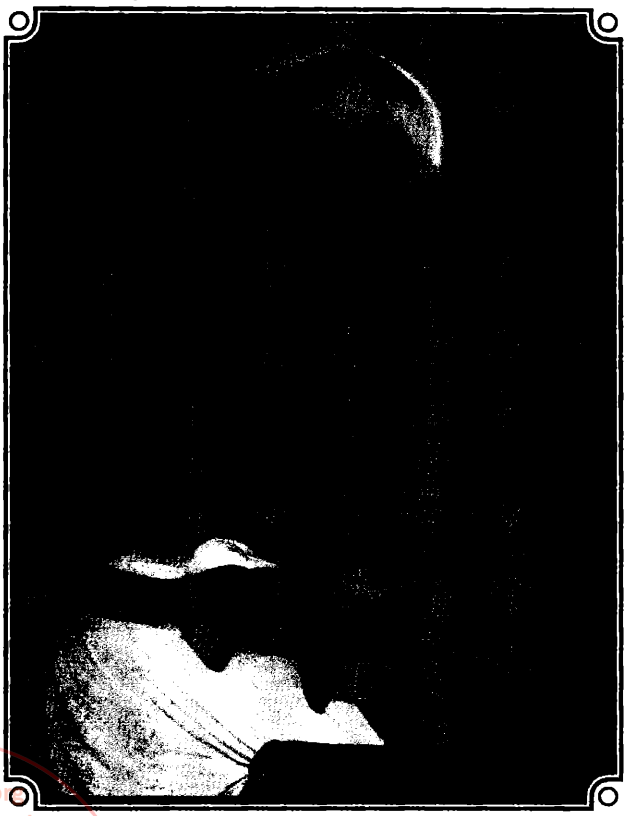




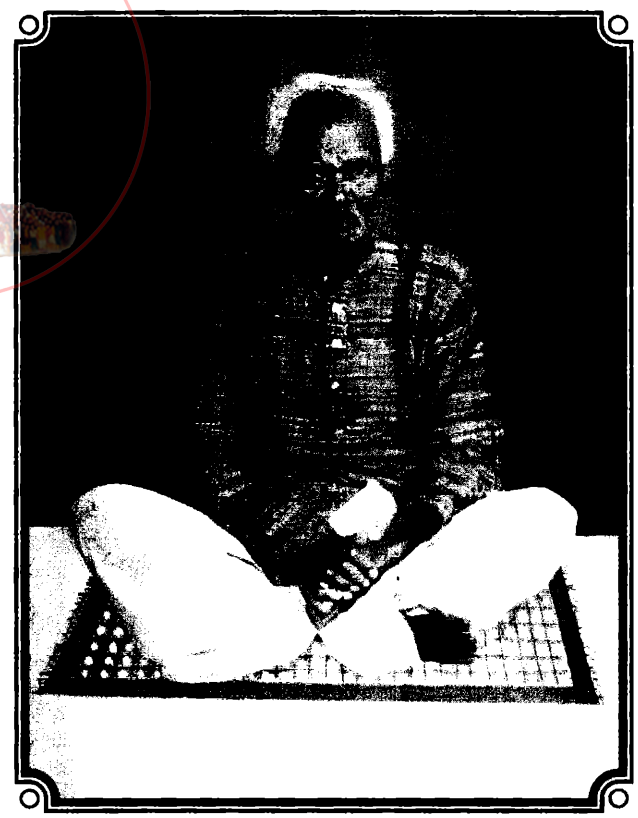
मैं धरती का भाग्य बदलने आया

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org









www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

मेरा जीवन ही मेरा परिचय है

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ब्रह्मकमल के ब्रह्मबीजों का विस्तार सप्तद्वीपा वसुन्धरा तक

युगान्तरीय चेतना का आलोक सात समुन्दर पार भी पहुँचा एवं लगभग सत्तर देशों में अपना आलोक पहुँचा रहा है। यह पूरा वृतान्त इस मत्स्यावतार रूपी विस्तार की कथा गाथा है...

1971 से 2011- विदेश प्रवास की झलक झाँकी

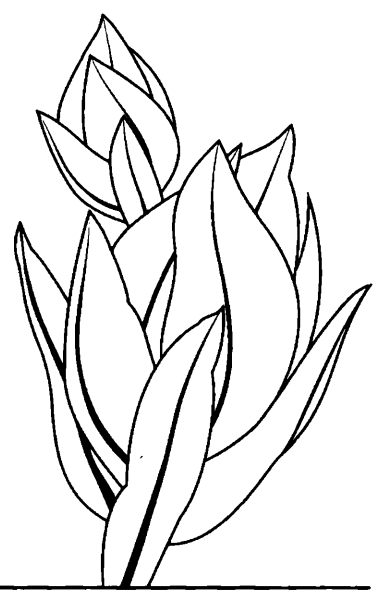
20 जून 1971 में मथुरा से विदाई समारोह संपन्न हुआ। मथुरा को सदा के लिए छोड़कर पूज्यवर-वंदनीया माताजी के साथ शांतिकुंज आ गये। लगभग एक वर्ष हिमालय में रहे। इस अंतिम हिमालय यात्रा में उन्हें सद्गुरु ''स्वामी सर्वेश्वरानन्द जी'' का आदेश मिला- तुम्हें सप्त सागर वसुन्धरा एवं सप्त महाद्वीप में युग शक्ति गायत्री की चेतना को फैलाने की नींव रखनी है, बीजारोपण करना है। पासपोर्ट एवं वीजा की प्रक्रिया पूरी होने पर दिसम्बर 1972 को वे ढाई महीने की पूर्वी अफ्रीका की पहली विदेश यात्रा पर निकले। इस प्रवास के दौरान उन्होंने जहाज में ही अफ्रीका की स्वाहिली भाषा सीखी। मुम्बई से पानी के जहाज द्वारा, शांतिकुंज से छह परिव्राजकों का दल रवाना हुआ। यात्रा के पूर्व उन्होंने कई लोगों को ''भारतीय संस्कृति-विश्व संस्कृति'' विषय पर आलेख एकत्रित करने का निर्देश दिया था, किन्तु जब लौटकर आये तो उन सभी लेखकों के शोध पत्र ''समस्त विश्व को भारत के अजस्र अनुदान'' में सम्मिलित हो चुके थे। यह ग्रंथ महत्त्वपूर्ण थाती है। सातों द्वीपों में कहाँ-कहाँ पर भारतीय संस्कृति के चिह्न मिलते हैं एवं उस देश के लोगों को उन्हीं माध्यमों में कैसे जोड़ सकते हैं, इसके सूत्र मिले।

आचार्य जी के विदेश प्रवास का प्रयोजन : गुरुदेव की इस यात्रा का उद्देश्य था, संसार की उन विभूतिमयी आत्माओं से सम्पर्क स्थापित करना और दिशा-प्रेरणा देना, जिनके द्वारा युग परिवर्तन के लक्ष्य को अग्रगामी बनाया जा सकता है।

1972 के प्रवास में पूज्यवर ने केन्या, तंजानिया, युगाण्डा जैसे पूर्वी अफ्रीकी देशों की यात्रा की। युगाण्डा के तानाशाह ईदी-अमीन की क्रांति के बाद अधिकांश भारतीय इन देशों को छोड़कर इंग्लैण्ड, अमेरिका जाने लगे थे, किन्तु पूज्यवर ने इन सबको गायत्री महामंत्र की दीक्षा देकर सम्बल प्रदान किया। यही परिजन आगे चलकर मिशन के विस्तारक बने।

1980 के बाद कुछ वर्षों तक शांतिकुंज से प्रतिनिधियों को उन्होंने विदेश यात्रा पर भेजा। 1984 से 1991 तक विदेश यात्राएँ स्थगित रहीं। 1991 में पुन: श्रद्धेय डॉ० प्रणव पण्ड्या के नेतृत्व में विदेशों में युग निर्माण योजना के सूत्रों के विस्तार का अभियान प्रारंभ हुआ।

नये अध्याय का शुभारम्भ-शांतिकुञ्ज प्रतिनिधियों का प्रथम विदेश प्रवास : 2 जून 1991 को भारत के उपराष्ट्रपति महामहिम डॉ० शंकरदयाल शर्मा द्वारा डाक टिकट विमोचन के बाद उसी मंच



जिस समाज में लोग, परिश्रमी, ईमानदार, सत्यनिष्ठ एवं आदर्शप्रिय होंगे वह अपने आप उत्तरोत्तर उन्नत होता चला जाएगा।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

से डा० प्रणव पण्ड्या के साथ तीन प्रतिनिधियों को इंग्लैण्ड प्रवास हेतु तिलक के साथ भाव भरी विदाई दी गई। यही वह दिन है, जिसकी साक्षी परम वंदनीया माता जी एवं हजारों लोग थे। इंग्लैण्ड के लीस्टर शहर में स्व० चंद्रेश जोशी ने अपना मकान गिरवी रखकर 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का प्रथम आयोजन रखा। इस आयोजन ने इंग्लैण्ड के प्रत्येक शहर के लोगों को एक जुट कर दिया एवं ऐसा आयोजन हुआ, जिसने विदेश के आयोजनों की नींव रखी। पूज्यवर के साहित्य का विदेशी भाषा में प्रकाशन का रास्ता खोला। लगभग 40 दिन के प्रवास में जितने अधिकतम आयोजन हो सकते थे, घर-घर में देवस्थापना आदि किये गये। लीस्टर, लंदन, बर्मिंघम, क्राली, मैनचेस्टर, स्कॉटलैण्ड, लीड्स, ऑक्सफोर्ड में शाखाओं का बीजारोपण हुआ। आक्सफोर्ड एवं केंब्रिज विश्वविद्यालयों में वैज्ञानिक अध्यात्मवाद एवं तनाव प्रबंधन पर उद्बोधन हुए। 'हाउस ऑफ कॉमन्स' में शांतिकुञ्ज प्रतिनिधि को उद्बोधन देने के लिए सम्मानपूर्ण आमंत्रण मिला।

अमेरिका महाद्वीप का प्रथम प्रवास : 7 से 10 जून 1992 को हरिद्वार में लाखों कार्यकर्ताओं के बीच ऐतिहासिक शपथ समारोह सम्पन्न हुआ। 11 जून को 2 माह के लम्बे अमेरिका कनाडा प्रवास के लिए श्रद्धेय डॉ० साहब के लिए तीन प्रतिनिधियों का चयन हुआ एवं अटलांटिक महासागर होते हुए टोक्यो से 14 घण्टे की यात्रा के बाद लॉस ऐंजल्स पहुँचे। परम वंदनीया माताजी द्वारा आचार्यश्री के विचारों को फैलाने के लिए विशेष आशीर्वाद इस दल को मिला। गायत्री परिवार लॉस ऐंजल्स के छह परिजनों के दल ने 2 माह का प्रवास चक्र बनाया। इस सांस्कृतिक दिग्विजय अभियान में हयूस्टन, डलास, ओकलाहोमा, न्यूयार्क, न्यूजर्सी, वाशिंगटन, वर्जीनिया, बाल्टीमोर, बोस्टन, शिकागो, अटलांटा, लांग आयलैण्ड, हट्सविले (अलाबामा), सानफ्रांसिस्को, सानडियागो, कोलम्बस (ओहायो), फिलाडेल्फिया, फ्लोरिडा, पिट्सबर्ग एवं कनाडा में मॉंट्रियल, टोरंटो एवं ओटावा शहर सम्मिलित थे।

प्रथम प्रवास की उपलब्धियाँ : दो महीने के प्रवास में हजारों प्रवासी भारतीयों एवं प्राय: सहस्त्रों अमेरिकन केनेडियन मूल के लोगों तक भारतीय संस्कृति के विस्तार का संदेश पहुँचा। सैकड़ों घरों में देव-स्थापना के चित्र स्थापित किये गये। भाईयों द्वारा पूज्यवर के विचारों को जानकर लोग कहने लगे "अमेरिका में भारतीय अध्यात्म एवं संस्कृति के प्रति लोगों की बड़ी भूख है, किन्तु अभी तक उन्हें सही अध्यात्म सिखाने वाले मार्ग-दर्शक नहीं मिले। अभी तक अधिकांशत: "योगा" व "कथा" के नाम पर मिथ्या प्रचार ही हुआ। डॉ० प्रणव पण्ड्या ने वैज्ञानिक अध्यात्मवाद की ऐसी क्रांति ला दी कि अब हर धर्म प्रचारक को उनके द्वारा स्थापित मानकों की कसौटी में कसा जाएगा। उनके प्रवास में प्रात: 6 बजे से रात्रि 12 बजे तक का सतत कार्यक्रम था। इस बीच गायत्री महायज्ञ, दीपयज्ञ एवं उसकी वैज्ञानिकता पर इंडियन मेडिकल ऐसो०, चिन्मय आश्रम लॉस ऐंजल्स, स्वामी विवेकानंद के वेदान्त सोसायटी के केन्द्रों, श्रीराम मंदिर, हिन्दू मिशन, हरेकृष्ण टेम्पल (इस्कॉन), दुर्गा टेम्पल, प्रार्थना समाज, बोस्टन मैसाचुसेट्स यूनिवर्सिटी, कैलिफोर्निया स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी, नासा जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों में वर्कशॉप एवं सेमिनार आयोजित हुए। कनाडा के टोरंटो एवं मॉंट्रियल शहर में भावनाओं से ओत-प्रोत वर्षों से सच्चे प्यार के लिए बाट जोहते परिजनों को जैसे अमृत बूँदें मिल गई हों। अमेरिका एवं कनाडा में तूफान लाने वाले प्रवास की पूर्णाहुति 9 अगस्त 1992 को नारवाक सेरिटोस कालेज ऑफ कैलिफोर्निया के विशाल मैदान में हुई। यज्ञ करने वाले परिजनों का ताँता लग गया। मेले जैसा वातावरण बन गया। स्वनियंत्रित दस हजार लोगों की भीड़ को देखकर अमेरिका की स्थानीय पुलिस भी हतप्रभ थी। इस अवसर पर क्षेत्रीय कौंसलर मिस मिखाइल एवं प्रतिष्ठित नागरिक सिल्वेस्टर जॉन पूरे कार्यक्रम में उपस्थित थे। दो माह के प्रवास में तीन अश्वमेध-महायज्ञों की घोषणा हुई। परिजनों के उद्गार थे **"नये व्यक्ति को मिशन से- पूज्यवर के विचारों से जोड़ देना, उसे परिजन बनाना, ऐसे हजारों परिजनों को कार्यकर्ता बनाकर अश्वमेध महायज्ञ के लिए हजारों डालर अनुदान देने के लिए तैयार कर देना, एक ऐसा**

परस्पर प्रेम, सहानुभूति, स्वार्थ रहित सेवा और एक-दूसरे के लिए त्याग तथा उत्सर्ग की तत्परता ही परिवार का प्रमुख लक्षण है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

असम्भव एवं आश्चर्यजनक कार्य हुआ है जो ऐतिहासिक है-इस रूप में पूज्यवर की चेतना की स्पष्ट झलक झाँकी इनके व्यक्तित्व में परिलक्षित हुई।'' दो दर्जन से अधिक देशों में विस्तार 1993 के बाद प्रारंभ हुआ। वास्तव में 1990 का दशक विदेशों में बीजारोपण का दशक सिद्ध हुआ। नार्वे, अमेरिका, कनाडा, इंग्लैण्ड, डेनमार्क, स्वीडन, फ्रांस, जर्मनी, रूस, पुर्तगाल, तंजानिया, युगाण्डा, दक्षिण अफ्रीका, मॉरीशस, न्यूज़ीलैण्ड, आस्ट्रेलिया, केन्या, फीजी, हांगकांग, सिंगापुर, टोक्यो, जापान, दुबई, बैंकाक, जर्मनी, ग्रीस जैसे देशों का सघन मंथन किया गया।

परम वंदनीया माताजी का विदेश प्रवास : 9, 10, 11 जुलाई 1993 को लीस्टर (इंग्लैण्ड) 23, 24, 25 जुलाई 1993 में टोरंटो (कनाडा,) एवं 20, 21, 22 अगस्त 1993 में लॉस ऐंजल्स में अश्वमेध महायज्ञ सम्पन्न हुए। इस प्रवास में श्रद्धेया जीजी, श्रद्धेय डॉ० साहब सहित लगभग 15 प्रतिनिधियों का दल साथ था। परम वंदनीया माताजी हिन्दी में उद्‌बोधन करतीं, लेकिन हृदय से निकली आवाज को सैकड़ों अमेरिकनों ने न केवल सुना, अपितु हृदयंगम भी किया। हजारों की संख्या का आँकड़ा लाखों में पहुँच गया। तीनों ही कार्यक्रमों में लाखों की संख्या में लोग जुड़े। हजारों लोग दीक्षा ग्रहण किये। समूचे अमेरिका, कनाडा, इंग्लैण्ड में विचार क्रांति के बीज फैल गये।

न्यूजर्सी का बाजपेय ज्ञानयज्ञ : एक महत्त्वपूर्ण मील का पत्थर : जुलाई 1998 में न्यूजर्सी के रैरिटन सेंटर के एक्सो हाल में ''बाजपेय ज्ञान यज्ञ'' का भव्य आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम के लिए श्रद्धेय डॉ० साहब, श्रद्धेया जीजी सहित लगभग 24 लोगों का दल वहाँ पहुँचा। 1008 कुण्डीय यज्ञ के साथ प्रदर्शनी, मल्टीमीडिया, संस्कारों एवं कलश यात्रा में लगभग 40 हजार से ज्यादा लोग सम्मिलित हुए। प्रवासी भारतीयों के साथ अमेरिकन मूल के लोगों की भागीदारी विशिष्ट अतिथियों के साथ हुई। अमेरिका, कनाडा सहित अनेक देशों के लोग इस आयोजन में सम्मिलित हुए। इससे अमेरिका के पूर्वी तट में बड़े केन्द्र की रूपरेखा बनी, जो सन् 2008 में साकार हुई। इसी दशक में शिकागो एवं मांट्रियल में अश्वमेध महायज्ञ सम्पन्न हुए। श्रद्धेय डॉ० साहब को नासा की ओर से 'बेस्ट साईंटिस्ट' एवं फेडरेशन आफ हिन्दू अमेरिकन एसो० की ओर से 'हिंदू ऑफ द इयर' का सम्मान भी मिला, जिसे उन्होंने बड़ी विनम्रता पूर्वक पूज्यवर के चरणों में समर्पित किया।''

'यूथ कैम्प' भावी पीढ़ी के निर्माण की प्रक्रिया : सन् 2000 में 'महापूर्णाहुति' कार्यक्रम के बाद मिशन के नये निर्धारणों में युवाओं की भागीदारी का प्रस्ताव आया। फिलाडेल्फिया के परिजनों ने प्रायोगिक रूप में बाल संस्कार केंद्र को प्रारंभ किया। इसी आधार पर छोटे-बड़े स्तर के यूथ कैम्प आयोजित किये गये। सन् 2004 में विधिवत् बड़े स्तर से 5 से 25 वर्ष के बच्चों के लिए सम्पूर्ण अमेरिका एवं कनाडा में यूथ कैम्प आयोजित हुए। शिकागो, फिलाडेल्फिया, नार्थ केरोलिना, लॉस ऐंजल्स, टोरंटो, न्यूजर्सी में प्रत्येक वर्ष यह क्रम चला। इसी प्रकार की प्रक्रिया इंग्लैण्ड, आस्ट्रेलिया, फीजी, साउथ अफ्रीका में चल पड़ी। फलस्वरूप सम्पूर्ण विश्व में 10 हजार से अधिक युवा, कार्यकर्ता बनकर मिशन को गति दे रहे हैं।

इक्कीसवीं सदी में सम्पन्न 3 देशों में अश्वमेध महायज्ञ : भारत में अश्वमेध महायज्ञ का क्रम बंद हो चुका था। मात्र नये क्षेत्र के विस्तार में ही ये कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे थे। किन्तु 2005 में आस्ट्रेलिया के सिडनी शहर, दक्षिण अफ्रीका के जोहान्सबर्ग एवं 2008 में न्यूजीलैंड के ऑकलेंड शहर में भव्य आयोजन सम्पन्न हुए। इसमें राष्ट्राध्यक्षों के प्रमुखों की भागीदारी एवं परिजनों की सहभागिता रही। नये – नये संगठन जुड़ते चले गये। तीनों ही आयोजनों में श्रद्धेया जीजी एवं श्रद्धेय डॉ० साहब ने ऋषियुग्म के प्रतिनिधि के रूप में आशीर्वचन प्रदान किए। हजारों लोग दीक्षित हुए। वहाँ के मूल निवासियों तक संदेश पहुँचा।

सप्त महाद्वीपों में स्थापित 8 प्रकाश स्तम्भ : 2000 से 2011 के बीच का समय विदेशों के लिए अत्यन्त ही स्वर्णिम काल सिद्ध हुआ। श्रद्धेय डॉ० साहब एवं श्रद्धेया जीजी के प्रयास से लगभग 200 शान्तिकुञ्ज के कार्यकर्ताओं के पासपोर्ट एवं वीजा आदि की प्रक्रिया पूरी की गई। अंग्रेजी, फ्रेंच, रशियन, जर्मन, स्पेनिश

संकट के भय से प्रगति पथ पर न बढ़ना केवल जीवन को जड़ता की ओर ले जाना ही नहीं, बल्कि उसे नीरस और निरुपयोगी बनाना भी है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

भाषाओं में पूज्यवर के साहित्य का अनुवाद होने लगा। धीरे-धीरे प्रज्ञामंडल, महिला-मंडल, गायत्री ज्ञान मंदिर की गतिविधियाँ स्थानीय युवाओं, परिजनों में सक्रिय होने लगीं। परिजनों में स्थायी केंद्रों की स्थापना का संकल्प उभरा। फलस्वरूप दक्षिण अफ्रीका के परिजनों ने सर्वप्रथम लीनेशिया में ''गायत्री आश्रम'' की स्थापना की। मॉरीशस के देपीने में ''गायत्री मंदिर'' के नाम से नैष्ठिक परिजनों ने गतिविधियाँ चलाईं। इंग्लैण्ड क्रोयडन में सबसे पहले 'गायत्री शक्तिपीठ' की भूमिका बनी। इसमें माँ गायत्री की भव्य मूर्ति की स्थापना हुई, जिसे श्रद्धेय जीजी एवं श्रद्धेय डॉ० साहब ने प्रतिष्ठित किया।

गायत्री चेतना केन्द्र, लीस्टर : 2008 से 2010 का वर्ष अमेरिका, इंग्लैण्ड एवं फीजी में गायत्री चेतना केन्द्रों के स्थापना का वर्ष सिद्ध हुआ। लगभग 18 वर्षों से जिस क्षण की बाट परिजन जोह रहे थे, और जो पूज्यवर का सपना था, उसने मूर्त रूप लिया। 2006 में जुलाई एवं अगस्त माह में ''सेंटर फार गायत्री कांशसनेस, रेंडल रोड लीस्टर की स्थापना हुई।

गायत्री चेतना केन्द्र, न्यूजर्सी : अगस्त माह में न्यूजर्सी के सेंटेनियल एवेन्यू में ''गायत्री चेतना केंद्र'' की अद्भुत स्थापना हुई। लगभग 40 लाख डालर के 5 एकड़ क्षेत्रफल वाले मंदिर की संरचना अद्भुत थी। 1008 कुण्डीय यज्ञ एवं यूथ केम्प मंदिर परिसर में ही सम्पन्न हो जाता है।

गायत्री ज्ञान मंदिर, शिकागो- मध्य अमेरिका में स्थापित एक छोटे से कमरे में चलने वाले गायत्री ज्ञान मंदिर का विस्तार इटास्म के एक बड़े चर्च के रूप में हुआ। यहाँ शांतिकुंज से गए छह परिव्राजकों का दल छः माह तक रहा। शून्य से माइनस 10° के तापमान में भी वे युग आलोक बिखेरते रहे।

गायत्री चेतना केन्द्र, लॉस ऐंजल्स- जुलाई 2009 में स्थापना हुई 'गायत्री चेतना केंद्र लॉस ऐंजल्स' की। 2008 के प्रवास में श्रद्धेय डा0 साहब के हाथ में 13 लाख डॉलर वाले चर्च की चाबी सौंप कर गायत्री चेतना केंद्र के निर्माण की घोषणा की गई। एक वर्ष में चर्च का रूपान्तरण गायत्री चेतना केंद्र के रूप में हो गया। माँ गायत्री की मूर्ति की स्थापना हुई। साहित्य केंद्र, रसोई, 200 व्यक्ति की क्षमता वाला हॉल, योग सेंटर जैसी गतिविधियाँ यहाँ चलने लगीं। भारत से 18 हजार मील दूर गायत्री परिवार का यह सबसे महत्त्वपूर्ण केंद्र है।

गायत्री शक्तिपीठ नादी फीजी- 2008 में न्यूजीलैंड में सम्पन्न हुए अश्वमेध के बाद ही फीजी में गायत्री मंदिर की स्थापना की तिथियाँ सुनिश्चित हुईं। यह केन्द्र गन्ने की खेती के लिए 300 वर्ष पूर्व गिरमिट प्रथा के अन्तर्गत श्रद्धा-भावना से ओतप्रोत भारतीयों की व्यथा को दर्शाता है। आज वहाँ दिव्य मंदिर बन कर खड़ा हो गया है। परिजन उत्साहपूर्वक मिशन के प्रचार प्रसार में लगे हैं। गायत्री मंदिर, यज्ञशाला, प्रदर्शनी, साहित्य केंद्र, परिव्राजक निवास जैसी स्थापना समूचे आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड एवं फीजी के लिए प्रकाश स्तम्भ बन कर आलोक बिखेर रहा है।

विदेशों में फैलता देव संस्कृति विश्वविद्यालय का आलोक : 2002 में देव संस्कृति विश्व-विद्यालय की स्थापना के बाद मिशन का शैक्षणिक स्वरूप उभर कर सामने आया। 1972 से प्रारंभ हुए पूज्यवर के प्रवास का बीजारोपण 2011 आते-आते विशाल वटवृक्ष का रूप ले लिया। आचार्य श्रीराम शर्मा जन्मशताब्दी महोत्सव में हजारों प्रवासी भारतीय एवं विदेशी मूल के परिजनों की भागीदारी इसके उभरते विराट स्वरूप की बानगी प्रस्तुत करती हैं। जो आने वाले दिनों में विश्व वसुधा के प्राण प्रत्यावर्तन के ऐतिहासिक कार्य को संपन्न करने वाले हैं। जिसकी भूमिका आचार्य श्री 80 के दशक में हिमालय यात्रा के बाद बना चुके थे। ◈

वैज्ञानिक और दार्शनिक हमारी एक मुहिम हैं। दोनों पक्ष इसी फिराक में हैं कि उनके वैज्ञानिक ऐसे अमोघ उपाय निकाल लेंगे जिससे अपनी जीत निश्चित रहे और सामने वाला अपंग होकर बैठ रहे। सूक्ष्मीकरण के उपरान्त अब हम वैसा न होने देंगे। उच्चस्तरीय वैज्ञानिकों की प्रतिभा और सूझ-बूझ उन्हें वैसा न करने देगी जैसा कि अपेक्षा की जा रही है। अब उनका मस्तिष्क ऐसे छोटे उपकरण बनाने की ओर लौटेगा जिससे कुटीर उद्योगों को सहायता देने वाला नया माहौल उफन पड़े।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महाप्रयाण की तैयारी

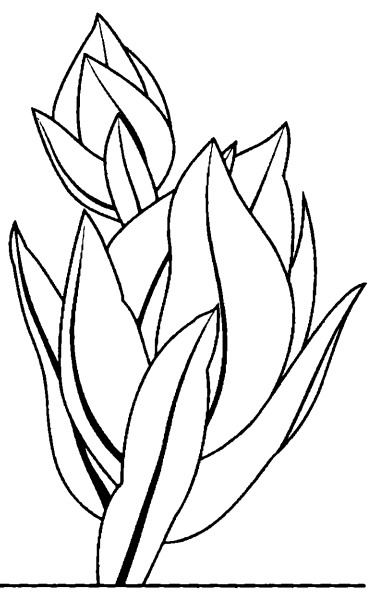
सन् 1985 का वर्ष उनके आयुष्य का पिचहत्तरवाँ वर्ष था। पिचहत्तरवाँ वर्ष होने के कारण ही, यह वर्ष रजत जयन्ती वर्ष के रुप में मनाया गया। इस वर्ष अप्रैल, 1985 में उन्होंने अपने जीवन के महत्वपूर्ण प्रसंगों पर पहली बार प्रकाश डाला था। इन्हीं लेखों व सूक्ष्मीकरण साधना के अन्तर्गत लिखे गये लेखों के समन्वित रूप उनकी पुस्तक 'हमारी वसीयत और विरासत' के रुप में नवम्बर, 1985 में प्रकाशित हुआ।

इन दो वर्ष की अवधि में जिसका समापन वसंत पर्व 1986 पर हुआ, दर्शन-झाँकी के कौतुक वाले वर्ग से उन्होंने मुक्ति पा ली एवं अनेकों ऐसे प्राणवान् व्यक्ति उनसे जुड़ गये जो उनके मूल स्वरुप को, उनकी आत्म-कथा को पढ़कर भली-भाँति हृदयंगम कर उनके प्रत्यक्ष दर्शन न हो पाने की स्थिति में भी उनसे आ जुड़े थे। इनमें से कुछ देव-परिवार का अभिन्न अंग बन गये, कुछ क्षेत्र में सक्रिय हो गये जिन्हें आदर्शवाद रुच नहीं रहा था, वे स्वयं को तीव्र गति से चल रहे प्रज्ञावतार के प्रवाह में अपने को न जोड़ स्वत: अलग हो गये अथवा थपेड़ों ने उन्हे अलग कर दिया। इस प्रकार 1984 से 1986 की अवधि प्रज्ञा-परिवार के लिए एक युगान्तरकारी परिवर्तन का स्वरूप लेकर आयी।

वसंत पर्व 1986 पर अपनी सूक्ष्मसत्ता के निर्देशानुसार उन्होंने तप-साधना को साथ जारी रखते हुए परिजनों से सीमित रुप में मिलते रहने का क्रम पुन: बना लिया, जो निर्बाध गति से वसंत पर्व 1990 तक चलता रहा। इन चार वर्षों की अवधि में जो कार्य उनके मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ, वह विगत चालीस वर्षों के बराबर हुआ माना जा सकता है। इसी अवधि में उन्होंने कार्यक्षेत्र से जुड़े कार्यक्रमों को नई गति दी। सात लाख गाँवों व एक लाख कस्बों तक पहुँचने के लिए एक नई कार्यशैली निर्धारित हुई। पूर्णाहुति वर्ष होने के कारण एक हजार स्थानों पर 108 कुण्डीय यज्ञों को करने का निर्णय 1986 में ही लिया गया। यह तीन वर्ष से चली आ रही देवात्मा शक्ति की कुण्डलिनी जागरण साधना की महापूर्णाहुति थी। लाखों व्यक्ति इस माध्यम से मिशन से जुड़ गये। अगले ही वर्ष समय की आवश्यकता को देखते हुए इन यज्ञों को विस्तार देने के लिए दीपयज्ञों का निर्धारण हुआ, जो जन्मदिवसोत्सवों से लेकर एक लक्ष वेदीय दीपयज्ञों का स्वरूप लेता हुआ विस्तार लेता चला गया।

जनवरी 1987 का 'अखण्ड ज्योति' अंक कुण्डलिनी जागरण विशेषांक था। इसमें व्यष्टिगत और समष्टिगत नवसृजन के निमित्त किए जाने वाले

युगऋषि ने धीरे-धीरे सुनियोजित ढंग से अपनी चेतना को समेटना आरंभ कर दिया था। यह कार्य 1985 से ही आरंभ हो गया था। यह उनका हीरक जयंती वर्ष था। पर उसके बाद महाप्रयाण तक का पांच वर्षीय काल सारे जीवन पर भारी पड़ता है। पढ़ें उस वृत्तांत को....



यदि आप अपने को महान् बनाना चाहते हैं, तो अपनी आत्मा की महानता स्वीकार कीजिए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

साधना पराक्रम का सचित्र, शास्त्रोक्त एव विज्ञानसम्मत प्रतिपादन था। एक गूढ़ विषय पर एक सरल-सुबोध व्याख्या परिजनों के समक्ष आयी। विश्व वातावरण में संव्याप्त अवांछनीयताओं के परिशोधन हेतु की गयी इस साधना को विश्व-राष्ट्र की कुण्डलिनी जागरण साधना नाम दिया गया। प्रकारान्तर से इस अंक में पूज्य गुरुदेव द्वारा सम्पन्न सूक्ष्मीकरण साधना एवं अगले दिनों सूक्ष्म एवं कारण शरीर से सम्पन्न होने वाली साधना विस्तृत रूपरेखा थी।

इक्कीसवीं सदी विशेषांक जो फरवरी, 1987 में प्रकाशित हुआ इस साधना का क्रिया-पक्ष था। पूज्य गुरुदेव का 'इक्कीसवीं सदी- उज्ज्वल भविष्य' उद्घोष यहीं से प्रकट हुआ। उज्ज्वल भविष्य का मूल आधार उन्होंने अपना संकल्प-बल बताया जो उच्चसत्ता की प्रेरणा से महाकाल की चुनौती की तरह अवधारित किया गया। इसी अंक में उन्होंने लिखा कि- ''इस कार्य को सम्पन्न करने के लिए हमने स्थूल शरीर से काम लेना प्राय: बंद कर दिया है। उसके साथ एक हलका तंतु ही जुड़ा रखा है। जब उसकी भी आवश्यकता न होगी तो एक झटके से इसे भी तोड़कर अलग कर देंगे।''

वसंत पर्व 1988 के 'अखण्ड ज्योति' विशेषांक में ''ज्योति फिर भी बुझेगी नहीं'' शीर्षक से एक लेख में उन्होंने लिखा - ''सोचा जाता है कि गुरुजी ६७ वर्ष का आयुष्य पूरा करना चाहते हैं। इस दृष्टि से माताजी भी उतने आयु का लाभ ले सकेंगी जितनी कि गुरुदेव। इस महाप्रयाण का समय अब बहुत दूर नहीं है। हाथ के नीचे वाले अनिवार्य कामों को जल्दी-जल्दी निपटाने की बात बनते ही चार्ज दूसरों के हाथ चला जाएगा। सन्देह हो सकता है कि उस दशा में वर्तमान प्रगति रुक सकती है और व्यवस्था बिगड़ सकती है। यह मिशन तंत्र बाजीगर (जगतनियंता) द्वारा संचालित है। वही कोई गड़बड़ी होते देखेगा और तत्परतापूर्वक सुधारेगा। आखिर लाभ-हानि भी तो उसी की है। मिशन के भविष्य के सम्बन्ध में भी हर किसी को इसी प्रकार सोचना चाहिए और निराशा जैसे अशुभ चिंतन को पास नहीं फटकने देना चाहिए।''

ऊपर की पंक्तियों से स्पष्ट है कि वे अपने दृश्य कार्यों को एक पूर्व निर्धारित अवधि में समेट रहे थे ताकि वे अपने भावी उत्तरदायित्व को सूक्ष्म शरीर से सम्पन्न करने हेतु सक्षम हो सकें। ''शरीर के निष्प्राण होने के उपरान्त जो चर्मचक्षुओं से हमें देखना चाहेंगे वे इसी अखण्ड ज्योति की जलती लौ में हमे देख सकेंगे एवं यह आश्वासन हम देते हैं कि ज्योति कभी बुझेगी नहीं'' जैसे शब्दों से उन्होंने दु:खी परिजनों को आश्वासन भी दे दिया था कि वे स्वयं को सँभालें व भावी सुनिश्चितता को समझते हुए सौंपे दायित्वों को पूरा भर करते चलें।''

वसंत पर्व 1988 पर प्रकाशित इन पंक्तियों को पढ़कर सभी को लगा कि पूज्य गुरुदेव पुन: दर्शन देना संभवत: बंद कर देंगे, शरीर त्याग की बात तो किसी के मन में भी नहीं थी एवं न ही शब्दों का भावार्थ वे समझ पाए थे। लगभग दस हजार निकटवर्ती परिजनों का एक समूह पुन: शांतिकुंज आ गया। शिवरात्रि पर एकत्रित इस वर्ग के एक विशेष सत्र को मिनी वसंत पर्व की उपमा दी गयी व आश्वस्त किया गया की अभी गुरुदेव अपना आश्वासन पूरा निभाएँगे, किंतु उन्हें समीप से - गहराई से समझने वाले भली-भाँति समझ रहे थे कि प्रत्यक्षत: स्वास्थ्य बहुत अच्छा दिखते हुए भी अब वे जिन्दगी का अन्तिम महत्वपूर्ण अध्याय सम्पन्न कर रहे हैं। यही कारण है कि सन् 1990 की वसंत पंचमी पर जब उन्होंने अंतिम दर्शन व अंतिम वसंत पर्व की बात कही तो सूक्ष्म दृष्टि वालों ने उसका अर्थ तुरन्त समझ लिया। 'सतयुग की वापसी' 'नवयुग का मत्स्यावतार' एवं 'नव सृजन के निमित्त महाकाल की तैयारी' जैसी पुस्तकों में वे पहले ही संकेत दे चुके थे कि वे अब सूक्ष्मशरीर और कारणशरीर से सक्रिय होने जा रहे हैं। ये सभी पुस्तकें 1989 के उत्तरार्द्ध में प्रकाशित हो चुकी थीं। जिन्होंने उन्हें गहराई से पढ़ा, वे युग परिवर्तन का मर्म, गुरुसत्ता के वास्तविक स्वरूप व उनकी उस निमित्त भावी तैयारी हेतु तत्परता समझ रहे थे।

'नवसृजन के निमित्त महाकाल की तैयारी' पुस्तक में वे लिखते हैं- अब जीवन का दूसरा अध्याय आरंभ होता है। अब इसमें जो होना है उसे और भी अधिक महत्वपूर्ण-मूल्यवान माना जा सकता है। स्थूल के अतिरिक्त सूक्ष्म व कारण शरीरों

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

का अस्तित्व अध्यात्म विज्ञानी बताते रहे हैं। उन्हें स्थूल शरीर की तुलना में असंख्य गुना अधिक शक्तिशाली कहा गया है। उन्हीं का प्रयोग अब एक शताब्दी तक किया जाना है। यह कार्य सन् 1990 के वसंत पर्व से आरम्भ किया जा रहा है। यहाँ से लेकर सन् 2000 तक दस वर्ष युगसंधि का समय है। परिजन देखेंगे कि इस अवधि में जो गतिविधियाँ चलेंगी उसका केन्द्र 'शान्तिकुंज हरिद्वार' होगा।

यही प्रसंग 'बसंत पर्व पर महाकाल का संदेश' नाम से प्रकाशित हुआ। जिसमें परिजनों को उन्होंने अस्सी ब्रह्मकमल खिलने व अपने जीवन का प्रथम अध्याय समाप्त होने की बात कही। यही प्रसंग मार्च, 1990 के सम्पादकीय एवं अप्रैल, 1990 की पत्रिका में दी गयी विशेष लेखमाला 'इक्कीसवीं सदी में हमें क्या करना होगा' के अन्तर्गत दिये गये 'हम बिछुड़ने के लिए नहीं जुड़े हैं' शीर्षक लेख में उनकी लेखनी से प्रकट हुआ। वे लिखते हैं - '' दृश्य शरीर रूपी गोबर की मशक चर्मचक्षुओं से दिखे या न दिखे, विशेष प्रयोजनों के लिए नियुक्त किया गया प्रहरी अगली शताब्दी तक पूरी जागरूकता के साथ अपनी जिम्मेदारी वहन करता रहेगा।'' आगे के शब्द उन्हीं की लिपि में यथावत प्रस्तुत हैं।

''शान्तिकुंज परिसर में संचालक अपना सूक्ष्म शरीर-अदृश्य अस्तित्व बनाये रहेंगे। आने वाले, रहने वाले अनुभव करेंगे कि उनसे अदृश्य किंतु समर्थ प्राण-प्रत्यावर्तन और मिलन, आदान-प्रदान भी हो रहा है। इस प्रक्रिया का लाभ अनवरत रूप से जारी रहेगा।... कहने, सुनने, करने-कराने की प्रक्रिया चलती रहने के संबंध में इस वसंत पर्व पर उपस्थित परिजनों से जब ऊपर से उतरे आदेश के अनुसार यह कहा था कि हममें से कोई किसी से अगले दिनों बिछुड़ न सके। जो प्रमाद और उपेक्षा बरतेगा, उसे शान्तिकुंज की संचालक शक्ति झकझोरता, उनके कान उमेठती और बाधित करती रहेगी। हर व्यक्ति सक्रिय रहकर ही चैन से बैठ सकेगा। कहा भले ही अलंकारिक भाषा में गया हो, पर इसे एक सच्चाई मानकर चलना चाहिए कि ऐसे सशक्त सूत्र मजबूती के साथ परस्पर बाँध गये हैं, जो बिछुड़ने देने की स्थिति आने नहीं देंगे, भले ही हम लोगों में से किसी का दृश्यमान शरीर रहे या न रहे।''

उपरोक्त आश्वासन में एक चेतावनी भी थी व दिलासा भी। इतना सब स्पष्ट होते हुए भी सहज मोहवश हममें से किसी को भी यह कल्पना न रही होगी कि वे स्थूल शरीर का चोला यों उतार फेकेंगे जैसे दास कबीर अपनी झीनी चदरिया ज्यों की त्यों धर कर रखने की बात कह गये हैं। वसंत पर्व पर, प्रत्यक्ष मिलन क्रम बंद होने से 30 अप्रैल, 1990 तक जब उन्होंने निकटवर्ती कार्यकर्त्ताओं की एक विशेष गोष्ठी में ब्रह्मबीज के ब्रह्मकमल में विस्तृत होने एवं उसकी सुवास कोने-कोने तक पहुँचाने के लिए 7, 8 जून को ज्येष्ठ पूर्णिमा के अवसर पर 6 महानगरों में 6 विशाल ब्रह्मयज्ञ, लक्षवेदीय दीपयज्ञ के आयोजन की बात कही तो संभवत: औरों को उनके इस अंतिम अध्याय पर शीघ्र पर्दा गिरने की बात मन में भी नहीं आयी होगी। किंतु वंदनीया माताजी एवं उनके समीपवर्त्ती सहयोगियों को भली-भाँति समझ में आ रहा था कि वे लक्ष्य निर्धारित कर चुके हैं। उनको वसंत पर्व पर ही बता दिया गया कि गायत्री जयन्ती तक ही उनका दृश्य अस्तित्व है। उसके बाद वे सूक्ष्म व कारणशरीर को और सक्रिय बनाने के लिए परोक्ष जगत में विचरण कर जाएँगे। गायत्री जयंती तक वे क्रमश: अपनी चेतना को समस्त अंगो से सिकोड़ना चालू रखेंगे, ताकि इच्छानुसार जब चाहें, शरीर छोड़ दें।

दो जून (गायत्री जयन्ती) की प्रात:काल का समय था। ब्राह्ममुहूर्त था। वंदनीया माताजी को, परिजनों को क्या कहना है एवं आगे कैसे कार्य करना है, यह संदेश उन्होंने दिया फिर दोनों ने अंतिम विदाई ली। दोनों को दृश्य शरीर के पृथक् होने की अनुभूति हो रही थी, किंतु स्वयं पर वज्र रख वंदनीया माताजी अपने आराध्य का संदेश सुनाने नीचे चली आईं। लगभग सात हजार से अधिक व्यक्तियों ने उस संदेश को सुना, जो वंदनीया माताजी ने करुणासिक्त अंत:करण से निकली अपनी वाणी से कहा। उनके उद्‌बोधन के बाद प्रणाम व भोजन का क्रम चल पड़ा। जैसे ही युग संगीत की प्रथम पंक्ति पूज्यवर के कक्ष पहुँची- 'माता तेरे चरणों में हम शीश झुकाते हैं' उनके हाथ नमन की मुद्रा में ऊपर उठे एवं हृदय की धड़कन

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

बन्द हो गई। कार्डियोस्कोप जो विगत तीन सप्ताह से सतत् हृदय का स्पन्द बता रहा था, अब यह संकेत दे रहा था कि 2 जून, 1990 की प्रात: 8 बजकर 5 मिनट पर स्थूल कार्यों से प्राण विसर्जित हो, महाप्राण में विलीन हो चुके हैं। एक युग का पटाक्षेप हो चुका था।

शोक-विह्वल उनके पुत्रों एवं निकटस्थ कार्यकर्त्ताओं ने पहले स्वयं को सँभाला एवं फिर युगद्रष्टा की उस नश्वर देह को गंगाजल से स्नान कराके खादी के कोरे वस्त्र पहनाकर उन्हें उसी मुद्रा में लिटा दिया। मौन गायत्री जप तब तक चलता रहा, जब तक कि नीचे सभी कार्यकर्त्ताओं का प्रणाम व भोजन का क्रम समाप्त नहीं हो गया। यह उसी अनुशासन के अन्तर्गत था, जो नियमित दिनचर्या को प्रभावित न होने देने के रूप में वे स्वयं चाहते थे। प्रणाम समापन के बाद वंदनीया माताजी स्वयं दर्शनार्थ ऊपर आयीं।

अपने आराध्य देवता का स्थूल शरीर ही उनके समक्ष था। प्राणों का विसर्जन जब हुआ तब उन्हें सूक्ष्म रूप से संदेश भी प्राप्त हो गया था तथा अनुभूति भी हो चुकी थी। उनका शोक सभी को और विह्वल कर सकता था अत: उन्होंने स्वयं पर नियंत्रण रखा एवं पार्थिव शरीर को अंतिम प्रणाम हेतु नीचे ले चलने के लिए कहा। कहा जा सकता है कि वे सौभाग्यशाली थे जो उनका अंतिम दर्शन कर सके, किंतु जीवनदर्शन से शिक्षा देने वाला वह अवतारी पुरुष जो कहना था, वह सब पहले ही अपने परिजनों को कह चुका था व अब कराने के लिए उनके और निकट और समीप पहुँच चुका था।

अंतिम दर्शन का दृश्य सभी के अंत:करण को विदीर्ण करने वाला था। सभी ने अपनी पुष्पांजलि समर्पित की एवं उस वातावरण में भी सबको एक विचित्र अनुभूति होती रही कि वे आश्वासन दे गये हैं तो ज्योति बुझ कैसे सकती है ? हम सभी अपने कर्तृत्व द्वारा ज्योति को सतत जलाये रखेंगे। शाम तक बाहर से आए सभी परिजन एवं स्थानीय, निकटवर्त्ती स्थानों से आए अनेक अनुयायी, उनके सम्पर्क में आये अधिकारीगण व हरिद्वार के नागरिक दर्शन हेतु आते रहे । शाम को पार्थिव शरीर जो फूलों से सजा था, शांतिकुंज आश्रम में स्थित दो छतरियों प्रखरप्रज्ञा-सजल श्रद्धा के समक्ष ले जाया गया। उसी दिन सायंकाल 5.30 पर लगभग पाँच हजार परिजनों की उपस्थिति में सजल श्रद्धा, प्रखर प्रज्ञा नामक उन्हीं के द्वारा विनिर्मित स्मारकों के समक्ष अग्नि को समर्पित कर दिया गया। इस प्रकार स्थूल काया की अस्सी वर्ष की एक सुनियोजित यात्रा समाप्त हुई।

पूज्य गुरुदेव ने अपने देह परित्याग करने सम्बन्धी पूर्वानुमान को परोक्ष रूप से तो समय-समय पर, किंतु प्रत्यक्षत: दिन विशेष की सूचना देते हुए मई मध्य में घोषित कर दिया था। क्योंकि यह स्पष्ट संकेत उनकी मार्गदर्शक सत्ता द्वारा उन्हें मई मध्य में मिल गया था कि गायत्री के सिद्धसाधक होने के नाते उन्हें अपने प्राणों को इसी पावन दिन गायत्री जयन्ती, गंगा दशहरा के दिन महाप्राण में विसर्जित कर देना चाहिए। जीवनभर जिसने स्वयं उच्चस्तरीय गायत्री साधना के शीर्ष तक स्वयं को पहुँचाया, अगणित व्यक्तियों को जाति, वंश, लिंग, वर्ण का भेद किए बिना गायत्री उपासक बना दिया उसके लिए महानिर्वाण हेतु इससे श्रेष्ठ दिन और हो भी क्या सकता था। ◈

दिल्ली के एक कार्यकर्ता बताते हैं कि सन् 1980 में वे गुरुजी-माताजी के सान्निध्य में आये। उस समय तक वे सी.ए. फाईनल में तीन बार फेल हो चुके थे। इस बार परीक्षा से पहले वे गुरुजी के पास गये और सब बात बताई। गुरुजी जिस पेन से लिख रहे थे वही पेन मुझे दे दिया और बोले, बेटा इसे संभाल कर रखना। तुम पास हो जाओगे। लेकिन इम्तहान वाले दिन रात को सोना नहीं, पढ़ते रहना। जो कुछ मैंने उस रात को पढ़ा वही इम्तहान में आया और मैं पास हो गया। मुझे गुरुजी ने सी.ए. बना दिया। आज मैं ही नहीं मेरा पूरा परिवार सी.ए. है। गुरुजी का वह पैन आज भी मेरे पास रखा है। उनके ढेरों अनुदान हमें मिले हैं। हमारा रोम-रोम उनका ऋणी है।

विपन्नता की स्थिति में धैर्य न छोड़ना, मानसिक संतुलन नष्ट न होने देना, आशा, पुरुषार्थ को न छोड़ना, आस्तिकता का प्रथम चिन्ह है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

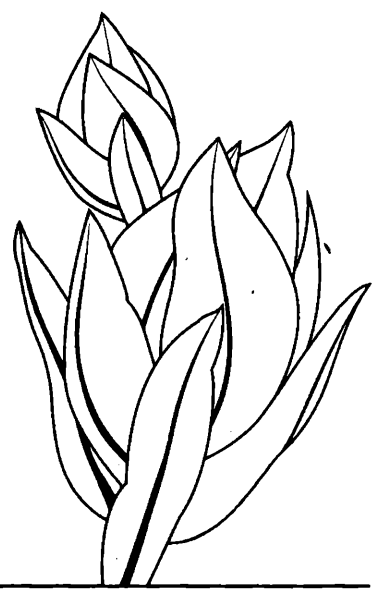
हीरक जयंती पर उभरे युगऋषि के उद्‌गार

हम हीरों का हार पहनना चाहते हैं। ऐसे हीरे जो जीते-जागते चमकदार हीरे हों। पूज्यवर ने अपनी हीरक जयंती के अवसर पर दस हजार हीरों का हार पहनने की इच्छा व्यक्त की थी। पढ़ें उनकी वेदना को उन्हीं के शब्दों में...

भगवान के दो रूप : हमारे ध्यान के दो ही केन्द्र हैं। एक तो भगवान, जिसने हमको रास्ता बताया जो हमारी पीठ पर है, जो हमको धकेलता रहता है, खींचता रहता है। एक भगवान् वह है और एक भगवान आप लोग हैं जो हमारे कंधे से कंधा मिलाकर चलते हैं। हाथ-पाँव के तरीके से काम करते हैं आँख, कान, दाँत के तरीके से हमारे क्रियाकलापों में सहयोगी रहते हैं। आप लोग भी एक तरह के भगवान हैं। दो भगवान हैं- एक निराकार है, एक साकार है। आप लोग हमें साकार भगवान के रूप में दिखाई पड़ते हैं। आज अनायास ही ध्यान हो आया कि आप लोगों से अपने जी की बात कहूँ। हमने बहुत काम किया है। अभी तो लोगों को नहीं मालूम पड़ता इस समय पर। पीछे जो मूल्यांकन करेंगे तब लोगों को पता चलेगा कि एक छोटे से मिशन ने जिसने विज्ञापन बाजी भी नहीं की, अखबारों में भी लेख नहीं छपाये, कुछ और भी नहीं किया, मुनादियाँ भी नहीं पीटी, पर इतना बड़ा काम कर लिया जितना कि शायद ही किसी और संस्था ने किया होगा।

न केवल हिन्दुस्तान में बल्कि हिन्दुस्तान से बाहर भी बहुत काम किया है हमने, ठोस काम किया है। ठोस काम कैसे किया है हमने? हमने जो ठोस काम किया है उसमें आप सब लोग शामिल हैं। कार्य कैसे किए गये? हाथ की सहायता से किये। हाथ न होता तो? तो नहीं कर सकते थे। आप हमारे सहयोगी हैं। साथी हैं, मित्र हैं। सबने मिलजुलकर एक बड़ा काम किया है। एकाकी यह काम कर सकना संभव नहीं था हमारे लिये। किसी के लिए भी संभव नहीं था। भगवानों के लिए भी संभव नहीं हुआ। गाँधी जी के लिये संभव नहीं हुआ।

हीरक जयंती : हीरक जयंती हमारी शुरू हो गई। यह हमारा पचहत्तरवाँ वर्ष है। आप पचहत्तर वर्ष के हैं? हम करोड़ों वर्ष के हैं। भगवान ने सृष्टि बनाई थी तभी जीवात्मा के रूप में जन्म लिया था। करोड़ों वर्ष पहले आये थे और करोड़ों वर्ष तक जिंदा रहेंगे। आपकी तो मुक्ति हो जाने वाली है सुना है हमने? नहीं, हमारी मुक्ति नहीं हो सकती, जब तक कि संसार के बंधन में एक भी प्राणी बँधा हुआ है तब तक हम मुक्ति की अपेक्षा नहीं कर सकते। बार बार जन्म लेंगे और दुनिया के सारे आदमी जब मुक्ति में चले जायेंगे तब सबसे आखिरी आदमी हम होंगे और तब कोशिश करेंगे कि हम मुक्ति में जायें। हम भगवान के यहाँ जायेंगे और वहाँ बैठेंगे और स्वर्ग में मजा उड़ायेंगे, यह हमारे सपने में कहीं नहीं है। तो फिर किस बात की हीरक जयंती?



सेवा मानवीय अंतरात्मा का धर्म है। उसे अपनाये बिना व्यक्तित्व की गरिमा जागती ही नहीं, सुसंस्कारिता उगती ही नहीं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

हीरक जयंती इस बात की आ गई कि दुनिया का रिवाज है कुछ। क्या रिवाज है? यह रिवाज है कि शरीर के हिसाब से 25 वर्ष पूरे होने पर रजत जयंती, 50 वर्ष पूरे हो जाते हैं तो स्वर्ण जयंती मनाई जाती है और 75 वर्ष जब आदमी के हो जाते हैं तो हीरक जयंती मनाई जाती है। हमारा जब भगवान के साथ विवाह हुआ था पंद्रह वर्ष की उम्र में, उसके बाद साठ वर्ष हो गये। पंद्रह वर्ष की उम्र में हमने अनुष्ठानों का सिलसिला चलाया था पचहत्तर वर्ष की उम्र में साठ वर्ष पूरे हो जाते हैं। इसी प्रकार 100 वर्ष में शताब्दी मनाई जाती है। सौ वर्ष आपका जीने का मन है? नहीं, अब नहीं। अब हमारे पास बहुत काम हैं। अब यह स्थूल शरीर हमको रुकावट डालता है। अब हम बिना स्थूल शरीर के सूक्ष्म शरीर से काम करेंगे, जो स्थूल शरीर के बंधन में बँधकर नहीं कर सकते। इसलिये बहुत ज्यादा दिन जियेंगे नहीं हम। अब हम अपने पाँच शरीरों से काम करेंगे और पाँच मोर्चों पर लड़ेंगे। आपसे हम जो उम्मीद रखते थे, उसमें थोड़ी कमी है। बस एक ही चिन्ता, एक ही बीमारी, एक ही व्यथा हमारी है कि हम आपसे कुछ और ज्यादा चाहते हैं। तो आप क्या चाहते हैं?

यह कामना पूरी करें : हमारी हीरक जयंती हो और आपका कोई योगदान उसमें न हो, तो यह खराब बात है। आपका योगदान होना चाहिये और जरूर होना चाहिये। क्या योगदान होना चाहिये? हमारी एक कामना रह गयी है, फूल-मालाएँ हमने सारी जिंदगी भर पहनी हैं। कितनी फूल-माला पहनी होगी आपने? सब मिलाकर के, मैं सोचता हूँ सौ मन पहन लिये होंगे या सौ मन से और ज्यादा पहन लिये होंगे। अब फूलमाला पहनने का कोई मन नहीं है। तो क्या पहनने का मन है? हमारा अब एक जेवर पहनने का मन है। हमारा कुटुम्ब तो बहुत बड़ा है, उसमें चौबीस लाख आदमी हैं। उसमें से किसी-किसी की मौज आ जाती है तो कुछ कर बैठता है, पर जो निरंतर चलता रहता है, हमारे कदम से कदम, कंधे से कंधा मिलाकर चलता है, ऐसे कुछ आदमी हो जायें।

एक नई इच्छा इस समय पर पैदा हुई है। इच्छा हुई कि चौबीस लाख, खैर मरने दीजिये, चौबीस हजार मरने दीजिये, दस हजार यदि हमारे सहयोगी ऐसे हो जायें तो हम पूरी संतोष की साँस लेते हुये जायेंगे। कैसे हो जायें? जो कदम से कदम मिलाकर के चलें और नियमित रूप से चलें। नियमित रूप का महत्त्व होता है। अनुष्ठान किसे कहते हैं? जो नियमित रूप से होता है। इसलिये इस साल हमारी यह इच्छा हुई है, हमारी हीरक जयंती के अवसर पर कि हम दस हजार हीरों का हार पहनें। हीरे देखे हैं आपने? हीरे देखे तो हैं, पर पहने नहीं हैं। अबकी बार पहनने का हमारा मन है। हीरों का हार हम पहन सकें तो फिर समझना चाहिये, हमारी मनोकामना पूरी हो गई। हमने चौबीस लाख साधक बना लिये। हाँ, बना लिये। चौबीस सौ शक्तिपीठें बना दीं। हाँ, बना दीं। बस एक ही मनोकामना और बाकी रह गई है। दस हजार हीरों का हार पहनकर के हम निकलें बाजार में। कितने आदमी कंधा लगा रहे होंगे? कितने आदमी गुलाल फेंक रहे होंगे? कितने आदमी फुलफुला रहे होंगे? इस तरीके से जब हमारा जुलूस निकले, तब उसमें फिर हम क्या पहनकर निकलें? दस हजार हीरों का हार पहन कर निकलें। लोग कहें, भाई! यह तो कोई बड़ा मालदार आदमी था, सेठ था। अरे साहब सेठ! इसके मुकाबले क्या सेठ हो सकता है। यह बड़ा शानदार आदमी था, इसलिये हमने दस हजार हीरों का हार पहनाया।

बात हमारी समझ नहीं आयी साहब। हाँ बेटे, मैं ऐसी ही कुछ पहेली जैसी कहने लगा। कबीर के जमाने में भी पहेलियाँ कहना मुझे अच्छा मालूम पड़ता था और अभी भी मुझे अच्छा मालूम पड़ता है। दस हजार हीरों से मेरा मतलब यह है कि दस हजार साथी ऐसे हो जायें, जो नियमित रूप से समय दिया करें। आपके समय की मुझे जरूरत है, पैसों की नहीं। पैसों को मैं क्या करूँगा? पैसे इकट्ठा करने को मैं खड़ा हो जाऊँ तो बहुत इकट्ठा कर सकता हूँ। लेकिन नहीं, वह मेरी इच्छा नहीं है। मेरी इच्छा सिर्फ एक है कि मेरे हाथ-पाँव मजबूत हो जायें। हाथ-पाँव अच्छे हो जायें, तब काम चले। हाथ-

चरित्र बल संसार में सब बलों से श्रेष्ठ और सारी सम्पत्तियों में मूल्यवान् सम्पत्ति है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पाँव से किससे मतलब? मेरा मतलब आपसे है, आप उन दस हजार आदमियों में से हो जायें, जिनको मैं यह कहूँ कि दस हजार बनाये। ईमानदारी की बात यह है कि आप चलते-फिरते शक्तिपीठ बन जाइये।

आप अपना समय निकालें। नहीं साहब, हमने तो नौकर रक्खा था। नहीं साहब, नौकर नहीं, हमको आपका समय चाहिये। हमको गाँधी चाहिये। नहीं साहब, हम गाँधी के बदले का एक नौकर रख लेंगे। नहीं भाई साहब, गाँधी का काम गाँधी ही कर सकता था, नौकर नहीं। विनोबा का काम विनोबा ही करते थे। जय प्रकाश नारायण का काम जय प्रकाश नारायण ने ही किया। नहीं साहब, हम दो नौकर रख लेंगे, वही सब काम चलाते रहेंगे। नहीं, ऐसा नहीं होगा। लोगों को यह गलतफहमी हो गई है कि गुरुजी का जो काम है, वह हम नौकरों से करा सकते हैं। नौकरों से नहीं करा सकते, आपसे ही करा सकते हैं।

आप चार घंटे रोज समय निकाल पायें तो मेरे उन हीरों में आप शुमार हो जायें, जिनको मैं बहुत सँभाल-सँभाल कर रखूँ। डिब्बी में बंद करके रखूँ। छाती से चिपकाकर रखूँ। गले में माला पहनाकर रखूँ। समय दीजिये आप। किस काम के लिये समय? जनजागृति के लिये। हमें तो सिर्फ इसी बात की जरूरत है कि समय की पुकार और समय की माँग इतनी तेज होती जाती है कि हमारे कान फटे जाते हैं। इसको हम अकेले जिस सीमा तक करते हैं, वह कम पड़ता है। इसलिये आपके सहयोग की बहुत जरूरत है। आप चार घंटे रोज दीजिये, इससे कम में कहीं काम चलने वाला नहीं है। ऐसा नहीं तो आप उन्हीं में शामिल हो रहिये- चौबीस लाखों में। जो जब वसंत पंचमी होती है, तो हवन करने आ जाते हैं और जब कुछ और होता है, गायत्री जयंती तो जुलूस में शामिल हो जाते हैं। लेकिन मेरी तो आपसे कुछ और कामना है। लोग बाग पहले गुरु दक्षिणा माँगते रहे हैं। स्वामी दयानंद से गुरुदक्षिणा विरजानंद ने माँगी थी। शिवाजी ने अपने गुरु को गुरुदक्षिणा दी थी, अपना राजपाट उनके सुपुर्द कर दिया था। विश्वामित्र को हरिश्चंद्र ने गुरुदक्षिणा दी थी, सारा राजपाट उनके सुपुर्द कर दिया था। आप सारा राजपाट तो मत दीजिये, पर चार घंटे हमारे कहने के हिसाब से दिया कीजिये। उससे काम बन जायेगा।

अब मैं अकेले शक्तिपीठों को देखना चाहता हूँ। 'एकला चलो रे, एकला चलो' रवीन्द्रनाथ टैगोर का वह गीत मुझे बहुत प्यारा है। मैं भी अकेला चला हूँ। मैंने किसी का कहना नहीं माना। अपनी आत्मा का और परमात्मा का, दो का कहना माना। आप भी ऐसा कर सकते हैं, तो कुछ समय नियमित रूप से लगाकर के आप अपने आपको चलती-फिरती शक्तिपीठों के रूप में बदल सकते हैं। चलती-फिरती शक्तिपीठें कितनी चाहिये? हमको दस हजार चाहिये। हमारा मन है। वास्तव में मन है। चौबीस लाख आदमियों से दस हजार आदमी नहीं मिलेंगे हमको? मिलने चाहिये।

मेरे ख्याल से दस हजार प्रतिज्ञा वाले आदमी, वचन के धनी आदमी, सच्ची लगन वाले आदमी, ईमानदार आदमी लोकहित के लिये अपने आपको समर्पित कर सकें ऐसे आदमी, मेरे ख्याल से मुझे दस हजार मिल जाने चाहिये। मेरी एक ही महत्त्वाकांक्षा और कामना रह गयी है कि मेरी हीरक जयंती मन जाये। ऐसी हीरक जयंती मने, ऐसी हीरक जयंती मने, जिसे हम परलोक में भी याद किया करें, आप लोगों को।

आप स्वयं काम करना शुरू कर दीजिये। हमारे यहाँ कार्यकर्ता यह कहते हैं? कार्यकर्ताओं की ओर आप देखिये मत, सिर्फ हमारी ओर देखिये और अपनी ओर देखिये। अब अकेला मैं, अकेले आप, दो पागल जब मिल-जुलकर बैठेंगे तो कैसा मजा आयेगा, कैसी मस्ती आयेगी।

अब इसमें क्या शर्त है? कोई शर्त नहीं है। आप अकेले काम कीजिये। बस, अकेले काम कीजिये। अकेले बिना रुके काम कर सकेंगे तो आप हीरे हो जायेंगे। हीरों का हार पहनकर हम अपनी छाती से लगाये रहेंगे आपको, अपने कलेजे से लगाये रहेंगे आपको। आपको भूल जायेंगे? अरे! हम आपको सँभालकर रखेंगे बाबा! रात को कोई चोर चुराकर ले गया तो कैसे हो जायेगा? इसको हम तिजोरी में रखेंगे। लॉकर में रखेंगे, बहुत

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

सँभालकर रखेंगे। इनका दिन-रात ध्यान रखेंगे कि इतने हीरे हमारे पास हैं। हीरे की अँगूठी होती है, तो आदमी ध्यान रखता है। हीरे की नाक की लौंग औरतों के पास होती है, उसका ध्यान रखती हैं। हर वक्त उसका ध्यान आता रहता है, और आप हीरे अगर हमारी निगाह में रहेंगे और सामने रहेंगे तो आपको याद नहीं करेंगे? आपको सँभालेंगे नहीं? फिर आपके लिये कुछ देंगे नहीं? आपके लिये भी हम बहुत कुछ करेंगे।

पात्रता बढ़ायें-अधिक पायें : हमारे पास कुछ अधिक कीमती चीजें हैं। इन्हें हम बहुत दिन से तलाश करते फिर रहे हैं। इस बार एकान्त साधना से भी कुछ प्राप्त कर रहे हैं। पहले भी हम प्राप्त करते रहे हैं और पहले भी हमने दिया है, लोगों को। पर क्या दिया है? किसी को बेटा दे दिया, किसी को मुकदमा जितवा दिया। किसी की खाँसी दूर कर दी, अरे तो इससे क्या बना? कुछ बना क्या? दो वर्ष पहले मर जाता तो क्या? नौकरी में तरक्की करा दी, अगर आपको 100 रुपये ज्यादा दिला दें तो क्या? अगर सौ रुपये कम मिलते तो जिंदा रहते कि नहीं रहते, और गरीब लोग जिंदा हैं कि नहीं हैं। वह तो मखौल था। जो आपको दिया और जो आपने लिया, अब तक हमसे, वह तो दिल्लगीबाजी थी। बच्चों को बहका देते हैं, गुब्बारा लाकर के। गुब्बारे के तरीके से आपको बहका दिया, सीटी देकर बहका दिया। छोटी-छोटी टॉफी और लेमनचूस देकर बहका दिया। पर अब हमारे पास कुछ ज्यादा माल है, ज्यादा संपत्ति है। स्वामी रामकृष्ण परमहंस मरे थे, विवेकानंद के ऊपर अपनी लात रखकर के और यह कह गये थे, हमारे पास जो शक्ति है, तेरे को समर्पित कर दी। देना हम भी चाहते हैं पर पात्रता तो चाहिये।

आप तो, बहकाना चाहते हैं। प्रणाम करना चाहते हैं और फूल-माला पहनाना चाहते हैं। हमारे फोटो के ऊपर आरती उतारना चाहते हैं। और यह करना चाहते हैं, वह करना चाहते हैं। बेकार की बातें, डंड-कमण्डल तो आप करना चाहते हैं, जैसे बच्चों को बहकाते हैं। भगवान को बहकाइये, शंकर जी को बहकाइये, हमको बहकाओ मत। हम तो कीमत चाहते हैं आपसे। "गिव एण्ड टेक" का व्यवहार हमको पसंद है। हमारे गुरु को भी यही पसंद है। हमने उसको दिया है और उसने हमको दिया है। दोनों में लड़ाइयाँ होती रहीं, उनने कहा- तुझे कुछ चाहिये? हमने कहा, आपको कुछ चाहिये? उन्होंने फिर कहा- तेरे को कुछ चाहिये? तो हमने, हमारे पास जो कुछ था, उसको लाकर उसके हवाले कर दिया। उन्होंने कहा, हमारा जो तप है 600 वर्ष का, वह हमने तेरे हवाले कर दिया। हवाले कर दिया, तो मित्रो, हम इस हिसाब से कुछ बड़े बन बैठे हैं। शरीर में क्या है? हमारे माँस में क्या है? हम इतना बड़ा जो काम कर बैठे, वह सारे का सारा काम कर बैठना, भगवान् की शक्तियों का स्थानान्तरण होने का काम है।

आप भी, कुछ चाहते हैं क्या हमसे? स्वाति की बूँदों का ब्यौरा सुना है क्या? स्वाति की बूँदें सीप में पड़ जाती हैं, तो मोती बन जाती हैं। बाँस में पड़ती हैं, वंशलोचन बन जाती हैं। पारस पत्थर की कहानी सुनी है, क्या आपने? पारस पत्थर की कहानी सुनी है तो फिर आइये। अगर आप लोहा हैं तो हम छाती से लगायेंगे। कलेजे से लगायेंगे, तो लगा लीजिये। कीमत तो चुका। प्रणाम करता है, और दुनिया भर के वरदान माँगता है। ऐसे पागल कहीं और से देखना। रामकृष्ण परमहंस ने कीमत वसूल करके दिया था। चाणक्य ने कीमत वसूल करके दिया था।

समर्थ गुरु रामदास ने कीमत वसूल करके दिया था और हम भी भाई साहब, उस परंपरा को बिगाड़ नहीं सकते। बिना कीमत के देकर के मुफ्तखोरों को, लूटमारों को, जेबकटों को अपनी दौलत दे जायें, कैसे दे जायेंगे? प्यार दे जायें! कैसे दे जायेंगे? जेबकटों को नहीं दे सकते। हम देंगे उनको, जो हमारे लिये पसीना बहायेंगे। जो हमारे लिये श्रम बहायेंगे, हमारे लिये अपना मन बहायेंगे। हमारे लिये अपने जीवन का अंश बहायेंगे, उनको हम देंगे। बस श्रावणी के रक्षाबंधन पर्व पर आप हमारी रक्षा कीजिये, हमारी भावनाओं की रक्षा कीजिये, हम आपकी रक्षा करेंगे। यह पर्व हम भी मनाते हैं, इस उम्मीद के साथ कि हम दस हजार लोग निकाल लेंगे।

जिन विचारों में पूरी सच्चाई, दृढ़ता और आस्था होगी, उन्हीं विचारों के पीछे सृजन की शक्ति निवास करती है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भावी महाभारत की तैयारी

(आज की परिस्थितियों में गुरुसत्ता का हम सबको मार्गदर्शन)

रचनात्मक कार्यों से आगे का चरण है- संघर्ष। इसके लिए अधिक मजबूती, अधिक साहसिकता, अधिक साधन और अधिक संगठित शक्ति चाहिए। युद्ध एक कला है। समय, शक्ति और साधनों को देख कर ही उसे आरम्भ करना चाहिए। उतावले लोग ऐसे ही असमय लड़ मरते हैं, तो पिटते और हारते हैं। हमें व्यापक अनाचार के विरुद्ध सुविस्तृत और समर्थ मोर्चा खड़ा करना ही होगा। असुरता का दमन बिना जूझे हो ही नहीं सकता। रावण, कंस, दुर्योधन, हिरण्यकश्यप, सहस्त्रबाहु आदि को समझाने वालों ने सारे प्रयत्न कर लिये थे पर सफल केवल संघर्ष ही हुआ। हमें जिनसे लड़ना है उन अज्ञान, आनाचार और अभाव के असुरों का छद्मवेश बहुत ही विकराल है। वे न तो दीख पड़ते हैं और न सामने आते हैं। उनकी सत्ता भगवान् की तरह व्यापक हो रही है। अज्ञान-ज्ञान की आड़ में छिप कर बैठा है, अनाचार को पकड़ना कठिन पड़ रहा है, अभावों का जो कारण समझा जाता है वस्तुतः उससे भिन्न ही होता है। ऐसी दशा में हमारी लड़ाई व्यक्तियों से नहीं—अनाचार से होगी। रोगियों को नहीं, हम रोगों को मारेंगे। पत्ते तोड़ते फिरने की अपेक्षा जड़ पर कुठाराघात करेंगे।

भावी महाभारत अपने अलग ही युद्धकौशल से लड़ा जायगा। उसमें पिछले ढंग की रण-नीति काम न देगी। निहित स्वार्थों से इतने अधिक लोग ओत-प्रोत हो रहे हैं, उनने लोकप्रियता की रेशमी चादर ऐसी अच्छी तरह लपेट रखी है कि उन पर व्यक्तिगत रूप से आक्रमण करते न बन पड़ेगा। हम प्रवाहों से जूझेंगे, धाराओं को मोड़ेंगे और अनाचार का विरोध करेंगे। उसके समर्थन में जो लोग होंगे वे सहज ही लपेट में आ जायेंगे और औंधे मुँह गिर कर मरेंगे।

धर्म-ध्वजी साधु पण्डितों की आड़ में अन्ध-विश्वास, सामाजिक अनाचार छिपे बैठे हैं। वे पुरातनवाद का समर्थन करने के नाम पर मूढ़ताओं और अनीतियों का समर्थन-संरक्षण करते है। हम व्यक्तियों पर आक्षेप करने की अपेक्षा उन पाखण्डों की पोल खोलेंगे, जो भी उनका समर्थन करता होगा वह अपने आप जन-आक्रोश का शिकार बनेंगे और बेमौत मरेंगे। साहित्यकार बनकर जो सरस्वती से व्यभिचार कर रहे हैं, पशु प्रवृत्तियों को भड़का कर चाँदी बटोर रहे हैं, हम उनका नाम लिये बिना जनता को यह बतायेंगे कि इस अनाचार ने किस प्रकार जन-जीवन का सर्वनाश किया है। जो भी उस दुष्टता में संलग्न होंगे, उनका मुँह काला होगा। संगीत, अभिनय, कला, चित्र और फिल्मों के सहारे जिनने पशु प्रवृत्तियाँ भड़का कर मनुष्य को पशुता के गर्त में धकेला है, उस सोना बटोरने वाली लिप्सा के विरुद्ध हम घृणा का अभियान छोड़ेंगे। फिर जो कोई इस कलंक कालिमा में हाथ धो रहे होंगे, कलंकियों की पक्ति में खड़े किये जायेंगे। आज इन लोगों को जनता की अज्ञानता का लाभ देकर श्रेय-सम्मान और धन-वैभव दोनों हाथों से समेटने का अवसर है। कल इन्हें सड़क पर चलना और भले लोगों की पंक्ति में सिर उठा कर चल सकना कठिन हो जायगा। हम जन-आक्रोश का ऐसा वातावरण पैदा करेंगे, जहाँ भी छद्म बन कर अनाचार छिपता है उन सभी छिद्रों को बन्द करके रहेंगे।

व्यापारिक क्षेत्र में, सरकारी मशीनरी में, राजनेताओं में, चिकित्सकों में, शिक्षकों में यहाँ तक कि हर वर्ग में, हर व्यक्ति में, प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से अनाचार की जड़ें अत्यंत गहराई तक घुसती चली गई हैं। इनमें एक-एक को चुनना सम्भव नहीं, किसी का दोष सिद्ध करना भी कठिन है। ऐसी दशा में व्यक्तियों से नहीं, धाराओं से हमें लड़ेंगे। हर दुष्प्रवृत्ति का भण्डा-फोड़ करेंगे और वह ऐसा तीखा होगा कि सुनने वाले तिलमिला उठें और उनमें प्रवृत्त लोगों के लिए मुँह छिपाना कठिन हो जाय। जन आक्रोश ही इतने व्यापक भ्रष्टाचार से लड़ सकता है। हम उसी को उभारने में लगे हैं। समय ही बतायेगा कि हमारा संघर्ष कितना तीखा और कितना बाँका होगा। बौद्धिक क्रान्ति की-नैतिक क्रान्ति की-सामाजिक क्रान्ति की दावानल इतनी प्रचण्डता पूर्वक उभारी जायेगी कि उसकी लपटें आकाश चूमने लगें। अज्ञान और अनाचार का कूड़ा करकट उसमें जलकर ही रहेगा। ◈

जिस समाज का प्रबुद्ध वर्ग सोचता तो बहुत है, पर करता कुछ नहीं, वहीं निष्क्रियता का मरघट जैसा सन्नाटा छाया रहता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परम पूज्य गुरुदेव का 'अंतिम संदेश'

''अस्सी वर्ष जी गई लम्बी सोद्देश्य शरीर यात्रा पूरी हुई। इस अवधि में परमात्मा को हर पल अपने हृदय और अंतःकरण में प्रतिष्ठित मानकर एक-एक क्षण का पूरा उपयोग किया है। शरीर अब विद्रोह कर रहा है। यों उसे कुछ दिन और घसीटा भी जा सकता हैं, पर जो कार्य परोक्ष मार्गदर्शक सत्ता ने सौंपे, वे सूक्ष्म और कारण शरीर से ही सम्पन्न हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में कृशकाय शरीर से मोह का कोई औचित्य भी नहीं है।''

'ज्योति बुझ गई' यह भी नहीं समझा जाना चाहिए। अब तक के जीवन में जितना कार्य इस स्थूल शरीर ने किया है, उससे सौ गुना सूक्ष्म अन्तःकरण से सम्भव हुआ है। आगे का लक्ष्य विराट है। संसार भर के छह अरब मनुष्यों की अन्तश्चेतना को प्रभावित और प्रेरित करने, उनमें आध्यात्मिक प्रकाश और ब्रह्मवर्चस जगाने का कार्य पराशक्ति से ही संभव है। जीवन की अन्तिम घड़ियाँ उसी उपक्रम में बीती हैं। इसके उपरान्त वे सभी परिजन, जिन्हें हमने ममत्व के सूत्रों से बाँधकर परिवार के रूप में विस्तृत रूप दे दिया है, संभवतः स्थूल नेत्रों से हमारी काया को नहीं देख पाएँगे, पर हम उन्हें विश्वास दिलाते हैं कि इस शताब्दी के अंत तक, जब तक सूक्ष्मशरीर कारण के स्तर तक न पहुँच जाए, हम शान्तिकुञ्ज परिसर व प्रत्येक परिजन के अन्तःकरण में विद्यमान रहकर अपने बालकों में नवजीवन और उत्साह भरते रहेंगे। उनकी समस्या का समाधान उसी प्रकार निकलता रहेगा, जैसा कि हमारी उपस्थिति में उन्हें उपलब्ध होता।

हमारे आपसी सम्बन्ध अब और भी प्रगाढ़ हो जाएँगे, क्योंकि हम बिछुड़ने के लिए नहीं जुड़े थे। हमें एक क्षण के लिए भी भुला पाना आत्मीय परिजनों के लिए कठिन हो जाएगा। ब्रह्मकमल के रूप में हम तो खिल चुके, किन्तु उसकी शोभा और सुगन्धि के विस्तार हेतु ऐसे अगणित ब्रह्मबीज देवमानव उत्पन्न किये जा रहे हैं, जो खिलकर समूचे संस्कृति सरोवर को सौन्दर्य-सुवास से भर सकें, मानवता को निहाल कर सकें।

ब्रह्मनिष्ठ आत्माओं का उत्पादन, प्रशिक्षण एवं युग-परिवर्तन के महान कार्य में उनका नियोजन बड़ा कार्य है। यह कार्य हमारे उत्तराधिकारियों को करना है। शक्ति हमारी काम करेगी तथा प्रचण्ड शक्तिप्रवाह अगणित देवात्माओं को इस मिशन से अगले दिनों जोड़ेगा। उन्हें संरक्षण, स्नेह देने, खरादने, सँवारने का कार्य माताजी सम्पन्न करेंगी। हम सतयुग की वापसी के सरंजाम में जुट जाएँगे। जो भी संकल्पनाएँ नवयुग के सम्बन्ध में हमने की थीं, वे साकार होकर रहेंगी। इसी निमित्त कायपिंजर का सीमित परिसर छोड़कर हम विराट् घनीभूत प्राण ऊर्जा के रूप में विस्तृत होने जा रहे हैं। देव समुदाय के सभी परिजनों को मेरे कोटि-कोटि आशीर्वाद, आत्मिक प्रगति की दिशा में अग्रसर होने हेतु अगणित शुभकामनायें।

जहाँ सच्चा प्रेम है, आध्यात्मिक आत्मीयता है वहाँ त्याग, उत्सर्ग और बलिदान की भावना होना अनिवार्य है।

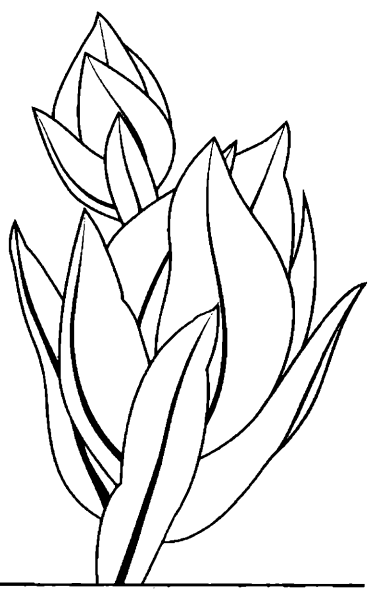
Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परम वन्दनीया माताजी का 'अंतिम संदेश'

जिन चरणों में अपने आप को समर्पित किया, उनके बिना जीवन का एक-एक क्षण पीड़ा के पहाड़ की तरह बीत रहा है। जिस दिन उनके पास आई, उस दिन का पहला पाठ था-पीड़ित मानवता की सेवा और देव संस्कृति का पुनरोदय, सो अपने आप को उसी में घुला दिया। यद्यपि यह एक असह्य वेदना थी, तथापि महाप्रयाण से पूर्व परमपूज्य गुरुदेव की आज्ञा थी कि अपने उन बालकों की अँगुली पकड़कर उन्हें मिशन की सेवा के मार्ग पर सफलतापूर्वक आगे बढ़ा दूँ, जिन्हें अगले दिनों उत्तरदायित्व सँभालने हैं। पिछले चार वर्षों में मिशन जिस तरह आगे बढ़ा, वह सबके सम्मुख है, जो मैं देख रही हूँ। आगे का भविष्य तो इतना उज्ज्वल है, जिसे कल्पनातीत और चमत्कार कहा जा सकता है। उसके लिए जिस पुरुषार्थ की आवश्यकता है, हमारे बालक अब उसमें पूर्णतया प्रशिक्षित हो गए हैं।

शरीर यात्रा अब कठिन हो रही है। उनके जाने के पश्चात से आज तक एक क्षण भी ऐसा नहीं बीता, जब वे आँखों से ओझल हुए हों। घनीभूत पीड़ा अब आँसू रोक नहीं पा रही, सो मुझे उन विराट् तक पहुँचना अनिवार्य हो गया है। यह न समझें, हम स्वजनों से दूर हो जायेंगे।

परम पूज्य गुरुदेव की सूक्ष्म एवं कारण सत्ता में विलीन होकर हम अपने आत्मीय कुटुम्बियों को अधिक प्यार बाँटेंगे, उनकी सुख-सुविधाओं में अधिक सहायक होंगे। हमारा कार्य अब सारथी का होगा। दुष्प्रवृत्तियों से महाभारत का मोर्चा अब पूरी तरह हमारे कर्त्तव्यनिष्ठ बालक सँभालेंगे। सभी क्रियाकलाप न केवल पूर्ववत संपन्न होंगे, वरन् विश्व के पाँच अरब लोगों के चिन्तन, जीवन, व्यवहार, दृष्टिकोण में परिवर्तन और मानवीय संवेदना की रक्षा के लिए और अधिक तत्पर होकर कार्य करेंगे। हम तब तक रुकें नहीं, जब तक धरती पर स्वर्ग और मनुष्य में देवत्व का अभ्युदय स्पष्ट दृष्टिगोचर न होने लगे। ◈



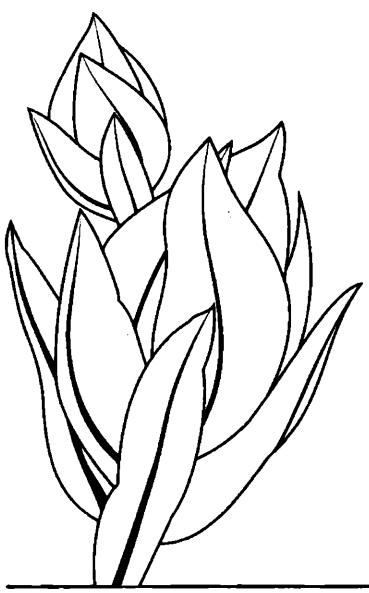
निराशा को आशा में, उपेक्षा को पुरुषार्थ में बदल देना, नए आधारों को लेकर सृजनात्मक साहस को उत्तेजना देना युग मनीषियों का काम है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ब्रह्मकमल का उद्घोष

मैंने जीवन त्याग, तितीक्षा, तप में सतत गलाया।
तब जीवन के 'ब्रह्मकमल' को, पूरी तरह खिलाया।।
ब्रह्मकमल में 'ब्रह्मतेज' का, जादू बोल रहा है।
और ब्राह्मणोचित-जीवन की, महिमा खोल रहा है।।
ब्रह्मकमल की हर पंखुरि में, ब्राह्मण का परिचय है।
ब्रह्म और ब्राह्मण का, युग-युग से अटूट परिणय है।।
मैंने खिलकर, ब्रह्मबीज का है अंबार लगाया। मैंने...
पड़े न रह जायें, मेरे में 'ब्रह्मबीज' बिन बोये।
मैंने इन्हें कलेजे में रख, हैं जीवन भर ढोए।।
मेरे हो तो, मेरे इन बीजों को तुम बो देना।
कुछ तो मेरा भार घटाने को, तुम भी ढो देना।।
कहीं न ऐसा हो, पछताऊँ क्योंकर कमल खिलाया। मैंने...
ब्रह्मबीज बोये जाते, तप से तपती धरती पर।
और ब्राह्मणोचित-जीवन की, उपजाऊ धरती पर।।
भोगवाद के चक्कर में फँस, ब्राह्मणवंश घटा है।
त्याग, तितीक्षा, संयम, तप से ही संबंध कटा है।।
भटक गया है स्वयं ब्राह्मण, जग को भी भटकाया। मैंने...
आवश्यक है, ब्रह्मबीज की, फसल उगाई जाये।
और ब्राह्मण-वृत्ति, देश में, पुनः जगाई जाये।।
मार्गदर्शकों के अभाव में, सब ही भटक रहे हैं।
मानव की बहुमुखी-प्रगति के, पहिये अटक रहे हैं।।
इसी वेदना से मेरा मन, द्रवित हुआ, अकुलाया। मैंने...
उठो! राष्ट्र के 'पुरोहित' जागो ! सोया राष्ट्र जगाओ।
ब्रह्मकमल की ब्रह्मबीज की गरिमा को दर्शाओ।।
ब्रह्मतेज से चमक उठे फिर, भारत देश हमारा।
और विश्व को 'आत्मज्ञान' का फिर से मिले उजाला।।
मेरे ब्रह्मकमल ने खिलकर, यह उद्घोष लगाया।
मैंने जीवन त्याग, तितीक्षा, तप में सतत गलाया।

-परमपूज्य गुरुदेव



ज्ञानवान् वह है, जिसने आनंद की खोज के मूल स्रोत अंतःकरण में विद्यमान होने की मान्यता परिपक्व कर ली है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

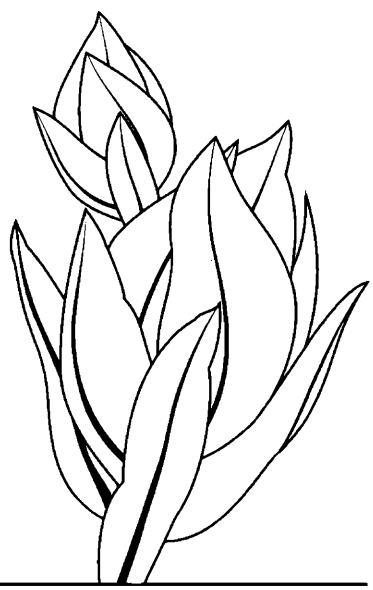
Pandit Shriram Sharma Acharya
A Brief Bio-sketch

Acharya Shriram Sharma, a pioneer of spiritual renaissance was born on 20th September 1911 in Anwalkheda Village of Agra District, Uttar Pradesh. His personality was a harmonious blend of a saint, spiritual scientist, philosopher, writer, reformer, patriot, researcher, scholar and prophetic visionary. He lived a disciplined life of devout austerity, visited the Himalayas several times and attained spiritual eminence. He scrupulously carried out the biddings of his Guru, Swami Sarveshwaranand, a great Himalayan Yogi in astral form, from the young age of fifteen. He mastered the highest kinds of sadhanas of Gayatri and Savitri. His heart pulsated to eliminate the suffering of all beings. He devoted every moment of his life, every component of his worldly belongings, and every bit of his talents and efforts for the benefit of society.

Acharya Shri bestowed his spiritual energy for the welfare and enlightenment of the masses. Millions of people blessed by him not only overcame their sufferings but also received the courage and light to overcome their adversities, uproot their weaknesses, and achieve self-refinement through the path of spiritual penance (*sadhana*).

The following are some glimpses of his Monumental Service and Gifts to Humanity.

✱From his childhood he was seen busy trying his level best to support the helpless, diseased and elderly in his village irrespective of their caste, creed or social lineage. In those days of pre-independence India, when caste-based discrimination was prevalent in Hindu society, Shriram Sharma, at the ten-



The only worthwhile precept is one that is practiced.

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

der age of nine, dared punishment and threats from the so-called upper caste, including some of the elders in his own family, and began to uproot the inhuman notions of caste discrimination.

*Acharya Shri was initiated into Gayatri Sadhana at the age of nine by Pandit Madan Mohan Malviya, the founder of Banaras Hindu University. As a dedicated volunteer of the non-violent freedom movement of India, Acharya Shri worked with Pandit Madan Mohan Malviya and other leaders of India's freedom struggle like Shri Rafi Ahmed Kidwai, Mrs. Swaroopa Rani Nehru and Shri Motilal Nehru. He was known by the name "Shriram Matt" for his revolutionary works. Post independence, he chose to silently continue his selfless service for moral upliftment of the masses.

*He donated all of his share of ancestral property for opening of a Girls' Higher Secondary School (now a full fledged Degree College) in the village of Anwalkheda (his birth place in Agra District) in 1946. He also established Gayatri Tapobhumi Ashram at Mathura at approximately the same time.

*He is the only siddha of Gayatri Sadhana in the modern times, who initiated all seekers in the sadhana of the Gayatri Mantra without any constraint of faith, caste or gender. Strong protests, opposition and united efforts of fundamentalist religious leaders and scholars too, could not perturb the expansion of his mission for global enlightenment.

* His spiritual wisdom reached into the very depths of the human mind and emotional core. He could therefore identify the root cause of the ailing state of human life today as – the crisis of faith, ignorance about the power of the inner self, and lack of righteous attitude. Realizing the potential of thoughts and the relevance of thought transformation in the present era of intellectual evolution, he had chosen writing as the principal mode towards uprooting the malice and illusions of human thought.

*He translated the entire Vedic text in lucid Hindi so that majority of people could have access to it. He also accomplished the extraordinary feat of writing more than 3000 books on all aspects of life to provide instant light and guidance to everyone. Topics of these books range from personal and family management, social reconstruction, nation-building, self-reliance, intellectual grooming with excellence, to environment purification and protection, alternate medicine and holistic health, thought management, the science of mantra, meditation and sadhana, and psychological, cultural and spiritual evolution.

*He pioneered a renaissance of spirituality and creative integration of modern and ancient sciences and religion in a way that is most relevant and necessary in the

May Almighty illuminate our intellect and inspire us towards the righteous path.

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

present circumstances of human life. Towards this endeavor, he established the Brahmavarchas Research Institute for research on scientific spirituality.

*During his sadhanas in the arduous heights of Himalayas, several times he established contact with the ancient Rishis. As per their will, he endeavored the revival of the divine Rishi Culture.

*He spearheaded the mission of thought-transformation, dissemination of scientific spirituality, and social and cultural reformation and elevation. He regarded a every human being as a wayward God and not as an evolved animal. He believed in and strove for awakening the sagacity, purity, hidden strength, spiritual radiance and divine nature of the human self.

*Acharya Shri initiated a 100-point reformation program as the "Yug Nirman Yojna" for progressive transformation of society at grassroot level. This includes the restoration of the religious rights to women, eradication of superstitions, blind traditions and customs in the name of religion and uprooting the social evils of discrimination based on caste and gender.

*He employed religious teachings in righteous scientific light to counter communalism and blind faith propagated in the name of religion. He taught a three-fold path of spiritual elevation based on Upasana (the recognition of the divinity within), Sadhana (self-discipline) and Aradhana (selfless service of society). Based on this unique concept, Acharya Shri not only guided millions of people towards the path of holistic progress, but also bestowed upon humanity a gift of dedicated volunteers endeavoring relentlessly for the betterment of society.

*Inspired by his saintly com-

Fifty years ago, the visionary of Dev Sanskriti Vishwavidyalaya (D.S.V.V. – www.dsvv.ac.in), Pandit Shriram Sharma Acharya envisioned: "There should necessarily be such a university in the country that is capable of preparing truthful persons with strong integrity. This university will be the center of divine culture and people not only from every corner of the country, but also from every part of the world will come here to s tudy." Today we can see all this becoming a reality. D.S.V.V. is a unique university that combines the precepts of practical knowledge and spiritual education to create well nurtured and dynamic students who are channeling their efforts towards the goal of a socially just and value based society.

Don't indulge in self-praise. Your good deeds will speak for themselves.

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

passion and fatherly affection, millions of people from all walks of life dedicated themselves for the altruistic mission of moral and cultural elevation and awakening of divinity indwelling in humankind. The large family-like socio-spiritual organization called the "Gayatri Pariwar" was thus formed.

This socio-spiritual organization, with its headquarter at Shantikunj, Haridwar (www.awgp.org), centers at Mathura and Anvalkheda, and nearly 4000 branches (Gayatri Shaktipeeths and Pragya Sansthans) spread in India and abroad, is devoted to carry forward the herculean task of "Yug Nirman" (Reconstruction of the Era). While it is spearheading the pioneering initiatives of Pandit Shriram Sharma Acharya in the fields of Scientific Spirituality and Cultural Renaissance, it has also been offering reformative and reconstructive voluntary services on seven fronts: (i) Spiritual Penance (Sadhana); (ii) Education; (iii) Holistic Health; (iv) Protection of Environment; (v) Self Reliance; (vi) Women Empowerment; and (vii) Deaddiction and Eradication of Unjust Social Customs

Views of Prominent Personalities on Acharya Shri

*I pay my respect and applause every day to Acharya-Shri who has attained eminence in Gayatri Sadhana. - **Devraha Baba.**

* By popularizing 'GAYATRI' among each and every per-

A destitute has a small heart and restricted thoughts. But, who is actually poor? This word refers to one who lacks sensitivity rather than one devoid of wealth. There is an apt incidence to illustrate this statement. A miser lived in a village near Kanpur. He had enormous wealth, large land under agriculture and many gardens. But, he was in want of generosity. He lived alone. His close relatives were already dead, while his selfish nature prevented his other relatives from getting intimate to him.

Far from being benevolent to others, his stinginess prevented him from fulfilling even his own needs. He passed the winters by getting into the heap of husk, as buying blanket or cardigan would require money. He used to eat the guavas pricked by birds, which could not be sold in the market. The entire harvest of cereals was sold and profit was accumulated. He suffered from insomnia and so he wandered in the streets all night. He did not even get married, as it would be an expensive affair. He wore torn clothes and was reluctant to buy new ones. When he died, the villagers dug his house. They found enormous wealth buried below the hearth. Thus, his hard earned wealth was not able to serve him, instead it was looted by the people. This temperament of grave dissatisfaction is the real poverty.

Time is the most precious gift of life. If you love life, do not squander it in indolence.

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

son Acharya-Shri has advanced the work of Maharshi Dayanand. He has become identical with Gayatri. - **Mahatma Anand Swami.**

*Acharya ji is the father and originator of Gayatri in this era. - **Swami Karpatri ji.**

*Those who drink the nectar of Gayatri like ganga-jal, should follow the path shown by **Acharyaji. - Swami Akhandanand Saraswati.**

* In Gwalior, the noted Gandhian and Exponent of Vedic Literature, Acharya **Vinoba Bhave** publicly acknowledged and praised the treatise of all the Vedas (Hindi translation of Vedas and the commentary on the Vedic Hymns) by Acharya Shri.

* **Dr. S. Radhakrishnan** (former President of India), on reading the treatise on Upanishads by Yugrishi Pandit Shriram Sharma Acharya said – had I got to know about the life and work of Acharya ji earlier, instead of joining politics, I would have been learning and practicing spirituality at the lotus feet of Acharyashri.

*The coming generations will remain indebted to Acharya ji for all times for the path of social change shown by him in which he gave a modern new shape to principles and precepts by his words and logic. **Dr. Shankar Dayal Sharma** (former President of India).

While mentioning the contributions of many great personalities in the rebuilding of the nation, Dr. Sharma, dedicated two full chapters in his book on the contributions of Acharya ji.

*During the function of release of Indian Postal Stamp in the honor of Acharya Shri in 1991 at Tal Katora Stadium, New Delhi, **Justice Ranganath Mishra** (former Chief Justice of India) expressed high reverence for Shriram Sharma Acharya ji's sagacious views on divine origin and evolution of consciousness.

*During his visit as the Chief Guest of first convocation of Dev Sanskriti Vishwavidyalaya, Haridwar, the then Vice President of India, **Shri Bhairon Singh Sekhavat** acknowledged the inspiring impact of Acharya Shriram Sharma ji's thoughts and stated that reading Acharya ji's writings is an integral part of his self-study. Similar views were also expressed by noted social worker and founding chairperson of Gondwana University - **Shri Nanaji Deshmukh.**

*I have seen the form of a real Brahman in Gurudev. - **Jugal Kishore Birla**

***

In His Own Words ...

On His Own-self .....

People might consider me a great scholar, a tapasvi, a seer, a mystic, a social reformer, a genius. However, in my own estimation, I am only an ordinary person, with a heart brimming with love and compassion for all beings. All my life has been spent in sharing and alleviating the

Share all you have with the needy so that no one feels deprived and neglected.

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

pains and misery of others and expanding love and compassion all around me - Shriram Sharma Acharya (from "My Life - Its Legacy and Message", translated from his autobiography "Hamari Vasiyat aur Virasat")

*****

On Thought-Transformation

To give proper direction to human thinking, I have given priority in my future program to the creation of an irresistible current of noble thoughts that would instantly wash away all the impurities and evil tendencies entrenched in the collective human psyche. Viciousness has overpowered the minds of humankind these days. To change this atmosphere, such awakened persons are needed who could play the roles of Munis and Rishis like Vyas, Buddha, Gandhi, Karl Marx, Martin Luther, Aurobindo, Maharshi Raman, and fulfill the aim of Vichar Kranti (Thought Revolution) through direct or indirect efforts. This is possible only by mighty spiritual penance (*tapashcharya-sadhana*), whose visible manifestation will be the energy of Yug-manisha (intellect of the era), which by its power would write literature of the highest standard capable of transforming the present era. It is my moral duty to continue working towards the fulfillment of the pledge, which I had taken forty-seven years ago, to disseminate the insights revealed to me, through the medium of the Akhand Jyoti magazine.

*****

On Bright Future for Mankind

The divine powers of the Rishis, who are extremely kind to me, have accomplished all the work through me (including the performance of twenty-four Mahapurashcharanas of Gayatri) for the welfare of mankind. They are concerned about the gathering clouds of a total holocaust, which are hovering at present over the entire earth, and they are seriously working to avert it. One of the steps in this direction is to fill me up with unalloyed spiritual purity, power and brilliance.

The present phase of my sukshmikarana (highest level sadhana of subtlization of vital energy and sublime transformation of consciousness) is going on in the form of Savitri Sadhana. This has

'Madhav Nidan', a great work on Ayurveda, contains shlokas, which illustrate the 'Vaata', 'Pitta' and 'Kapha' elements of our body, whose imbalance can cause diseases. The abnormal increase in the 'Pitta' leads to anger. Nowadays, people get infuriated without any solid reason. Persistent anger can lead to stress. This augments 'Pitta'. This is a major reason behind most undiagnosed stomach aches. Neither the medicines of the doctor, nor the anti-Pitta Ayurvedic decoctions prove beneficial.The sole remedy to this problem is anger management, which would relax the mind.

As worm eats up the cloth, so does jealousy a human being.

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

nothing to do with ego-centered fame, prosperity, superiority or magnificence of a particular individual. The only aim is to make the faltering steps of upward human growth and human dignity firm. This can be accomplished by five Virbhadras to whom this task has been entrusted. Ram and Laxman had sat on the shoulders of Hanuman. This is nothing but giving credit or choosing a medium. How could the great battle of Mahabharat have been fought on the basis of a single Gandiv Bow? It will be regarded an impossible task by ordinary common sense. But what God wills is inevitably fulfilled. A strong man like Hiranyaksha was torn to pieces by God Varaha.

It is my personal vision that this time also the demonic forces will not be allowed to succeed. Those who are at present involved in destruction will be transformed and become co-operators of the forces of new creation, or new persons will be born to overturn them and in this way the transformation will be effected. India is destined to play a prominent role in establishing real world peace, securely founded on conscious spiritual unity in diversity.

While many prominent and great thinkers are apprehending annihilation, it is my emphatic prophecy that the Evil, which in reality is an inverted form of Good, will be reconverted into the original Good; that which is topsy-turvy at present will be set right. Let this statement of mine be taken with the seriousness it deserves. The dark clouds of evil tendencies created by unbridled scientific advancement will be blown away by a forceful hurricane of divine tendencies. Darkness will be dispelled and eternal light will shine forth. This is possible only through the irresistible and invisible power of the Rishis.

*****

Last Message ...

Acharya Shri lived an ideal life of a true saint for 80 years and voluntarily shed his physical sheath on Gayatri Jayanti, 2nd June, 1990. His last message unfolds the divine purpose of his life and assures us of the dawn of the age of truth.

"The light of which I have been an instrument and medium will not extinguish with my withdrawal from the physical realm. I assure all my parijans that I will continue living and working with them at Shantikunj and elsewhere in my astral-causal body and guide, help and inspire them in their efforts to lead humanity into the Golden Era of Truth, Light and Immortality. I will finally merge into the Blissful Luminous causal self, after the humanity has taken decisive leap into the cosmic consciousness and attained the light of the New Era of spiritual unity, harmony and peace. My blessings, love and prayer-filled wishes to all. I will always be with them in their selfless and noble endeavors in this divine work."

He alone lives a worthwhile life, who has a cool head, warm blood, a loving heart, and zest for life.

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

Feelings of an American Sadhak during one-year stay at Shantikunj

My true feelings about the circumstances that have delivered me here for this Centenary Year, are beyond the words that I have to express them. Perhaps only the word "love" can do them justice. Nor can I understand the Rishi blessings that have allowed me to become part of this Pariwar. In my life, I can't see that I have embodied or expressed the values or greatness of this Mission. I come from an intellectual and privileged family and mostly I have the tendency to recoil from love if and when it comes my way.

For this reason, my stay at Shantikunj has not always been easy. It has been a time not only characterized by the bliss of bathing in the Divine light of this Mission's Divine Source, but also a time for the surfacing of fears and insecurities. Perhaps this has been the churnings of the process of inner cleaning that we are all going through. At times, these feelings have made me want to withdraw, and I have not always been able to reciprocate all of the ways that I have been reached out to, included, accepted and cared for. But truly, I am coming to recognize that my feelings for my aunts and uncles, brothers and sisters of India are those of love.

Actually, all that I know of India, I have learned from Shantikunj, but I doubt that I could see it more clearly than I have through so many greetings and invitations that express always the tender opening of hearts. "Brother, have you taken your meal?" "Is everything fine?" All the while, these words, little by little, were wearing away my resistance. And I have seen so many pilgrims arriving from throughout India, that I feel I have been to these places myself. The proud ones from the cities, the humble ones from the villages, the energetic, the beautiful, the polished and the tired, I have felt your emotions flowing my way, the mixture of curiosity and care, and the urge to look after me as if I were your brother or son, which I do also feel that I am. Perhaps I will never understand the places from which you have come, but I feel that we humans from different corners of this earth are coming together, not on the basis of this kind of understanding, but rather with love.

When I try to understand why I was so blessed to spend this centenary year here, immersed in Gurudev's vibrations, it seems that it must have been for this. We are all coming together, all the countries of the world are coming together, not on the basis of an intellectual understanding, but on the basis of love. For this and for so much more, I am forever grateful.

If the elders practice what they preach to their children, this world will become a heaven.

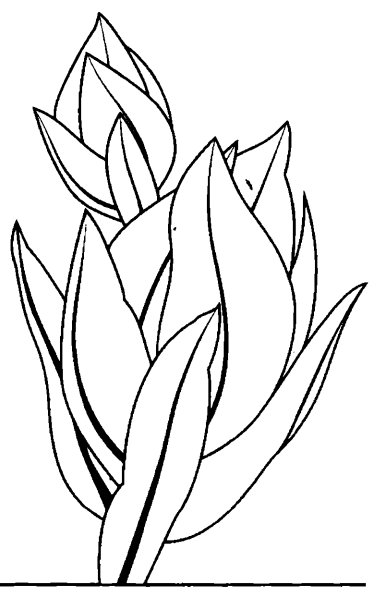
Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

Sprinkling of the seeds of Brahmakamal in the entire World

Gurudev's Trip to South Africa

Acharya Shri left Mathura on 20th June, 1971. A grand farewell ceremony attended by lacs of volunteers was organized, after which Gurudev left Mathura forever to reach Shantikunj along with Mataji. He stayed in the Himalayas for about an year. This is the year in which Acharya Vinoba Bhave gave the Title "Vedmoorti" to Acharya Shri. After returning from his 4th Himalayan visit, Acharya Shri announced his plans for the next ten years from 1972 to 1981. He would be staying in Shantikunj during this time. These plans included subtle coordination of the Movement for the Reconstruction of the Era (Yug Nirman Andolan) through his personal spiritual penance, intense training and practice sessions for Pran Pratyavartan (divine transformation of the vital life force), launching of the Movement for Women Empowerment, extraordinary endeavor for establishing Scientific Spirituality, and spreading the Divine Culture among non-resident Indians. In his last Himalayan visit he received instructions from his spiritual master – "You have to lay the foundation, sow the seeds of Gayatri Consciousness in the entire world." So, his Passport and Visa were made.

In December 1972, he went on his first two and a half month foreign visit to East Africa. He traveled on a ship from Mumbai. He learned the Swahili language of Africa during his onward journey on ship itself. Before leaving for this journey, he had instructed several people to collect matter and articles on "Indian Culture – the Culture of the World". When he returned, all these research articles had



The secret of longevity is not to eat until one is really hungry.

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

been compiled into a book called "Samasta Vishwa Ko Bharat Ke Ajasra Anudan" (Perpetual Divine Gifts of India to the Entire World). This literary work is an extremely important composition. It describes where in the seven continents do we find the signs of Indian Culture and how we can connect people to those basic tenets of their culture. During the Africa visit, through his affectionate motherly guidance, Acharya Shri transformed the lives of many people. During the return journey he realized that unless every citizen of India, every non-resident Indian and every person living on the face of the earth is acquainted with the basic tenets of the Divine Culture, they will keep wandering in the darkness of ignorance. The main purpose of this journey was to contact and provide guidance to those talented souls through whom the message of transformation of the era could be spread far and wide.

During the 1972 journey, Acharya Shri visited Eastern African countries like Kenya, Tanzania and Uganda. After dictator Idi Amin's revolution in Uganda, most of the Indians were leaving Uganda and going to England and USA. At this time, Revered Acharya Shri initiated them into Gayatri Mantra and provided them its divine strength. Later, these members became the torch bearers of the Mission.

Journey of Yug Nirman Yojna to America

In 1992, Param Pujya Gurudev's vision of "Yug Nirman" was carried to the United States for the first time by Dr. Pranav Pandya and a team of three Shantikunj representatives. At that time, there were a few families scattered throughout the country who knew and followed Gurudev's vision. The team from Shantikunj made trips to the homes of these families, resided there and provided them guidance and

One day, the principal of her school explained her about her national obligation. She was so touched by this conversation, that she motivated her fellow students and formed a small group with them to work for national liberation. Gradually, this organization swelled in size, gained popularity and inspired many tribes to raise their voice against the oppressive foreign regime. They joined their voices with the national call of Non-Cooperation by collectively burning foreign clothes.The government tried to suppress this paragon of the national movement. She was arrested, tried and sentenced to imprisonment for life. She spent eighteen years behind the bars and was released after independence. She came out of jail as a thirty-seven year old lady. However, her imprisonment kindled the fire of revolution and popularized nationalism in the entire north-eastern region. The nation salutes such patriots.

End of vanity is the beginning of greatness.

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

unconditional affection. Thus, these families were tied into one pariwar (family), which was the beginning of Gayatri Pariwar in USA.

In 1998, "Vajpeya Yagna" was conducted in New Jersey, which was attended by more than 60,000 individuals. In 2000, in line with Param Poojya Gurudev's vision of enlightened youth, the foundation of a "Youth Transformation" program was laid, which promotes healthy lifestyle and spiritual education for the youth. This program was implemented by holding retreats called the "Youth Camps" that spread like wildfire to various countries of the world including Canada, India, Australia, New Zealand, England and Russia. During these camps, meditation, yoga and the basics of spirituality like Healthy Lifestyle and Science of Mantra were taught to the youth. At these camps, according to Gurudev's teachings of unconditional love and affection, the Shantikunj representatives abandoned the age barrier between themselves and the youth by becoming their friends and looking forward to meeting them. These camps had education as well as fun activities such as cricket, singing and boating. Shantikunj representatives very enthusiastically took part in these events along with the youth. The youth received continuous inspiration and guidance from them. Their parents were also motivated on seeing the way in which Shantikunj representatives interacted with the children, especially how they balanced being a guardian and a friend - unique family values that these representatives had learned from Param Poojya Gurudev. Each year, the number of youth that attended these camps increased and it continues to grow today.

In recent years. Gayatri Consciousness Centers (Gayatri Chetna Kendra) have been established in USA, which are unique places for Gayatri sadhana, yoga, meditation, youth development and community work. As of now, three Gayatri Consciousness Centers have been established in New Jersey, Chicago and Los Angeles.

The rhetorical description of 'Swarg' (heaven) and 'Narak' (hell) are merely the presumptions of the ancient Indian philosophers. Actually, 'Swarg' symbolizes contentment. Perennial elation depends on one's feelings and thoughts. One with a refined vision and idealistic approach should be considered living in heaven. Whereas the negative thoughts of the evil hearted would constantly burn his inner faculty in the fire of hell. The wicked tendencies of worry, fear, anger, envy and anxiety are no less aggrieving than the perceptions of hell.

One becomes what one thinks and does.

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्म कमल

Akhand Jyoti Illuminating UK, Europe and Pacific Region

On a crisp summer morning in July of 1991, a small group of excited parijans gathered at the Forest Gate Hall in London. They were making preparations for the visit of representatives from Gayatri Teerth, Shantikunj, Haridwar. Some of the crowd departed to London Heathrow airport to greet Shantikunj team, which included Dr. Pranav Pandya (Dr. Sahab) and three fellow disciples who were bringing Gurudev's message of Yug Nirman (Reconstruction of the Era).

The patience of members waiting at Heathrow airport paid dividends when the Shantikunj team emerged drenched in yellow attire and sporting a beaming smile, which lit up the airport and teased Gayatri Mantra from the lips of the gathered members. The Shantikunj team shared the amazing experiences of the ceremony for releasing the postal stamp of Gurudev, which had taken place just three days ago in the presence of Vandaniya Mataji and Revered Shail Jiji. The Indian government had recognized the stellar work of Gurudev and had bestowed a unique honor upon him by issuing a postal stamp bearing his picture. They gave an overview of the vision of Gurudev, what the coming years held in store and how to prepare for the Era of Truth

Two days later the Shantikunj team traveled to Leicester to oversee the final preparations of the groundbreaking 108 kundi Gayatri MahaYagya. A huge marquee was erected at the Cossington Street recreation ground to house the kundas and attendees. The three day event attracted over ten thousand people from all walks of life. Huge numbers commented upon the simplicity of the Shantikunj representatives, which reflected the life of their Spiritual Master – Revered Gurudev, and the motivating

Jesus Christ spent his maximum time amidst the ailing, the depraved and the downtrodden. He was constantly engaged in transforming and serving them. One day, a group of wealthy and learned people approached him and asked him why he was serving ailing people. They assured him that they would provide him financial aid and he would be benefited. At this, the smiling Jesus expounded - "A doctor is needed by the ill. A true doctor is one, who understands their misery. The scope of my work is restricted to these needy, evil minded and wicked people."

Not riches, but nobility of character and honesty are the true bases of greatness.

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

message of Acharya Shriram Sharma that they provided.

Shantikunj team hosted 3 day Sanskar Mahotsav in Leicester in July of 1992. This was attended by over fifteen thousand people. Youngsters had Vidyarambh Sanskar, while others celebrated their birthday or were initiated into the divine grace of Mother Gayatri. The team also traveled to Norway and Denmark to deliver the message of Acharya Shri.

After two months, a message was received from Vandaniya Mataji that Ashwamedh MahaYagya was to be performed in the UK in July of 1993 and that a suitable venue must be sought. Leicester was chosen as the most suitable city for holding this historic event. The Leicester Ashwamedh was the first to be held outside of India and UK was the first country that Vandaniya Mataji and Shraddheya Jiji would visit. This Ashwamedh was to be followed closely by others in Los Angeles, USA and Toronto, Canada. In March of 1993, Shantikunj team arrived in Melbourne, Australia. Dr. Sahab addressed a multi-faith congregation at the city library. After a two day visit in Melbourne, the team traveled to Sydney for three days. Radio and press interviews were conducted where the interviewers were very keen to learn why Dr. Sahab gave up his medical practice for the spiritual field. Dr. Sahab explained that he had not given up medicine, but instead, under the guidance of his Gurudev, Acharya Shriram Sharma (who initiated Scientific Spirituality), he had combined it with spirituality in order to explore and prove the scientific basis and benefits of spiritual practices.

Next, the Shantikunj team travelled to Auckland, New Zealand where they met members who had been attached to the Mission for over twenty years. Several yagyas and discourses were conducted at various places in

The life of Pandit Sriram Sharma Acharya is an open book. It is a testimony to how, by imbibing the art of spiritual living, one can transform oneself from the level of the ordinary to the extra-ordinary, from human to super-human. His packed schedule from morning to evening, effective time management, punctuality in every work, prolific penmanship, generous and affectionate interaction with people – all these are some of the virtuous qualities whose even partial inculcation in one's life can lead one to greatness. His autobiography "My life: Its Legacy and Message" has inspired countless persons, and will continue to do so in future also.

An aimless person is like a pendulum, which merely swings to and fro without reaching anywhere.

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

New Zealand. From New Zealand, the team departed for Fiji Islands.

Over the years, the Indian population has grown to become a huge force in Fiji. For the Fijian population, to have someone from their motherland and shower divine grace on them was a dream come true. The media was also extremely interested in what Shantikunj representatives had to say about Indian Culture and its role in reconstructing the world in order to create the Era of Truth. During the visit, the Shantikunj team conducted a wedding ceremony, which the elders stated that they had only heard about from their parents. Witnessing this was emotionally overwhelming for many. After completing a 108 Kundi MahaYagya in Lautoka, the tour concluded.

In May, the Shantikunj team again visited the UK to ensure that all preparations for the forthcoming Ashwamedh were on track. They traveled up and down the UK to explain the importance of Ashwamedh MahaYagya, which was known to have taken place only in ancient times. In late June, Vandaniya Mataji came to London along with Shraddhey Dr. Sahab and Shraddheya Jiji. Heathrow airport was chock-a-bloc with members eager to catch a glimpse of Vandaniya Mataji. Arriving in Leicester, they were greeted by tens of hundreds of members. Ashwamedh MahaYagya was held from July 1st to 3rd and attracted 40,000 people belonging to almost all religions. The vast exhibition, which displayed the life, works and the all encompassing personality of Acharya Shri, as well as the recent research conducted under his guidance at Brahmavarchas Research Institute, Haridwar on scientific spirituality and Vedic knowledge, was very favorably received. Teachers in religious studies stated that they had learned a tremendous amount from the simple captions displayed in the exhibition. So impressed was one of the attending Members of Parliament, Keith Vaz, that he invited Dr. Sahab to address a select committee of MPs at the House of Commons. Dr. Sahab accepted this invitation and addressed them in September of 1993.

The first phase of activities in early 90's provided the strong foundation for the development of a dedicated Gayatri Pariwar branch in the UK, Australia and Fiji. Now, a Gayatri Consciousness Center has been constructed at Rendell Road, Leicester, UK and Gayatri Shaktipith Temple has been built in Nadi, Fiji. Gayatri Pariwar branches are continuously spreading the message of Gurudev through yagyas, deep yagyas, sacramental rites, Gayatri Mantra writing, seminars on stress management and scientific spirituality, yoga workshops, youth camps, cultural programs, etc. ◈

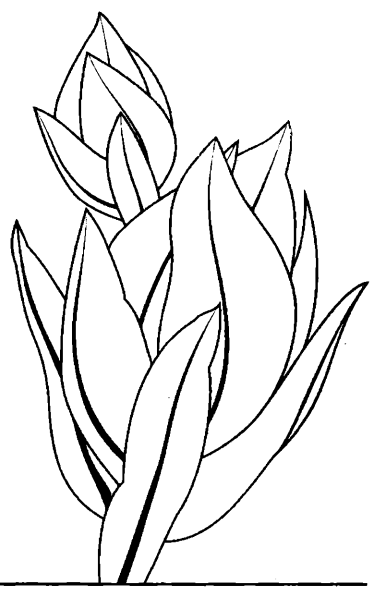
There are two ways to be happy - minimize your needs and live in harmony with the circumstances.

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

18 Point Pledge for Creating a New World Order of Peace and Prosperity

(Written by Acharya Shriram Sharma - It is recommended that this pledge should be read once daily)

1. Firmly believing in the omnipresence and unfailing justice of God, we pledge to abide by basic divine principles (*Dharma*).
2. Considering the body as the Temple of God, we will be ever watchful to keep it healthy and full of vitality by adopting the principles of self-control, order and harmony in our lives.
3. With a view to keeping our minds free from the inrush of negative thoughts and emotions, we will adopt a regular program of the study of ennobling and inspiring literature (*Swadhyay*) and of keeping the company of wise people (*Satsang*).
4. We will vigilantly exercise strict control over our senses, thoughts, emotions and the spending of our time and resources.
5. We will consider ourselves inseparable part of the society and see our good in the good of all.
6. We will abide by basic moral code, refrain from wrong doing and perform our duties as citizens committed to the well-being of the society.
7. We will earnestly and firmly imbibe in our lives the virtues of wisdom, honesty, responsibility and courage.
8. We will constantly and sincerely endeavor to create an environment of loving kindness, cleanliness, simplicity and goodwill.
9. We will prefer failure while adhering to basic moral principles, as compared to so-called success obtained through unfair and foul means.
10. We will evaluate a person's greatness not by



Study of inspiring books is like communion with living deities; it gives instant gifts of light and bliss.

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

worldly success, talents and riches, but by righteous conduct and thoughts.

11. We will never do to others what we do not want done to us.

12. Men and women, while interacting with each other, will have feelings of mutual warmth and understanding based on purity of thoughts and emotions.

13. We will regularly and religiously contribute a portion of our time, talents and resources for spreading nobility and righteousness in the world.

14. We will give precedence to discriminating wisdom over blind traditions.

15. We will actively involve ourselves in bringing together persons of goodwill, in opposing evil and injustice and in promoting New Creation.

16. We will remain committed to the principles of unity and equality of all human beings. In our conduct, we will not discriminate between human beings on the basis of caste, creed, color, religion, region, language or gender.

17. We firmly believe that each human being is the maker of one's own destiny. With this conviction, we will uplift and transform ourselves and help others in doing so. We believe the world will then automatically change for the better.

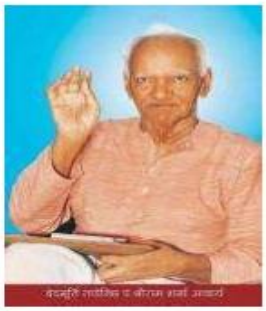
18. We firmly believe in the fact - When we transform ourselves, the world will be transformed; When we reform ourselves, the world will be reformed. ◈

King Janmejay used to tour his kingdom every night in disguise to find out whether various developmental schemes are implemented properly or not. One night, he came to a village, where some youth were playing. One of them was playing the role of the king and giving instructions to others. He said - "Listen courtiers! If the administrators of a kingdom turn immoral, its citizens would never prosper, no matter how virtuous and soft- hearted the king may be. You all should not repeat the mistake, which the officials of king Janmejay have committed. The state officials should abstain from lust and luxuries." Janmejay was so impressed by the prudence of the youth that he made him the prime minister of his kingdom. His name was Kulesh. During his prime ministership, he made a 'Code of Conduct' for the ministers, feudal lords and the government officials and fixed a minimum of ten hours of daily duty for them. The wealth in Royal exchequer was now used for public welfare.

Failure indicates half-hearted effort towards success.

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :



ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्दघोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org